बाबूलाल ठाकुर ज्योतिषाचार्य

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

तृतीय (फलित) खण्ड (प्रथम भाग)
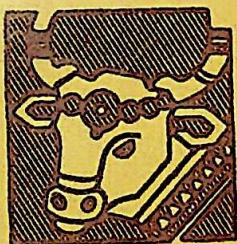
सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

तृतीय (फलित) खण्ड

[प्रथम भाग]

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: वाराणसी :: पटना :: बंगलौर :: मद्रास

प्राक्कथन

फलित ज्योतिष में ग्रहों का फल विचारने के लिये ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहबल, स्थिति आदि जानकर ग्रहों के गुण धर्म दृष्टि स्थान आदि अनेक बातों पर पूर्ण रूप से विचार कर, ग्रहों की स्थिति आदि द्वारा बनने वाले अनेक योगों पर ध्यान देकर, देश काल अवस्था आदि पर ध्यान रखते हुए फल कहना चाहिये। परन्तु उसके लिये भी अनुभव की नितांत आवश्यकता है। अनेक कुण्डलियों का अध्ययन करते-करते अनुभव बढ़ता है, अनुभव बढ़ने से ही ज्ञान की वृद्धि होकर फलित कथन करने की योग्यता बढ़ती है। जैसे नया डाक्टर या वकील डाक्टरो या वकीली पासकर लेने पर एकदम अपने पेशे की पूर्ण योग्यता नहीं प्राप्त कर लेता। जैसे-जैसे उसका अनुभव बढ़ता जाता है वैसे-वैसे योग्यता भी बढ़ती जाती है। अनुभवी डाक्टर या वकोल कठिन से कठिन परिस्थितियों में रोग या मामले को पूर्ण रूप से समझ लेता है और अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है। इस कारण सदा पूर्ण अध्ययन द्वारा अनुभव बढ़ाने की आवश्यकता है।

फल कभी-कभी सत्य क्यों नहीं उतरता, इसका कारण अल्पज्ञता और फल कथन करने में उसकी पूर्ण परिस्थितियों पर विचार का अभाव या किसी सूझ का अभाव रहता है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों फल-कथन की योग्यता बढ़ती जायेगी।

ज्योतिष शास्त्र केवल किसी फल की ओर संकेत करता है। परन्तु उक्त संकेत पाकर वहाँ अपनी बुद्धि से विचारना पड़ता है कि वास्तविक क्या बात हो सकती है। जैसे कहीं धुआँ देखकर अग्नि का अनुमान होता है. वह वास्तव में क्या है अग्नि की भाप है या कुहरा मात्र है, बुद्धि से ही विचारना पड़ता है। इसके लिये अनुभव के अतिरिक्त सूक्ष्म अंतर्ज्ञान (Institution) या दृष्टि की आवश्यकता है। एकाग्र चित्त से कुंडली द्वारा प्राप्त संकेत को आधार मानकर उसके भिन्न-भिन्न विषयों पर शांति पूर्वक विचार करने से आत्मशक्ति जागृत होकर अंतर्ज्ञान उत्पन्न होता है। इसके लिये साहित्यक मनोवृत्ति, धर्मनिष्ठता और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास होना आवश्यक है जिससे इच्छा शक्ति प्रबल होकर निश्चय पूर्वक विचारने की शक्ति उत्पन्न होती है।

कोई ऐसी शंका करने लगते हैं कि जब ऐसा फल होना ही है तो क्यों प्रयत्न करें क्यों हाथ पैर चलावे। इसके लिये यह ध्यान रखना चाहिये कि बिना पुरुषार्थ

किये दैव भी फल नहीं देता। जैसे खेती आदि का कर्म न करोगे तो फल कहाँ से प्राप्त होगा। इस जन्म के ऐसे कर्म को ही पुरुषार्थ कहते हैं और पूर्व जन्म में जो कर्म किये हैं वही दैव अर्थात् भाग्य है। दैव और पुरुषार्थ ही इस शरीर रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। जिस प्रकार बिना एक दूसरे के परस्पर सहयोग से गाड़ी नहीं चल सकती, इसी प्रकार जीवन का पूर्व संचित कर्म जिसे दैव कहेंगे उसके फलित होने को पुरुार्थष की आवश्यकता है। पुरुषार्थ मुख्य है। भाग्य के अनुसार पुरुषार्थ फलीभूत होता है। पूर्व जन्म में जो शुभाशुभ कर्म किये हैं उनका फल कर्मानुसार इस जन्म में मिलता है। वह फल ग्रहों की स्थिति पर विचारने से ऐसा प्रगट हो जाता है जैसे अंधकार में दीपक का प्रकाश। ये पूर्व जन्म के कर्म दो प्रकार के होते हैं (१) दृढ़ कर्म (२) अदृढ़ कर्म। दृढ़ कर्म—का प्रभाव अधिक रहता है। जप दान आदि करने पर भी जिसका प्रभाव अधिकतर नहीं घटता। अदृढ़ कर्म—जप दान पूजन आदि कर्म द्वारा शांति कराने से इसका बुरा प्रभाव निवारण हो जाता है। इसी कारण जब कुण्डली में अरिष्ट समय का बोध हो तब उस समय जप दान आदि द्वारा शांति कराने से कष्ट का निवारण हो जाता है और जब शुभ समय प्रगट हो तब शुभ कार्य करने से कार्य में सफलता होती हैं। दृढ़ कर्मोपार्जित जो दशाफल है उस समय दशा शुभ जान कर शुभ कर्म करना चाहिये। अशुभ समय जान कर शुभ कर्म नहीं करना। जो अदृढ़ कर्मोपार्जित हैं उनको अष्टक वर्ग गोचर फल बतलाता है। अशुभ समय जानकर शुभ कर्मों के करने से पूर्व जन्म के बुरे प्रभाव कुछ कम हो जाते हैं या मिट जाते हैं, जैसे छाता लगाने से तेज धूप का प्रभाव कम हो जाता है या मिट जाता है।

फलित में कुछ लोग अविश्वास करते हैं। विचारणीय बात यह है कि फलित में कुछ भी सत्यता नहीं होती तो इस विद्या का अधिक प्रचार न होता और प्रभाव घट जाता। परन्तु प्रत्यक्ष देखने में आता है किं इसका प्रभाव बढ़ ही रहा है जिससे लोगों की रुचि इस विद्या के अध्ययन की ओर बढ़ रही है। विदेश में भी इसका अधिक प्रचार हो रहा है।

आज कल केवल एक दो पुस्तकें पढ़ कर लोग ज्योतिषी बन जाते हैं उनकी क्या योग्यता हो सकती है? डाक्टरी विद्या पढ़ने को कितने वर्ष अंग्रेजी पढ़ कर फिर वर्षों डाक्टरी पढ़ कर एवं प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त कर डाक्टर बनता है तब भी वह अधूरा ही रहता हैं। जब वह कई वर्षों तक प्रेक्टिस द्वारा अनुभव बढ़ा लेता है तब वास्तविक डाक्टरी करने की योग्यता पा सकता है। इसी प्रकार ज्योतिष विद्या का वर्षों तक पूरा अध्ययन एवं अनुभाग प्राप्त किया जाय तब उसे उचित फल कथन की योग्यता आ सकती है तब एकाग्रचित्त से आत्मविभोर होकर चेतना की परिधि में उपस्थित समस्या से सम्बन्धित प्रत्येक फल के निर्णय करने योग्य मानसिक अवस्था आने पर पूर्व अनुभव द्वारा संगृहीत उपयुक्त सामग्री के आधार पर योग्यता

पूर्वक फल कथन कर सकता है। डाक्टर तो यंत्रों द्वारा बहुत कुछ शरीर के रोगों का निदान कर लेता है परन्तु ज्योतिषी को तो केवल अनुमान से ही काम लेना पड़ता है। इससे प्रगट होगा कि ज्योतिष कितनी कठिन विद्या है जिसके लिये निरंतर अभ्यास की आवश्यकता है। परन्तु यह एक जनप्रिय एवं मनउल्लास विद्या भी है। जिसके कारण यह जनता के आकर्षण का विषय बनी हुई है। जब कोई कुण्डली या वर्षफल बनवाते हैं और उसकी अधिकांश बातें सत्य निकलती हैं तब इस विद्या पर लोगों का विश्वास बढ़ कर इसके अध्ययन की ओर रुचि बढ़ती है। और इसके अध्ययन में आनंद आता है और जब फल ठीक उतरता है तब प्रसन्नता होती है।

कई मनुष्यों को शंका है कि भविष्य का फल जाना नहीं जा सकता। इसके विषय में कुछ घटनाएँ लिखूँगा। कई स्वप्न भी भविष्य-दर्शक होते हैं जिनका कई लोगों ने अनुभव किया होगा। यहाँ भविष्य दर्शक स्वप्न की एक घटना का वर्णन करूँगा।

मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले में चन्द्रभूषण त्रिवेदी ने, जो नरसिंहपुर पुलिस लाइन्स के लाइन आफीसर हो गये थे, सन् १९२१ में प्रातःकाल स्वप्न देखा कि एक ब्राह्मण की श्वेत गाय जो कुछ दिन में ब्याने वाली थी उसको शेर ने मार डाला। श्री बद्रीप्रसाद शुक्ल डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस नरसिंहपुर के गोटे गाँव थाने के दौरे पर जाने वाले थे। उनके रीडर श्री मुहम्मद अब्बास से त्रिवेदी जी ने अपने स्वप्न का हाल बताया और यह भी बताया कि साहिब वहाँ गये हैं और उस शेर को साहिब ने मार डाला है ऐसा भी स्वप्न में देखा गया है। वहाँ दौरे पर साहब के रीडर ने स्वप्न का हाल साहब को बताया उस समय साहब लाहगाँव में ठहरे थे। साहब नें अपने केम्प में चंद्रभूषण त्रिवेदी को बुलाकर स्वप्न का पूरा हाल सुना। दूसरे दिन ही सूचना मिली कि ॰ मील पर मौजा मंजनी में शेर ने एक घोड़ा मार डाला है जहाँ शिकार के लिये घोड़ा बँधवाया गया था। साहब वहाँ गये शेर का हांका कराया परन्तु शेर नहीं मिला। दूसरे दिन साहब का केम्प पहाड़ी खेड़ा था जहाँ दूसरे दिन साहब जा रहे थे। मार्ग में हयात खाँ मालगुजार मिले उन्होंने साहब से बताया कि मौजा मवई की एक ब्राह्मण की स्वेत गाय जो हाल में ब्याने वाली थी आज प्रातःकाल उसे शेर ने मार डाला। तुरन्त हांका का प्रबन्ध हुआ शेर निकला जिसे साहब ने मार डाला। वह स्वप्न पूरा सत्य निकला।

अनेक भविष्यवक्ता हो गये हैं जिनका भविष्य कथन सत्य निकला उनमें से एक दो लोगों का यहाँ वर्णन कर देना उचित समझता हूँ। सुलतान मालिक शाह के समय में खुरासान में प्रसिद्ध शायर उमर खैयाम सन् १०२५ में उत्पन्न हुआ था जिसकी शायरी प्रसिद्ध है। वह अद्‌भुत प्रतिभाशाली और बड़ा विद्वान् था। वह ज्योतिष का भी पूर्ण विद्वान् था। इसने अपनी मृत्यु के ११ वर्ष पूर्व अपनी मृत्यु की ठीक तिथि

समय स्थान आदि ज्योतिष के आधार पर निकाल कर रख दिया था ठीक उसी स्थान तिथि और समय में उसकी मृत्यु सन् ११२३ में हुई।

अभी लन्दन के जन्मे एक भविष्य वक्ता (Elair voyance) मारिश उड-रफ नाम के व्यक्ति ने अमेरिका में सन् ६१ में १२ बातों की भविष्यवाणी की थी जिनमें से कई बातें सत्य निकल चुकी हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव के ६ मास पहिले बता दिया था कि जान केनेडी प्रेसीडेन्ट होंगे। प्रिन्स एन्ड्रू के जन्म के ६ मास पहिले ही उसकी जन्म तिथि बतला दी थी कि इंग्लैण्ड की रानी की बहिन प्रिंसेस मारग्रेट को पुत्र होगा। ये सब बातें सत्य निकलीं और भी कई भविष्य वाणी उसने की हैं यह नागपुर के दिनवाद २९-१०-६१ में प्रकाशित हुआ था। शैरो का नाम प्रसिद्ध है जिसने हस्तरेखा पर पुस्तकें लिखी हैं वह बड़ा हस्तरेखा विशारद था उसका असली नाम लुइस इम्मन (Louis Hammon Cheiro) था। उसने बम्बई आकर हस्तरेखा और योग सीखा था जिसके द्वारा भविष्य बता देता था, उसने क्वीन विक्टोरिया का मृत्यु समय व किंग एडवर्ड सप्तम के मृत्यु का वर्ष मास बता दिया था। रसिया के जार तथा इटली के किंग हमवर्ट की मृत्यु कतल द्वारा होना व लार्ड किचनर की मृत्यु युद्धक्षेत्र में होना बता दिया था जिसका लार्ड किचनर को विश्वास नहीं था परन्तु हुआ वैसा ही जैसा बताया गया था। रसिया में जार के यहाँ रहने वाला रास पुटिन जो अपने को रसिया का रक्षक बतलाता था उसके वारे में शैरो ने बताया कि उसकी मृत्यु जहर, छुरी या गोली से होगी और मृत्यु वाद उसका शरीर बर्फीले जल में फेंक दिया जायगा उसी प्रकार उसकी मृत्यु हुई उसने स्वतः की मृत्यु का ठीक समय भी बता दिया था। सन् १९२८ में उसने World Pridiction (दुनिया की भविष्यवाणी) नाम की पुस्तक प्रकाशित की थी उसमें लिखा था कि भारत का विभाजन मुसलमान और हिन्दू में होकर ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता दे देगा।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलेंगे। अब मैं यहीं के कुछ ज्योतिषियों के फला-देश पर कुछ प्रकाश डालूँगा। नरसिंहपुर के प्रसिद्ध स्वर्गवासी एडवोकेट श्री रामेश्वर दयाल वर्मा को ज्योतिष अध्ययन का बड़ा प्रेम था उन्होंने अपनी कुंडली पर से मारक दशा निकाल कर मृत्यु का समय नोट कर लिया था ठीक उसी समय पर उनकी मृत्यु हुई।

नरसिंहपुर के स्थानिक ज्योतिषियों के फल कथन का संक्षित उल्लेख करूँगा। पं० रामलाल दूबे ने गौरीशंकर तिवारी म्युनिसपल हेड क्लर्क की कुंडली देखकर मारकेश का समय विचार कर मृत्यु समय बता दिया था उनकी कैन्सर से मृत्यु हुई। दिल्ली पटेल ग्राम सुपला का लड़का पटेल भाई की कुंडली देखकर बता दिया था उसके पीठ की सन्तान पुत्र होगा पुत्र ही हुआ। श्री द्वारका प्रसाद पटेल के लड़के

विश्वनाथ की कुण्डली में योग देखकर लिख दिया था कि विकलांग होगा उसे लकवा मार गया जिससे लँगड़ा हो गया। यह पदपुर के धनीराम लोधी के लड़के की कुण्डली में लिख दिया था विकलांग होगा। वह लँगड़ा हो गया। मंगली प्रसाद मास्टर के लड़के जगन्नाथ प्रसाद श्रीवास की कुण्डली में लिख दिया था संतान नहीं होगी संतान नहीं हुई। और भी कइयों को जैसा लिख दिया वैसा हुआ। नरसिंहपुर संस्कृत पाठशाला के प्रधान अध्यापक पं० श्री नर्मदाप्रसाद शास्त्री से श्रीत्र्यम्बक राय वैद्य वकील ने अपने घर से गुमी हुई सोने की साँकल के सम्बन्ध में विचारने का प्रश्न पूछा। शास्त्रीजी ने बताया कि घर के पश्चिम में जो द्वार है, उसकी सोढ़ी के किनारे पड़ी मिलेगी। वहाँ देखा तो नहीं मिली! दुबारा फिर पूछने पर बताया वहाँ रेता मट्टी आदि हटाकर खोजो। वैसा करने से रेत में दबी हुई मिल गई। नरसिंहपुर के श्री चन्द्रभान सर्राफ के यहाँ बहुत बड़ी चोरी हो गई थी। पंडित जी ने प्रश्न कुण्डली पर से विचार कर बताया कि लगभग ५ मील पश्चिम में नदी के किनारे माल गड़ा है और ३६ दिन के भीतर माल मिल जायगा चोर पकड़ जायगा। लगभग ३०वें दिन पश्चिम में दाद़रेवा नदी के किनारे चोर पकड़ा गया और वहाँ माल गड़ा हुआ मिल गया। चोर लोग मीना जाति के राजपूताने के रहने वाले थे।

ऐसी अनेक घटनायें हैं यदि ऐसी घटनाओं का संग्रह किया जाय तो एक बड़ा पोथा बन जायगा। ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर ही लोग ज्योतिष विद्या का मान करते हैं और उसकी ओर आकर्षित होते हैं। इन सब बातों से विश्वास कर लेना चाहिये कि भविष्य फल अवश्य जाना जा सकता है। इसके विषय में शंका करना व्यर्थ है। पाठक स्वतः जब अनेक कुंडलियों का अध्ययन करेंगे तो उनके प्रत्यक्ष फल देखकर इसमें विश्वास अवश्य बढ़ेगा और ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में आनन्द आयेगा और रुचि बढ़ेगी। ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक रूप से अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है।

अध्ययन के निमित्त यहाँ एक प्रकार के विषय के योगों को एकत्र कर दिया है जिससे वैसे मनुष्यों की कुण्डलियों में उन योगों के अध्ययन में सहायता मिले। विषय-वार फल देने से कहीं-कहीं विषय बदलने से उस फल की पुनरावृत्ति हो गई है।

ज्योषित शास्त्र में भी अनेक मतांतर हैं कहीं उन मतांतरों को भी अध्ययन के निमित्त दे गया दिया है। जिसका अध्ययन कर पाठक लाभ उठायेंगे। ज्योतिष के योगों में कई ऐसे योग दिये हैं जो आजकल होना असम्भव है परन्तु अध्ययन हितार्थ उन्हें भी दे दिया है।

इस पुस्तक के लिखने में या कापी करने में या छापने में अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। प्रार्थना है कि कोई अशुद्धियाँ या भूल जो दृष्टिगोचर हो कृपा कर सुधार कर लेखक को सूचित करने का कष्ट करेंगे तो मैं बड़ा अनुगृहीत होऊँगा। भूल हो जाना मानवीय है, पाठक इसके लिए क्षमा करेंगे। ज्योतिष शास्त्र के फलित ज्ञान का विस्तार करने के निमित्त यह पुस्तक लिखी गई है। जिससे फलित के अध्ययन करने में सहायता

मिलेगी। इसके पहिले इस ग्रंथ का ज्ञान एवं गणित खंड अवश्य अध्ययन कर लेना चाहिये जिससे फलित खंड के समझने में सुगमता प्राप्त होगी। इस प्रकार इसके अध्ययन द्वारा अपने ज्ञान को विस्तीर्ण कर पाठकगण अपना अनुभव बढ़ाने के लिए ज्योतिष शास्त्र रूपी सागर के पार जाने एवं कथन करने के लिये इसे नौका के रूप में सहायक पायेंगे।

ज्योतिष के ग्रन्थ अधिकतर संस्कृत में होने से उनके अध्ययन में कठिनाई होती है इस कारण सुगम बोध के विचार से यह राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखा गया है। इसके अध्ययन से पाठकों का प्रेम एवं झुकाव इस विद्या की ओर बढ़ा तो मैं अपना उद्देश्य सफल समझूंगा।

भवदीय

बी० एल० ठाकुर
ज्योतिषाचार्य
सिंह-सदन
पो० नरसिंहपुर (म० प्र०)

विजयादशमी
सं० २०१८
दिनांक १९-१०-६१

विषय-सूची

संकेत-सूची

यह फलित खंड अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् लिखा गया है। इसमें कुछ ग्रंथों का प्रमाण देकर उनमें नाम दिये हैं वे इस प्रकार संकेत अक्षरों में हैं—

मान० = मानसागरी पद्धति
मध्य प० = मध्य पराशरी
सर्व चिं० = सर्वार्थ चिंतामणि
सर्व सं० = सर्व संग्रह
शंभु० = शंभुहोरा प्रकाश
ज्यो० शा० = ज्योतिष शास्त्र
ज्यो० रत्ना० = ज्योतिष रत्नाकर
ज्यो० र० = ज्योतिष रहस्य
ज्यो० पा० = ज्योतिष पाठमाला
जैमिनी० = जैमिनी सूत्र
जा० सं० = जातक संग्रह
जा० भ० = जातका भरण
जा० लं० = जातकालंकार
श्री० प० = श्रीधर पद्धति
शीघ्र० = शीघ्र बोध
प्रा० यो० = प्रारब्ध योग
फल० = फल दीपिका
नील० = नीलकंठी
ल० चं० = लग्नचंद्रिका
वृ० जा० = वृहज्जातक
वृ० पा० = वृहत्पाराशरी
जा० पारि० = जातक पारिजात

संकेत-सूची

यह फलित खंड अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् लिखा गया है। इसमें कुछ ग्रंथों का प्रमाण देकर उनमें नाम दिये हैं वे इस प्रकार संकेत अक्षरों में हैं—

मान० = मानसागरी पद्धति
मध्य प० = मध्य पराशरी
सर्व चिं० = सर्वार्थ चिंतामणि
सर्व सं० = सर्व संग्रह
शंभु० = शंभुहोरा प्रकाश
ज्यो० शा० = ज्योतिष शास्त्र
ज्यो० रत्ना० = ज्योतिष रत्नाकर
ज्यो० र० = ज्योतिष रहस्य
ज्यो० पा० = ज्योतिष पाठमाला
जैमिनी० = जैमिनी सूत्र
जा० सं० = जातक संग्रह
जा० भ० = जातका भरण
जा० लं० = जातकालंकार
श्री० प० = श्रीधर पद्धति
शीघ्र० = शीघ्र बोध
प्रा० यो० = प्रारब्ध योग
फल० = फल दीपिका
नील० = नीलकंठी
ल० चं० = लग्नचंद्रिका
वृ० जा० = वृहज्जातक
वृ० पा० = वृहत्पाराशरी
जा० पारि० = जातक पारिजात

ॐ

श्री गणेशाय नमः

ज्योतिष-शिक्षा

तृतीय (फलित) खण्ड

ध्याये पाये शक्ति जिन, पूर्व ज्योतिषाचार ॥
शिव शंकर सुमरन किये, कीना फलित विचार ॥ १ ॥
उन्हीं भोलानाथ का, भजूं गणप सह गौर ॥
सुमति शक्ति सामर्थ दो, होहु सहायक और ॥ २ ॥
प्रबल तर्कना-शक्ति दो, बढ़े त्रिकालिक ज्ञान ॥
अनुभव और विचार से, बुद्धि होय बलवान ॥ ३ ॥
दिव्य-दृष्टि दीजे प्रभू, धरूं तुम्हारा ध्यान ॥
फलित कथन प्रत्यक्ष हो, कृपा करो भगवान ॥ ४ ॥

अध्याय १

राशि एवं नक्षत्र गुणधर्म

इस फलित खण्ड का अध्ययन करने से पूर्व इसका प्रथम ज्ञान खंड, एवं द्वितीय गणित खंड अध्ययन कर लेना आवश्यक है जिसके पश्चात् इस तृतीय फलित खंड के अध्ययन में सुगमता प्रतीत होगी ।

फलित ज्योतिष अध्ययन करने के लिये प्रारम्भ में जो बातें जानने योग्य हैं यहाँ पहिले ही दे दी गई हैं और स्थूल रूप से फल का संक्षिप्त विचार भी पहले दे दिया गया है ।

पृथक्-पृथक् प्रसंग आने पर विषयों को समझाने के लिए कई स्थानों में पुनरावृत्ति भी हो गई है और कहीं-कहीं भिन्नता (मतभेद) भी जान पड़ेगी, परन्तु ये सब, बातें अध्ययन कर लेने पर आगे फल विचारने में बहुत सहायक होंगी । किसी-किसी प्रसंग में अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का फल बताया है, इस पर अच्छी परिस्थिति में अच्छा फल, बुरी परिस्थिति में बुरा फल ग्रहण करना ।

सारांश यह है कि यहाँ बताये विषय आगे बताये जाने वाले विषयों के फल-निर्णय में सहायक होंगे। इनसे उनका अच्छी प्रकार से विचार कर उपयोग करना।

राशि के भिन्न-भिन्न नाम—क्षेत्र, गृह, वृक्ष, भ, राशि

१ मेष—अज, वस्त, प्रथम, क्रिय, विश्व, तुंबुर, आद्य।

२ वृष—उक्षा, गो, ताबुरि, शुक्रभ, गोकुल।

३ मिथुन-बोध,नृयुग्म, जितुम, तृतीय, द्वन्द्व, यम, युग।

४ कर्क—चान्द्र, कुलीर, चतुर्थ, कर्काटक, कर्कट

५ सिंह-कंठीरव, लेय, मृगेन्द्र।

६ कन्या—पाथोन, षष्ठी, अबला, तन्वी, रमणी, तरुणी।

७ तुला—जूक, वणिक, तौलि, सप्तम, घट।

८ वृश्चिक—कौर्प्य, कौज, अलि, अष्टम, कीट।

९ धनु—जैव, धनु, तौक्षिक, चाप, धन्वी, शरासन।

१० मकर—आकेकर, चक्र, दशम, मृग, मृगास्य, नक्र।

११ कुम्भ—हृद्रोग, घट, तोयधर।

१२ मीन—रिष्फ, झष, अंतिम, अन्त्य, मत्स्य, पृथुरोम।

राशियों का आकार

१ मेष—मेढ़ा।

२ वृष-सांड।

३ मिथुन—वीणा लिए स्त्री और गदा लिए पुरुष एक-दूसरे को हृदय लगाए।

४ कर्क—केकड़ा।

५ सिंह—सिंह।

६ कन्या—जल में तैरती नाव पर बैठी कुमारी हाथ में धान और प्रकाश लिए हुए।

७ तुला—तुला लिए हुए मार्ग में बैठा पुरुष।

८ वृश्चिक—बिच्छू।

९ धन—सामने की ओर धनुष-बाण लिए योद्धा, पीछे का भाग घोड़े का।

१० मकर—मगर का शरीर, हिरन का मुख।

११ कुम्भ—पानी का घड़ा सिर पर लिए मनुष्य।

१२ मीन—दो मछलियाँ प्रत्येक की पूँछ दूसरे के मुख में।

राशि गुण-धर्म

क्रम	गुणधर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	ध	मकर	कुम्भ	मीन
१	चर आदि	चर	स्थिर	द्वि.स्वभाव	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०
२	विषम-सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
३	पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
४	क्रूर-सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
५	वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
६	तत्त्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल
७	दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
८	स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
९	रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	गुलाबी	चित्र-वि.	काला	कबरैला	पीला	कबरैला	कबरैला	मछली का रंग
	अन्य मत– (बृ. जा.)	"	"	शुकवत हरा	पाटल	थोड़ा सफेद	अनेक रंग	कृष्ण	सुवर्ण सम	"	चित्त-कबरा	न्योले का रंग	
	(सर्व चि०)	"	"	श्याम हरित	रक्त	धूम्र धूम्र	"	"	"	सुनहरा	फोका पीला	बिल्ली सा	श्वेत
१०	उदय	पृष्ठोदय	पृ०	शीर्षो०	पृ०	शीर्षो०	शी०	शी०	शी०	पृ०	पृ०	शी०	उभयोदय
	अन्यमत(फलदी.)	"	"	उभयोदय	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	(सर्व चि०)	"	"	पृष्ठो०	"	"	"	"	"	"	"	"	"

क्रम	गुणधर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
११	ह्रस्व दीर्घ	सम	सम	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व
	(जा०भरण)	ह्रस्व	ह्रस्व	"	"	"	"	"	"	सम	सम	"	"
१२	शुष्कादि	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	जल
	(मध्य परा०)	निर्जल	सजल	निर्जल	"	निर्जल	"	"	निर्जल	निर्जल	"	"	"
१३	रुक्ष स्निग्ध	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रूक्ष	रू०	स्नि०	स्नि०	रू०	रू०	स्नि०	स्नि०
१३	पूर्ण आदि	पावजल	अर्धजल	निर्जल	पूर्णजल	निर्जल	निर्जल	पावजल	पावजल	अर्धजल	पूर्णज.	अर्धजल	पूर्णजल
१५	गुण	रज	रज		सत	सत		रज	तम	सत	तम	तम	सत
१६	बली	रात्रिब०	रात्रि०	रात्रि०	रात्रि०	दिन०	दिनबली	दिन०	दिन०	रात्रि.	रात्रि०	दि०	दिनरात्रि की संधिमें
१७	प्रकृति	पित्त	वात	सम (त्रिधातु)	कफ	पित्त	वात	सम (त्रिधा.)	कफ	पित्त	वात	सम (त्रिधातु)	कफ
१८	शरीर	बड़ा		समान	मोटा	बड़ा	मध्यम	मध्यम	छोटा	समान	बड़ा	मध्यम	मध्यम
१९	शब्द	सशब्द	सशब्द	सशब्द	शब्द रहित	सशब्द		शब्द रहित	शब्द रहित	सशब्द	अर्ध शब्द	अर्ध शब्द	शब्द रहित
२०	पद	४ पैर	४ पैर	२ पैर	बहु पद	४ पद	२ पद	२ पद	बहु पद	आदि २ अंत ४	आदि ४ अंतअपद	२ पद	अपद
	अन्य०	चौपाया (पशु)	चौपाया (पशु)	मनुष्य	कीट जलचर	चौपाया (पशु)	मनुष्य	मनुष्य	सरीसृप रेंगनेवाला	पू.नर उ०पशु	पू. पशु उ.जल	पूर्वमनुष्य उ०ज०	जलचर

क्रम	गुणधर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
२१	निवास	वनचारी	ग्राम वास	ग्राम और वृज में	वन	पर्वत	पर्वत	वैश्य घर	जल और भूमि में	राजगृह	भूमि	जलमें	जल
	फल दीप मत	वन	जल के नीचे की भूमि या चरागाह	शयन गृह	जल स० जमीन की चौड़ी दरार	पहाड़	जमीन जिसमें जल और अन्नहो	,,	छेद या पोल	,,	जलसे लगा जंगल	कुम्हार की जगह	जल
२२	सन्तान	अल्प या वन्ध्या	मध्य	अल्प या वन्ध्या	बहु	अल्प या वन्ध्या	अल्प या वन्ध्या	मध्य	बहु	मध्य	अल्प या वन्ध्या	मध्य	बहु
	अन्य	अल्प	मध्य	मध्य	बहु	अल्प	अल्प	अल्प	बहु	अल्प	अल्प	मध्य	बहु
२३	दिन में	अंध	अंध	मध्य	बहु	अल्प	अल्प	बधिर	बधिर	अल्प	अल्प	पंगु	बहु
	रात में			अंध		अंध	अंध			धन	बधिर		पंगु
२४	प्लव संज्ञा (नीचोन्मुख)	दक्षिण	आग्नेय	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	आग्नेय	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान
२५	द्वार बहिः	द्वार	बहिः (बाहर)	गर्भ (भीतर)	द्वार	बहिः	गर्भ	द्वार	बहिः	गर्भ	द्वार	बहिः	गर्भ
२६	धातु मूल	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव
२७	देश	पाटल	कर्नाट (मैसूर)	चेरा	चोल	पाण्ड्य (त्रि.प.)	केरल (त्रा.को.)	कोल्लास	मलय	सैंधव (सिंध)	पंचाल	यवन	कोश

उपयोग :—जातक का स्वभाव, गुण आदि जानने को या खोये हुए द्रव्य आदि के बताने में काम आता है ।

राशियों का स्वभाव

१ मेष—साहसी, अभिमानी, मित्रों पर कृपा रखने वाला। यह पहले नवांश में अपने स्वभाव को विशेष रूप से प्रकट करता है। यह पाटल देश का स्वामी है।

२ वृष—स्वार्थी, समझ-बूझ कर काम करने वाला, परिश्रमी; सांसारिक कार्यों में दक्ष, पंचम नवांश में यह स्वभाव पूर्ण रूप से प्रगट होता है। कर्नाटक (मैसूर) आदि देशों का स्वामी है।

३ मिथुन—विद्याध्ययनी, शिल्पी. पंचम नवांश में पूर्ण प्रभाव प्रकट हो। यह चेरा देश का स्वामी है।

४ कर्क—सांसारिक उन्नति में प्रवृत्ति, लज्जावान, कार्य करने में स्थिरता, समय अनुयायी का सूचक है। पहले नवांश में पूर्ण प्रभाव हो। चोल देश का स्वामी।

५ सिंह—मेष के समान स्वभाव, परन्तु स्वतंत्रता प्रेमी और उदार चित्त। पंचम नवांश में पूरा प्रभाव। पांड्य देश, त्रिचनापल्ली, मदुरा, तंजौर, विजगापट्टम आदि का स्वामी।

६ कन्या—मिथुन का-सा स्वभाव, परन्तु अपनी उन्नति और मान पर पूर्ण ध्यान, नवम नवांश में पूर्ण प्रभाव, केरल, (त्रावनकोर) देश का स्वामी।

७ तुला—विचारशील, ज्ञानप्रिय, कार्यसम्पन्न और राजनीतिज्ञ। पहले नवांश में पूर्ण प्रभाव। कोल्लास देश का स्वामी।

८ वृश्चिक—दंभी, हठी, दृढ़-प्रतिज्ञ, स्पष्टवादी, निर्मल चित्त। पंचम नवांश में पूरा प्रभाव। मलय देश (त्रिचनापल्ली और कोयंबटूर) का स्वामी।

९ धन—अधिकार-प्रिय, करुणामय, मर्यादा का इच्छुक। नवम नवांश में पूरा प्रभाव। सैंधव (सिंध) देश का स्वामी।

१० मकर—उच्च पदाभिलाषी। प्रथ नवांश में पूरा प्रभाव। पंचाल देश (उत्तर प्रदेश का मध्य भाग) का स्वामी।

११ कुम्भ—विचारशील, शांत चित्त से नई बात पैदा करने वाला, धर्मारूढ़, पंचम नवांश में पूर्ण प्रभाव। यवनदेश (कश्मीर से काबुल तक) का स्वामी।

१२ मीन—स्वभाव उत्तम, दानी, कोमल चित्त। नवम नवांश में पूर्ण प्रभाव। कौशल देश (संयुक्त प्रान्त का पूर्व भाग जिसकी राजधानी अयोध्या थी) का स्वामी।

द्रव्य आदि के ज्ञान में राशियों का अंश

राशि—	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
अंश—	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०	३६	३२	२८	२४	२०

ये केवल नष्टादि द्रव्य चिंता, द्रव्य परिज्ञान, पुरुष अवयव ज्ञान आदि के लिये हैं। इसे पूर्वार्द्ध के ५-६-७-८-९-१० को × ४० पल = २००-२४०-२८०-३२०-३६०-४०० पल लेना

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
,,	मीन	कुम्भ	मकर	धन	वृश्चिक	तुला
पल	२००	२४०	२८०	३२०	३६०	४००

उपयोग :—राशि की छुटाई-बड़ाई के अनुसार शरीर के अंग की छुटाई बड़ाई कालांग संबंध से अनुमान करना।

चंद्र की राशि के अंशानुसार शुभाशुभ विचार

राशि–	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ अंश–	२१	१४	१८	८	१९	९	२४	११	२३	१४	१९	९
अशुभअंश–	८	२५	२२	२२	२१	१	४	२३	१८	२०	२०	१०

चंद्र के अंश मुहूर्त और जन्मकाल में जो अशुभ बताये हैं वे मरण तुल्य सूचक हैं! वे मुहूर्त पुष्कर नाम के हैं जो जन्म और मुहूर्त में शुभसूचक हैं जैसे जन्म चन्द्र मेष के ८वें अंश पर हो उसका ८वें वर्ष मरण या अरिष्ट विचारना। इसी प्रकार दूसरी राशियों का भी विचारना।

किसी राशि से ४-८-१२ की राशि अशुद्ध अर्थात् खराब होती है। जैसे :—

इन राशि वालों को	ये राशियां अशुद्ध हैं	इन अशुभ स्थानों में चन्द्र हो
१– ५– ९	४–८– १२	तो उक्त राशि वालों को शुभ
२– ६– १०	५–९– १	कार्य करना वर्जित है। अर्थात्
३– ७– ११	६–१०– २	वह समय खराब समझना।
४– ८– १२	७–११– ३	

शून्य राशि (इन महीनों में ये राशियां हों तो अशुभ हैं)

राशि—कुम्भ,	मीन,	वृष,	मिथुन,	मेष	कन्या
मास—चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
राशि—वृश्चिक,	तुला,	धन,	कर्क,	मकर,	सिंह
मास—आश्विन,	कार्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन

शून्य लग्न (इन तिथियों में ये लग्न अशुभ हैं)

तिथि—प्रतिपदा	तृतीया	पंचमी	सप्तमी	नवमी	एकादशी	त्रयोदशी
लग्न—७–१०	५–१०	३–६	४–९	४–५	९–१२	२–१२

तारक-मारक राशि

(१) मेष, सिंह, धन–ये परस्पर सहायक राशि हैं। इन राशियों में यदि बलवान् ग्रह हो तो मनुष्य सत्ताधारी होता है। ये महत्त्वदर्शक, उत्कर्षदायक, उच्च-नीच स्थिति निर्माण करने वाली हैं।

(२) वृष, कन्या, मकर–ये सामान्य राशि हैं। इस राशियों वाले स्वार्थी होते हैं। इस राशि वाले से उच्च कोटि के सार्वजनिक कार्य होना बहुधा असम्भव है।

(३) मिथुन, तुला, कुम्भ–ये राशि बौद्धिक हैं। ये राशियाँ प्रगति की दृष्टि से सामान्यतः स्थिर हैं परन्तु चिकित्सक एवं वाद-विवाद करने की दृष्टि से उत्तम हैं।

(४) कर्क, वृश्चिक, मीन–इन राशियों वाले सार्वजनिक आंदोलन में भाग लेने वाले, समाज पर प्रभाव रखने वाले, नेता, मार्गदर्शक, सलाहकार, चतुर मनुष्यों की अनुकूलता प्राप्त करने वाले, स्वतन्त्र वृत्ति वाले एवं मार्मिक ग्रन्थकर्त्ता होते हैं।

इन राशियों में चन्द्र स्थित हो और अन्य ग्रहों की युति या दृष्टि न हो तभी इनका फल मिलना सम्भव है। अन्यथा कुछ अन्तर पड़ जाता है।

अभिजित् संज्ञक राशि–सूर्य जिसमें हो उससे चौथी राशि अभिजित् संज्ञक है।

द्वार राशि–जिस राशि की दशा वर्तमान हो वह द्वार राशि है।

बाह्य भोग्य–प्रथम दशापति राशि से द्वार राशि जितनी संख्या पर वर्तमान हो द्वार से उतनी संख्या गिनने पर जो राशि मिले वह बाह्य राशि है। बाह्य को भोग्य राशि भी कहते हैं।

जन्मराशि–जन्म समय चन्द्र जिस राशि पर हो वह जन्म राशि कहलाती है।

चक्रार्द्ध–१२ राशि का एक चक्र होता है। इसके २ भाग पूर्वार्द्ध और परार्द्ध हैं।

पूर्वार्ध–मेष से कन्या तक **उत्तरार्ध**–तुला से मीन तक।

विलोम-गणना से–७ से १२–पूर्वार्ध, १ से ६–उत्तरार्ध।

भसंधि–ऋक्ष संधि–वृश्चिक, मीन, कर्क।

राशि प्रभाव से रोग एवं विशेष परिस्थिति से मृत्यु

(१) **मेष**–उष्णता, जठराग्नि या पित्त ज्वर से मृत्यु।
(२) **वृष**–त्रिदोष से, अग्नि या शस्त्र से।
(३) **मिथुन**–जुकाम, श्वास, शूल से।
(४) **कर्क**–पागलपन, वातरोग, अरुचि से।
(५) **सिंह**–जंगली पशु, ज्वर, व्रण या शत्रु से।
(६) **कन्या**–स्त्रियों द्वारा, वीर्य संबंधी रोग से, ऊँचे से पतन से।
(७) **तुला**–सन्निपात, मस्तिष्क ज्वर से।
(८) **वृश्चिक**–पांडु रोग, संग्रहणी, तापतिल्ली के रोग से।
(९) **धनु**–वृक्ष, जल, काष्ठ या शस्त्र से।
(१०) **मकर**–पेटदर्द, मंदाग्नि, भ्रम से।
(११) **कुम्भ**–कफ, ज्वर और क्षय से।
(१२) **मीन**–जल में डूब कर या कोई जल के रोग से (जैसे जलोदर)।

लग्न से अष्टम गिनने पर जो राशि वहाँ हो उसके बुरे प्रभाव से उपरोक्त प्रकार से मृत्यु हो या अष्टमेश के नवांश की राशि के बुरे प्रभाव से उपरोक्त फल हो।

नवांश के अनुसार सम-विषम विचार से राशि की धातु-जीव संज्ञा

विषम राशि में—प्रथम नवांश से आरम्भ कर धातु मूल जीव क्रम से ३ आवृत्ति,
सम राशि में— „ „ „ जीव मूल धातु इस क्रम से ३ आवृत्ति से
वर्तमान नवांश तक गिनना।

विषम राशि—क्रूर और पुरुष राशि है—इसमें जन्मा—तेजस्वी होता है।
सम राशि—सौम्य और स्त्री „ — „ „ —मृदु होता है

लग्न स्वामी की दिशा—कहने का तात्पर्य यह है कि लग्नेश जिस दिशा में बलवान् हो उसी दिशा में लाभ होता है या प्रश्न काल में नष्ट वस्तु भी उसी दिशा में मिलती है।

शास्त्रीय राशि—मिथुन तुला कुम्भ।

राशि मैत्री—(१) अग्नि और वायु राशि आपस में मित्र हैं।
(२) भूमि और जल „ „ „
(३) इसमें १ और २ की आपस में शत्रुता है।
(४) पुरुष राशि की पुरुष और स्त्री राशि की स्त्री राशि से मित्रता है।

रात्रि बली राशि—पृष्ठोदय और मिथुन जिनका संबंध चन्द्र से है।
दिन बली „ —शेष ६ राशि जिनका संबंध सूर्य से है।

गत सूर्य की राशि से ४ राशियाँ क्रम से गिनने पर
(१) ऊर्ध्व—ऊपर की ओर
(२) अधः—नीचे की ओर इसी प्रकार क्रम से शेष ८
(३) सम—बराबर जग़ह और राशियों को समझो।
(४) वक्र—नवी जगह

शीर्षोदय राशि में प्राप्त ग्रह—दशा के आदि में फल देते हैं।
पृष्ठोदय „ „ — „ अन्त में „ „
उभयोदय „ „ — „ सदा „ „

नक्षत्र और उनके भिन्न भिन्न नाम

१ अश्विनी—तुरंग, दस्र, अश्वियुग, हय
२ भरणी—कृतांत, ग्राम्य
३ कृत्तिका—हुताशन, अग्नि, बहुला
४ रोहिणी—विधि, विरिंचि, शकट
५ मृगशिर—सौम्य, चान्द्र, अग्रहायणी, उडुप
६ आर्द्रा—तारका, रौद्र
७ पुनर्वसु—अदिति, सुरजननी
८ पुष्य—तिष्य, अमरेज्य
९ श्लेषा—आश्लेषा, अहि, भुजंग

१० मघा—पितृ, जनक

११ पूर्वा फाल्गुनी—फल्गुनी, भाग्य

१२ उत्तरा फाल्गुनी—अर्यमा, उत्तर, भग

१३ हस्त—भानु, अरुण, अर्क

१४ चित्रा— त्वष्टा, सुरवर्धकि

१५ स्वाती—मरुत, वात, समीरण, वायु, समीर

१६ विशाखा—द्विदैवत, इन्द्राग्निक, शूर्पक

१७ अनुराधा—मैत्र

१८ ज्येष्ठा—कुलिश तारा, शतमख, सुर स्वामी

१९ मूल—असुर, क्रतुभुज

२० पूर्वाषाढ़ा—पयः, सलिल, जल, तोय

२१ उत्तराषाढ़ा—विश्व

२२ श्रवण—श्रोणा, विष्णु, हरि, श्रुति

२३ धनिष्ठा—श्रविष्ठा, वसु

२४ शतभिषा—प्रचेतः, शत तारका, वरुण

२५ पूर्व भाद्रपद—अजैकपाद, अजपात, पूर्व प्रोष्ठपद

२६ उत्तर भाद्रपद—अहिर्बुध्न्य, उत्तरा, प्रोष्ठपात्

२७ रेवती—पूषा, पौष्ण

नक्षत्र २७ हैं उनके १०८ चरण हैं।

ज्योतिष चक्र दिन में एक बार पूर्व से पश्चिम घूमता है। इस चक्र में रवि चंद्र शनि आदि ग्रह पश्चिम से पूर्व को घूमते हैं।

नक्षत्र स्वामी और भेद

क्रम नक्षत्र	स्वामी	चरादि	मुख	लोचन	फल	योनि	वैर-योनि	गण	नाड़ी
१ अश्विनी	अश्विनी कुमार	क्षिप्र	तिर्य	मंद	शुभ	अश्व	भैंस	देव	आद्य
२ भरणी	यमराज	क्रूर	अधो	मध्य	नाश	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
३ कृतिका	अग्नि	मिश्र	अधो	सुलोचन	नाश	मेढ़ा	वानर	राक्षस	अंत्य
४ रोहणी	ब्रह्मा	ध्रुव	ऊर्ध्व	अंध	सिद्धि	सर्प	नकुल	मनुष्य	अंत्य
५ मृग	चंद्र	मृदु	तिर्य	मन्द	शुभ	सर्प	नकुल	देव	मध्य
६ आर्द्रा	रुद्र	तीक्ष्ण	उध्व	मध्य	शुभ	श्वान	हिरण	मनुष्य	आद्य
७ पुनर्वसु	अदिति	चर	तिर्य	सुलो	मध्य	बिल्ली	मूषक	देव	आद्य
८ पुष्य	बृ. पति	क्षिप्र	उर्ध्व	अंध	शुभ	मेढ़ा	वानर	देव	मध्य
९ श्लेषा	सर्प	तीक्ष्ण	अधो	मंद	श. क	बिल्ली	मूषक	राक्षस	अंत्य
१० मघा	पितर	क्रूर	अधो	मध्य	नाश	मूसा	बिल्ली	राक्षस	अंत्य
११ पूफा०	भग.	क्रूर	अधो	सुलो	नाश	मूसा	बिल्ली	मनु.	मध्य
१२ उ.फा.	अर्यमा	ध्रुव	ऊर्ध्व	अंध	विद्या	गाय	व्याघ्र	मनु.	आद्य
१३ हस्त	सूर्य	क्षिप्र	तिर्य	मंद	ल०	भैंस	अश्व	देव	आद्य
१४ चित्रा	विश्वक.	मृदु	तिर्य	मध्य	शुभ	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
१५ स्वाती	वायु	चर	तिर्य	सुलो०	अशुभ	भैंस	अश्व	देव	अंत्य
१६ विशाखा	इन्द्र.अ	मिश्र	अधो	अंध	अशुभ	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
१७ अनु०	मित्र	मृदु	तिर्य	मंद	सद्धि	हिरण	श्वान	देव	मध्य
१८ ज्येष्ठा	इन्द्र	तीक्ष्ण	तिर्य	मध्य	नाश	हिरण	श्वान	राक्षस	आद्य
१९ मूल	राक्षस	तीक्ष्ण	मध्य	सुलो०	हानि	श्वान	हिरण	राक्षस	आद्य
२० पू. षा.	ल	क्रूर	अधो	अंध	हानि	वानर	मेढ़ा	मनुष्य	मध्य
२१ उ. षा.	विश्वेदे.	ध्रुव	अधो	मन्द	शुभ	नकुल	सर्प	मनुष्य	अंत्य
२२ अ भ.	ब्रह्मा	क्षिप्र	ऊर्ध्व	मध्य	शुभ	नकुल	सर्प	मनुष्य	अंत्य
२३ श्रवण	विष्णु	चर	,,	सुलो०	शुभ	वानर	मेढ़ा	देव	अंत्य
२४ धनिष्ठा	वसु	चर	ऊर्ध्व	अंध	सुख	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
२५ शत०	वरुण	चर	ऊर्ध्व	मन्द	कल्या.	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
२६ पू. भा.	अज.च.	क्रूर	ऊर्ध्व	मध्य	नाश	सिंह	गज	मनुष्य	आद्य
२७ उ०भा.	अहिबु.	ध्रुव	अधो	सुलो०	शुभ	गो	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
२८ रेवती	पूषा [सूर्य]	मृदु	ऊर्ध्व	अंध	शुभ	गज	सिंह	देव	अंत्य

नक्षत्र की धातु-मूल-जीव संज्ञा

नक्षत्रों की अश्विनी आदि नक्षत्र के क्रम से धातु मूल और जीव संज्ञा होती है।

१ ध्रुव व स्थिर नक्षत्र--उ. फा, उ. षा; उ. भा., रोहिणी व रविवार। ये मृदु नक्षत्र के बराबर हैं। इनमें नगर-प्रवेश, राज्याभिषेक, बगीचा आदि लगाना शुभ है।

२ चर व चल नक्षत्र--स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष और सोमवार। लघु नक्षत्र भी इनके बराबर हैं। इनमें सब प्रकार के घोड़ा आदि वाहन, बाग-बगीचा लगाना, पालकी-रथ आदि में बैठने का कार्य करना शुभ है।

३ क्रूर व उग्र–पू.फा; पू.षा., पू.भा. भरणी, मघा और मंगलवार। दारुण नक्षत्र भी इनके बराबर हैं। इनमें शठत्व करना, नाश करना, विष देना, बंधन, उत्साह, शस्त्र चलाना आदि कार्य होता है।

४ मिश्र व साधारण–विशाखा, कृत्तिका और बुधवार। उग्र नक्षत्र भी इनके बराबर हैं। अभिषेक, खेत में बीज बोना, ग्राम, नगर-प्रवेश, बाग-वृक्ष लगाना, शान्ति कर्म आदि इनमें होता है।

५ क्षिप्र व लघु–हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, और गुरुवार। चर नक्षत्र भी इनके बराबर हैं। व्योहार, भूषणधारण, कलाकौशल, क्रीड़ा, औषधि देना-लेना, ज्ञानविद्या, सुधारणपना, स्नान करना इनमें होता है।

६ मृदु व मैत्र–मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार। मित्राचारी, स्त्री-संग, वस्त्र-धारण, गायन-वादन विद्या, नाना प्रकार का मंगल-कार्य, सुखप्राप्ति इनमें करना।

७ तीक्ष्ण व दारुण–मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार। भूतादिक पीड़ा निवारण करना, द्रव्य काढ़ना, मंत्र साधना, बंधन, भेद करना, बध करना, ये कार्य इसमें करना।

अंधादि लोचन नक्षत्र

१ अन्ध लोचन–धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी पू.षा. विशाखा; उ.फा. रेवती–शीघ्र मिले।

२ मंद लोचन–हस्त, उ.षा., अनुराधा, शतभिष, श्लेषा, अश्विनी, मृग–बड़े उपाय से मिले।

३ मध्य लोचन–आर्द्रा, मघा, पू.भा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, भरणी–दूर से सुन पड़े, मिले नहीं।

४ सुलोचन–स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृतिका, उ.भा., पू.भा., मूल,पू. भा.–किसी प्रकार न मिले।

१ अधोमुख नक्षत्र–मूल, कृत्तिका, मघा, विशाखा, भरणी, आश्लेषा, पूर्वफाल०, पूषा. पू. भा.—इनमें बावड़ी, कुआँ, तालाब, खाई आदि खोदना, द्रव्य काढ़ना और रखना, जुआ खेलना, बिलान्तःप्रवेश, गणितारंभ करना।

२ तिर्यङ्मुख–ज्येष्ठा, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, मृग, रेवती, अनुराधा, स्वाती, चित्रा। इसमें हाथी, बैल, घोड़ा आदि लेना, नाव पानी में डालना, यंत्र हल आदि चलाना, धारण करना, गमन आदि करना।

३ ऊर्ध्व मुख–पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, उत्तराफा०, उ. षा., उ. भा, शतभिष, रोहिणी, धनिष्ठा। इनमें देवस्थान, ध्वजा, मंडप, घर, कोट, भीति, तोरण, राज्याभिषेक आदि करना।

ताराविचार (जन्म नक्षत्र से तारा विचारना)

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक ३ आवृत्ति से तारा सिद्ध होता है। जिस दिन तारा विचारना हो जन्म नक्षत्र से उस दिन तक गिनकर ९ का भाग देना तो शेषतारा इस प्रकार होगा—

दोष	१	२	३	४	५	६	७	८	९
जन्म नक्षत्र से संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
जन्म तारा नाम	जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	बध	मित्र	अति मित्र
फल	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

अन्य मत :—(सर्व० चिंतामणि)

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९
स्वामी	सूर्य	बुध	राहु	गुरु	केतु	चंद्र	शनि	शुक्र	मंगल
फल	ताप	कांति	हानि	धारण	लय	कीर्ति	हानि	प्रसन्नता	मृत्यु

नक्षत्र दो प्रकार के हैं

(१) दिन नक्षत्र—प्रतिदिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है वह दिन नक्षत्र है।

(२) सूर्य नक्षत्र—जिस नक्षत्र पर सूर्य हो वह सूर्य नक्षत्र है।

इसी प्रकार कोई ग्रह जिस नक्षत्र पर हो वह उस ग्रह का नक्षत्र है।

नक्षत्र भाव वृद्धि—जो नक्षत्र ६० घड़ी पूर्ण होकर दूसरे दिन चला जावे और दूसरे दिन का स्पर्श हो जावे अर्थात् घटिकाओं में जो नक्षत्र पड़ता है उसे भाव-वृद्धि कहते हैं।

फल—ऐसे नक्षत्र में जन्म हो तो जातक की श्री अर्थात् शोभा, आयु, नैरुज्यता होती है।

तिथि आदि में भी ऐसा ही फल विचारना।

क्षय नक्षत्र या क्षय तिथि फल — इसमें जातक के उक्त फल का क्षय होता है।

लग्न नक्षत्र और तिथि फल में कौन बड़ा है.

तिथि फल	नक्षत्र फल	लग्न फल	इन सब के समूह से
१ गुना	१० गुना	लक्ष गुना	फल आदि विचारना।

●

अध्याय २

१२ भाव और उनके गुणधर्म

भावों के भिन्न-भिन्न नाम

(१) लग्न—होरा, तनु, मूर्ति, उदय, सिर, कल्प, देह, रूप, शीर्ष, वर्तमान, जन्म, आत्मा, अंग, वपु, आद्य, केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, प्रथम।

(२) धन—वाक, वित्त, कुटुम्ब, नेत्र, विद्या, स्व, अन्नमान, मुक्ति, दक्षाक्षि, आस्य, पत्रिका, अर्थ, कोष, स्वधन, द्रव्य, स्वयं, पणफर, द्वितीय।

(३) सहज—सहोत्थ, दुश्चिक्य, गल, उरस, दक्षिण कर्ण, सेना, धैर्य, साहस, विक्रम, भ्रातृ, पराक्रम, आपोक्लिम, उपचय, बाहु, तृतीय ।

(४) सुहृद—शौर्य, कर्ण, सुख, अम्बु, रसातल, गेह, क्षेत्र, मातुल, भागिनेय, बन्धु, मित्र, राज्य, गौ, महिष, सुगन्ध, वस्त्र, भूषण, हिबुक, सेतु, नदी, गृह, यान केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, चतुर्थ ।

(५) सुत—बुद्धि, प्रभाव, आत्मज, मंत्र, विवेक, शक्ति, उदर, राजांक, सचिव, कर, आत्मन, धी, असु, जठर, श्रुति, स्मृति, प्रवेश, पुत्र, प्रतिभा, विद्या, तनय, पाक स्थान, तनुज, प्रतिष्ठा, त्रिकोण, पणफर, पंचम ।

(६) रिपु—रोग, क्षत, अरि, व्यसन, चोर-स्थान, विघ्न, ऋण, अस्त्र, शत्रु, ज्ञाति, आजि, दुष्कृत्य, अघ, भीति, अवज्ञा, द्वेष, वैरि, आपोक्लिम, उपचय, त्रिक, षष्ठ ।

(७) जाया—चित्तोत्थ, काम, मदन, कलत्र, दघि, सूप, यामित्र, जामित्र, मद, अस्त, द्युन, अध्वन, लोक, मार्ग, भार्या, पति, स्मर, भर्ता, स्त्री, पत्नी, द्यून, केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, सप्तम ।

(८) मृत्यु—क्षीर, गुण, मूत्रकृच्छ्र, गुह्य, रंध्र, मांगल्य, मलिन, आधि, पराभव, आयुष्य, क्लेश, अपवाद, मरण, अशुचि, विघ्न, दास, अंतक, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लयस्थान, पणफर, त्रिक, अष्टम ।

(९) धर्म—दया, भाग्य, गुरु आचार्य, दैवत, पितृ, शुभ पूर्णभाग्य, पैतृक, तप, लाभ, मार्ग, आपोक्लिम, त्रिकोण, नवम ।

(१०) कर्म—आज्ञा, मान, आस्पद, ख, व्यापार, जय, सत, कीर्ति, क्रतु, जीवन, व्योम, आचार, गुण, प्रवृत्ति, गमन, मेषूरण, कर्म्य, तात, नभ, गगन, अम्बर, मध्य, राजा, राजपद, मानकर्म, केन्द्र, कंटक, चतुष्टय, उपचय, राज्य, दशम ।

(११) आय—लाभ, आगमन, आप्ति, सिद्धि, विभव, प्राप्ति, भव, श्लाघ्यता, ज्येष्ठ भ्राता या बहिन, वामकर्ण, सरस, संतोषमाकर्णन, आगम, सर्वतोभद्र, पणफर, उपचय, लब्धि, एकादश ।

(१२) व्यय—अंत्य, रिष्फ, विनाश, लग्नांत, खंड, दुःख, अंघ्रि, वामनयन, क्षय, सूचक, दारिद्र्य, पाप, शयन, रिःफ, बंध, रिष्फ, प्रान्त्य, अंतिम, आपोक्लिम, त्रिक, द्वादश ।

केन्द्र आदि संज्ञा

लग्न से केन्द्र पणफर आपोक्लिम आदि गिनी जाती है ।

(१) केन्द्र, कंटक, चतुष्टय या भद्र—१, ४, ७, १० भाव ।

(२) उपचय या चय—३, ६, १०, ११, भाव ।

गर्ग कहते हैं कि उपचय में से किसी भाव पर पापग्रह या शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो उपचय संज्ञा नहीं रहती । वाराह मिहिर इसे नहीं मानते ।

(३) पणफर—(केन्द्र से दूसरा घर)—२, ५, ८, ११ भाव।

(४) आपोक्लिम (केन्द्र से तीसरा घर)—३, ६, ९, १२ भाव।

(५) त्रिकोण—५, ९ भाव ये शुभ स्थान हैं। शुभ संज्ञक हैं।

त्रिकोण १, ५, ९ भाव है, परन्तु १ भाव लग्न है इससे ५, ९ भाव को ही विशेषतः त्रिकोण कहते हैं।

अन्य मतसे:—कलि में वलवान शनि राहु केतु के ३–६ त्रिकोण स्थान हैं।

सूर्य, मंगल के १०-११ तथा ५-९ त्रिकोण स्थान हैं।

(६) त्रित्रिकोण—९ वाँ स्थान।

(७) चतुरस्त्र—४, ८, स्थान।

(८) त्रिक, दुःस्थान या दुष्ट स्थान—६, ८, १२ भाव।

ये बुरे स्थान हैं शेष स्थान अच्छे हैं।

(९) लीन स्थान—३, ६, ८, १२ स्थान।

(१०) त्रिषणाय—३-६-११ स्थान।

(११) वेशि स्थान—जिस घर में सूर्य हो उससे दूसरा स्थान।

यात्रा में वेशि स्थान को लग्न मान कर प्रस्थान करे तो शुभ होता है। वेशि स्थान में शुभग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शीघ्र शुभ फलदायक होता है।

(१२) वृद्धि स्थान—१, ३, ९ स्थान।

(१३) शुभ स्थान—जब ग्रह लग्न या अन्य स्थान से ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थान में होते हैं तो वे अच्छा फल देते हैं।

(१४) नाश स्थान—८-१२ स्थान।

(१५) पाप गृह—(घर)—पाप ग्रह के स्वस्थान पापगृह कहलाते हैं।

(१६) शुभ गृह(घर)—शुभ ग्रह के स्वस्थान शुभ गृह कहलाते हैं।

(१७) मारक स्थान—२, ७ भाव।

१— शुभ स्थान—१, ४, १० भाव (तीन केन्द्र) और ५, ९ भाव (त्रिकोण) ११वाँ भाव-शुभ है।

१—सामान्य स्थान—तीसरा भाव। यह न शुभ है और न अशुभ।

दूसरा और सातवाँ स्थान शुभ ग्रह की स्थिति से सामान्य हो जाते हैं।

२—अशुभ स्थान—२ और ७ भाव में यदि अशुभ ग्रह हों तो ये घर भी अशुभ हो जाते हैं। ६, ८, १२ स्थान सदा अशुभ हैं।

उपचय (३-६-१०-११ घर) दुष्ट स्थान (६-८-१२ घर) पर विचार

यहाँ यह आपत्ति है कि छठा घर कर्ज, रोग, शत्रु, का है यह उपचय है और दुष्ट स्थान भी है। पहिले बताया उपचय अच्छा और अन्त का दुष्ट स्थान बुरा है। उपचय में ग्रह अच्छे होते हैं और दुष्ट स्थान में बुरे होते हैं। यहाँ ६ को उपचय के लिये छोड़ देना चाहिये। ८-१२ घर दुष्ट स्थान लेना चाहिये जैसे त्रिकोण और

केन्द्र में दोनों में १ स्थान हैं परन्तु त्रिकोण में १ स्थान को छोड़ देते हैं केवल ५-९ घर ही त्रिकोण में लेते हैं। १ को केन्द्र में ले लेते हैं। ऐसा मत कुछ लोगों का है।

अदृश्य खंड—अनुदित खंड, लग्न के भोग्यांश से सप्तम के भुक्तांश तक।
दृश्य खंड—उदित खंड, सप्तम के ,, लग्न के ,, ,,
पूर्वार्द्ध—दशम के भोग्यांश से चतुर्थ के भुक्तांश तक
पश्चिमार्द्ध—चतुर्थ के ,, दशम ,, ,,

किस भाव से क्या क्या विचारना

(१) लग्न से—शरीर सम्बन्धी सब विचार होता है। रूप, काला, गोरा आदि वर्ण (शरीर का रंग), शरीर की दुर्बलता पुष्टता, शारीरिक गठन, आकृति तिल मसा आदि चिह्न, शरीर के लघु दीर्घ आदि का ज्ञान, तेज आचरण, शांत क्रूर आदि स्वभाव, गुण, शील, यश (कीर्ति), शरीर का बल (पराक्रम), साहस, अहंकार, अज्ञान, निन्दा, शरीर का शुभाशुभ, बाल यौवन आदि अवस्था, आयु प्रमाण, जाति (कुल), सुख-दुःख आत्मा, आरोग्यता, स्थान प्रवास, सम्पत्ति, मस्तक और माता-पिता के देह आदि का इससे विचार होता है।

(२) धन भाव—से धन धान्य का विचार, धन की सिद्धि, सुवर्ण आदि वस्तुओं का क्रय-विक्रय, रत्न और कोष (खजाना) का संग्रह, मोती, सोना, चाँदी, रत्न और लोहा, सीसा आदि धातु का विचार, पूर्व अर्जित द्रव्य का विचार, स्वयं उपार्जित द्रव्य या पितृ-सम्बन्धी द्रव्य का विचार। पुरुष का सुख, भोग आदि, सौभाग्य, सत्यता-असत्यता, रुचि का विचार, खाने के पदार्थ द्रव्य (भोजन के प्रकार), पात्र और वस्त्र का विचार, मुख, जिह्वा (बोलने की शक्ति), चेहरा, नेत्र-विशेषतः दक्षिण नेत्र का शुभाशुभ, शरीर का दक्षिण अंग, साधारण विद्या, शिक्षा और भिन्न-भिन्न मन्त्र का विचार, क्रोध कापट्य आदि का विचार, अश्व कर्म, (अश्वज्ञान), पशु-पक्षी आदि धन संज्ञक वस्तु, निज कुटुम्ब, सेवक (नौकर), मित्र, शत्रु, मौसी, मातुल (मामा) और मृत्यु का विचार। इसका प्रभाव गर्दन, गला, कण्ठ व नेत्र पर पड़ता है।

(३) सहज भाव—इससे सगे भाई-बहन का विचार होता है। ज्येष्ठ और छोटे भाई का विचार, विशेष कर कनिष्ठ भ्राता भगिनी का विचार होता है। भाई बहिन की संख्या—कितने जियेंगे, कितने मरेंगे, भाई का सुख, दास-दासी, चाचा-ताऊ और उनकी पत्नी, मामा, भ्राता और पितृव्य, माता-पिता का मरण, नातेदार आस-पास के सम्बन्धियों का सुख असुख, विक्रम, पराक्रम (साहस), बल, सहन-शक्ति, धैर्य, स्वतः का स्वार्थ, चालाकी, दुष्ट बुद्धि, कन्दमूल आनि खाने के पदार्थों का सुख, कुभोजन, सुभक्ष, सुधा, क्रीडा, युद्ध, शरण, उपदेश, सहाय, आश्रय, पात्रता-अपात्रता, पत्रिक कर्म की हानि, भूषण, औषधियों का विचार, दीर्घ जीवन, आजीविका, व्यापार, उद्यम, यात्रा (मार्ग चलना), छोटी-छोटी रेल या बैलगाड़ी

आदि से प्रवास, कंठ, स्वर, वीर्य, अस्थि, गला, कर्ण, वस्त्र का विचार। इसका प्रभाव हाथ, बाहु, कंधा, हृदय और कर्ण-विशेष कर दक्षिण कर्ण पर होता है।

(४) सुहृद भाव—इष्ट मित्र, बंधु वर्ग (भाई बिरादर) आत्मबंधु, स्नेह बंधु, जाति, वंश, माता से प्राप्त दुःख सुख, माता का स्वभाव और आयुष्य, मातृ पक्ष का विचार माता का वक्षःस्थल, माता-पिता का विचार, ससुर, नानी, विविध मित्र, घरेलू स्त्री का सुख, दासियां, पिता की सम्पत्ति (पितृ सम्बंधी धन), निधि (भूमि गत द्रव्य), आयुष्य के अन्त के दिनों के सुख-दुख का विचार, स्थावर सम्पत्ति, ग्राम, घर, गौ, चौपाया, वाहन, बावड़ी, तालाब, कुँआ, वृक्ष, क्षेत्र, बगीचा, महौषधि, धरती का उद्यम, औषधि, रसायन शास्त्र के विषय, पाताल कर्म, भूमि शोधन, भू विद्या, खेती आदि भूमि कर्म, सुख, आनंद शयन सुख, समस्त छात्र, भोज्य पदार्थ, अपनी वृद्धि, सदाचार तथा धर्माचार, हृदय का साहस, हृदय का कापट्य, शिक्षा, विद्या, यश, वैभव, ज्ञान, मायावाद, पराजय, मनोगुण, मानसिक बातें, स्वतः का दुःख सुख, राज्य, राज्य-अनुग्रह, हस्त कौशल, वस्त्र, सुगन्ध, किताब, उद्यम, वित्त, विवर आदि प्रवेश, हृदय स्थान, कन्धा। इसका प्रभाव छाती, पेट पर पड़ता है।

(५) सुत भाव—बारह प्रकार के संतान का विचार, गर्भ की स्थिति, पिता का ज्ञान, विद्या, वुद्धि, यांत्रिक ज्ञान, बुद्धि का विस्तार, धारणा शक्ति (स्मरण शक्ति), बुद्धि की तीक्ष्णता, विवेचन शक्ति, नीति, विनय, व्यवस्था, प्रबंध, सलाह, गुप्त मंत्रणा, रक्षा, गोपनीयता, शील स्वभाव, चतुरता, ज्ञान, मेधा, शक्ति, तुष्टि, माहात्म्य, आत्मविद्या, बड़प्पन, पठन (अध्ययन), मन की प्रसन्नता, हर्ष, पांडित्य, श्रम, वाणी वंश वृद्धि, कला, आतिथ्य, देव भक्ति, यंत्र, मंत्र की सिद्धि, पुण्य कर्म, राज अनुग्रह धन उपाय, उद्योग, लाटरी सट्टे आदि में यश अपयश का विचार, अन्नदान भोजन, बाजा, शिल्पादि का भी विचार, उदर कर्म, उदर प्रवेश। यह उदर स्थान है। हृदय और उदर के बीच का भी प्रदेश है। हृदय का भो विचार होता है। इसका प्रभाव हृदय और पीठ पर भी होता है।

(६) रिपु भाव—शत्रुओं का समूह, होने वाली व्याधि (रोग), अरिष्ट, हानि, द्रव्यादि नाश, निराशा, दुःख व शोक, क्लेश, विघ्न द्वेष, मानसिक चिंता और दुःख, शंका, क्रूर कर्म (अशुभ कर्म), व्यसन, व्रण, विस्फोटक चोट आदि, व इनके चिह्न, संग्राम भय, चोर भय, बल सुख, भूमि, मौसिया और मौसी का शुभाशुभ, सौतेली माँ, स्वजातीय, पर आश्रय, गाय भैंस ऊँट गधा आदि चौपाया, षट् रस भोजन का मधुर आदि स्वाद, चटनी, नौकर, अपने नीचे काम करने वालों का विचार, ऋण (कर्ज) रुकावट, पापकर्म, नाभि और उदर भाग का भी विचार। यह पेट है। इसका प्रभाव अंतड़ी, नाभि और पेट पर होता है।

(७) जाया—स्त्री या स्त्री का पति, विवाह, स्त्री का आचार, स्त्रीसुख, स्त्री के शरीर का विचार इससे लग्न-वत् करे, मैथुन, काम-क्रीड़ा, शृङ्गार, व्यभिचार, स्त्रीसौभाग्य घरू आनंद उपभोग, स्त्री कलह, पुत्र सुख, जो पहिले पुत्र के दुःख-सुख का विचार

किया था सप्तम से भी विचार करना। पितामह, माता का ज्ञान, भाई का पुत्र (भतीजा), संग्राम का मैदान, जय कष्ट, वाद विवाद, अदालती झगड़े, कलह, साझेदारी, प्रगट स्पर्धा तथा प्रगट शत्रु का विचार। मार्ग गमन-आगमन, यात्रा का प्रमाण, मार्गभ्रंश; संपूर्ण यात्रा, व्यापार, व्यौहार, वाणिज्य क्रिया, उत्कर्ष, पदप्राप्ति उन्नति, इष्ट अर्थ का फल, चोरी की वस्तु, खोई हुई वस्तु का विचार, विस्मृति (भूल) का विचार, नष्ट धन की प्राप्ति या गुमा धन की प्राप्ति, तांबूल, पुष्प, गन्ध, संगीत दुग्ध, दधि मिठास, गाय, नदी, दाल, क्षार, रेत, गुदा, गुह्य, मूत्रेन्द्रिय, मूत्र और नाभि। सप्तम वस्ति संज्ञक है इसका प्रभाव वस्ति-मूत्रपिंड पर होता है। इसमें सभी ग्रह अशुभ माने जाते हैं।

(८) मृत्यु–आयु, मरण, व्याधि, रोग, रोगोत्पत्ति, मानसिक पीड़ा (मनोव्यथा), मरने का हेतु (कारण), मृत्यु स्थान, मृत्यु के सम्बन्ध से सब प्रकार का विचार, मरने के बाद गति, पूर्व जन्म और अग्रिम जन्म का वृत्तांत, निर्याण, जीवन का समय, अरिष्ट, दीर्घ जीवन, हानि (बरबादी), संकट, व्याधि की उन्नति में विचार, वस्तु का नाश, कलि, पाप, वध, व्याधि का उत्पन्न होना, पितृ ऋण, पूर्व संचित द्रव्य, आकस्मिक लाभ, दहेज (स्त्री द्वारा प्राप्त धन), परवाद भय, शत्रु का भय, रण, युद्ध समय क्षण संग्राम, पराजय, किले को घेरना, दुर्ग स्थान, शस्त्र तैयार करना, अत्यंत विषम मार्ग, अत्यंत भयंकर स्थान, छिद्र का देखना, छिद्र मार्ग, नौका, नदी पार करना, युद्ध काल की संख्या, बंधन, सजा, क्रूरता, अपमान, जय-पराजय, दुःख, व्यसन, टेढ़ीबात, उच्चपद पतन (पद हानि), अपघात (अचानक घटना), विपत्ति, भोजन का सुख, ज्येष्ठ बहिन का पुत्र। गुप्त अंग (जननेन्द्रिय), गुदा रोग,। इस का प्रभाव गुह्येन्द्रिय और प्रजा-उत्पादक इन्द्रिय पर होता है।

(९) **धर्मभाव**—(प्रारब्ध), भाग्योदय अर्थात भाग्य की वृद्धि, भाग्य की सिद्धि, वैभव, ऐश्वर्य, अदृश्य भाग्य। धर्म, अधर्म श्रद्धा, (धर्म के कार्यों में प्रीति या अप्रीति), धर्मानुष्ठान (धर्म कृत्य), मठ, देवगृह, वापी, कूप आदि समस्त धर्म क्रिया, तीर्थ-यात्रा, पुराण, देव-भक्ति, दान, धन, दया, तप, बुद्धिमत्ता, ग्रन्थ कर्तव्य, तत्त्व-ज्ञान, चित्त शुद्धि गुरुत्व, गुरु (शिक्षक) या आचार्य, गुरु भक्ति, दीक्षा, देव-भक्ति, योग साधन, मन, प्रकृति, स्वभाव, सहानुभूति, पाप पुण्य, (शुभ कर्म या पाप कर्म), सुशीलता, निर्मल शील, नीति, नम्रता, स्नेह, ईश्वरीय ज्ञान, मन की शांति, अनुग्रह, सत्पात्रों के लिए आदर, लम्बा और दूर का प्रवास, जल पर्यटन, मार्ग, शाला, नेतृत्व (मुखियापन, चिंता, स्वप्न, कानून, सम्पत्ति, लाभ, वृद्ध जन, पिता, पोता-पोती, नाती, स्त्री, मामा, कुटुम्ब, आदि, साथ में भोजन करने वाले। वाम पद और जंघा पर प्रभाव।

(१०) **कर्मभाव**—उद्यम, उपजीविका, कर्म जो करेगा, धंधा नौकरी आदि का विचार व्यापार, मुद्रा (रुपया), राज्य, राजा से आदर अधिकार मिलने का विचार, पदवी, महत्त्व के पद (बड़े पद) की प्राप्ति, नौकरों पर हुकूमत, प्रभुत्व, राज्य वृद्धि,

राजकीय प्रयोजन, राजनैतिक शक्ति, आज्ञा प्रख्याति, मान्यता, मान (आदर), सत्कार, कीर्ति, पुरुषार्थ, प्रताप, उन्नति, दास-दासी का विचार, निग्रह अनुग्रह, रोष, मानभंग कर्म (हाथ से होने वाले अच्छे बुरे कर्म), कर्म की प्रवृत्ति, काम जिसमें रुचि होगी। यज्ञ, वापी, कूप, आदि शुभ कर्म का शुभत्व, पुण्य कर्म (अच्छे काम), सब कर्मों की समीक्षा, बलिदान (आत्म त्याग) वेद शास्त्रोक्त कर्म, आगम, प्रव्रज्या, शास्त्रज्ञान, मन को शक्ति, स्नायुक शक्ति, विज्ञान, कृषि, धार्मिक ज्ञान, बुद्धि, वैद्य, शिल्प चातुर्य, रसवाद, सैनिक वाद, व्यापार, धार्मिक कार्य आदि में सफलता-विफलता, विद्या जनित यश, विद्या में परीक्षोत्तीर्ण, स्वधर्म, सत्यधर्म, पितृ पक्ष के सुख का विचार पितृ द्रव्य और पिता का विचार, पैत्रिक ऋण, प्रवास (परदेश जाना) अर्थात् देशान्तर जाना। विदेशी यात्रा का विचार, धन स्थिति; धन स्थान, भूषण, घोड़ा, वस्त्र, निद्रा वसन, भूषण, निवास, (रहने का स्थान), घुटना, मित्र शरीर, वर्षा अवर्षण आदि व्योम का वृत्तान्त, दृष्ट या अदृष्ट का निरूपण। यह पृष्ठ प्रदेश और जानु पर प्रभावशाली है।

(११) लाभ भाव—सब वस्तुओं के मिलने का विचार इससे होता है। सम्पूर्ण धन की प्राप्ति भी इसी से विचारना। इच्छित द्रव्य आदि प्राप्ति का जरिया और द्रव्य का लाभ, हाथी घोड़ा सुवर्ण वस्त्र भूषण रत्न आदि का लाभ या हानि, मांगलिक श्रृंगार का द्रव्य, लाभ, धनोपाय, लाभ का उपाय, धन लाभ, ऐश्वर्य, गुप्त-प्रगट धन, मकान आदि लाभ, आंदोलिका, पूर्वार्जित धनागम, आंनद, अर्थ, सेना, पालकी कर्ण-भूषण, वांयां कर्ण, चतुष्पद, पाक विद्या, कौशल्य, हेम विद्या, राज्य सुख, मित्र परिवार और मित्र सुख, मित्र कैसे मिलेगें, आशा या इच्छा की पूर्ति, जीवन से सफलता, विद्या प्राप्ति, परिवार, क्लेश, कुब्जता, परिव्रज्या, प्रवृत्ति, कन्या संतान, पुत्रनाश, निःसंतान, ज्येष्ठ भाई या बहिन, छोटे भाई का बेटा, दोनों जांघ, वायां हाथ, दाहिना पैर भी। इसका प्रभाव पिंडली और टखना पर होता है।

(१२) व्यय भाव—इसमें व्यय अर्थात् सब प्रकार के खर्च सम्बन्धी कार्य का विचार होता है. धन व्यय; दुर्व्यय, जलाशय, कूप, बावड़ी, तालाब, यज्ञ आदि में व्यय का शुभाशुभ विचार, बुरे कर्म (पाप कर्म), पतन, नीच कर्म आदि का भी विचार। उत्तम या नीच मार्ग से द्रव्य खर्च होगा इसका विचार, हानि, हेय विचार, अंगहीनता या कुरूपता, द्रारिद्रय, अधिकार क्षय, शरीर नाश, पाप स्थान; बाहनभंग, निद्राभंग, मनः पीड़ा, विभव और वित्त का क्षय होना, घेरना या पकड़ना, स्वर्ग या नरक में गिरना, मानसिक चिंता, शत्रु, गुप्त शत्रु, शत्रुओं का व्योहार, जन द्वेष, विवाद, पीड़ा, पाखंड, हठ, हठ सम्बन्धी कार्य, दंड, बंधन, राजदंड, कारागार निवास, दान सम्ब्रन्धी कार्य, दानशीलता, त्याग, भोग, कृषि कर्म, शैयागृह, शयन आदि सुख, अध्यात्म विद्या, गुप्त विद्या, मोक्ष, भ्रमण, परदेश गमन, पैतृक सम्पत्ति का वाद, कनिष्ठ बहन का पुत्र, नेत्र, कर्ण आदि रोग, विशेष कर वाम कर्ण और दोनों पैर का विचार।

इसका प्रभाव पांव और पांव की अंगुलियों पर होता है।

भावों का शुभाशुभ विचार

भाव वृद्धि—जो भाव अपने स्वामी या शुभ ग्रह से युक्त-दृष्ट हो, जिस भाव का स्वामी युवा आदि शुभ अवस्था में हो उस भाव की वृद्धि समझो।

भाव फल नाश—जिस भाव का स्वामी नष्ट, वृद्ध आदि अनिष्ट अवस्था में हो, अपने भाव को नहीं देखता हो, उस भाव का फल नाश समझो।

भावों का विशेष विचार

(१) लग्न से नवम तथा सूर्य से नवम स्थान से भी पिता का विचार करना।
(२) लग्न से १०–११ भाव में कहा हुआ सूर्य से १०–११ भाव में भी विचारना।
(३) लग्न से ४,२,११ और ९ भाव में जिसका विचार बताया है वह चन्द्रमा से भी इन्हीं स्थानों के सम्बन्ध से विचारना।
(४) लग्न से ३ भाव से जो विचार बताया हैं वह मंगल से तीसरे भावसे भी विचारना।
(५) लग्न से ६ भाव से जो विचार बताया है वह बुध से षष्ठ भाव से भी विचारना।
(६) गुरु से पंचम भाव से पुत्र और शुक्र से सप्तम भाव से स्त्री का और शनि से अष्टम भाव से मृत्यु आयु आदि का भी विचार करना।
(७) इसी प्रकार जिस भाव से जो विचार कहा है वह उस भाव के स्वामी से भी विचारना।

भाव के कारक

भाव	कारक ग्रह	भाव	कारक ग्रह
(१) लग्न	सूर्य	(७) जाया	शुक्र
(२) धन	गुरु	(८) मृत्यु	शनि
(३) सहज	मंगल	(९) धर्म	सूर्य और गुरु
(४) सुहृद	चन्द्र और बुध	(१०) कर्म	गुरु, सूर्य, बुध, शनि
(५) सुत	गुरु	(११) लाभ	गुरु
(६) रिपु	शनि और मंगल	(१२) व्यय	शनि

अन्य मत से

२ और ४ भाव का चन्द्र, ६ का मंगल, ९ का गुरु, १० का केवल बुध कारक है। अन्य भावों के कारक यहाँ बताये अनुसार हैं।

संबंधियों के कारक ग्रह भाव वश से

(१) माता-चन्द्र से चतुर्थ भाव से
(२) पिता—रवि से नवम भाव से
(३) भ्राता—मंगल से तृतीय
(४) मामा—बुध से षष्ठ
(५) पुत्र—गुरु से पंचम भाव से
(६) स्त्री—शुक्र से सप्तम भाव
(७) मृत्यु—शनि से अष्टम भाव

(१) आत्म कारक—लग्न
(२) स्त्री—धन भाव
(३) कनिष्ठ भाई—सहज भाव
(४) ज्येष्ठ भाई—लाभ भाव
(५) पुत्र—पंचम भाव या पंचम भाव में रहने वाला ग्रह भी कारक है।

किस भाव में कौन ग्रह निष्फल है

(१) धन भाव में—मंगल निष्फल है।
(२) सुख में—बुध निष्फल है।
(३) सुत में—गुरु निष्फल है।
(४) रिपु में—शुक्र निष्फल है।
(५) जाया में—शनि निष्फल है।

भाव के अंशों पर विचार (अर्थात् इन भावों का विचार इन ग्रहों से भी करना)

भाव	लग्न १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कारक ग्रह	सूर्य	गुरु	मंगल	चंद्र बुध	गुरु	शनि मंगल	शुक्र	शनि	सूर्य बुध	सू. बु. गु. श.	गुरु	शनि

भाव के अंशों पर विचार

भाव स्पष्ट कुंडली बनाने से प्रगट होगा कि कभी-कभी एक भाव में २-३ राशियां पड़ जाती हैं। भाव सदा एक राशि का नहीं रहता। लग्न स्पष्ट से १५° पूर्व और १५° बाद का एक भाव होता है। जैसे कुंडली के प्रथम भाव कर्क लग्न १५°–३० पर है तो कुंडली में प्रथम भाव उसके करीब १५° पूर्व अर्थात् कर्क के १—३० से आरम्भ होकर लग्न स्पष्ट से १५° उपरांत तक अर्थात् सिंह के ०-३०° तक रहेगा इससे प्रत्येक भाव की आरम्भ संधि (जहाँ से वह भाव आरम्भ होता है) और विराम संधि (जहाँ तक वह भाव जाकर अंत होता है) बताया जाता है। ग्रहों का विचार उसी भाव कुण्डली के अनुसार करना।

भावों की क्रूरता-शुभता

द्वादश भाव साधन करना उनमें ११, ३, ८, ६, २, और १२ ये ६ भाव क्रूर हैं इनके योग से जो भाव बने वह जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि समझो तथा १, ४, ७, १०, और ९ ये भाव शुभ हैं इन के योग से जो भाव बने वह जिस भाव में पड़े वह अशुभ भी हो तो शुभ हो जाता है।

भाव से विचार
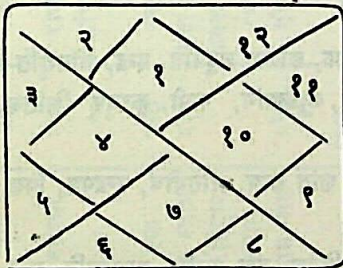
१ लग्न शरीर मस्तिष्क, २ धनसंचय, कुटुम्ब वाचा, ३ भाई-बहिन, पराक्रम, ४ माता वाहन सुख नौकर आदि, ५ विद्या बुद्धि संतति, ६ रिपु रोग मातृ पक्ष, ७ भार्या, भागीदार, प्रापंचिक सुख, ८ आयु मृत्यु स्त्री धन लाभ, ९ भाग्य धर्म, १० कर्म उपजीविका पिता राजाश्रय, ११ लाभ मित्र, १२ व्यय खर्च दुर्भाग्य।

शारीरिक भाव
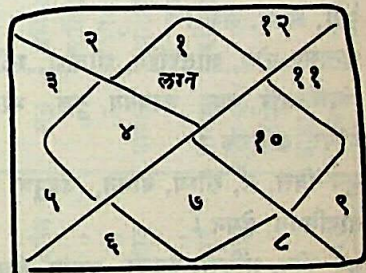
१ मस्तक, २ दाहिनो आँख, ३ गला कान हाथ, ४ छाती हृदय, ५ पीठ पैर, ६ नाभि पाँव अंतड़ी, ७ मूत्राशय कटि, ८ इंद्रिय पाँव, ९ पीठ पेट, १० छाती हृदय ११ गला कान हाथ, १२ बांई आँख।

सम्बन्धियों का ज्ञान
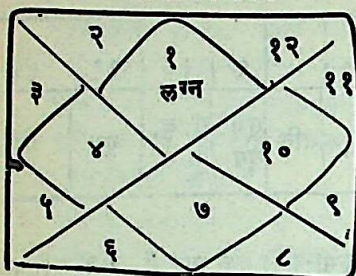
१ आजा, २ पितृ पक्ष, ३ भाई बहिन, नौकर, ४ माता, स्वसुर, ५ संतान, ६ काकी, मातृ पक्ष, ७ आजी, तीसरी भाई बहिन, ८ कुटुम्ब स्थान भार्या पक्ष ९ चौथाभाई साला बहनोई, १० पिता सास, ११ दमाद, बहू, मित्र, १२ काका मामी ।

शुभाशुभ भाव
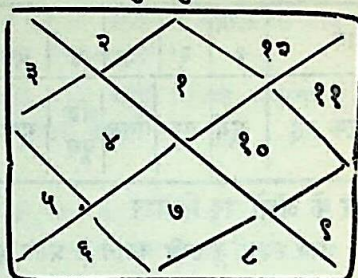
१ शुभ, २ अशुभ, ३ शुभाशुभ, ४ शुभ, ५ शुभ, ६ अशुभ, ७ साधारण अशुभ, ८ अशुभ, ९ शुभ, १० शुभ, ११ शुभाशुभ, १२ अशुभ ।

अध्याय ३

ग्रह, उनके नाम और गुण-धर्म

(१) सूर्य–हेलि, भानु, भान, दीप्तरश्मि, चंडांशु, भास्कर, अहस्कर, तपन, दिनकृत, पूषा, अरुण, अर्क ।

(२) चन्द्रमा–सोम, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगांक, कलेश, उडुपति, इन्द्र, शीतद्युति ।

(३) मंगल–आर, वक्र, आवनेय, कुज, भौम, क्रूर, लोहितांग, पापी, क्रूरदृक् क्षितिज, रुधिर, अंगारक ।

(४) बुध–वित्त, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चंद्रपुत्र, चांद्रि, शांत गात्र, अतिदीर्घ, इन्द्रपुत्र, विद्य, तारमियन, हेमन ।

(५) गुरु–जीव, अंगिरा, देवगुरु, प्रशांत, ईज्य, त्रिदिवेश, वंद्य, मंत्री, वाचस्पति, सुराचार्य, देवेज्य, जीव, सुरगुरु ।

(६) शुक्र–भृगु, उशना, भार्गव सुत, आच्छ, काण, कवि, दैत्यगुरु, सित, काव्य, भृगसुत, दानवेज्य, आस्फुटित ।

(७) शनि–छायात्मज, पंगु, यम, अर्कपुत्र, कोण, असित, सौरि, नील, क्रूर, कृशांग, कपिलाक्ष, दीर्घ, छायासूनु, तरणि तनय, आर्कि, मन्द ।

(८) राहु–तम, असुर, अग, सैंहिकेय, स्वर्भानु, विधुंतुद, सर्प, फणि ।

(९) केतु–शिखी, ध्वज, शनिसुत, गुलिक, मांदि, यमात्मज, प्राणहर, अतिपापी, ।

ग्रह-गुणधर्म

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
१	वर्ण जाति	राजाक्षत्री	वैश्य	राजा (क्षत्रिय)	वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र	चंडाल	इनसे	सर्व चि०
	,,	,,	,,		शूद्र	,,	,,	अंत्यज चंडाल आदि वर्णच्युत	अंत्यज राक्षस म्लेच्छ	अन्य ,,	वृ. जा.
२	रंग	रक्त	श्वेत	रक्त	हरित	पीत	चित्र	नील वर्ण			सर्व. चि.
	मनुष्य का	रक्त स्याम पाटलीपुष्प समान	गौर	रक्त गौर कमल का रंग	दूर्वा सदृश	पीत (गौर)	,, न अति गोरा न अतिकाला	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वृ. जा.
	,,	स्याम लाल	गौर	गौर	,,	सुवर्ण सम कांति	मेघ सा नील वर्ण	काला	,,	,,	जा. भ.
	पशु का ,,	रक्त	विचित्र	रक्त	हरा	पीला	विचित्र	कृष्ण			ल. चंद्र
	,,	,,	श्वेत	अति रक्त	,,	,,	अति शुक्ल	,,			शं. होरा.
३	देवता	अग्नि	जल	अग्निज	विष्णु	इन्द्र	इंद्राणी	ब्रह्म			सर्व. चि.
	,,	,,	,,	कार्तिकेय	,,	,,	,,	,,	राक्षस		वृ. जा.
	,,	,,		भूमि	दामोदर	,,	इंद्राणी	,,			शं. होरा
	अधिपति	शिव	पार्वती	कार्तिकेय	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	यम			,,
	,,	,,	,,	गुह कुमार		,,	लक्ष्मी	,,	सर्प और शेष	ब्रह्म	कुलदीप
४	दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत		
५	शुभ पाप	पाप	क्षीण-पाप पूर्णशुभ साधा.शु.	पाप	पापयुक्तपा पा.हीनशुभ साधारणशु.	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	
६	देहकीधातु	हड्डी	रुधिर	चर्बी	त्वचा	चर्बी	वीर्य	स्नायु (नसें)			

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
७	खनिज	ताम्र	मणि चुन्नी	सुवर्ण	सीप	चांदी	मोती	लोहा	सीसा	नीलम	सर्वचिं.
	धातु	,,	,,	,,	रौप्य	सुवर्ण	,,	,,			वृ. जा.
		,,	कांसा	ताम्र	सीसा	,,	चांदी	,,			फल दी.
		सोना तामा	चांदी	लोहा	पारा	टीन	ताम्बा	लोहा व शीशा			ज्यो. रह.
८	स्थान	देव स्थान	जल स्थान	अग्नि	बिहार	खजान भंडार	शयन	पुंज. पृथ्वी का चपटीला भाग	वाम्बी (सर्पस्था.)	बाम्बी	सर्व. चि.
		,,	,,	,,	क्रीड़ास्थान	,,	,,	खानें ऊसरस्था गजकाढ़ोरस्था	,,		बृ. जा.
९	वस्त्र	मोटा	कठोर	टूटा फूटा अग्नि दोष	नवीन	मध्यम	मध्यम	जीर्ण	गुदड़ी रंगबिरंगी	बड़े२ छेदो युक्त	सर्व. चि.
		,,	नया	दग्ध एक कोना फटा	जल से निचोड़ा	अदृढ़ न अतिपुराना न अति नया	दृढ़	स्फारित जीर्ण			बृ. जा.
	वस्त्र रंग	वीर बहुटी के रंग का	श्वेत पश्मीना	रक्त वर्ण विचित्र	हरित ऊनी	पीताम्बर	पश्मीना	विचित्र रेशमी	नीला विचित्र	विचित्र	सर्व. चि.
		लाल ग्रहों के	सफेद रंग के	लाल ,, अनुसार	काला	पीला	सफेद	विचित्र			सुगम. फलदी.
१०	ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमंत	वसंत	शिशिर			सचि.वृ.जा
११	रस स्वाद	कटु	लवण नमकीन	तीता	मिश्र	मीठा	खट्टा	क्वाथ कसेला			बृ. जा.
	,,	,,		,,	,,	,,	,,	,,			फलदी.
१२	धातु मूल जीव	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु		सर्व.चि.
१३	दृष्टि	ऊर्द्ध ऊपर को	सम	ऊर्द्ध	तिरछी (कटाक्ष)	सम	तिरछी	अधो (नीचे)	अधो		सर्वचिं.

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
१४	गुण	सत	सत	तम	राजस	सत	राजस	तम	तम	तम	सर्व. चि.
१५	तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	वायु	आकाश			वृ. जा.
	,,	,,	,,	,,	,,	,,	जल	वायु			सर्व. चि.
१६	स्त्री-पुरुष	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक			वृ. जा.
१७	पाक समय	अयन (६ मास)	मुहूर्त २ घड़ी	१ दिन (वार)	२ मास (ऋतु)	१ मास (मास)	१ पक्ष (पक्ष)	१ वर्ष (वर्ष)	८ मास	३ मास	सर्व चि.
१८	समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या		
१९	प्रकृति	पित्त	वात कफ	पित्त	त्रिदोषयु०	कफ	कफ	वात	वात		,,
२०	आकार	चौकोर	स्थूल	चौकोर	गोल	गोल	खण्ड	लम्बा	लम्बा	सम	जा. भ.
२१	शरीर	न बहुत लंबा न बहुत छोटा	गोल	छोटा कृश	मध्यम	छो. आकार मोटा देह	सुन्दर	लम्बा दुर्बल	भयानक		जा. भ. सुगम
	दुर्बल पुरुष	दुर्बल	जड़	दुर्बल	पुष्ट	पुष्ट	जड़	दुर्बल			सर्व चि.
२२	नेत्र	शहद सदृश पीले	कमल समान	पीले	लाल	पीले	कमल वत	पीले			जा. भ.
२३	बाल	अल्प	घुंघराले काले		काले	पीले	टेढ़े नीले	कड़े			जा. भ.
२४	स्वरूप	श्रेष्ठ रूप	सोभायमा	अभिमानी अग्नि वत कान्ति	रजोगुण अधिक		राजसी प्रकृति अति कामी	मलिन लूला	आलसी मोटे नख दुर्बल		जा. भ.
२५	अवस्था	बूढ़ा	मध्यम	जवान	बालक	बूढ़ा	मध्यम	बूढ़ा			
२६	बलक्रम	७	६	२	३	४	५	१			शंभु. हो.
२७	आत्मादि	आत्मा	मन	बल	भाषण	बुद्धि	भोग	दुःख			
	किससे क्या विचारना	शरीर	मन	बल	वाणी	ज्ञान व सुख	काम देव	दुःख			सर्व चि.

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
२८	गुण	बुद्धिमान	पंडित	उदार	बुद्धिमान सर्व शास्त्रज्ञ	काव्य कर्ता सुखी	आलसी	बुद्धिमान			
२९	स्वभाव	शूरवीर गंभीर चतुर	श्रेष्ठ बुद्धि	शूरवीर हिंसकमति उदारअति क्रोधी	अनेक कला विद हास्य प्रिय	उदार बुद्धि चतुर बुद्धिमान	अभिमानी				जा. भ.
३०	आयु	१०० वर्ष	७०	बाल	कुमार	३०	१६	१००	१००	१००	जा. पा.
	,,	५०	,,	१६	२०	,,	७	,,	,,	वर्ष	फलदी.
३१	सार	अस्थि	रुधिर	मेदा		मेदा	वीर्य				जा भ.
३२	मणि	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	वैडूर्य	फलदी.
३३	सजल शुष्क	शुष्क (निर्जल)	निर्जल	शुष्क	गीला (सजल)	गीला	निर्जल	शुष्क			सर्वचि.
३४	उदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षो०	उभयोदय	शीर्षो०	पृष्ठो०	पृष्ठो०		जा.पा.
३५	पद	पक्षी सदृश	सरीसृप (कीट के) आकार	चतुष्पद	पक्षी सदृश	द्विपद	द्विपद	चतुष्पद			,,
३६	चर	पर्वत वन चर	जलचर	पर्वत बन चर	ग्राम चर पं. के घर	ग्राम चर पं. के घर	जलचर	पर्वत वनचर	पर्वत बनचर	पर्वत बनचर	जा.पा.
३७	पदवी	राजा	राजा	सेनापति	युवराज कुमार	मंत्री	मंत्री	सेवक			शंभुहो.
३८	देश	कलिंग	यवन	अवन्ती	मगध	सिंधु	कीकट	सौराष्ट	अम्बर	परवत	फलदी.
३९	प्रदेश	देवभूमि (मरु) प्रदेश	जल (समुद्र)	लंका से कृष्णा नदी तक	विंध्य से गंगा तक	गोमती से विंध्य पर्वत तक	कृष्णा से गोमती नदी तक	गंगा से हिमालय तक			जा.पा.

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
४०	चिह्न किस ओर करते हैं	दाहिनी ओर	वांई	दाहिनी ओर	दाहिनी ओर	दाहिनी ओर	वांई	बांई			फलदी.
४१	चिह्नस्थान लोक मतांतर	चूतड़ मृत्यु पाताल	सिर में पितृ "	पीठ मृत्यु पाताल	कांखरी पाताल नरक	कंधा स्वर्ग "	चेहरा पितृ "	टांग नरक "			फलदी. शंभु. हो
४२	स्थिर चर	चर शीघ्र गामी	चर	चर	चर	स्थिर धीमीचाल	चर	स्थिर	स्थिर	स्थिर	" सर्वांच.
४३	किरण पाता है	उच्चका १०	१	५	५	७	८	५			
४४	गति समय	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	१ मास	१३ मास	१ मास	३० मास	१८ मास	१८ मास	
४५	१ राशि में वृक्ष	भीतर से दृढ़ और ऊंचा	(बल्ली) लता वाले पौधे दूध वाले और फूल वाले जड़ी बूटी	कटीले वृक्ष	फल हीन वृक्ष	फलदार वृक्ष	(बल्ली) लता वाले पौधे दूध वाले और फूल वाले	कटीले वृक्ष बेकाम और कमजोर वृक्ष	गुल्म शालवृक्ष	गुल्म	फलदी.
४६	ग्रहकालांग	सिर से मुख तक	गले से हृदय तक	पेट से पीठ तक	हाथ और पांव	कमर से जांघ तक	शिश्न से वृषण	घुटने से पिंडली			
४७	कहां पीड़ा करता है	सिर या मुख में	छाती या गले मे	पीठ और पेट में	हाथ और पांव	कमर और टांग-जांघ	गुप्त स्थान गुदा अंडकोष आदि	घुटना और पिंडलियो में			

क्रम	गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	फलदी.
४८	इन्द्रिय	दाहिनी आंख आत्मा दृष्टि	बाईं आंख शरीर मुख (स्वाद)	आंख दृष्टि	नाक सूंघने की शक्ति	कानश्रवण	मुख (स्वाद)	स्पर्श	स्पर्श	स्पर्श	
४९	रोग	पित्त रोग	बातकफ्या अतिसार	पित्त	वात पित्त कफ इनसे ज्वर	वायु कफ	बात कफ या भयरोग	बात	बात भूत ज्वर	बात भूत ज्वर	प्रा० यो०
५० ५१	किससेमृत्यु किसकेदोष हरते हैं	अग्नि सबके दोष को विशेष कर उत्तरायण में	जल राहु, बुध, शनि मंगल शुक्र गुरु के दोष को	शीत राहु बुध शनि के दोष को	 राहु के दोष का	पेट रोग राहु बुध शनि मंगल शुक्र के दोष को	तृषाखुसकी राहु बुध शनि मंगल के दोष को	क्षुधा राहु और बुध के दोष को			वृ० जा० जा० परि.
५२	किसकेचिह्न करते हैं	घाव काष्ट से	सींग वाले या जल से	अग्नि या शस्त्र से	शुभ कर्म से	शुभ कर्मसे	शुभ कर्मसे	पत्थर या पवन से			जा० सं०
	,,	काष्ठ और चौपाया से	सींग मारने या काटने से	विष अग्नि या शस्त्रसे	मनुष्य कृत या पत्थरसे	मनुष्य कृत या पत्थर से	मनुष्य कृत या पत्थर से	मनुष्य कृत या पत्थर से			जा० भ०
५३	किसकाबल बढ़ाता है	शनि का	शुक्र का	बुध का	चन्द्र का	चन्द्र का	बुध का	मंगल का			जा० परि.
५४	राशिमें कब फल देते हैं	राशि प्रवेश समय	अंत में	प्रवेश समय	सर्व काल	मध्य में	मध्य में	अंत में			
५५	दूसरी राशि में जाने के कितने दिन पहलेप्रभाव	५ दिन पहिले	३ घड़ी प०	८ दिन पहिले	७ दिन पहिले	२ मास पहिले	९ दिन पहिले	६ मास पहिले	३ मास पहिले		
५६	बल समय	मध्याह्न में	रात्रि के शुरू भागमें	दिन के अंत में	प्रात:काल	सर्वकाल में	अर्धरात्रिमें	दिनके अंत मे			

ग्रहों के गुण-धर्म का उपयोग

ये सब नष्ट-जातक चोर-विचार आदि के काम आते हैं। जो ग्रह अति बलवान् हो उसी का सा रंग मनुष्य या वस्तु आदि का होता है इससे प्रश्न या जन्म में बताने को वर्ण स्वामी कहते हैं।

प्रश्न या जन्म में बली ग्रह के अनुसार रूप आदि विचारना प्रश्न, यात्रा, युद्ध, लाभ, गर्भाधान, कार्य सिद्धि, प्रवासी का आगमन निर्गमन आदि के विचारने में समय का भी विचार होता है। जैसे लग्न में जो नवांश है उसका स्वामी उसी नवांश से जितने नवांश पर हो उतने संज्ञक अयन आदि काल ग्रह के वश से उसी कार्य की सिद्धि अपनी बुद्धि से विचारना। इन्हीं सब विचार से नष्ट कुडंली भी बनती है।

संज्ञा आदि जो कही गई है फल विचारने में भी काम आती है। पुरुष ग्रह पुरुष राशि में बलवान् होते हैं। स्त्री ग्रह स्त्री राशि में बलवान् होते हैं। राशि की दिशा देश काल आदि से प्रयोजन है कि यात्रा में दिशा जानना या उक्त ग्रह के प्रभाव से उक्त दिशा में लाभ हानि आदि होनी या खोई हुई वस्तु की दिशा देश काल आदि लग्न की राशि से जानना। राशियों के जल आदि होने से जल के आखेट में काम आता है। आठवें भाव में अग्नि राशि हो तो अग्नि का भय हो।

कोई मूक प्रश्न करे कि इस वर्ष लाभ होगा या नहीं तो लाभ स्थान में जो लग्न हो उसके समान वर्ण से उसके क्रूर या सौम्य प्रकृति वाले पुरुष के द्वारा उसी राशि के समान रंग वाली वस्तु का लाभ विचारना।

लग्न में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह का वर्ग हो या शीर्षोदय राशि हो तो कार्य सिद्ध हो इसके विपरीत हो तो कार्य सिद्ध न हो। मिश्रित हो तो कष्ट से सिद्ध हो।

लग्न में जैसी क्रूर आदि राशि हो मनुष्य का वैसा स्वभाव होगा। मनुष्य का रंग जानने को ग्रहों के रंग, रोगादि के लिए ग्रहों की धातु कही है।

ग्रहों के बल अबल से आत्मा आदि के बल अबल का विचार होता हैं। ये राजा आदि ग्रह बलवान् हों तो जातक को अपने समान बलवान् बना देते हैं परन्तु शनि का विचार विपरीत है।

आधान काल में जो ग्रह बलवान् हो उसी सरीखी आंखें होंगी। लग्न में यदि ग्रह नहीं है तो द्रेष्काण पर से फल का विचार करना। समय का विचार प्रश्न नष्ट कुण्डली आदि में जानने का है। राशि के पूर्वार्ध में उत्तरायण, उत्तरार्ध में दक्षिणायन आदि सूर्य से व चन्द्र से मुहूर्त आदि समय प्रगट होता है। ग्रह अपनी अवस्था सदृश आयु में फल देते हैं। इसी प्रकार सब गुणों का आवश्यकता पड़ने पर विचार होता है।

ग्रहों के गुण धर्म स्वभाव में स्वार्थी परोपकार की इच्छा आदि इस प्रकार के विरोधी भाव युक्त गुणों के वर्णन हों वहाँ ग्रह के उच्च नीच या शुभाशुभ स्थिति पर अवलंबित है। शुभ ग्रहों को नीच स्थिति का अशुभ फल मिलता है। उसी तरह अशुभ ग्रह की उच्च स्थिति आदि का शुभ, नीच स्थिति का अशुभ फल मिलता है।

मूक प्रश्न में राशि या ग्रहों के धातु मूल जीव आदि संज्ञा दी है उस का अर्थ है कि किसी धातु सम्बन्धो या मूल जड़ आदि पदार्थ सम्बन्धी या किसी जीव के सम्बन्ध में प्रश्न पूछना चाहता है।

इसी प्रकार वहाँ दिये गुण-धर्म का उपयोग फ़ल विचारने में बहुत काम देता है।

सूर्य

यह काल पुरुष की आत्मा है । रंग ललाई लिए गोरा है। यह पितृ कारक है पिता सम्बन्धी बातें इससे विचारने हैं। यह शुष्क ग्रह है। आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य देवालय का सूचक है।

नेत्र यकृत मेरुदंड स्नायु आदि पर इसका प्रभाव होता है। यह दशम स्थान में बलवान् होता है। मकर से ६ राशि तक इसे चेष्टाबल प्राप्त होता है। यह राजा है जन्म में बलवान् हो और उपचय में हो तो महत्वपूर्ण पद राजा के समान देता है उपचय में न हो और निर्बल हो तो हानि भी करता है।

सूर्य जन्म में या लग्न के नवांश का स्वामी हो और सब ग्रहों में बली हो तो जातक का स्वरूप वर्ण और अन्य बातें सूर्य की संज्ञा के अनुसार होती हैं।

सूर्य की जाति याने पेशा क्षत्रिय, सतगुणी, पुरुष और पापग्रह सदा क्रूर पूर्वदिशा का स्वामी है, इस का देव अग्नि है, लाल वस्तु का स्वामी है, हड्डी बहुत, वस्त्र मोटा, धातु तांबा, रस तीखा, देव स्थान, केश थोड़ा, पित्त प्रकृति, वर्ण लाल जिसमें कुछ काला मिला हुआ अर्थात् सांवला है, आँख पीली, थोड़ा काला, स्वच्छ शरीर, नसें उठी हुई, सामान्य मूर्ति अर्थात् न विशेष ऊँचा न ठिगना, चालाक, चौड़े कंधे, शूरवीर, स्वतः पर भरोसा करने वाला आदरणीय, वात रोग से पीड़ित, बुद्धिमान्, जिद्दी, राजसी, मन से अलग गति वाला देह आत्मा है, स्पष्ट वक्ता, गंभीर हृदय, वैद्य विद्या की रुचि, गंभीर चेहरा, लोगों पर प्रभाव डालने वाला, यशस्वी, समाज के अनुकूल, स्वार्थ की अपेक्षा परोपकार बुद्धि की प्रबलता, शत्रु और विरोधी को अपने बुद्धि बल से परास्त करने वाला, द्रव्य तृष्णा अल्प, उदार विचार, कठोर वचन परन्तु परिणाम में हितकर, स्वार्थ त्यागी, सर्वज्ञ, स्थिर स्वभाव, काल्पनिक, दूरदर्शी, स्पष्ट व्यौहार, कठोर किन्तु सत्यभाषी, वर्ताव शुद्ध अनुकरणीय, सुधार प्रिय।

यह मनुष्य की आत्मा है बलवान् हो और राज्य कारक हो राज्यपद अधिकार, मान देता है, धन्धे में जय देता है। यह १–४–५–९ राशियों में विशेष बली होता है। लग्न या दशम में इसका विशेष महत्त्व है। इससे कुछ कम महत्त्व नवम पञ्चम में है। २, ४, ६, ८, १२ स्थान में राशि बली हो तब भी निरर्थक है।

यह धन स्थान में कर्जा ही बढ़ाता है कुटुम्ब सुख नहीं देता, व्यय स्थानमें धनका बहुत व्यापार में खर्च कराता है, चतुर्थ में चिन्ता उत्पन्न कराता है। षष्ठ में शत्रु से पीड़ा उत्पन्न कराता है, अष्टम में शरीर कष्ट देता है जिससे धन नाश होता है। शनि के प्रभाव से यह बिगड़ता है। शनि का योग होने से धंधे का नाश होता है, राज्य

भय होता है। झगड़े मुकदमे आदि होते हैं, सर्व व्यौहार में गड़बड़ी पड़ती है, इच्छा अपूर्ण रह जाती है, पितृ सुख कम मिलता है, कई व्याधियाँ होती हैं। सूर्य पर शनि की दृष्टि पड़ने से भी यही फल होता है। सूर्य के चतुर्थ स्थान में शनि हो तो बड़ी आपत्ति होती है आयु क्षीण होती हैं। सूर्य से दशम में शनि हो तो अनेक बार धंधा बदलना पड़े, राज्य संमान भी न मिले। पितृ सुख कम मिले। नौकरी में झगड़ा हो। सूर्य से २-१२ स्थान में शनि हो तो साढ़े साती प्रमाण से फल होता है, द्रव्य मिलने में अनेक कठिनाइयां हों पूर्वजों का उपार्जित धन न मिले, पूर्वजों का कर्ज अदा न हो।

रवि चन्द्र, इन का द्विर्द्वादश या षड़ष्टक योग हो तो कार्य सिद्धि के लिये किया जाने वाला प्रयत्न निष्फल होता है और बड़ी योग्यता प्राप्त होना कठिन है। इन दोनों ग्रहों का केन्द्र योग हो तो राज्य योग होता है। इनका त्रिकोण योग होने से कीर्ति प्राप्त हो, प्रत्येक काम में यश मिले, पारमार्थिक लाभ हो।

रवि-बुध का योग विद्या और बुद्धि देता है। यह योग ३-७-११ राशि में अच्छा है। रवि-शुक्र का योग हो तो कला-यांत्रिक विद्या देने वाला है। रवि गुरु का योग विद्वत्ता और श्रेष्ठता देने वाला है। सूर्य मंगल के योग से प्रकृति उष्ण रहे, रासायनिक या अग्नि क्रिया सम्बन्धी धन्धा करे, साहस का कार्य करे। सूर्य के दशम में मङ्गल हो तो दीर्घ उद्योगी व अधिकार वाला होता है। सूर्य के दशम स्थान में गुरु हो तो राज्य सम्बन्धी अधिकारी हो। इस प्रकार सूर्य का सामान्य फल है परन्तु स्थानवश से किंवा योग, दृष्टि आदि वश से अन्तर पड़ जाता है अनेक भेद हो जाते हैं।

लग्न में सिंह का सूर्य हो, दशमेश शुक्र की पूर्ण युति हो तो वह बड़ा राजकीय अधिकारी या राजा सदृश वैभव भोगने वाला हो। सिंह का सूर्य दशम हो और उसमें लग्नेश मंगल की युति हो तो भी उपरोक्त फल हो परन्तु इस समय मंगल षष्ठेश हो तो राजकीय कार्य में शत्रुता करे।

चंद्र

यह काल-पुरुष का मन है। इससे मन का विचार होता है। चन्द्र शीघ्रगामी होने से मन माना गया है। इसके अधीन इन्द्रियां हैं।

यह स्त्री-ग्रह है। जल ग्रह, बात श्लेष्म धातु, रक्त स्वामी, माता, चित्त वृत्ति, शारीरिक पुष्टता, राजानुग्रह, संपत्ति और चतुर्थ स्थान का यह कारक है। चन्द्र सूर्य के साथ निष्फल हो जाता है, यह जड़ ग्रह है। मातृ विषयक बातें, राज अनुग्रह और मनुष्य के मेधावी होने का इस से विचार होता है।

यह चतुर्थ स्थान में बली है, मकर से ६ राशियों में इसे चेष्टाबल मिलता है। नेत्र, मस्तिष्क, उदर, मूत्र स्थल का भी इससे विचार होता है।

चन्द्र राजा भी है। जन्म या प्रश्न में यह उपचय स्थान में हो और बलिष्ठ हो तो राज कार्य में सफलता देता है। अन्य स्थान में नाश करता है।

चन्द्र शुभ वर्ण का स्वामी है, देवता इसका जल (वरुण) है। वायव्य दिशा का

स्वामी हैं। क्षीण चंद्र पाप ग्रह है, पूर्ण चन्द्र शुभ है। यह स्त्री ग्रह है, जल का स्वामी है। वैश्य जाति, सत्त्व गुणी अर्थात दयालु, सत्य, मृदुत्व, देव-ब्राह्मण भक्त, शरीर गोल, नाजुक शरीर, शरीर मे वात (वायु) हो, कफ प्रकृति, बुद्धिमान्, कोमल भाषण, श्रेष्ठ नेत्र, शिरा बहुत, स्थान जल, कोरा वस्त्र, धातु चांदी मणि, रस मीठा, स्थूल देह, युवा, दुबला, काले और पतले बाल, इसका रक्त पर प्रभाव, भाषण में मृदु, श्वेत वस्त्र धारी, मृदु स्वभाव, रंग कुछ पीलापन लिये, ठंड, दूध, मन, मां और सफेद रंग पर प्रभाव। चंचल, उतावला, ऐश आराम तलपी, संसार में निमग्न, द्रव्याभिलाषी, शेखी बघारने वाला, स्त्री-लोलुप, कर्तव्यहीन, धंधे के विषय में बेफिक्र, फालतू आत्म विश्वास, स्वार्थी, अस्थिर मन, व्यवहार में गोल माल, मृदुभाषी, सौम्य, उच्छृंखल, दिलदार, परन्तु अविश्वासी अनियमित। इसका सम्बन्ध रक्त से भी है।

कुंडली में जिस प्रकार चन्द्र की स्थिति हो उस प्रकार मन होगा। मन और चन्द्र एक सा है। १, ४, ७, १० इन चर राशि में चन्द्र हो तो मन अति चञ्चल रहे। इस का मन योग साधन में नहीं लगेगा उसे एक स्थान में कहीं चैन नहीं मिलता। किसी भी कारण से फिरता ही रहे, क्षण-क्षण में विचार बदले इसे अधिकार मिले तो बुराई करे। ३, ७, ११ इन बौद्धिक राशियों में चन्द्र हो तो उस का मन विद्या की ओर झुका रहे। सिंह का चन्द्र हो तो अपने को बड़ा समझने लगता है व उस के लिए प्रयत्न करता है। धन में शरीर की सामर्थ्य की ओर मन जावे। वृश्चिक में बदला लेने और नाश करने का विचार रहे।

सब कार्यों में पहले चन्द्र का बल देखे। इस का वर्ण गोरा है परन्तु राशि और योग वश से बदल जाता है।

६–८–१२ स्थान में चन्द्र अति बुरा है। ६ स्थान में अधिक बुरा है। इसमें अपयश देता है शरीर सुख कम करता है। शत्रु से पीड़ा देता है ८ या १२ घर में धन सम्बन्धी अड़चन उत्पन्न करता है। मानसिक त्रास देता है। १, ४, १०, ९, ५ स्थान में चन्द्र अच्छा है। लग्न या सप्तम में हो तो मनुष्य प्रवासी व विलासी होता है। अनेक स्त्रियों का उपभोग करने वाला होता है।

अमावस्या को चन्द्र निस्तेज हो जाता है, इस समय सब शुभ काम वर्जित हैं। चतुर्दशी युक्त अमावस्या सिनीवाली कहलाती है। इनमें जन्मे स्त्री पशु हाथी घोड़े आदि लक्ष्मी का नाश करते हैं। प्रतिपदा युक्त अमावस्या कुहू कहलाती है। यह भी दोष कारक है इसमें भी पशु आदि का जन्म आयु व धन नाश करता है। अमावस्या का जन्म अशुभ कारक है।

चंद्र मंगल का योग लक्ष्मी दायक है परन्तु मंगल का परिणाम बुरा होता है। अपघात, नाना प्रकार की बीमारी भयंकर ताप आदि होते हैं। अग्नि राशि और तीक्ष्ण नक्षत्र में ६-८-१२ स्थान में चन्द्र मंगल का योग बहुत दुखदाई होता है। चन्द्र बुध योग बुद्धिमत्ता व वक्तृत्व प्रगट करता है। यदि यह योग बौद्धिक राशि में हो तो अति उत्तम है।

चन्द्र गुरु का योग अति महत्त्व का है । संस्था की स्थापना, शिक्षा देना, अध्यात्म विद्या, गुरुत्व, कीर्ति वृद्धि, पूर्ण यश, बहुत सम्पत्ति और अगाध ज्ञान प्रगट करता है। १, ५, ९, १०, या ११ स्थान में यह योग बहुत महत्त्व का है।

चन्द्र शुक्र योग से कामदेव सरीखा रूप, विलास, शानशोकत व ललित कला देता है। चंद्र शनि योग दुःख दरिद्र देता है। अग्नि राशि ४-८ इन राशि में, तीक्ष्ण नक्षत्र में, ६-८-१२ स्थानों में यह योग हो तो उसका जीना निरर्थक है। वात प्रधान रोग दमा आदि इसमें होता है। आयुष्य क्षीण होती है।

कुंडली में लग्न सूर्य चन्द्र के विचार का विशेष महत्त्व है। अन्य योग कितने ही अच्छे हों पर तीनों की स्थिति अच्छी न हो तो इसी के अनुसार फल मिलेगा।

मंगल

यह बल रूप है। रंग अति लाल। इसके प्रभाव से रक्त गौर होता है, अग्नि तत्त्व, पित्त प्रकृति, मज्जा का स्वामी, शुष्क ग्रह है। शक्ति, भूसम्पत्ति, कृषि, धैर्य, रोग, भ्राता (अनुज), पराक्रम, अग्नि, सेनापति तथा राजशत्रु का कारक है।

यह द्वितीय स्थान में निष्फल है, दशम में दिग्बली होता है। वक्री तथा युद्ध में पराजय करने पर या चन्द्र के साथ रहने पर इसे चेष्टाबल मिलता है। मांस पेशियों की उष्णता और निर्बलता इस पर निर्भर है। यह कालपुरुष का बल है। मंगल जिस-राशि में हो उस राशि के जिस अंश में हो वहाँ आने पर फल देता है। यह सेना पति है।

जन्म समय उपचय स्थान में हो और बलवान् हो तो बहुत कार्य का साधक होता है। यदि ऐसा न हो तो हानि करता है। स्वरूप लाल, किन्तु थोड़ा कमल सदृश सफेदी लिए होता है। यह अति ऊँचा या ठिगना नहीं है, साधारण आकार का है।

कुण्डली में सब से बली हो तो जातक का वर्ण मंगल सदृश रहे। यह लाल पदार्थ का स्वामी है। कार्तिवीर्य देव है, क्रूर और पुरुष ग्रह है। अग्नि का स्वामी, अग्नि को स्वाधीन करता है। यह क्षत्रिय है, सबसे बलवान् और तमोगुणी है। लोगों को धोखा दे, मूर्ख, आलसी, क्रोधी, अतिनिंदित स्वभाव।

जन्म समय जिसके त्रिशांश में सूर्य मङ्गल हो तो उस ग्रह का गुण जातक में प्रकट दिखे और सब में बलवान् रहे।

इस की क्रूर दृष्टि, तरुण मूर्ति, उदार. पित्त प्रकृति, अत्यंत चंचल स्वभाव, उदर कृश, रक्त और धातु बहुत, कड़ू रस, सामवेद का स्वामी, कमर पतली, घुंघराले और चमकीले बाल (कुञ्चित केश), क्रूर नेत्र, उग्र, लाल वस्त्रधारी, रक्त तनु, प्रचण्ड, अति उदार, देखने में तरुण, मज्जा और मांस पर इसका प्रभाव होता है।

जवानी, रक्त, भाई-बहन, भूमि पर प्रभाव होता है। क्रूर, तेज स्वभाव, हठी सनकी, साहसी, मौके पर हार न मानने वाला, दीर्घ उद्योगी, युक्ति से दूसरों को लड़ाकर अपना कार्य साधने वाला, उड़ाऊ, दिलदार, वेफिकर, खुला और सच्चा व्योहार, धर्म पर कम

श्रद्धा, सत्य भाषण-प्रिय, भविष्य की अपेक्षा वर्तमान काल को अधिक महत्त्व देने वाला, अनियमित किन्तु कुशल, कभी-कभी उद्योग में रत, निष्कपटी, मित्रता योग्य, सुधार मत वादी परन्तु आचार भ्रष्ट।

मंगल वक्री होता है तो एक राशि पर बहुत समय तक रहता है। मंगल एक राशि पर वक्र होकर पुनः मार्गी होकर उसी राशि पर आता है तो कई महीने लग जाते हैं उसे कुज-स्तंभ कहते हैं। जब मंगल पृथ्वी के समीप आता है तो तेजस्वी दिखता है उसका परिणाम विशेष होता है।

यह युद्ध का देवता है, कोई अधिकार प्रयत्न में योग्यता, युद्ध विशारदत्व व आत्म-निष्ठा ये मंगल के मुख्य धर्म हैं। यह अपघात या नाशकारी भयंकर घटना दर्शाता है। मंगल के अरिष्ट परिणाम से लाल रंग की ग्रंथि, रक्तस्राव, मूल व्याधि, शीतला आदि व्याधि होती है।

मंगल का प्रभाव—अग्नि स्थल, सुनारी काम, रसायन शाला, रणक्षेत्र, सैन्य स्थल, हत्या के कार्य व उसका स्थल, आघात का स्थल, औषधालय, सर्जरी आदि के स्थल पर मंगल का अधिक प्रभाव पड़ता है।

यह भी शनि से बिगड़ता है। मंगल और शनि के योगादि से भयंकर घटनाएँ होती हैं। शनि से जो मंगल का परिणाम होता है उसकी अपेक्षा मंगल से शनि चौथा होने पर अधिक भयंकर परिणाम होता है। मंगल से शनि चौथा हो तो जीवन के सम्बन्ध से अपघात, शरीर में चोट आदि घटनाएँ हों। धन के संग्रह में अनेक अड़चनें हों, दिवाला तक निकल जाने का संयोग प्राप्त हो सकता है। शनि मंगल के योग से जानलेवा घटनाएं हो सकती हैं।

शनि मंगल का योग लग्न में हो तो अकाल मृत्यु या भयंकर व्याधि संभव है। धन स्थान में हो तो कुटुम्ब और धन का नाश कर ऋण की वृद्धि करे। तीसरे भाव में हो तो भाइयों की अकाल मृत्यु भयंकर रीति से होती है। चतुर्थ में मातृ सुख, घर वाहन आदि का सुख लाभ नहीं होता, ऊपर से गिरने की घटना हो। पञ्चम में गर्भपात हो, संतान रोगी या अल्पायु हो। षष्ठ में शत्रु से नाश या स्वतः का मरण हो। सप्तम में हो तो एक भी स्त्री दीर्घायु न हो, जीवन लड़ते झगड़ते बीते। अष्टम में धन नाश से बुरा अरिष्ट हो। नवम में पितृ सुख न मिले, अपकीर्ति हो। दशम में अनेक धंधों में हानि होकर निर्धन हो, मान हानि हो, पिता का सुख न मिले, राजकीय आपत्ति की सम्भावना हो। लाभ में संतति नष्ट हो मित्र से विरोध हो। व्यय में हो तो दरिद्र हो, कर्ज बढ़े, राज दंड भोगे।

कर्क राशि का मंगल स्त्री के विषय में अप्रिय घटना करता है। १, ५, ९, राशि और अश्विनी, मघा, मूल, नक्षत्र में मंगल मनुष्य को कुलदीपक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ बनाता है। वृश्चिक इसकी स्वराशि है परन्तु मेष राशि सदृश इसका उतना प्रभाव नहीं रहता।

मिथुन का मंगल प्रबल वाणी देता है, स्वाभिमानी बनाता है। तुला का मंगल अन्तःकरण को स्फूर्ति देता है। कुम्भ राशि में तत्ववेत्ता करता है। मंगल ग्रह स्वभाव से अहंकारी है। इसमें बौद्धिक राशि हो तो वह समझने लगता है कि गुरु की अपेक्षा मैं अधिक जानता हूँ।

लग्न, तृतीय, षष्ठ में मंगल साहस, वीरता, लड़ाऊपना देता है। सेना और पुलिस वालों की कुण्डली में इसका प्रभाव दीख पड़ेगा। १-२-४-७-८-१२ स्थान में मंगल क्रूर नक्षत्र में हो तो विवाहित स्त्री का शीघ्र नाश हो।

पंचम या लाभ में मंगल क्रूर नक्षत्र में हो तो गर्भपात होता है, जीता नहीं है। २ या १२ स्थान में मंगल हो तो धन का संग्रह न हो। यदि धनवान् की कुण्डली में यह योग हो तो धन का नाश करे उसे रुपया की कदर न रहे।

दशम में मंगल का बड़ा महत्त्व है। उसकी महत्त्वाकांक्षा तीव्र हो। सामर्थ्य से अधिक काम अपने हाथ में ले लेवे और कठिन कार्य को अपने उद्योग के बल पूरा करे, अधिकार युक्त हो। दशम में १, ५, ९, १० राशि हो तो अच्छा है इनकी अपेक्षा दूसरी राशियाँ यहाँ निर्बल हैं।

बुध

यह वाणी का स्वामी है, रंग गहरा हरा है कुछ स्याम वर्ण लिये, पृथ्वी तत्त्व, त्रिदोष धातु कारक, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र, गणित विद्या, लेखन कला शास्त्र; शिल्प, वकालत, वाणिज्य आदि, राज कुमार, वाचस्पति तथा चतुर्थ एवं दशम स्थान का कारक है। परन्तु चतुर्थ स्थान में यह निष्फल है। जिह्वा और उच्चारण के अवयव का इससे विचार होता है यह शुष्क ग्रह है। यह काल पुरुष का वाचा व राज कुमार है। उपचय में बलिष्ठ हो तो राज्य साधक होता है। अन्यथा हानि करता है।

यह शुभ ग्रह है परन्तु क्रूर ग्रह की संगति से क्रूर हो जाता है, यह हरे रंग का स्वामी है, नपुंसक है, पृथ्वी का स्वामी, पृथ्वी के अधीन है, रजोगुणी, शूद्र, शूर स्त्रियों के ठिकाने के प्रति लोगों में प्रिय, स्वभाव गदगदा, हँसने बोलने वाला, वात कफ मिश्रित प्रकृति, त्वचा बहुत, क्रीड़ा खेल का स्थल, हरा एवम् सड़ा वस्त्र, कांसा धातु, अथर्वण वेद का स्वामी, मिश्र रस, नसों से पूर्ण शरीर, भाषण में आनन्द देने वाला, लाल और चौड़ी आंख, सम अंग, हास्य में रुचि, इसका प्रभाव चर्म पर, चालाक, अच्छी बोली, हंसोड़, दिल्लगी बाज, बातूनी, ज्ञानी, सुन्दर, सुस्वरूप, प्रफुल्लचित्त, वाक् पटु, स्पष्ट व्योहार, उत्साही, सदा आनन्दी, धूर्त, वाहन प्रिय, नोकर चाकर का सुख, अविश्वासी, समय पर दगा देने वाला, पैसा सम्बन्ध से विचित्र व्योहार, कुटुम्ब के विषय में बेफिकर, धन्धे में नवीन कल्पना, प्रयत्न में मन चिन्तित, आतुर, होते हुए चेहरे पर परिणाम न दिखे। बेफिकर रहने वाला, उद्योग में निमग्न, प्रत्येक धन्धे का ज्ञान परन्तु किसी धन्धे में प्रवीण न हो, अध्यात्म विषय प्रेमी, शास्त्रीय गहन विषयों में निमग्न परन्तु अपना हृदय छुपा कर रखने वाला, कष्ट साध्य, धोखे का कार्य करने वाला।

बुद्धिमत्ता इसका प्रधान धर्म है। कुण्डली में बुध बलवान् हो तो वह अति बली और वक्ता होता है। दूसरे भाव में जहाँ विद्या और वाणी का विचार होता है वहाँ बुध हो तो वह अति वाचाल और विद्यासम्पन्न होता है। पंचम स्थान में भी बुध उत्तम बुद्धि देता है। बुध का जितना महत्त्व १-२-५-९-१० स्थान में है उतना और कहीं नहीं है। मिथुन राशि में अति बली होता है, शास्त्रज्ञान, स्मरण शक्ति, वक्तृत्व, ग्रन्थ कर्तृत्व इससे मिलता है। कुम्भ राशि में वक्तृत्व शक्ति में बहुत कमी कर देता है, परन्तु वेदान्त आदि गूढ़ विषय, तत्त्वज्ञान व संशोधन करने की शक्ति देता है। तुला राशि में सब प्रकार की विद्या की ओर मति देता है। विना भूल के स्वयं पद्धति से काम करने की शक्ति बुध से मिलती है। कन्या का बुध उच्च का है इससे हस्त कौशल, राजकीय वैभव, वैद्यकी, व्यापार आदि में अपने समान गुण देता है।

बुध यह सूर्य के आस पास ही रहता है। सूर्य के आगे इसका रहना अच्छा है। पीछे रहना उतना प्रभावकारी नहीं है। इसका सूर्य के बराबर योग हो तो विद्या बुद्धि वैभव देता है। गणित में व कार्य में सूक्ष्म बुद्धि देता है। बुध अस्त होने पर भी फल देता है।

यह नपुंसक ग्रह है, इससे जिस ग्रह के साथ इसका योग होता है वह उसके फल का सहारा लेता है। बुध मंगल के साथ अच्छा नहीं है। झूठ बोलने की प्रवृत्ति और व्यर्थ की बातों में बुद्धि का झमेला उत्पन्न करता है। गुरु के साथ इसके योग से विद्वत्ता, काव्य, ग्रन्थ रचना, अध्यात्म ज्ञान आदि देता है। शुक्र के साथ ललित कला, यंत्र रचना व सब प्रकार का कला कौशल दर्शाता है। ज्ञान के साथ वक्तृत्व शक्ति क्षीण करता है।

गुरु

रंग पीत, कंचन वर्ण, गोरा, आकाश तत्त्व, चर्बी कफ धातु की वृद्धि करता है, धर्म कर्म, देव ब्राह्मण, गृह, पुत्र, बन्धु, पौत्र, पितामह, सत्त्वगुण, मित्र, मंत्री, धनागार, विद्या, उदर का कारक है। यह कालपुरुष का ज्ञान बुद्धि, मंत्री, सलाह करने वाला देव पुरोहित है। हल्दी सरीखे पीत वर्ण का यह स्वामी है। आकाश के अधीन है। पीलाई लिये आँखें, पिंगल केश, पीन और उन्नत हृदय, वृहत् शरीर, कफ आत्मज, सिंह या शंख शरीखा शब्द, सदा धन की चिन्ता में रहे। चर्बी पर इसका प्रभाव है। दानी, पुत्र, शिक्षा, धन, स्वास्थ्य, पुजारी, ज्ञान और सुख स्वरूप है। वेदान्त शास्त्र में निपुण, शान्त स्वभाव, गुण सम्पन्न, विद्वान्, सत्य कर्म का आचरणी, समाज कार्य में प्रवीण, परोपकार प्रिय, सत्य अभिमानी, बुद्धिमान, संकट ग्रस्त, दूसरों की आपत्ति को अपने ऊपर लेकर सहायता करने वाला, राज दरबार में मान प्रतिष्ठा, मिलाऊ, कोमल हृदय, गुणी, मृदु वाणी, सर्व प्रिय, सत्य के लिए कष्ट सहन कर विजय प्राप्त करने वाला, द्रव्य सम्बन्ध से उदार बुद्धि, प्रापंचिक, धर्मशाला, ईश्वर भक्त, दीन का सहायक अच्छी सलाह देने वाला, अनीति के मार्ग से दूर रहने वाला।

कुण्डली में यह विशेष प्रधान होता है। किसी कुण्डली में गुरु बलवान् हो और सूर्य चन्द्र का षड़ष्टक योग हो तो कुण्डली का महत्त्व नहीं रहता। ज्ञान सुख सम्पत्ति वैभव, संतति, सथानापन, अध्यापकत्व, परमार्थ, पुण्य कर्म, तीर्थ, साधु समागम, योग मार्ग, दीर्घायु आदि इसका प्रधान धर्म है। १, ९, १०, ५, ११, २, इन स्थानों में इसका महत्त्व है। ६–८–१२ स्थान में यह निष्फल है। इतर स्थानों में मध्यम फल देता है।

यह कर्क में उच्च का है। तुला सात्विक राशि में हो तो वह सतगुणों का पुतला हो। ३, ७, ११ राशि में विद्वान् और शास्त्रज्ञ हो १, ४, ५, ९, १२ राशि में सम्पत्ति और वैभव देता है। मकर राशि में कर्मनिष्ठ होता है।

ऐसी धारणा है कि गुरु जिस स्थान में रहता है उस स्थान का नाश करता है परन्तु उसका स्थान-विशेष का महत्त्व है। गुरु यह संतति देने वाला ग्रह है। अस्तगत हो तो सन्तान अल्पायु हो। सिंह कुम्भ वंध्या राशि है इनमें अस्तगत हो तो गर्भ ही न रहे।

इसका मंगल से योग हो तो संतान अल्पायु होगी या गर्भ नहीं रहे। शनि के साथ हो तो संतान नहीं होवे। ४-८-१०-१२ बहु-प्रसव राशि में गुरु बहुत सन्तान शीघ्र २ देता है। २-४-८-१०-१२ स्त्री राशि में गुरु कन्या सन्तान देता है। पुरुष राशि में पुत्र देता है। वक्री गुरु हो तो सन्तान के अनुकूल नहीं है · पुत्र-चिन्ता उत्पन्न कराता है कन्या सन्तान देता है।

सब योग में गुरु चन्द्र का योग महत्त्वपूर्ण है। गुरु का किसी ग्रह की युति की अपेक्षा त्रिकोण योग, केन्द्र योग में विशेष महत्त्व है। त्रिकोण योग में विद्या, कीर्ति, परमार्थ योग शिक्षण, अध्यापकत्व धार्मिकता, परोपकार यश देता है। केन्द्र योग में धनी, राज वैभव अधिकार मान देता है। यह ग्रह उद्दीपक है जिस ग्रह से युक्त हो उस ग्रह का धर्म ज्ञान ज्योति से प्रकाशित होता है। जब २ या १२ स्थान में मंगल नहीं हो तो यह सम्पत्ति दाता है। नवम पंचम स्थान में रवि मङ्गल, शनि, नहीं हो तो यह सन्तति सुख देता है। यह लग्न रवि व चन्द्र से एकादश योग करता हो तो बहुत धन देता है।

शुक्र

यह कामचेष्टा का सूचक है। अनेक रंग हैं। जातक का रंग स्याम गौर, पूर्व दिशा व आग्नेय दिशा का स्वामी व सांसारिक सुख का विचार इससे होता है। यह कालपुरुष का मदन और मंत्री है।

स्त्री ग्रह, जलतत्त्व, जल ग्रह, कर्म वीर्य, धातु कारक, कलत्र, विवाह, काम सम्बन्धी कार्य, सुख, काव्य, पुष्प, आभरण, नेत्र, वाहन, शैया विभव, कविता, राजभोग, और स्त्री का कारक है।

वर्ण सांवला न अति गोरा न अति काला है। दूबके समान शरीर का रंग

अनेक वर्ण के पदार्थों का स्वामी है। देवता इन्द्राणी, स्त्रीग्रह, सदा शुभ, जल का स्वामी जल के अधीन हैं, ब्राह्मण, रजोगुणी, सब काल सुख की इच्छा, सुन्दर शरीर सुन्दर विशाल नेत्र, श्लेष्मा वायु प्रकृति, काले व घुंघराले बाल, रेत बहुल स्थान, नींद की जगह, दृढ़ वस्त्र, मोती धातु, आयुर्वेद स्वामी, आम्बर रस, वस्त्र कई रंग के, अंग स्थूल, पुरुषता का वर्द्धक, स्त्री का प्रिय, संगीत काव्य गायन वादन कला-कौशल प्रिय, चीनी के पदार्थ का संग्रह करने वाला, ऐंठ वाला, कपड़े में स्वच्छता प्रिय, अस्थिर और आकुंचित मन, स्वार्थ बुद्धि, स्त्री विषय आसक्त, गुप्त कर्म, प्रापंचिक कामों में दिलचस्पी, धर्म पर श्रद्धा, व्यसनी लोगों से मित्रता, परस्त्रीरत, पाप बुद्धि, निश्चित, अविचार, फजूल खर्ची, स्वतन्त्र, व्यापार धन्धा में यश, ईश्वर पर श्रद्धा।

यह छठे स्थान में निष्फल होता है। सप्तम स्थान में अनिष्ट करता है। सप्तम स्थान का कारक है। वक्री होने व चन्द्र के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है।

कुंडली में जैसी स्थिति में शुक्र हो उसी प्रकार उसकी धातु होगी, शुक्र से विवाह, स्त्री, रति सुख, शुक्र धातु, कामवासना, सौन्दर्य व स्त्रियों की सुन्दरता, सुन्दर वस्त्र, सुगन्धित पदार्थ, चौंसठ कला, यांत्रिक विद्या, खेल, सट्टा, शर्त लगाना, यन्त्र तन्त्र, अष्ट सिद्धि का चमत्कार, मारण आदि क्रिया, रत्न की प्राप्ति इन सबका विचार होता है।

लग्न में शुक्र हो तो सुन्दर विलासी, शान शौकत वाला, सुन्दर स्त्रियों का उपभोग कर्त्ता लम्पट हो, दूसरे में शुक्र हो तो स्त्री सुन्दर हो, पंचम मे कला कौशल, यन्त्र गाने बजाने, नाटक, सट्टा चित्र कला आदि शुक्र के अनुसार हो। लाभ में शुक्र हो तो रत्न आदि का धन्धा करे। नवम में पंचम सदृश फल देता है, परन्तु पंचम सदृश प्रबल नहीं है। ६–८–१२ भाव में यह निष्फल है। दूसरे स्थान में सामान्य फल देता है।

कर्क या वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो अनेक स्त्रियों का उपभोग करे, अतिकामी हो व्यभिचार की ओर प्रवृत्ति हो। तीक्ष्ण नक्षत्र में शुक्र हो तो प्रमेह आदि रोग हो। ५ या ९ राशि में शुक्र हो तो शरीर बलवान् व तेजस्वी हो नेत्र काले, वर्ण गोरा हो।

चंद्र शुक्र या मङ्गल शुक्र का योग हो तो व्यभिचारी हो अनेक स्त्रियों का भोग करे। बुध शुक्र या गुरु शुक्र योग विद्वत्ता या बुद्धिमत्ता बनाता है। शनि शुक्र योग में नीच मनोवृत्ति दर्शाता है। रवि शुक्र योग महत्त्वपूर्ण राजकीय अधिकार देता है। परन्तु यह सूर्य के आगे हो तब।

बुध शुक्र गुरु ये वक्री हों तो उन्नति करते हैं, मङ्गल व शनि वक्री हो तो हानि करते हैं।

शनि

वर्ण काला है, वायु तत्त्व, वात श्लेष्म धातु, म्लेच्छ जाति, शूल रोग, दास-दासी दुःख, आयु, मृत्यु विपद और अंग्रेजी विद्या का कारक है। यह शुष्क ग्रह है। इसका प्रभाव स्नायु पर पड़ता है। यह काल पुरुष का दुःख है, नौकरी करावे, काले वर्ण का

स्वामी है, देव ब्रह्म, पश्चिम दिशा का स्वामी है, तमोगुणी है, वायु के अधीन है। आलसी, काना, पिंगलनेत्र, ऊँचा, बड़े दाँत, कड़े बाल, वातप्रकृत्ति, शरीर पर शिरा, लंगड़ा, निम्न लोचन, दुबला, अति पिशुन, शरीर में मांस पेशियों पर इसका प्रभाव है। क्रूर, दया रहित, मूर्ख, स्थूल नख, तामसी, बहुत क्रोधी, वृद्धावस्था को प्राप्त, कृष्ण वस्त्रधारी, दीर्घ जीवन दाता, बरबाद घर, उपजीविका कृषि, धूर्त, दुष्ट बुद्धि, दुर्बल मन, मंद बुद्धि, मनमाना कारबार, आत्म प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्रिय, उद्योग रहित, नीच काम, विश्वास घात में आनन्द मानने वाला, कलह प्रिय, बन्धु विरोधी विरोधात्मक आंदोलन का कर्ता, मर्म भेदी बात करने वाला, असन्तुष्ट, उद्योग में अपयश, उद्योग शत्रु, व्यसनी, दुराचरणी समाज के हित के काम में बाधा डालने वाला, स्वार्थ प्रिय, परदोष देखने में निपुण अविचारी, पर द्रव्य हरण में प्रवीण, द्रव्य तृष्णा अधिक ।

यह सप्तम स्थान में बली है। यह नपुंसक ग्रह है। वक्री तथा चंद्र के साथ होने से चेष्टाबली होता है। लग्न में जिस ग्रह के त्रिंशांश में हो उसी सरीखा गुण हो।

इस का स्वभाव परपीड़ा, घात, क्रूरता, निर्लज्जपना, चोरी, ठगी, मिथ्या भाषण, मायावी, अमंगल, दंभ, मत्सर आदि है। वात प्रधान रोग उत्पन्न करता है। दरिद्रपन और आयु नाशक भी है।

मिथुन, तुला, कुम्भ राशि में इसका विशेष महत्त्व है। यदि शनि बलवान् हो तो उसके समान दाता कोई नहीं है, अगणित सम्पत्ति देता है। १-४-५-८-९ राशि में अनिष्ट फल देता है। यह जिस राशि में हो उसके आगे पीछे की राशि को पीड़ा देता है। यह विशेष कर चंद्र को पीड़ा करता है। इसे साढ़ेसाती कहते हैं। चंद्र की साढ़ेसाती का परिणाम शरीर और कुटुम्बी मनुष्यों पर पड़ता है। किन्तु रवि की साढ़ेसाती का परिणाम पिता, स्वधंधा व राजकीय कार्य में पड़ता है। जन्म काल में यदि एक राशि पर चंद्र हो उससे आगे शनि हो व उसके आगे राशि पर सूर्य हो तो जन्म काल में दोनों की साढ़ेसाती समझना यह बहुत बुरा होता है। १, ४, ५, ८, ९ राशि पर सूर्य और चंद्र एकत्र रहे तब साढ़ेसाती का परिणाम विशेष रूप से होता है।

शनि, सूर्य व मंगल का योग सदा घातक होता है। इस प्रमाण से चंद्र शनि का परिणाम कुछ कम घातक होता है। इसमें मृत्यु, अपघात, भयंकर रोग, बन्धन (कैद), भारी संकट, या विपत्ति और आयु के अंत का समय दुःखमय होता है। शनि रोहिणी नक्षत्र का भेदन करे अर्थात् वहाँ पहुँच जाये, (रोहिणी का आकार गाड़ी सदृश है) इसे शकट भेदन कहते हैं यह लोकसंहार कारक होता है।

यह पुत्र चिन्ता उत्पन्न करता है। समय से बहुत बिलम्ब से प्रसूत होना भी शनि का धर्म है। १-५-९ स्थान में शनि इस प्रकार प्रभाव करता है। शनि-प्रधान मनुष्य अवश्य दुर्गुणी होता है।

सूर्य शनि का प्रभाव घटाता है परन्तु मंगल के आगे जाकर। शनि पर सूर्य की दृष्टि होने से शनि का प्रभाव घट जाता है। इस रवि पर शनि की दृष्टि हो तो रवि का धर्म जो प्रगट करता है उसे नष्ट करने के अतिरिक्त नया विपरीत धर्म प्रगट कर देता है।

बुध गुरु या शुक्र इनके बराबर शनि हो तो अच्छा फल देता है परन्तु मन्द गति होने से कंजूसी से फल देता है। शनि और गुरु का दशम केन्द्र में योग हो या केन्द्र या त्रिकोण योग हो तो उसे बड़ी योग्यता प्राप्त हो, राज्य अधिकार मिले। शनि कालपुरुष के राज्य में हल्के दर्जे का नौकर कहा गया है। शनि का वास नीली या काली वस्तु में, जीर्ण पदार्थ, बुरे स्थान और नीच जाति में है।

राहु

रंग कृष्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी, वायु, धातु, सर्प, निद्रा, मुख, पितामह एवं मोक्ष का कारक है यह नैर्ऋत्य दिशा का भी स्वामी है। तालाब, धर्मशाला आदि पर प्रभाव है ऊंचा कद, नीच वर्ण, रोम युक्त, पापी, असत्य वादी, कपटी, बुद्धिहीन, वस्त्र जीर्ण, धातु सीसा, हिक्का रोग पर प्रभाव है। इसका मुख्य धर्म मारक है।

राहु १-६-७-१२ स्थान में हानिकारक होता है। क्रूर नक्षत्र में तृतीय स्थान में हो तो भाइयों को, चतुर्थ में माता को, पंचम में संतान को, सप्तम में स्त्री को, दशम में पिता को मारक होता है। नवम या दशम में राशि बली हो तो अपनी दशा में उन्नति देता है। दांत ओंठ के बाहर व मोटे धनुषाकार होना राहु का लक्षण है। यह स्वभाव से पाप ग्रह है।

केतु

रंग कृष्ण, चर्म रोग, मातामह, नीच जाति, क्षुधा जनित कष्ट, हस्त, पाद और मोक्ष का कारक है। फजूलखर्ची, लाल, उग्र दृष्टि, विष जिह्वा, ऊँची देह, सशस्त्र, पतित, धूम्र रंग, सदा धूम्रपान करने वाला, व्रणांकित अंग, दुबला और नृशंस, पात्र मट्टी के वस्त्र विचित्र रंग के।

राहु-केतु

होशियार, कार्य साधक, अल्प भाषी, प्रचंड कल्पना शक्ति, उच्च महत्वाकांक्षा, राज कार्य और व्यवसाय में निमग्न; उद्योग रत, एक मार्गी, साधक-बाधक उपद्रवों का सोचने वाला, क्लिष्ट और गूढ़ विद्या प्राप्त करने को रुचि, शान्त और स्थिर स्वभाव, सयुक्तिक भाषण, स्पष्ट वक्ता, निर्भीक, स्वार्थी, पराये दुःख में उदासीन, परोपकार की इच्छा, प्राचीन धर्माभिमानी, वाद विवाद में कुशल, मित्रता के योग्य, उत्साही, समाज कार्यरत।

राहु केतु तो सूर्य और चन्द्र के मार्ग के सम्पात प्रदेश रूप विम्बहीन है इस कारण जिस समय जिस राशि में या जिस भावेश के साथ रहते हैं, उस राशि या भावेश के विम्ब के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। राहु केतु ग्रहण के द्वारा सूर्य और चंद्र के पीड़क माने जाते हैं इस कारण प्रबल और पाप ग्रह माने जाते हैं।

राहु केतु की मैत्री आदि पर विचार

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम	
राहु	बुध शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र मङ्गल	गुरु	जैमिनो आदि का मत
,,	बुध शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र गुरु	मङ्गल	फलदीपि० मत
,,	गुरु शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र मङ्गल बुध	०	सर्वा.चि. आदि का मत

राहु के अनुसार ही केतु की मैत्री होना कहा जाता है परन्तु इनमें भी भिन्न मत हैं।

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम	
राहु	शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध गुरु	मतांतर
केतु	सूर्य चन्द्र मंगल	शुक्र शनि	बुध गुरु	

राहु केतु का स्व-गृह उच्चादि

ग्रह	स्व गृह	उच्च	परमोच्च	नीच	मूल त्रिकोण	
राहु	कन्या	मिथुन	मिथुन ६ अंश	धन	कुम्भ	जैमिनी
	कन्या	वृष	वृष २० अंश	वृश्चिक	कुम्भ	सर्व० चिंता
	कुम्भ	वृष	वृष २० अंश	वृश्चिक	मिथुन	बृ. पारा०
केतु	मीन	धन	धन ६ अंश	मिथुन	सिंह	जैमिनी
	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक २० अंश	वृष	सिंह	सर्व० चि०
	वृश्चिक	वृश्चिक	वृश्चिक २० अंश	वृष	धन	बृ० पारा

ग्रहों के स्वक्षेत्र उच्च मूल त्रिकोण आदि

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वगृह राशि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन क०	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुं०
ग्रह उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
परमोच्च राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
अंश	१०°	३०°	२८°	१५°	५°	२७°	२०°
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
परमनीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
अंश	१०°	३०°	२८°	१५°	५°	२७°	२०°
मूल त्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ

ग्रहों के स्वगृह उच्च मूल त्रिकोण पर विशेष विचार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
किस अंश से किस अंश तक क्या अधिकार है स्पष्टीकरण	सिंह १ से २०° तक मूल त्रि० उपरांत २१ से ३०° तक स्वक्षेत्र	वृष के १ से ३° तक उच्च शेष ४ से ३०° तक मूल त्रि०	मेष के १ से १२° तक मूल त्रि० १३ से ३०° तक स्वक्षेत्र	कन्या १ से १५° तक उच्च १६ से २०° तक मूल त्रि० २१ से ३०° तक स्वक्षेत्र	धनु के १ से १०° तक मूल त्रि० ११ से ३०° तक स्वक्षेत्र	तुला १ से १५° तक मूल त्रि० १६ से ३०° तक स्वक्षेत्र	कुम्भ १ से २०° तक मूल त्रि० २१ से ३०° तक स्वक्षेत्र

स्पष्टीकरण

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वक्षेत्र	सिंह २१ से ३०° तक	कर्क पूरा	मेष १ से १०° तक वृश्चिक पूरा	मिथुन पूरा कन्या २१ से ३०° तक	मीन पूरा धनु के ११ से ३०° तक	वृष पूरा तुला के १६ से ३०° तक	मकर पूरा कुम्भ के २१ से ३०° तक
उच्च एवं परमोच्च अंश	मेष १०° तक	वृष १ से ३०° तक	मकर २८° तक	कन्या १५° तक	कर्क ५° तक	मीन २७° तक	तुला २०° तक
मूल त्रिकोण	सिंह १ से २०° तक	वृष ४ से ३०° तक	मेष १ से १५° तक	कन्या १६ से २०° तक	धनु १ से १०° तक	तुला के १ से १५° तक	कुम्भ १ से २०° तक
नीच और परम नीच	उच्च से ६ राशि अंतर पर नीच होता है जिससे परम उच्च बराबर अंश ही परम नीच में होता है।						

ग्रहों के शुभत्व और अशुभत्व पर विचार

शुभत्व अशुभत्व दो प्रकार के हैं (१) स्वाभाविक (नैसर्गिक) और (२) तात्कालिक अर्थात् परिस्थिति वश ।

(१) नैसर्गिक

विशेष शुभ = गुरु, शुक्र

साधारण शुभ या मिश्र ग्रह = चन्द्र, बुध

बुध—अकेला या शुभ ग्रह युक्त-शुभ ग्रह है

पाप ग्रह युक्त हो तो-पाप ग्रह है

चन्द्र—पूर्ण चन्द्र-शुभ ग्रह है

क्षीण चंद्र-पाप ग्रह है

चन्द्र का विचार—क्षीण चन्द्र-कृष्ण अष्टमी से शुक्ल ८ तक

पूर्ण चन्द्र-शुक्ल ८ के पश्चात् कृष्ण ७ तक

अन्यमत—पूर्ण बल-चन्द्र कृष्ण १ से ५ तक और शुक्ल ११ से १५ (पूर्णिमा) तक।

मध्यम बल-कृष्ण ६ से १० तक और शुक्ल ६ से १० तक।

क्षीण बल-कृष्ण ११ से ३० अमावस्या तक और शुक्ल १ से ५ तक।

पाप ग्रह—शनि, मंगल, सूर्य, क्षीण चन्द्र, पाप ग्रह युत बुध।

तम ग्रह—(अन्धकार रूप)-राहु केतु साहचर्य से फल देते हैं।

राहु-केतु—शुभ हैं-जब किसी शुभ ग्रह की राशि में हों या शुभ ग्रह के साथ हों।

अशुभ हैं-" " अशुभ " अशुभ "

प्रकाशित ग्रह—सूर्य चन्द्र (जो प्रकाश देते हैं)

तारा ग्रह—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

पाप ग्रह में बल—सूर्य, मंगल, शनि, राहु क्रम से पापत्व में अधिक बली हैं अर्थात् सूर्य से अधिक पापत्व मंगल में है, उससे अधिक शनि में, शनि से अधिक पापत्व राहु में प्रबल है।

शुभत्व में बली—बुध, शुक्र, केतु, गुरु ये उत्तरोत्तर शुभत्व में बली हैं शुभ ग्रह की राशि में या शुभ युक्त या अपने उच्च में बुध शुभ है। यहाँ केतु का शुभत्व जब वह शुभ युक्त या शुभ राशि में हो तभी विचारना। जब यह शुभ हैं तो शुक्र से अधिक शुभता जैमिनी ने बताई है।

चन्द्रमा पूर्ण हो या शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो तो शुभ माना जाता है, ऐसा जातक पारिजात का मत है।

शुक्र और गुरु के शुभत्व पर विचार

शुक्र से—सांसारिक सुख और व्यौहारिक सुखों का विचार होता है। शुक्र से सांसारिक, उन्नति होती है न कि आत्मोन्नति। शुक्र के प्रभाव से मनुष्य स्वार्थी होता है।

गुरु—से पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखों का विचार होता है। गुरु सम्पूर्ण आत्म उन्नति का कारक और पारलौकिक बुद्धि को उत्तेजना देने वाला है गुरु परमार्थी होता है।

मंगल और शनि के पापत्व में अन्तर

शनि—यद्यपि दोनों पाप ग्रह हैं परन्तु अन्तर यही है कि शनि बहुत क्रूर होने पर भी अन्तिम परिणाम में सुख देता है। जैसे स्वर्ण को जलाकर अग्नि शुद्ध कर देता है। उसी प्रकार शनि मनुष्य को दुर्भाग्य और दुःख देकर शुद्ध बना देता है।

मंगल—परन्तु मंगल उत्तेजना देने वाला, उमंग और तृष्णा से परिपूर्ण कर देने के कारण सर्वदा दुःख कारक होता है।

तात्कालिक शुभ ग्रह

(१) बुध राहु केतु—जब शुभ ग्रह की राशि में हों या शुभ ग्रह युक्त हों।

(२) सूर्य चन्द्र—जब अष्टम स्थान के स्वामी हों।

(३) अष्टमेश—जब लग्नेश भी हो।

(४) धनेश और व्ययेश—जब किसी शुभ ग्रह के घर में हों या शुभ ग्रह युक्त हों।
(५) त्रिकोणेश—चाहे पाप या शुभ ग्रह हो तो शुभ है।
(६) केन्द्रेश—पाप ग्रह हो तो शुभ है।

अन्य ग्रह परिस्थिति वश इस प्रकार शुभ हो जाते हैं :—

(१) उच्च का ग्रह, (२) स्वस्थानी ग्रह, (३) मित्रक्षेत्री ग्रह, (४) त्रिकोण में स्थित ग्रह, (५) राज योग कारक ग्रह और इनके सम्बन्धी ग्रह (६) १-४-१० भाव में ग्रह (७) त्रिकोणेश और उनसे सम्बन्ध रखने वाले ग्रह (८) केन्द्रेश जो शुभ माने गये हों और उनसे सम्बन्ध रखने वाले ग्रह (९) षड्वर्ग में बली ग्रह अर्थात् स्वगृही, उच्च या मित्र के वर्ग में ग्रह (१०) किसी प्रकार से शुभ ग्रह से सम्बन्ध रखने वाला ग्रह (११) वे ग्रह जो ३-६-११ या २-८-७ घर के स्वामी न हों (१२) शुभ ग्रह जो केन्द्र के स्वामी न हों (१३) १-४-१०-११ घर के ग्रह जिन्हें हर्ष बल प्राप्त हो (१४) लग्न में १-८-३-४ राशि का राहु (१५) मेष का राहु शुभ युक्त हो तो अति शुभ राज योग कारक होता है।

शुभ ग्रह का फल

शुभ ग्रह अपनी दशा में प्रत्येक भाव के सम्बन्ध से जो उत्तम फल होंगे उनको उत्तमता से प्रकट करेगा। जैसे :—

लग्न से—आरोग्यता प्रसन्नता शक्ति स्वभाव शारीरिक बल, संतोष वृद्धि आदि।
धनभाव से—धन वस्त्र उत्तम भोजन आदि।
सहज भाव से—भाई बहन या सुहृदजनों की सहानुभूति और प्रसन्नता।
चतुर्थ भाव से—खेती बाग बगीचा, वाहन, माता की प्रसन्नता, धन प्राप्ति आदि। इसी प्रकार अन्य भावों के सम्बन्ध से शुभ ग्रह शुभ फल देता है।

परिस्थिति वश अशुभ ग्रह

(१) नीच का ग्रह (२) अस्त ग्रह (३) ६-८-१२ के स्वामी ग्रह (४) शुभ ग्रह जो केन्द्र के स्वामी हों (५) षड़बल में निर्बल शत्रु क्षेत्री आदि ग्रह (६) सप्तमेश (७) किसी प्रकार से अशुभ ग्रह से सम्बन्ध रखने वाला ग्रह (८) योग भंग कारक ग्रह का संबन्धी ग्रह (९) ग्रह के स्वस्थान से सप्तम घर का स्वामी (१०) अशुभ ग्रह जो केन्द्र त्रिकोण के स्वामी न हों अति अशुभ हैं (११) शुक्र भी सूर्य से ५ अंश के भीतर हो, अशुभ नवांश में हो शत्रु गृही या नीच गृही हो तो अशुभ हो जाता है।

बृहज्जीव संज्ञा—शनि, मंगल युक्त राहु को बृहज्जीव कहते हैं।
अधोमुखग्रह—सूर्य से प्रथम ६ राशियों में स्थित ग्रह—१,२,३,१०, ११, १२ भाव में।
ऊर्ध्व मुख—सूर्य से द्वितीय ६ राशियों में ग्रह—४, ५, ६, ७, ८, ९ भाव में, ये सुख वित्त देते हैं।

ग्रहों का प्रदेश	ग्रहों के देश
सूर्य—देवभूमि (मेरु) प्रदेश	सूर्य—कलिंग
चन्द्र—जल (समुद्र)	चन्द्र—यवन

मंगल—लंका से कृष्णा नदी तक
शुक्र—कृष्णा नदी से गौतमी नदी तक
गुरु—गौतमी नदी से विन्ध्य पर्वत तक
बुध—विन्ध्य पर्वत से गंगा नदी तक
शनि—गंगा से हिमालय तक

(जातक पारिजात)

मंगल—अवन्ती
शुक्र—कीकट
गुरु—सिन्धु
बुध—मगध
शनि—सौराष्ट्र
राहु—अम्बर
केतु—पर्वत (फलदीप)

ग्रह तत्व पर से मैत्री विचार

यदि एक राशि और एक ही अंश पर वायु, अग्नि तथा पृथ्वी ग्रह (शनि, मंगल, बुध) हों तो आँधी आती है।

अग्नि + आकाश = मंगल गुरु = भूकम्प।

अग्नि + जल = सूर्य या मंगल + चन्द्र या शुक्र = वर्षा।

कौन ग्रह कहाँ पीड़ा करते हैं

१ सूर्य—सिर या मुख में
२ चन्द्र—छाती या गले में
३ मंगल—पीठ और पेट में
४ बुध—हाथ, पैर में
५ गुरु—कमर और टाँगों में
६ शुक्र—गुप्त स्थान गुदा अंडकोष आदि में
७ शनि—घुटना या जाँघ में

जो ग्रह गोचर अष्टक वर्ग आदि में प्रतिकूल हों वह यहाँ बताये अंग में अपने दोष को उत्पन्न करते हैं।

ग्रह कब फल देते हैं

सूर्य-मंगल राशि के आदि में
शनि-चन्द्र ,, मध्य में
गुरु-शुक्र ,, अन्त में
बुध- सम्पूर्ण राशि में

ग्रह राशि में कब फल देते हैं

१ सूर्य-राशि में जाने से ५ दिन पहले देता है।
२ मंगल- ,, ,, ८ दिन ,, ,,
३ बुध- ,, ,, ७ दिन ,, ,,
४ शुक्र- ,, ,, ९ दिन ,, ,,
५ चन्द्रमा- ,, ,, ३ घड़ो ,, ,,
६ राहु- ,, ,, ३ मास ,, ,,
७ शनि- ,, ,, ६ मास ,, ,,
८ गुरु- ,, ,, २ मास ,, ,,

ग्रहों का फल समय (पाक फल का समय)

१ चन्द्र–रात्रि के प्रथम भाग में
२ शुक्र–अर्ध रात्रि में
३ मंगल–दिन के अन्त में
४ बुध–प्रातः काल में
५ सूर्य–मध्याह्न में
६–शनि–दिन के अन्त में
७–गुरु–सर्व काल में

कौन ग्रह किसके दोष को मारता है

१ राहु का दोष–बुध मारता है
२ राहु और बुध का दोष–शनि ,,
३ रा. बु. और शनिका,,-मंगल ,,
४ रा.बु.श. और मंगलका,,-शुक्र,,
५ रा.बु.श.मं.,, शुक्रका ,, –गुरु ,,
६ रा. बु. श. मं. शु.
और गुरु का दोष–चन्द्र ,,
७ रा. बु. श. मं. शु. गु.
और चं. का सूर्य ,,

गुरु सब में शुभवर्द्धक और शक्तिशाली है पूर्ण रूप से दोष हरता है बुध में $\frac{१}{४}$ और शुक्र में $\frac{१}{२}$ शक्ति है परन्तु चन्द्र का बल सब ग्रहों के लिए बीज रूप है। चन्द्र अति बली है।

शुभ ग्रहों का अरिष्ट कारक स्थान

ग्रह	शुक्र	बुध	गुरु
स्थान	सप्तम में	चतुर्थ में	पंचम में

पाप ग्रहों का शुभ स्थान

शनि-अष्टम में मनोरथ पूर्ण करता है
राहु केतु–३-६-११ में सब दोष नाश करता है।

ग्रहों की ज्ञानेन्द्रियाँ

१ सूर्य–दाहिनी आँख, आत्मा है।
२ चन्द्र–बाई आँख, शरीर है।
३ मंगल–आँख (दृष्टि)
४ बुध–नाक सूंघने की शक्ति
५ गुरु–कान श्रवण शक्ति
६ शनि–राहु, केतु स्पर्श
७ चन्द्र शुक्र–मुख (स्वाद)

शरीर पर ग्रहों का प्रभाव कहाँ होता है

१ सूर्य–सिर से मुख तक
२ चन्द्र–गले से हृदय तक
३ मंगल–पेट से पीठ तक
४ बुध–हाथ और पैर
५ गुरु–कमर से जांघ तक
६ शुक्र–शिश्न से वृषण
७ शनि–घुटने से पिंडली

ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति के अनुसार मनुष्य के इन अंगों पर ग्रहों के शुभ या अशुभत्व, योग दृष्टि, उच्च नीच या अंश के विचार से प्रभाव का विचार होता है।

कौन ग्रह किससे मृत्यु करता है

१ सूर्य—अग्नि से
२ चन्द्र—जल से
३ मंगल—शीत से
४ गुरु—पेट रोग से
५ शुक्र—तृषा (खुश्की) से
६ शनि—क्षुधा से
७ बुध—त्रिदोष से

कौन ग्रह के साथ किसका बल बढ़ता है

१ सूर्य के साथ—शनि का बल बढ़ता है
२ शनि ,, ,, —मंगल ,, ,,
३ मंगल ,, —बुध ,, ,,
४ गुरु ,, —चन्द्र ,, ,,
५ चन्द्र के द्वारा—शुक्र ,, ,,
६ शुक्र ,, —बुध ,, ,,
७ बुध ,, —चन्द्र ,, ,,

विफल ग्रह

१ सूर्य के साथ —चन्द्र
२ लग्न से चौथे-भाव में—बुध
३ ,, पांचवें ,, —गुरु
४ ,, दूसरे ,, —मंगल
५ ,, छठे ,, —शुक्र
६ ,, सातवें ,, —शनि

किस ग्रह से क्या विचारना

१ सूर्य—शरीर =पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति, लक्ष्मी,
२ चन्द्र—मन =बुद्धि, राजाकी प्रसन्नता, माता और धन
३ मंगल—बल =पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, शत्रु, और जाति
४ बुध—वाणी =विद्या, बंधु, विवेक, मामा, मित्र और वचन
५ गुरु-ज्ञान व सुख =बुद्धि, शरीर, पुष्टि, पुत्र, और ज्ञान
६ शुक्र—कामदेव =स्त्री, वाहन, भूषण, कामदेव, व्यापार और सुख
७ शनि—दुःख =आयु, जीवन, मृत्यु, कारण, विपत और सम्पत्ति।
८ राहु—पितामह (आजा)
९ केतु—मातामह (नाना)

कौन ग्रह किसके द्वारा चिह्न करते है

१ सूर्य—काठ और चौपायों से व्रण का
२ चन्द्र—सींग मारने या जल जीव के काटने का
३ मंगल—विष अग्नि या शस्त्रकृत
४ बुध, मंगल, शनि—मनुष्य कृत या पत्थर लगने से

ग्रहों का भाग्योदय काल

जब ग्रह कुंडली में उच्च फल दायी होता है तो अपनी दशा काल में उच्च फल देता है । परन्तु भाग्य के उदय करने का समय भी विचारणीय है ।

वह भाग्योदय समय इस प्रकार है—

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
भाग्योदय का वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
	२४	२५	३२	३६	२२	२८	४२	४८	५४

कौन ग्रह क्या रोग कहते हैं

१ सूर्य—पित्तोष्ण ज्वर, देह ताप, मृगी, हृदय रोग, नेत्रव्याधि, शत्रु से भय, चर्मरोग, काष्ठ, अग्नि, शस्त्र, विष, स्त्री, संतान, चौपाया, चोर, राजा, यम, सर्प, पित्त रोग, क्षय, अतिसार, नौकरों से चित्त में व्यसन, अग्नि भय, राजा देव ब्राह्मण इनके सम्बन्ध से संकट, शिव से भय ।

२ चन्द्र—संन्यास रोग, निद्रा के रोग, निद्रा, आलस्य, कफ रोग, अतिसार, पिटिका (पीठ का फोड़ा), शीत ज्वर (मलेरिया ज्वर), सींग वाले और जल जन्तु से भय, मंदाग्नि अरुचि, योषिद्व्यथा (स्त्रियों से पीड़ा), कामला (पीलिया), नपुंसकता, रक्त दोष, जल से भय, बाल ग्रह, दुर्गा, किन्नर, यम, सर्प, स्त्री, यक्ष से भय, वात कफ रोग, जल दोष, स्त्री से उत्पन्न दोष, पांडु रोग, पीनस, देवी से भय, कालिका, असुर और स्त्रीगण से व्याकुलता ।

३ मंगल—तृष्णा (अधिक प्यास), त्रिदोष, पित्त ज्वर, अग्नि, विष अस्त्र से भय, नेत्र रोग, गुल्म, मृगी, मज्जा दोष, चर्म, विचर्चिका (वामा), देह भंग (शरीर में कुरूपता), राजा शत्रु चोर से पीड़ा, भाइयों से, पुत्र और मित्रों से झगड़ा, प्रेत, गन्धर्व घोर ग्रह से भय, शरीर के ऊपरी अंग से सम्बन्ध रखने वाले रोग जैसे फेफड़ा, गला, जीभ, आंख, कान नाक आदि के रोग, कफ, शस्त्र अग्नि इनसे गांठ या व्रण, दारिद्रज रोग से भय, देवी, वीर, शैव गण, भैरव इनसे भय । प्लेग की गिल्टी ।

४ बुध—भ्रांति (मानसिक रोग), दुर्वचन भाषण, नेत्र रोग, गले और नाक से होने वाले रोग, ज्वर, वात रक्त (पांडु), दुःस्वप्न, विचर्चिका (चर्म रोग) अग्नि में पतन, कठोर बन्धन, और इसी प्रकार के कष्ट, गुह्य रोग, उदर, कुष्ठ रोग, मंदाग्नि, शूल, ग्रहणी आदि रोग, सयाने व विष्णु भक्त इनसे दुःख, गन्धर्व के स्थान में रहने वाले असुर और अग्नि कुंड जहाँ बहुधा ये बुरे प्रेत रहते हैं इनसे उत्पन्न दोष ।

५ गुरु—गुल्म (आंतों का रोग), आंत्र ज्वर, हरनिया, शोक, मोह, कफ, रोग, कर्ण रोग, चक्कर आना, वायु कफ, देवस्थान सम्बन्ध से पीड़ा, या जमा किया

हुआ धन (निधि) निकालने का कष्ट, ब्राह्मण, देव के शाप से रोग, किन्नर, यक्ष, गंधर्व, विद्याधर की पीडा से विद्वान् या गुरुजनों के सम्बन्ध में बड़ा अपराध करने के कारण पीड़ा ।

६ शुक्र—पांडु रोग, कफ से उत्पन्न रोग, बात व्याधि, नेत्र पीड़ा, मूत्रकृच्छ रोग, गुप्तेन्द्रिय में रोग, वात कफ, भोग में पीड़ा, वीर्यपात, देह कांति रहित, वेश्या के समागम के कारण शोष, स्त्रियों से उत्पन्न मेह आदि रोग, अपनी या दूसरे की स्त्री से भय, योगिनी भय, यक्षी, मातृ गण का भय, असुर भय, परम मित्र की मित्रता भंग ।

७ शनि—कफ और बात रोग, पाद पीडा, अभाग्य, श्रम, तंद्रा, भ्रांति, कुक्षि रोग, अति उष्ण, भृत्य त्याग, पसली में चोट, स्त्री और संतान को भय, कोई अंग में चोट, हृदय ताप, काष्ठ या पत्थर से चोट, वात प्रधान रोग, दरिद्र, अपने कर्म, पिशाच और चोर से पीड़ा ।

८ राहु—हृदय की धड़कन, कुष्ठ, विमति, कृत्रिम विष से भय, पैर में पीड़ा, पिशाच और नाग की पीड़ा, स्त्री और संतान को आपद, नेत्र रोग, बात, भूत ज्वर, फांसी, संक्रामक रोग, शीतला, अपस्मार, क्षुधा, कृमि, अरुचि, कुष्ट से भय, प्रेत भूत पिशाच, बंधन (कारागार) से भय ।

९ केतु—ब्राह्मण और क्षत्रिय से विरोध की पीड़ा या शत्रु विरोध से पीड़ा, संधि रोग, कंडु (खाज), आधार हीन व नीच जातिवालों से भय, शीतलता, बाद, वात, भूत ज्वर ।

१० मांदि—(गुलिक) प्रेतभय, विषभय, शारीरिक पीड़ा, समीप के कुटुम्बी की मृत्यु से शोक ।

कौन ग्रह किस रोग से मृत्यु करते हैं

१ सूर्य—अग्नि, पित्तज्वर, पित्त, शस्त्र से । सूर्य स्वक्षेत्री या उच्च का हो तो सौख्य अन्यराशि का हो तो दुःख, शत्रुक्षेत्री हो तो बिजली गिरे, सर्प काटे ।

२ चन्द्र—विसूचिका, जलरोग जैसे जलोदर आदि या साधारण प्रकार के कफके रोग से पाप ग्रह की राशि में हो तो श्वास या त्रिदोष ज्वर से ।

३ मंगल—अचानक अग्नि, क्षुद्र अभिचार टोना और शस्त्र से, कुष्ट और स्त्री जनित रोग होकर शल्य चिकित्सा से मरतः है ।

४ बुध—पांडु रोग, रक्त हीनता, और इसी प्रकार के रोग, भ्रमज (चक्कर आना), ज्वर ताप, शूल होकर मरे । तीर्थ में मरता है मरते समय श्रद्धा रहे ।

५ गुरु—सुख पूर्वक मृत्यु या कफ से, रोग का ज्ञान नहीं होता परन्तु सावधान होकर मरता है ।

६ शुक्र—वीर्य जनित रोग से जो स्त्री सम्बन्ध से प्राप्त हो या प्यास से व्याकुल होकर तीर्थ में मरे ।

७ शनि—बात रोग, भयानक ज्वर जैसे टाईफाईड आदि। या भूख से परदेश में मरे। क्षुधा तृषाकी पीड़ा से या शत्रु द्वारा विष या सर्प या अग्नि में जलकर।

८ राहु—कोढ़, विषयुक्त अन्नपान से, विषैले कीड़ों के काटने से या चेचक या इसी प्रकार के रोग से।

९ केतु—अस्वाभाविक मृत्यु हो जैसे अपघात आदि जो रिपु विरोध से या कीट के कारण हो।

ये अष्टम स्थान के अधिकारी होने या उनके संबन्ध में अपने रोग से मरण करते हैं।

ग्रहों के स्थान

१ सूर्य—शिव मंदिर, खुला स्थान अर्थात् खुली जगह जहाँ प्रकाश है, जल रहित स्थान, पूर्व दिशा।

२ चन्द्र—दुर्गादेवी का स्थान, स्त्रियों के आधीन स्थान, जल औषधि (जड़ी बूटी आदि) जहाँ है वह स्थान, मधु या शराब रखने का स्थान, उत्तर पश्चिम दिशा।

३ मंगल—चोरों के अड्डे का स्थान, नीच लोगों के आश्रित स्थान, अग्नि का स्थान, युद्ध स्थान, दक्षिण दिशा।

४ बुध—विद्वान् पुरुषों की जगह, विष्णु स्थान, सभा स्थान, विहार स्थान, गणक स्थान, और उत्तर दिशा।

५ गुरु—कोष स्थान पीपल वृक्ष, देव ब्राह्मण गृह, उत्तर पूर्व दिशा।

६ शुक्र—वेश्या, शयन स्थान, नृत्य स्थान, स्त्रियों के रहने का स्थान, अवरोध स्थान, वेश्या का स्थान, दक्षिण पूर्व दिशा।

७ शनि—नीच श्रेणी के लोगों का स्थान, अपवित्र स्थान, शास्ता (वरुण) देव का मन्दिर पश्चिम दिशा।

८ राहुकेतु—वल्मीक (बमीठा), काले छिद्र जिनमें सर्प रहते हैं, दक्षिण पश्चिम दिसा।

किस ग्रह से क्या प्रकट होता है

१ सूर्य—शिव का उपासक, भिषक (वैद्य), राजा यज्ञ आदि कृत्य करने वाला, मंत्री बाघ, हिरन, चक्रवाक (चकवा)।

२ चंद्र—शास्ता, देवी का उपासक, स्त्री, रजक, कृषक जल के जीव, खरगोश, हरिन, बक, (सारस), चकोर।

३ मंगल—रसोइया (रसोई घर में) आयुध भूत (जिरहवख्तर अस्त्र आदि ले चलने वाला) सुअर, मेढ़ा, कुक्कुट, शृंगाल (सियार), गिद्ध, चोर।

४ बुध—गोप (गो चरवाहा), विद्वान्, शिल्पी, गणक (चतुर हिसाबी), विष्णुदास, गरुड़, चातक पक्षी, तोता, बिल्ली।

५ गुरु—दैवज्ञ (ज्योतिषी) मंत्री, गुरु, विप्र, सन्यासी का नेता, कबूतर, घोड़ा, हंस।

६ शुक्र—गाने बजाने वाला, धनी पुरुष, वणिक, नट (नृत्यक), विट, तंतुवाह (जुलाहा), वेश्या, मोर, महिष, तोता, गाय ।

७ शनि—तेली, दास, नीच, शिकारी, लोहार, हाथी, कौवा, कोयल ।

८ राहु केतु—बौद्ध, सर्प पकड़ने वाला, गधा, मेढ़ा, भेड़िया, ऊंट, सर्प, अंधकार में रहने वाला स्थान या इसी प्रकार के स्थान मच्छड़, खटमल, कीट उल्लू ।

साधारणतः ग्रहों को इस प्रकार बली समझना

१ सूर्य—स्वगृही, उच्च राशि, स्वहोराद्रेष्काण में या नवांश में, रविवार, उत्तरायण, दिन के मध्याह्न में, रात्रि के आदि में, मित्र के नवांश आदि में और लग्न से दशम भाव में बलवान् होता है ।

२ चंद्र—कर्क राशि में, वृष राशि में, अपने दिन, होरा द्रेष्काण नवांश आदि में, राशि के अन्त में, शुभ ग्रहों से दृष्ट राशि में, चतुर्थ भाव में, दक्षिणायन में बली होता है । ऋक्ष संधि को छोड़कर प्रत्येक स्थान में पूर्ण बिम्ब और बली, चन्द्र यदि प्रत्येक ग्रहों से देखा जाता हो तो राजयोग कारक है अर्थात् इस योग में जन्म हो तो राजा हो ।

३ मंगल—अपने बार में, अपने नवांश द्रेष्काण आदि अपने वर्ग में, मीन, वृश्चिक, कुम्भ, मकर और मेष राशि में, रात्रि में, वक्रता पर, दक्षिण दिशा में राशि के आदि में बली होता है । दशम भाव में कर्क में रहने पर सुख देता है ।

४ बुध—कन्या और मिथुन राशि में, अपने दिन में, अपने वर्ग में, धनुष राशि में रविवार के अतिरिक्त दिन रात (सर्वदा) और उत्तरायण में बली होता है । यदि राशि के मध्य का होकर लग्न में हो तो सदा यश और बल देता है ।

५ गुरु—मीन, वृश्चिक, धन, कर्क राशि में, अपने वर्ग और अपने बार में, मध्य दिन में, उत्तरायण में, राशि के मध्य में, कुम्भ राशि में बली होता है, नीच में भी यदि लग्न, चतुर्थ और दशम भाव में हो तो बहुत धन देता है ।

६ शुक्र—उच्च राशि (मीन) अपने वर्ग तथा वार में, राशि के मध्य में षष्ठ, द्वादश, तृतीय और चतुर्थ स्थान में, अपराह्न में, युद्ध के समय, चन्द्र के साथ रहने पर वक्री होने पर, यदि सूर्य के आगे रहे तो शुभ होता है ।

७ शनि—तुला, मकर और कुम्भ में, सप्तम भाव में, दक्षिणायन में, अपने द्रेष्काण आदि तथा अपने वार (शनिवार) में, राशि के अंत में, संग्राम में बली होता है यदि कृष्ण पक्ष में वक्री हो तो समस्त राशि में बलवान् होता है ।

८ राहु—मेष, वृष, कुम्भ, कन्या, वृश्चिक और कर्क में, दशम स्थान में ।

९ केतु—मीन, वृष तथा धनु में, रात्रि में, उत्पात में, केतु उदय में बली होता है ।

ऊपर बताये प्रकार के ग्रह के बल हैं परन्तु भाव फल आदि के प्रभाव से इनमें अन्तर पड़ जाता है । इस कारण भाव में, योग में, दशा फल में उनके सब फल प्राप्त नहीं होते ।

१ रुद्र ग्रह निरूपण—(१) लग्न और सप्तम स्थान से जो अष्टम स्थान के स्वामी हों उन दोनों में जो बली हो वह रुद्र ग्रह है ।

(२) इन दोनों अष्टमेशों में दुर्बल भी पाप ग्रह से देखा जाता हो तो वह रुद्र ग्रह कहलाता है ।

(३) बलवान् रुद्र ग्रह की दृष्टि हो तो अल्पायु होती है ।

२ महेश्वर ग्रह—(१) आत्म कारक से अष्टम स्थान का स्वामी महेश्वर ग्रह है ।

(२) यदि आत्म कारक अपने उच्च या स्वगृह में हो तो आत्मकारक से द्वादश और अष्टमेश इन दोनों में जो बली हो वही महेश्वर ग्रह होता है ।

(३) यदि राहु या केतु से आत्मकारक युक्त हो या आत्मकारक से अष्टम घर में राहु या केतु हो उनसे अष्टमेश और द्वादशेश इन दोनों में जो बली हो वही महेश्वर होता है ।

३ ब्रह्म ग्रह—(१) लग्न और सप्तम इन दोनों में जो बली हो उससे षष्ठेश, अष्टमेश और द्वादशेश इन तीनों में जो बली हो वह लग्न और सप्तम में जो बली हो उसके पृष्ठ राशि में स्थित होकर विषम राशि में हो तो वह ब्रह्म ग्रह कहलाता है ।

पृष्ठ—सप्तम भाव के भोग्यांश से लग्न के भुक्तांश तक लग्न का पृष्ठ और लग्न के भोग्यांश से सप्तम के भुक्तांश तक सप्तम का पृष्ठ समझना ।

४ ब्रह्मा ग्रह—(१) शनि और राहु या केतु को ब्रह्मत्व प्राप्त हो तो उससे षष्ठेश ब्रह्मा समान होता है ।

(२) यदि एक से अधिक ग्रह में ब्रह्मत्व प्राप्त हो तो उनमें अधिक अंश वाला ब्रह्मा होगा ।

(३) राहु का योग होने पर विपरीत ब्रह्मा ग्रह होता है अर्थात् सबमें अल्प अंश वाला ग्रह ब्रह्मा होता है ।

(४) एवं अल्पकारक से अष्टमेश और अष्टम स्थान में स्थित ग्रह भी ब्रह्मा होता है ।

(५) जहाँ विवाद हो तो सबसे बली ग्रह ब्रह्मा होता है ।

५ आरोही ग्रह—उच्च की ओर जाने वाला ग्रह—शुभदायक है ।

(उच्च अभिलाषी ग्रह)

६ अवरोही ग्रह—नीचे को ओर जाने वाला ग्रह—अशुभ कारक है ।

जैसे सूर्य मीन पर, चन्द्र मेष में, मंगल धन में, बुध सिंह में, गुरु मिथुन में, शुक्र कुम्भ में, शनि कन्या में उच्चाभिलाषी होता है अर्थात् आगे बढ़ने पर वह उच्च राशि में चला जायगा ।

फल—उच्चाभिलाषी ग्रह से राज पूज्य और अपने वंश में राजा समान होता है । इसके विपरीत फल नीच की ओर जाने वाले ग्रह का होता है ।

लग्न से भी आरोही अवरोही का इस प्रकार विचार होता है।

आरोही—कोई ग्रह या लग्न १५° पहुँचने तक आरोही,

अवरोही-इसके पश्चात अवरोही कहलाता है।

दुःस्थ ग्रह—अस्त, नीच राशि का या अंश में, शत्रु स्थानी या ६-८-१२ घर का ग्रह।

सुस्थ ग्रह—चन्द्र १०, ११, १, ६, ५ या ७वें घर में।

पीड़ित ग्रह—ग्रह युद्ध में पराजित ग्रह, केतु से धूमिल ग्रह, उल्कापात वाला ग्रह, सूर्य चन्द्रमा पाप युक्त या ग्रहण से युक्त।

सूर्य ग्रस्त-सूर्य अमावस्या के दिन राहु केतु युक्त हो तो ग्रस्त कहलाता है।

उत्तमांश—मूल त्रिकोण, स्वोच्च (परमोच्च) स्वक्षेत्री और केन्द्र में।

ग्रह युक्त या दृष्ट—किसी ग्रह से युक्त हो या किसी ग्रह से दृष्ट हो।

ग्रह युक्त या एकत्र-ग्रहों के एक राशि पर होने से यह नहीं होता, लगभग एक से उनके अंश हों तो प्रभाव शील फल होता है।

दृष्टि—दृष्टि में अंश लगभग समान हों या दीप्तांश के भीतर हों जैसे मेष के ७° पर चन्द्र हो और उस पर शनि की दृष्टि हो शनि तुला राशि के ७° के लगभग हो तब उसकी दृष्टि समझी जायगी। यदि शनि तुला के २५° पर हो तो उस दृष्टि का प्रभाव नहीं होगा।

कर्तरी ग्रह-शुभ ग्रह के द्वादश और द्वितीय भाव में जब अशुभ ग्रह हो तो उसे अशुभ कर्तरी योग कहेंगे जिसका फल अनिष्ट कारक होता है।

पाप ग्रह—पाप ग्रहों के स्वस्थान की राशियाँ।

शुभ ग्रह – शुभ ग्रहों " " "

दो शुभ या पापग्रहों के मध्य का स्पष्टीकरण

कोई ग्रह कोई शुभ या पाप ग्रहों के बीच उस समय कहा जाता है जब कि दोनों ओर ३०° के भीतर कोई ग्रह न हो। जैसे चन्द्र मेष के १२° पर है इसमें दोनों ओर ३०° लेना। मेष के १३वें अंश से वृष के १२वें अंश तक कोई पाप ग्रह नहीं होता यह आगे का हुआ। इसी प्रकार मीन के १३° से मेष के १२ अंश तक कोई पाप ग्रह नहीं होता। मान लो चन्द्रमा मीन के १° में और मंगल मेष के ५९ अंश में है दोनों का अन्तर ५८ अंश हुआ इसी प्रकार शनि मकर के २ अंश पर है जो चन्द्र के पीछे है तो चन्द्र से ५९ अंश अन्तर पर हुआ। यद्यपि यहाँ चन्द्र दो पाप ग्रहों के बीच में है परन्तु उन का अन्तर ३० अंश से अधिक हो जाने के कारण बुरा फल नहीं देगा।

मध्य का अर्थ है दो ग्रहों के बीच में। शुभ ग्रहों के बीच कोई ग्रह हो तो शुभ फल, पाप ग्रहों के बीच में होने से बुरा फल और एक पाप दूसरा शुभ ग्रह हो तो मिश्र फल होता है। जैसे चन्द्र के एक ओर गुरु दूसरी ओर शुक्र हो और यह अन्तर ३० अंश के भीतर हो तो कहा जायगा चन्द्र दो शुभ ग्रहों के बीच में है।

अशक्त ग्रह—चन्द्र के साथ ग्रह हो चाहे वह उच्च में हो, मित्र गृही स्वराशि या

स्वनवांश में हो जब उसकी किरणें दबी हुई हों तो वह अशक्त समझा जाता है ।

तारक मारक ग्रह

	ग्रह	मारक ग्रह	तारक ग्रह
१	रवि का	शनि, राहु	शेष—अर्थात्, चन्द्र, मं०, गुरु, शुक्र, बुध, केतु
२	चन्द्र ,,	बुध, शनि, राहु, केतु	,, ,, सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र
३	मंगल ,,	शुक्र, शनि, राहु, केतु	,, ,, सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु
४	बुध ,,	चन्द्र, मंगल, गुरु	,, ,, सूर्य, शुक्र, शनि, राहु, केतु
५	गुरु ,,	बुध, शुक्र, राहु	, ,, सूर्य, चन्द्र, मं०, शनि, केतु
६	शुक्र ,,	सूर्य, मंगल, गुरु, राहु	,, ,, चन्द्र, बुध, शनि, केतु
७	शनि ,,	सूर्य, चन्द्र, मंगल	,, ,, बुध, गुरु, शुक्र, राहु केतु

ग्रहों के मारक ग्रह

ग्रह	सूर्य से	शनि से	मंगलसे	गुरुसे	चन्द्र से	शुक्र से	बुधसे
मारक	शनि	मंगल	गुरु	चन्द्र	शुक्र	बुध	चंद्र

इस प्रकार सब ग्रह एक दूसरे के फल को नष्ट करते हैं । फल विचारते समय तो विरोधी बातों का भी विचार करना जैसे शनि अशुभ फलदायी हो और सूर्य शुभ फलदायी हो तो सूर्य के प्रभाव से शनि का दोष मिट जायगा । इसी प्रकार मारक ग्रह का विचार करने से ठीक फल मिलता है ।

अध्याय ४

मैत्री, दृष्टि आदि

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि राहु	मंगल गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शनि शुक्र राहु	राहु	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र मंगल

तात्कालिक मैत्री

मित्र—जहाँ ग्रह कुंडली में हैं उससे २,३,४, और १०,११,१२ वां स्थान । अर्थात् ग्रह के आगे या पीछे ३-३ स्थान मित्र ।

शत्रु—शेष अर्थात् १,५,३,७,८,९ वां स्थान । अर्थात् ग्रह के साथ जो ग्रह हों और उपरोक्त स्थान छोड़कर इतर स्थानों में जो ग्रह हों वे शत्रु हैं ।

पंचधा मैत्री

अधिमित्र—मित्र + मित्र
अधिशत्रु—शत्रु + शत्रु
मित्र—सम + मित्र
शत्रु—सम + शत्रु
सम—शत्रु + मित्र
या मित्र + शत्रु

अर्थात् दोनों में मित्र हों तो अधिमित्र, दोनों में शत्रु हों तो अधिशत्रु, एक में मित्र दूसरे में शत्रु हो तो सम, एक में सम दूसरे में मित्र हो तो मित्र यदि एक में सम दूसरे में शत्रु हो तो पंचधा मैत्री में वह शत्रु लिखा जायगा ।

नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्री का मिश्रण पंचधा मैत्री होती है ।

तात्कालिक मैत्री पर विचार

जैसे कोई किसी का मित्र रहने पर भी तात्कालिक कारण वश कभी विरोध या समता भाव दिखाता है । इसी प्रकार शत्रु रहने पर भी तात्कालिक कार्य वश मित्र भाव दिखाता है यह तात्कालिक मैत्री है । परन्तु नैसर्गिक और तात्कालिक मिल कर पंचधा मैत्री बनती है । तात्कालिक मैत्री सामयिक है नैसर्गिक मैत्री स्थाई है । तात्कालिक की अपेक्षा नैसर्गिक मैत्री का अधिक प्रभाव है ।

मैत्री में अधिमित्र उत्तम मित्र है अच्छा फल देता है । अधिशत्रु कार्य नाश करता है । नैसर्गिक शत्रु सदा नाशकारी है । तात्कालिक शत्रु समय अनुसार नाश करता है । पंचधा शत्रु बुरा फल देकर हानि करता है ।

नैसर्गिक मैत्री पर विचार

एक ग्रह की किरणों से दूसरे ग्रह की किरणों को कभी२ सहायता पहुँचती है कभी कभी विरोध प्रगट होता है । कभी कभी न विरोध और न सहायता प्रगट होती है अर्थात् सम भाव प्रगट होता है न मित्र है और न शत्रु ।

सत्याचार्य के मत में मूल त्रिकोण से २–१२, ५–९, ४–८ भाव के स्वामियों को बल मिलता है अर्थात् उस स्थान के स्वामियों की किरणों से उस मूल त्रिकोण वाले ग्रह की किरणों को सहायता मिलती है ।

उक्त बल पाने वाले ग्रह को यदि २ बार सहायता मिल जाती है तो वह उस मूल त्रिकोण वाले ग्रह का स्वाभाविक मित्र हो जाता है । एक बार सहायता मिलने

ग्रह मूलक त्रिकोण
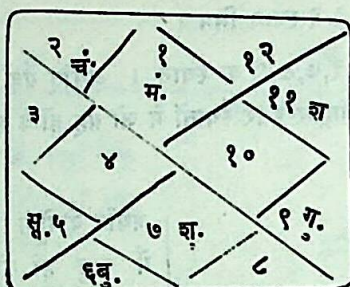
से सम हो जाता है। सहायता न मिलने से शत्रु हो जाता है। परन्तु इसमें विशेषता यह है कि सूर्य राजा और चंद्र रानी हैं जिनका एक एक ही स्वस्थान है। इनको एक बार सहायता मिल जाने से मित्र हो जाते हैं जैसे—(१) सूर्य का मूल त्रि० सिंह है उससे दूसरे स्थान का स्वामी बुध है, ४ का मंगल, ३ का गुरु, ८ का गुरु, १२ का चंद्र, सूर्य मेष का उच्च है मेष का स्वामी मंगल है यहाँ मंगल और गुरु २ बार आये, चंद्र एक ही बार आया इससे ये सब मित्र हुए यहाँ चंद्र एक ही बार आने से मित्र हो गया। परन्तु बुध १ बार आया तो सम हो गया शेष शत्रु हो गये। इसका अधिक स्पष्टीकरण भाग १ में दे दिया है।

ग्रहों का पाचक बोधक आदि ज्ञान चक्र १ ग्रह | चक्र २, स्थान पाचक आदि का

ग्रह का	१ पाचक	२ बोधक	३ कारक	४ बेधक	ग्रह से	पाचक	बो.	का.	बे.	स्पष्टीकरण
१ सूर्य	शनि	मंगल	गुरु	शुक्र	सूर्य	६	७	९	११	सूर्य से छठे स्थान में
२ चंद्र	शुक्र	मंगल	शनि	सूर्य	चन्द्र	५	९	११	३	शनि हो तो पाचक,
३ मंगल	सूर्य	चन्द्र	शनि	बुध	मंगल	२	६	११	१२	सातवें में मंगल हो तो
४ बुध	चन्द्र	गुरु	शुक्र	मंगल	बुध	२	४	५	५	बोधक, नवम में गुरु
५ गुरु	शनि	मंगल	चन्द्र	सूर्य	गुरु	६	८	७	१२	हो तो कारक, ११वें
६ शुक्र	बुध	सूर्य	गुरु	शनि	शुक्र	२	६	१२	४	स्थानमें शुक्र हो तो
७ शनि	शुक्र	चन्द्र	गुरु	मंगल	शनि	३	११	६	७	बेधक होता है।
										देखो चक्र ३

चक्र ३, पाचक बोधक आदि ज्ञान । चक्र ४, पाचक आदि का स्पष्टीकरण

ग्रह से	१ पाचक	२ बोधक	३ कारक	४ बेधक
१ सूर्य से	६ वां शनि	७ वां मंगल	९ वां गुरु	११ वां शुक्र
२ चन्द्र से	५ शुक्र	९ मंगल	११ शनि	३ सूर्य
३ मंग. से	२ सूर्य	६ चन्द्र	११ शनि	१२ बुध
४ बुध से	२ चन्द्र	४ गुरु	५ शुक्र	५ मंगल
५ गुरु से	६ शनि	८ मंगल	७ चन्द्र	१२ सूर्य
६ शुक्र	२ बुध	६ सूर्य	१२ गुरु	४ शनि
७ शनि	३ शुक्र	११ चन्द्र	६ गुरु	७ मंगल

ग्रह	पाचक	बोधक	कारक	बेधक	स्पष्टीकरण
१ सूर्य	मंग. से २	शुक्र से ६	०	चंद्र से ३	मंगलसे तीसरा सूर्य होने पर
२ चन्द्र	बुध से २	मंग. से ६ शनि ११	गुरु से ७	०	पाचक होता है शुक्र से छठा सूर्य होने पर
३ मंगल	०	चन्द्र ९ गुरु ८		शनि ७ बुध ५	बोधक होता है चन्द्र से तीसरा सूर्य होने पर
बुध	शुक्र से २	०		मंगल १२	बेधक होता है इत्यादि ।
गुरु	०	बुध से ४	शुक्र से १२		
शुक्र	चन्द्र ५ शनि ३	०	बुध ५	सूर्य ११	
शनि	गुरु ६		चं. ११ मं. ११	शुक्र ४	

बोधक पाचक आदि के अनुसार मैत्री

ग्रह के	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु मित्र	पाचक शेष	पाचक शेष	बेधक शेष	बोधक शेष	पाचक शेष	बेधक शेष	कारक शेष

यह मैत्री नैसर्गिक मैत्री के अतिरिक्त है। ये भी ग्रहों के बल विचारने के भिन्न २ जरिये हैं जिससे अच्छा या बुरा फल का विचार होता है।

जैसे शनि सूर्य से छठा हो तो उसकी पाचक संज्ञा हो जाती है तब वह पाचक होने के कारण सूर्य का शत्रु हुआ ।

पाचक आदि संज्ञा अनुसार ग्रहफल

(१) पाचक मित्र संज्ञक हो—मिष्ठान्न, मिष्टपान; श्रेष्ठ वस्त्र, भूषण की प्राप्ति, राज्य लाभ, धन लाभ अति सौख्य, मन में उत्साह बड़ा सामर्थ्य ।

,,शत्रु ,, —उपरोक्त का विपरीत फल

पाचक का स्वाभाविक गुण—भाग्योदय करता है, राज पूज्यत्व, विद्या आनन्द सहित, सभा में प्रवेश करना। परन्तु मित्र होने से उक्त फल देता है। शत्रु होने से इसके विपरीत फल करता है। बली हो तो विपरीत तो नहीं करता परन्तु उक्त फल कम करता है।

(२) बोधक मित्र—दया तप से प्राप्त अविचारित भाग्य करता है। मित्र होने से उपरोक्त फल, पूर्ण शत्रु होने से विपरीत फल करता है।

(३) कारक मित्र—कभी भाग्य वृद्धि, कभी भाग्य हानि, कभी स्त्री धन पुत्रों को रोग पीड़ा, चोर भय, अग्नि पीड़ा, लोगों में कलह।

शत्रु—विपरीत फल औरों की तरह नहीं करता विशेषतः चोर भय, अग्नि भय, बन्धु भय, राजाओं से अति दुःख और पद की च्युति करता है।

(४) बोधक मित्र—विदेश गमन, धन नाश करता है।

शत्रु—उपरोक्त फल अन्यथा करता है।

पाकेश मैत्री

फल देने वाला ग्रह पाकेश से ६-८-१२ स्थान में शत्रु। सप्तम में अशुभ होता है। १, २, ३, ४, ५, और ९-१०-११ स्थानों में मित्र होता है।

दृष्टि विचार

सूर्य चंद्र बुध शुक्र की जो साधारण दृष्टि होती है उसके अतिरिक्त शनि गुरु मंगल की विशेष दृष्टि होती है।

ग्रह	साधारण दृष्टि		विशेष दृष्टि
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र	१ चरण दृष्टि (पाव)	३–१०	पूर्ण दृष्टि
	२ चरण दृष्टि (अर्द्ध)	५–९	शनि ३–१०–७
	३ चरण दृष्टि (पौन)	४–८	मंगल ४–८–७
	४ चरण दृष्टि (पूर्ण)	७	गुरु ५–९–७

अर्थात् ग्रह अपने स्थान से गिनने पर ३-१० स्थान पर एक पाद दृष्टि से देखता है। सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है इत्यादि।

१, २, ६, ११, और १२ वें स्थान पर ग्रहों की दृष्टि नहीं होती है।

एक चरण दृष्टि का ५ विश्वा बल होता है, पूर्ण दृष्टिमें २० विश्वा बल होता है। पूर्ण दृष्टि ६०' कला की मानी जाती है।

मतान्तर

ग्रह	पाद दृष्टि	अर्द्ध दृष्टि	पौन दृष्टि	पूर्ण दृष्टि	यह मत
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र	३–१०	५–९	४–८	७	जातकाभरण
शनि	५–९	४–८	७	३–१०	मान सागरी
मंगल	७	३–१०	५–९	४–८	आदि का है
गुरु	४–८	७	३–१०	५–९	

कुछ का मत है कि शनि मंगल गुरु की सप्तम स्थान में दृष्टि नहीं होती परन्तु यह उनकी भूल है। होरारत्न आदि में स्पष्ट लिखा है कि सप्तम स्थान पर भी इनकी दृष्टि होती है।

केतु को बहुमत से अंधा माना है इसमे उसकी दृष्टि नहीं होती पर कुछ लोगों ने कहा है कि केतु की भी दृष्टि होती है। राहु के समान केतु की भी दृष्टि मानते हैं और कुछ योगों में केतु की दृष्टि का वर्णन किया है।

दृष्टि	पाद दृष्टि	अर्द्ध दृष्टि	पौन दृष्टि	पूर्ण दृष्टि	राहु को
राहु की	३-६	२-१०	अपने घरमें	५	१,११ घरमें
अन्यमत-राहु	७	३,६,४,८	२ १९	५,७,९,१२	दृष्टि नहीं होती

ग्रहों के दीप्तांश

ग्रह—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१०	५	४	३॥	४॥	३	४॥

दीप्तांश का अर्थ यह है कि उस ग्रह की ज्योति का घेरा कितने अंश तक प्रभाव कारक है। ग्रह के आगे या पीछे इतने अंश तक द्रष्टा ग्रह का विचार करना।

जब दीप्तांश के भीतर किसी ग्रह की दृष्टि हो तो उस पूर्ण दृष्टि का पूर्ण फल मिलता है।

ग्रहों की सप्तम स्थान पर दृष्टि बताई है। जैसे किसी टार्च का प्रकाश किसी पदार्थ पर डाले तो उसका जितना प्रकाश का फैलाव होगा उस पर सन्मुख तीव्र प्रकाश पड़ेगा आजू बाजू अल्प प्रकाश होकर पश्चात पूर्ण अन्धकार दिखता है इसी प्रकार फोकस के कुछ अन्तर आजू बाजू कुछ थोड़ा अवश्य प्रकाश देता है उस का विचार दीप्तांश सदृश समझना।

जैसे मंगल यदि मेष के ४ अंश पर और शनि तुला के २८ अंश पर है तब साधारण नियम के अनुसार मंगल शनि को पूर्ण दृष्टि से देखता है। परन्तु सूक्ष्म रूप से विचार करो तो मेष के ४ अंश से तुला के ४ अंश तक सप्तम स्थान हुआ पर शनि तुला के २८ अंश पर होने से २४ अंश अधिक पर है। यहाँ मंगल की पूर्ण ज्योति अर्थात् दृष्टि तुला के ४ अंश पर पड़ती है। मंगल का दीप्तांश ४ अंश है यदि शनि तुला के ८ अंश पर भी हो तो मंगलकी पूर्ण दृष्टि समझी जायेगी। छाया मात्र ही होने से पूर्ण दृष्टि का प्रभाव नहीं रहेगा फल की छाया मात्र ही मिलेगी।

ग्रहों की साधारण दृष्टि का चक्र १

राशियां / अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	।।	१	१।।	२	२।।	३	३।।	४	४।।	५
२	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
३	४५	४४।।	४४	४३।।	४३	४२।।	४२	४१।।	४१	४०।।	४०
४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०
५	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
६	६०	५९।।	५९	५८।।	५८	५७।।	५७	५६।।	५६	५५।।	५५
७	४५	४४।।	४४	४३।।	४३	४२।।	४२	४१।।	४१	४०।।	४०
८	३०	२९।।	२९	२८।।	२८	२७।।	२७	२६।।	२६	२५।।	२५
९	१५	१४।।	१४	१३।।	१३	१२।।	१२	११।।	११	१०।।	१०
१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राशियां / अंश	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	५।।	६	६।।	७	७।।	८	८।।	९	९।।	१०
२	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३	३९।।	३९	३८।।	३८	३७।।	३७	३६।।	३६	३५।।	३५
४	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०
५	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
६	५४।।	५४	५३।।	५३	५२।।	५२	५१।।	५१	५०।।	५०
७	३९।।	३९	३८।।	३८	३७।।	३७	३६।।	३६	३५।।	३५
८	२४।।	२४	२३।।	२३	२२।।	२२	२१।।	२१	२०।।	२०
९	९।।	९	८।।	८	७।।	७	६।।	६	५।।	५
१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राशियां

अंश	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१०॥	११	११॥	१२	१२॥	१३	१३॥	१४	१४॥
२	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
३	३४॥	३४	३३॥	३३	३२॥	३२	३१॥	३१	३०॥
४	९	८	७	६	५	४	३	२	१
५	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
६	४९॥	४९	४८॥	४८	४७॥	४७	४६॥	४६	४५
७	३४॥	३४	३३॥	३३	३२॥	३२	३१॥	३१	३०॥
८	१९॥	१९	१८॥	१८	१७॥	१७	१६॥	१६	१५॥
९	४॥	४	३॥	३	२॥	२	१॥	१	॥
१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगल की विशेष दृष्टि का चक्र २

राशियां

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
२	१५	१६॥	१८	१९॥	२१	२२॥	२४	२५॥	२७	२८॥	३०	३१॥	३३	३४॥	३६
३	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
६	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
७	६०	५९	५८	५६	५७	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६

राशियां

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२	३७॥	३९	४०॥	४२	४३॥	४५	४६॥	४८	४९॥	५१	५२॥	५४	५५॥	५७	५८॥
३	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१
६	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
७	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१

गुरु की विशेष दृष्टि का चक्र ३

राशियां

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
३	४५	४५॥	४६	४६॥	४७	४७॥	४८	४८॥	४९	४९॥	५०	५०॥	५१	५१॥	५२
४	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२
७	४५	४५॥	४६	४६॥	४७	४७॥	४८	४८॥	४९	४९॥	५०	५०॥	५१	५१॥	५२
८	६०	५८॥	५७	५५॥	५४	५२॥	५१	४९॥	४८	४६॥	४५	४३॥	४२	४०॥	३९

राशियां / अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
३	५२॥	५३	५३॥	५४	५४॥	५५	५५॥	५६	५६॥	५७	५७॥	५८	५८॥	५९	५९॥
४	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
७	५२॥	५३	५३॥	५४	५४॥	५५	५५॥	५६	५६॥	५७	५७॥	५८	५८॥	५९	५९॥
८	३७॥	३६	३४॥	३३	३१॥	३०	२८॥	२७	२५॥	२४	२२॥	२१	१९॥	१८	१६॥

शनि की विशेष दृष्टि का चक्र ४

राशियां / अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
२	६०	५९॥	५९	५८॥	५८	५७॥	५७	५६॥	५६	५५॥	५५	५४॥	५४	५३॥	५३
८	३०	३१	३२	३३	३४	३५	६६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
९	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२

राशियां / अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
२	५२॥	५२	५१॥	५१	५०॥	५०	४९॥	४९	४८॥	४८	४७॥	४७	४६॥	४६	४५॥
८	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५६	५४	५५	५३	५७	५८	५९
९	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२

दृष्टि चक्र से ग्रहों की दृष्टि साधन करने की रीति

द्रष्टा—जो ग्रह देखता है।

दृश्य—जिस ग्रह पर दृष्टि पड़ रही है या जिस पर दृष्टि जाननी है।

(दृश्य-दृष्ट)—शेष अन्तर राशि अंश आदि में बाईं ओर खड़े कोठे में राशियां दी हैं और सबसे ऊपर अंश दिये हैं। जिस ग्रह पर दृष्टि निकालनी है उसके ग्रह स्पष्ट में से द्रष्टा ग्रह (जिस की दृष्टि जाननी है) का स्पष्ट घटाना जो अन्तर राशि अंश कला आदि में आवे उस अन्तर से यहाँ दिये चक्र से दृष्टि खोजना। साधारण ग्रह की दृष्टि चक्र १ में खोजना। मंगल की विशेष दृष्टि चक्र २ से, गुरु की चक्र ३ से, शनि की चक्र ४ से खोजना।

राशि जो अन्तर से प्राप्त हो खड़े कोठे में खोजना और अंश ऊपर दिये हैं उन दोनों के सीध में दिया दृष्टि का अंक कला विकला में है वह लेना। इस प्रकार राशि और अंश की दृष्टि तो निकल गई अब कलादि की और चाहिए। तो अन्तर के नीचे दिया प्राप्त अंक और उसके आगे दिये अंश के अंक का अन्तर निकालना। आगे का अंक कम हो तो यह अन्तर ऋण होगा अधिक हो तो धन होगा। यह अन्तर आधा एक या दो के लगभग होगा। शेष कला विकला के अंक में वह अन्तर अंक का गुणा करने और ६० का भाग देने से वही अंक विकला में आयगा। इससे ६० में भाग देने की आवश्यकता नहीं है।

अन्तर के गुणन फल को विकला मानो उसे पूर्व प्राप्त उत्तर में अन्तर + के अनुसार जोड़ना या घटाना तो स्पष्ट दृष्टि कला विकला में प्राप्त हो जायगी।

उदाहरण—मंगल की दृष्टि निकालनी है

रा	रा
(१) दृश्य शुक्र—११-१३°-३३'-४८"	अन्तर ४-१° = २९"
द्रष्टा मंगल ७-११-२९-४४	(चक्र १ से) ४-१ = २८ कम
अन्तर—४-१-४-४	अन्तर—१ ऋण
∵ दृष्टि २८-५५"-५६"	(आगे का कम होने से)

शेषकला ४-४" × १ = ४"-४'"

पूर्वप्राप्त २९"-०

४-४

= २८५५-५६ दृष्टि

	रा
(२) दृश्य सूर्य ११-५-४०-४५	अन्तर ३-२३°=४७"
दृष्टा मंगल ७-११-२९-४४	(चक्र २ से) ३-२४ = ३६ कम
अन्तर—३-२३-११-१	अन्तर—१ ऋण

शेष कला ११-१ × १ = ११"-१'"

पूर्व प्राप्त ३७'-०"

−११-१

∴ दृष्टि ३६'-४८". दृष्टि – ३६-४८-५९

यहाँ मंगल की विशेष दृष्टि चक्र हैं राशि में ३ मिल गया इससे प्रकट हुआ कि विशेष दृष्टि है। इसके अंक मंगल की विशेष दृष्टि चक्र २ से लिये हैं। परन्तु पहिले उदाहरण में शेष ४ था मंगल की विशेष दृष्टि चक्र २ में ४ राशि नहीं थी। इस से प्रगट हुआ कि मंगल की साधारण दृष्टि है इससे अंक साधारण दृष्टि चक्र १ से लिये गये थे।

यदि राशि घटाने से नहीं घटे तो ऊपर १२ राशि जोड़ कर घटाना।

अंशों के विचार से दृष्टि का विचार और दृष्टि योग

क्रम	दृष्टि योगों के नाम	ग्रहों का अन्तर राशि — अंश	चिह्न	प्रभाव
१	सार्द्ध केन्द्र योग (चक्र अष्टमांश)	१॥ — ४५	∠ या S ▭	अशुभ
२	त्रिरेकादश (द्विराश्यन्तर)	२ — ६०	* या * या ✳	शुभ
३	केन्द्र (वर्तुलपाद)	३ — ९०	▭	अतिअशुभ
४	त्रिकोण (नवम-पंचम)	४ — १२०	△	अतिशुभ
५	सार्द्ध चतुष्टय राश्यंतर	४॥ — १३५	⊡ या ⊠SS▭	अशुभ
६	षड़ाष्ट्रक	५ — १५०	△ या ⊼ या ⊼	अशुभ
७	पूर्ण दृष्टियोग (प्रति-युति)	५ — १८०	☍	अशुभ
८	युति दृष्टियोग (युति-योग)	० — ०	☌	युतिकर्तानुसार
		१ — ३०		
९	एक राश्यन्तर युति	$१\frac{१}{५}$ — ३६	* या ⊻ S *	सदा अच्छा
१०	चक्र दशमांश	$२\frac{२}{५}$ — ७२	⊥	कुछ अच्छा
११	चक्र पंचमांश	$४\frac{४}{५}$ — १४४	Q	कुछ अच्छा
१२	चर्क सार्द्ध द्वितीयांश	जब नाड़ी वृत्त से बराबर क्रांति	±	युति के समान
१३	सम क्रांति	अन्तर पर हो	P	फल

पाश्चात्य विचार से अंशों के अंतर पर से इन दृष्टि योगों के नाम बताये हैं और राशि के अनुसार फल का बिचार होता है।

चर स्थिर आदि के अनुसार दृष्टि का विचार

चर राशि अपने से द्वितीय स्थान को छोड़कर सब स्थिर को देखती है। स्थित ,, ,,
स्थिर ,, बारहवें ,, ,, चर ,, ,, ,,
द्विस्वभाव ,, अपने को छोड़कर शेष सब द्विस्वभाव को देखता है
जहां ग्रह हो उससे २-६-११ स्थान पर दृष्टि नहीं होती
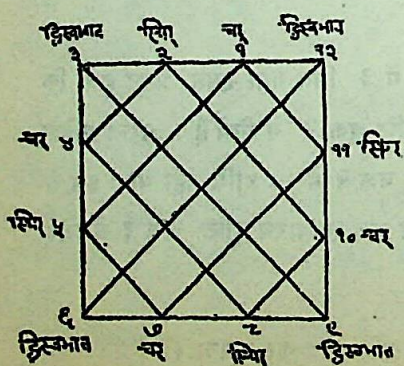
जैमिनि सूत्र आदि में दृष्टि विषयक यह विलक्षणता दृष्टि की बतलाई है। एक राशि का दूसरी राशि पर दृष्टि का यह अभिप्राय है उन राशियों में ग्रह रहने में ग्रहों को भी दृष्टि उसी के अनुसार होती है। जैसे मेष की दृष्टि सिंह वृश्चिक और कुंभ पर पड़ती है। यदि मेष पर कोई ग्रह हो तो कहा जायगा उस ग्रह की दृष्टि सिंह वृश्चिक कुंभ तथा इन राशियों में स्थित ग्रहों पर पड़ती है।

द्रष्टा राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दृश्य स्थान जिन	५	४	६	२	१	९	११	१०	१२	२	१	३
पर दृष्टि	८	७	९	११	१०	१२	२	१	३	५	४	६
पड़ती है	११	१०	१२	८	७	३	५	४	६	८	६	९

उदय अस्त दो प्रकार का है

(१) नित्य ग्रहों का उदय अस्त होना

(२) सूर्य के समीप रहने से ग्रह का अस्त होना, दूर जाने पर उदय होना।

संध्या—सूर्य बिम्ब के आधा अस्त होने से १।। घड़ी पहिले और १।। घड़ी बाद तक।

दैनिक उदय—सूर्य से थोड़ी गति वाले ग्रह अर्थात् मंद गति वाले ग्रह जैसे मंगल, गुरु, शनि, ये सूर्य से कालांश तुल्य अंतर रहने पर पूर्व दिशा में रात्रि शेष में उदय होते हैं।

सूर्य से अधिक गति वाला ग्रह चन्द्र है वह सूर्य से अपने कालांश तुल्य अधिक होने पर पश्चिम दिशा में संध्या को उदय होता है।

दैनिक अस्त—सूर्य से अल्प गति वाले ग्रह जैसे मंगल, गुरु, शनि ये सूर्य से स्वकालांश तुल्य अधिक अंश पर पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं। अधिक गति वाला चन्द्र कालांश तुल्य सूर्य से अल्प रहते पूर्व दिशा में अस्त होता है।

बुध शुक्र के लिये विशेष बात यह है कि सूर्य से अधिक गति वाले होने पर भी दोनों दिशाओं में पूर्व या पश्चिम में उदय या अस्त होते हैं। क्योंकि ये दोनों ग्रह वक्र होकर फिर सूर्य के अपने कालांश अंतर पर आ जाने से अस्तोदय प्राप्त करते हैं। अर्थात दोनों ग्रह सूर्य से अधिक गति वाले होने से पश्चिम में सूर्य के आगे कालांश अंतर पर संध्या को उदय होते हैं। फिर वक्र होकर सूर्यासिन्न आकर पश्चिम में ही अस्त होते हैं। फिर वक्र की गति से ही सूर्य के पीछे होकर अपने कालांश अंतर पर पूर्व की ओर रात्रि शेष में उदय पाते हैं फिर मार्गी होकर पूर्व में ही अस्त होते हैं।

ग्रहों के अस्त के कालांश

सूर्य से इतने अंशों के भीतर ग्रह आ जाने से ग्रह अस्त समझा जाता है।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	बुध शुक्र वक्री हो तो
कालांश	०	१२	१७	१४	११	१०	१५	कालांश १ घटाकर लेना

उदित—इतने अंश से सूर्य से अधिक अंतर पर ग्रह चला जाय तब वह उदित समझा जाता है।

अस्तंगत—सूर्य के उपरोक्त अंशों के भीतर ग्रह आ जाता है तब ग्रह का प्रकाश सूर्य के प्रकाश से दब जाता है तब वह अस्तंगत या अस्त कहलाता है।

ग्रह अस्त हो तो बुरा फल देता है। सूर्य के समीप ग्रह रहने से विकल कहलाता है। ग्रह अस्त हो जाने पर उसकी किरण नहीं रहती। निर्बल हो जाता है।

चन्द्र भी अमावस्या को सूर्य से १०° के भीतर आ जाने से सूर्य के समीप होने से नहीं दिखता शक्तिहीन हो जाता है उसकी कोई किरण नहीं रहती। तब बुरा फल देता है।

राहु केतु—ये अस्त नहीं होते परन्तु ये सूर्य के समीप हों तो सूर्य के प्रभाव की शक्ति में बाधा डालते हैं। इसी से कहते हैं सूर्य को ग्रस लिया।

बाकी ग्रह सूर्य के आस पास रहने से अस्त कहे जाते हैं।

चन्द्र मूढ़ (अस्त)—चन्द्र अस्त में होकर पाप ग्रहों में हो या नीच राशि या नीच नवांश का हो तो पाप घर में अस्त चन्द्र मूढ़ है।

अस्त ग्रह निर्बल होता है, नीच का ग्रह और निर्बल होकर आगे फल कम देता है। शत्रु क्षेत्री ग्रह के फल में बहुत कमी हो जाती है। वक्री ग्रह भी फल कम करता है।

ग्रहों की गति

वक्री १ वक्र—उल्टी गति अर्थात् आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे लौटे
२ अनुवक्र
३ कुटिल (विकल)—रुकी हुई गति

ऋजु गति ४ मंद
५ मंदतर-घटती हुई सीधी गति, मध्यम गति से अल्प गति
६ सम— ,, ,, मध्यगति
७ शीघ्र— ,, ,, मध्यगति से अधिक गति
८ शीघ्रतर—बढ़ी हुई सीधीगति मध्यम गति से अधिक गति

ऋजु गति—मार्गी गति, ग्रह जब वक्रगति त्याग कर सीधा चलने लगे।

सूर्य चन्द्र वक्री नहीं होते शेष पंच तारा वक्री होते हैं। राहु केतु सदा वक्री हैं।

उदय ग्रह—सुख देता है
वक्री ग्रह-परदेश भेजता है
मार्गी ग्रह—आरोग्य देता है
अस्तग्रह—आदर और धन नाश करता है।

क्रूर ग्रह वक्री—फल बड़ा क्रूर
शुभ ग्रह वक्री—शुभ फल
ग्रह वक्री में—बलवान्
,, मार्गी में—कमजोर

कुच स्तंभ (स्तंभन)—वक्रगति में जब अधिक मंद गति हो जाती है अर्थात् ग्रह का स्तंभन सा हो जाता है जिससे उस राशि पर वह बहुत दिन तक रहता है। उसे कुच स्तंभ करते हैं। परन्तु मंगल के सम्बन्ध में ही कुच स्तंभ या कुज स्तंभ कहते हैं शेष ग्रहों को स्तंभन कहते हैं।

मंगल कुचस्तंभ फल—उस वर्ष प्रजा का बहुत नाश होता है, युद्ध होता है, धान्य का

मंहगी हो, अग्नि भय, नाना प्रकार के उत्पात, महामारी का उपद्रव, बच्चे या पशुओं में महामारी हो।

मनुष्य या गांव की राशिमें कुच स्तंभ हो तो बुरा फल होता है।

मंगल—३, ६, १०, ११, राशि में कुचस्तंभ—उत्तम फल।

२, ५, ७, ,, ,, —मध्यम ,,

१,८, ४,१२ ,, ,, —बुरा फल।

समागम—जब कोई ग्रह चन्द्र के साथ हो।

अतिचर—गति कम होने से जो समय खो गया है उसे पूरा करने के लिए जब ग्रह शीघ्र आगे बढ़ता है।

राशि अंत ग्रह-ग्रह जो दूसरी राशि में एक ही दिन में जाने वाला हो या ग्रह नवम नवांश में हो तो राशि के अन्त में रहना कहा जाता है।

सूर्य के प्रभाव से ग्रह की शीघ्र मंद गति

१ शीघ्र गति— सूर्य के दूसरे स्थान में ग्रह
२ सम गति— ,, तीसरे ,, ,,
३ मंद गति— ,, चौथे ,, ,,
४ कुछ वक्र व वक्र— ,, ५-६ ,, ,,
५ अति वक्र गति— ,, ७-८ ,, ,,
६ कुटिल गति— ,, ९ ,, ,,
७ मार्गी ,,— ,, १० ,, ,,
८ शीघ्री ,,— ,, ११ ,, ,,
९ अति शीघ्र गति— ,, १२ ,, ,,

ग्रह उदय अस्त लग्नानुसार

१ लग्न से दूसरे स्थान में ग्रह—उदय होने को तत्पर
२ ,, अष्टम ,, ,,—अस्त ,, ,,
३ ,, सप्तम ,, ,,—अस्त होने को अभिमुख
४ ,, षष्ठ ,, ,,—अस्त के सन्मुख

ग्रहों का बल विचार

स्थान बल, दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल, निसर्गबल, दृष्टिबल इस प्रकार से ६ प्रकार के बल हैं। जिनका निकालना द्वितीय गणित खंडमें बताया जा चुका है। यहां तो उस बल का संक्षिप्त वर्णन है।

(१) स्थान बल-अपने उच्च राशि, स्वराशि, मूल त्रिकोण, मित्र राशि, स्वनवांश, स्व द्रेष्काण, स्व द्वादशांश, स्वत्रिंशांश, स्व षोड़शांश आदि स्व वर्ग में ग्रह स्थान-बल पाता है। पारिजात वैशेषिक आदि वर्ग, आरोही वीर्य (भाव तुल्य) में एवं अष्टकवर्ग में ४ से अधिक शुभ रेखा पानेवाले ग्रह शुभ समझे जाते हैं।

स्त्री ग्रह स्त्री राशि में बल पाते हैं पुरुष ग्रह पुरुष राशि में बल पाते हैं ।

पुरुष ग्रह—सूर्य मंगल गुरु—आरंभ में बली होते हैं ।

नपुंसक ग्रह बुध शनि— बीच में ,, ,,

स्त्रीग्रह चन्द्र शुक्र — अन्त में ,, ,,

इसके विपरीत नीच आदि में ग्रह का बल शून्य रहता है इसके और उच्च के बीच के स्थान का बल अनुमान से निकालना । नीच शत्रुगृही, पाप युक्त या पाप दृष्ट, पाप वर्ग में, संधि में, पापांश वाले सूर्य से अस्त ग्रह, दृष्टि बल हीन ग्रह और अष्टक वर्ग में ४ से कम शुभ रेखा पाने वाले ग्रह अशुभ होते हैं ।

केन्द्र में कोई राशि हो तो वह बलवान होती है । पणफर में मध्यम और आपोक्लिम में बलहीन होती है । इसी प्रकार आत्मकारक ग्रह से केन्द्र में ग्रह पूर्ण बली, पणफर में अर्द्ध बली, आपोक्लिम में निर्बल होता है ।

ग्रहरहित राशि से सग्रह बली, दोनों में ग्रह हो तो अधिक संख्या के ग्रह बली राशि बली होती है । दोनों में बराबर ग्रह हो तो उच्च, स्वगृही, मित्र गृह आदि के विचार से बल विचारना ।

उच्च का बुध पूर्ण फल देता हैं नहीं तो स्थान की योग्यता के अनुसार फल देता है ।

(२) दिग्बल

बुध गुरु—पूर्व दिशा में (लग्न में) बली होते हैं ।

सूर्य मंगल—दक्षिण (दशम) ,, ,,

शनि—पश्चिम (सप्तम) ,, ,,

चन्द्र शुक्र—उत्तर (चतुर्थ) ,, ,,

(३) कालबल

चन्द्र शनि मंगल—रात्रि बली
सूर्य गुरु शुक्र—दिन बली
बुध —सदा बली

कृष्ण पक्ष में—पाप ग्रह बली
शुक्ल ,, —शुभ ,, ,,

सभी ग्रह अपनी अपनी होरा में बली होते हैं, दिनेश, मासेश, वर्षेश भी बली होते हैं । ग्रह के स्वहोरा में हो तो वह उसका होरेश हुआ, उस मास का स्वामी मासेश, और चन्द्र से नया वर्ष आरंभ के दिन वर्षेश होता है ।

दिन और रात्रि के ३ भाग करने से दिन के भाग में, क्रमानुसार बुध शनि सूर्य और रात्रि के भाग में क्रमानुसार चन्द्र शुक्र मंगल बली होते हैं । गुरु सदा दिन रात में बली होता है ।

(४) चेष्टा बल

जो ग्रह वक्री हो और बलवान् हो तो चेष्टाबली होता है ।

चन्द्र जब पूर्ण हो तो चेष्टा बल पाता है। सूर्य चन्द्र जब उत्तरायण में हों तो चेष्टाबली होते हैं। दूसरे ग्रह चन्द्र के साथ समागम होने से चेष्टा बल पाते हैं।

जो ग्रह ग्रहयुद्ध में जीते वह चेष्टा बल पाता है।

दक्षिणायन में बुध चन्द्र शनि, उत्तरायण में शेष सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र बली होते हैं।

(५) स्वाभाविक बल (नैसर्गिक बल)

शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य—क्रमानुसार उत्तरोत्तर बली हैं। जब बल में समता हो तो नैसर्गिक बल विचारना।

स्वभाव अनुसार बल (जेमिनी०)

बल क्रम	शनि से मंगल	मंगल से बुध	बुध से गुरु	गुरु से शुक्र	शुक्र से चंद्र	चंद्र से सूर्य	स ब से राहु
कितने गुणा बल	२	४	८	८	१६	२	२

(६) दृष्टि बल—शुभग्रह से दृष्ट ग्रह बली होता है।

गति के अनुसार बल

वक्र पूर्ण बल	अनुवक्र आधा	विकल पाद	समागम चंद्र के साथ आधा	मंदतर अष्टमांश	शीघ्र पौन	शीघ्रतर आधा

उपचय स्थान का बल

उपचय २ प्रकार से हैं। (१) लग्न से, (२) चन्द्र से ३-६-१०-११ वां स्थान। कोई भी राशि हो जिस कुंडली में चन्द्र या लग्न दोनों में उपचय स्थान में शुभग्रह बुध गुरु शुक्र हो—

(१) यदि ये तीनों ग्रह हों-वह अति धनी हो क्योंकि ये दोनों योग हों तो केमद्रुम आदि बुरे योग भी हों तो उसका नाश कर उत्तम फल देते हैं।

(२) इन ३ में से २ ही हों—साधारण धनवान्।

(३) ,, ,, १ ,,—थोड़ा धन हो पर दरिद्री न हो।

(४) लग्न या चन्द्र के उपचय में-शुभ ग्रह नहो पाप ग्रह हो—धनवान् हो।

(५) दोनों योग में कोई एक से योग हो—दरिद्री हो।

ग्रहबल—बली ग्रह का अर्थ है, अच्छा साथी, या अच्छी दृष्टि, शुभ राशि में हो। दो शुभ ग्रहों के बीच में हो, शुभ ग्रह के अंश में हो, शुभ युक्त या दृष्ट हो, उच्च या मित्र नवांश में हो इत्यादि।

जो ग्रह उच्च मूल त्रिकोण, स्व या मित्र गृही हो या स्व नवांश द्रेष्काण आदि वर्ग में हो, ग्रह जो उच्च और नीच के घर में हो वह भी बलवान् होता है।

बली ग्रह (१) जो उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, उच्च मूल त्रिकोण या वर्ग में स्ववर्ग या मित्र के वर्ग में हो या उपरोक्त बताये प्रकार से हो।

(२) जब ग्रह की किरणें पूर्ण तेज हों चाहे वह शत्रु आदि राशि या अंश में हों।

(३) चन्द्र को जब पूर्ण पक्ष बल प्राप्त हो, पूर्ण चन्द्र हो।

(४) सूर्य जब उसे दिग्बल प्राप्त हो अर्थात् दशम घर में हो।

(५) दूसरे पञ्चतारा जब वक्री हों, उदय हों और निर्मल कांति हो।

(सूर्य से सप्तम स्थान में स्थित ग्रह पूर्ण फल देता है।)

राहु केतु बल

राहु–कर्क, वृष, मेष, कुंभ, वृश्चिक, मिथुन कन्या में बली।

केतु–मीन, कन्या, वृष, धनु का उत्तरार्ध, सिंह, परिवेष में, इन्द्रचाप में बली। ये दोनों उस समय बली होते हैं जब सूर्य चन्द्र का मेल हो और रात समय हो।

चन्द्र बल–१ से १० दिन तक चन्द्र मध्यम बली, द्वितीय भाग में पूर्ण बली है इससे शुभ फल होता है। उपरान्त १० दिन क्षीण बल। चन्द्र का बल क्रमानुसार घटने लगता है। परन्तु जब सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट हो तो सदा बली है।

कृष्ण अष्टमी से शुक्ल अष्टमी तक चन्द्र क्षीण, तदनंतर पूर्ण बल।

चन्द्र–लग्न, षष्ठ या अष्टम में अरिष्ट कारक है द्विपद राशि में कुंभ को छोड़ कर बाकी के लग्न में चन्द्र का होना शुभ है।

राशि बल

(१) जो राशि किसी ग्रह से युक्त हो वह बली होती है।

(क) यदि दोनों राशियों में ग्रह हो तो जो राशि अधिक ग्रह से युक्त हो वह बली है।

(ख) यदि दोनों राशियों में ग्रह संख्या बराबर हो तो जिसमें उच्च स्वगृही मित्रगृही आदि ग्रह हो वह बली होगा।

(ग) उस में भी बल तुल्य हो तो नैसर्गिक बल से विचारना, चर से स्थिर, स्थिर से द्विस्वभाव राशि बली होती है।

(घ) बल की समता होने पर उक्त रीति से राशि स्वामी के बल निर्णय में उस राशि का बल समझना।

(च) उस में भी समान बल आ जाय तो जिस राशि के स्वामी का अंश अधिक हो वह राशि बली समझना।

(छ) विषम राशि में द्वितीय या द्वादश में जो ग्रह हो वह बली।

(२) प्रत्येक राशि अपने स्वामी गुरु बुध इनसे युक्त-दृष्ट हो तो बली।

(३) जिस राशि का स्वामी बली हो वह राशि बली। अपने स्थान से केन्द्र आदि में ग्रह हो तो आगे की राशि से पूर्व राशि अधिक बली होती है अर्थात् स्वस्थान से केन्द्र में ग्रह हो तो पूर्ण बली, पणफर में हो तो मध्यबली, आपोक्लिम में हो तो हीनबली।

(४) पाप आदि ग्रहों की दृष्टि व योग राशियों का बल होता है तथा उच्च मूल त्रिकोण, स्वस्थान, अधिमित्र, मित्र राशि में गत ग्रह की दृष्टि योग राशियों का बल होता है । ये अपने अधिकार प्रमाण से फल देते है ।

(५) जो राशि अपने स्वामी से युक्त दृष्ट हो, बुध या गुरुसे दृष्ट हो वह राशि निश्चय बलवान होती है ।

(६) जो राशि किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो पूर्वोक्त अपने भाव के अनुसार फल देती है ।

(७) ग्रह युक्त दृष्ट होने से उसके स्वभावानुसार फल करती है

शुभ ग्रह के योग दृष्टि से पाप ग्रह भी शुभ फल देते हैं और पाप योग से शुभ भी पाप फल देते हैं ।

(८) जिस राशि पर चन्द्र हो तो वर्णित पूरा फल देता है परन्तु नक्षत्र राशि और चन्द्र ये तीन हैं ये तीनों बली हों तो दशा फल बराबर हो । इन में एक बली हो तो थोड़ा फल हो । कोई बली न हो तो कुछ फल न हो ।

(९) जिस राशि पर पाप ग्रह हो, शत्रु ग्रह बैठा हो या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट न हो वह बलहीन होती है ।

लग्न में—नर राशि बली चतुर्थ में—जलचर राशि,, सप्तम में—कीट ,, ,, दशम में—पशु ,, ,, द्विपद राशि—दिन बली पशु राशि—रात्रि बली	इनसे सप्तम स्थान में ये राशियां बलहीन होती हैं ।

कीट व जलचर—संध्या बली (सूर्योदय और अस्त समय)

लग्न बल—अपने स्वामी के बल के अनुसार होता है ।

लग्न में	नर राशि	जलचर या	कीट राशि	अन्य मत से
	पूर्ण बल	चतुष्पद आधा	०	कीट १|४ बल

लग्नेश—उपचय में या शुभग्रह युक्त हो, पाप दृष्ट न हो तो पूर्ण बली ।

लग्न बली—लग्नेश गुरु लग्न में हो लग्न—गुरु बुध शुक्र युत या दृष्ट हो पाप दृष्ट न हो ।

लग्न निर्बल—पाप युक्त हो तो हीन बल पाप और शुभ युक्त हो तो मध्यम बल ।

भाव बल—भावेश युक्त या दृष्ट या बली ग्रह से दृष्ट हो, पाप युक्त या दृष्ट न हो ।

अपने स्वामी के मित्र, या बुध या उच्च ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या सम्पूर्ण ग्रहों से दृष्ट हो तो बली ।

निग्रह से सग्रह स्थान बली है, सग्रह में अधिक बलवाला बलवान होता है, समता में चर स्थिर द्विस्वभाव के अनुसार क्रमसे बली समझना ।

१-४-७-१० भाव-उत्तरोत्तर बली हैं ।

५-९ ,,—भी उत्तरोत्तर बली हैं ।

ग्रहों के षड्बल का फल

१ **स्थान** बल–जन्म समय जातक को ५ प्रकार के स्थान बल प्राप्त हों तो अत्यंत ऐश्वर्य व बल, अधिकार, योग्यता तेज बुद्धि अर्थात् शासकीय विचार से योग्यता, नाना प्रकार का धन अर्थात् वस्त्र रत्न सुवर्ण, बहुत प्रकार की धातु कौशल अर्थात् कुशलता व चतुराई, गौरव अर्थात सन्मान, नाना प्रकार के घोड़ा गाड़ी आदि वाहन, बड़ी २ हवेली आदि पृथ्वी अर्थात् खेत व बगीचा, झाड़ अमराई, ताल, वैहर, राज्य आदि वह ग्रह अपनी दशा व अंतर्दशा में निश्चय पूर्वक देता है। परन्तु वह यदि पांचों प्रकार से स्थान बल से पूर्ण हो। यदि २ या ३ प्रकार के स्थान केवल हों तो उसी प्रकार से फल होगा।

यदि पांचों प्रकार के स्थान बल से पूर्ण २ या तीन ग्रह हों तो राजा प्रमाण से स्थिति प्राप्त करता है।

भिन्न भिन्न प्रकार के स्थान बल का फल

(१) उच्च बल प्राप्त या स्वउच्च में–पृथ्वी, नाना प्रकार का उत्साह, शौर्य, धन, वाहन, स्त्री, पुत्र, बुध पूज्य, विद्या, मान, नाना प्रकार का लाभ अपनी दशा में देता है।

(२) मूल त्रिकोण में–उपरोक्त फल का ३/४ फल।

(३) स्वक्षेत्र में–स्थिर अंतःकरण करता है, प्रसन्न चित्त करता है, धन, सौख्य, विद्या यश, प्रीत, महत्त्व, पृथ्वी, लाभ, अपनी दशा में देता है धर्म कराता है। संतति देता है।

(४) अधिमित्र–वस्त्र, पृथ्वी, सुगंध पदार्थ, पुत्र, द्रव्य, धैर्य, वाहन भूषण देता हैं, पुराण श्रवण कराता है।

(५) मित्रक्षेत्र–सौख्य, धैर्य, पृथ्वी, वाहन, विद्या, संतोष, धर्म, वस्त्र, द्रव्य, राज सम्मान आदि देता है।

(६) समक्षेत्री–स्थान से भ्रष्ट करे, बंधु का द्वेष, नोच वृत्ति की उपजीविका, स्वजन से त्याग, नाना प्रकार के रोग।

(७) अधिशत्रु क्षेत्री–अति दुःख, नाना प्रकार का दुःख, निरंतर प्रवास, विदेशी त्रास, माता बहिन बंधु नाश, चोर अग्नि से भय।

(८) शत्रुक्षेत्री–शत्रु सरीखा फल दे पर थोड़ा देवे, शत्रुक्षेत्री ग्रह निर्बल हो जाता है।

(९) पापगृहो–पाप का योग, कलह, स्त्री वियोग, शत्रु से पीड़ा, धन भूमि नाश, स्वजन निंदा आदि।

(१०) पाप युक्त–सब काल दुःख देकर व्याकुल करता है, भ्रान्ति करता है। स्नेह का नाश, स्त्री, पुत्र, वाहन, चोर इनसे डर, नाश, बस्त्र नाश।

(११) सूर्य युक्त—बहुत प्रकार से पाप करावे, विद्या धन स्त्री बंधु का नाश, पुत्र से क्लेश, नेत्रों में रोग हो।

(१२) अस्तंगत—पाप युक्त ग्रह के समान फल, ग्रह निर्बली हो तो बल बहुत कम हो जाता है।

(१३) कुचस्तंभ—मंगल आदि कुच स्तंभ ३-६-१०-११ राशियों में हो तो उत्तम फल: २, ५, ७, ९ राशि में मध्यम फल, १, ४, ८, १२ राशि में कुचस्तंभ हो तो बुरा फल हो।

(१४) स्तंभ—उपरोक्त फल।

(१५) वक्री—शुभ ग्रह वक्री हो और सब ग्रहों में बलवान हो तो राज्य पद सरीखा फल दे व उस ग्रह की रश्मि बहुत हो तो राज्यपद दे।

पाप ग्रह वक्री हो और सब ग्रहों में बली हो तो दुःख देता है यदि रश्मि बहुत हो तो पृथ्वी दे।

(१६) अतिचार—बुरा फल दे, अधिशत्रु की अपेक्षा बुरा फल दे।

(१७) नीच क्षेत्री—अधिशत्रु सदृश बुरा फल दे।

(१८) युद्ध में जय—युद्ध में विजयी ग्रह हो तो कुश्ती लड़ाई मुकदमा आदि जीते

,, पराजय—युद्ध में हारे तो उपरोक्त सब बातें क्षीण हों।

शुभग्रह के शुभ फल का प्रमाण	उच्च पूर्ण १	मूल त्रि० ३।४	स्वक्षेत्री १।२
	मित्र गृही १।४	शत्रु क्षेत्री १।४ से अल्प	नीच व अस्तंगत का शुभ ०
पाप ग्रह के पाप फल का प्रमाण	अस्तंगत नीच में पूर्ण १	शत्रु क्षेत्री ३।४	मित्र क्षे० १।२
	स्वक्षेत्री १।४	त्रिकोण १।४ से कम	उच्च या पाप का फल ०

इस प्रकार भाव फल, दशा अष्टकवर्ग गोचर आदि में विचारना।

२ दिग्बल पूर्ण या मध्यम बली हो तो अपनी योग्यता तथा शक्ति अनुसार फल देता है। वह अपनी दिशा में ग्रह की दिशा की ओर से लाकर वस्त्र भूषण, विद्या, यश, कीर्ति, नाना प्रकार का लाभ, धनधान्य, राज्य, पृथ्वी, वाहन, स्त्री सौख्य, कीर्ति व सम्पत्ति देता है। द्रव्य का संग्रह करवाता है।

यदि वह ग्रह अधिशत्रु के घर में हो या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो उसका बुरा फल नहीं होने देता। कभी अच्छा कभी बुरा मिश्रित फल देता है।

३ काल बली ग्रह—शत्रुओं का नाश करता है, भूमि वाहन की वृद्धि, वीरता सहित, रत्न और वस्त्र की सम्पदा की प्राप्ति, निर्मल यश, लीलाओं (खेल कौतुक आदि) का विकास करने वाला सम फल करता है।

(१) नतोन्नत—बुध उच्च का हो तो पूर्ण फल देता है नहीं तो योग्यतानुसार फल देता है : शेष ग्रहों का जो गणित में नतोन्नत बल आवे उसका जितना कला बल आवे उसी प्रमाण से व स्थान प्रमाण से फल देता है ।

(२) पक्ष बल—जिसका जन्म जिस पक्ष में हो उस पक्ष के प्रत्येक ग्रह का गणित के अनुसार जो कला बल आवे उसके अनुसार फल मिलेगा । शत्रु का नाश एवं वस्त्र, संतति, स्त्री सुवर्ण भूमि का लाभ पूर्ण बली होने पर देते हैं ।

(३) दिन रात त्रिभाग बल—दिन के त्रिभाग में बुध, सूर्य, शनि को क्रमानुसार एवं रात्रि से विभाग में चंद्र शुक्र मंगल को क्रमानुसार पूर्ण बल प्राप्त होता है और गुरु को दिन और रात्रि में पूर्ण बल प्राप्त होना बताया है । ये ग्रह उच्च के हों तो पूर्ण फल मिलेगा नहीं तो स्थान प्रमाण में फल दे देंगे । पूर्ण बली होने पर ग्रह पृथिवी, शौर्य, सेवक इनकी वृद्धि करते हैं ।

(४) होरेश, दिनेश, मासेश और वर्षेश का बल यदि ये स्व या उच्च के हों तो उसकी प्राप्त कला बल अनुसार फल देते हैं ।

४ चेष्टाबली ग्रह—(१) थोड़ा राज्य, थोड़ी पूजा, थोड़ा धन, थोड़ा यश मिलता है अर्थात कहीं राज्य कहीं ऐश्वर्य कही पूजा (मदद) मिलती है ।

,, यदि ग्रह बलवान् हो तो नाना प्रकार का लाभ व सुख देता है

,, —यदि शुभग्रह वक्री हो सब बलमें बली हो तो राज्य प्राप्ति सरीखा फल दे । पाप ग्रह वक्री हो तो दुःख देता है । अपने क्षेत्रके अनुसार योग्यता प्रमाण पदवी व अधिकार देता है, व्यर्थ फिराता है । चन्द्र का समागम करने वाला ग्रह चित्त स्वस्थ व सौख्य देता है ।

(२) ग्रह युद्ध में ग्रह बलवान् हो तो युद्ध में जय देता है । बल न हो युद्ध में हार गया हो तो कैदमें डाले, व्यर्थ फँसे, दगाबाजी का काम करे, मुकदमा हारे ।

(३) राशि में जो बलवान हो वह राज्य व अधिक सौख्य देता है ।

निसर्ग बल

जो ग्रह अधिक बलवान् हो तो ऊपर बताये फल की सिद्धि में सहायक होता है ।

शुभ ग्रह बली हों—आचार में पवित्र, शुभ और सत्यतायुक्त, सुन्दर रूप, तेजस्वी, देव-ब्राह्मणों का भक्त कृतज्ञ, उत्तम पुष्प, भूषण वस्त्र युक्त होता है ।

क्रूर ग्रह बली—लोभी, खोटे कर्म में तत्पर तमोगुणी, मलिन, कृतघ्न, साधुओं का वैरी, क्रूर स्वभाव, कलह युक्त ।

यदि २-३ ग्रह बलवान हों तो पूर्वोक्त शुभाशुभ फलमें उतनी ही अधिकता विचारना ।

६ ऋण धनात्मक दृष्टि बल—दृग्बली ग्रह बुरा फल देने वाला शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो पूर्ण दुष्ट फल नहीं देता और पाप ग्रह देखता हो तो अच्छे फल को देने वाला ग्रह भी शुभ फल नहीं देता ।

सप्तवर्ग बल

उच्च में	मूल त्रि० में	स्वगृही	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु गृही
पूर्ण बल	३/४	१/३	३/४	१/४	१/८	१/४ बल

१ गृहेश–शुभ ग्रह हो तो अपने स्थान के अनुसार बल पाता है, सुख देता है। बली न हो तो दुःख दे।
२ होरेश–यदि बली हो तो सुख सम्पत्ति देवे। न हो तो न देवे।
३ द्रेष्काणेश–गृहेश प्रमाण से बल हो तो भाई बंधु से सुख, न हो तो दुःख देवे।
४ सप्तमांशेश– ,, ,, बली हो तो पुत्र पौत्रका सुख देवे, बली न हो तो दुःख देवे।
५ नवमांशेश– ,, ,, स्त्री से सुख न हो चिंता व क्लांत मन हो।
६ द्वादशांशेश– ,, ,, मां बाप से सुख मिले, नहीं तो चिंता हो।
७ त्रिशांशेश ,, ,, कष्ट न हो सुख हो, नहीं तो निरन्तर कष्ट हो।

इस प्रमाण से सप्तवर्गाधिपति जिस राशि में हो उसके स्वामी का उपरोक्त प्रकार से बल विचारना। बल के अनुसार फल मिलेगा।

नवांश स्वामी बल

राशि में ग्रह के बल के अतिरिक्त नवांश स्वामी का बल स्थान के अनुसार प्रथम विचारणीय है। जैसे चन्द्र वृष में उच्च का है यदि वह पंचमेश हो जाये और वह यदि केन्द्र में, ३-१० या ११ स्थान में हो तो बहुत अच्छा होता है। परन्तु बुरे नवांश में जैसे मकर या कुंभ में हो तो नवांश स्वामी जहां है अर्थात् शनि जहां हो उसके प्रभावसे फल में अन्तर पड़ जायगा। केवल ग्रह का बली होना और शुभ होना पर्याप्त नहीं है परन्तु वह जहां हो उसके नवांश स्वामी की स्थिति पर भी विचार करना।

अध्याय ५

ग्रहों की अवस्थाएँ और चन्द्रक्रिया

ग्रह-अवस्था

१ दीप्त–उच्चस्थानीय ग्रह।
२ स्वस्थ–स्वक्षेत्री ग्रह।
३ मुदित (प्रमुदित या हर्षित)–मित्र गृही, या अधिमित्र गृही, या गुरु से युक्त दृष्ट कोई शुभगृही को भी मुदित कहते हैं।
४ शांत–मित्र गृही या तत्काल मित्र गृही।
५ सुखित–मूल त्रिकोण में ग्रह।
६ गर्वित–उच्च मूल त्रिकोण में।
७ शक्त–उदित।

८–विफल–अस्त, कोई अधिशत्रुगृही या पाप युक्त को भी कहते हैं।

९ खल–पाप युक्त या पाप वर्ग में या पाप राशि में। कोई नीच या पराजित को भी कहते हैं।

१० दीन दुःखी–नीच गृही। कोई शत्रु क्षेत्री को भी कहते हैं।

११ हीन–नीचाभिमुख (अवरोही ग्रह)।

१२ सुवीर्य–आरोही।

१३ पीड़ित–पाप ग्रहों से दबा। अन्यमत से अस्त।

१४ निपीड़ित–दूसरे ग्रहों से पराजित।

१५ पीड़–राशि के अन्त में।

१६ मुषित–अस्त।

१७ कोपी–क्रूर ग्रहों से युक्त। अन्यमत से कोपिष्ट या कोपी (विकल) अस्त।

१८ दुःखी या अतिदुःखित–शत्रु गृही।

१९ भीत–नीच गृही। अन्य मत से शत्रुगृही या अतिचर।

२० बाल–वक्र ग्रह।

२१ सुप्त या क्षुधित–शत्रुगृही या शत्रुयुक्त या दृष्ट व शनि से युक्त।

२२ क्षोभित–सूर्य युक्त और पाप दृष्ट या अपने शत्रु से दृष्ट।

२३ तृषित–जलचर राशि में केवल पाप दृष्ट या अपने शत्रु से दृष्ट, शुभ ग्रह से अदृष्ट।

२४ लज्जित–पंचम में पापयुक्त ग्रह (ग्रह अपने पुत्र की राशि में तथा पाप युक्त)।

उपरोक्त संक्षेप में

१ दीप्त–उच्च में।

२ स्वस्थ–स्वगृही।

३ मुदित, हर्षित या संतोषी–मित्र गृही या शुभ गृही।

४ शांत–मित्र गृही या शुभ वर्ग में।

५ विकल, पीड़ित, मुषित, कोपिष्ट या कोपी–अस्त।

६ गर्वित या सुखित–उच्च या मूलत्रिकोण में।

७ शक्त–उदित।

८ खल, दीन या भीत–नीच गृही।

९ खल, विकल या कोप–पापयुक्त, पापराशि या पाप वर्ग में।

१० दीन, भीत, दुःखी, सुप्त, क्षुधित–शत्रु क्षेत्री।

११ पीडित, निपीडित–पाप ग्रहों से दबा।

१२ निपीडित खल–पराजित।

१३ क्षोभित–सूर्य युक्त पापदृष्ट या शत्रु से दृष्ट।

१४ प्रमुदित–अधिमित्र गृही।

१५ विकल–अधिशत्रु गृही ।

१६ बाल–वक्र ।

१७ हीन–अवरोही ।

१८ सुवीर्य–आरोही ।

१९ तृषित–जचऊर राशि में पाप दृष्ट ।

यहाँ पर मुदित –मित्र गृही, शुभगृही दोनों को बताया जाता है ।

शांत-मित्र गृही और शुभ वर्ग ,, ,,

दीन–नीच और शत्रु क्षेत्री को भी बताया गया है ।

विकल–अस्त, पापयुक्त या अधिशत्रु गृही को भी कहा है ।

क्षुधित—शत्रुगृही, या शत्रु युक्त या दृष्ट ।

दीप्तादि अवस्था के फल

१ दीप्त–दीर्घ जीवन, संतानोन्नति, उत्साह (मन को आनन्द), ऐश्वर्य, धन, वाहन स्त्री पुत्र लाभ, राजा से सम्मान, अपने प्रभाव से शत्रुओं को संतप्त करने वाला, प्रतापी, श्रेष्ठ वाहन, लक्ष्मी युक्त, सुखी, बंधु वर्ग में पूज्य, पृथ्वी लाभ, विद्या व पदवी लाभ ।

२ स्वस्थ–आनन्द, कीर्ति, भूमि लाभ, राजासे धन लाभ, आरोग्यता, विद्या यश प्रेम लाभ, स्त्री पुत्र धन और धर्म लाभ, उत्तम वाहन, तेजस्वी, पराक्रमी, विजयी, कुटुम्ब युक्त, उत्तम बुद्धि, भूषण आदि से युक्त, अति सुखी, उद्योगी, सेनापति, सम्पत्तिवान् ।

३ मुदित या हर्षित–अच्छे वस्त्र, आनंद, सुख, अच्छी स्थिति योग्यता, सुगंध, पुत्र, धन युक्त, स्त्रियों का अति प्रिय, स्त्री सुख, धैर्यवान्, पुराण श्रवण, धर्म वाहन भूमि आभरण लाभ । बहुमूल्य वस्तुओं में पूर्ण धनी, धर्म कर्म में मन रखने वाला, उदार चित्त, शत्रु नाशक, हर्षित, नृत्य वाद्य गीत प्रिय, भोजन सुख, बंधु प्रेम, बुद्धि, राज दरबार में निवास ।

४ शांत—धैर्य युक्त, संबन्धियों का सहायक, समय पर साहस, सुखी जीवन, पुत्र स्त्री वाहन भूमि विद्या और धर्म युक्त, शास्त्र चिंतन से आनन्द, राज्य से सम्मान लाभ, अति शांत प्रकृति, राजाओं का मन्त्री, स्वतन्त्र, अनेक मित्र, परोपकारी, पुण्य कार्य में चित्त, विनय सौभाग्य स्नेह और सदाचार युक्त, अच्छी विद्या, बहुत पुत्र, प्रयोजन सिद्ध ।

५ शक्त—ख्याति युक्त, सब कार्य में समर्थ, सदा प्रसन्न, सज्जन, परोपकारी, पवित्र, धनी, पुष्पों में रुचि, सर्वज्ञ, कीर्तिमान्, शत्रु हंता, अति आसक्त ।

६ गर्वित—नवीन गृह, बगीचा, राज्य कलाओं में पाण्डित्य, धन लाभ, सदा व्यापार में वृद्धि ।

७ दीन — मन अशान्त, मानसिक चिंता, अत्यन्त दीन, दरिद्री, राजा तथा शत्रु से भय, शत्रु पीड़ा, कांति हीन, स्वजाति से वैर, नीति रहित, स्थानसे भ्रष्ट,

स्वजन से परित्यक्त, बंधु विरोध, अनादर, नीच वृत्ति से उपजीविका; नाना प्रकार के रोग से पीड़ा :

८ हीन —दीन समान फल, स्थानान्तर गमन, बन्धु वैर, दुःख, निंदनीय वृत्ति से उपजीविका, अपने जनों से त्यक्त, शरीर और मन रोगी, व्यर्थ का व्यापार ।

९ दुःखी या अति दुःखित—अनेक प्रकार के कष्ट से दुःखी मन, विदेश यात्रा या विदेश वास, राजा चोर या अग्नि से भय, शत्रु पीड़ा या भाई बहन नाश या कई शोक ।

१० विकल—शत्रु के षड्यन्त्र से मन्द बुद्धि, मानसिक गड़बड़ी, अपमान, विफलता, मानसिक कष्ट, इष्ट मित्रों का मरण, बलक्षीण, मलिन, व्यर्थ भटकने वाला, अति दुर्बल, परोपकार रहित, कार्य में आलस्य, पराये उपकार में अनादर, पिता आदि का मरण; स्त्री पुत्र वाहन हानि, चोर से पीड़ा, नीति रहित, सदा दुःखी, भ्रांति, स्नेह नाश, वस्त्रनाश, बुद्धि हानि, दुष्ट मित्र, पराया कार्य बिगाड़े, शत्रु वृद्धि, शत्रु से पराजय, रोग की वृद्धि ।

११ खल—लगातार हानि, अचानक अड़चनें, झगड़ा, स्त्री माता पिता का वियोग, शत्रुओं द्वारा भूमि धन नाश, दुष्टों से मुकदमा बाजी, परदेश वास, लोभी, सज्जनों से निन्दा, स्वजनों का वियोग, क्रोधी, बुद्धि हीन, स्त्री बच्चों से झगड़ा और वियोग, सदा दुःखी, बीमारी दुःख आदि, धन हानि, मित्रों से कलह ।

१२ पीड्य—मित्रों और सम्बन्धियों से कलह फौजदारी मुकदमा आदि ।

१३ भीत्य—चोर और अग्नि से डर, अपमान ।

१४ कोपी—पाप कर्म में प्रवृत्ति, विद्या धन स्त्री पुत्र और बन्धुओं की हानि, नेत्र में रोग. यश और भूमि नाश, रोग, प्राण संकट, विष जन्तु भय, शत्रु भय, ज्ञाति भय, राज भय, राजा से धन हरण, जुर्माना, जप्ती आदि, एक पुत्र से क्लेश ।

१५ पीड़ित—अनेक व्याधि पीड़ित, दुर्व्यसन से अपकीर्ति, स्वस्थान त्याग कर अन्यत्र भ्रमण, बन्धु चिंता से व्याकुलता, अपमान, बन्धन, कारागार, पराधीनता आदि ।

१६ लज्जित—ईश्वर में अनिष्ठा, सुमति नाश, व्यर्थ भ्रमण, कलह में रुचि, धर्म में अरुचि ।

१७ क्षोभित—दरिद्रता, कुबुद्धि, कष्ट, धन नाश, पैरों में आघात, राजा से क्रोध, धन में बाधा ।

१८ क्षुभित—शोक, मोह, परिजनों के सन्ताप से मानसिक व्यथा, शरीर में दुर्बलता, शत्रुओं से कलह, धन हानि, बलह्रास, विषाद से बुद्धि कुण्ठित ।

१९ तृषित—स्त्रियों को रोग भय, कुकार्य में प्रवृत्ति, बन्धुओं के विवाद से धन हानि,

शरीर में दुर्बलता, दुष्टों द्वारा क्लेश और मान हानि, व्यभिचार, अपने परिवार द्वारा चित्त में सन्ताप।

संक्षिप्त में प्रदीप्त का अच्छा प्रभाव पूरा होता है। विकल में फल की बिलकुल हानि हो जाती है। बीच की अवस्था में क्रमानुसार फल घटेगा जैसी अवस्था होगी फल अच्छा या बुरा उसी प्रमाण से होगा।

दीप्त में सब कार्य साधे। स्वस्थ में आधा कार्य साधे। अतिदुःखित में शत्रु की बहुत पीड़ा हो। विकल में रोगी होवे इत्यादि फल का अनुमान करना। कुंडली का फल कहने में ग्रहों की उपर्युक्त अवस्था का विचार करना और व्यापार अवस्था आदि का भी विचार करना जो आगे बताई गई है। ये फल ग्रहों के बल या निर्बलता से भी अधिक या न्यून फल के द्योतक हैं। यहां अवस्था में किसी का शुभ किसी का अशुभ फल कहा है केवल इतने से ही फल निश्चित नहीं होता। इसमें राशि शील, ग्रह शील, भाव, आवेश, ग्रह कारक, ग्रह दृष्टि योग आदि सब विषयों पर विचार कर ग्रहों के बल के अनुसार फलाफल निश्चित करना। इन सब के अनुसार इन अवस्थाओं के फल में भी अन्तर पड़ जाता है और इन का फल उन ग्रहों की दशा में होता है।

जिस २ भाव में क्षुधित या क्षोभित ग्रह हों उस भाव का नाश कर दुःख देते हैं।

इन अवस्थाओं का भाव-विशेष में फल

१ कर्म स्थान में—लज्जित, तृषित, क्षुधित, या क्षोभित ग्रह हो तो वह सदा सुखी रहता है।

२ पंचम स्थान में—लज्जित ग्रह हो तो उसका पुत्र नाश होता है या केवल एक पुत्र रह जाता है।

३ सप्तम भाव में—क्षोभित या तृषित ग्रह हो तो उसकी स्त्री मर जाती है।

बाल वृद्ध अवस्था विचार

राशि रा०के अंश	विषम राशि में अवस्था	सम राशि में अवस्था	अवस्था का फल	फल
१ से ६° तक	बाल	मृत	बाल	थोडा $\frac{१}{४}$ फल—= उन्नति शील
६ से १२°,,	कुमार	वृद्ध	कुमार	आधा फल=सुखी
१२से १८°,,	तरुण	तरुण	तरुण	पूर्ण फल=राजा
१८से२४°,,	वृद्ध	कुमार	वृद्ध	$\frac{१}{१६}$ फल=अनिष्ट फल, रोग
२४से ३०°,,	मृत	बाल	मृत	शून्य फल=मरण

बाल में प्रभाव नहीं के बराबर है। कुमार १२ वर्ष तक रहता है तब ग्रह का कुछ अच्छा या आधा प्रभाव पड़ता है। तीसरी श्रेणी तरुण की है उसमें सबसे अधिक प्रभाव या ग्रह का पूरा प्रभाव पड़ता है। चतुर्थ श्रेणी वृद्ध की है, जब शक्ति क्षीण हो जाती है बहुत कम फल देने की शक्ति रहती हैं परन्तु ज्ञान परिपक्वता बढ़ जाती है इस सम्बन्ध में विचार किया जा सकता है। पांचवीं अंतिम अवस्था मृत्यु की है यहां ग्रह की शक्ति बिलकुल ही नहीं रहती उस समय वह कुछ फल देने योग्य नहीं रहता।

शुक्र, गुरु, का चन्द्र बाल-वृद्धत्व

शुक्र—जब पूर्व में उदय हो-३ दिन तक बालक। पश्चिम में उदय हो तो १० दिन तक बालक। अस्त होने के ५ दिन पहिले वृद्ध।

गुरु—१५ दिन बाल और वृद्ध रहता है। अन्य मत—वृद्धत्व में ५ दिन, बालकत्व में ३ दिन, शुभ कार्य में वर्जित।

चन्द्र—३ दिन वृद्धत्व, आधा दिन बालकत्व, ३ दिन अस्त।

वृद्ध ग्रह—राहु, सूर्य, गुरु, शनि, ग्रह—वृद्ध ग्रह हैं।

लग्न में चन्द्र और शुक्र हो तो न तो अति वृद्ध स्वभाव वाला और न तरुण अवस्था का स्वभाव वाला ग्रह है।

स्वप्नादि अवस्था

राशि के अंश	विषम राशि में	सम राशि में	अवस्था फल
१ से १०° तक	जागृत	सुषुप्ति	१ जागृत—कार्य साधन करने वाली
१०से २०°तक	स्वप्न	स्वप्न	२ स्वप्न—मध्यम फल वाली
२०से ३०°तक	सुषुप्ति	जागृत	३ सुषुप्ति—निष्फल

१ जाग्रत=अपनी राशि या उच्च में—पूर्ण फल

२ स्वप्न = मित्र या सम के गृह में—शून्य फल

३ सुषुप्ति = शत्रु या नीच स्थान में—शून्य फल

ग्रहों की १२ चेष्टाएँ

जन्म काल में कौन ग्रह क्या चेष्टा करता है उसी प्रमाण में उसकी चेष्टा का फल होता है। यह गणित में इस प्रकार निकाला जाता है—

रीति—ग्रह की राशि छोड़कर केवल अंश कला विकला लेना उसमें २ का गुणाकर ५ का भाग देना जो अधिक हो उसी अनुसार चेष्टा होगी।

जैसे लग्न में बुध कन्या राशि के २५°—३०'—१५" पर है। इस पर से जानना है जन्म समय बुध को क्या चेष्टा थी।

२५°—३०'—१५" × २ = १५—०—३० ÷ ५=१० लब्धि है। और शेष बचा है = ११ की चेष्टा, जिसका फल संताप या हानि है।

१२ चेष्टाओं के भाव

(१) प्रवास–प्रवास करना (परदेश जाना)	(७) क्रीड़ित–सौख्य
(२) नष्ट–द्रव्य नष्ट	(८) अवस्था–२ भेद हैं १ सुषुप्त–निद्रा फल २ कलही–कलह
(३) मृत–मृत्यु, डर, या रोग	(९) मुक्ता–देह पीड़ा
(४) जय–जय होना	(१०) ज्वरा–भय होना
(५) हास्य–स्त्री विलास	(११) कंपित–संताप व हानि, ताप (ज्वर)
(६) रति–स्त्री विषय का सुख	(१२) सुस्थित–सौख्य

वर्ष प्रवेश आदि में भी विशेष कर चन्द्र की चेष्टा निकाल कर फल का विचार होता है।

ग्रहों के २७ व्यापार या अवस्था

अवस्था		फल	अन्य मत से नाम
१ शुद्ध समय में–स्नान		–उन्नति	(१) स्नान
२ वस्त्र धारण–कपड़े पहिरना		–अच्छा	(२) वस्त्र धारण
३ पुंड्र धारण–तिलक या सुगन्ध लगाना		–रक्षा	(३) सुगन्ध
४ जप	–पूजा की तैयारी	–सुख	(४) पूजा की तैयारी
५ शिव पूजा	–शिव पूजा	–शत्रु पर विजय	(५) प्रार्थना करना ०
६ उपासना	–पूजा	–मेल	(६) पूजा
७ विष्णु पूजा	–विष्णु पूजा	–सफलता	(७) बलि की तैयारी *
८ विप्र पूजा	–ब्राह्मण पूजा	–शुभ	(८) ध्यान *
९ नमस्कार	–घुटना टेकना	–रोग	(९) घुटना टेकना
१० अग्निप्रदक्षिण	–परिक्रमा करना	–कठिनाई	(१०) वेदी की परिक्रमा
११ वैश्वदेव	–आशा	–बुरा	(११) आशा
१२ अतिथि पूजा	–अतिथि सत्कार	–बहुत आनन्द	(१२) अतिथि सत्कार
१३ भोजन	–भोजन	–शुभ	(१३) भोजन
१४ विद्या परिश्रम–पढ़ना		–उन्नति	(१४) जल पीना *
१५ अक्रोध	–क्रोध	–शोक	(१५) क्रोध
१६ ताम्बूल	–पान खाना	–कीर्ति	(१३) ताम्बूल भक्षण
१७ नृपालय	–दरबार प्रवेश	–सफलता	(१७) सभा प्रवेश
१८ गमन	–यात्रा की तैयारी	–अच्छाबुरा मिश्रित	(१८) आनंद शब्द उच्चारण
१९ जलपान	–पानी पीना	–सुख	(१९) निजी मंत्रणा
२० आलस्य	–देर	–डर	(२०) देरी

२१ शयनम्	–सोना	–गरीबी	(२१) निद्रा
२२ अमृत पान	–अमृत पीना	–संतोष	(२२) पानी पीना
२३ अलंकार	–गहना पहिरना	–संपत्ति प्राप्ति	(२३) मीठा पीना *
२४ स्त्रीशाला पांप	–स्त्रियों से प्रेमालाप	–भोग	(२४) धन प्राप्त *
२२ संभोग	–भोग	–उदासी या निराशा	(२५) मुकुट उतारना
२६ निद्रा	–गहरी निद्रा	–रोग	(२६) गहरी निद्रा
२७ रत्न पारख	–हीरा की परख	–धन	(२७) स्त्री योग

(* चिन्ह वाले में अन्य मत से अंतर है इसका, आगे और फल दिया है)

किसी भी ग्रह का व्यापार जानना

(लग्न राशि संख्या × ग्रह की राशि संख्या) ÷ २७ = शेष

(शेष × ग्रह महादशा वर्ष) ÷ २७ = शेष = व्यापार क्रम—

विंशोत्तरी महादशा में जो वर्ष बताये हैं वही यहाँ लेना ।

विंशोत्तरी दशानुसार ग्रहोंके वर्ष

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

उदाहरण—मान लो इस कुंडली से मंगल का व्यापार जानना है ।

लग्न कुंडली

लग्न राशि × मंगल राशि

३ × ८ = २४ ÷ २७ = शेष २४

शेष × मंगल वर्ष

२४ × ७ = १६८ ÷ २७ = ६ $\frac{६}{२७}$ =

शेष ६ = उपासना

मंगल का उपासना व्यापार आया फल मेल अच्छा है । सूर्य का =

लग्न राशि सूर्य राशि सूर्य वर्ष
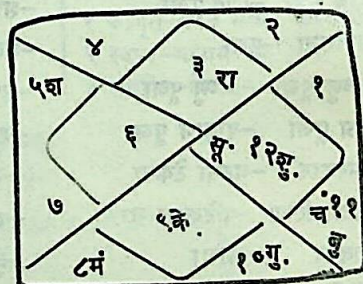
३ × १२ × ६ = २१६ ÷ २७ = ८ $\frac{०}{२७}$ = शेष ० = २७ = रत्न पारख =

शुभ है धन देने वाली है । इसी प्रकार और ग्रहों का निकाल लेना । जब सूर्य की दशा आवेगी तब धन लाभ होगा ।

अन्य प्रकार से ग्रहों का व्यापार निकालना

(लग्न संख्या + लग्न से ग्रह स्थान) × २ × ग्रह वर्ष ÷ २७ = ग्रह का व्यापार ।

जैसे सूर्य का व्यापार निकालना है :—

(लग्न + सूर्य स्थान) सूर्य वर्ष
३ १० ×२× ६ = १३ × २ × ६ = १५६ ÷ २७ = ५ $\frac{२१}{२७}$ = शेष

२१ निद्रा = फल बुरा।

इस मत के अनुसार ग्रहों का व्यापार इस प्रकार दिया है

१ स्नान —फल उन्नति, अच्छा कुटुम्ब और संतान, आदर सफलता पूर्वक कार्य।

२ वस्त्र धारण —भूषण, धन. प्रभाव, स्वाद, वस्त्र, लाभ।

३ सुगन्ध —मिलनसार, विदेश में लाभ, व्यापार, आदरणीय।

४ पूजा की तैयारी —भूमि से लाभ, अच्छे वाहन, आदरणीय।

५ प्रार्थना करना —भूमि का प्रेमी, राजनैतिक नाश, धन हानि, भारी दोषारोपण।

६ पूजा —धन, मिलनसारी, दुष्टों से मेल।

७ बलि की तैयारी —पित्रज दुःख, अच्छी शिक्षा।

८ ध्यान —धनवान, सम्बन्ध, भूमि से लाभ।

९ घुटना टेकना —मधुर भाषण, अच्छा वाहन, दुहरे हृदय वाला।

१० वेदी की परिक्रमा—जिगर के रोग, पेचिस, फौजदारी, मुकदमे बाजी।

११ आशा —राजनैतिक शक्ति, इच्छित कुटुम्ब, सफल जीवन।

१२ अतिथि सत्कार —विचार, जाहगिर, छिपे धन का खोजी।

१३ भोजन —धोखेबाज, रोगी, जाति से च्युत, धार्मिक द्वेष।

१४ जल पीना —बुरा भोजन, नीच स्वभाव।

१५ क्रोध —मनुष्यों से घृणा, खुदगर्जी।

१६ ताम्बूल भक्षण —उच्च सेवा, अच्छी शिक्षा, बहुत धन, कीर्ति।

१७ सभा प्रवेश—नियमित, धार्मिक, आदरणीय, निरपराध।

१८ आनन्द शब्द उच्चारण—महान् सैनिक जीवन, भारी विद्या, धन।

१९ गुप्त मंत्रणा—आलसपन, मीठे शब्द, दुहरा हृदय वाला।

२० विलम्ब —विद्वान्, भद्दा, अकार्यशील, लापरवाह।

२१ निद्रा —दूसरों पर जीवन, कामी, रोगी, क्रूर बर्ताव अपने बन्धुओं से।

२२ पानी पीना —लापरवाह, मित्रों का बुरा करे, योग्य मनुष्यों को हानि दृष्टि से देखे, हानि (नष्ट होना)।

२३ मीठा पीना—निरोग, अच्छी सन्तान. सुन्दर स्त्री, बन्धुओं से मान, अच्छा भोजन।

२४ धन प्राप्त —नवनशील, बड़ा लाभ, लाभ जनक व्यापार।

२५ मुकुट उतारना—काम की हानि, दुःखी, मित्रों और बन्धुओं से त्यक्त।

२६ गहरी निद्रा —कठिन रोग, राजनैतिक मुकदमा, पीना।

२७ स्त्री भोग —निरादर योग्य स्त्रियों में संलग्न, बुरे विचार, दुःखी, धोखेबाज, शक्की और बदला लेने वाला।

ग्रहों की १२ अवस्था जानना

अवस्था नाम	अन्य मत	अवस्था नाम	अन्यमत
१ शयन (लेटना)	(१) शयन	७ सभा वसति (सभा में बैठना)	(७) आगमन ❀
२ उपवेशन (बैठना)	(२) उपवेशन	८ आगमन (आना)	(८) भोजन❀
३ नेत्रपाणि (कुछ से नेत्र ढके)	(३) नेत्रपाणि	९ भोजन (खाना)	(९) नृत्य❀
४ प्रकाशन (प्रकाशित)	(४) प्रकाशन	१० नृत्य लिप्सा (नृत्य की इच्छा)	(१०) लिप्सा❀
५ गमनेच्छा (जाने को तत्पर)	(५) गमन	११ कौतुक (प्रसन्न चित्त)	(११) कौतुक
६ गमन (जाना)	(६) सभावसति❀	१२ निद्रा (सोना)	(१२) निद्रा

यहाँ ❀ चिन्ह वाले में अन्तर है । आरम्भ में जो नाम दिये हैं वे वृहत्पाराशरी और भाव कुतूहल के अनुसार हैं ।

ग्रह की अवस्था जानने की रीति

जन्म नक्षत्र संख्या + इष्ट घड़ी + लग्न = इष्टादि योग । ग्रह जिस नक्षत्र में हो उसकी संख्या में उस ग्रह के अंश का गुणा कर ग्रह के क्रम का गुणा करना उसमें उपरोक्त इष्टादि योग जोड़कर १२ का भाग देना जो शेष रहे वही यहां बताये क्रम से उस ग्रह की अवस्था होगी ।

ग्रह सूर्य	चंद्र	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
क्रम—१	२	३	४	५	६	७	८	९

रीति :—जन्म नक्षत्र + इष्ट घड़ी + लग्न=इष्टादि योग ।

$$\text{ग्रह नक्षत्र संख्या} \times \text{ग्रह अंश संख्या} \times \text{ग्रह क्रम} + \text{इष्टादि योग} \div १२ = \text{शेष अवस्था}$$

वृहत्पाराशरी में ग्रह अंश के स्थान में ग्रह की नवांश संख्या ली है

अर्थात् $$\text{ग्रह नक्षत्र संख्या} \times \text{ग्रह नवांश संख्या} \times \text{ग्रह क्रम} + \text{इष्टादि योग} \div १२ = \text{शेष अवस्था}$$

यहां ग्रह स्पष्ट में जो ग्रह का अंश हो वह उपरोक्त गणित में लेना ।

उदाहरण :

ग्रह अंश	सूर्य १ मीन५°	चंद्र २ कुंभ २°	मंगल ३ वृश्चिक१२	बुध ४ कुंभ२०	गुरु ५ मकर १३	शुक्र ६ मीन१३	शनि ७ सिंह ८	राहु ८ मिथुन८	केतु९ धनु८	इष्ट=१५घ २१ प.
नक्षत्र संख्या	२६	२३	१७	२५	२२	२६	१०	६	१९	लग्न=३ जन्म नक्षत्र २३

$\frac{\text{जन्म नक्षत्र}}{२३} + \frac{\text{इष्ट घड़ी}}{१५} + \frac{\text{लग्न}}{३}$ = ४१ इष्टादि योग

ग्रह नक्षत्र संख्या ×	ग्रह अंश ×	ग्रह क्रम =	इष्टादि योग	शेष	अवस्था
(१) सूर्य—२६ ×	५ ×	१=१३०	+४१=१७१ ÷ १२	—३	नेत्रपाणि
(२) चंद्र—२३ ×	२ ×	२=९२	+४१=१३३ ÷ १२	—१	शयन
(३) मंगल—१७ ×	१२ ×	३=६१२	+४=१६५३ ÷ १२	—५	गमनेच्छा
(४) वुध—२४ ×	२० ×	४=२०००	+४१=२०४१ ÷ १२	—१	शयन
(५) गुरु— २२ ×	१३ ×	५=१४३०	+४१=१४७१ ÷ १२	—७	सभावसति
(६) शुक्र—२६ ×	१३ ×	६=२०२८	+४१=२०६९ ÷ १२	—५	गमनेच्छा
(७) शनि—१० ×	८ ×	७=५६०	+४१=६०१ ÷ १२	—१	शयन
(८) राहु— ६ ×	८ ×	८=३८५	+४१=४२५ ÷ १२	—५	गमनेच्छा
(९) केतु—१९ ×	८ ×	९=१२६८	+४१=१४०९ ÷ १२	—५	गमनेच्छा

इन सब के फल आगे बताये गये हैं।

अवस्था की चेष्टा जानना

(उपरोक्त शेष + वही शेष) + नाम का स्वरांक + १२ = शेष।
(प्राप्त शेष + ग्रह ध्रुवांक) + ३ = शेष—चेष्टा।

ग्रह ध्रुवांक	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
	५	२	२	३	५	३	३	४

नाम का स्वरांक

अंक	१	२	३	४	५
चालू नामके आदि अक्षर	अ	इ	उ	ए	ओ
	क	ख	ग	घ	च
	छ	ज	झ	ट	ठ
	ड	ढ	त	थ	द
	ध	न	प	फ	व
	भ	म	य	र	ल
	व	श	ष	स	ह

चेष्टा

१ दृष्टि—मध्यम फल
२ चेष्टा—पूर्ण फल
३ विष्चेटा—अल्प फल

रवि आदि ग्रहों की इस प्रकार दृष्टि आदि होती है। परन्तु राहु और केतु के फल सदा एक रूप रहते हैं।

उदाहरण—चालू नाम बाबू सिंह—आदि अक्षर व—स्वरांक (५) गुरु की (शेष ७ × ७) + ५ स्वरांक= ४ ÷ १२—प्राप्त शेष ६

$\frac{\text{प्राप्त शेष}}{६} + \frac{\text{गुरु ध्रुवांक}}{५}$ = ११ ÷ ३—शेष २—चेष्टा।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की निकाल लेना।

राहु केतु की चेष्टा आदि निकालने की आवश्यकता नहीं है। कई राहु की भी निकालते हैं।

शयन आदि अवस्था का विशेष फल

शयन—पाप ग्रहों में से कोई ग्रह सप्तम घर में किसी अन्य पाप ग्रह से पीड़ित होकर पाप ग्रह बैठा हो कोई शुभ दृष्टि न हो तो	पत्नी का विनाश करता है।

शयन—लग्न से पंचम घर में उच्च या स्वक्षेत्री ग्रह हो, यदि यह पाप ग्रह युक्त या पापदृष्ट हो तो, — उसके पुत्र का नाश करे
यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो — एक पुत्र का नाशक होता है।

निद्रा—वर्तमान ग्रह सप्तम भाव में हो शत्रु ग्रह से दृष्ट हो या शत्रु ग्रह समीप हो, —तो उसकी स्त्री यदि देव से भी रक्षित हो तो मर जाती है।
स्त्री मारक ग्रह को कोई शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह युक्त हो —तो एक पत्नी मर जाती है दूसरी नही मरती।
जो शुभ और अशुभ दोनों ग्रहों की दृष्टि हो तो —पत्नी सब समय कष्ट युक्त रहती है मरती नहीं।

निद्रा—इस अवस्था में मंगल और शनि दोनों राहु से युक्त होकर लग्नसे अष्टम घरमें हों — तो थोड़ी अवस्था में शस्त्र की चोट लग कर मृत्यु हो।
कोई शुभ ग्रह इस अवस्था में लग्न से अष्टम घर में हों और उसे कोई पाप ग्रह या उसका शत्रु ग्रह देखता हो. — तब भी संग्राम में शस्त्र से मृत्यु हो।

निद्रा या शयन—निद्रा या शयन अवस्था में कोई शुभ ग्रह पाप ग्रह युक्त लग्न से अष्टम हो — शत्रु के कोप से मृत्यु

,, निद्रा या शयन अवस्था में कोई पाप ग्रह अष्टम घर में हो उसे शुभ ग्रह देखे या कोई शुभ ग्रह पास हो अष्टमेश ग्रह उसके साथ हो तो — मरने के समय गंगा तट पर देह त्याग कर भगवान् की सायुज्य गति को पाता है अर्थात् ईश्वरके अंगमें लीन हो जाता है।

इन अवस्थाओं का और भी शुभाशुभ विचार

(१) जन्म समय शयन अवस्था में स्थित शुभ ग्रह जिस भाव में हो उस भाव का फल शुभ होता है।

(२) भोजन अवस्था में पाप ग्रह जिस भाव में हो उस भाव का फल नष्ट होता है।

(३) निद्रा अवस्था में पाप ग्रह यदि सप्तम भाव में हो तो शुभ फल समझना यदि उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो शुभ नहीं होता।

(४) निद्रा या शयन अवस्था में पंचम भाव में यदि पाप ग्रह हो तो शुभ फल।

(५) निद्रा या शयन अवस्था में पाप ग्रह अष्टम भाव में हो तो राजदण्ड आदि से अपमृत्यु हो।

यदि उस पर शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो उसका मरण गंगादि तीर्थ में हो

(६) शयन या भोजन अवस्था में पाप ग्रह दशम भाव में हो तो कर्म मे अनेक प्रकार के दुःख होते हैं।

(७) चन्द्रमा कौतुक या प्रकाश अवस्था में दशम भाव में हो तो निश्चय राजयोग होता है। यहाँ चन्द्रमा उपलक्षण है अर्थात् कोई भी शुभ ग्रह या दशमेश दशम भाव में कौतुक या प्रकाश अवस्था में हो तो राजा या राजतुल्य होता है।

यहां ग्रहों की अवस्था और बल के अनुसार ग्रह से सब भावों का फल समझना।

अब प्रत्येक ग्रहों की १२ अवस्थाओं का पृथक् पृथक् फल देते हैं

(१) सूर्य की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन अवस्था में—मंदाग्नि (क्षुधा की हानि), पित्त का कोप, गुह्य भाग में रोग (गुदा में व्रण), हृदय शूल, हाथ पांव में स्थूलता या हाथी पांव।

२ उपवेशन—दरिद्र, भारवाही, विवादी, हृदय कठोर, धन को नष्ट करने वाला, अच्छी शिक्षा से रहित, सदा दूसरों की सेवा में तत्पर, दस्तकारी के काम मे लग्न परन्तु दुःखी, काला वर्ण परन्तु सुन्दर।

३ नेत्रपाणि—सदा आनन्द युक्त, विवेकी, परोपकारी, बली, धनी, सुखी, राजा का कृपा पात्र, अभिमानी।

इस अवस्था में लग्न से ५-९ या १० वें घर में सूर्य हो तो सब प्रकार का सुख हो, उत्तम फल। यदि अन्य स्थान में हो तो शरीर में द्रव्य पदार्थ सम्बन्धी रोग से बीमार रहे क्रूर स्वभाव हो।

४ प्रकाशन—उदार हृदय, पूर्ण धनी और गुणवान्, पुण्यवान्, बलवान्, सुरूप, सभा में वक्ता पर क्रोधी, उपद्रवी, अनेक धर्म करने वाला, यदि लग्न से ५ या ७ घर में सूर्य हो तो दानी, मानयुक्त धनी हो आनन्द भोगे और राजकीय पुरुष का पुत्र हो। अन्य मत से पुत्र हानि।

५ गमनेच्छा—विदेश वासी, दुःखी, आलसी, बुद्धि हीन, डरपोक, क्रोधी, कृपण, कुबुद्धि, निद्रालु, उग्र, कठोर चित्त, कुमार्ग मे बुद्धि, पर-स्त्री भोगने का इच्छुक, सर्वत्र प्रकाश करने वाला, अशुद्धता से रहने वाला।

६ गमन—पर-स्त्री गामी, परिजन रहित (अकेला रहने वाला), गमन शील, (गमन करने वाला) खल, मलिन, कुबुद्धि, स्त्री और पहिले पुत्र का नाश, विदेश वास, पैर के रोग से पीड़ित इस अवस्था में सूर्य ५ या १२ घर में हो तो पुत्र हानि करे।

७ सभावसति—प्यारी स्त्री मिले, सबसे मान पाये, अनेक गुण युक्त, ज्ञानवान् और सभ्य हो, परोपकारी, धन धान्य से पूर्ण, बली, मित्र का (अनेक मित्र) प्रेमी, दयालु, कलाओं का ज्ञाता, नवीन वस्त्र, भूमि ग्रह युक्त।

८ आगमन—शत्रुओं से तंग, चंचल, दुष्ट, दुर्बल, धर्म कर्महीन, मदोद्धत, (मद से उद्धत) अज्ञानी, सदा काम में लगा रहे, मिथ्यावादी, निम्न श्रेणी की शिक्षा से युक्त, कठोर चित्त, बुरे आचरण वाला।

९ भोजन—शरीर में पीड़ा, परस्त्री गामी, पर-स्त्री के कारण धन नाश, बल का ह्रास, असत्य भाषण, मस्तक पीड़ा, क्षुद्र अन्न भोजन, कुमार्ग गमन, उग्र स्वभाव, मांस का लालची, शास्त्र का ज्ञाता, मीन भक्षी, सतगुण कार्य का अनुयायी, गठिया के रोग से युक्त। इस अवस्था में नवम घर में सूर्य हो तो पुण्य कर्म में बाधा हो।

१० नृत्यलिप्त—कर्ण रोगी, नाना विषय के अध्ययन में मग्न, विद्वान्, राजा से मान, विज्ञजनों से सम्मानित, काव्य विद्याओं का ज्ञाता, राजपूज्य बड़ा पंडित, पंडित पुरुषों के साथ रहने वाला।

११ कौतुक—सर्वदा हर्ष युक्त, ज्ञानी, यज्ञ करने वाला, राजा का आश्रित, शत्रु से जीत, सुन्दर मुर्ख, काव्य प्रेमी, कार्य शील, धनी, सदा हास्य युक्त, दानी, आनन्द भोक्ता, अपनी स्त्री और संतान का प्रेमी, कला के काम का प्रेमी। इस अवस्था में छठे घर में सूर्य हो तो—शत्रु नाश हो, पंचम दोषप्रद में शरीर में बिगाड़, पुत्र, मृत्यु, गुप्तेन्द्रिय में रोग हो।

१२ निद्रा—आंख निद्रा से भरी, विदेश वास, स्त्री की हानि, अनेक प्रकार के धन का नाश, निद्रालु या ऊंघता, रोगी, रक्त नेत्र, उग्र स्वभाव दूसरों को डांटने की आदत।

(२) चंद्र की १२ अवस्थाओं का फल

चन्द्र शुक्ल पक्ष में शुभ होता है। कृष्ण पक्ष में अशुभ होता है।

चन्द्र की शासन अवस्था को छोड़कर अन्य अवस्थायें बुरी नहीं हैं।

१ शयन अवस्था—गरीब हो, क्रोधी स्वभाव का, बुरे आचरण का, निद्रालु, शरीर के गुप्तांग में रोग। बड़ा अभिमानी, बड़ा कामी, धन का व्यर्थ खर्च करने वाला। मृदु स्वभाव, कृष्ण पक्ष में बुरा प्रभाव पड़ता है, कृपण, झगड़ालू, क्रूर, मर्यादा के बाहर कार्य करने वाला (बुरे आचरण का) दूसरे को डांटने वाला, दाहिनी बाजू व्रण, अग्नि में जलने की सम्भावना, सर्प से भय, जल में डूबने का भय।

२ उपवेशन—पितृज पीड़ा या अन्य प्रकार का रोग, मलिन हृदय, कृपण, धन रहित, धोखेबाज, विदेशवासी, दांत के गड़ने या काटे जाने की सम्भावना, मन्द बुद्धि, धन हीन, बड़ा कठोर, वियोगी, दूसरे के धन को हरने वाला।

३ नेत्रपाणि—नेत्र के रोग, हाथी पांव रोग, उपद्रवी, धोखेबाज प्रकृति का, अधिक कानूनी, बड़ा रोगी, निरर्थक बोलने वाला, धूर्त, कुकर्म में रत।

४ प्रकाशन—धन के लिये लाभ जनक, दृढ़ शरीर, तीर्थ यात्रा की ओर झुकाव, विमल गुण युक्त, राजा के सम्बन्ध से गुण प्रकाश, संसार में ख्याति, राजा से धन लाभ, हाथी घोड़े आदि वाहन युक्त, सम्पत्ति भूषण वस्त्र और स्त्री के सुख से युक्त, तीर्थ करने वाला। कृष्ण पक्ष में इसका उल्टा फल होगा।

५ गमनेच्छा—विदेश वास, क्रूर कार्य करने वाला, मस्तक पीड़ा, दंत पीड़ा, गरीब, कृष्ण पक्ष में विशेष रूप से क्रूर, नेत्र रोग से पीड़ित, पाप में निरत, शुक्ल पक्ष में भयभीत।

६ गमन—बड़ा अभिमानी, पांवों में रोग, गुप्त पाप में निरत, बड़ा दीन, बुद्धि सन्तोष से रहित।

७ सभावसति—सदा दानी, धर्म या गुण की ओर प्रेम, राजा या राजकीय पुरुष का पुत्र हो। उच्च पुरुष हो। पूर्ण चन्द्र—सब मनुष्यों में उत्तम, सत्यवक्ता, राजाओं से मान पाने वाला, कामदेव के समान सुन्दर, कामिनी स्त्रियों को शांत करने वाला उत्तम रीत व प्रीत जानने वाला, बड़ा गुणज्ञ।

८ आगमन—बातूनी, शांत, दो स्त्री हों, गुणी कुछ निद्रालु, रोगी सरीखा, बहुत दुःखी और एक पुत्र हो। पूर्ण चंद्र—बहुत वाचाल, धर्म से पूर्ण। कृष्णपक्ष (क्षीण चंद्र)—२ पत्नीवाला, रोगी, दुष्ट, हठी।

९ भोजन—बहुत लालची, धनी, क्रूर, दुर्बल देह, दानी, विदेश वासी, सदा रोगी, हाथी पांव का रोग।

शुक्लपक्ष (पूर्ण चंद्र) लोक में आदर, पारिवारिक सुख, स्त्री पुत्रों का सुख।

कृष्णपक्ष (क्षीण चंद्र) यह फल नहीं होता विपरीत होता है।

१० नृत्यलिप्सा—धन देवे, कई प्रकार के गुण, दान देने की ओर झुकाव, कई पुत्र, चंद्र बलवान हो (शुक्लपक्ष में)—बड़ा बलवान, संगीतज्ञ, रसज्ञ।

कृष्णपक्ष में—पाप करने वाला।

११ कौतुक—लग्न से ९ या १० घर मे इस अवस्था में चंद्र हो तो वह विद्वान हो सब प्रकार का सुख भोगे, कभी गरीब न हो। साधारण फल—राजा या पूर्ण धनवान हो, काम कला में कुशल, वेश्या से प्रेम।

१२ निद्रा—चन्द्र की यह स्थिति बहुत अलाभजनक है। दन्त पीड़ा, कामी, अशान्ति, आपत्तिवान, रोगी, सदा भ्रमण शील, अपने पुत्र की हानि का दुःख भोगे। इस अवस्था में चन्द्र गुरु के साथ किसी घर में हो तो प्रत्येक बात सुलभ होती है। प्रतिष्ठा प्राप्त हो। यदि गुरु से युक्त न हो क्षीण हो तो स्त्री और संचित धन का नाश होता है उसके घर में शृगाली रोती है। यदि राहु युक्त हो तो सब प्रकार का नाश हो। कई प्रकार के अवगुणों से युक्त हो।

३. मंगल की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन—बुरे आचरण का, कृपण, अति क्रोधी, अधिक योग्यता, आनंद और विद्या, व्रण, खुजली, दाद से अति पीड़ित। शयन में मंगल पंचम में हो तो पहली संतान की मृत्यु, सप्तम हो तो पहिली स्त्री की मृत्यु, यदि षष्ठ में हो और शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो कामदेव के निमित्त इसका हाथ और कान काटे जाने लायक हो। यदि राहु युक्त मंगल लग्न में हो तो नेत्र रोग, शरीर में घाव

शिर पीड़ा या सिर काटे जाने की संभावना। मंगल लग्न में हो तो खुजली और दाद से युक्त हो।

२ उपवेशन—नीच आचरण, क्रूर, रोगी, दुर्गुणी, सम्बन्धियों से त्यक्त, बलवान, पाप कर्ता; मिथ्या वादी, दरिद्र, धनवान, धर्महीन, यदि लग्न में हो तो उपरोक्त फल हो। यदि मंगल ९ वें घर में हो तो कई प्रकार से हानि करे उसकी स्त्री-संतान न जिये। परन्तु मङ्गल उच्च का हो तो इसके विरुद्ध फल होने की सम्भावना है।

३ नेत्रपाणि—लग्न में हो तो नेत्र खोवे, स्त्री सन्तान, धन खोवे, सदा गरीब रहे। अन्य घर में हो तो सब प्रकार आनन्द भोगे, स्त्री सन्तान धन होवे और कुछ निद्रालु हो, अङ्ग के जोड़ों में दोष हों, बाघ सर्प अग्नि और जल से भय हो, परन्तु किसी नगर का स्वामी होता है। मङ्गल सप्तम घर में हो तो कामदेव के निमित्त से भंग, सर्प, दाँतों से काटने से अग्नि से या जल से भय, पत्नी का अभाव हो।

४ प्रकाशन—धनी और कुछ समय के लिये आनन्दित रहे, बांये आँख में कुछ चिन्ह या दाग हो, ऊँची जगह से पतन, गुण का विकास हो, राजा से आदर हो, लग्न से पञ्चम घर में हो तो सब समय परदेश में निवास करने वाला गुण रहित होने पर भी राजा से मान पाये परन्तु स्त्री पुत्रों का नाश करे। मङ्गल प्रकाशन अवस्था में पाप ग्रह युक्त होकर या पाप ग्रहों के बीच होकर पञ्चम घर में हो तो यह कुकर्मी हो। राहु से युक्त हो तो महा पतन होता है, पुत्र स्त्री से वियोग, वृक्ष से पतन या लाठी की चोट से दुःख।

५ गमनेच्छा—विदेश वास, गुप्तांग में रोग, गरीब, बुरे कर्म का प्रेमी, नित्य गमन करने वाला, घाव का भय, स्त्री से कलह, दाद खाज युक्त, शस्त्र से भय, धन की हानि।

६ गमन—सदा उदास, दाद खाज या दूसरे चर्म रोग, पित्तज पीड़ा, अङ्ग के जोड़ों में पीड़ा, कार्य शील, शान्त, अपनी स्त्री के प्रभाव में, बातूनी, नेत्र हानि, दन्त और सिर के रोग, दोष युक्त चर्म, जल से भय में विचित्रता, गुणी, मणि रत्न से युक्त, तीक्ष्ण खड्ग धारण करे, शत्रुओं का नाशक. परिजनों का पालक, गज समान गति, यदि लग्न में हो तो सब बातें लाभ जनक हों। यदि गमन अवस्था से और किसी अवस्था में हो तो उपरोक्त अशुभ बातें न होंगी परन्तु वह धनी योग्य, दानी होकर सुख भोगे और आलसी हो।

७ सभावसति—गुण, धन, सम्पत्ति योग्यता देवे, दान की ओर झुकाव, सिर का रोग हो। मङ्गल उच्च पञ्चम नवम घर में हो तो युद्ध कला में प्रवीण, धर्म रहित, धन युक्त परन्तु विद्या से हीन, सत्कार्य में बाधा। बारहवें हो तो स्त्री पुत्र

मित्र से रहित हो। इससे मित्र स्थान में हो तो धनी मानी दानी हो। राज सभा में बैठने वाला बुद्धिमान हो।

८ आगमन–जीवन भर लंगड़ा, पित्तज पीड़ा, कान के रोग हों, दुर्गुणी, नीच आचरण पर न्यायी धनी हो। धर्म कर्म रहित, रोग से दुःखी, बड़ा शूल रोग, कातर बुद्धि, (डरपोक) दुष्ट संग, यदि दशम घर में हो तो उन्नति हो, धन हो, सब प्रकार से अच्छा, माननीय हो, २ स्त्री और कई सन्तान हों।

९ भोजन –मांस खाने का इच्छुक, क्रोधी, सदा उग्र, धनी, ठिगना शरीर, यदि बलवान मङ्गल हो तो मिष्टान्न भोजी हो। निर्बल हो तो नीच कर्म करने वाला और मान हीन हो। यह इस अवस्था या शयन अवस्था में अष्टम घर में हो तो वह पशु से मारा जाये।

१० नृत्यलिप्सा–धनी, दानी, अच्छा खाने का प्रेमी, सदा निराश, कई गौ से युक्त। राजा से लक्ष्मी प्राप्ति, सुवर्ण रत्न दुर्गों से सुशोभित, यदि लग्न द्वितीय या दशम या सप्तम घर में हो तो–सब प्रकार का सुख भोगे यदि अष्टम या नवम घर में हो तो कई प्रकार का दुःख भोगे, धर्म से, पतन, अचानक मृत्यु।

११ कौतुक–विद्यावान पुत्र हो, धन, उन्नति हो, कौतुक करने वाला, मित्र, पुत्र आदि से युक्त। उच्च का मंगल हो तो राजा और गुणज्ञ जनों से पूजित हो बड़ा पंडित हो, यदि ५,७ और ९ घर को छोड़ कर अन्यत्र हो तो उपरोक्त फल यदि ५,७ या ९ घर में हो तो दोष युक्त अंग, कई प्रकार के रोग, पहिली स्त्री पहिला पुत्र मरे।

१२ निद्रा-बड़ा क्रोधी, बुद्धि और धन से हीन, बड़ा धूर्त, धर्म से हीन, रोगों से पीड़ित। यदि लग्न, २,३,९ या ११ वें घर में हो तो वह अज्ञानी गरीब, क्रोधी दुर्गुणी हो। यदि ५ या ७ घर में हो तो कई पुत्र हों और कई प्रकार से सुखी हो। यदि मंगल राहु युक्त हो तो ज्येष्ठ पुत्र की हानि हो कई प्रकार से दुःखी हो, कई स्त्री हों दानी और गुणवान हो, पाप रोगी हो।

४. बुध को १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन –लग्न में हो तो धनी हो, सदा भूखा, लंगड़ा, शरीर का कोई अंग काटा जावे, लालनेत्र वाला, असमर्थ। अन्य भाव में हो तो गरीब और आचरण हीन हो, बड़ा कामी और धूर्त हो।

२ उपवेशन–अच्छा वक्ता हो कवि हो शुद्ध व्यवहार। लग्न में हो तो गुणों की राशि से पूर्ण। पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो दुर्गुणी हो दरिद्री हो। मित्रक्षेत्री या उच्च का या मित्र से दृष्ट हो तो धनी और सुखी हो पवित्र और धार्मिक हो परन्तु नेत्र रोग से पीड़ित हो।

३ नेत्रपाणि—हाथी पांव रोग हो, गरम आंखें, सुन्दर बाल, कई गुण हों सत्यवादी हो परन्तु पुत्र मरे। विद्या विवेक से रहित मित्र और संतोष से हीन, बड़ा अभिमानी हो। यदि पंचम भाव में हो तो पुत्र हीन हो कई कन्याएं हों जो जीवित रहें, राजा से धन पाने वाला, श्रेष्ठ पुरुषों में गणना, स्त्री के सुख से हीन।

४ प्रकाशन—दानी, धार्मिक, धनी, बहुत गुण युक्त, वेद का ज्ञाता, दयालु, पुण्य कर्म करने वाला, अनेक विद्याओं में पारंगत, विवेकी, दुष्टों का दमन कर्ता।

५ गमनेच्छा—आचरण हीन, बातूनी, बहुत दुःखी, रोगी, व्यसनी, झगड़ालू, स्त्री बुरी जिसके प्रभाव में रहे, लाठी से चोट, राजदरबार में आने जाने वाला, धर लक्ष्मी से परिपूर्ण, भूमि का पालक।

६ गमन—व्यापार से लाभ, बहुत आपत्तियाँ भोगें, सर्प, जल का भय अपनी स्त्री और सम्बंधियों की हानि, अज्ञानी, गुण रहित। इसमें गमनेच्छा सदृश भी फल होता है।

७ सभावसति—अज्ञानी, धनी, गुणी, जीवन भर रोगी, उच्च का बुध—धनवान, राजा या मंत्री, ईश्वर में भक्ति अंत में मुक्ति प्राप्त। ५ या १२ घर में—कई स्त्री हों, आलसी पुत्र हो, विशेष कंजूस। ५ या ७ घर में कन्या संतति, सप्तम घर में—काला हो, बेशर्म, अल्प सुख हो, पुत्र हो।

८ आगमन—क्रूर, चालाक, अपढ़, व्यसनी, २ पुत्र हों, थोड़ा धन हो, मन बदलने वाला, गुप्तांग में रोग, मूत्र रोग की शंका सदा रहे। हीन मनुष्यों की सेवा से धन पाने वाला, २ पुत्र १ कन्यां हो।

९ भोजन—गरीब, कलुषित हृदय, वृद्धावस्था में रोग से पीड़ित, विदेश वास, बाईं ओर व्रण, दंत रोग चर्म रोग, व्रण या ग्रन्थि हो; ग्रन्थिक पीड़ा, कठिन मस्तक रोग। वादविवाद में धन हानि, राज भय, कृशदेह, चंचल मन; शरीर स्त्री और धन के सुख से रहित।

१० नृत्यलिप्सा—कवि, धनी. विद्वान, उग्र, क्रोधी, पर सुखी हो। अच्छी स्त्री, अच्छे पुत्र हों ४ लड़की हों। मान, वाहन, रत्न, मित्र, और प्रताप से युक्त, सभा चतुर। यदि पाप राशि में हो तो लम्पट और वेश्यागामी हो।

११ कौतुक—बहुत मिलन सार; अर्श रोग अवश्य हो; दाद, चर्म हो। लग्न में—संगीतज्ञ। ७ या ८ घर में—कई कन्याएं हों ज्येष्ठ पुत्र मरे। ९ या १० घर में—बहुत प्रकार का सुख भोगे, धार्मिक कार्य करें।

१२ निद्रा—सुखी और धनी हो, संतान हो, दीर्घ व शांति पूर्वक जीवन, निद्रा से सुख (आलस) आधि व्याधि से युक्त, अधिक संताप, अपने जनों से विषाद और धन नाश। सहोदर हीन या सगे भाइयों के निमित्त से विफलता और नाश।

५. गुरु की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन—विद्वान, धनी, बहुत गुणी. बहुत बुद्धिमान । बलवान, मंद स्वर से बोलने वाला, गौर वर्ण, बड़ी ठोड़ी वाला, अति शत्रु भय ।

२ उपवेशन—गरीब हो, बातूनी, (वक्ता) रोगी, पशु के दांत की चोट, दस्तकारी के व्योपार में योग्य, हाथी पाँव रोग, बहुत गर्व वाला, राजा और शत्रु से सुख पाने वाला, पैर जांघ मुख और हाथ में व्रण । यदि २,३,११ या १२ घर में हो—तो बड़ी बुद्धि हो शास्त्र की अनेक शाखाओं में दक्ष हो ।

३ नेत्रपाणि—रोगी; धन हीन, गीत और नृत्य प्रिय, कामी, गौर वर्ण, दीन वर्ण मनुष्यों से प्रीत । लग्न में हो तो—धनी, सुन्दर, सिर का रोग हो, शंका युक्त, कोई कार्य या व्यापार में असफल होने की संभावना । पैरों में सदा व्रण, यदि ६, ८ या ९ घर में हो—शत्रुओं का दमन करे ।

४ प्रकाशन—गुणों से आनंद, सुख, तेज, वृन्दावन आदि गमन, उच्च का हो तो मान्य कुबेर सम धनी । लग्न या दशम में—राजा का मंत्री हो, बहुमूल्य पदार्थ व धन युक्त रहे ।

५ गमनेच्छा—साहसी, मित्र वर्गों से युक्त, पंडित, अनेक सम्पत्ति से युक्त, वेद ज्ञाता । बिना विचारे काम करने वाला, सदा मित्र व पुत्रों के सुख से सम्पन्न लग्न में हो तो विद्वान हो अन्य घर में हो तो गुप्तांग में रोग हो । यदि २–५–७ या १० घर में हो तो आडम्बर हीन पापी और रोगी हो कृष्ण वर्ण से पीड़ा हो, धनी हो, विदेश वास करे ।

६ गमन—शूर वीर हो, सर्प से भय, विविध कार्यों में संलग्न रहे परन्तु दूसरों के धन से धनी हो । उस के घर में जन समूह, सुन्दरी स्त्री और लक्ष्मी सदा रहे ।

७ सभावसति—तेज वक्ता हो, धनी, दानी, राजभक्त, विद्वान और देखने में सुन्दर । गुरु के समान वक्ता, मुक्ता आदि धन से परिपूर्ण, अनेक वाहनों से युक्त अनेक विद्या का ज्ञाता । यदि केन्द्र में हो तो बहुत सुखी और धनी हो परस्त्री भोगे । ८ या १२ घर में हो तो दुःखी हो और नष्ट हो ।

८ आगमन—धार्मिक विद्वान, माननीय, शक्तिवान, घमंडी, तीर्थ घूमे, लोक में आदर, अनेक वाहन, सेवक, पुत्र, स्त्री मित्र आदि से युक्त, उत्तम विद्या, राजा से सन्मान, उत्तम बुद्धि, काव्य में प्रेम, सन्मार्गी, सुखी, सर्वत्र मान, राजा के समान प्रतापी ।

९ भोजन—नित्य उत्तम भोजन मिले, अनेक वाहन से सुशोभित, घर को लक्ष्मी कभी न छोड़े, सदा पंडित : लग्न में हो तो प्रसिद्ध पुरुष हो, बहुत सुखी हो परन्तु व्यसना हो और मानने योग्य बात कहे, धनुर्धर हो । ५ या ९ घर में—सत गुणी हो पुत्र हो परन्तु धन हीन हो । गुरु पाप युक्त ५ या ९ घर में—पुत्र संतति से रहित हो ।

१० नृत्यलिप्सा—विद्वान, धनी धार्मिक बड़प्पन हो, राजा का मान्य, मंत्रज्ञ, पंडितों में श्रेष्ठ, शब्द शास्त्र में पंडित लग्न, ५, ९ या १० वें घर में हो तो इन विषयों में भाग्यवान हो, न हो तो नहीं होगा।

११ कौतुक—कुतूहली, महा धनवान, अपने कुल में सूर्य समान कृपालु, सुखी, पुत्र, भूमि, नीति से युक्त, महाबल राज पण्डित, पूजित, लग्न, ९ या १० घर में हो—होता धनी, धार्मिक, बहुत संतुष्ट, उग्र, विशेष रीति से सुखी। किसी दूसरे घर में हो तो गरीब, कामी, दुःखी, अकार्य शील या आलसी।

१२ निद्रा—सब प्रकार से मूर्ख दरिद्र और पुण्यहीन, बातूनी, कृपण, नेत्र रोगी, पृथ्वी भर में भ्रमण करें, बहुत दुःखी हो। ५–७–१० वें घर में हो तो स्त्री संतान मरे लग्न में हो तो गराब हो।

६. शुक्र की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन—बली होता हुआ भी दंत रोगी, क्रोधी, धन हीन, वेश्या गामी हो, धर्म रहित हो। ७–१० घर में हो तो सब प्रकार का सुख भोगे, कभी दुःख न हो, ७ पुत्र ५ कन्या हो। उच्च में हो तो कई संतान हों। यदि निर्बल हो तो अल्प संतान हों यदि अन्य घर में हो तो धनी शिक्षायुक्त, धार्मिक, बहुत सुखी हो परन्तु निश्चय उस का पुत्र मरे।

२ उपवेशन—रत्न सुवर्ण आदि धन से सुख, शत्रु का नाश राजा से आदर प्रतिष्ठा की वृद्धि। धार्मिक हो, दाहिनी ओर व्रण, अंग की जोड़ में पीड़ा, यदि स्वस्थानी या उच्च का या शुभ युक्त हो तो कई प्रकार से सुखी हो।

३ नेत्रपाणि—नेत्र हानि हो। लग्न या सप्तम घर में हो तो अवश्य नेत्र. हानि हो १० वें घर में भारी दुःख परन्तु अन्य घर में हो तो २ स्त्री हो बहुत धन हो शूरवीर और राजभक्त हो, माननीय हो कई तीर्थ करे। १-७ या १० घर में नेत्रों में रोग हो धन नाश हो। अन्य स्थान में उत्तम मकान वाला हो। अन्य मत से (भा० कुं०) १,७ या १० भाव में—अति शुभ बल वृद्धि हो, कामदेव की वृद्धि हो परन्तु थोड़ी अवस्था में दाँत उखड़ जावे।

४ प्रकाशन—स्वोच्च, स्वगृह या मित्र राशि में हाथी के समान बलशाली हो राजा के समान धनी और सुखी, काव्य तथा संगीत में पारंगत, बड़ा कौतुकी, कलाओं में प्रवीण, कीर्तिमान। यदि लग्न, २ या ७ या ९ घर में हो तो, धनी–पवित्र और धार्मिक हो यदि दशम में उच्च का हो तो उपरोक्त फल अधिक भोगे। यदि अन्य घर में हो तो दुःखी और रोगी हो विदेश वास करे, सदा किसी काम में लगा रहे।

५ गमनेच्छा—भाई मां मरे, बचपन में रोग युक्त रहे। मानसिक चिंता बंधुओं का वियोग, शत्रु भय।

६ गमन—उत्साही, कला कौशल में दक्ष, तीर्थ यात्रा का प्रेमी, टखने में रोग, धनवान, हाथ पैर में रोग।

७ सभावासति—राजा का मंत्री हो, धनी दक्ष परन्तु पीड़ा हो, उदय होकर बली हो तो अपने प्रताप से राजदरबार में प्रगल्भता, गुणी, शत्रु का नाशक, महाबली, दाता और वाहन पर चलने वाला। यदि शत्रुक्षेत्री या शत्रु युक्त या दृष्ट हो—तो नाना प्रकार के रोग हों और नष्ट हो जावें।

८ आगमन—धन लाभ नहीं होता, शत्रुओं द्वारा हानि, पुत्र और परिजन का वियोग, रोग भय, स्त्री सुख की हानि। बुरे आचरण का, गरीब और बातूनी, दाद का रोग, पुत्र शोक। शत्रु युक्त या ६ घर में हो—अपनी सब सम्पत्तियां विशेष कर अपनी संतान और स्त्री खोवे। यदि २, ४ या ८ घर में हो तो सब प्रकार से दुःखी हो।

९. भोजन—मजबूत, सतगुणी कार्य में मन, सेवा या व्यापार से धन, क्षुधा की कमी, पित्तज पीड़ा, मस्तक पीड़ा, विदेश वास, पराई सेवा, कई प्रकार की आपत्तियां क्षुधा से व्याकुल, रोग से पीड़ित, शत्रु से तंग, कन्याराशि में—धनवान और पंडितों का आश्रित।

१० नृत्यलिप्सा-काव्य करने वाला, बुद्धिमान, वीणा मृदंग आदि बाजा बजाने में निपुण, धन को बढ़ाने वाला। वक्ता हो उसकी विद्या और कवित्त शक्ति दिन २ बढ़े। परन्तु नीच का हो तो वह अज्ञानी हो। यदि स्वस्थानी हो तो राजा का मंत्री बहुत दृढ़ और कामी हो, कई स्त्री हों पर-स्त्री से मन काला हो, बातूनी हो माननीय यज्ञ कर्ता और धार्मिक पूजा आदि करे।

७. शनि की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन- बाल अवस्था में रोग, भूख प्यास से पीड़ित, बहुत बड़ा श्रमित परन्तु वृद्धावस्था में भाग्य से सम्पन्न होता है। शनि चाहे कहीं हो जिस शयन आदि अवस्था में बैठा हो उसी तुल्य फल देता है। शयन में गुप्तांग में रोग, दोषित अंग, पोता बढ़ जाने का रोग। लग्न, ६ या ८ घर में—निरंतर विदेश वास, गरीब हो, कुरूप अंग मोटा, ५, ७, ९ या १० घर में—धार्मिक हो, पुत्र हो, अपनी सम्पत्ति स्वतंत्रता पूर्वक बाँट सकता है।

२ उपवेशन—हाथीपांव रोग, दाद, सदा बीमार रहे, नित अपना धन गंवावे, प्रबल शत्रु से पीड़ित, व्यर्थ खर्च, अभिमानी, राजा से दंडित।

३ नेत्रपाणि-सुन्दरी स्त्री और सम्पत्ति से युक्त, राजा और मित्रों से उपकृत, बहुत कलाओं का ज्ञाता, प्रिय वक्ता। इस अवस्था में अज्ञानी भी विद्वानों सरीखा प्रसिद्ध हो, धनवान और बातूनी हो, २ स्त्री हो, उदर शूल, पेट और सिर में रोग, अग्नि व जल से भय, जोडों में पीड़ा हो, उसका क्रोध थोड़े समय

रहे। यदि लग्न या १० घर में हो तो इससे विरुद्ध फल हो सब प्रकार का दु:ख भोगे उस के कार्य से लोग घृणा करें, ५ या ७ घर में स्त्री संतान और धन गंवाये। अन्य घर में हो तो धनी होकर कई प्रकार का सुख भोगे।

११ कौतुक—इन्द्र समान पराक्रमी, सभा में चतुर, उत्तम विद्या, घर में सदा लक्ष्मी का निवास, धनी, पवित्र, आनंदित, बहुत सुखी, हास्य का प्रेमी, वक्ता हो, पुत्र हो, नीच के घर में-उपरोक्त बातें विरुद्ध हों वह दु:खी और आपत्ति में रहे।

१२ निद्रा—दूसरों की सेवा करने वाला, पर निंदक, वीर, व्यर्थ बोलने वाला, भ्रमण शक्ति। चित्त में शान्ति न रहे, रोगी, गरीब, सदा आपत्तिवान, कुरूप अंग और मोटा। यदि मित्र क्षेत्री हो तो सब सम्पत्ति गंवा देवे।

४ प्रकाशन—अनेक गुण धन और बुद्धि से युक्त, तेजस्वी, दयालु, ईश्वर का भक्त, बड़ा प्रतापी। राजा का मंत्री, बड़ी बुद्धि हो, धनी हो पवित्र और धार्मिक हो। लग्न या ७ घर में—सब सम्पत्ति गंवावे जाति से वहिष्कृत।

५ गमनेच्छा—कई पुत्र, बहुत धन हो, विद्वान्, दानी शत्रु की भूमि छीनने वाला, राज-दरबार का पंडित, खर्च करने वाला, राजा का मुख्य कामदार।

६ गमन—मूर्ख, स्त्री पुत्र के सुख से रहित, दीन, किसी के आश्रित, भ्रमण करने वाला, पांव रोग, (हाथी पांव) बहुत क्रोधी, कृपण, दांत से शरीर में चोट, दूसरों को डांटे, ५ या ७ घर में हो तो अपने सब पुत्र खोवे विशेष कर स्त्री। लग्न में हो तो कोई स्त्री या संतान न हो, पांव में कोई रोग हो स्वाभाविक यात्री या तीर्थ यात्रा करने वाला हो। ७ या ९ या १० या १२ घर मे—विद्वान्, धनी हो सब प्रकार का सुख भोगे।

७ सभावसति—लगातार धनी और धार्मिक हो सब प्रकार का सुख भोगे सुवर्ण रत्न आदि धन से सम्पन्न गीत जानने वाला बड़ा धनी व बड़ा पुरुषार्थी हो। स्त्री संतान धन और आभूषण युक्त हो शत्रु के घर में हो, या शत्रु से दृष्ट हो तो असामयिक मृत्यु हो।

८ आगमन—रोग की वृद्धि, दरबार से लाभ करने में बुद्धि नहीं होती भूमि में धीरे चलने वाला मांगने की इच्छा से रहित। क्रोधी, सर्प काटने की संभावना। अपना भाई गंवावे। लग्न में हो तो उपरोक्त बातें नहीं होती। २, ३, ५ या ७ वें घर में हो तो—धनी हो स्त्री संतान और भाई का सुख भोगे ९ वें घर में हो तो धार्मिक कार्य से सदा बाधा होती है।

९ भोजन—सरल भोजन, नेत्र की ज्योति मंद, मोह से बुद्धि चंचल क्षुधा, हानि, अर्श, पेट शूल और नेत्र रोग हो स्वस्थान या उच्च में हो तो निरोग रहे सब प्रकार सुखी रहे।

१० नृत्य लिप्सा–धर्मात्मा, धनी, राज मान्य, धीर, रण में वीर, सब प्रकार का सुख भोगे, पांचवें घर में–सब पुत्र हानि, ५, ७, ९ या ११ घर में–सब गंवावे, नाना प्रकार के रोग हों ।

११ कौतुक–रक्षा का मंत्री, दानी, धार्मिक, विद्वान्, पवित्र सब प्रकार के कार्य में बहुत दक्ष धनी, अच्छा भोजन, भूमि और धन से परिपूर्ण अति सुखी, सुन्दर स्त्री व सुख से पूर्ण, काव्य कला का ज्ञाता ।

१२ निद्रा –धनवान्, गुणवान, पराक्रमी, शत्रु को जीतने वाला, वेश्या से प्रेम, धार्मिक, नेत्र रोगी, शूल रोग, २ स्त्री, कई सन्तान हों । १० वें घर में–नष्ट हो जाये, सब कार्य में और धार्मिक कार्य में उस का जीवन असफल रहे । सदा भूखा, दुःखी, रोगी, सदा विदेश वास । अन्य कोई अवस्था में १० वें घर में हो तो उसे लाभ जनक होगी । शनि स्वस्थान, उच्च केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उपरोक्त हानि कारक बातें नहीं होंगी, ५ या ७ घर में–२ स्त्री और कई सन्तान हो सब प्रकार का सुख भोगे ।

८. राहु की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन –बहुत दुःख भोगे, रोगी रहे, हाथी पांव रोग हो, सदा धन गंवाये, राजकीय पुरुष से कष्ट भोगे, कन्या, सिंह या मिथुन या वृष में उन्नत शील हो सब प्रकार का सुख भोगे । अन्यमत से मेष वृष या मिथुन में–धन धान्य युक्त समाज में मुख्य । (अन्यमत) लग्न से राहु २,११ या १२ घर में हो निर्धन होकर भ्रमण करे । राहु स्वक्षेत्र (कन्या का) या उच्च (मिथुन) का या शुक्र या बुध के घर का या मित्र गृही या अपने वर्ग का शुभ ग्रह के वर्ग का हो तो पूर्ण शुभ फल देगा उक्त स्थान छोड़ अन्य घर में हो तो अनिष्ट फल देता है ।

२ उपवेशन–कोढ़ से दुःख भोगे, अपने शत्रु या राजासे हानि हो । दाद रोग, धन से रहित राज सभा में बैठने वाला, अभिमानी ।

३ नेत्रपाणि–नेत्र रोग हो, सर्प या व्याघ्र से चोट, उतावला, बातूनी, धनी, कुटिल हृदय या धोखेबाज, स्त्री के प्रभाव में रहे, बचपन से रोगी, अंडकोष दोष युक्त, गुप्तांग में रोग, जल में डूबने की संभावना शत्रु और चोर से भय, धनका नाश ।

४ प्रकाशन–सुन्दर स्थान, सुयश, धन और गुणों की उन्नति, राजा से अधिकार, विदेश में उन्नति, नवीन मेघ समान, धार्मिक, उग्र (या विदेश वास) । मिथुन या कन्या का–शुभ आसन पर बैठने वाला आदि उपरोक्त शुभफल । यदि कर्क या सिंह में हो तो सिर काटे जाने की संभावना हो ।

५ गमनेच्छा–बहुत पवित्र, बहुत धनी, विद्वान, गुणी, दानी और प्रसिद्ध–बहुत सन्तान वाला, पंडित, राजपूज्य ।

६ गमन –दांत के चोट के निशान शरीर पर, बहुत क्रोधी, उपद्रवी, परपीड़क, निंदक, सर्प या व्याघ्र से काटा जावे, पांव में लोहे की सांकल पड़ने की संभावना, कई प्रकार की बीमारी में धन नष्ट, उसकी स्त्री और सम्बन्धी की मृत्यु, धन से हीन, कृपण, कामी, कुटिल ।

७ सभावसति–बड़ा पंडित, अत्यन्त कृपण, अनेक गुणों से सम्पन्न, धन से सुखी । बुद्धिमान, धार्मिक हो । लग्न, ५ या १० घर में–अपनी स्त्री पुत्र, धन गंवाये । अस्थिर मन रहे ।

८ आगमन–प्रत्येक को दुःख दायक हो, कुटुम्बियों और सम्बन्धियों की हानि, स्वतः कष्ट भोगे । व्याकुलता, शत्रु भय, धन का नाश, शठता और दुर्बलता, बन्धुओं से विवाद, भृत्य वर्गों का नाशक ।

९ भोजन –भोजन बिना विकल, मंद बुद्धि; कार्य में आलसी, स्त्री पुत्र के सुख से रहित बहुत लालची, उपद्रवी, झगड़ालू, कृपण, दुःखी, लग्न या १० घर में-पतित भाग जावे चाहे वह भले कुटुम्ब में हुआ हो । ७ या १० घर में–अपनी स्त्री को अवश्य खोवे, उसके सब कार्य में बाधा हो ।

१० नृत्यलिप्सा–महारोग भय, नेत्र रोग, शत्रु भय, धन और धर्म की हानि । लग्न में–कष्ट प्रद रोग से दुःख लंगड़ा या अंधा हो या पर पीड़क हो । परन्तु और कोई घर में हो तो धनी, उन्नति शील बुद्धिमान हो, २ स्त्री और कई सन्तान हो ।

११ कौतुक–स्थान हानि, पर स्त्री से प्रेम, परधन का लोभी । उन्नति प्राप्त करे और पूर्ण हो परन्तु शूल रोग हो । ५, ७ या १० घर छोड़ कर अन्य घर में हो तो स्त्री और सन्तान न होने से अनेक दुःख भोगे ! यदि स्वस्थान या उच्च में हो तो निश्चय पूर्वक प्रत्येक बातें लाभ जनक होंगी ।

१२ निद्रा –गुणों से युक्त, स्त्री पुत्र आदि सुख से युक्त, धीर, गौरव युक्त, महाधनवान, गर्वीला । अन्यमत–दुःख और कष्ट से पूर्ण, गरीब, सन्तान हीन, विदेश वासी, यदि ५ या ७ घर में हो तो बुद्धिमान पुत्र और अच्छी स्त्री हो, ५ या ९ में हो तो पवित्र क्षेत्र में निवास करे, ९ या १० घर में हो तो प्रसिद्ध तीर्थ प्रयाग आदि में मृत्यु हो । २,१० या १२ स्थान में–गरीबी से कष्ट भोगे, संसार भर में भ्रमण करे ।

९. केतु की १२ अवस्थाओं का फल

१ शयन– १, २, ३, या ६ राशि का–धनवान अन्य राशि में रोग से पीड़ित ।

२ उपवेशन–दाद खजुली हो, शत्रु, राजा, सर्प या चोर से भय ।

३ नेत्रपाणि—नेत्र रोग हो, दुष्टों से व शत्रु, सर्प और राजा से भय।

४ प्रकाशन—धनधान्य पूर्ण, राजा से मान, यश लाभ, उत्साही, मल्ल प्रकृति, विदेश वासी या परदेश में जाने से सुख।

५ गमनेच्छा—पुत्र और सम्पत्ति युक्त, बड़ा पंडित, राजा से मान पाने वाला विवेकी, गुणी, दानी, पुरुषों में श्रेष्ठ।

६ गमन —अनेक रोग, धन रहित, दंत रोग, पिशुन, परनिंदक, दुष्ट बुद्धि, अति कार्य, धर्म हीन, क्रोधी।

७ सभावसति—बड़ा गर्वित, वाचाल, कृपण, बड़ा कामी, धूर्त मनुष्यों की विद्या में प्रवीण।

८ आगमन—पापियों का सरदार, बंधुजनों से विवाद करने वाला, अतिदुष्ट, शत्रु और रोग से पीड़ित।

९ भोजन —भूख से पीड़ित, अति दरिद्र, रोगी होकर भूमि में भ्रमण करता है।

१० नृत्यलिप्सा—रोग से पीड़ित, आंख में फूलो वाला, किसी के बश में नहीं होने वाला, बड़ा धूर्त, और अनर्थ करने वाला।

११ कौतुक—वेश्याओं से प्रेम, स्थान हानि, दुराचारी, दरिद्र, भ्रमण शील।

१२ निद्रा—धन धान्य से सुखी, अनेक गुणों के विनोद से अपना समय व्यतोत करने वाला।

चंद्र की विशेष १२ अवस्थाएँ

१ आत्मस्थानात् प्रवासी = अपने स्थान से अनुपस्थिति।
२ महितनृपहितो = हितैषी राजा का प्रिय।
३ दासता प्राणहानिः = सेवा के कारण अपना जीवन खोने का भय।
४ भूपालत्व = पृथ्वी का शासक होने की योग्यता प्राप्त होना।
५ स्ववंश उचित गुण = अपने कुटुम्ब के योग्य गुण और योग्यता होने की प्रसन्नता।
६ रोगी = बीमार।
७ आस्थानत्वम् = सभा में नायक या नेता बनने की इच्छा।
८ भीति = भय।
९ क्षुद्व्याधित्वं = क्षुधा की पीड़ा से दुःख।
१० युवतिपरिणयो = युवती स्त्री से विवाह।
११ रम्यशय्यानुषक्तिः = रमणीक शय्या प्राप्त करने की इच्छा।
१२ मिष्टाशित्वं = स्वादिष्ट भोजन करना।

अवस्था निकालने की रीति

जन्म नक्षत्र के भुक्त घड़ी पल के पल बनाकर ३०० का भाग देना—लब्धि चंद्र की अवस्था होगी। यदि शेष बचता है तो उसके आगे की अवस्था जानना

घ० प०

उदाहरण—जन्म नक्षत्र घनिष्ठा भुक्त ३७–३ = २२२३ पल

पल
३००) २२२३ (७गत — यहां लब्धि ७ होने से ७ अवस्था गत हो गई शेष १२३ बचा
२१००
———
१२३

वह ८ वीं अवस्था का है इस कारण आगे ८ वीं अवस्था "भीति." आई जिसका फल अवस्थानुसार अर्थात् भय है।

चंद्र क्रिया जानना

चंद्र क्रिया ६० हैं जो नीचे दी हैं।

१ स्थान भ्रष्ट
२ तपस्वी (तपस्या करने वाला)
३ परयुवतीरत
४ द्यूत कृत
५ हस्ति मुख आरूढ़
६ सिंहासनस्थ
७ नरपति (मनुष्यों का नेता)
८ अरिहंता (शत्रु नाशक)
९ दंडनेता (जज)
१० गुणी
११ निष्प्राण (मृत या बिलकुल थका)
१२ छिन्न मूर्द्धा (मस्तक कटना)
१३ क्षतकरचरण (हाथ पैर जख्मी)
१४ बंधनस्थ (बन्दी)
१५ विनष्ट = (गुमा हुआ या नष्ट)
१६ राजा
१७ वेदान्धीते (वेद अध्ययन)
१८ स्वपित (निद्रित)
१९ सुचरितः संस्मृतो (अच्छे चरित्र का) स्मरण
२० धर्मकर्ता (धर्म करने वाला)
२१ सद्वंशीयो (अच्छे वंश में उत्पन्न)
२२ निधिसंगताः (निधि संग लेकर आया)
२३ श्रुतकुलो (प्रसिद्ध कुल का)
२४ व्यापारपरः (प्रदर्शन में चतुर)
२५ शत्रुहा (शत्रु नाशक)
२६ रोगी
२७ शत्रुजितः (शत्रु द्वारा पराजित)
२८ स्वदेश चलनो (स्वदेश को प्रस्थान)
२९ भृत्य (नौकर)
३० विनष्टार्थकः (थोड़ा माल है वह भी) नष्ट कर दिया
३१ आस्थानी (सभा में सदैव उपस्थित)
३२ सुमंत्रक (अच्छा सलाहकार)
३३ परमहीभर्ता (दूसरे की भूमि का संरक्षक)
३४ सभार्या (अपनी स्त्री के साथ रहना)
३५ गजत्रस्तः (हाथी से भयभीत)
३६ संयुग भीतिमान (झगड़े में डरपोक)
३७ अतिभयो (बहुधा अधिक डरपोक)
३८ लीन (छिपे तौर पर रहना)
३९ अन्न दाता (दूसरों को भोजन देने वाला)
४० अग्निगः (अग्नि में या अग्निसमीप)
४१ क्षुद्बाधासहित (भूख से व्याकुल)
४२ अन्नमत्ति (पके चावल खाता है)
४३ विचरना (घूमना)
४४ मांस अशनो (मांस भोजन)

४५ अस्त्रक्षतः (हथियार से घाव)
४६ सोद्वाहो (विवाह में)
४७ धृत कन्दुको (हाथ में गेंद लिये)
४८ विहरति द्यूतैः (जुआ खेलने में मग्न)
४९ नृपो (राजा)
५० दुःखिता (दुःखी)
५१ शय्यास्थो (शैया में है)
५२ रिपु सेवित (शत्रु द्वारा मान्य)
५३ ससुहृद (मित्रों से घिरा)
५४ योगी (भक्त या महात्मा)
५५ भार्यान्वित (स्त्री के साथ)
५६ मिष्टाशी (स्वादिष्ट भोजन करता है)
५७ पयः पिबन् (दूध पीये)
५८ सुकृतकृत् (अच्छे कार्य करे)
५९ स्वस्थ (आत्म निर्भर या विश्वस्त)
६० सुखी (सुखी रहे)

चंद्रक्रिया जानने की रीति

जन्म समय चंद्र नक्षत्र जितना गत हुआ हो उस भुक्त नक्षत्र घड़ीपल के पल बना कर ६० का भाग दो जो लब्धि प्राप्त हो वही चंद्र क्रिया होगी। यदि कुछ शेष बचे तो आगे वाली संख्या लेना अर्थात लब्धि में १ जोड़ कर लेना।

उदाहरण—जन्म धनिष्ठा नक्षत्र घ०.प. ३७.३ के पल २२२३ हुए

६०) २२२३ (३७ लब्धि गत
१८०
४२३
४२०
३ शेष

यहां ३७ गत होकर शेष बचने के कारण आगे का ३८ वां "लीन" आया

इस का फल क्रिया के नाम के अनुसार विचारना।
इसका विचार जन्म, प्रश्न मुहूर्त आदि में उपयोगी है।

चंद्र वेला निकालना

चंद्र वेला ३६ हैं जिनके नाम आगे दिये हैं—

(१) मूर्द्धामयो (मस्तक पीड़ा)
(२) मुदितता (आनन्दित)
(३) यजन (यज्ञ आदि करना)
(४) सुखस्थो (सुख पूर्वक रहना)
(५) नेत्रामयः (नेत्र रोग)
(६) सुखितता (सुखी होना)
(७) वनिताविहारः (युवती के साथ मनोरंजन)
(८) उग्र ज्वर (तीव्र ज्वर)
(९) कनक भूषण (सुवर्ण के आभूषण)
(१०) अश्रुमोक्षः (अश्रु पतन)
(११) क्ष्वेलाशनं (विष भक्षण)
(१२) निधुवनं (स्त्री भोग)
(१३) जठरस्थ रोग (उदर रोग से पीड़ा)
(१४) क्रीड़ा जले (जल में बिहार) चित्रविलेखने (आनन्द मनाना और चित्रकारी)
(१५) क्रोधश्च-क्रोध
(१६) नृत्त करणं (नाचना)
(१७) घृतयुक्ति (घी सहित भोजन करना)
(१८) निद्रे (सोना)
(१९) दानक्रिया (दान देना)
(२०) दशनरुक् (दन्त पीड़ा)

(२१) कलह (झगड़ा)
(२२) प्रयाण (यात्रा को प्रस्थान)
(२९) शास्त्रलाभं (शास्त्र आदि का लाभ होना)
(३०) स्वैरं (उद्दण्डता आदि)
(३१) गोष्ठी (वार्तालाप)
(३२) योधने (युद्ध करना)
(३३) पुण्य कर्म (पुण्य कर्म करना)
(३४) पापाचार (पाप कर्म करना)
(३५) क्रूरकर्मा (क्रूर कर्म करना)
(३६) प्रहर्ष (जीने पर हर्ष)
(२३) उन्मत्तता (पागल या नशे में उन्मत्त ;
(२४) सलिलाप्लवनं (जल में तैरना)
(२५) विरोध (वैर)
(२६) स्वेच्छा (अपनी इच्छानुसार कार्य करना)
(२७) स्नानं (स्नान करना)
(२८) क्षुद्भयं (क्षुधा का भय)

चन्द्र वेला जानने की रीति

जन्म नक्षत्र की भुक्त घड़ीपल के पल बना कर १०० का भाग दो तो लब्ध चन्द्र वेला होगी, यदि शेष बचे तो आगे का लेना ।

उदाहरण—जन्म नक्षत्र धनिष्ठा क भुक्त घड़ी ३७. ३ घ. प. = २२२३ पल

```
पल
१००) २२२३ ( २२ लब्धि
     २००       गत
     ----
     २२३
     २००
     ----
      २३
```

यहाँ लब्धि २२ गत हो गई शेष बचा है तो १ जोड़ कर आगे का २३ वां लिया । २३ = उन्मत्तता वेला प्राप्त हुई ।

यहां बताये चन्द्र अवस्था, क्रिया, वेला का विचार जन्म, प्रश्न, मुहूर्त आदि में कर उनका फल विचारना । इनमें नाम सदृश फल होना है ।

●

अध्याय ६

ग्रह कारक

प्राणी मात्र का सुख दुःख जिन ग्रहों के प्रभावपर निर्भर है उनके कार्य में कर्ता ग्रह को कारक कहते हैं ।

प्रत्येक ग्रह का कार्य भिन्न है और ये घटनाओं पर अपना प्रभाव डालते हैं । इस कारण बताया गया है कि कौन ग्रह किस कार्य का कारक है । अर्थात् किस ग्रह से क्या बातें विचारनी चाहिये यह आगे दिया है उन बातों के कारक या अधिकारी प्रभाव कर्ता वे ग्रह हैं जो आगे बताये हैं ।

ग्रह के कारक

१ सूर्य---पिता का सुख, शरीर का सुख, पूर्व पुन्याई, मन की रुचि, राज्य कार्य, बड़े भाई का सुख, वैद्यक विद्या, समीप या प्रयाण (यात्रा), श्रीमान और अधिकारी लोगों से मित्रता, राज विद्या, राज से मान सम्मान, श्रेष्ठ अधिकारी सत्ताधारी योग, राज्याधिकारी वर्ग, लोक मान्यता, प्रसिद्ध नेता, राष्ट्र के कर्णधार, बड़ी संस्थाओं के कर्णधार, जागीरदार, दीवान आदि व राज सेवा, उपजीविका वीरता, योग्यता, तत्त्व ज्ञान, मन की शुद्धि, आत्मा, फजूल खर्ची, स्वर्ण, अश्व, पद्मराग मणि; सिंहासन, रक्त ताम्र, व्रण, भेषज, शौर्य, नेत्र चिकित्सा, प्रताप, बड़प्पन, धैर्य, सामर्थ्य, (शक्ति) साहस, युद्ध में जीत, शिव ईश्वर के सम्बन्ध का कोई कार्य, जंगल वा पहाड़ो स्थान का जाना, होम यज्ञ कार्य में प्रवृत्त होना, देव स्थान, स्वभाव, निरोगता, लक्ष्मी का विचार, ज्ञान का उदय, भाग्य, राजनैतिक शक्ति, पिता और पिता की ओर के सम्बन्धी, क्षत्रिय, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, मूंगा, माणिक्य, गोधूम, गुड़, केशर, कमल, नवीन गुड, सवत्सा गौ आदि का।

२ चन्द्र—मातृ सुख, सौन्दर्य सुख, यश प्राप्ति, ज्योतिष विद्या की रुचि, दूर का प्रयास, जल प्रयास, मन बुद्धि, स्वास्थ्य, राज ऐश्वर्य, सम्पत्ति, सुगन्धित वस्तुओं का शौक, वाहन सुख, द्रव्य सञ्चय, धंधे में उन्नति, प्रजा पक्ष, जनता, सामान्य लोग, जनता की वृत्ति, प्रजा पक्षीय नेताओं के मन को स्थिति तथा स्त्री मन, आनन्द, चाँदी, चेहरा, कीर्ति, दूध, यात्रा, वस्त्र, जल, कृषि, धन, गौ, शस्य, लज्जा, मणि, शङ्ख, विनय, पुष्प रस वर्ग, धातृ, दीप्ति, सन्तोष, समुद्र स्नान, सफेद चादर, छत्र, सुव्यजन (पंखा) कोमलता, मुक्ता प्राप्ति, कांसा, सख भोजन, प्रसन्नता, राजा, दया, हर्ष, हृदय की चेतना शक्ति, बुद्धि, राज कृपा, ब्राह्मण, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत चावल, श्वेत पुष्प, घृत, दही, कपूर, बैल, गेहूँ, लवण, वंश पात्र आदि का कारक है।

३ मङ्गल—साहस, लघुभ्राता सुख, पराक्रम, धैर्य, अभिमान, शत्रु, कीर्ति, बुद्धि के आचार कार्य, युद्ध, नेतृत्व, धनुर्विद्या, रोग धातु, विद्या, रक्त विकार, शस्त्र-क्रिया (आपरेशन), युद्ध, लड़ाई; अग्नि, प्रलय, अपनी सामर्थ्य का घमंड सेनापति, सेना, दुर्ग, क्रूरता, विजय, भूमि, भाई, क्रोध पित्तविकार ऋण, सोना, कृषि, शिव भक्ति, नुकताचीनी करना, काम, प्रलाप, उत्साह, परस्त्रीरत, पाप, घाव, हाकिमी, युवराजत्व, उष्ण, बाहुबल, ताम्र, मूंगा, माणिक्य, दण्ड नीति, गृह, विष, कीट, वंश, खैर, गन्धक, सिंह, व्याघ्र, बल, विद्वेष, पकाने के बर्तन, अग्नि, अस्त्र, चोर, शत्रु, मिथ्या-भाषण, मानसिक विचारों की उच्चता, पुत्र, खड्ग, फर्सा, कुल्हाड़ा, तोप, धनुष, बाण,

आदि, गम्भीरता, कलंक, स्वातंत्र्य, आचरण के गुण, रक्त के सम्बन्ध के बन्धु, बहिन (पितृ वंश के), उद्योग, शाला, पुत्र, मसूर, गोधूम, केसर, कस्तूरी, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन, रक्त वृष, गुड़।

४ बुध—युवराज, कौमार, बंधु सौख्य, बुद्धि, विद्या वक्तृत्व शक्ति, प्रवीणता, मित्र सुख, मनः शान्ति, सम्पत्ति, स्वतन्त्र धन्धा, वाणी, लेखन कला, वेदान्त विषय की रुचि, कला कौशल, ज्योतिष विद्या की रुचि तथा ज्ञान, गणित शास्त्र, विद्वत्ता, विवेक, लेखक, ग्रन्थकार, वक्ता, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक पर-राष्ट्रीय मन्त्री, कारभारी, व्यापारी, सराफी का धन्धा, ज्योतिषी, वकीली आदि धन्धा, तत्व ज्ञान, विष्णु की भक्ति, व्यापार, वाक्य चातुर्य, उपासना आदि में पटुता, धर्म, चाची, मामा, मौसी, मामी, बान्धव, सुहृद्, बहन की सन्तान, युवराज सन्तान, शान्ति, नम्रता, हास्य, नृत्य, वैद्य, भय, दासी, मुद्ग मैथुन, तरुण, शस्य, यजन, कोलाहल, माध्यस्थ्य, चित्र क्रीड़ा, सौभाग्य, शुक्र, पिंजरा, ताम्बूल, पलास, कांसा, सुवर्ण, सीप, गजदन्त, मूंगा, घृत, पन्ना, पुष्प, रत्न, कर्पूर, फल, शस्त्र, षटरस, सत्य भाषण, क्रीड़ास्थल।

५ गुरु—सन्तति, सम्पत्ति, ज्ञान, अधिकार, ऐश्वर्य, राजसन्मान, लोक संग्रह, वेदान्त ज्ञान, धन्धा, उपजीविका, मल्ल विद्या, तीव्र बुद्धि, ग्रहण शक्ति, धर्माभिमानी, ग्रन्थकर्ता, स्थिर वृत्ति, राज कारण, परोपकारी, धार्मिककृत्य, वाहन आदि सुख, धर्म गुरु, संस्कृत विद्या, व्याकरण, शास्त्र, अधिकारी, न्यायाधीश, वकील, श्रीमान, व्यापारी, जागीरदार, शान्तिप्रिय, संस्थापक आदि। स्वास्थ्य, धन, कोमल वाणी, पुत्र, घरेलू आनन्द, मन्त्रीपना, सचिव, उचित व्यय आत्मज्ञान, स्वतन्त्रता, दान, हृदय, कविता, वेद वेदान्त, ब्राह्मण्य, भक्ति, श्रद्धा, मेधा, प्रणय, सदाचार, वैष्णव, गौरव, प्रज्ञता, प्रवचन, पाण्डित्य, विद्या, सुख, आचार्य, माहात्म्य, सदगति, देव ब्राह्मण भक्ति, बलि, तप, जितेन्द्रिय, कोष स्थल, पति का सुख, सन्मान, धन, जीवन का उपाय, कर्म योग, सिंहासन, शारीरिक विकास, पितामह, देव ब्राह्मण, गृह, पीत वस्त्र, पीत धान्य, पीत पुरुष, पीत फल, सुवर्ण, पुखराज, मधु, हल्दी, लवण, गज, छत्र, सत्कर्म, अध्ययन, मित्र, कार्तस्वर, शिष्टत्व, जयपत्र, कीर्ति, श्रुति शास्त्र और स्मृति ज्ञान, सर्व उन्नति, वाहन, अनेक रंग के वस्त्र।

६ शुक्र—स्त्री, व प्रापञ्चिक सुख, कवित्व, गायन, वादन कला में निपुण, प्राचीन संस्कृति का अभिमानी, सौन्दर्य के प्रति प्रीति, विषय सुख इन्द्रिय आनन्द, सुगन्ध पदार्थ का प्रेमी, कला—कौशलप्रिय, द्रव्य लाभ, स्वतन्त्र धन्धा, राजाश्रय, राजकार्यभार का ज्ञान, अलङ्कार, यान्त्रिक विद्या, अष्ट सिद्धि, साहित्य ज्ञान, व्यापार, होरा, मोती, कपास का व्यापारी, शेयर, ऐश आरामी, देश की सम्पत्ति, विवाह, कीर्ति, सुन्दरता, ललित कला, गाना

नाचना, कविता आदि, आनन्द, बुद्धि, तमाशा, व्यभिचार, कुटुम्ब, नेत्र, प्रकाश, शयन गृह, वाहन, देवी की भक्ति, हाथी घोड़े आदि वाहन सुख, मन्त्रित्व, सहनशील, स्त्री संभोग, स्वतः के द्रव्य के सम्बन्ध का ज्ञान, काम-क्रीड़ा, मन्दिर, उन्नति, विलास, सुन्दर भाषण, उत्सव, दासत्व, रस, अद्भुत (रस), सुन्दरता, राजा, राजपुरुष, वशीकरण, गरुड़ विद्या, इन्द्रजाल, चातुरी, भाग्य, आचरण, सुख, गौरव, विभव, श्वेत तण्डुल, श्वेत चन्दन, चित्र वस्त्र, श्वेत पुष्प, घृत, दधि, सुवर्ण, चाँदी, हीरा, सुगन्ध द्रव्य, गौ, भूमि, कौमार, यौवन, अवस्था और रस, सृष्टि, सौभाग्य, सुभोजन, शैया सुख, विनोद पुष्प गन्ध, मन्द, भोगस्थान, वेश्या रति, स्त्री जन के शरीर, श्वेत वस्त्र ।

७ शनि—आयुष्य, दुष्ट बुद्धि, लोभ, मोह, घात कर्म, रोगी, सरकारी आरोप, राज दण्ड, कैद, उद्योग हानि, दासत्व, नीच विद्या, मजदूर वर्ग, खेती, खनिज, नौकर वर्ग, पराधीनता, विश्वासघात, कामगार, प्रेस का स्वामी, अशिक्षित, कायदा-कानून में प्रवीण, नपुंसकता, मिथ्यापन, पाप, नरक, शोक, अंग्रेजी शिक्षा, जुआ खेलना, मदिरापान, मृत्यु दण्ड, जीवन, पेट, लिवर, वातव्याधि, कष्ट, क्लेश, पराभव, भय, पतित होना, दुःख अपमान, रोग, अपवाद, कुलीपना, अशौच, निन्दा, आपत्ति, बुढ़ापा, स्थिरता, नीच जन आश्रय, तन्द्रा, ऋण, महिष, लोहा, नील वस्त्र कम्बल, गर्दभ, पादुका, दलिया, कृष्ण अन्न, माषान्न, तिल तेल, कृष्ण वस्त्र, कुल्थी, कृष्णधेनु, कृष्णपुष्प, जूता, कस्तूरी, गज, नीलम, आयुर्दाय, जीवन का उपाय, सर्व राज्य, आयुध, शूद्र, भृत्य, (सेवक) विघ्न, शल्य, शूल रोग, बात, कृषि साधन, मृत्यु का कारण, ठगी, मोह, लोभ, पर पीड़ा, निष्ठुरता, दरिद्रता, दुर्दशा और पुत्र ।

८ राहु— आजा का सुख, गारुड़ी विद्या, आकस्मिक घटना, भूत बाधा, अरुचि, राज छत्र, सम्मान, अंग्रेजी शिक्षा, बगीचा, राज्य, नाना, म्लेच्छ प्रताप, धूप, श्मशान, तस्कर भेद, विधवा, व्यौहार, शिला, बाल्मीक, चर्म, ज्वर, अपस्मार, विशूचिका, संकोच, देशाटन, बैराग्य, बलात्कार, भ्रष्टता, घोर युद्ध, पितामहँ, यश, प्रतिष्ठा, छत्र का कारण, अन्धेरापन, विष, सर्प, यात्राकाल, द्यूत, माषान्न, सप्त धान्य, गोपद, नील वस्त्र, खड्ग, तिल तैल, लोह, कम्बल, घोड़ा, कृष्ण पुष्प, ताम्र पात्र, महारण्य, महोत्पात, सुख कष्ट आदि ।

९ केतु— तन्त्र, मन्त्र, गुप्त विद्या, आजी का सुख, एक तन्त्री विचार, मन्त्र सिद्धि के प्रयत्न, युक्ति, गंगा स्नान, मन्त्र शास्त्र, आत्मज्ञान, विष, ज्वर, शंका, तत्वज्ञान की ओर मन का झुकाव, वैराग्य, तीर्थाटन, भिक्षाटन, क्षोभ,

कलह, विप्लव, शिव की भक्ति, गुहा प्रवेश, चिंताऐं; स्त्री, माता पिता सास स्वसुर, मातामह (नाना) मातामही, व्रण, चर्म रोग, शूल, क्षुधा, पीड़ा, कम्बल, कस्तूरी, वैडूर्य, शस्त्र, माषान्न, कृष्ण पुष्प, तिल तैल, रक्त, सुवर्ण, लोहा, सप्त धान्य।

अन्य प्रकार के कारक

(१) ग्रह एक दूसरे के सम्बन्ध से जन्म समय में कारक होते है। जैसे-गुरु जन्म में सूर्य से नवम हो तो यह कारक होता है। शनि जन्म में चन्द्र से ११ वां हो तो यह कारक होता है इत्यादि प्रकार से। शनि मंगल का कारक तब होता है जब वह जन्म समय जहां है वहाँ से ११ वें स्थान में हो इत्यादि। एक दूसरे ग्रह के शुभ सम्बन्ध से कारक कहलाते हैं।

(२) अन्य प्रकार–ग्रह जन्म समय उच्च में, मूल त्रिकोण में हो और केन्द्र में हो तो वह दूसरे ग्रह का कारक होता है। जो जन्म से दूसरे केन्द्र में होकर उच्च मूल त्रिकोण या स्वगृही हो तो इसी प्रकार दूसरे कारक ग्रह होते है। अर्थात् ग्रह की लाभ जनक स्थिति जब हो तब उपरोक्त बताये। स्वगृही, उच्च या मूल त्रिकोण में ग्रह हो तो ये सब आपस में कारक होते हैं। इनमें कर्म स्थान स्थित ऐसा ग्रह विशेष कारक होता है। जैसे लग्न में कर्क राशि में चन्द्र हो, मंगल, शनि, सूर्य तथा गुरु अपने उच्च के हों ये परस्पर कारक कहलायेंगे। लग्न में स्थित ग्रह का चतुर्थ दशम स्थान में स्थित ग्रह पूर्ण कारक होता है।

कारक विचार पर कुछ उदाहरण

अधिकार के सम्बन्ध में विचार करना है तो कुण्डली में रवि की स्थिति पर पहिले विचार करना क्योंकि इसकी शुभाशुभ स्थिति पर दशमेश और लग्नेश का फल निर्भर है।

स्त्री और प्रापञ्चिक सुख का निर्णय करते समय केवल सप्तम के ग्रह तथा सप्तमेश की स्थिति से ही नहीं विचारना किन्तु शुक्र जो इस सुख का दाता है इससे भी प्रथम विचार करना। विद्या सन्तति सम्पत्ति का निर्णय करते समय केवल लग्नेश, धनेश, पञ्चमेश, नवमेश, और लाभेश की ही स्थिति नहीं विचारना किन्तु गुरु की शुभाशुभ स्थिति पर विचार कर इन स्थानों पर उनकी दृष्टि का विचार अवश्य करना चाहिये तब पूर्ण फल प्रगट होगा।

आर्थिक सुख का विचार करते समय धनेश और लाभेश के साथ शुक्र चन्द्र का भी विचार अवश्य करना चाहियें।

दुःख, संकट, रोग, आयुष्य आदि का शनि कारक है। इन विषयों का विचार करते समय शनि के उच्च नीच राशि और अंश शुभ ग्रहों की दृष्टि और युति का भी विचार करना चाहिये तभी ठीक फल मिलेगा।

आशय यह है कि किसी भी बात के विचारने में केवल उस भाव के ग्रह या उस भावेश के ही विचार करने से काम न चलेगा। किन्तु उस विषय के कारक ग्रह का भी विचार कर कारक ग्रह का शुभाशुभत्व, ग्रहों की युति और दृष्टि एवं स्थिति आदि पर भी विचार करना आवश्यक है। इस कारण किसी फल के निर्णय करते समय उसके कारक ग्रह की स्थिति आदि पर पूरा विचार करना आवश्यक है तभी ठीक फल निकलता है।

सुख दुःख के कारक ग्रह पर विचार

मन में सुख की इच्छा स्वाभाविक होती है परन्तु प्रत्येक प्रकार के सुख की परिभाषा भिन्न है। यहाँ बताया है कि किस ग्रह से किस प्रकार के सुख का विचार करना।

गुरु शुक्र से—धन की स्थिति एवं द्रव्य लाभ का विचार।
शुक्र से—स्त्री व प्रापञ्चिक सुख।
रवि चन्द्र से—शारीरिक एवं मानसिक सुख।
गुरु से—बुद्धि विद्या एवं सन्तति सुख।
रवि गुरु शनि से—नौकरी अधिकार राज सम्मान।
शुक्र बुध से—व्यौपार या लेनदेन के धन्धे साहूकारी आदि।
मंगल से—साहस, पराक्रम या यश का विचार करना।

सुख का विचार करने के प्रथम कुंडली में इन ग्रहों का शुभाशुभ स्थिति आदि का विचार करना चाहिये। इनकी शुभाशुभ स्थिति के अनुसार प्रत्येक को हानि या लाभ होना निश्चित है। इन ग्रहों का फल कुण्डली में इन ग्रहों के उच्च, नोच राशि, अंश, गुण; दृष्टि आदि के अनुसार मिलता है। इस कारक फल का विचार करते समय कारक का अवश्य विचार करना।

भावेश और कारक में अन्तर है

भावेश और किसी विषय का कारक भिन्न है। जैसे चौथा भाव कृषि माता भूमि शिक्षा वाहन और पशु का है तो उस भाव के स्वामी से विचारने के अतिरिक्त उस भाव के कारक से भी फल विचारना। इन भिन्न २ विषयों के कारक ग्रह पृथक् २ हैं परन्तु उस भाव का भावेश एक ही है। जिस विषय को विचारना है उसका कारक कौन ग्रह है उससे फल निकालना।

जैसे पाँचवां घर सन्तान और मन्त्रणा शक्ति का है। मानो मेष लग्न है तो पञ्चमेश सूर्य होगा जो सिंह का स्वामी है। परन्तु पुत्र कारक गुरु है ये दोनों अर्थात सूर्य और गुरु शक्तिशाली हों तो अच्छी और उन्नति शील सन्तान होती है। परन्तु मन्त्रणा शक्ति का कारक शुक्र है इससे शुक्र से भी विचार करने से मन्त्रणा शक्ति का फल प्रकट होगा।

कारक ग्रह का शुभाशुभत्व

कारक ग्रह—पाप युक्त हो तो पराया धन-स्त्री भोगने वाला, नीरस वचन, कपट बुद्धि, आलसी ।

पापदृष्ट—दुष्ट, रोगी, अपने धर्म गुण यश से हीन ।

शुभ युक्त—शत्रु को जीतने वाला, धर्मवान, बुद्धिमान हो ।

शुभ दृष्ट—पुत्र धन से युक्त, भोगी, सुन्दर, राज पूज्य पराभव से रहित ।

आत्म कारक आदि का विचार

१ आत्मकारक ग्रह—सूर्य से शनि तक सात ग्रहों में से जिस ग्रह के स्पष्ट करने पर अंश अधिक हों वह ग्रह आत्म कारक होता है । कोई इसमें राहु ग्रह भी ले लेते हैं अर्थात् ८ ग्रह लेकर अंश का विचार करतै हैं ।

यदि ग्रहों के अंश बराबर हों कला विकला में जो अधिक हो उसे लेना । यदि अंश कला विकला भी समान हो तो उनमें जो सबसे बली हो वही आत्मकारक होगा ।

आत्म कारक ग्रह नीच राशि या पाप योग से बंधन का स्वामी होता है अर्थात प्रतिकूल होकर पाप कर्म में प्रवृत्ति के द्वारा संसार रूपी बंधन देता है । उच्चादि राशि और शुभ योग से मोक्ष का स्वामी होता है अर्थात् अनुकूल होकर ज्ञान धर्म स्थान वासादि द्वारा मोक्ष कर्ता होता है ।

२ अमात्य कारक ग्रह—(मन्त्री कारक ग्रह)—आत्म कारक ग्रह से कुछ न्यून अंश वाला ग्रह होता है ।

जिस कुंडली में अमात्य कारक ग्रह नीचादि पाप ग्रह से युक्त हो उसको राजा मन्त्री, स्वामी आदि श्रेष्ठ लोगों से दुःख देता है उच्चादि शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजा आदि जनों से सुख देता है ।

३ भ्रातृ कारक ग्रह—आमात्य कारक ग्रह से कुछ अल्प अंशादि से कम ग्रह होता है । इससे भ्रातृ सम्बन्धी दुःख सुख का विचार होता है ।

४ मातृ कारक—भ्रातृ कारक ग्रह से कुछ अल्प अंशादि वाला ग्रह । इससे मातृ सम्बन्धी दुःख सुख का विचार होता है । इससे कोई पुत्र का भी विचार करते हैं ।

५ पितृ कारक—मातृ कारक से कुछ अल्प अंश वाला ग्रह । इससे पिता सम्बन्धी दुःख सुख का विचार होता है ।

६ पुत्र कारक ग्रह—पितृ कारक से अल्प अंश वाला ग्रह । इससे पुत्र सम्बन्धी दुःख सुख का विचार होता है ।

७ ज्ञाति कारक ग्रह—पुत्र कारक से अल्प अंश वाला ग्रह । इससे ज्ञाति सम्बन्धी दुःख सुख का विचार होता है ।

८ दारा कारक ग्रह—जाति कारक से अल्प अंश वाला ग्रह । इससे दारा (स्त्री) संबंघी दुःख सुख का विचार होता है। सम, स्थिर, पद, उपपद आदि कारक से भी स्त्री सम्बन्धी विचार होता है । उदाहरण स्वरूप ७ ग्रह स्पष्ट में आत्म कारक आदि नीचे वताया जाता है (इसमें राशि का कोई विचार नहीं होता केवल अंशादि का विचार करना) ।

आत्म कारक आदि का उदाहरण

	रा ० ' "	
ग्रह स्पष्ट	१ सूर्य ११-५-४०-४५	५ गुरु ९-१३-३४-९
	२ चन्द्र १०-२-७-५५	६ शुक्र ११-१३-३३-४८
	३ मंगल ७-१२-२९-४४	७ शनि ४-८-३९-४८
	४ बध १०-२०-५६-५६	८ राहु २-८-६-३२

कारक	१ आत्म कारक	२ अमात्य कारक	३ भ्रातृ कारक	४ मातृ कारक	५ पितृ कारक	६ पुत्र कारक	७ ज्ञाति कारक
ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल	शनि	सूर्य	चंद्र
	० ' "	० ' "	० ' "	० ' "	० ' "	० ' "	० ' "
अंशादि	३०-५६-५६	१३-३४-९	१३-३३-४८	१२-२९-४४	८-३९-४८	५-४०-४५	२-७-५५

यदि राहु को लेकर ८ ग्रह का विचार किया जाय तो इस प्रकार होता है

कारक	१ आत्म कारक	२ अमात्य कारक	३ भ्रातृ कारक	४ मातृ कारक
ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल
	० ' "	० ' "	० ' "	० "
अंशादि	२०-५६-५६	१३-३४-९	१३-३३-४८	१२-२९-४४
	५ पितृ कारक	६ पुत्र कारक	७ ज्ञाति कारक	८ दारा कारक
	शनि	राहु	सूर्य	चंद्र
	० ' "	० ' "	० ' "	० ' "
	८-३९-४८	८-६-३२	५-४०-४५	२-७-५५

स्थिर कारक विचार

(१) पितृ कारक—सूर्य और शुक्र में जो बली हो इन दोनों से माता और पिता के
(२) मातृ कारक—चन्द्र और शुक्र ,, ,, शुभाशुभ का विचार होता है।

चर कारक

(१) अमात्य—आत्म कारक से न्यून अंश वाला
(२) भ्रातृ—उससे न्यून अंश वाला
(३) पिता — ,, ,,
(४) पुत्र — ,, ,,
(५) ज्ञाति— ,, ,,
(६) स्त्री — ,, ,,

इस विचार में भी भिन्न २ मत हैं :—किसो का मत है कि जब किसी ग्रह में अंशादि तुल्य हो जावें तब राहु से भी कारक का विचार करे कोई कहते हैं कि राहु सहित ८ कारक पृथक् विचारना।

कुछ का मत है कि मातृ कारक और पुत्र कारक एक ही है अर्थात् दोनों को एक मानते हैं। यह भी बताया है कि जब दो ग्रहों के अंश तुल्य हों तो एक ही कारक समझना उसके अग्रिम कारक का लोप हो जाता है। उस हालत में स्थिर कारक के द्वारा ही शुभाशुभ का विचार करना।

राहु के अंश का विचार

राहु का कारक विचारने में उसके स्पष्ट अंश को ३०° में से घटा कर शेष अंशों को लेकर कारक विचारना क्यों कि वह सदा उल्टा चलता है। जैसे राहु स्पष्ट रा अं ' " है इस के अंश ३० से घटाये तो शेष २१–५३–२८ रहे। यहां २१° राहु लेना बताया है।
२–८–६–३२

    ३०–·–०
   –८–६–३२
शेष २१–५३–२८

यहां इस प्रकार विचारने से राहु के अंश सब में अधिक जाने से उपरोक्त ग्रहों में वह आत्म कारक हो जाता है।

आत्म कारक ग्रह—सब से अधिक अंश वाला ग्रह।
अन्त्य कारक ग्रह—सब से अल्प अंश वाला ग्रह।
मध्य कारक उपखेट—मध्य के अंश वाला ग्रह।

मन्त्री आदि अधिकारी राजा की आज्ञा के बिना किसी का कुछ नहीं कर सकते इसी प्रकार आत्म कारक के विरुद्ध कोई भी ग्रह अपने फल देने में समर्थ नहीं होते। जैसे आत्म कारक ग्रह अशुभ हो तो अन्य शुभ ग्रह भी अपने फल को नहीं दे सकते। यदि आत्म कारक शुभ हो तो ग्रह अपने अशुभ फल को नहीं देते।

कारकांश विचार

आत्म कारक ग्रह के नवांश को कारकांश कहते हैं।

आत्म कारक ग्रह के नवांश पर से ग्रहों का फल

१ मेष नवांश—घर में चूहे और बिल्ली का उपद्रव, पाप दृष्टि हो तो विशेष कर, शुभ दृष्टि हो तो थोड़ा उपद्रव हो।

२ वृष ,,—चतुष्पद पशुओं से सुख हो।

३ मिथुन ,,—दाद खुजली आदि रोग हो, कुष्ठादि रोग हो।

४ कर्क ,,—जल में डूबने का भय हो, कुष्ठादि रोग हो।

५ सिंह ,,—बाघ आदि हिंसक जन्तुओं या कुक्कुर आदि जीवों से भय हो।

६ कन्या ,,—खुजली स्थूलता और अग्नि भय।

७ तुला ,,—वणिज से लाभ, व्यापारी और वस्त्र आदि बनाने वाला।

८ वृश्चिक ,,—जल सर्प आदि जन्तुओं से भय, माता के स्तन में पीड़ा या दूध की हानि।

९ धन ,,—उच्च स्थान से या वाहन से क्रमशः (कहीं २ रुक २ कर) पतन हो।

१० मकर ,,—जल जन्तु और पक्षी आदि से लाभ। तथा ग्रह दुःख दायक हो, कंडु रोग, दुष्ट, ग्रन्थि, गंड माला आदि का भय।

११ कुंभ ,,—तालाब, कूप जलाशय आदि बनावे।

१२ मीन ,,—धर्म में नित्यता और मोक्ष पावे।

१ शुभ राशि या शुभ नवांश में आत्मकारक हो तो धनी होता है।

२ केन्द्र में अंश हो शुभ हो तो राजा होता है। शुभ राशि के अंश में शुभ ग्रह हो स्वउच्च, स्वगृही आदि हो, पाप योग रहित हो तब उपरोक्त फल होता है।

इनमें शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो अशुभ फल नाश होता है। पाप दृष्टि हो तो शुभ फल का अभाव रहता है। अर्थात्—

१ यदि आत्म कारक के नवांश में या लग्न के नवांश में शुभ ग्रह हो और केवल शुभ दृष्टि हो तो निश्चय रूप से राजा हो।

२ आत्म कारक के नवांश से केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रह हो पाप योग या दृष्टि न हो तो धनी और विद्वान हो। मिश्र ग्रह (शुभ और अशुभ ग्रह) से मिश्र फल हो।

३ पूर्वोक्त उपग्रह (मध्यमांश) यदि अपने गृह या शुभ राशि में हो उस पर पाप योग या दृष्टि न हो तो मुक्ति का भागी हो।

४ आत्म कारक यदि चन्द्र मंगल या शुक्र के षड्वर्ग में हो तो परस्त्रीगामी हो उपरोक्त स्थिति से अन्यथा हो तो फल भी अन्यथा होगा।

कारकांश में ग्रह स्थिति का फल

आत्म कारक नवांश में यदि—

१ सूर्य हो—राज्य कार्य कर्ता हो।

२ पूर्ण चन्द्र हो—भोगी, विद्या से जीविका चलावे ।

३ शुक्र की दृष्टि या योग हो—विशेष योगी और विद्वान हो ।

४ मंगल हो—माला रखने वाला, अग्नि से जीविका करने वाला तथा दसों का जानने वाला ।

५ बली बुध हो—कला और शिल्प विद्या में निपुण, व्यापार दक्ष, कपड़ा बिनने वाला या चित्रकार या व्यापारी ।

६ गुरु हो—सुकर्म करने वाला ज्ञानी, वेदज्ञ ।

७ शुक्र हो—शताब्द जीवी (१०० वर्ष की आयु), कामी, राज्य कर्म करने वाला ।

८ शनि हो—प्रसिद्ध कर्म से जीविका करने वाला ।

९ राहु हो—धनुर्धारी, चोर, विष विद्या जानने वाला, (विष वैद्य) लोह यन्त्रादि बनाने वाला ।

१० केतु—हाथियों आदि का व्यापार करने वाला, चोर ।

विशेष विचार

(१) कारकांश राहु से युक्त—सूर्य हो तो सर्प से भय या मृत्यु, शुभग्रह की दृष्टि हो तो सर्प से मरण नहीं होता, या भय टल जाता है । पाप दृष्टि हो तो सर्प से मृत्यु हो । इसमें शुभग्रह का षड़वर्ग हो या शुभ सम्बन्ध हो तो विषवैद्य हो । इसमें केवल मंगल की दृष्टि हो तो अपने या दूसरे का घर जलाने वाला । मंगल की दृष्टि होकर शुक्र भी देखे तो गृह दाह करने वाला नहीं होता है । मंगल की दृष्टि होकर बुध भी देखे तो गृह दाह करने वाला नहीं होता है । मंगल की दृष्टि होकर गुरु भी देखे तो स्वगृह और समीप के ग्रह जलावें । पाप ग्रह का षड़वर्ग हो और गुरु की दृष्टि हो तो समीप के ग्रह सहित इष्ट घर जलावे ।

(२) यदि कारकांश में गुलिक हो तो दूसरों को विष देवे या स्वयं विष खाकर मरे । यदि कारकांश में गुलिक हो चन्द्र की दृष्टि हो—उसका धन चोर ले जाय या स्वयं चोरी करने वाला हो ।
उसमें केवल बुध की दृष्टि हो तो बड़े अंड कोष वाला हो ।

(३) केतु युक्त कारकांश पर पाप ग्रह की दृष्टि—कर्ण रोग हो या कर्णच्छेद हो ।
उसपर शुक्र की दृष्टि—जातक दीक्षित हो, यज्ञादि में मन्त्र ग्रहण करे ।
शनि और बुध की दृष्टि हो—निर्बल हो ।
बुध और शुक्र की दृष्टि हो—दासी पुत्र या पुनर्भू का पुत्र हो या एक ही बात को फिर २ बोलने वाला हो ।
शनि और अन्य ग्रह की दृष्टि हो तो तपस्वी या भृत्य हो ।

केवल शनि की दृष्टि—संन्यासी का भेष धारण करने वाला नकली संन्यासी हो।
रवि और शुक्र की दृष्टि—राजभृत्य हो।
ये फल आत्मकारकांश के कहे हैं आगे कारकांश के अन्यस्थान का फल कहा है।

२ कारकांश से द्वितीय स्थान का फल

(१) द्वितीय भाव में शुक्र और मंगल का षड्वर्ग हो—पर स्त्री गामी।
उसपर शुक्र और मंगल की दृष्टि हो—आमरण परपत्नी के रहे।
उसमें केतु हो तो यह फल नहीं होता।
द्वितीय में केतु हो उस पर पाप दृष्टि हो—तो शीघ्र बोलने में असमर्थ हो।
(२) द्वितीय में गुरु—स्त्री में आसक्त।
राहु—स्त्री के हेतु धन का नाश।

३ तृतीय स्थान फल

(१) कारकांश से तृतीय स्थान में पाप ग्रह हो—शूर प्रतापी।
तृतीय स्थान में शुभ ग्रह हो—कायर (डरपोक)।

४ चतुर्थ स्थान फल

कारकांश से चतुर्थ में—चन्द्रमा या शुक्र का योग या दृष्टि हो—पक्का मकान हो।
उच्च का ग्रह हो—प्रासाद (पक्काघर)।
शनि या राहु का योग या दृष्टि हो—शिला गृह।
मंगल केतु का योग या दृष्टि—ईंट का घर।
गुरु ,, ,, लकड़ी का घर।
रवि ,, ,, तृण का घर।
कारकांश से चतुर्थ में चन्द्रमा—आवरण रहित स्थान में हो गृहिणी (स्त्री) के साथ प्रथम समागम हो अर्थात् बिना परदे की जगह में स्त्रीसंयोग करने वाला।
कारकांश से चतुर्थ में केतु हो—घड़ी बनाने वाला।
बुध हो—परमहंस या दंडी।
राहु —लोह यन्त्र बनाने वाला।
सूर्य —खड्ग धारण करने वाला।
मंगल —भाला रखने वाला।

५ पञ्चम स्थान फल

कारकांश से पञ्चम में मङ्गल और राहु हो तो—क्षय रोग की सम्भावना।
उस पर चन्द्र की दृष्टि हो तो—निश्चय क्षय रोग हो।
मङ्गल की दृष्टि—पिड़की आदि रोग का भय।
केतु ,, —संग्रहणी या जलोदर।
राहु सहित गुलिक हो—क्षुद्र विष का भय हो।

पञ्चम में बुध हो तो–परमहंस या दंडी हो।

रवि ,, –खड्गधारी हो।

मङ्गल ,, –माला रखने वाला।

शनि ,, –धनुष रखने वाला या धनुर्विद्या में निपुण।

राहु ,, –लोह यन्त्री (लोह यन्त्र बनाने वाला)

केतु ,, –घटी यन्त्र बनाने वाला या घड़ी साज।

शुक्र ,, –कवि वक्ता और काव्य को जानने वाला हो।

कारकांश और उसके पञ्चम स्थान का विशेष फल

आत्मकारक या उससे पञ्चम में चन्द्रमा और गुरु हो–ग्रन्थ बनाने वाला (ग्रंथकार) और सब विद्या जानने वाला हो।

चन्द्र और शुक्र हो–उपयोग की अपेक्षा कुछ-न्यून ग्रन्थ बनाने वाला।

चन्द्र और बुध हो–और भी न्यून ग्रन्थकार।

केवल गुरु हो–सर्वज्ञ और ग्रन्थकार वेदान्त, शब्दज्ञ तथापि अधिक वक्ता नहीं होता।

मङ्गल हो–नैयायिक।

बुध हो –मीमांसक।

शनि हो –सभा में मूक (सभा जड़)

सूर्य हो –गीताज्ञ, वेदान्त और ज्ञान जानने वाला।

चन्द्रमा हो–सांख्य योग साहित्य और सङ्गीत जानने वाला।

राहु या केतु–गणितज्ञ।

इन दोनों में गुरु का सम्बन्ध हो तो उसे सम्प्रदाय की सिद्धि होती है।

कोई कारकांश से द्वितीय स्थान से भी इन फलों को कहते हैं।

कुछ आचार्य तृतीय स्थान से भी इसी प्रकार का फल विचारते हैं।

६ कारकांश से षष्ठ स्थान का फल

कारकांश से षष्ठ स्थान में पाप ग्रह हो–कृषि कर्मा हो।

शुभ ग्रह ,,–आलसी।

तृतीय स्थान से भी यही फल विचारना।

७ सप्तम स्थान का फल

कारकांश से सप्तम में चन्द्र व गुरु का योग या दृष्टि हो–अति सुन्दरी स्त्री हो।

सूर्य व गुरु का योग या दृष्टि हो–अपने कुल में रक्षिता और विकलांगी।

शनि ,, ,, –आयु से अधिक, तपस्विनी या रोग-युक्ता स्त्री हो।

राहु ,, ,, –विधवा स्त्री का संग होता है। अर्थात् विधवा से सम्बन्ध हो।

मङ्गल का योग या दृष्टि हो — कुल लक्षण से युक्त अङ्ग वाली स्त्री।
बुध ,, ,, — गीत वाद्य आदि कलाओं में निपुण।

८ कारकांश से अष्टम स्थान का फल

कारकांश से अष्टम में शुभ ग्रह हो और अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो—दीर्घायु।
,, ,, पाप दृष्टि या युक्त — अल्पायु।
,, ,, दोनो से युक्त या दृष्ट — मध्यमायु।

९ कारकांश से नवम स्थान का फल

कारकांश से नवम में शुभ ग्रह की दृष्टि या योग—सत्यवक्ता और धर्मात्मा, गुरु भक्त
पाप ग्रह की दृष्टि या योग—बाल्यावस्था में अपने धर्म में रहता है। वृद्धावस्था में धर्म का त्याग कर मिथ्यावादी होता है। असत्य भाषी, गुरु का अभक्त।

शनि या राहु से युक्त या दृष्ट—गुरु द्रोही बाल काल में शास्त्र से विमुख हो।
सूर्य या गुरु ,, ,, गुरु द्रोही, गुरु का वाक्य न माने अविश्वास करे।
शुक्र या मङ्गल का षड़वर्ग हो या युक्त दृष्टि हो—दूसरे की स्त्री को मारने वाला या परस्त्री रत।

शुक्र या मङ्गल का षड़वर्ग और मङ्गल और शुक्र की दृष्टि हो—मरण पर्यन्त परस्त्रीरत।

बुध, चन्द्र, युत या दृष्ट-पर स्त्री सम्बन्ध में बन्धन प्राप्त हो।
केवल गुरु की योग दृष्टि—अपनी स्त्री में आसक्त, स्त्रीलोलुप विषयी।
केतु ,, मरने तक परस्त्री में आसक्त नहीं रहता परन्तु परस्त्री रत होता है।
राहु ,, पर स्त्री के लिये धन का नाश।
नवम में गुरु हो—विशेष कर खेती करने वाला हो।

१० दशम स्थान का फल

कारकांश से दशम में शुभ ग्रह या योग या दृष्टि—स्थिर धन वाला, गम्भीर, बली, बुद्धिमान।
पाप ग्रह का योग या दृष्टि—व्यापार में हानि, पिता के सुख से हीन।
बुध शुक्र दोनों का ,, ,, व्यापार में अनन्त लाभ बड़े २ कार्य करने वाला।
सूर्य चन्द्र से और गुरु से युत या दृष्ट—राजा हो।
बुध का योग का दृष्टि—प्रसिद्ध कर्म से जीविका करने वाला।
बुध से शुभ ग्रह की दृष्टि—पुरोहित या विवाद का निर्णय करने वाला हो।
रवि हो और केवल गुरु से दृष्ट हो—गौरक्षक।

११ एकादश लाभ स्थान का फल

कारकांश से लाभ स्थान शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो–भाई के सुख से से युत, सब कार्यों में लाभ।

,, पाप ,, ,, अनीति से लाभ करने वाला, विख्यात, पराक्रमी।

१२ द्वादश (व्यय) स्थान का फल

आत्मकारक नवांश से व्यय भाव शुभ ग्रह युत या दृष्ट–सत कार्य में व्यय करने वाला और अन्त में सदगति पाने वाला स्वर्ग आदि शुभ लोक प्राप्ति हो।

पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो–असत कार्य में खर्च। अन्त अधोगति पावे।

आत्मकारक नवांश से व्यय भाव में कोई ग्रह न हो तो–शुभ फल।

यदि स्वोच्च या स्वगृही शुभ ग्रह हो–स्वर्ग आदि लोक की प्राप्ति।

शुभ ग्रह से युत दृष्ट केतु हो–मोक्ष।

शुभ ग्रह से युत या दृष्ट मेष या धनु में केतु हो–सायुज्य मुक्ति।

केवल केतु हो या पाप ग्रह से युत दृष्ट–शुभ लोक की प्राप्ति नहीं होती।

व्यय में केतु सूर्य युक्त हो-शंकर में भक्ति।

,, चन्द्र ,, –गौरी में।

,, शुक्र ,, –लक्ष्मी में।

,, मङ्गल ,, –कार्तिकेय में।

,, बुध शनि युक्त–विष्णु में।

,, गुरु ,, –शिव में

राहु से युत–तामसी दुर्गा में और क्षुद्र देवता में भक्ति।

केतु – गणेश और कार्तिकेय में।

पापराशि में शनि शुक्र हो–क्षुद्र देवताओं का भक्त हो।

मीन या कर्क राशि हो उसमें शुभ ग्रह हो–स्वर्ग आदि लोक प्राप्ति, सायुज्य मुक्ति मिले।

,, ,, पाप ,, –नरक आदि की प्राप्ति हो।

जिस प्रकार आत्मकारकांश के व्यय स्थान से देवताओं की भक्ति का विचार होता है, उसी प्रकार आत्म कारकांश से षष्ठ स्थान से भी विचारना अर्थात् षष्ट में सूर्य केतु –शिव में भक्ति।

,, चन्द्र ,, –गौरी में।

,, शुक्र ,, –लक्ष्मी में।

,, मंगल ,, –कार्तिकेय में।

,, बुध और शनि –बिष्णु में।

,, गुरु ,, –पार्वती सहित शिव में।

षष्ठ में राहु केतु —भूतादिक देवताओं में।
,, केतु —गणेश और कार्तिकेय में।
"पापराशि में शनि व शुक्र हों–क्षुद्र देवताओं में भक्ति।

कारकांश का और भी विशेष फल

१ कारकांश से ५—९ भाव में २ पाप ग्रह हों = मन्त्र तन्त्र जानने वाला।
उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो = यह निग्रह (दंड) करने वाला हो।
उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो = अनुग्रह करने वाला हो।
२ आत्मकारक नवांश में चन्द्र हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो–रस (स्वर्णभस्म, मकरध्वज आदि) का बनाने वाला और जानने वाला।
उस पर बुध की दृष्टि–उत्तम वैद्य हो।
३ आत्मकारकांश से चतुर्थ में चन्द्र हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो–श्वेत कुष्ठी या पाण्डुरोग।
चन्द्र हो मङ्गल को दृष्टि–रक्त पित्त से महारोगी।
चन्द्र हो केतु की दृष्टि हो–नील कुष्ठी।
४ आत्मकारकांश से ४ या ५ भाव में मङ्गल या राहु हो-क्षय रोगी।
इस राहु पर चन्द्र की दृष्टि हो–निश्चय क्षय रोगी।
आत्मकारकांश से ४-५ भाव में केवल मंगल हो–पिड़की (फोड़ा आदि रोग) होती है।
केवल केतु हो–संग्रहणी या जलोदर रोग।
केवल राहु और गुलिक हो–विष वैद्य या विष से पीड़ित, या बिच्छू आदि क्षुद्र विष से पीड़ित।
५ आत्मकारकांश से २ या ३ भाव में केतु–बोलने में अक्षम।
पाप दृष्टि हो–विशेष कर बोलने में अक्षम।

कारक योग विचार

(१) कारक–लग्न गत ग्रह का दशम चतुर्थ वाला ग्रह यदि उच्चादि राशियों में हो तो कारक कहलाता है।

(२) स्वराशि का मूल त्रिकोण या उच्चगत ग्रह केन्द्र में हो और वैसा ही स्वगृहादि स्थिति वाला ग्रह उससे दशम में हो तो कारक योग होता है। दशम स्थान में वह तात्कालिक मित्र होता है इससे दशम का महत्त्व है। अर्थात् जन्म समय मित्र की राशि, स्वराशि, उच्च या मूल त्रिकोण के ग्रह होकर केन्द्र में हों तो यह कारक (सुख योगोत्पादक) होते हैं। जैसे १,७,४,१० भाव में अपने उच्चादि शुभ स्थान में ग्रह हो तो योग कारक होते हैं। उनमें दशम में विशेष योग कारक होते हैं। यहाँ लग्न से केन्द्र होना योग का हेतु नहीं है। यदि ग्रह अपने २ उच्चादि में होकर किसी भाव से भी परस्पर केन्द्र में हों तो भी योग्य कारक

समझे जाते हैं। जिनके जन्म समय इस प्रकार योग कारक हो वह नीच बंश में भी उत्पन्न होकर राजा के समान धनवान और सुखी होता है। राज बंशोपन्न तो निश्चय हो राजा होता है। इसी प्रकार कारक की संख्या और कुल के अनुसार अनुपात से फल समझना। जैसे लग्न कर्क में चन्द्र गुरु हो, चतुर्थ में शनि हो, सप्तम मंगल; दशम सूर्य हो तो ये सब ग्रह केन्द्र में उच्चवर्गी हैं अतः ये परस्पर कारक हुए। ऐसे ही स्वगृही, मूल विशेषण वाले ग्रह भी कारक होते हैं।
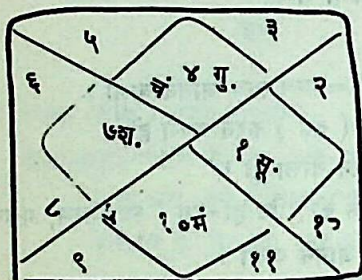
या चन्द्र स्वगृही होकर या उच्च का होकर लग्न में हो और मंगल सूर्य शनि गुरु ये चारों ग्रह भी केन्द्र में हों तब सब ग्रह कारक संज्ञक कहलायेंगे।

या जन्म में सिंह या मेष का सूर्य लग्न में हो तो सूर्य शनि गुरु ये परस्पर कारक संज्ञक हुए।

(३) कुंडली में शुभ ग्रह लग्न में हो और कोई भी ग्रह दशम या चतुर्थ में बैठा हो तो वह कारक संज्ञक हो जाता है वह कारक ग्रह अपने उच्च राशि मूल त्रिकोण या स्व राशि में हो तो फलदायक होता है।

(४) उच्च, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, व स्वनवांश में बैठा ग्रह दशम भाव में हो तो विशेष कारक होता है। इनमें भी विशेष कर सूर्य को यह कहा जाता है।

(५) एक ग्रह दूसरे ग्रह से अच्छा सम्बन्ध होने से जन्म समय कारक होते हैं जैसे गुरु जन्म में सूर्य से नवम है तो यह कारक हो गया।

शनि जन्म में चन्द्र से ग्यारहवां है तो यह कारक हो गया।

शनि मंगल का कारक तब हो जाता है जब वह जन्म समय जहां है वहां से ग्यारहवें में हो। ऐसी स्थिति लाभजनक होती है।

(६) जो ग्रह दशम स्थान में है वह उस ग्रह से दशम स्थान में जो ग्रह है उस ग्रह में विशेष कर कारक हो जाता है।

(७) लग्न को छोड़कर परस्पर केन्द्र में स्वक्षेत्र या उच्च या मूल त्रिकोण में हो तो कारक होता है।

(८) जो ग्रह लग्न में हो यह ग्रह लग्न में दशम में या चतुर्थ में हो तो कारक होता है।

(९) लग्न में जो ग्रह हो उससे सर्व ग्रह कारक होता है परन्तु शेष स्थान में लग्न में का ग्रह कारक नहीं होता।

(१०) कारक होने का केन्द्र कारण है ऐसा नहीं है परन्तु जो ग्रह स्वक्षेत्री उच्च या मूल त्रिकोण में है व उससे दशम में जो ग्रह है वह ऊपर बताये अधिकार का या मित्र क्षेत्र का है तो कारक होता है। यदि जन्म काल में उपरोक्त अधिकार को

छोड़ कर केवल दशम स्थान में हो तो कारक नहीं होता क्योंकि उसे स्वक्षेत्र आदि का अधिकार नहीं है।

(११) कारक ग्रह यात्रा व युद्ध के समय अवश्य देखना चाहिये क्योंकि उस समय (१) नीच का ग्रह (२) पराजित ग्रह (३) या लग्नेश का शत्रु ग्रह हो तो इन ३ ग्रहों की दशा में गमन नहीं करना।

(१२) जन्म लग्नेश की दशा या उसके मित्र की दशा में या चन्द्र से दूसरे स्थान में शुभ ग्रह है तो उसकी दशा में या जिस राशि का कारक है वहाँ उस राशि में चन्द्र है तो युद्ध या यात्रा करने में सौख्य, धन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अन्य की दशा में कष्ट होता है।

(१३) सूर्य से दूसरे स्थान में शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र में से कोई हो तो जन्म सफल जानो।

(१४) चार केन्द्र में से एकाध केन्द्र में ग्रह न हो तब भी जन्म सफल जानो।

(१५) जन्मकाल में कारक ग्रह जिसे है उसका जन्म शुभ होता है जितना विशेष गुण हो उतना शुभ होता है।

(१६) यदि जन्म या यात्रा काल में शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो वह जन्म या यात्रा शुभ नहीं समझना।

(१७) जिसके वेशि संज्ञक स्थान में (सूर्य से दूसरे स्थान में) शुभ ग्रह हो और लग्न और जन्म राशि अपने नवांश में स्थित हो और समस्त केन्द्र (चारों केन्द्र) शुभ ग्रहों से युक्त हों उसके घर में लक्ष्मी वास करती हैं अर्थात् कई पीढ़ियों तक द्रव्य का अभाव नहीं रहता।

इस योग में जन्म लग्न ही केवल अपने नवांश में हो तो भी उपरोक्त फल होगा।

(१८) जिसका गुरु, लग्नेश और जन्म राशि का स्वामी केन्द्र में बैठे हों उसका भाग्य मध्यावस्था में (जवानी में) उदय होता है अर्थात् सुख हो, भाग्य का विस्तार हो।

(१९) उपरोक्त गुरु, लग्नेश और जन्म राशीश यदि शीर्षोदय राशि में हों तो गुरु से बालपने में, लग्नेश से मध्यावस्था में, और चन्द्र राशीश से वृद्धावस्था में भाग्योदय होगा अर्थात् इनमें से जो भी शीर्षोदय राशि में हो उस अवस्था में भाग्योदय होगा।

(२०) जिसकी कुण्डली में वर्गोत्तम लग्न, नवांश हो या चन्द्र वर्गोत्तम नवांश में हो उसका सारा जन्म शुभ होता है।

(२१) जिसके चारों केन्द्र ग्रह रहित नही हैं उसका सारा जन्म शुभ होता है। इसमें शुभ ग्रह होने से विशेष शुभ होता है।

(२२) जिसके ग्यारहवें या दशवें या लग्न ही के सम्मुख ग्रह हों तो कारक योग होता है। नीच वंश में उत्पन्न भी उच्चपद पाता है।

(२३) शुभ वर्गोत्तम में जिसका जन्म हो और बारहवें स्थान में शुभ ग्रह और अशून्य कारक ग्रह हो तो—

सूर्य केन्द्र में होने से–राजा का सेवक।

चन्द्रमा केन्द्र में होने से–वैश्य वृत्ति करने वाला।

मंगल केन्द्र में होने से–वीर और शस्त्र की वृत्ति करने वाला।

बुध केन्द्र में होने से-पढ़ने वाला।

गुरु केन्द्र में होने से–अपने अनुष्ठान में रत अच्छी बुद्धि वाला।

शुक्र केन्द्र में होने से–विद्या और द्रव्य युक्त।

शनि केन्द्र में होने से–नीच की सेवा करने वाला।

पद लग्न या आरूढ़ लग्न निकालना

जिस कुण्डली में पद लग्न जानना हो तो देखो लग्न स्वामी कौन है और कहाँ पर हैं। लग्न से जितने स्थान पर लग्नेश होगा उस स्थान अर्थात् लग्नेश के स्थान से उतना ही स्थान और गिनने पर जो राशि वहाँ ही वही पदलग्न होगी। जैसे यहाँ पर लग्नेश बुध ९ स्थान कुंभ में है। तो बुध से ९ स्थान आगे और गिना तो तुला आया। लग्न से पांचवें घर में है तो यहाँ तुला पदलग्न हुआ।
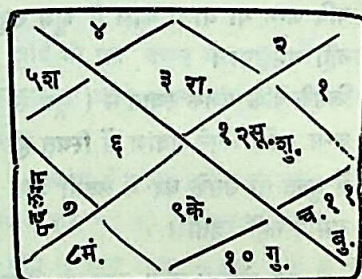
यदि लग्नेश सप्तममें हो तो सप्तम स्थान से गिनने पर वही सप्तम स्थान आया जहाँ लग्न है। ऐसी परिस्थिति में लग्न की राशि ही पदलग्न हुआ। जैमिनि ने पदलग्न का प्रयोग किया है इसे ही लग्नारूढ़ कहा है। इसे पद कहते हैं। पद शब्द से लग्नपद ग्रहण करना।

इसमें स्वस्थान या सप्तम राशि पर पद नही होता। यह भी कहा हैं कि जब सप्तम स्थान पर पद होता हो तो चतुर्थ भाव को पद समझना।

यदि स्वस्थान पर पद होता हो तो दशम भाव को पद समझना।

जैसे जब चतुर्थ में लग्नेश हो तो उससे चतुर्थ गिनने पर सप्तम भाव में पद आता है ऐसी परिस्थिति में चतुर्थ भाव को ही पद समझना।

जब लग्नेश सप्तम में हो तो उससे सप्तम स्थान गिनने पर वह लग्न स्थान आ जाता है तब दशम भाव को पद समझना बताया गया है।

यह पदलग्न महत्त्व का होता है। इसको भी लग्न मानकर फल या विचार होता है।

भाव पद

लग्न का पद सदृश प्रत्येक भाव का पद निकाल कर उससे फल का विचार होता है। उस भाव का स्वामी जितने स्थान पर है उस भावेश के स्थान से उतना ही आगे

गिनने पर भाव का पद निकलता है। जैसे दूसरे स्थान मे कर्क है जिसका स्वामी चन्द्र कर्क राशि से अष्टम स्थान कुम्भ में है तो उससे आगे ८ स्थान और गिना तो सिंह राशि आई यहां शनि है यह दूसरे भाव का पद हुआ। इसो प्रकार प्रत्येक भाव का पद समझना।

ग्रहों का पद

उपरोक्त प्रकार से ग्रहों का भी पद निकलता है। जिस ग्रह से उसका गृह (स्वस्थान) जितने घर आगे हो उससे उतना ही आगे गिनने पर उस ग्रह का आरूढ़ (पद) समझना। जिस ग्रह की २ राशि हों उसकी प्रबल राशि तक गिनती कर पद समझ कर उसके अनुसार फल विचारना।

उपपद विचार

(१) सम राशि का लग्न हो उससे जो द्वितीय भाव है उसका जो पद है उसको उपपद कहते हैं। इस की गणना उत्क्रम गणना से होती है।

(२) विषम राशि का लग्न हो तो उस से बारहवें भाव का जो पद है उस को उपपद कहते हैं। इस की गिनती क्रम गणना से होती है।

जैसे यहां धन लग्न है यह विषम है इस कारण यहां क्रम गणना से लग्न के पृष्ठवर्ती बारहवें भाव में वृश्चिक राशि हुई जिस का स्वामी मंगल, वृश्चिक से ११ वें स्थान कन्या में है। इस कारण कन्या से ११ स्थान आगे गिना तो ११ वें स्थान पर कर्क आया यही इस कुण्डली में उपपद हुआ। उपपद को उपारूढ़ और गौण पद भी कहते हैं।

लग्न पद का फल

पद लग्न से ११वें स्थान में ग्रह के अनुसार फल

(१) पाप ग्रह या शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो—सुखी और धनवान हो।

(२) शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो—नीति मार्ग से धन का लाभ हो।

(३) पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो—कुत्सित वृत्ति से धन लाभ हो।

(४) दोनों शुभ और पाप ग्रह युत या दृष्ट हो—तो सुमार्ग और कुमार्ग से धन लाभ करे।

(५) उच्च स्वराशि मूल त्रिकोण आदि राशि में ग्रह हों—विशेष कर लाभ हो।

२-(१) यदि लग्नारूढ़ स्थान से ११वें स्थान का ग्रह देखे और द्वादश स्थान को न देखे तो अति धनवान हो।

(२) यदि लग्नारूढ़ स्थान से ११ वें स्थान को बहुत ग्रह देखें—उससे भी अधिक धनी हो। राजा के समान हो बिना विघ्न बाधा के सदा धन लाभ हो। जितने अधिक ग्रहों का योग हो उतना ही अधिक लाभ हो।

(३) यदि लग्नारूढ़ द्रष्टा ग्रह उच्च का हो—धनवान हो।

(४) यदि लग्नारूढ़ द्रष्टा ग्रह पर अर्गलाओं का संयोग हो—उससे भी अधिक धनी हो।

(५) अर्गला शुभ ग्रह का हो—उस से भी अधिक धनी हो।

(६) यदि ११ वां स्थान अपने शुभ स्वामी से दृष्ट हो उसमें भी यदि लग्न, भाग्य आदि शुभ स्थान गत शुभ स्वामी से दृष्ट हो तो इस प्रकार के योगों में उत्तरोत्तर भाग्य की प्रबलता समझना।

यदि पद से १२ स्थान में भी ग्रह का योग हो तो उक्त योगों में ग्रहों के अनुसार फल में न्यूनता आ जाती है। इस कारण ग्रह का योग या दृष्टि बारहवें स्थान में न हो तब उपरोक्त उत्तरोत्तर धनवान होने का फल होता है।

लग्न पद से १२ वें स्थान का फल

(१) शुभ ग्रह या पाप ग्रह से, युक्त या दृष्ट हो—अधिक खर्च।

(२) पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो—पाप कर्म में खर्च।

(३) शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो—शुभ कार्य में खर्च।

(४) शुभ और पाप क्षेत्रों से युत या दृष्ट—अच्छे और बुरे दोनों कार्य में खर्च।

(५) द्वादश में राहु या केतु हो तो—राजा द्वारा खर्च।

(६) द्वादश स्थान में शुक्र सूर्य या राहु हो—राजाओं के द्वारा धन व्यय।

(७) द्वादश स्थान में बुध और शुभ ग्रह से दृष्ट हो—गोतियों द्वारा व्यय।

(८) पाप ग्रह से दृष्ट हो—कलह में व्यय हो।

(९) द्वादश स्थान में गुरु और अन्य ग्रह से दृष्ट हो—अपने हाथ से ही धन का व्यय हो।

(१०) द्वादश स्थान में शनि या मंगल या दोनों हों, अन्य ग्रह से दृष्ट हो—कलह में व्यय हो।

(११) द्वादश स्थान में चन्द्र की दृष्टि हो—राजाओं द्वारा व्यय।

(१२) द्वादश स्थान में बुध हो—दामाद द्वारा कलह से व्यय।

(१३) द्वादश स्थान में गुरु हो—अपने हाथ द्वारा व्यय।

(१४) द्वादश स्थान में मंगल और शनि हो—भाई के द्वारा व्यय।

लग्न पद से १२ स्थान में जिन ग्रहों द्वारा व्यय होना बताया है उसी प्रकार के ग्रहों के लाभ स्थान में होने से उसी प्रकार धन का लाभ समझना।

लग्न पद से सप्तम स्थान का फल

पद से सप्तम में राहु या केतु हो—उदर रोगी।

केतु यदि पाप दृष्ट हो—साहसी, श्वेत केश आदि अवस्था के चिह्न से युक्त।

पद से सप्तम में गुरु शुक्र चन्द्र में कोई हो या तीनों हों–श्रीमान् हो।
पद से सप्तम में अपने उच्चगत शुभ या पाप ग्रह हों–कीर्ति युक्त धनवान।

लग्न पद से द्वितीय स्थान का फल

लग्न पद से द्वितीय में केतु हो–थोड़ी अवस्था में बुढ़ापे का चिह्न।
लग्न पद से द्वितीय में चन्द्र गुरु शुक्र–श्रीमान हो।
लग्न पद से द्वितीय में शुभग्रह या पाप ग्रह उच्च का हो तो श्रीमान हो।
लग्न पद से द्वितीय में केवल शुभग्रह–सार्वभौम राजा या सर्वज्ञ हो।
शुक्र हो तो–कवि और वक्ता हो।

जिस प्रकार पद से सप्तम में जिस ग्रह का जैसा फल कहा है पद से द्वितीय स्थान से भी उसी प्रकार फल का विचार करना।

आरूढ़ स्थान से द्वितीय में–पाप ग्रह हो शुभ ग्रह न हों–चोर हो।
बुध हो–सर्व विद्याओं का अधीश।
गुरु–सर्वज्ञ।
शुक्र–कवि या वक्ता।

अब शेष फल जिस प्रकार आत्म कारक के नवांश में कहा है उसी प्रकार बहुधा लग्नारूढ़ स्थान से भी समझना। अर्थात् जिस २ प्रकार आत्म कारक के नवांश से जिन २ स्थान में जो २ फल कहा है उसी प्रकार लग्नारूढ़ स्थान से उसी २ स्थान में उसी २ फल का विचार करना।

(बाधक के अभाव रहने पर स्वांश वश फल समझना अन्यथा नहीं)

जिस प्रकार पद या लग्न से भावों के फल कहे हैं उसी प्रकार आत्म कारकांश से भी समझना।

लग्न पद से विशेष विचार

(१) केन्द्र या कोण में सप्तम भाव का पद हो या दोनों पद सबल ग्रहों से युक्त हों तो लक्ष्मीवान हो, विख्यात हो।
(२) पद से ६-८-१२ भाव में सप्तम का पद हो–जातक निर्धन हो।
(३) केन्द्र त्रिकोण और षष्ठ रहित उपपद में सप्तम भाव का पद–स्त्री पुरुष दोनों में मित्रता हो।
पद या उससे ३,४,५,७,९,१०,११ में बलवान ग्रह हो–स्त्री पुरुष दोनों में मित्रता हो।
(४) पद से सप्तम का पद केन्द्र या त्रिकोण में हो तो–स्त्री पुरुष दोनों में मित्रता हो।
(५) यदि पद से ६-८-१० भाव में सप्तम का पद पड़े–स्त्री पुरुष दोनों में शत्रुता हो।
(६) उसी प्रकार पद से पुत्रादि के पद भी केन्द्र में पड़ें तो पुत्र आदि से मैत्री समझना। यदि त्रिक मे पड़े तो शत्रुता समझना। इसी प्रकार भाई–पिता–पुत्र और अन्य से भी मैत्री या वैर का विचार करना।

(७) तथा जिस भाव का पद लग्न पद से त्रिकोण में पड़े उस भाव की वृद्धि और त्रिक (६-८-१२) में पड़े तो उस भाव की हानि समझना ।

(८) लग्न और सप्तम के पद दोनों परस्पर केन्द्र त्रिकोण या ३-११ में पड़े तो जातक पृथ्वीपति राजा होता है ।

(९) इसी प्रकार दोनों पदों को देख कर धन आदि भावों के भी फल विचारना ।

लग्नपद और अर्गला

(१) लग्नपद और उसके सप्तम में अप्रतिबन्ध अर्गला पड़े—भाग्यवान हो ।

(२) प्रतिबन्ध रहित अर्गला में शुभ ग्रह या पाप ग्रह हो और वही ग्रह आरूढ़ लग्न को देखें—भाग्य को प्रबलता हो ।

(३) प्रतिबन्ध सहित अर्गला में ग्रह हो तो—भाग्य योग को प्रबलता नहीं होती ।

(४) लग्नपद और उससे सप्तम इन स्थानों में शुभ ग्रह कृत अर्गला प्रतिबन्धक युक्त भी हो—धन वृद्धि हो ।

(५) इससे सिद्ध होता है कि लग्नपद और उस से सप्तम में पाप ग्रह कृत अर्गला हो तो—सामान्य रूप से धन हो ।

उपपद का फल विचार

(१) उपपद पाप ग्रह की राशि में हो या पाप युक्त या दृष्ट हो—प्रव्राजक संन्यासी हो या स्त्री नाश या स्त्री रहित ।

(२) उपपद से शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो—स्त्री पुत्रादि का पूर्ण सुख हो, उपरोक्त फल नहीं होता ।

(३) उपपद में नीच का ग्रह या नीच नवांश स्थिति या पाप ग्रह हो—स्त्री का नाश ।

(४) उपपद में उच्चस्थ ग्रह हो या उच्च ग्रह की दृष्टि हो—रूप गुणों से युक्त हो, बहुत पत्नी हों ।

(५) उपपद मिथुन राशि हो—बहुत स्त्री हों ।

(६) उपपद अपने स्वामी से युक्त हो या अपनी दूसरी राशि में हो—वृद्धावस्था में स्त्री—नाश ।

(७) उपपद उच्च में स्थित हो—श्रेष्ठ कुल से स्त्री लाभ ।

(८) उपपद नीच में स्थित हो—नीच कुल से स्त्री लाभ ।

(९) उपपद शुभ ग्रह के षड्वर्ग, योग दृष्टि आदि से सम्बन्ध हो—सुन्दर स्त्री ।

(१०) उपपद और उस का स्वामी शनि और राहु से युक्त दृष्ट हो—लोक अपवाद से स्त्री का त्याग या नाश ।

(११) उपपद और उस का स्वामी शुक्र, केतु से युक्त दृष्ट हो—स्त्री को रक्त प्रदर ।

(१२) उपपद और उस का स्वामी बुध, केतु से युक्त दृष्ट हो—अस्थिश्राव रोग युक्त, मोटी स्त्री प्राप्त हो ।

(१३) उपपद और उसका स्वामी शनि, सूर्य, राहु से युक्त दृष्ट हो—अस्थि ज्वर वाली ।

(१४) उपपद और उसका स्वामी ३,६ राशि में हो शनि मंगल से राहु युक्त दृष्ट हो–नासिका रोग वाली स्त्री प्राप्त ।

(१५) उपपद और उसका स्वामी १-८ राशि में हो शनि मंगल या राहु से युक्त दृष्ट हो–नाड़िका निःसरण वाली स्त्री प्राप्त हो ।

(१६) उपपद और उस का स्वामी गुरु राहु से युक्त दृष्ट हो–दन्त रोग वाली स्त्री हो ।

(१७) उपपद और उस का स्वामी १०-११ राशि में शनि राहु से युक्त दृष्ट हो–लंगड़ी-वात रोग वाली स्त्री प्राप्त हो ।

(१८) उपपद शुक्र ग्रह से युक्त दृष्ट हो–पूर्वोक्त अशुभ फल नहीं होता ।

(१९) उपपद से सप्तम भाव, सप्तम भाव के नवांश और दोनों के स्वामी पर भी विचार कर पूर्वोक्त रीति से फल कहना ।

यहां–सूर्य अपने उच्च में स्व राशि में या मित्र गृही हो तो पाप ग्रह नहीं समझना किन्तु नीच या शत्रु गृह में हो तो पाप ग्रह ही समझना ।

(१) उपपद से द्वितीय स्थान में शुभ ग्रह की राशि या शुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो–स्त्री सुख हो ।

(२) उपपद से द्वितीय स्थान में मिथुन राशि हो–बहुत पत्नी हों ।

(३) उपपद या द्वितीय में उस का स्वामी हो या अन्यत्र भी उसका स्वामी स्वराशि में हो–तो वृद्धावस्था में उस के सामने ही स्त्री का मरण हो ।

(५) उपपद स्वामी या स्थिर स्त्री कारक ग्रह उच्च में हो–उत्तम कुल से स्त्री लाभ । नीच में हो–नीच कुल से स्त्री लाभ ।

(६) उपपद या उससे द्वितीय में शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो–उस की स्त्री सौंदर्य और गुणों से युक्त हो

(७) उपपद या उससे द्वितीय में शनि राहु हो–अपवाद से स्त्री त्याग या स्त्री मरण ।

(८) उपपद या उस से द्वितीय में केतु और शुक्र हो–स्त्री को रक्त प्रदर हो ।

(९) उपपद या उस से द्वितीय में बुध केतु हो–अस्थि श्राव ।

(१०) उपपद या उससे द्वितीय में शनि राहु सूर्य–अस्थि ज्वर ।

(११) उपपद या उस से द्वितीय में बुध राहु–स्थूलांगी ।

(१२) उपपद से द्वितीय स्थान में ३-६ राशि में शनि मंगल हो–नासिका रोग युक्त ।

(१३) उपपद से द्वितीय स्थान में १-८ ,, ,, ,, ,,

(१४) उपपद से द्वितीय स्थान में गुरु शनि हो–कर्ण रोग और नेत्र रोग ।

(१५) यदि उसमें स्व ग्रह छोड़ कर भिन्न राशि का मंगल बुध हो या राहु बुध हो–स्त्री दन्त रोग से युक्त ।

(१६) उपपद या द्वितीय में १०-११ राशि में शनि राहु–स्त्री पंगु, वात रोग पीड़ित ।

(१७) इन योगों में यदि शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो–तो अशुभ फल नहीं होता ।

(१८) इस प्रकार लग्न से, पद से, तथा उपपद से जो सप्तम राशि हो उससे, उसके स्वामी से, उस के नवांश से भी फल निकालना ।

(१) उपरोक्त स्थान में मंगल शनि हो—पुत्र हीन व दत्तक पुत्र वाला या सहोदर के के पुत्र से पुत्रवान ।

" " विषम राशि—बहुत पुत्र ।

" " सम —अल्प पुत्र ।

" " नवम भाव में शनि, चन्द्र, बुध—सन्तान हीन ।

रवि गुरु राहु—बहुत पुत्र । चन्द्र—एक पुत्र । मिश्र ग्रह हो—विलम्ब से पुत्र ।

किन्तु सूर्य गुरु राहु के योग से जो पुत्र हो—वह बली प्रतापी होता है ।

उपपद में सिंह राशि हो—थोड़े पुत्र वाला ।

उपपद में कन्या राशि हो—अधिक कन्या ।

इसी प्रकार पञ्चम के नवांश से भी विचारना और जैसे लग्न कुंडली से विचार कहा गया है वैसे ही त्रिशांश कुंडली में भी योगों से विचार करना ।

पद से ३ में शनि हो तो—छोटे भाई का मरण ।

११ में शनि हो तो—बड़े भाई का मरण ।

शुक्र हो तो—मातृ गर्भ का नाश करता है ।

लग्न या पद या उस से ८ में शुक्र का योग या दृष्टि हो—तो भी उपरोक्त फल ।

यदि ३-११ भाव में चन्द्र बुध गुरु हो—बहुत बड़े प्रतापी सहोदर होते हैं ।

यदि ३-११ भाव में केवल शनि हो—तो स्वयं शेष और सहोदर भाई नष्ट ।

केतु हो तो—अधिक बहिन होती हैं ।

पद से ६ भाव में पाप ग्रह हो उस पर शुभग्रह की योग दृष्टि न हो—चोर हो । ७ या १० स्थान में यदि राहु का योग या दृष्टि हो तो—ज्ञानी और भाग्यवान हो पद में बुध हो सब देशों का अधिप । गुरु—सर्वज्ञ । शुक्र—कवि और वक्ता ।

उपपद या पद से द्वितीय स्थान में शुभग्रह—सब द्रव्यों से युक्त और बुद्धिमान ।

उपपद से द्वितीयेश यदि द्वितीय भाव में पाप युक्त हो—चोर हो ।

उपारूढ़ से जो सप्तमेश हो उससे द्वितीय स्थान में राहु हो—दंतुल (दंष्ट्रावान) हो ।

केतु हो—बोलने में अक्षम । शनि हो—कुरूप हो । मिश्र ग्रह से—मिश्र फल ।

अर्गला विचार

जिससे ग्रह का या भाव का फल निश्चित होता है उसे अर्गला कहते हैं ।

(१) किसी राशि के ग्रह से ४-२-११ स्थान में ग्रह हो तो अर्गला होता है ।

(२) इन तीनों अर्गलास्थानों के १०,१२, ३ बाधक स्थान हैं अतः इनमें ग्रह हो तो उक्त अर्गला का प्रतिबन्ध होता है अर्थात् ४ का प्रतिबन्ध १०,२ का १२ और ११ का प्रतिबन्ध ३ होता है ।

(३) अर्गला कारक ग्रह से बाधक स्थानस्थ ग्रह निर्बल हो या—न्यून संख्या में हो तो बाधक नहीं होता । अर्थात् अर्गला ३ हो और बाधक २ ग्रह हों तो बाधक नहीं होता है । या अर्गला कारक २ हो बाधक १ हो तो भी बाधक नहीं होता । बाधक निर्बल हो तो भी बाधा नहीं होती ।

(४) यदि तृतीय भाव में ३ या ३ से अधिक पाप ग्रह हों तो बाधा रहित विपरीत अर्गला होता है। उस अर्गला से भी फल की पुष्टता होती है।

(५) उसी प्रकार ५ स्थान अर्गला का ९ स्थान बाधक है।

(६) राहु केतु की सदा वक्रगति होने से अर्गला और बाधक स्थान विपरीत होते हैं, अर्थात् ९ अर्गला स्थान ५ बाधक स्थान है।

(७) एक ग्रह से कनिष्ठ, २ से मध्यम, ३ या अधिक ग्रह से अर्गला श्रेष्ठ होती हैं।

(८) इस प्रकार राशि और ग्रह दोनों से अर्गला बिचारना। निर्बाध अर्गला ही फल-प्रद है सबाधा अर्गला निष्फल होती है। जो राशि या ग्रह सार्गल हो उसकी दशा में ही उसका फल पुष्ट होता है।

(९) अर्गला और उसका प्रतिवन्ध भी राशि के प्रथम चरण में स्थित ग्रह को चतुर्थ चरण स्थित ग्रह से और द्वितीय चरण स्थित ग्रह को तृतीय चरणस्थ ग्रह से ही परस्पर स्पष्ट मान से समझना।

(१०) ग्रह स्पष्ट करके अर्गला और उसका बाधक स्थान का इस प्रकार विचार करे।

अर्गला स्थान	४	२	११	५	३	राहु केतु का अर्गला स्थान	९
बाधक स्थान	१०	१२	३	९	०	राहु केतु का बाधक स्थान	५

(११) अग्रह राशि = जिस राशि में ग्रह नहीं हैं। सग्रह राशि = जिस राशि में ग्रह हो।

(१२) अग्रह राशि से सग्रह राशि बली होती हैं। यदि विचारणीय दोनों राशि सग्रह हों तो जिसमें ज्यादा ग्रह हों वह बली होती है। यदि दोनों में ग्रह की समता हो तो क्रमशः चर से स्थिर, स्थिर से द्विस्वभाव राशि बलवान होती है।

अर्गला फल

(१) वद लग्न और उससे सप्तम भाव में निर्बाध अर्गला हो—विख्यात, भाग्यवान हो।

(२) जिस ग्रह से अर्गला स्थान में पाप या शुभ ग्रह हो तथा उसका बाधक ग्रह न हो तो उस ग्रह की लग्न पर दृष्टि होने से भी—भाग्यवान, निरोग, सुखी हो।

(३) इसी प्रकार धन आदि भाघों में अर्गला से धन आदि सुख होता है।

(४) ६-८-१२ भाव का अर्गला अशुभ है शेष भाव में शुभ है।

(५) इन में भी १-५-९ भाव की अर्गला अति शुभ है।

(६) शुभ फल देने वाले ग्रह सार्गल हों तो शुभ हैं।

(७) अर्गला धन भाव में—धन धान्य युक्त हो। पाप फल देने वाले ग्रह सार्गल हों तो अशुभ होते हैं।

तृतीय भाव—में—सहोदर आदि को सुख।	अष्टम भाव में—कष्ट हो।
चतुर्थ भाव में—घर पशु बन्धु कुल युक्त।	नवम भाव में—भाग्योदय हो।
पञ्चम भाव में—पुत्र पौत्रादि युक्त।	दशम भाव में—राज्य सम्मान।
छठे भाव में—रिपु भय हो।	एकादश भाव में—लाभ हो।
सप्तम भाव में—धन स्त्री सुख बहुत हो।	द्वादश भाव में—अधिक खर्च हो।

शुभ अर्गला—बहुत सुख। पाप अर्गला—अल्पम।

लग्न कुण्डली
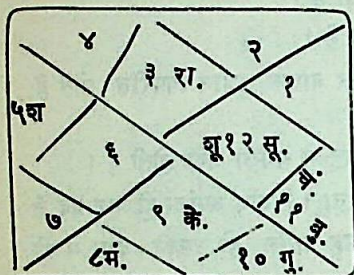
ग्रहों का अर्गला निकालने का उदाहरण—

अर्गला स्थान	२	३	४	५	११	राहु	९
बाधक स्थान	१२	[illegible]	१०	९	३	केतु	५

ग्रह के	भाव में	ग्रह	बाधक भाव में	बाधक ग्रह	बाधक है या नहीं।	अर्गला कारक
१ सू.	२,३,५	ग्रह नहीं	×	×		×
६ शुक्र	४	राहु मिथुन द्वि. स्व.	१०	केतु धन द्वि. स्व.	दोनों समान नहीं हैं केन्द्र से द्वि. खण्ड में है अंश बराबर है इससे अर्गला में प्रबलता नहीं होने से नहीं लिया।	०
	११	गुरु	३	×	बाधा नहीं	गुरु
२ चन्द्र	२	सूर्य शुक्र	१२	गुरु	अर्गला कारक २ बाधक १ है तो बाधा नहीं।	सू. शु.
४ बुध	३,४	×	०	०		×
	५	राहु	९	×	बाधा नहीं।	राहु
	११	केतु	३	×	,,	केतु
३ मं.	२	केतु	१२	+	,,	केतु
	३शुद्ध	गुरु	०	०	,,	गुरु
	४	चंद्र बुध	१०	श.	बाधक केवल १ है बाधा नहीं	चं. बुध
	५	शुक्र सूर्य	९	×	बाधा नहीं	शु. सूर्य
	११	×	०	०	,, ,, ,, ,,	×
५ गुरु	२	चंद्र बुध	१२	केतु	बाधक केवल १, बाधा नहीं	चं. बुध
	३ शुद्ध	सू. शुक्र	०	०	,, ,, ,, ,,	सूर्य शु.
	४,५	,,	०	०	,, ,, ,, ,,	×
	११	मंगल	३	सूर्य शुक्र	बाधक में अधिक हैं बाधा हुई	×
७ शनि	२,३	×	०	०		×
	४	मंगल	१०	×	बाधक नहीं	मंगल
	५	केतु	९	×	,,	केतु
	११	राहु	३	×	,,	राहु
८ राहु	९	चंद्र बुध	५	×	,,	चं. बुध
९ केतु	९	शनि	५	×	,,	शनि

भाव से अर्गला विचार

भाव	राशि से	भाव में	ग्रह	बाधक भाव	बाधक ग्रह	बाधक है या नहीं	अर्गला कारक
१ लग्न	मिथुन	२,४,५ ११	×				,,
		शुद्ध ३	शनि	०	०		शनि
२ धन	कर्क	२	शनि	१२	राहु	बाधक द्विस्वभाव में है बली है	,,
			सिंह		मिथुन	बाधक है।	
			स्थिर		द्वि.स्व.		
		३,४,११	×	०	०		,,
		५	मंगल	९	सू. शु.	बाधक ग्रह अधिक है बाधा हुई	,,
३सहज	सिंह	२,३	×	०	०		,,
		४	मंगल	१०	×	बाधक ग्रह नहीं है	मंगल
		५	केतु	९	×	,,	केतु
		११	राहु	३	×	,,	राहु
४सुहृद्	कन्या	२,११	×				,,
		शुद्ध ३	मंगल	०	०		मंगल
		४	केतु	१०	राहु	दोनों समान बली हैं अर्गला	,,
			धन		मिथुन	प्रबल नहीं है	
			द्वि.स्व.		द्वि.स्व.	बाधा नहीं	
		५	गुरु	९	×		गुरु
५ सुत	तुला	१	मंगल	१२	×	,,	मंगल
		१ शुद्ध	केतु	०	०	,,	केतु
		४	गुरु	१०	×	,,	गुरु
		५	चं. बुध	९	राहु		चं. बु.
		११	शनि	३	केतु	बाधक ग्रह कम है बाधा नहीं हुई	,,
			सिंह		धन	बाधक द्विस्व० के प्रबल है।	
			स्थिर		द्वि.स्व.	बाधा है	
६ रिपु	वृश्चिक	२	केतु	१२	×		केतु
		शुद्ध ३	गुरु	०	०	बाधा नहीं	गुरु
		४	चं. बु.	१०	शनि	,,	चं. बु.
		५	सू. शु.	९	×	बा. कम ग्रह। बाधा नहीं हुई	सू. शु.
		११	×	०	०	बाधा नहीं	

भाव	राशि से	भाव से	ग्रह	बाधक भाव	बाधक ग्रह	बाधा है या नहीं ?	अर्गला कारक
७जाया	धन	२	गुरु	१२	मंगल		×
			मकर		वृश्चिक	बाधक स्थिर में प्रबल हुआ।	×
			चर		स्थिर	बाधा हुई	
		शुद्ध ३	चं. गुरु	०		बाधा नहीं	चं. गु,
		४	सूर्यशु.	१०	×	×	सूर्य शु.
		५,११	×	×	×		×
८ मृत्यु	मकर	२	चं.बु.	१२	केन्द्र	बाधक कम ग्रह बाधा नहीं हुई	चंद्र बु.
		३शुद्ध	सूर्य शु.	०	×	बाधा	सू.शु.
		४,५	×	×	×	×	×
		११	मंगल	३	शु. सू	बाधक ग्रह अधिक हैं। बाधा हुई	×
९ धर्म	कुंभ	२	सू. शु.	१२	गुरु	बाधक ग्रह कम हैं बाधा नहीं हुई	सू. शु.
		३,४	×	×	×		×
		५	राहु	९	×	बाधक नहीं	राहु
		११	केतु	३	×	×	केतु
१०कर्म	मीन	२,३,५	×	×	×		×
		४	राहु	१०	केतु	दोनों समान बली हैं अर्गला प्रबल	×
			मिथुन		धन	नहीं है।	
			द्विस्व०		द्वि.स्व.		
		११	गुरु	३	राहु	बाधक द्वि. भाव में है बाधा हुई	×
			मकर		मिथुन		
			चर		द्वि.स्व.		
११ आय	मेष	२,४	×	×	×		×
		३	राहु	०	०		राहु
		५	शनि	९	केतु	बाधक द्विस्वभाव में बली है	×
			सिंह		धन	बाधा हुई	
			स्थिर		द्वि.स्व.		
		११	चं.बु.	३	×	बाधक नहीं है	चंद्रगुरु
१२ व्यय	वृष	'	राहु	१२	×		राहु
		३,५	×				×
		४	शनि	१०	चं. बु.	बाधक में अधिक ग्रह बाधा हुई	×
		११	सू. शु.	३	×	बाधा नहीं	सू. शु.

अध्याय ७

गुलिक आदि विचार

गुलिक का फल भिन्न २ भावों में

१ लग्न में गुलिक–चोर, क्रूर, विनय रहित, वेद शास्त्र के ज्ञान रहित, बहुत स्थूल नहीं होगा, नेत्र दोष युक्त, बहुत बुद्धिमान नहीं होगा, बहुत सन्तान भी नहीं होगी। अधिक भोजन करेगा, सुख रहित, लम्पट और दुष्ट, दुराचारी, अधिक आयु न हो, शूरवीर नहीं होगा, मूर्ख, मंद बुद्धि, चिड़चिड़ा स्वभाव, रोगी, पापी, शठ, अति दुःखी।

२ दूसरे भाव में–कलह करने वाला, मिष्ट भाषी न हो, अन्न धन रहित, विदेश में रहे, अपनी बात पर स्थिर न रहे, विवाद में बुद्धि पूर्वक भाग लेने योग्य नहीं रहे, क्रोधी, विषयातुर, भ्रमण शील, व्यर्थ बकवाद करने वाला। पाप युक्त हो तो दरिद्र और मूर्ख हो। निर्लज्ज, दुःखी।

३ तीसरे में–एकान्त प्रिय होने से घमंडी, नशेबाज, और इसी प्रकार के गुण होने में प्रसिद्ध, विरह, अहंकार आदि दुर्गुण युक्त, विशेष कोप, धन एकत्र करने में व्यग्र चित्त, शोक भय से रहित, भाई बहनों से रहित, सुन्दर स्वरूप, सज्जनों का प्रिय, राजमान्य।

४ चतुर्थ में–विद्या से रहित, धन वाहन, गृह सुख रहित, परिवार रहित, परदेश वासी, रोगी, पापी, वात पित्त रोग से पीड़ित।

५ पञ्चम–अति चंचल, शील रहित, पाप बुद्धि, अल्पपुत्र, अल्पआयु, निन्दक, निर्धन, अल्प बुद्धि, द्वेषी, नास्तिक, वीर्य हीन, स्त्री के वश।

६ षष्ठ–बहुत शत्रुओं को मारने वाला, भूत विद्या में विनोदी, पराक्रमी, अच्छे पुत्र वाला, पुष्ट देह, उत्साही, लोक हित कारक, स्त्री का प्रिय, शत्रु हीन।

७ सप्तम–कलह करने वाला, दुष्टा स्त्री वाला, कई स्त्रियों का पति, स्त्री के वश, सर्व जनों का विरोधी, कृतघ्न, मंद बुद्धि, अल्प ज्ञान, दुर्बल देह, अल्प क्रोधी। मैत्री हीन, महापापी, स्त्री के धन से जीने वाला।

८ अष्टम–कुरूप मुख, विकल नेत्र, ह्रस्वदेह (ठिगना), दुःखी, क्रूर, कठिन रोग, निर्धन, निर्दय, निर्गुण, क्षुधा से पीड़ित।

९ नवम–गुरुजनों तथा पितरों को मारने वाला या उनसे त्यक्त, पुत्रों से त्यक्त, नीच कर्म कर्ता, कुकर्मी, निर्दय, चुगलखोर, बहुत कष्ट, पानी सा ठंडा।

१० दशम–सैकड़ों अशुभ कर्म युक्त, धार्मिक और अच्छा काम त्यागे, निज कुल के हित-कारी आचरण से रहित। बिना मान वाला। दूसरों को कोई चीज देने का मन न करे। पुत्रवान, सुखी, भोगी, देव भक्त, योगी।

११ लाभ—बहुत सुखी, धनी, तेजस्वी, सुन्दर सन्तान युक्त, बुद्धिमान, शक्तिवान, ज्येष्ठ भाई को मारने वाला, पूज्य, योगी, नेता, बंधु उपकारी, छोटा कद ।

१२ व्यय—विषय-वासना से रहित, दीन वचन में प्रवीण, सब का धन हरे, खर्च अधिक, गरीब, आलसी, पापी, भाग्य हीन, अंग हीन, गुणी होकर भी नीच कर्मी ।

गुलिकेश विचार

शुभ— गुलिक के ग्रह का स्वामी बल युक्त हो तो अच्छा फल होता है वह बल युक्त हो और केन्द्र या त्रिकोण में हो या स्वगृही, स्वउच्च या मित्र गृही हो तो—उसके पास हाथी घोड़े आदि वाहन हों, वह कामदेव तुल्य सुन्दर हो, बहुत माननीय हो, अति प्रसिद्ध हो और पृथ्वीपति हो ।

अनिष्ट— गुलिक से त्रिकोण गत लग्न में जो ग्रह हो उसके द्वादशांश या नवांश में जो ग्रह हो, गुलिक से युक्त, गुलिक स्थित राशि का स्वामी ये सब अनिष्ट करने वाले होते हैं ।

गुलिक का फल भिन्न ग्रहों के साथ

गुलिक सूर्य युक्त—अपने पिता का विरोधी या पिता को मारे या क्लेश देवे ।
" चन्द्र "—माता को क्लेश देवे ।
" मंगल "—भाइयों से रहित, या भाइयों को खोवे ।
" बुध "—उन्मादी हो ।
" गुरु "—पाखंडी हो, दूसरों का दूषक हो ।
" शुक्र "—नीच पुरुष, नीच स्त्री का स्वामी, स्त्री जनित रोग से निहत ।
" शनि "—कुष्ट व्याधि युक्त, अल्पायु, सौख्य से युक्त ।
" राहु "—विष देने वाला, विषैले रोग से रोगी ।
" केतु "—गृहादि जलाने वाला या अग्नि से पीड़ित ।

विष नाड़ी से युक्त गृह में गुलिक—राजा भी हो तो निश्चय भिखारी हो ।

जन्म में उपग्रह से युक्त गुलिक—अनिष्ट फल दायक ।

यम कंटक के साथ गुलिक—अच्छे फल की आशा रहती है ।

गुलिक बुरा फल देने में बहुत शक्तिमान है यह फल देने में शनि के समान है । गुलिक मृत्यु लाता है ।

प्राणपद फल

१ लग्न में—दुर्बल रोगी, गूंगा, पागल, मूर्ख, अंग हीन, दुःखी, कृश ।
२ धन में—बहुत धन धान्य नौकर तथा प्रजा से युक्त, सुन्दर सौभाग्यवान ।
३ सहज—हिंसक, गौरव वाला, निठुर, मलिन, गुरुओं का अभक्त ।
४ चतुर्थ—सुखी, सुन्दर, मित्रों और स्त्रियों का प्रिय, गुरु भक्त, मृदु, सत्य वक्ता ।
५ पञ्चम—सुखी, सुकर्मी, दयालु, सर्व कार्यों में निपुण ।

६ षष्ठ – बंधु और शत्रु के वश में रहने वाला, मंदाग्नि रोगी, अल्पायु, दया हीन, दुष्ट, धनी ।

७ सप्तम–ईर्ष्यावान, कामी, कठोर, भयंकर रूप, सब से अप्रसन्न, दुर्बुद्धि ।

८ अष्टम–रोगी, राजा, नौकर, बंधु और पुत्रों से सदा दुःखी ।

९ नवम –पुत्रवान, धनी, भाग्यवान, सुन्दर रूप, नौकरी करने वाला, सरल हृदय और पंडित ।

१० दशम–बली, बुद्धिमान, राज कार्य में चतुर, पंडित, देव भक्त ।

११ लाभ–विख्यात, गुणी, पंडित, भोगी, गौर वर्ण, माता का प्रिय ।

१२ व्यय–क्षुद्र, दुष्ट, अंग हीन, बंधुओं का द्वेषी, नेत्र रोगी, काना ।

प्राणपद गुलिक आदि निकालना ।

प्राणपद

३ घड़ी–१२ राशि	१५ पल– ३० अंश	इन प्रकार इष्ट काल की घटा-
१ घड़ी– ४ राशि	१ पल २ अंश	पल का राशि अंश आदि बना लेना ।
१५पल– १ राशि	१ विपल– २ कला	वह मध्यम प्राणपद होगी ।

राशि १२ से अधिक हो तो १२ से भाग देने से जो बचे उसे लेना ।

फिर निरयन सूर्य स्पष्ट लेना, देखना यह चर स्थिर आदि किस राशि में है यदि सूर्य स्पष्ट चर राशि में हो सूर्य स्पष्ट में मध्यम प्राणपद जोड़ देने से षष्ट प्राणपद हो जायगा ।

यदि सूर्य स्पष्ट चर न हो तो उस से पञ्चम या नवम भाव में जो राशि हो उन में देखना कौन चर राशि है वही चर राशि का अंक लेना और सूर्य स्पष्ट में राशि के स्थान में प्राप्त चर राशि लेकर शेष अंश पूर्ववत रहेंगे । इसमें मध्यम प्राणपद जोड़ने से स्पष्ट प्रणपद हो जायगा ।

उदाहरण

घ. प. वि. रा०

इष्ट १५-५१-४२ का प्राणपद निकालना है । सूर्य स्पष्ट ११-५′-४०″-४५ है ।

रा. ० ′ ″

१५ घड़ी=१५ × ४=६० राशि=०–०–०–०

५१ पल=५१ × २=१०२ अंश=३–१२–०–०

४२ वि.=४२ × २=८४ कला=०–१–२४

½ वि.=½ × २=१ कला=०–०–१

मध्यम प्राण पद योग=३–१३–२५

सूर्य मीन का द्वि स्वभाव है यदि चर राशि का सूर्य होता तो इसी में मध्यम प्राणपद जोड़ना पड़ता । यहाँ द्विस्वभाव राशि होने से इसके पंचम और नवम की राशि खोजा । पंचम में कर्क चर राशि है । नवम में वृश्चिक स्थिर राशि है । तो चर राशि कर्क

यहाँ लिया। मीन के स्थान में कर्क राशि सिर्फ बदलेगी शेष अंश आदि यही रहेंगे। तब सूर्य ३रा.–५°–४०′–४५″ मानना पड़ेगा।

	रा. ° ′ ″	
सूर्य	३–५–४०–४५	सूर्य मीन का था उसके बदले कर्क का होगा अंशादि वे ही रहे। जो ऊपर गणित से प्राप्त हुआ था।
मध्यम प्राणपद	३–१३–२५–	
प्राणपद	६–१९–५–४५	∴ तुला राशि पर प्राणपद आया।

प्राणपद स्पष्ट ६रा.–१९°–५′–४५″ आया।

गुलिक इष्ट जानना

गुलिक ध्रुवांक	दिन	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
ध्रुवांक	दिन	३	६	५	४	३	२	१
	रात	७	२	१	७	६	५	४

रीति-दिन में=दिन मान ÷ ८=लब्धि एक खंड का मान × इष्ट दिन का दिन-ध्रुवांक=गुलिक दिन इष्ट। रात्रि में–रात्रि मान ÷ ८=लब्धि एक खंड का मान × इष्ट दिन का रात्रि-ध्रुवांक=गुलिक रात्रि खंड + दिन मान=गुलिक इष्ट।

उदाहरण—मंगलवार का जन्म, दिनमान २९–५३–२५ रात्रिमान ३०–६–३५ रात्रि का जन्म है।

रात्रि मान ३०–६–३५ ÷ ८=३ घ०–४५ प०–४९ वि० रात्रि का एक खंड हुआ। मंगल को रात्रि ध्रुवांक १ से । (३–४५–४९) × १=घ०–४५ व०–४९ वि०

रात्रि गुलिक खंड	३–४५–४९	गुलिक इष्ट से लग्नवत् गुलिक लग्न निकाल लेना।
+ दिन मान	२९–५३–२५	
गुलिक इष्ट	=३३–३९–१४	

गुलिक आदि खंड के स्पष्टीकरण का चक्र

वार	१ खंड	२ खंड	३ खंड	४ खंड	५ खंड	६ खंड	७ खंड	८ खंड
रविवार	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	×
सोमवार	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	×
मंगलवार	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	×
बुधवार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	×
गुरुवार	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	×
शुक्रवार	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	×
शनिवार	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	×

दिन खंड

	बार	१ खंड	२ खंड	३ खंड	४ खंड	५ खंड	६ खंड	७ खंड	८ खंड
रात्रि खण्ड	रविवार	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	
	सोमवार	शुक्र	शनि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	
	मंगलवार	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	
	बुधवार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
	गुरुवार	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	
	शुक्रवार	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	
	शनिवार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	

उपरोक्त दिन व रात्रि खण्ड देखने से प्रगट होगा कि शनि कौन-कौन खण्ड में है, जहाँ-जहाँ शनि है, वह गुलिक का खण्ड हुआ। गुरु से यमघंट, मंगल से मृत्यु, रवि से काल और बुध से अर्द्धप्रहर का खण्ड होता है। किस दिन रात्रि या दिन में कौन-कौन सा खण्ड होता है ऊपर चक्र से समझ पड़ेगा आठवां खण्ड बिना स्वामी के होता है।

१ शनि का खण्ड=गुलिक खण्ड
२ गुरु ,, =यमघण्ट ,,
३ मंगल ,, =मृत्यु ,,
४ रवि ,, =काल ,,
५ बुध ,, =अर्द्धप्रहर ,,

गुलिक यमघण्ट आदि का ध्रुवक उपरोक्त चक्रानुसार

खंड	दिन रात	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
गुलिक	दिन	७	६	५	४	३	२	१
	रात	३	२	१	७	६	५	४
यमघण्ट	दिन	५	४	३	२	१	७	६
(यम कंटक)	रात	१	७	६	५	४	३	२
मृत्यु खण्ड	दिन	३	२	१	७	६	५	४
	रात	६	५	४	३	२	१	७
काल	दिन	१	७	६	५	४	३	२
	रात	४	३	२	१	७	६	५
अर्द्धप्रहर	दिन	४	३	२	१	७	६	५
	रात	७	६	५	४	३	२	१

उपरोक्त विधि से यह भी जान सकते हैं कि इष्ट काल में किसी विशेष दिन को कौन सा खण्ड है।

अप्रकाश ग्रह उपग्रह ५ हैं

१ धूम=सूर्य स्पष्ट + ४ रा. −१३°−२०′
२ पात (व्यतीपात)=(१२ राशि−धूम)
३ परिधि=(पात + ६ राशि)
४ इन्द्रचाप=(१२ राशि−परिधि)
५ धनु या शिखि या केतु=(इन्द्र चाप + १६°−४०′)
६ सूर्य=शिखि (केतु + १ राशि)

उदाहरणः—

```
                    रा.
सूर्य स्पष्ट=११−५°−४०′−४५″
            +४−१३−२०
१ धूम      = ३−१९−०−४५
                  १२−०°−०′−०″
            —धूम ३−१९− ०−४५
२ पात            =८−१०−५९−१५
                 +६
३ परिधि          =२−१०−५९−१५
                  १२−०°−०′−०″
          —परिधि २−१०−५९−१५
४ इन्द्रचाप        =९−१९− ०−३५
                   +१६−४०
५ शिखि           =१०− ५−४०−४५
                 +१
सूर्य स्पष्ट       =११ −५−४०−४५
```

ये ५ अदृश्य उपग्रह हैं

ये धूम आदि उपग्रह आकाश में विना दिखे विचरते हैं। यदि किसी समय ये कहीं दिखाई देते हैं तो संसार में घोर उपद्रव होने की छाया डालते हैं।

अदृश्य उपग्रह की पहिचान (अन्यमत से)

(१) धूम—आकार धूम्र पटल के समान है। कोई कहते हैं यह पूछलतारा है।

(२) व्यतिपात—कोई इसे तारा टूट कर गिरने को कहते हैं।

(३) परिधि—सूर्य का चन्द्र के आसपास गोल चक्कर होता है।

(४) इन्द्रचाप—या इन्द्रधनुष या कोदण्ड—प्रसिद्ध इन्द्रधनुष है, जो वर्षा में दिखता है।

(५) केतु—यह धूमकेतु है। संसार में बहुत उपद्रव करता है।

धूम आदि अप्रकाश ग्रह के फल पर विचार

इन अप्रकाश ग्रहों से भाव के फल का भी विचार होता है। सूर्य आदि प्रकाश ग्रहों के भाव फल विचारते समय अप्रकाश ग्रहों के भाव फल पर भी विचार कर फल का निर्णय करना चाहिये। यदि सूर्यादि ग्रहों के भाव फल शुभ हों और अप्रकाश ग्रहों के भी भाव फल शुभ हों तो अति शुभ फल होता है। यदि दोनों का फल अशुभ हो तो अति अशुभ फल होता है। एक शुभ दूसरा अशुभ हो तो मध्यम फल होता है।

अप्रकाश ग्रहों का पृथक् भाव अनुसार फल

१ धूम फल

(१) लग्न में–योद्धा, निर्बल दृष्टि, स्तब्ध, निर्दय, क्रूर, अति क्रोधी।
(२) द्वितीय में–रोगी, धनी, अंगहीन, मन्द बुद्धि, कार्यहीन, राज्य से हृत मन वाला।
(३) सहज में–बुद्धिमान्, शूरवीर, उदार, प्रियवक्ता, परिजन और धन से युक्त।
(४) चतुर्थ में–स्त्री से त्यक्त होने से सदा दुःखी, सब शास्त्रों का ज्ञाता।
(५) पंचम में–अल्प सन्तान, धन हीन, गौरवी, सर्वभक्षी, मित्रों के विचार से विमुख रहे।
(६) षष्ठ में–बली शत्रु को जीतने वाला, तेजस्वी, विख्यात, और रोगहीन।
(७) सप्तम में–निर्धन, कामी, परस्त्री गामी, पंडित किन्तु प्रतिभाहीन।
(८) अष्टम में–पराक्रम रहित भी उत्साही, सत्यप्रतिज्ञ; अप्रिय वक्ता, निठुर, स्वार्थी।
(९) नवम–पुत्रवान्, भाग्यवान्, धनी मानी, दयालु, धर्मात्मा, भाइयों का पोषक।
(१०) दशम–पुत्र, सौभाग्य, संतोष, सुबुद्धि से युक्त, सुखी और सत्य प्रतिज्ञ
(११) लाभ–धन धान्य, सुवर्ण युक्त, विनीत, संगीतज्ञ, सुन्दर कला को जानने वाला।
(१२) व्यय–पतित, पापी, पर-स्त्री गामी, व्यसनी, निर्दय, शठ।

२ पात फल

(१) लग्न में–दुःखी, क्रूर, हिंसक, मूर्ख बन्धुओं का द्वेषी।
(२) धन में–कुटिल, पित्त प्रकृति, भोगी, निर्दय, कृतघ्न, दुष्ट, पापी।
(३) सहज–स्थिर बुद्धि, योद्धा, दाता, धनी, राजमान्य, सेनापति।
(४) चतुर्थ–बंधन व रोग से पीड़ित, सन्तान और सौभाग्य से हीन।
(५) पंचम–धन हीन, रूपवान्, कफ पित्त वायु से पीड़ित, निठुर, निर्लज्ज।
(६) षष्ठ–शत्रु को जीते, पुष्ट देह, शांत चित्त, सब अस्त्र और कला में निपुण।
(७) सप्तम–धन और स्त्री से रहित या स्त्री के वश, दुःखी, निर्लज्ज, कामी, शत्रुओं को सुखदायक।
(८) अष्टम–नेत्र रोगी, कुरूप, भाग्यहीन, ब्राह्मणों का निन्दक, रक्त पीड़ा से दुःखी।
(९) नवम–बहुत व्यापार करने वाला, बहुत मित्र, स्त्री का प्रिय, प्रियवक्ता, अनेक विषयों का ज्ञाता।
(१०) दशम–सम्पत्तिवान्, धर्मज्ञ, धर्मकारी, महा बुद्धिमान्, पंडित।
(११) लाभ–अत्यन्त धनी, मानी, सत्यवक्ता, दृढ़ प्रतिज्ञ, संगीत जानने वाला, घोड़े की सवारी करने वाला।
(१२) व्यय–क्रोधी, अंग हीन, धर्म निंदक, बन्धुओं का द्वेषी, बहुत कार्य करने वाला।

३. परिधि फल

(१) लग्न में—विद्वान्, सत्य वक्ता, शान्त, धनी, पुत्रवान्, पवित्र, दाता, गुरुभक्त ।
(२) धन—महाधनी, सुन्दर, भोगी, सुधी, धर्मात्मा, राजा ।
(३) सहज—स्त्री का प्रिय, सुन्दर देह, देव और कुटुम्ब का भक्त, नौकरी करने वाला, गुरुभक्त ।
(४) चतुर्थ—विस्मय से युक्त, सरल हृदय, संगीत ज्ञाता, शत्रुओं का भी हित करने वाला ।
(५) पंचम-धनी, सुशील, सुन्दर, मधुर वाणी, धर्मात्मा, स्त्री का प्रिय ।
(६) षष्ठ-विख्यात, धनी, भोगी, सब जन्तु पर दया करने वाला, शत्रुओं को जीतने वाला ।
(७) सप्तम—अल्प सन्तान, सुखहीन, मन्द बुद्धि, निष्ठुर, रोगिणी स्त्री वाला ।
(८) अष्टम—अध्यात्म ज्ञानी, शान्त, चित्त, दृढ़ देह, दृढ़ प्रतिज्ञ, धर्मात्मा, बलवान् ।
(९) नवम—पुत्रवान्, सुखी, सुन्दर, धनी, स्थिर मानी और थोड़े में सन्तुष्ट होने वाला ।
(१०) दशम—कलाओं का ज्ञाता, भोगी, मजबूत देह, सरल हृदय, सब शास्त्रों में निपुण ।
(११) लाभ—स्त्री से सुखी, बुद्धिमान, कुटुम्बियों का प्रिय, मन्दाग्नि रोग ।
(१२) व्यय—बहुत खर्च करने वाला, दुःखी, दुष्ट, बुद्धि, गुरुनिंदक ।

४ चाप फल

(१) लग्न में—धन धान्य सुवर्ण से पूर्ण, कृतज्ञ, सज्जनों का प्रिय, सब दोषों से रहित ।
(२) धन—प्रिय वक्ता, दृढ़, धनी, विनीत, विद्यावान, सुन्दर, धर्मात्मा ।
(३) सहज—कंजूस, कलाओं को जानने वाला, चोर, अंग हीन, मित्र हीन ।
(४) चतुर्थ—सुखी, गो, धन धान्य से युक्त, राजमान्य, रोग हीन ।
(५) पंचम—सुन्दर, दूरदर्शी, देव भक्त, प्रिय वक्ता, सब कार्य में सफल ।
(६) षष्ठ—शत्रुओं को जीतने वाला, अतिधूर्त, सुखी, प्रेमी, पवित्र, सब कार्य में लाभ ।
(७) सप्तम—ऐश्वर्य युक्त, गुणों से पूर्ण, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, जनप्रिय ।
(८) अष्टम—पापी, क्रूर, परस्त्री गामी, विकल अंग वाला ।
( ) नवम—तपस्वी, व्रतधारी, विद्यावान्, लोक में विख्यात ।
(१०) दशम—बहुत पुत्र, धन ऐश्वर्य, गौ भैंस आदि हो, लोक में विख्यात ।
(११) लाभ-सदा लाभ करने वाला, निरोग, प्रबल कोप, मन्त्रज्ञ, स्त्री प्रिय, अस्त्र चलाने में निपुण ।
(१२) व्यय—दुष्ट, अभिमानी, कुबुद्धि, निर्लज्ज, धन हीन, परस्त्रीगामी ।

५ केतु (शिखि) फल

(१) लग्न में—सब विद्या में निपुण, सुखी, बोलने में चतुर, लोगों का प्रिय, सब काम में पूर्ण ।

(२) धन में—वक्ता, मधुरभाषी, सुन्दर, कवि, पंडित, मानी, विनीत, वाहन-सुख युक्त ।

(३) सहज में—कंजूस, कुकर्मी, कृश देह, कठिन रोग से युक्त ।

(४) चतुर्थ—सुन्दर, गुणी, सात्विक, वेदज्ञाता, सदा सुखी ।

(५) पंचम—सुखी, योगी, कलाओं का ज्ञाता, युक्ति जाननेवाला, बुद्धिमान् वक्ता गुरु भक्त ।

(६) षष्ठ—मातृ कुल नाशक, शत्रुओं को जीतने वाला, बहुत बन्धु, शूरवीर, सुन्दर, चतुर ।

(७) सप्तम—जुआरी, कामी, भोगी, वेश्या में रत ।

(८) अष्टम—कुकर्मी, पापी, निर्लज्ज, पर निंदक, स्त्री सुख हीन ।

(९) नवम—वैष्णव आदि भेष धारी, प्रसन्न चित्त, सब जन्तुओं का हित साधक, धर्म कार्य में निपुण ।

(१०) दशम—सुख सौभाग्य युक्त, स्त्रियों का प्रिय, दानी, ब्राह्मणों से संगति ।

(११) लाभ—वित्तलाभ करने वाला, धर्मात्मा, धनी, सुन्दर, शूर, सुकर्मी, महा पंडित ।

(१२) व्यय—पापी, शूर, श्रद्धा और दया से रहित, पर स्त्री गामी, क्रूर ।

सूर्य आदि ग्रहों के उपग्रहों का दिन के अनुसार कालादि ज्ञान चक्र

दिन का कालादि चक्र

दिन	१ खंड	२ खंड	३ खंड	४ खंड	५ खंड	६ खंड	७ खंड	८ खंड
रविवार	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	निरीश
सोमवार	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	,,
मंगलवार	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	,,
बुधवार	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	,,
गुरुवार	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्धयाम	,,
शुक्रवार	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघं	,,
शनिवार	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	,,

रात्रि का कालादि ज्ञान चक्र

रात्रि	१ खंड	२ खंड	३ खंड	४ खंड	५ खंड	६ खंड	७ खंड	८ खंड
रविवार	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	निरीश
सोमवार	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	,,
मंगलवार	गुलिक	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	,,
बुधवार	काल	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	,,
गुरुवार	परिधि	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	,,
शुक्रवार	धूम	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	,,
शनिवार	अर्द्धयाम	यमघंट	कोदंड	गुलिक	काल	परिधि	धूम	,,

दिन रात में उपरोक्त ७ उपग्रहों के प्रत्येक के खण्ड बताये हैं। आठवाँ खंड=निरीश अर्थात् बिना स्वामी के होता है। अर्थात् केवल ७ ही खंडों में उपरोक्त ग्रह स्वामी होते हैं जिनको जानना चाहिये कि किस समय कौन उपग्रह स्वामी है।

रीति:—दिन का जानने को (दिनमान ÷ ८) × खंड संख्या=उस उपग्रह का समय। रात्रि में इष्ट हो तो (रात्रिमान ÷ ८) × खंड संख्या + दिनमान=समय।

उदाहरण:—मान लो इतवार के दिन को गुलिक खंड कब आयेगा यह जानना है, इतवार को दिनमान २८–३० है। २८ घ. ३० प. ÷ ८=३ घ. ३३ प. ४५ वि. का एक खंड हुआ। इतवार को गुलिक खंड ७वाँ है। १ खंड ३–३३–४५ × ७=२४घ. ५६ प. १५ वि. इष्ट तक इतवार के दिन को गुलिक खण्ड रहेगा।

मान लो इतवार की रात्रि को काल खण्ड जानना है। काल खण्ड चौथा है इतवार का दिनमान २८-३०=६०–(२८-३०)=रात्रिमान ३१-३० ÷ ८=१ खंड=३-५६-१५ का हुआ। ३–५६–१५ × ४ खंड=१५–४५ रात्रि + दिनमान २८–३०=४४–१५ इष्ट तक काल खंड रहेगा।

फल विचार

उपग्रह ९ माने जाते हैं (१) गुलिक (मांदि), (२) यमकंटक, (३) अर्द्धयाम, (४) काल, (५) धूम, (६) पात (व्यतीपात), (७) परिधि (परिवेश), (८) कोदंड (इन्द्रधनुष), (९) केतु (धूमकेतु या शिखी)।

१ गुलिक—गुलिक काल सदा त्याज्य है। राजा को भी भिखारी बनाता है। बुरा फल देता है। गुलिक फल देने में शनि के समान है। गुलिका मृत्यु लाती है।

२ यमघंट (यमकंटक)—गुरु के समान फल देता है। यमकण्टक के साथ गुलिका हो तो अच्छे फल की आशा की जाती है। यह यमकंटक अच्छा फल देने में शक्तिशाली है।

३ अर्द्धयाम—बुध के समान फल है। शुभ घर में अच्छा फल देता है; बुरे घर में बुरा फल देता है।

४ काल—राहु के समान फल देता है।

५ धूम—जहाँ धूम हो वहाँ सदा गर्मी से त्रास अग्नि भय और मानसिक त्रास होता है। यदि लग्न या अन्य भाव अपने स्वामी से युक्त धूम के साथ हो या अर्द्धयाम के साथ हो तो उस भाव का नाश होता है।

६ व्यतीपात—सींगवाले जानवर या चौपायों से भय मृत्यु।

७ परिधि—जब परिवेश या परिधि हो तो जल का भय हो, जल के रोग से बंधन भी सम्भव है।

८ कोदंड—पत्थर से या शस्त्र से चोट लगे और गिर भी पड़े।

९ केतु—गिरने से चोट, व्यापार में हानि से कष्ट, बिजली गिरने का भय।

ये फल उस ग्रह की दशा में होंगे जो उस घर में है जहाँ ये उपग्रह हैं।

उपग्रहों का लग्न आदि भाव का फल

१ लग्न में—अल्प जीवन।

२ द्वितीय में—कुरूप चेहरा।

३ तृतीय में—साहस।

४ चतुर्थ में—दुःख।

५ पञ्चम में—सन्तानहीन।

६ षष्ठ में—शत्रु द्वारा मानसिक त्रास।

५ सप्तम में—ओज शक्ति का ह्रास।

८ अष्टम में—दुर्मार्ग से मृत्यु।

९ नवम में—धर्म आदि की प्रतिकूलता।

१० दशम में—सदा भटकते रहने का झुकाव।

११ लाभ में—लाभ।

१२ व्यय में—नित्य दोष करना।

•

अध्याय ८

ग्रहों का रश्मि फल विचार

रश्मि अर्थात् ग्रह की किरण जो गणित द्वारा प्राप्त हो।

जिस ग्रह की बहुत रश्मि हो वही ग्रह स्थान पर स्थावर माल का फल देता है।

अधिक रश्मि हो तो बड़ा राज्य प्राप्त हो, बल में श्रेष्ठ हो तो युद्ध में जय प्राप्त हो।

यदि ५ रश्मि है तो दुःख देता है, दरिद्री हो, नीच की संगति करे। वह ग्रह नीच का हो तो कैद कराता है। जितनी रश्मि अधिक हो उतना अच्छा फल होगा।

आगे ग्रहों की रश्मि का फल दिया है

१ से ४ तक रश्मि—बहुत दुःख पावे, कुल से हीन, पतित, दुष्ट, दरिद्री, नीच कुल से स्नेह करने वाला, उत्तम कुल में भी पैदा हो तो नीच की चाकरी करे, दारिद्रय से दुःखी रहे।

५ से १० तक रश्मि—प्राणियों में अतिहीन, परदेश जाने में मन रखने वाला, भाग्य से हीन, सदा मलिन, क्लेश युक्त, ऐश्वर्य हीन, निरन्तर दूसरों के पालन करने ने दुःखी, निर्धन, भारवाहक, स्त्री-पुत्रादि से हीन, ऐसा कर्म करे जिससे वंश कुल की हानि हो।

१० से १५ तक—प्रधान तथा पूजनीय जनों में भक्ति रखने वाला, उत्तम सुख भोगने वाला, अपने कुल के अनुकूल, अल्प धन, धर्म युक्त सुन्दर वेष।

११ रश्मि—अल्प पुत्रवान्, स्वल्प धन, स्वल्प कुटुम्ब का भी पालन कष्टमय हो।

१२ रश्मि—स्वल्पधन, मूर्ख, धूर्त, सत्यहीन निर्धन।

१३ रश्मि—चोर, निर्धन।

१४ रश्मि—धनी, कुटुम्व पालक, विद्वान, कुलोचित कार्यकर्ता, धर्मी, क्रोध रहित, द्रव्य उपार्जन करने में तत्पर।

१५ रश्मि—वंश से सुख हो, धनी हो, सब विद्या, गुण और धन से युक्त, कुल में श्रेष्ठ।

१५ से २० रश्मि—कुल श्रेष्ठ, धनी, सदा स्वजनों से युक्त, अल्पशील, धीर, उत्तम कीर्ति, उत्तम कलाओं में चतुर, अच्छा स्वभाव, थोड़ा द्रव्य, हो, धर्म करे, सम्बन्धियों से पूर्ण, बहुत सेवक, बहुत कुटुम्ब।

१६ रश्मि—कुल श्रेष्ठ।

१७ रश्मि—बहुत नौकरों वाला।

१८ रश्मि—बहुत कुटुम्ब वाला।

१९ रश्मि—विख्यात कीर्ति।

२० रश्मि—स्वजनों से परिपूर्ण।

२० से २५ रश्मि—सर्वत्र पूज्य सौंदर्य युक्त, धैर्यवान्, विद्वान्, वीर, सब काम करने में चतुर, भाग्यवान्, पंडित, शीलवान्, धन सुख, मित्रों को सुख देनेवाला, राजा से मान, सम्पत्ति थोड़ी हो।

२१ रश्मि—पचास मनुष्यों का पालक, दानशील, दयावंत।

२२ रश्मि—लोभी, धनवान्, शत्रुहीन, समर्थ, अल्पगुणी, दयालु, दान शील।

२३ रश्मि—विद्याहीन हो तब भी सब जगह प्रधानता हो, धनवान्, सुखी, सुशील।

२४ से ३० रश्मि—लक्ष्मीवान्, बलवान्, राजप्रिय, प्रतापी, धनवान्, बहुत जनों से युक्त, तेजस्वी, राजा से धन और सुख प्राप्त, राजमन्त्री, मनुष्यों में पूज्य सेनापति।

३० से अधिक रश्मि—कारबारी, मुख्य मालिक हो, गाँव खेती आदि हो।

३१ रश्मि—अति विख्यात, पृथ्वी का भोगनेवाला, चतुर, राजा के तुल्य, सेनापति प्रधान पद।

३२ रश्मि—५०० ग्रामों का अधिपति, अनेक ग्राम पर्वतों का स्वामी, अनेक नगरों का बसाने वाला या १०० ग्रामों का अधिपति।

३३ रश्मि—१००० से अधिक ग्रामों का अधिपति।

३३-३४—रश्मि—हजार ग्रामों का स्वामी या कोई ३००० का स्वामी।

३४ रश्मि—३००० से अधिक ग्रामों का अधिपति।

३२ से ३५ रश्मि–५०० से १००० मनुष्यों का पोषक।

३५ रश्मि–अनेक कोषों से सम्पन्न, बड़ा पराक्रमी, लोगों में विख्यात यश, सौंदर्य युक्त, मंडल का स्वामी, विजय युक्त, निर्मल शील, विलास युक्त।

३६ रश्मि—एक लाख गाँवों का नियंत्रण करने वाला, डेढ़ लाख ग्रामों का स्वामी, या २५ गांव का अधिपति।

३६–३७ रश्मि—१॥ लाख गाँवों का अधिपति बड़ा प्रतापी, शत्रुहंता।

३७ रश्मि—३ लाख गाँवों का स्वामी या अन्य मत से २६ गाँव का अधिपति।

३१ से ४० रश्मि—क्रम से १०० से १००० मनुष्यों का पोषक समान।

३८ रश्मि—७ लाख गाँवों का स्वामी अन्य मत से ४ लाख गाँवों का स्वामी या २७ गाँव का अधिपति, बड़ा पराक्रमी, इन्द्र के समान सम्पत्ति वाला।

३९ रश्मि—सम्पूर्ण जनों को सन्तुष्ट करने वाला, पृथ्वी का पति, बड़ा प्रतापी राजा, तेजस्वी, विख्यात कीर्ति, कठिन धर्मवाला, शत्रु नाशक, ३० ग्राम का अधिपति।

४० रश्मि—बड़ा प्रतापी राजा, सेवा, वाहन से परिपूर्ण, विजय यात्रा हो। ३६ गाँव का अधिपति, राजाओं को जीतने वाला। अन्यमत से १०० गाँव हों।

४१ रश्मि—सूर्य तुल्य तेजस्वी, समुद्र-मण्डला भूमि का पालनकर्ता, समुद्र पर्यन्त विख्यात कीर्ति, राजा निश्चय होता है। एक देश का राज्य करे।

४२ रश्मि—दो समुद्रों तक की पृथ्वी का राजा, दो देशों का राज्य करे।

४२-४३ रश्मि—शत्रु हंता, अतुल वीर्य, चारों समुद्र तक पृथ्वी का पालन कर्ता बड़ा यश।

४३ रश्मि—तीन समुद्र तक पृथ्वी का राजा या ३ देश का राज करे।

४४ रश्मि —चक्रवर्ती राजा, अति सौख्य, देव ब्राह्मण का भक्त, दीर्घायु, सेना, वाहन, आदि युक्त सम्राट् अन्यमत से ४ देशों का राज्य करे।

४५ रश्मि—द्वीपान्तरों में पालन कर्ता, सब में पूज्य, महावली, सौभाग्य सम्पन्न बड़ा प्रतापी। ५ देशों का राज्य करे,।

४५ रश्मि के ऊपर—द्वीपान्तरों में उसका यश गाया जावे, देवताओं से भी अजेय।

४६ रश्मि—सार्वभौम राजा हो, सब नृपों पर उसकी आज्ञा चले, ६ देश का राज्य करे।

४७ रश्मि—समस्त भूलोक के भार को सहने वाला, शत्रुहंता, इन्द्र के तुल्य, सब लोकों में यश, चक्रवर्ती, ७ देशों का राज्य करे।

४७ से ५० तक रश्मि—राजा हो।

४८ से ५० तक रश्मि—सार्वभौम राजा हो।

५० से ऊपर रश्मि—इन्द्र तुल्य हो, भूप कुलात्मक चक्रवर्ती राजा होता है, वैश्य कुलोत्पन्न राजा होता है, शुद्र कुलोत्पन्न धनवान्, विप्र कुलोत्पन्न विद्वान्, यज्ञ आदि कर्म करने वाला हो।

५१ रश्मि के ऊपर—चक्रवर्ती राजा (सम्राट) होता है।

रश्मि (किरण) रहित ग्रह—होने से उसी प्रकार विपरीत फल होता है। जिस समय ग्रहों की अन्तिम अवस्था हो तो किरणों का क्षय और प्रथम अवस्थाएँ हो तो किरणों की वृद्धि होती है।

विशेष विचार—उच्चाभिमुख (नीच से उच्च की ओर जाने वाला) ग्रहों के किरण अनुसार पूर्ण फल होता है।

नीचाभिमुख (उच्च से नीच की ओर जानेवाला) ग्रहों की किरण अनुसार फल से न्यून फल होता है।

सब ग्रहों का शुभ या अशुभ फल रश्मि संख्या के अनुसार ही होता है। बिना रश्मि ज्ञान से वास्तविक फल समझ में नहीं आता। इसलिए रश्मि ज्ञान करने के उपरान्त फल का विचार करें।

रश्मि से संतान विचार

३३ रश्मि = १० संतान
३४ " = १२ "
३५ " = १५ "
३६ " = १६ "
३७ " = १६ "
३८ " = १७ "
३९ " = १८ "
४० " = १८ "
४१ " = २० "

४२ रश्मि = २१ संतान
४३ " = २४ "
४४ " = २५ "
४५ " = ३० "
४६ " = ३२ "
४७ " = ५० "
४८ " = ६० "
४९ " = १०० "

इससे अधिक रश्मि = इससे अधिक संतान हो ऐसा (वृ. पारा. का) मत है।

उच्च रश्मि का फल

सप्त बल से जो अधिक बलवान् हो उसपे उच्च रश्मि का फल ।

(१) स्थान बल में अधिक हो = देश में मुख्य हो ।

(२) दिग ,, ,, = विजयी

(३) चेष्टा ,, ,, = प्रभुताई

(४) काल ,, ,, = सर्वं काल में कुशल ।

(५) अयन बल ,, = सर्वं काल आनन्द ।

(६) उच्च बल ,, = वंश में मुख्य ।

(७) नैसर्गिक बल ,, =स्वजाति धर्मं का विशेष प्रतिपादन ।

रश्मि का विशेष फल

(१) पशु पालन संख्या—उच्च रश्मि और चेष्टा का योग कर उसका आधा करे इसे पूर्वं प्राप्त योग में गुणा कर ६० का भाग देना जो लब्धि आये वह संख्या, नर, अश्व, गज, गौ आदि पोष्य वर्ग जानने, अर्थात् इतने जीवों का वह पालन करेगा ।

(२) राजयोग में रश्मि का विचार—पहिले रश्मियोग का फल कहा है । आगे राजयोग का फल भी बताया गया हैं । परन्तु राजयोग में रश्मियोग के फल का भी विचार करना तब ही उस का यथार्थ फल प्रगट होगा ।

(३) भाव फल में रश्मि विचार—आगे जो भाव फल बताये गये हैं उन का शुभाशुभ विचारने में रश्मि का भी फल विचारना । रश्मि फल के अनुपात से शुभाशुभ फल अधिक या अल्प होगा । रश्मि फल को जोड़ या घटा कर निर्माण करना ।

(४) राजयोग में रश्मि का और विचार—जो आगे राजयोग के फल बताये हैं ब्राह्मण के हों और उत्तम रश्मि योग हो तो वह यज्ञ कर्मादि निष्ठ हो जिसके पुण्य प्रताप से स्वर्ग प्राप्त करे ।

रश्मि साधन

पिछले गणित खंड में उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि साधन करना बताया है यहां रश्मि साधन में कुछ भिन्नता है । वृहत्पाराशरी में इस प्रकार रश्मि साधन करना बताया है—

(ग्रह स्पष्ट—ग्रह नीच) शेष ६ से अधिक हो तो षड़भाल्प करने को १२ राशि से घटा कर जो शेष बचे वह लेना ।

इस से शेष में उस ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर ६ का भाग देने से लब्धि रश्मि प्राप्त होती है । ग्रहों के ध्रुवांक ये हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रश्मि ध्रुवांक	१०	९	५	५	५	८	५

यहां बताये ध्रुवांक से परमोच्च की रश्मि प्राप्त होती है । मध्य की रश्मि अनुपात से निकाल लेना ।

विशेष संस्कार

यदि ग्रह उच्च में हो तो उक्त विधि से प्राप्त रश्मि संख्या				× ३
" मूल त्रिकोण	"	"	"	× २
" स्वराशि	"	"	"	× $\frac{3}{2}$
" अधिमित्र	"	"	"	× $\frac{4}{3}$
" मित्र	"	"	"	× $\frac{6}{5}$
" शत्रु	"	"	"	× $\frac{1}{2}$
" अधिशत्रु	"	"	"	× $\frac{2}{5}$
" समगृही	"	"	"	= पूर्व प्राप्त रश्मि ही लेना ।

इस प्रकार सब ग्रहों की रश्मि निकाल कर सब को योग करना । जिस प्रकार ग्रहों में रश्मि निकाली गई है उसी प्रकार षड्वर्ग से भी रश्मि निकाली जाती है ।

होरा, नवांश, त्रिशांश, द्वादशांश आदि से भी रश्मि निकालने के पूर्व प्राप्त रश्मि में षड्वर्ग के अनुसार मैत्री का विचार कर देखना कि वह वर्गस्वामी पंचधा मैत्री में सूर्य आदि ग्रह (जिसकी रश्मि प्राप्त हुई है) उसकी मित्र शत्रु या सम आदि है । उस मैत्री के अनुसार पूर्व प्राप्त रश्मि में विशेष संस्कार करना पड़ता है तब उस वर्ग की प्रत्येक ग्रह की रश्मि जानी जाती है ।

केशवीय जातक में उच्च रश्मिसाधन कुछ भिन्न प्रकार से इस प्रकार बताया है—

(ग्रह स्पष्ट—नीच) = शेष से अधिक हो तो षड्भाल्प कर ग्रहण करना अर्थात् १२ राशि से घटाकर ग्रहण करना । पश्चात् ६ का भाग देना तब उच्च पल कलादि में प्राप्त होता है । इसमें ६ गुणा कर १ अंश जोड़ने से उच्च रश्मि होती है । यहाँ ६ का भाग देने की विशेष रीति है—शेष में २ का गुणा कर राशि के अंश बना कर ६ का भाग देने से उच्च पल आता है या शेष की राशि को अंश बनाकर ३ का भाग दे देने से भी उच्च पल प्राप्त होता है । यहाँ बताई रीति में कुछ भिन्नता है एवं कुछ अधिक संस्कार है ।

यहाँ ६ का भाग देना बताया है वह उपरोक्त विशेष रीति से ही देना उचित है या सबके अंश बना कर ३ का भाग देने से काम चल जायगा ।

उदाहरण—

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	११– ५–४०–४५	१०–२–७–५५	७–१२–२९–४४	१०–२०–५६–५६	९–१३–३४–९	११–१३–३३–४८	४– ८–३९–४८
—वि.	६–१०	७– ३	३–२८	११–१५	९–५	५–२७	०–२०
	=५–२५–४०–४५	२–२९–७–५५	३–१४–२९–४४	११– ५–५६–५६	०–८–३४–९	५–१६–३३–४८	३–१८–३९–४८
	° ′ ″	° ′ ″	° ′ ″	बहुभाल्प		° ′ ″	° ′ ″
	= १७५–४०–४५	=८९– ७–५५	=१०४–२९–४४	=०–२४–३–४	=८–३४– ९	=११६–३३–४८	=१०८–३९–४८
	÷ ३	÷ ३	÷ ३	÷ ३	÷ ३	÷ ३	÷ ३
	= ५८–३३–३५	=२९–४२–३८	=३४–४९–५४	=८–१–१	=२–५१–२३	=५५–३१–१६	=३६–१३–१६
	× १०	× ९	× ५	× ५	× ७	× ९	× ५
	=५८५–३५–५०	२६७–२३–४२	७१४ –९–३०	४०–५–५	१९–५९–४१	४९९–४१–२४	१८१– ३–२०
	=९°–४५′–३५″	=४°–२७′–२३″	=२°–५४′–९″	=०°–४०′–५″	=०°–१९′–५९″	=८°–१९′–४१″	=३°–१′–६″
साधारण रश्मि							

साधारण रश्मि

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५९	८–१९–४१	३–१–६

अब पूर्व प्राप्त रश्मि में पञ्चधा मैत्री के अनुसार षड्वर्ग में इसका संस्कार करना है। इसके लिये आगे षड़बर्ग चक्र उपरोक्त ग्रहों का दिया है जिनमें मैत्री भी बताई है।

षड्वर्ग चक्र—

वर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	३	१२ गु.	११ श.	८ मं.	११ श.	१० श.	१२ गु.	५ सूर्य
		अधिमित्र	शत्रु	स्व०	शत्रु	उच्च	अधिशत्रु	अधिशत्रु
२ होरा	४	४ चन्द्र	५ सू.	४ चंद्र	४ चंद्र	४ चन्द्र	४ चन्द्र	५ सूर्य
		अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिशत्रु	उच्च	सम	अधिशत्रु
३ द्रेष्काण	११	१२ गु.	११ शनि	१२ गु.	७ शुक्र	२ शुक्र	४ चंद्र	५ सूर्य
		अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु
४ नवमांश	१	५ सूर्य	५ सूर्य	७ शुक्र	१ मंगल	२ शुक्र	८ मंगल	३ बुध
		स्व०	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	सम
५ द्वादशांश	११	२ शुक्र	११ शनि	१२ गु.	७ शुक्र	३ बुध	५ सूर्य	८ मंगल
		अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम
६ त्रिंशांश	३	६ बुध	१ मंगल	१२ गुरु	३ बुध	१२ गुरु	१२ गुरु	११ शनि
		मित्र	मित्र	अधिमित्र	स्व०	स्व०	उच्च	मूलत्रि०

वर्ग-रश्मि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
(१) गृह	९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५९	८–१९–४१	३–१–६
	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	शत्रु × $\frac{१}{२}$	स्व × $\frac{१}{२}$	शत्रु × $\frac{१}{२}$	शत्रु × $\frac{१}{२}$	उच्च × ३	अधिशत्रु × $\frac{२}{५}$
	=१३–०–४६	=२–१३–४१	=४–२१–१३	=०–२०–२	=०–९–५९	=२४–५९–३	=१–१२–२६
(२) होरा	९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५१	८–१९–४१	३–१–६
	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	अधिशत्रु × $\frac{२}{५}$	उच्च × ३	सम	अधिशत्रु × $\frac{२}{५}$
	=१३–०–४६	=५–५६–३०	=३–५२–१२	=०–१६–२	=०–५९–५७	=८=१९–४१	=१–१२–२६
(३) द्रेष्काण	९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५९	८–१९–४१	३–१–६
	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	शत्रु × $\frac{१}{२}$	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	अधिमित्र × $\frac{४}{३}$	सम	सम	अधिशत्रु × $\frac{२}{५}$
	=१३–०–४६	=२–१३–४१	=३–५२–१२	=०–५३–२६	=०–१९–५९	=८–१९–४१	=१–१२–२६
(४) नवमांश	९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०१९–५९	८–१९–४१	३–१–६
	स्व० × $\frac{१}{२}$	मित्र × $\frac{६}{५}$	शत्रु × $\frac{१}{२}$	मित्र × $\frac{६}{५}$	सम	शत्रु × $\frac{१}{२}$	सम
	=१४–३८–२२	=५–२०–६१	=१–२७–४	=०–४८–६	=०–१९–५९	=४–९–५०	=३–१–६

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
(५) द्वादशांश	९–४५–३५	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५९	८–१९–४१	३–१–६
	अधिशत्रु × २/५	शत्रु × १/२	अधिमित्र × ४/३	अधिमित्र × ४/३	सम	अधिमित्र × २/५	सम
	=३–५४–१४	=२–१३–४१	=३–५२–१२	=०–५३–२६	=०–१९–५९	=३–१९–५२	=३–१–६
(६) त्रिशांश	९–४५–३	४–२७–२३	२–५४–९	०–४०–५	०–१९–५९	८–१९–४१	३–१–६
	मित्र × ६/५	मित्र × ६/५	अधिमित्र × ४/३	स्व० × ३/२	स्व० × १/२	उच्च × ३	मूल वि० × २
	=११–४२–४२	=५–२०–५१	=३–५२–१२	=१–०–७	=०–२९–५८	=२४–५९–३	=६–२–१२

षड्वर्गज रश्मि-चक्र

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	योग
१ गृह	१३–०–४६	२–१३–४१	४–२१–१३	०–२०–२	०–९–५९	२४–५९–३	१–१२–२६	=४६–१७–१०
२ होरा	१३–०–४६	५–५६–३०	३–५२–१२	०–१६–२	०–५९–५७	८–१९–४१	१–१२–२६	=३३–३७–३४
३ द्रेष्काण	१३–०–४६	२–१३–४१	३–५२–१२	०–५३–२६	०–१९–५९	८–१९–४१	१–१२–२६	=२९–५२–११
४ नवमांश	१४–३८–२२	५–२०–५१	१–२७–४	०–४८–६	०–१९–५९	४–९–५०	३–१–६	=२३–२४–१९
५ द्वादशांश	३–५४–१४	२–१३–४१	३–५२–१२	०–५३–२६	०–१९–५९	३–१९–५२	३–१–६	=१७–३४–३०
६ त्रिशांश	११–४२–४२	५–२०–५१	३–५२–१२	१–०–७	०–२९–५८	२४–५९–३	६–२–१२	=५३–२७–५

मतांतर—ग्रह की गति के अनुसार भी रश्मि में संस्कार करना बताया है—

ग्रह वक्री आरम्भ=रश्मि × २

ग्रह की अंतभाग=रश्मि—$\frac{\text{रश्मि}}{८}$

ग्रह वक्री मध्यभाग=अनुपात से

ग्रह मंदगति=रश्मि—$\frac{\text{रश्मि}}{१०}$

ग्रह बहुत मंद गति—$\frac{\text{रश्मि}}{८}$

ग्रह की शीघ्र गति=रश्मि—$\frac{\text{रश्मि}}{६}$

शीघ्रतर गति=रश्मि—$\frac{\text{रश्मि}}{४}$

राजयोग और दरिद्रयोग में रश्मियोग का विशेष संस्कार

राजयोग करनेवाले ग्रह और दरिद्रयोग करनेवाले ग्रह की रश्मि को लेकर राजयोग रश्मि से दरिद्र रश्मि घटाना, जो राजयोग ग्रह की रश्मि शेष रहे वही स्पष्ट जानना। इसी प्रकार शुभ, अशुभ, शत्रु, मित्र आदि ग्रहों या रश्मि के सम्बन्ध से उपरोक्त विचार करना।

इसी प्रकार कई इष्ट बल कष्ट बल में पृथक-पृथक ग्रह रश्मि का गुणा कर इष्ट रश्मि और कष्ट रश्मि बनाकर उस पर से शुभाशुभ फल का विचार करते हैं।

अध्याय ९

फल का स्थूल विचार

पिछले अध्यायों में फलित विचारने के लिए किन-किन बातों का विचार करना आवश्यक है यह बताया गया है। रश्मिफल, भावफल, ग्रहफल, दृष्टिफल आदि फल विचारने की अनेक बातें आगे बताई जायगीं।

यहाँ फलित का स्थूल विचार दिया जाता है। जिसको जान लेने से फलित विचारने में सहायता मिलती है। यह बात ध्यान रहे कि परिस्थिति वश इस स्थूल में भी परिवर्तन हो सकता है।

ग्रहों का मित्र, शत्रु, स्व, उच्च, नीच आदि जिस प्रकार की राशि में है वैसा विचार कर फल कहना पड़ता है।

१—भाव में पाप ग्रह हो—पापफल, भाव की हानि, विचारणीय विषय का नाश।

२—भाव में पाप युक्त या पाप दृष्ट=फल हानि।

३—भाव में पाप ग्रह नीच का=सब फल नाश।

४—भाव में शुभ ग्रह=भावफल की वृद्धि।

५—भाव में मिश्रित ग्रह=मिश्रफल (अच्छा और बुरा मिला हुआ फल)।

६—पापग्रह यदि मित्रराशि में या उच्च में=शुभ फल।

७—शुभग्रह यदि शत्रु राशि में, नीचराशि में या अस्त हो=क्रूर फल

८—कोई ग्रह नीच या शत्रु गृही पाप युक्त या अस्त हो=हानिकारक है, बुरा फल देता है।

९—कोई ग्रह दुष्ट स्थान में हो या शत्रु गृही या नीच नवांशक में हो=अशुभ फल।

१०—पापग्रह भी मूलत्रिकोण उच्च या मित्रगृही हो तो=भाव शुभ फल देता है, उस भाव की वृद्धि करता है।

११—पापग्रह भी जब केन्द्र, त्रिकोण जैसे अच्छे घर में हों=अच्छा फल देते हैं।

१२—पापग्रह भी योगकारक ग्रह (उन्नति करनेवाले ग्रह) से सम्बन्ध हों तो अच्छा फल देते हैं।

१३—अच्छे या बुरे भाव किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट न हों तो मध्यम फल देते हैं।

१४—जो भाव शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हों या पापग्रह युक्त या दृष्ट न हो तो शुभ फल देते हैं।

१५—भाव में नीच या शत्रु क्षेत्री या अस्त ग्रह हो तो भाव फल निष्फल।

१६—मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री या उच्च या मूलत्रिकोण का ग्रह=फल वृद्धि करता है। स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, अधिमित्रक्षेत्री या उच्च का ग्रह=शुभ दायक है।

१७—कोई ग्रह स्व या उच्च का हो और उसी समय मित्रग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो धन युक्त राजा सरीखा पद देता है।

१८—ग्रह अपने उच्च या मित्र के नवांश या राशि में शुभग्रह से दृष्ट हो तो शुभ फल देता है।

१९—ग्रह उच्च का हो तो इष्टबल देता है, परन्तु परमोच्च हो तो उस भाव का उत्तम फल देता है, मूलत्रिकोण का उससे मध्यम फल देता है।

मूलत्रिकोण ग्रह उच्च से अधिकार में कम है परन्तु यह अपने अधिकार में उत्तम फल देता है उच्च के बराबर ही बलवान् होता है।

२०—उच्च, मित्र या बली ग्रह से युक्त या दृष्टग्रह=शुभ होता है।

२१—स्वक्षेत्री उच्च या शुभवर्ग का ग्रह भाव को पुष्ट करता है।

२२—ग्रह समक्षेत्री हो तो सम फल देता है।

२३—स्वक्षेत्री, उच्च, मित्रक्षेत्री ग्रह षड्बल में बलवान भी हो तो भी यदि संधि में हो तो भाव का पूर्ण फल नहीं देता।

२४—सूर्य से उदय ग्रह यदि वक्री होकर निर्मल कान्ति हो तो अच्छा फल देता है।

२५—पंच तारा (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) यदि वक्री हों तो साधारण अशुभ है।

२६—जिन ग्रहों के २ स्वस्थान हैं उनमें जो उसका मूलत्रिकोण हो उसका प्रभाव रहेगा उसी का फल जान पड़ेगा।

२७—ऐसे २ स्थान वाले ग्रह की दशा में उसके दोनों भावों का फल होगा पूर्वार्द्ध में दशाकाल में जो क्रम से आता हैं उसका फल रहेगा। इसमें विषम घर में उस ग्रह का फल पहिले अनुभव होगा। सम राशि का बाद में।

२८—भावेश अपने घर में हो या स्वस्थान पर उसकी दृष्टि हो या उसका स्वस्थान शुभयुक्त या दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि करता है। अर्थात् भावेश युक्त या दृष्ट या शुभयुक्त या दृष्ट भाव की वृद्धि होती हैं।

२९—भावेश स्वस्थानी, उच्च या मूलत्रिकोण का हो तो अच्छा फल देते हैं अन्यथा शुभ फल नहीं देते

३०—कोई भाव अपने भावेश से युक्त या दृष्ट न हो तो मध्यम फल देते हैं।

३१—पाप ग्रह और भावेश के शत्रु से युक्त या दृष्ट ग्रह अनिष्ट फल देता है।

३२—शुभ भाव के स्वामीयुक्त या दृष्टभाव जो पापयुक्त न हो, शुभ फल देते हैं।

३३—पापयुक्त, पाप भाव के स्वामीयुक्त, या पापदृष्ट, नीचगत, अस्तंगत, हीनबल ग्रह अशुभ फल देते हैं।

३४—पापयुक्त या दृष्ट भाव की हानि होती है। परन्तु ६-८-१२ भाव में विपरीत फल होता हैं।

३५—भावेश शत्रु गृही या नीचराशि में हो, शुभयुक्त या दृष्ट न हो तो उस भाव का नाश होता है।

३६—भावेश अष्टम में हो या अस्त, नीच या शत्रु गृही हो, कोई शुभयुक्त या दृष्ट न हो तो उस भाव की हानि होती है। इसमें उस भाव से उस भाव का स्वामी अष्टम हो या लग्न से अष्टम हो, दोनों प्रकार से विचारना।

३७—यदि शुभ ग्रह भी सिवाय भावेश के उपरोक्त प्रकार से भाव में हो तो भाव-फल अच्छा नहीं देता। यदि पापग्रह उपरोक्त प्रकार से हो तो उस भाव का फल पूर्ण नाश हो।

३८—किसी भाव का स्वामी जिस राशि में है उस राशि का स्वामी दुष्ट स्थान में हो तो वह भाव दुर्बल हो जाता है।

३९—भावेश को छोड़कर अन्य ग्रह कुछ शुभ, कुछ अशुभ हो तो उस भाव का फल मिश्र होता है।

४०—भावेश यदि पापग्रह हो तो उससे युक्त या दृष्ट भाव जब वे नीच में या अस्तंगत या शत्रु गृही न हों तो शुभ फल देते हैं।

४१—भावेश या उसके मित्र या शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट भाव हो तो फल की वृद्धि होती है।

४२—भावेश पापयुक्त या दृष्ट हो या उसके घर में पापग्रह हो या पापदृष्टि हो तो बुरा फल होता है। उस भाव के फल का ह्रास होता है।

४३—शुभ राशिवाले भाव के स्वामी उन भावों में हों और वे पापयुक्त या दृष्ट न हों तो उस भाव की वृद्धि होती है।

४४—कोई भावेश पापग्रह और शुभ ग्रह दोनों से युक्त या दृष्ट हो या उस भाव में शुभ और पापग्रह दोनां हों या उनकी दृष्टि हो तो मिश्रफल होगा।

४५—कोई भावेश शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो या वह भाव शुभयुक्त या दृष्ट हो तो उस भाव का शुभफल होता है।

४६—किसी भाव में शुभग्रह हो या शुभस्थान के स्वामी से युक्त या दृष्ट यह भाव हो यदि उस भाव में दुष्टग्रह या दुष्टभावेश युक्त या दृष्टि न हो तो वह भाव अच्छा फल देता है। यदि वह भाव बुरा घर है तो भी अच्छे ग्रहों के प्रभाव से अच्छा हो जाता है।

४७—शुभ ग्रह जैसे शुभ या अशुभ स्थान में हो उसके शुभ या अशुभ फल को बढ़ाते हैं और अशुभ ग्रह अच्छे या बुरे दोनों प्रकार के फलों को घटाते हैं। इसलिये शुभग्रह शुभ स्थान मे अतिशुभ और अशुभ ग्रह अशुभ स्थान में हो तो अशुभ फल को कम करने के कारण अच्छे होते हैं तथा शुभ घर में बैठकर उसके शुभ प्रभाव को घटाने के कारण हानिकारक हैं।

४८—ग्रह जिस भाव को देखता है उसके बल को बढ़ाता है। विशेषकर जब किसी भाव का स्वामी होकर उस भाव पर दृष्टि डाले तो उत्तम है।

४९—कोई भावेश अपने मित्रस्थान, स्वगृह, मूलत्रिकोण या उच्च में हो तो अच्छा फल देता है। यदि शत्रुस्थान या नीचगृही हो तो बुरा फल देता है।

५०—भावेश उच्च स्थान में हो और नवांश में नीच स्थान में आ जावे तो उस भाव का फल लाभजनक नहीं होगा। यह शीघ्र नीच फल देता है।

५१—किसी भाव का स्वामी नीच में हो परन्तु नवांश में उच्च का हो जाये तो उस भाव का फल अच्छा होगा।

५२—ग्रह केन्द्र, त्रिकोण व लाभ में बली होकर शुभ फल देते हैं।

५३—शुभ ग्रह केन्द्र, त्रिकोण और लग्न में आयु बढ़ाते हैं।

५४—केन्द्र और त्रिकोण के स्वामियों से शुभ सम्बन्ध करने वाला ग्रह शुभ होता है।

५५—ग्रह जो ३, ६, ११, २, ७, ८ भाव के स्वामी न हों शुभ होते हैं।

५६—ग्रह जो १, ४, १०, ११ भाव में हो और जिसे हर्षबल प्राप्त हुआ हो शुभ होता है।

५७—भावेश अस्तंगत या नीच का हो तो केन्द्र, त्रिकोण में रहने पर भी शुभ फल नहीं देता परन्तु अड़चन और कष्ट के उपरांत फल देता है।

५८—भावेश अनिष्टकारी होने पर भावस्थित ग्रह उतना उपकारी नहीं होता क्योंकि भावस्थित ग्रह तो उसका किरायेदार के समान है असली उस भाव का मालिक तो भावेश ही है। इससे भाव में वैसा शुभग्रह उस भाव को बाहरी चमक अवश्य देता है;

परन्तु भावेश बुरा होने पर उत्पन्न सच्चे फल की प्राप्ति में अड़चन होती है । इससे पहिले भावेश से फल का विचार करना ।

५९—भावेश और भाव बलरहित हो और उस भाव का कारक पापग्रह के बीच में हो या पापयुक्त या पापदृष्ट हो या शत्रुग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव का फल नाश हो जाता है, दूसरे प्रकार से नहीं ।

६०—कोई भाव जहाँ लग्नेश हो उस भाव की उन्नति होती है ।

६१—भावेश लग्न से केन्द्र त्रिकोण या लाभ में हो या किसी भाव से उस भाव का भावेश १–५–९–११ स्थान में हो तो उस भाव की वृद्धि होती है ।

६२—भावेश उच्चादि वर्ग में प्राप्त होकर बलवान् हो तो उस भाव की पुष्टि होती है ।

६३—लग्न आदि प्रत्येक भाव से विचार करना कि उस भाव से त्रिकोण या ४-७-१० घर में शुभग्रह या उसका स्वामी हो और वहाँ पापग्रह का योग या दृष्टि न हो तो उस भाव का सब फल शुभ होता है या भाव पुष्ट होता है । यदि ऐसा न हो तो उन-उन भावों का नाश समझना । मिश्रग्रह युक्त हो तो मिश्रफल होता है ।

६४—किसी भावेश के साथ नवमेश हो तो लाभजनक है ।

६५—कोई भावेश शुभग्रह हो और लग्न से तीसरे घर में हो तो साधारण फल देता है ।

६६—कोई भावेश जहाँ हो उस भाव का स्वामी दुष्टस्थान में हो तो मूलभाव को निर्बल करता है । यदि वह उच्च, मित्रराशि या स्वराशि में हो तो उस भाव की पुष्टि करता है ।

६७—जिस भाव से ११, २, ३, स्थान में गत उस भावेश के मित्र या उसके उच्चस्थान के स्वामी हों और वे ग्रह अस्त, शत्रुगृही या नीच गत न हों तो उस भाव को पुष्ट और बलवान् करते हैं ।

६८—जो भावेश अपने अंश के बराबर होकर जिस भाव में हो उस भाव का पूर्ण फल देता है । भाव से अल्प या अधिक ग्रह का अंश हो तो अनुपात से उसके फल का अनुमान करना ।

६९—भावेश से ग्रहों के पापत्व और शुभत्व में अन्तर इस प्रकार पड़ जाता है—

(अ) केन्द्रेश—पाप ग्रह हो = शुभ फल देता है ।
शुभ ग्रह हो = अशुभ फल देता है

(ब) त्रिकोणेश—चाहे पाप या शुभ ग्रह हो = सदा शुभ ।

(स) केन्द्र में उत्तरोत्तर १–४–७–१० भाव क्रम से बली होते हैं । अर्थात् लग्नेश और चतुर्थेश पापग्रह हों तो लग्नेश की अपेक्षा चतुर्थेश शुभ फल देने में अधिक समर्थ होगा और दशमेश पाप ग्रह हो तो सबसे उत्तम फल देगा । इसी प्रकार लग्नेश और चतुर्थेश शुभग्रह हो तो लग्न की

अपेक्षा चतुर्थेश पापफल देने में अधिक बलवान् होगा। दशमेश यदि शुभ-ग्रह हो तो सब से अधिक हानिकारक होगा। दशमेश से कम सप्तमेश उससे कम चतुर्थेश उससे कम लग्नेश शुभग्रह होने पर हानिकारक होंगे।

(द) त्रिकोण में पंचमेश से नवमेश बली है।

७०—लग्न से ५, ९, ४, ७ वां स्थान शुभयुक्त या दृष्ट हो, पापयुक्त या दृष्ट न हो तो पूर्ण शुभ, यदि पापग्रहों का योग व दृष्टि हो तो भाव के शुभ फल का ह्रास हो जाता है। शुभ पाप दोनों प्रकार के ग्रहों के योग व दृष्टि से मिश्रफल होता है।

७१—किसी भाव से त्रिकोण (५–९) और २, ४, ७, १० भावों में शुभग्रह हो और पाप दृष्टि न हो या भावेशयुक्त हो, पापयुक्त न हो तो वह भाव पुष्ट होता है। इसके विरुद्ध होने से भावफल नाश होते हैं, मिश्रग्रह होने से भावफल मिश्रित होता है।

७२—ग्रह एक दूसरे से –६–८–१२ घर में हो तो बुरे होते हैं। कुछ हद तक बुरा प्रभाव डालते हैं।

७३—३, ६, ८, १२ भाव के स्वामी जिस भाव के साथ हों बुरे होते हैं ५, ९, भाव के स्वामी अच्छे होते हैं।

७४—४, ९, ११, २ भाव के स्वामी लग्न के सम्बन्धी हों और अधिक बलवाले हों तो भाग्योदय करते हैं, कार्य सिद्ध होता है। ये भावेश बलवान और लग्न से सम्बद्ध हों तब पूर्ण फल देते हैं। यदि निर्बल हों तो दुःख देते हैं। मिश्रित हों तो मिश्रफल देते हैं। इनका भाव कारक ग्रह, भावेश और भावगत ग्रह निर्बल हो तो विशेष कष्ट-दायक होते हैं।

७५—भावेश त्रिकोण या स्वस्थानी या ४, ७, १० घर में शुभयुक्त हो, पापग्रह की दृष्टि न हो, नवम घर के स्वामी से युक्त हो और पापयुक्त न हो तो उस भाव की उन्नति होती है।

७६—जो ग्रह लग्न को देखे वह सुख और धन देता है।

७७—भाव में शुभ ग्रह का षड्वर्ग शुभ होता है। पापग्रह का षड्वर्ग अशुभ होता है।

७८—षड्वर्ग में बली ग्रह अर्थात् स्वक्षेत्री या अपने मित्र के द्रेष्काण, नवांश, त्र्यंश आदि में स्थित ग्रह शुभ होता है।

७९—षड्वर्ग में निर्बल ग्रह अर्थात शत्रुक्षेत्री आदि ग्रह अशुभ होते हैं।

८०—पंचम घर में कर्क लग्न के नवांश या द्वादशांश में जो ग्रह हो वह शुभ फल देता है।

८१—नवम घर में जो राशि हो उसके नवांश या द्वादशांश में जो ग्रह हो वह यदि गुरु के द्रेष्काण में हो तो उसकी दशा शुभ होती है।

८२—चतुर्थ भाव के नवांश या द्वादशांश में जो ग्रह अपने या चौथे लग्न के द्रेष्काण में हो उसकी दशा में शुभ फल होता है।

८३—ग्रह जिस भाव में है उसका अधिकार सप्तवर्ग में जो है उस भाव के अधिकार प्रमाण अच्छा या बुरा पूर्ण फल देते हैं।

८४—भावेश अपने भावस्थान में हो और वही कारक हो तो अच्छा फल देता है।

८५—कोई भावेश और उसका कारक भी बली हो तो अच्छा फल देगा।

लग्नेश विचार

१—जिस भाव में लग्नेश हो उस भाव के फल की वृद्धि होती है। यदि वह भाव या उसका भावेश बली हो तो भावफल अच्छा देगा। बलहीन हो तो दुःख देगा।

२—परन्तु लग्नेश जिस भाव में अष्टमेश से युक्त हो उस भाव की हानि होती है।

३—लग्नेश जिस भाव-स्वामी के साथ हो उस भाव का फल देगा। यदि यह भाव या भावेश बली हो तो अच्छा फल देगा बलहीन हो तो दुःख देगा।

४—लग्नेश पापग्रह हो तो वह जहाँ हो उस भाव के फल को बढ़ायेगा। यदि वह ६-८-१२ भाव का स्वामी हो तो लग्न के स्वामित्व का फल बढ़ेगा न कि दूसरे का जैसे लग्नेश मंगल सिंहराशि का पंचम में हो और शुभग्रहों की दृष्टि हो तो बहुत शीघ्र पंचमभाव का फल देगा।

५—ग्रह अष्टमेश होकर लग्नेश भी हो तो शुभ समझा जाता है।

६—लग्नेश के साथ जो ग्रह हो या जो ग्रह लग्नेश को देखे उस ग्रह का स्वस्थान क्या है मालूम करें, इन्हीं भावों के प्रभाव का फल लग्नेश के प्रभाव से बढ़ेगा।

७—जो भाव लग्नेश के अष्टकवर्ग में बहुत शुभ रेखा लिये हो यदि उससे सम्बन्धित स्वामी बली हो और लग्नेश के साथ हो तो फल सुखप्रद होता है।

८—लग्नेश लग्न में हो, स्वनवांश में हो व सब ग्रहों में बली हो उसका जो रूप, गुण, स्वभाव आदि लग्न से विचारणीय बातें हैं वह बहुत करके उस ग्रह के प्रभाव से होते हैं।

९—लग्नेश लग्न में न होकर दूसरी जगह हो यह जिस ग्रह के नवांश में हो उस ग्रह सरीखा भावफल देता है।

१०—लग्नेश गुरु हो, लग्न में हो तो लग्न बलवान् हो जाता है। यदि उस गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो, लग्न और बली हो जाता है परन्तु और ग्रहों की दृष्टि लग्न पर नहीं होती।

११—लग्नेश शुभग्रह युक्त शुभराशि में व मित्रगृही या उच्च में हो तो लग्न शुभ वर्गाधिक्य होने से इनके सम्बन्ध के सब शुभ फल होंगे।

१२—लग्नेश ६-८-१२ भाव के स्वामियों के साथ हो तो बुरा है।

१३—लग्नेश बलहीन हो और उसमें पापग्रह हो तो और बुरा है, रोगी रहेगा।

१४—लग्नेश बलहीन होकर केन्द्र, त्रिकोण में हो तो बुरा स्वास्थ्य रहे।

१५—लग्नेश जहां हो उस भाव का स्वामी ६-८-१२ भाव में हो तो शरीर रोगी रहे।

१६—बली लग्नेश शुभग्रह युक्त या दृष्ट होकर जिस भाव में हो उस भाव का विशेष शुभ फल और यदि नीच या शत्रुगृही हो तो अशुभ फल होगा।

१७—लग्नेश अष्टम हो तो स्वास्थ्य बिगड़ेगा परन्तु शत्रुदृष्टि हो तो बुरा फल नहीं होता।

लग्न

१—लग्न में जो ग्रह है उस सरीखो भावोक्त बातें होती हैं। यदि वहां २–४ ग्रह हों तो उनमें से जो बली हो उसी सरीखा फल होगा। ग्रहों के आयुप्रमाण से जो बली हो उस ग्रह का गुण दोष आगे होगा उसकी अपेक्षा कम बल वाले का प्रभाव होगा।

२—लग्न अधिक पापवर्ग हो, उसका स्वामी पाप या पापराशिगत या शत्रु-राशि व नीचराशि में हो तो लग्न सम्बन्धी अनिष्टफल होगा। एक प्रकार से शुभ और अन्य प्रकार से अशुभ हो तो मिश्रफल होगा। जैसे लग्नेश शुभराशि में नीच व शत्रुराशि गत हो या लग्नेश पापराशि में मित्र या उच्चराशि में हो तो मिश्रफल होगा।

३—इसी प्रकार द्वितीय, तृतीय आदि भाव के सम्बन्ध में विचारना।

४—लग्न पापग्रह युक्त और अस्तंगत हो तो निर्बल होकर दुष्टफल देता है।

५—लग्न के पूर्वार्द्ध में जो लग्न है वह प्रत्यक्ष फल देता है। परार्द्ध में जो ग्रह है वह परोक्ष फल देता है।

६—लग्न व लग्नेश दोनों पूर्णबली हों तो फल वृद्धि हो। दोनों बलहीन हों तो फल की हानि हो।

७—लग्न स्वद्वादशांश या स्वद्रेष्काण में हो तो वह शुभ होता है।

८—लग्न और उसका नवांश आरम्भ में पूर्ण फल देता है। मध्य में मध्यम और अन्त में अशुभ फल देता है।

९—लग्न में सौम्य ग्रह का नवांश शुभ होता है। पाप या शत्रुराशि का नवांश अशुभ होता है।

१०—लग्न में पापग्रह हो तो स्वास्थ्य बिगड़े।

११—लग्न में शुभ राशि हो तो दीर्घायु एवं सुखी हो।

१२—लग्न को लग्नेश देखता हो तो धन और कीर्ति की वृद्धि हो।

भाव से २–१२ स्थान (द्विर्द्वादश योग)

१—यदि किसी भाव का स्वामी या किसी भावविशेष में एक ओर शुभ ग्रह हो दूसरी ओर भी शुभ ग्रह हो अर्थात् शुभ ग्रहों से घिरा हो तो उस भाव के फल की वृद्धि होगी। जैसे चतुर्थ स्थान लो, इसके पहिले अर्थात् तीसरे भाव में और आगे पंचम भाव में शुभग्रह हो तो शुभ ग्रहों के बीच यह चतुर्थ भाव हुआ।

२—यदि कोई भाव दोनों ओर से पाप ग्रहों से घिरा हुआ हो तो उस भाव का फल नष्ट होगा।

३—यदि एक ओर शुभग्रह दूसरी ओर अशुभग्रह हो तो मिश्रफल होगा।

२ और १२ भाव पर विचार

१—व्ययेश और धनेश अपने स्वभाव के अनुसार फल नहीं देते। ये भाव, भावेश और राशि के अनुसार फल देते हैं।

(अ) जिस प्रकार शुभ या अशुभ घर में हो।

(आ) जिस प्रकार शुभ या अशुभ भावेश के साथ हो।

(इ) या जिस स्थान का स्वामी हो वह राशि जैसी शुभ या अशुभ हो उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं।

अर्थात् (क) द्वितीयेश के साथ जो ग्रह हो वह अपना ही फल देगा यदि वहाँ बहुत ग्रह हों तो उनमें जो बली हो उसके अनुसार द्वितीयेश फल देगा।

(ख) यदि किसी ग्रह का साथ न हो तो जिस अन्य स्थान का स्वामी हो उसी के अनुसार फल देगा।

(ग) यदि वह अन्य दूसरे स्थान का स्वामी भी न हो जैसे सूर्य और चंद्र जिनका एक ही स्वस्थान है तो द्वितीयेश जिस भाव में बैठा हो उसके अनुसार फल देगा।

(घ) यदि ये योग न हों तथा अन्य स्थान का स्वामी भी न हो और अपने स्थान में ही हो तो वह अपने स्वभाव के अनुसार ही शुभ या अशुभ फल देगा।

२—इसी प्रकार व्ययेश का फल भी विचारना।

३—२-१२ भाव के स्वामियों का अपना कोई विशेष गुण-दोष नहीं है। ये स्वामी जिस भाव में पड़े हों, जिस ग्रह के साथ हों, जिस भाव में पड़े हों, उस भाव का स्वामी किस भाव में पड़ा है इन तीनों रीति से उस के गुण दोष विचारना अर्थात् शुभ स्थान में शुभ युक्त हो तो शुभ, अशुभ स्थान (६.८.१२ भाव) या अशुभ ग्रह युक्त हो तो अशुभ होता है।

धनभाव

१—धनेश धन रखनेवाला है उसके साथ यदि पापी (दुष्ट) रहता है तो उसके धन को समय पाकर नष्ट कर देता है और यदि उसके साथ शुभ अर्थात् शुभचिंतक रहे तो उसके धन की रक्षा करेगा इस कारण धनेश अपने साथी के अनुसार फल देता है। इससे द्वितीयेश अपने साथी, स्थिति और दृष्टि के अनुसार अच्छे या बुरे हो जाते हैं।

२—धनेश जहाँ हो उस भाव राशि की जगह में विशेष वृद्धि करते हैं। वह राशि जिस दिशा की है उस ओर से द्रव्यलाभ होता है। यदि वक्री हो तो सब दिशाओं में लाभ हो।

३—द्वितीयभाव में अच्छा ग्रह हो और द्वितीयेश शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में उन्नति होगी। शुभ वार्ता सुनने का आनंद होता है।

४—द्वितीयेश पापग्रह हो पापयुक्त हो तो दशा-अंतर्दशा में अग्नि, शस्त्र, चोर आदि लोक के द्वारा हानि हो साधारण असुख हो।

५—द्वितीयेश पापग्रह हो तो जब उस राशि में बुरे ग्रह आवें तो उस समय जिम्मेदारी का काम करने से हानि होगी ।

२–७ भाव

१—२–७ घर मारक होने से अशुभ समझे जाते हैं । इन स्थानों के स्वामी मारकेश कहलाते हैं ।

२—यह अशुभ होकर २–७ घर में हों तो अशुभ होते हैं ।

३—ग्रहों के स्वस्थान में सप्तम स्थान अशुभ समझा जाता है । जैसे मकर का चन्द्र । यह चन्द्र के स्वस्थान कर्क से सातवाँ है ।

तृतीय भाव

१—कोई भावेश पापग्रह हो तो वह लग्न से तीसरे घर में पड़ जाय तो अच्छा फल देगा ।

२—यदि शुभ ग्रह तीसरे स्थान में पड़े तो मध्यम फल देगा जैसे नवमेश गुरु तीसरे स्थान में हो तो गुरु शुभ होने से मध्यम फल देगा ।

चतुर्थभाव

१—चतुर्थ और दशमभाव विशेष शुभ होते हैं । इनमें शुभ ग्रह अच्छे हैं पाप ग्रह कुछ कष्ट देते हैं ।

२—शुभ ग्रह उच्च या स्वक्षेत्री या चतुर्थ में हो तो पशु वाहन आदि प्राप्त हो, चन्द्र हो तो अन्न मिले, शुक्र हो तो गाने-बजाने में रुचि हो, गुरु हो तो धन या उत्तम वाहन प्राप्त हो ।

पाप ग्रह मंगल हो तो अग्नि भय, भूमि हानि आदि, सूर्य हो तो राजभय, राहु हो तो विष आदि का भय, धनहानि, शनि हो तो शरीर कष्ट हो ।

पंचमभाव

१—पंचमेश बुरे स्थान में हो तो अशुभ समझा जाता है ।

२—पंचमेश क्रूर ग्रह हो तो भी शुभ होता है ।

३—पंचम घर में दशमेश हो तो सुखदायक होता है ।

४—पंचम में गुरु हो या ९–१२ राशि हो तो संतान का दुःख हो ।

षष्ठभाव

१—कोई कहते हैं कि छठे घर में, ग्रह अच्छा फल देता है, कोई कहते हैं बुरा फल देता है परन्तु सिद्धांत यह है कि—

पापग्रह किसी भाव में हो उस भाव के फल को नष्ट करते हैं या कम करते हैं और शुभग्रह किसी भाव में हो तो उस भाव के फल को बढ़ाते हैं ।

२—छठा भाव रोग, ऋण, शत्रु का मुख्य स्थान है यदि पापग्रह वहाँ हो तो उस भाव के बुरे फल को नाश करेगा अर्थात रोग शत्रु ऋण आदि नष्ट होने से अवश्य सुख होगा ।

यदि अच्छे ग्रह यहाँ हों तो उस भाव के फल को बढ़ावेंगे अर्थात् रोग आदि की वृद्धि होगी।

३—इसीसे कई का मत है कि छठे भाव में ग्रह विरुद्ध फल देता है। इस पर भिन्न-भिन्न मत हैं। बताया गया है कि गुरु छठे भाव में हो तो शत्रु आदि का नाश कर सुख देता है।

४—छठा घर उपचय भी है, अधि या वसुमती योग में छठे भाव में अच्छे ग्रह हों तो अच्छा फल बताया है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न मत हैं। लेखक का मत है कि अच्छे ग्रह इस भाव में हों तो षष्ठेश होने पर अधिक लाभ नहीं कर सकते यदि कुछ अच्छा करेंगे तो तो अधिक रूप से नहीं।

५—छठे भाव का स्वामी अशुभ है।

६—यवनाचार्य के मत से षष्ठेश षष्ठ में शुभ है।

७—६-७ घर का स्वामी दशम में हो या दशमेश के साथ हो तो शुभ समझा जाता है।

६-८ घर

१—शुभ ग्रह नीच या शत्रुगृही या ६-८ घर में हो दुःखदाई होता है।

२—पाप ग्रह ऐसी स्थिति में बहुत ही दुःखदाई होते हैं।

३—मंगल या शनि अष्टम हो तो मृत्यु समीप होगी बनिस्बत गुरु के, यदि गुरु अष्टम हो।

४—६-८ घर में अशुभ ग्रह नीच का हो तो उसकी दशा में शत्रु या चोर से हानि हो।

८ भाव

१—अष्टम भाव में सूर्य चन्द्र बली होते हैं।

२—अष्टम भाव का स्वामी लग्नेश हो तो शुभ है।

अष्टमेश यह भाग्य का व्यय भाव होने से अशुभ है यदि यह लग्नेश भी हो तो अशुभ होने पर भी शुभ हो जाता है।

३—अष्टमेश स्वतः अष्टमेश मात्र हो अर्थात वह किसी दूसरे स्थान का स्वामी न हो तो शुभ होता है। जैसे सूर्य और चन्द्र जिनके एक ही स्वस्थान हैं। परन्तु दूसरे ग्रहों के दो स्वस्थान होने से यहाँ बुरे माने जाते हैं।

४—त्रिकोण शुभ माना जाता है यहाँ ९-५ भाव की अपेक्षा लग्न अल्पबली है इससे लग्नेश हो जाने से अष्टमेश शुभ हो जाता है। यदि वह पंचमेश या नवमेश भी हो तो और भी शुभ हो जाता है।

५—अष्टमेश यदि त्रिषडाय अशुभ स्थान का स्वामी भी हो तो विशेष अशुभकारक हो जाता है।

६—अष्टमेश निर्बल होकर जहाँ रहता है उस भाव का नाश करता है।

७—अष्टमेश शुभ ग्रह के साथ हो तो शुभ हो जाता है शुभ फल देता है ।

८—जिस भाव में अष्टमेश हो उस भाव का नाश करता है, परन्तु अष्टमेश मित्र गृही हो तो अच्छा है ।

९—अष्टमेश अष्टम हो तो यवनाचार्य के मत से शुभ होता है ।

१०—अष्टम में शुभ ग्रह हों तो अच्छा और दीर्घायु करते हैं ।

११—अष्टमेश ३–७ या ११ भाव का स्वामी भी हो तो विशेष अशुभ होता है । परन्तु त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ हो जाता है ।

त्रिक स्थान ६-८-१२ भाव

१—कहा है शुभ ग्रह भाव की वृद्धि करते हैं और पापग्रह हानि करते हैं परंतु ६-८-१२ भाव में विपरीत फल होता है । छठे पापग्रह रोगादि की हानि करते हैं अष्टम हों तो मृत्यु की हानि, व्यय में हों तो व्यय की हानि करते हैं ऐसा सत्याचार्य का मत है । ग्रह बल देख कर फल विचारना कहा है, शुभ ग्रह उस भाव के फल को बढ़ाते हैं, पाप ग्रह नष्ट करते हैं और मिश्र ग्रह मिश्रित फल करते हैं परन्तु यहाँ विपरीत फल होता है इससे त्रिक में शुभग्रह अनिष्ट कारक बताया है ।

२—जिस भाव का स्वामी त्रिक में हो उस भाव के अच्छे फल को बुरा करता है और बुरे फल को अच्छा करता है । ग्रह बलहीन हो तो बहुत हानि करता है बली हो तो अल्प हानि करता है ।

३—जिस भाव का स्वामी त्रिक में हो या त्रिकेश जिस भाव में हो उस भाव का फल नाश करता है परन्तु उसे शुभ ग्रह देखता हो तो शुभ हो जाता है ।

४—नीच ग्रह अशुभ ग्रह के साथ त्रिक में हो तो महादुःखदाई होता है ।

५—त्रिक में उच्च के ग्रह का अच्छा फल नहीं होता ।

६—सब भावों से गिनने पर ६-८-१२ भाव में पापग्रह अशुभफल देते हैं । परन्तु शुभग्रह शुभफल नहीं देते । परन्तु इन भावों में शुभग्रह अशुभ फल भी नहीं होने देते । इस प्रकार प्रत्येक भाव से विचारना ।

७—लग्न से ६-८-१२ भाव में अच्छे ग्रह हों या इनके स्वामी हों तो बहुत अच्छा फल नहीं देते ।

८—भावेश जिस भाव में हो उस भाव का स्वामी त्रिक में हो तो उस भाव को निर्बल बना देता है परन्तु ग्रह उच्च का, मित्रगृही या स्वगृही हो तो वह भाव कुछ बलवान् हो जाता है ।

९—भावेश पापयुक्त होकर त्रिक स्थान, शत्रुस्थान या नीच में हो तो उस भाव की हानि होती है ।

१०—६-८-१२ के भावेशों को छोड़कर अन्य भाव के स्वामी लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हों तो शुभ होता है ।

११—त्रिकेश केन्द्र या त्रिकोण में हों तो भी अच्छा फल नहीं देते ।

१२—इसी प्रकार दूसरे भावों का फल ग्रह के समान त्रिकोण केन्द्र आदि का विचार कर और यह देखकर कहना चाहिये कि उस भाव का स्वामी वहाँ से त्रिक में तो नहीं है।

१३—कोई ग्रह अपने स्वस्थान में हो और उसका दूसरा भी स्थान हो जो दुष्टभाव में पड़ता हो तो यह दुष्ट स्थान का भी स्वामी कहलायेगा। परन्तु दुष्ट स्थान का फल न देगा अपने ही स्थान का फल देगा जहाँ पर कि वह है। जैसे पंचम में मकर का शनि स्वस्थानी है यही छठे कुंभ का स्वामी होने से षष्ठ स्थान का हानि कारक फल न देगा।

१४—त्रिकेश त्रिक में हो तो देह सुख न होगा। षष्ठेश षष्ठ में हो तो रोग या शत्रु से रहित होकर सुखी होगा परन्तु कृपण होगा। अष्टमेश अष्टम में हो तो बहुत व्याधि रहित तो होगा परन्तु वह परिश्रमी न होकर फरदी होगा।

१५—लग्न को देखने वाला, लग्नेश और लग्नस्थ ग्रह में तीनों त्रिक स्थान के स्वामी हों, शत्रुगृही हों या निर्बल हों तो ये ग्रह अपनी दशा में लग्न के फल को नहीं देते हैं।

८-१२ भाव

१—८-१२ भाव से सब तरह के पाप व क्लेश का विचार होता है।

२—किसी भाव से ८ या १२ घर के स्वामी की राशि या नवांश में जब शनि गोचर में पहुँचता है तब उसका फल बिलकुल नाश हो जाता है।

३—इन तीनों स्वामियों के त्रिकोण में जो राशि हो उस राशि में जब शनि गोचर में जावे तब वह फल होता है।

नवम भाव

१—नवम भाव से भाग्य का विचार होता है।

२—नवम की राशि या वर्ग में जैसे शुभाशुभ बली या निर्बल ग्रह हों या नवांश जैसा शुभस्थान में बली या निर्बल हो वैसा भाग्य शुभ मध्यम या भाग्यहानि समझना।

दशम भाव

१—दशमेश का सम्बन्ध नवम पंचम घर से हो तो राजयोग होता है।

२—दशमेश, नवमेश स्वगृही हो तो शुभ है और राजयोग कारक हो जाता है।

(३) दशमेश या किसी त्रिकोणेश में शुभ सम्बन्ध अच्छा होता है।

(४) दशमेश नवम में नवमेश दशम में हो तो बहुत शुभ होता है।

एकादशभाव

(१) लाभभाव से सब वस्तुओं के मिलने का विचार होता है।

(२) एकादशभाव में प्रायः सभी ग्रह शुभ फलदायक हैं, अच्छे या बुरे ग्रह सब लाभभाव में अच्छा फल देते हैं।

(३) सूर्य इस भाव में बलवान होता है सब भय दूर करता है।

व्ययभाव

(१) बारहवें भाव में अशुभग्रह हो तो उस ग्रह की दशा अशुभ होती है।

(२) व्ययेश व्यय में हो तो यवनाचार्य के मत से शुभ होता है।

(३) अधिक व्यय करने वालों के साथ भले या दुष्ट पुरुष लग जाते हैं और स्थान एवं वंश के अनुसार खर्च कराते हैं इसी प्रकार व्ययेश के साथ शुभ या अशुभग्रह जिस प्रकार रहते हैं या जिसके अनुसार स्थान का स्वामी होकर जैसे स्थान में हो उसी के अनुसार शुभ या अशुभ कार्य में खर्च कराते हैं।

किसी भी भाव से उसके व्ययभाव की स्थिति

(१) लग्नेश यह द्वितीय (धन) भाव का व्ययेश होने से यदि शरीर रक्षा के निमित्त धन खर्च करता है तो लग्नेश शुभ ही हुआ।

(२) द्वितीयेश यह सहजभाव का व्ययेश हुआ। इस भाव से पराक्रम तथा आयु का विचार होने से इनका व्ययकारक द्वितीयेश होने से अशुभ हुआ। यह आयुक्षीण करने के कारण मारकेश कहलाया।

(३) तृतीयेश यह सुखभाव का व्ययेश हुआ। सुख का व्यय करने के कारण तृतीयेश अशुभ हुआ।

(४) चतुर्थेश यह विद्या या पुत्र स्थान का व्ययेश हुआ। यदि अच्छा पुरुष अर्थात् शुभ होकर विद्या का नाश करता है तो अति अनुचित है। यदि पापी होकर अपने स्व-भाव के अनुसार विद्या का नाश करता है तो दुष्ट के विचार से उसका कार्य उचित ही है। इस कारण शुभग्रह चतुर्थेश हो जाय तो अशुभ है चतुर्थेश पापग्रह हो तो अपने स्वभाव के अनुसार उचित करता है। इससे चतुर्थेश पापग्रह शुभ होता है।

(५) पंचमेश रिपुभाव का व्ययेश है अत. शत्रु या रोग का नाशक होने से अच्छा हुआ।

(६) षष्ठेश यह जायाभाव का व्ययेश है अतः स्त्री का नाशक होने से अशुभ हुआ।

(७) सप्तमेश यह आयु भाव का व्ययकारक है अतः आयु का नाशक हुआ इससे सप्तमेश मारकेश कहलाया।

(८) अष्टमेश यह धर्म या भाग्य भाव का व्ययेश होने के कारण अशुभ हुआ।

(९) नवमेश यह कर्मभाव का व्ययकारक होने से शुभ हुआ क्योंकि कर्म अर्थात् सांसारिक बन्धनों का वह मारक हुआ।

(१०) दशमेश यह लाभ का व्ययेश होने के कारण अशुभ हुआ क्योंकि लाभ की हानि अनुचित है। दशमेश पापग्रह हो तो इच्छित पापफल की प्राप्ति का नष्ट करने वाला हुआ इससे अपने कर्तव्य के अनुसार शुभ माना जाता है।

(११) लाभेश यह व्यय स्थान का व्ययेश है। खर्च न होने देने से आवश्यक सामग्री प्राप्त करना कठिन होगा इससे यह अशुभ माना जाता है।

इन सबको संक्षेप में विचारने से प्रकट होगा कि त्रिषडाय के स्वामी पापकारक हैं। केन्द्रेश शुभ हो तो अशुभ और अशुभ हो तो शुभ होते हैं और २–८–१२ के स्वामी अपने साथी और स्थान के अनुसार फल देते हैं।

३–६–८ भाव

(१) ग्रह ३–६–८ के भावेश हों तो पापफल देते हैं।

(२) शुभग्रह भी दो अशुभ स्थान के स्वामी हो जावें तो अशुभफल देते हैं—जैसे तुला लग्न हो तो गुरु ३–६ घर का स्वामी हुआ या मेष लग्न में बुध ३–६ घर का स्वामी हुआ या मीन लग्न में तृतीयेश शुक्र हुआ तो ये अशुभफल देंगे।

इसी प्रकार पापग्रह भी अशुभ फल देंगे–जैसे कन्या लग्न में तृतीयेश मंगल हुआ। यदि वृश्चिक लग्न में मंगल है तो वह लग्न और षष्ठ भाव का स्वामी हुआ या वृष लग्न में शुक्र हो तो लग्न और षष्ठभाव का स्वामी हुआ। यद्यपि मंगल या शुक्र लग्नेश हैं परन्तु अशुभभाव ६ के स्वामी होने से अशुभ हुए।

त्रिषडाय ३–६–११ भाव

(१) ३–६–११ के भावेश शुभ भी हों तो अच्छे नहीं होते।

(२) ३–६–११ भाव में पाप ग्रह हों तो शुभफल देते हैं जीवन तत्त्व बढ़ाते हैं। पापत्व में तीसरे भाव से छठा और छठे से ग्यारहवाँ स्थान बली है।

(३) कहा है जिन्हें विशेष पराक्रम हो, शत्रु हों, और सदा लाभ ही हो वे अच्छी प्रकृति के रहने पर भी उनमें कुछ क्रूरता आ जाती है। इससे इन ग्रहों के स्वामी शुभ-ग्रह होने पर भी क्रूरता आ जाने से वे अशुभ स्थान माने गये हैं।

(४) ३–६–११ भाव के स्वामी होने पर सभी ग्रह पापफल देते हैं।

(५) साधारण प्रकार से ३–६–११, ८, १२ के भावेश जिसके साथ हों बुरा फल करते हैं। इनके योग से जो भाव बने उसका नाश हो जाता है।

(६) इसके लिये इन सब भावों का भाव स्पष्ट लेकर सबका योग करना, राशि का योग १२ से अधिक हो तो १२ से भाग देना या १२ राशि घटा देना। जो शेष बचे वह राशि अंशादि भाव कुण्डली में जिस भाव में पड़े उस भाव की निश्चय हानि जानो।

२–८–१२ भाव

(१) २–८–१२ भाव के स्वामी साहचर्य (साथी) के अनुसार फल देते हैं तथा अपने द्वितीय स्थान के अनुसार फल देते हैं। १२ से २ स्थान बली है २ से ८ स्थान बली है।

(२) इन स्थानों में प्रबल स्थान का स्वामी अपने से निर्बल स्थान के स्वामी के फल का बाधक होकर अपना फल देता है।

(३) १, ३, १२ ये चारों स्थान अल्पबली हैं अतः इनमें एक-एक गुण माने गये हैं। यदि एक ग्रह को २ स्थानों का आधिपत्य हो जाय तो अधिक गुण वाले स्थान का फल होगा।

केन्द्र विचार

(१) केन्द्र में केवल ४, ७, १० स्थान ग्रहण करना क्योंकि लग्न त्रिकोण में आ गई है। या लग्न पृथक है।

(२) १, ४, ७, १०, स्थान क्रम से उत्तरोत्तर बली है। जैसे :—पापग्रह १, ४ भाव का स्वामी हो जाय तो लग्न की अपेक्षा चतुर्थेश शुभ फल देने में अधिक बली होगा।

(३) केन्द्र ४–७–१० के स्वामी शुभ या पापग्रह हों तो अपने स्वभाव के अनुसार शुभ या पापफल नहीं देते। केन्द्रेश शुभ हो तो अशुभफल देते हैं। अशुभ हो तो शुभफल देते हैं। शुभग्रह केन्द्रेश हो तो उसकी अशुभयह समझना।

(४) केन्द्र में पापग्रह अशुभफल देते हैं आयु कम करते हैं।

(५) किसी भाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अच्छा है।

(६) केन्द्र या त्रिकोण में शुभग्रह बहुत शुभ है यदि वह केन्द्रेश न हो तो।

(७) केन्द्र या त्रिकोण में शुभ या पापग्रह हो तो मिश्रफल होगा।

(८) केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी अच्छा फल देते हैं परन्तु धनभाव और व्ययभाव में पापग्रह युक्त हों तो फल नहीं देते।

(९) शुभग्रह गुरु शुक्र केन्द्रेश हों तो बुरे हैं परन्तु बुध केन्द्रेश हो तो शुक्र की अपेक्षा कम बुराई करेगा। चन्द्र केन्द्रेश हो तो बुध से कम बुराई करेगा अर्थात् चन्द्र बुध शुक्र गुरु उत्तरोत्तर बुराई में बुरे हैं।

(१०) शुभग्रह में गुरु, शुक्र बली हैं, इससे शुभग्रहों में मारकत्व (२–७ भाव के स्वामी) होने पर भी गुरु शुक्र की अपेक्षा विशेष मारकत्व दोष उत्पन्न करता है। केन्द्रेश होकर मारक स्थान में रहने से विशेष दोष कारक गुरु है उससे कम शुक्र। दोनों में से अल्प दोष और मारकत्व बुध में है बुध से न्यून चन्द्र में है। क्योंकि बुध कभी पाप ग्रह की संगति में पापग्रह हो जाता है। चन्द्र क्षीण होने पर पापग्रह बन जाता है।

(११) राहु केतु ये त्रिकोण के स्वामी हों अथवा केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी में से किसी से इनका सम्बन्ध हो जावे तो अच्छा फल देंगे।

(१२) स्वाभाविक पापग्रह यदि केन्द्रेश होकर त्रिषडाय (३–६–११) पति भी हो जायें तो पाप कारक हो जाते हैं।

(१३) पापग्रहों के केन्द्रेश होने में इतना ही शुभत्व आ जाता है कि वह अपने पापफल को नहीं देता। यदि वह उस समय त्रिकोणेश भी हो जावे तो उसे शुभफल देने में बल आ जाता है।

(९४) केन्द्रेश अपने स्वभाव को भूल जाते हैं और जैसे स्वभाव वाले ग्रह से सम्बन्ध हो वैसा फल देते हैं। त्रिकोणेश से सम्बन्ध होने पर विशेष शुभ हो जाता है। यदि किसी दूसरे पापस्थानेश (३,६ भाव के स्वामी) से भी संबन्ध हो जाये तो सामान्य रूप से फल देगा।

(१५) शुभग्रह केन्द्र के स्वामी न हों तो शुभ है और पापग्रह केन्द्र के स्वामी न हों

तो और भी अशुभ हो जाते हैं। स्वाभाविक शुभग्रह केन्द्रेश होने पर शुभफल नहीं देते और स्वाभाविक पापग्रह केन्द्रेश होने पर पापफल नहीं देते। ये सब पाप और शुभग्रह त्रिकोणेश होने पर शुभफल देते हैं।

(६) लग्न केन्द्र और त्रिकोण दोनों कहलाता है इससे वह शुभ स्थान होने से उसका स्वामी शुभ है।

(७) केन्द्र में ग्रहों का साधारण फल—

सूर्य हो = राजा की सेवा करने वाला। गुरु = दिव्य बुद्धि, अपने अनुष्ठान में तत्पर।

चन्द्र हो = वैश्य की सेवा करने वाला। शुक्र = विद्या और धन से युक्त।

मंगल हो=वस्त्र का व्यापारी आदि। शनि=नीच की सेवा करने वाला।

बुध हो=अध्यापक।

त्रिकोणेश

(१) त्रिकोण में लग्न भी गिनी जाती है केवल ५–९ भाव नहीं।

(२) १–५–९ भाव क्रम से उत्तरोत्तर बली हैं। पंचमेश अधिक फल देता है।

(३) त्रिकोण के ५–९ भाव का स्वामी शुभ या पाप ग्रह जो भी हो सदा शुभ होता है।

(४) त्रिकोण में उच्च ग्रह हों तो धनवान् होगा, नीच का ग्रह हो तो बुरा फल देगा।

(५) ४–१० भाव विशेष शुभदायक हैं ५–९ भाव विशेष धन दायक हैं।

(३) ५–९ भाव के स्वामी के साथ शुभ योग होने पर आकस्मिक धन जैसे लाटरी आदि प्राप्त होती है।

(७) त्रिकोण के स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में हों तो शुभ हैं एक दूसरे की सहायता करेंगे।

(८) त्रिकोणेश केन्द्रेश के साथ हों तो अच्छा है यदि दूसरे त्रिकोण के स्वामी के साथ भी केन्द्रेश का सम्बन्ध हो तो और भी अच्छा है।

(९) त्रिकोण का लग्नेश या चतुर्थेश से शुभ सम्बन्ध अच्छा होता है।

(१०) केन्द्रेश का शुभफल परिश्रम से होता है परन्तु त्रिकोणेश का शुभफल बिना परिश्रम के होता है।

(११) त्रिकोणेश या केन्द्रेश ६–८–१२ घर में हों तो अपने सम्बन्ध वाले स्थान में अशुभ प्रभाव डालते हैं।

(१२) ६–८–१२ के भावेश को छोड़कर अन्य भावेश लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हों तो उस भाव के लिए शुभ है।

(१३) कोई भावेश अपने भाव से त्रिकोण या केन्द्र में पड़े तो शुभ है।

(१४) पंचमेश नवमेश में शुभ सम्बन्ध हो तो प्रताप की वृद्धि हो, भाग्योदय हो।

(१५) केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी से शुभ सम्बन्ध रखनेवाला ग्रह शुभ होता है।

(१६) केन्द्र या त्रिकोण में ६–८–१२ भाव के स्वामी हों तो अशुभ है।

(१७) पंचम या नवम भाव में सूर्य, चंद्र, शनि या अष्टमेश या द्वादशेश हों तो अशुभ फल होता है।

(१८) कोई ग्रह अच्छे घर में ५ या ९ भाव या दोनों भावों से सम्बन्ध रखता हो या उसका स्वामी हो तो वह ग्रह शुभ समझा जाता है।

(१९) केन्द्रेश और त्रिकोणेश ये दोनों परस्पर स्थान में हों या दोनों मिलकर किसी एक स्थान में हों या कोई एक दूसरे के स्थान में हों अर्थात् केन्द्रेश त्रिकोण में त्रिकोणेश केन्द्र में हो या दोनों में परस्पर पूर्णदृष्टि हो तो योगकारक होते हैं जिससे वह राजा के समान या विद्वान् या शूर-वीर होता है।

(२०) एक ही ग्रह केन्द्रपति और त्रिकोणपति भी हो तथा केन्द्र या त्रिकोण में हो तो विशेष योग कारक होता है।

(२१) केन्द्रेश और त्रिकोणेश यदि ३–६ आदि पाप भाव के भी स्वामी हों तो उन दोनों की केवल परस्पर स्थिति और सम्बन्ध से ही योगफल नहीं होता अर्थात् ऐसी स्थिति में अन्य उच्च स्थानादि स्थिति भी हो तभी योग समझना।

(२२) केन्द्रेश पापग्रह होने से उसका पापत्व नष्ट हो जाता है; परन्तु वह पापग्रह त्रिकोणेश भी हो तो शुभत्व आ जाता है।

(२३) केन्द्रेश और त्रिकोणेश में किसी प्रकार परस्पर सम्बन्ध हो परन्तु दूसरे स्थान से जो इनसे भिन्न हो सम्बन्ध न हो तो शुभ फल दायक होते हैं।

(२४) केन्द्रेश और त्रिकोणेश स्वयं दोषयुक्त हों अर्थात् नीच, अस्तंगत, शत्रुगृही आदि हों तब भी सम्बन्ध भाव से विशेष फलदायक होते हैं। सम्बन्ध भी कई प्रकार का होता है किसी प्रकार का सम्बन्ध हो परन्तु दुष्ट स्थान के स्वामी से सम्बन्ध न हो तो योग भंग नहीं होता है।

(२५) पंचम-नवम भाव धन कहलाते हैं। सप्तम और दशम भाव विशेष सुख कहलाते हैं।

राशि बल

१—जिस राशि का स्वामी बली हो वह राशि पूरा फल देती है।

२—जिस राशि का स्वामी उच्च नीच या अस्त हो उस विचार से उसका फल अधिक या कम होता है। जैसे उच्च में श्रेष्ठ फल, नीच में बुरा फल, बीच का फल अनुपात से जानना।

३—शीर्षोदय राशि आरम्भ में अच्छा फल देती है।
उभयोदय राशि बीच में अच्छा फल देती है।
पृष्ठोदय राशि अन्त में अच्छा फल देती है।

भाव

(१) शुभ स्थान=१, ४, १०, ५, ९, ११ स्थान।

(२) अशुभ स्थान=२, ७ घर में अशुभग्रह हों तो अशुभ ।
६, ८, १२ घर सदा अशुभ ।
७, घर भी साधारण अशुभ है ।

(३) सम स्थान=३ घर (न शुभ है न अशुभ है) ।
२–७ घर में शुभ ग्रह हों तो सम है ।

(४) ग्रह १, ४, ७, १०, ५; ९, ११ स्थानों में अधिक बली होकर शुभ फल देते हैं । ये भाव शुभ हैं ।

(५) पंचमेश की अपेक्षा नवमेश बली है ।

(६) तृतीयेश सामान्य बली है ।

(७) तृतीयेश से षष्ठेश बलो है, षष्ठेश से एकादशेश बली है ।

(८) द्वितीयेश से द्वादशेश तथा द्वादशेश से अष्टमेश बली है ।

(९) चतुर्थेश से सप्तमेश बली है, सग्रह से अधिक बलवाला ग्रह बलवान् माना जाता है । बल की समता में चर, स्थिर, द्विस्वभाव के क्रम से राशि बलवान् होती है ।

ग्रह का शुभाशुभत्व

ग्रह ३ प्रकार के होते हैं—(१) शुभग्रह, (२) पाप (अशुभ) ग्रह और (३) मिश्रग्रह । इनमें भी २ प्रकार के स्वभाव के ग्रह हैं—

(१) नैसर्गिक अर्थात् स्वाभाविक, (२) तात्कालिक अर्थात् कृत्रिम ।

(१) नैसर्गिक—शुभग्रह	अशुभग्रह
गुरु, शुक्र, पूर्णचन्द्र ।	शनि, मंगल, सूर्य और क्षीण चन्द्र ।
(२) तात्कालिक—शुभ	अशुभ
(क) बुध—जब शुभग्रहों से युक्त हो	जब पापग्रहों से युक्त हो ।
(ख) राहु-केतु—शुभग्रह युक्त या शुभग्रह की राशि में	पापग्रह युक्त या पापग्रह की राशि में ।
(ग) सूर्य-चंद्र—जब ये अष्टमेश हों तो शुभ हैं	शेषग्रह—मं. बु. गु. शु. श. जब ये अष्टमेश हों और लग्नेश न हों तो अशुभ हैं ।
(घ) अष्टमेश—जब लग्नेश भी हो तो शुभ है ।	× ×
(च) द्वितीयेश व्ययेश—जब शुभग्रह युक्त या शुभ राशि में हो तो शुभ हैं	जब अकेले ही अशुभ स्थान में हों या पापग्रह युक्त हों तो अशुभ हैं ।
(छ) त्रिकोणेश—पापग्रह युक्त शुभ और शुभग्रह युक्त विशेष शुभ हैं ।	× ×
(ज) चारों केन्द्रेश—पापग्रह हों तो शुभ	शुभग्रह हों तो अशुभ ।
(झ) उक्त शुभग्रहों से अच्छा सम्बन्ध रखनेवाला ग्रह शुभग्रह है ।	पापग्रहों से सम्बन्ध रखनेवाला ग्रह अशुभ ।

(३) स्वाभाविक शुभग्रह भी त्रिषडाय पति हो तो = पापफल ।

स्वाभाविक पापग्रह भी त्रिषडाय पति हो तो = अति पापफल ।

(४) नैसर्गिक और तात्कालिक शुभ-अशुभ ग्रहों के मेल से इस प्रकार ग्रह होंगे--

शुभ + शुभ=अति शुभग्रह पाप + पाप=अति पापग्रह

शुभ + पाप=समग्रह पाप + शुभ=समग्रह

शुभ + सम=समग्रह पाप + सम=पापग्रह

(५) पूर्ण चंद्र शुभ है क्षीण चंद्र अशुभ है, इस पर विचार—

क्षीण चंद्र-कृष्णपक्ष की अष्टमी के उपरान्त शुक्लअष्टमी तक ।

पूर्ण चंद्र--कृष्णपक्ष की अष्टमी के उपरान्त शुक्लअष्टमी तक ।

पूर्ण चंद्र---इसके उपरान्त (अन्यमत) ।

चंद्र—कृष्ण १० से शुक्ल ५ तक =१० दिन क्षीण=निर्बल ।

शुक्ल ५ से पूर्णिमा तक=१० दिन=पूर्ण ।

कृष्ण १ से कृष्ण १० तक =१० दिन = मध्यम ।

राहु-केतु का विचार

१—राहु-केतु प्रबल होने पर भी जिस भाव में और जिस-जिस भाव के स्वामियों के साथ हों उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं ।

इनके बिम्ब (आकार) का अभाव होने के कारण स्पष्टत: अपने स्वभाव के अनुसार फल नहीं दे सकते । जिस राशि या जिस भावेश के साथ रहते हैं उनके अनुसार शुभअशुभ फल देते हैं । ये सूर्य और चन्द्र को पीड़ा देनेवाले कहे जाते हैं इस कारण क्रूर ग्रह माने गये हैं । ये सूर्य चंद्र का मार्ग जहाँ आपस में एक दूसरे से दो स्थानों में काटते हैं उनमें से एक को राहु दूसरे को केतु कहते हैं । इनमें सदा ६ राशि का अन्तर रहता है ।

२—राहु-केतु तमोगुणी हैं ये केन्द्र त्रिकोण में हों या इनसे केन्द्र त्रिकोण के स्वामियों से योग दृष्टि आदि द्वारा सम्बन्ध हो तो शुभ हो जाते हैं ।

३—राहु-केतु शुभ के घर में हों और किसी शुभग्रह से सम्बन्ध हो तो शुभ हैं ।

४---राहु-केतु जिस स्थान में हों या जिस भावेश के साथ हों उस भाव की वृद्धि करते हैं ।

५---राहु दुष्ट फल देता है परन्तु मित्रगृही हो तो अशुभ फल कुछ कम हो जाता है ।

६---राहु का फल लग्न आदि भावों में शनि के समान ही है ।

७---राहु कन्या और मिथुन राशि में कुछ शुभ फल भी देता है ।

८---१-२-३ या ४ राशि का राहु लग्न में हो तो शुभ हैं ।

९—मेष का राहु किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो अति शुभ ।

१०-सभी ग्रह राहु और केतु से घिरे हों या जिस स्थान में राहु या केतु हो उस स्थान के अन्तर्गत हों तो कालसर्प योग हो जाता है जिससे धन-हानि होकर दरिद्रता होती है जीवन कम होता है ।

११—राहु-केतु ४, ६ ८ १२ घर को छोड़कर द्विस्वभाव पर अर्थात् ३-९ घर में हों तो लाभदायक होते हैं।

१२—राहु के साथ जो ग्रह हो उसका अच्छा या बुरा गुण राहु ग्रहण कर लेता है। परन्तु राहु के साथ रहनेवाला शुभग्रह भी अपनी दशा अन्तर्दशा में बुरा फल देता है।

१३—दशम में राहु हो तो अपनी दशा में तीर्थ कराता है।

१४ – राहु, केतु या बुध २–१२ घर के स्वामी होकर द्विस्वभाव के होते हैं। वे जिस ग्रह के साथ रहते हैं वैसे ही हो जाते हैं अर्थात् गुरु, शुक्र चन्द्र के साथ शुभ और मंगल शनि के साथ अशुभ फल देते हैं।

१५—राहु-केतु जब कहीं अकेले हों तो राहु की अन्तिम दशा निषिद्ध होती है, प्रथम दशा शुभ होती है। केतु की प्रारम्भिक दशा निकृष्ट और अन्तिम दशा उत्तम होती है।

१६—राहु-केतु में से कोई ४–१० घर में हो और त्रिकोण के स्वामी से सम्बन्ध हो तो शुभफल होता है।

१७—राहु-केतु के भीतर केन्द्र स्वामी या त्रिकोणेश का अन्तर होने पर शुभफल होता है।

१८—राहु-केतु त्रिकोण में हों और किसी केन्द्रेश से सम्बन्ध हो तो अच्छा है।

१९—राजयोग हो तो राहु-केतु की महादशा में तथा राजयोग कारक ग्रह की अन्तर्दशा में या उस ग्रह की अन्तर्दशा में जिसके घर में राहु, केतु हों उसका फल होता है। परन्तु राहु-केतु १–४–१० या ५–९ घर में हों।

अन्य ग्रह

१—सूर्य-चंद्र स्वगृही या उच्च में हों तो राजा सरीखा ऐश्वर्य देते हैं।

२—सूर्य-चंद्र मकर आदि ६ राशियों में बलयुक्त हों तो पूरा फल देते हैं।

३—सूर्य से सप्तम में जो ग्रह हों पूर्ण फल देते हैं।

ग्रह अपने दीप्तांश के भीतर फल देते हैं दीप्तांश के बाहर पहुँच जाने पर फल में अन्तर पड़ जाता है। अर्थात् शुभ ग्रह की योगदृष्टि में इतने अंश के भीतर शुभ है। पापग्रह की योग दृष्टि में इतने अंश के भीतर अशुभ है। अंशों से अधिक अन्तर पड़ जाने पर शुभता या अशुभता घट जाती है।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९

५—पापग्रह ३–६–११ घर में अच्छा फल देते हैं, १–८–१२ भाव में अनिष्ट करते हैं।

६—क्षीण चन्द्र १–६–८–१२ में अशुभ है।

७—सौम्यग्रह सब स्थानों में साधारणतः अच्छा फल देते हैं।

८—जिस राशि में चन्द्र हो वह राशि या उसका स्वामी बली हो और चन्द्र भी

बलवान् हो तो राशि युक्त पूर्ण फल देता है। इनमें २ बलवान् हों तो मध्यमफल, केवल १ बलवान् हो तो हीनफल। इसी प्रकार सूर्यादि ग्रहों के सम्बन्ध भी विचारना।

९—शनि जहाँ हो उस भाव की वृद्धि करता है जिसे देखता है उसकी हानि करता है।

१०—गुरु अपने स्थान की हानि करता है उसकी दृष्टि शुभ है।

शनि अपने स्थान का पालन करता है उसकी दृष्टि परम भयकारक है।

अन्य मत—गुरु केन्द्र को छोड़कर अन्य स्थानों में हो तो हानि करता है।

शनि केन्द्र को छोड़कर अन्य स्थान में हो तो वृद्धि करता है।

११—गुरु और शुक्र सदा शुभग्रह हैं चाहे वे नीच के क्यों न हों या श्रेष्ठों के साथ हों परन्तु उनकी भलाई करने की शक्ति कम हो जाती है।

१२—शुक्र अस्त न हो, पाप युक्त भी न हो और स्वगृही या उच्च में होकर १०–११–१२ भाव में हो तो अच्छा है।

१३—बुध-शुक्र कन्या राशि में हों और मकर लग्न हो तो शुभ फल देगा। यद्यपि कन्या का शुक्र नीच का होता है परन्तु उसका मित्र बुध का साथ होने से नीच भंग और राजयोग कारक हो जाने से शुभ फल देगा

१४—शनि दीर्घ जीवन, मृत्यु और साधारण उपजीविका का जरिया बताता है।

१५—ग्रह जो शुभग्रह से (चाहे वह नैसर्गिक या परिस्थितिवश शुभ हो) सम्बन्ध रखता है तो वह भी शुभ हो जाता है।

१५—मंगल उच्च का हो या १०–११ भाव में हो तो अच्छा है। मंगल ९ भाव में भी बली होता है।

१७—हीन बल ग्रह अशुभ होते हैं।

१८—चन्द्र नवम से द्वितीय भाव में भी पूर्वोक्त भाव के तुल्य बली होता है इसमें द्वितीय से नवम स्थान विशेष बली हैं।

१९—इन भावों से ग्रह शुभ फल देते हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	गुरु	शुक्र	शनि	सर्वग्रह
भाव	६	४	त्रिकोण	लग्न	तृतीय	लाभ में

परन्तु इन भावों में कुछ क्लेश उत्पन्न करते हैं—

ग्रह	सूर्य	चंद्र	गुरु	शुक्र	शनि	मंगल
भाव	९	६	५	७	८	८

ग्रहों के सम्बन्ध पर विचार

कई स्थानों में लिखा मिलता है कि अमुक का पाप या शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो। तब यह सम्बन्ध किस प्रकार से होता है इस पर यहाँ विचार करते हैं—

ग्रहों पर सम्बन्ध निम्नलिखित प्रकार से ही साधारणतः विचार किया जाता है :—

(१) सहवास का सम्बन्ध—अर्थात् एक से दूसरा केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक, षडष्टक,

द्विर्द्वादश आदि अनेक प्रकार के स्थान के विचार से सम्बन्ध होते हैं। ये भी दो प्रकार के हैं:—(१) परस्पर सम्बन्ध (२) एक दूसरे का तो सम्बन्ध हो पर दूसरा किसी विशेष स्थान में हो जिससे परस्पर सम्बन्ध न होता हो।

(३) मैत्री का सम्बन्ध—किसी विशेष ग्रह से मित्र, शत्रु, सम, अधिमित्र, अधिशत्रु, नैसर्गिक या पंचधा मैत्री के विचार से जैसी मैत्री प्रगट हो, उस प्रकार की मैत्री सम्बन्ध का विचार होता है।

(४) दृष्टि का सम्बन्ध—एक ग्रह की दूसरे ग्रह के भाव पर जैसी दृष्टि पड़ती है, वैसा सम्बन्ध दृष्टि से विचार होता है।

यहाँ भी दृष्टि सम्बन्ध २ प्रकार का होता है (१) परस्पर ग्रहों की दृष्टि हो (२) एक ग्रह की दृष्टि दूसरे ग्रह पर हो परन्तु दूसरे की दृष्टि न हो।

इन सबको उदाहरण देकर नीचे समझाया है

(१) सहवास—यहाँ लग्न में राहु गुरु के साथ है और शुभ ग्रह के साथ रहने से शुभ है। सप्तम में केतु मंगल के साथ है। पाप ग्रह के साथ केतु का सम्बन्ध होने से वह भी पाप फल देगा।

(२) स्थान—लग्नेश सूर्य और पंचमेश गुरु का परिवर्तन योग है अर्थात एक दूसरे के स्थान में हैं। यहाँ लग्नेश सूर्य और त्रिकोणेश गुरु है। इनका सम्बन्ध अच्छा है।
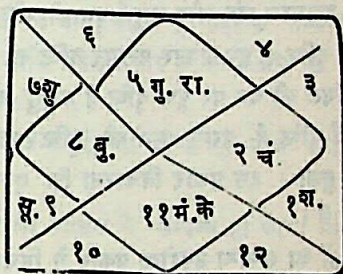
इसी प्रकार सप्तमेश शनि और नवमेश मंगल का परिवर्तन योग है (एक दूसरे के स्थान में हैं) यद्यपि यह परिवर्तन अशुभ ग्रहों का अच्छा नहीं होता परन्तु त्रिकोणेश और केन्द्रेश का परिवर्तन होने से अच्छा है। ये परस्पर स्थान के सम्बन्ध हुए।

दूसरा प्रकार—जब एक से सम्बन्ध हो दूसरे से सम्बन्ध न हो। जैसे चतुर्थेश मंगल केन्द्र (सप्तम) में है, सप्तमेश शनि नवम में है। परन्तु सप्तमेश शनि या सप्तमस्थ ग्रह मंगल का चतुर्थ स्थित ग्रह बुध से कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ केन्द्र-स्वामी मंगल पाप ग्रह होने से अच्छा है वह केन्द्र (सप्तम) में ही हैं।

यहाँ चतुर्थेश सप्तम सप्तमेश नवम है। इसी प्रकार एक दूसरे से स्थान के विचार से और भी परस्पर सम्बन्ध हो सकते हैं जैसे धनेश नवम भाव में हो नवमेश लाभभाव में हो और लाभेश धन भाव में हो तो माला योग हो जाता है। यह एक प्रकार का राज-योग है। इसमें एक दूसरे भाव से परस्पर सम्बन्ध स्थापित हो गया।

इस स्थान का सम्बन्ध वर्ष कुंडली के विचार से भी होता है जिससे ग्रह के प्रभाव में अन्तर पड़ जाता है। जैसे कोई उच्च का ग्रह नीच नवांश में या नीच का ग्रह उच्च नवांश के विचार से फल में अन्तर पड़ जायगा।

नवांश के विचार से भाव स्वामियों के सम्बन्ध की कड़ी स्थापित होती हैं जैसे लग्न चर हो उसका नवांश स्वामी भी चर हो तो राजयोग हो जाता है। और लग्नेश की राशि का नवांशेश जो हो उसकी राशि का नवांशेश बली हो तो राजयोग हो जाता है, इसी प्रकार के अनेक योगों का विचार आगे मिलेगा।

(३) क्षेत्र अर्थात् मैत्री द्वारा सम्बन्ध—लग्न में गुरु अपने मित्र सूर्य के क्षेत्र में है, अपने समक्षेत्री राहु से युक्त है। लग्नेश सूर्य अपने मित्र गुरु के क्षेत्र में है और यह पंचमेश गुरु लग्न में है। गुरु पर सप्तम स्थानीय मंगल को पूर्ण दृष्टि है, जो उसका मित्र है। इसी प्रकार साथी या दूसरा ग्रह या उस भाव के स्वामी से भाव स्थित ग्रह की मैत्री नैसर्गिक एवं पंचधा मैत्री से भी विचारना पड़ता है, यह मैत्री सम्बन्ध नवांश आदि वर्ग कुंडलियों में भी विचार किया जाता हैं।

(४) दृष्टि द्वारा सम्बन्ध–यहां लग्न सिंह एवं वहाँ स्थित गुरु पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है और गुरु की मंगल पर पूर्ण दृष्टि है, यहाँ परस्पर दृष्टि का सम्बन्ध हुआ। इसी प्रकार दशमस्थ चंद्र और चतुर्थ बुध की भी परस्पर दृष्टि है। शनि और शुक्र की भी परस्पर दृष्टि है इस प्रकार परस्पर दृष्टि का सम्बन्ध है।

मंगल की चंद्र पर पूर्ण दृष्टि है परन्तु चंद्र की दृष्टि मंगल पर नहीं है। गुरु की सूर्य पर पूर्ण दृष्टि है परन्तु सूर्य की दृष्टि गुरु पर नहीं है। इस प्रकार एक ओर दृष्टि सम्बन्ध हुआ। इस प्रकार विचारना कि एक ओर दृष्टि सम्बन्ध या परस्पर दृष्टि का सम्बन्ध है।

ग्रहों का सम्बन्ध उपरोक्त प्रकार से विचार कर देखें।

(१) विचारणीय ग्रह जहाँ हों उससे सम्बन्ध करने वाले कहाँ-कहाँ पर हैं जैसे लग्न में गुरु है तो गुरु से सम्बन्ध करने वाले ग्रह कहाँ-कहाँ हैं उपरोक्त चारों प्रकार से उसका सम्बन्ध विचारना।

(२) यह ग्रह किस-किस भाव का स्वामी है उस-उस भाव से सम्बन्ध रखने वाले ग्रह-किस-किस भाव में हैं। जैसे गुरु का विचार करना है। यह पंचम और अष्टम भाव का स्वामी है जहाँ उसका स्वगृह ९ और १२ राशि है। अब वहाँ देखना है कि पंचम और अष्टम भाव से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रह किस भाव के स्वामी हैं और किन ग्रहों का सम्बन्ध इन भावों से है।

(३) वह ग्रह जहाँ है उस राशि का स्वामी ग्रह किस राशि में है उस ग्रह और उस राशि से किस-किस ग्रह का सम्बन्ध है। जैसे गुरु सिंह में हैं उसका स्वामी सूर्य है जो पंचम स्थान (त्रिकोण) में धन राशि का है। अब यहाँ देखना है कि धन राशि से सम्बन्ध रखनेबाले ग्रह, राशि स्वामी आदि कहाँ पर हैं। उनका कैसा सम्बन्ध है। एवं सूर्य से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रह कहाँ-कहाँ पर हैं।

इस प्रकार उपरोक्त बताये चारों प्रकार से सब प्रकार से सम्बन्ध का फल कुण्डली, चन्द्र कुंडली, नवांश कुंडली आदि में जैसी आवश्यकता हो पूरा विचार आवश्यक है।

ये सम्बन्ध ३ प्रकार के होते हैं। कोई सम्बन्ध अच्छे होते हैं, कोई बुरे होते हैं और कहीं अच्छे बुरे का मिश्रण होता है ये मिश्र कहलाते हैं।

अच्छे ग्रह—उच्च, मूलत्रिकोण या स्वगृही ग्रह, केन्द्र या त्रिकोण से शुभ सम्बन्ध रखने वाला ग्रह। शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट ग्रह। मित्र ग्रह युक्त या दृष्ट ग्रह। शुभ वर्ग में ग्रह शुभ ग्रहों के बीच ग्रह, शुभ ग्रह वक्री इत्यादि।

बुरे ग्रह—नीच या शत्रुगृही ग्रह, ६-८-१२ भाव में ग्रह या इनके स्वामियों से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रह, अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह, शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह, अशुभ वर्ग में ग्रह, अस्तंगत ग्रह, दो पाप ग्रहों के बीच ग्रह, पाप ग्रह वक्री इत्यादि।

योग कारक

कई स्थानों में आता है कि अमुक परिस्थिति में ग्रह आने से योगकारक हो जाता है। मारक योग के विषय में पहिले बतला चुके हैं फिर भी यहाँ योग कारक के सम्बन्ध से बतलाते हैं।

ग्रहों के सम्बन्ध से जो अच्छे योग बनते हैं वे योग कारक हैं ग्रहों के सम्बन्ध से त्रिकोण, केन्द्र, त्रिषडाय, षडष्टक, द्विर्द्वादश आदि अनेक प्रकार के अच्छे और बुरे योग बनते हैं इनमें शुभयोग कारक इस प्रकार हो सकते हैं।

(१) केन्द्रेश त्रिकोण में और त्रिकोणेश केन्द्र में हो या दोनों एक साथ केन्द्र या त्रिकोण हों में तो योगकारक हुआ।

(२) पंचमेश और नवमेश इनमें से किसी का दशमेश से सम्बन्ध हो जाना अच्छा योग होता है।

(३) यह सम्बन्ध केन्द्र स्वामियों में से किसका सबसे उत्तम होता है वह इस प्रकार है—चतुर्थेश से अधिक बली सप्तमेश और सप्तमेश से दशमेश सबसे अधिक बली है और त्रिकोण में लग्नेश से पंचमेश अधिक बली है पंचमेश से नवमेश अधिक बली है।

(३) एक ही कोई ग्रह यदि कोण और केन्द्र दोनों का स्वामी हो तब भी योगकारक हो जाता है। इस पर यदि उसका दूसरे त्रिकोण से भी सम्बन्ध हो जाय तो अत्यन्त श्रेष्ठ है।

(५) यदि केन्द्रेश और पंचमेश भी हो तो योगकारक हो जाता है यदि नवमेश से भी सम्बन्ध हो जाय तो श्रेष्ठ योगकारक हो जाता है।

(६) यदि केन्द्र में राहु-केतु भी हों और त्रिकोण से सम्बन्ध हो जाये या त्रिकोण में होकर केन्द्र से सम्बन्ध हो जाये तो शुभयोग कारक हो जाता है।

(७) त्रिषडाय आदि अशुभ स्थान के स्वामी होने से सम्बन्ध भंग हो जाता है। परन्तु केन्द्रेश और त्रिकोणेश यदि त्रिषडाय आदि स्थान के स्वामी भी होने से सम्बन्ध हो जाय उस परिस्थिति में यदि वे उच्चस्थान में हों या अन्य शुभयोग भी हों तो यह योग भंग नहीं होता।

(८) यदि अष्टमेश नवमेश भी हो या लाभेश दशमेश भी हो तो इनके सम्बन्ध मात्र

से शुभयोग का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। अर्थात् केन्द्रेश और योगेश का सम्बन्ध नीच आदि स्थानगत दोष युक्त होने पर भी सम्बन्ध मात्र से योगकारक कहा है परन्तु लाभ-जनक नहीं है।

(९) योग के लाभ और भंग में उसके स्थान की प्रबलता के विचार से योग की अल्पता या प्रबलता पर विचार करना।

(१०) राजयोग कारक ग्रह शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के स्थान के स्वामी हों त्रिकेश न हों और न त्रिकभाव से कोई सम्बन्ध हो तो अशुभ घर के अनिष्ट फल को दबा देता है।

फल विचारते समय इन बातों पर भी ध्यान देना

(१) समाज. स्थिति और आयु के अनुसार फल कहना।

(२) देश काल और वर्तमान एवं पात्र पर भी ध्यान देते हुए फल कहना।

(३) कुण्डली का शुभाशुभ फल जानने में इस प्रकार विचारें कि वह ग्रह शुभ या पाप फल किस प्रमाण में देगा।

ग्रह का	उच्च	मूलत्रिकोण	स्वगृही	मित्रगृही	शत्रूगृही	अस्त और नीच
शुभफल	१ पूर्ण	३/४	१/२	१/४	१/४ से कम	(कुछ नहीं)

ग्रह का	अस्तंगत या नीच	शत्रूगृही	मित्रगृही	स्वगृही	त्रिकोण	उच्च में
पापफल	पूर्ण पापफल=१	१/४	१/२	१/४	१/४ से कम	(कुछ नहीं)

(४) ग्रह के रूप स्वभाव आदि भाव सम्बन्ध से विचारना। ग्रह का गुण धर्म आदि पर भी पूरा विचार करना।

भावफल देखने को भाव चक्र बनाकर लग्न से १२ राशि तक में दक्षिण बाम अंग का विचार करना जैसा कि राशिचक्र के २ भाग करने से प्रकट होगा। भावचक्र में ग्रह स्थापित कर फिर शुभाशुभ फल का विचार करना कालपुरुष के अंग में लग्न से ६ भाव तक दाहिना अंग, ७ से १२ भाव तक बांयां अंग है।

प्रत्येक भाव में भी दाहिने बाँयें अंग का विचार होता है। १ से १५° तक दाहिना अंग पश्चात् बायां अंग समझना।

(६) लग्न राशि भावेश, भावकारक आदि का विचार कर ग्रह का स्थान दृष्टि आदि द्वारा सम्बन्ध और बल आदि पर पूर्ण विचार कर नाना प्रकार की वर्ग कुण्डलिग्राँ, अष्टक वर्ग आदि के चक्र पर से भी विचार कर फल कहना।

(७) इनके अतिरिक्त ग्रह-मैत्री, ग्रहों की दीप्तादि अवस्था, ग्रह की बाल-वृद्धादि, आयु, ग्रहों की १० अवस्था, ग्रहों का घर आदि तथा ग्रह रश्मि पर भी विचार कर फल कहना। साथ ही साथ गुलिक एवं अप्रकाश आदि ग्रहों की स्थिति पर भी विचार करना।

(८) लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, सूर्य कुण्डली से भी विचार कर कारक ग्रह से भी विचारना।

(९) ग्रह फल कैसे देता है, उसे फल देने का कौन साधन है, उसे अधिकार कौन

सा मिला है, उसमें सामर्थ्य कैसे बढ़ता और घटता है इन सब बातों पर विचारना होगा।

(१०) ग्रह में सामर्थ्य इस प्रकार जानना कि ग्रह का अधिकार व जिसके स्थान में हो उसकी योग्यता प्रमाण से स्थान बल पाकर उसमें सामर्थ्य आता है।

(११) एक ग्रह दूसरे का मित्र हो तो कोई भी कार्य करने का बल आ जाता है। ग्रह परस्पर शत्रु हों तो उसमें कार्य नाश करने की ताकत आ जाती है और सम होने पर परिस्थिति के अनुसार कभी अच्छा कभी बुरा हो जाता है।

(१२) भाव बल देखते समय यह अवश्य देखना कि उसका स्वामी किस भाव में बैठा है। भाव और ग्रहों के सम्बन्ध पर भी विचार करना।

(१३) भावफल और भावेशफल बल अनुसार विचारना। जैसे—लग्नराशि और लग्नेश भी बलवान् हो तो शरीर पुष्ट होगा।

यदि एक बलवान् और दूसरा अल्प बली हो तो सामान्य फल।

यदि एक बलवान् और दूसरा हीनबल हो तो थोड़ा फल।

दोनों निर्बल हों तो शरीर पुष्ट न होगा।

इसी प्रकार सब भाव का फल विचारना।

(१४) ग्रह उच्च या मित्र स्थानी हो षड्बल भी प्राप्त हो तो भी यदि वह सन्धि में हो तो अशक्त हो जाता है। ऐसा ग्रह कोई फल नहीं देगा। कोई ग्रह जब उस भाव में ठीक अंश में बराबर हो तो उस भाव का पूर्ण फल देगा। इसके बीच में कितना फल देगा यह अनुपात से जान लेना चाहिए।

भाव के आरम्भ के ग्रह को जितना फल देने की सामर्थ्य होती है उसका फल वृद्धि होने से जब ग्रह भाव के मध्य में आता है तो पूर्ण फल देने की सामर्थ्य होती है और उसके आगे जैसा जैसा बढ़ता है बल क्षीण होता जाता है अन्त में असमर्थ हो जाता है। इस कारण भाव और ग्रहस्पष्ट से मिलान कर देखना चाहिए कि ग्रह भाव की आरम्भ सन्धि, बीच या विराम सन्धि में कहाँ है।

(१६) लग्न के अनुसार ग्रह भाव नहीं तो सम्पूर्ण फल नहीं देता फल में विरोध हो और ग्रह समान हो तो जिसका बल अधिक हो उसका फल कहना।

(१७) आरम्भ सन्धि से भाव मध्य तक ग्रह आरोही कहलाता है उसके आगे विराम सन्धि ग्रह = अवरोही।

(१८) चन्द्र राशि के जो फल कहे गये हैं ये लग्न राशि के भी हैं और पृष्टि भी लग्न कुंडली सरीखी चन्द्र कुण्डली से भी विचारना।

(१९) लग्न कुंडली से जो फल विचारना बताया है वैसा चन्द्र कुंडली से भी विचार करे।

(२०) जितने फल कहे हैं दृश्य चक्र में प्रत्यक्ष रूप से फल देते हैं। अदृश्य चक्र में परोक्ष रूप से फल देते हैं।

दृश्य चक्र—सप्तम भाव के अंशादि के आगे ८-९-१०-११ भाव और लग्न के भुक्तांश तक है।

अदृश्य चक्र—लग्न के आगे भोग्य अंश से सप्तम के भुक्तांश तक।

फल विचारने के लिए ये सामग्री चाहिये—

(१) जन्म का शुद्ध स्थानिक समय (इष्ट) और जन्म स्थान।

(२) जन्म का अयन, गोल, सम्वत, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि।

(३) जन्म नक्षत्र का भोग्यभुक्त, और भभोग।

(४) ग्रह स्पष्ट। (५) भाव स्पष्ट। (६) लग्न कुण्डली और भाव कुण्डली।

(७) पंचधा मैत्री चक्र। (८) ग्रह के दशवर्ग या द्वादशवर्ग आदि के चक्र।

(९) सब ग्रहों के अष्टक वर्ग चक्र एवं सर्वाष्टक वर्ग चक्र आदि।

(१०) ग्रह और भाव का बल चक्र।

(११) ग्रह और भाव दृष्टि का चक्र।

(१२) ग्रह रश्मि चक्र।

(१३) गणित द्वारा स्पष्ट की हुई अंशायु, पिंडायु, निसर्गायु, अष्टक वर्ग की भिन्नायु, दशाविभाग, आयु, समुदाय आयु चक्र।

(१४) इष्ट कष्ट आदि के चक्र।

(१५) दशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतरदशा आदि के चक्र और उनका समय सम्वत्, मास आदि।

(१६) जन्म के समय ग्रहण उल्कापात आदि अशुभ योग तो नहीं थे।

फल विचारने के लिए क्या-क्या देखना पड़ता है

भाव फल जानने को प्रत्येक ग्रहों का विचार कर उनकी पूरी स्थिति का एक चक्र बना लेना चाहिये जिससे प्रगट हो कि उस ग्रह में शुभता और अशुभता कितनी-कितनी है। इसके लिए यह देखना कि—

१—ग्रह का शुभ, अशुभ, मिश्र, उदय, अस्त, वक्री, मार्गी, शीघ्रगामी या मंदगामी होना।

२—क्षेत्र, वह किस ग्रह के घर में है। उसका स्वामी, उसका मित्र, शत्रु, सम, अधिमित्र, अधिशत्रु के विचार से किस प्रकार से उसकी मैत्री है।

३—अधिकार—ग्रहों का उच्च नीच, मूलत्रिकोण, स्वस्थान आदि के विचार से उसका अधिकार कैसा है।

४—स्थान—केन्द्र त्रिकोण पणफर त्रिक त्रिषडाय आदि स्थान के विचार से उस ग्रह की कैसी स्थिति है और उसके साथ कोई ग्रह है क्या ?

५—मैत्री—सम्बन्धित ग्रहों से नैसर्गिक एवं पंचधा मैत्री से शत्रु, मित्र, अधिमित्र, अधिशत्रु, सम आदि के विचार से कैसा सम्बन्ध है।

६—दृष्टि—ग्रहों की परस्पर हैं या किसी ग्रह या भाव पर किस-किस प्रकार की दृष्टि है।

७—अवस्था और चेष्टा–(अ) ग्रह की दीप्तादि अवस्था कैसी है।

(ब) ग्रह की बाल तरुण आदि आयु किस प्रकार की है।

(स) ग्रह की प्रवास मृत्यु आदि कैसी चेष्टा है।

८—वर्ग-होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश आदि कुण्डलियों में ग्रहों की उपरोक्त बताई बातों पर विचार करना अर्थात्—

(अ) ग्रह का शुभाशुभत्व, अस्त, उदय, वक्री, मार्गी, क्षेत्र, स्थान, अधिकार, मैत्री, दृष्टि आदि का विचार करना।

(ब) वर्ग में वह शुभ वर्ग है या अशुभ का। वर्गोत्तम या षड्वर्ग शुद्धि है या नहीं ?

(स) पारिजात आदि वर्ग में वह किस प्रकार का है।

९—अष्टक वर्ग चक्र के अनुसार उस ग्रह की स्थिति कैसी है। उसे कितनी शुभ रेखा किस-किस राशि में प्राप्त हुई हैं और सर्वाष्टक चक्र में किस भाव में कितनी शुभ रेखा मिली हैं इत्यादि।

१०—बल—ग्रह या भाव पूर्णबली, मध्यबली, हीनबली या निर्बली है इसको विचार करना।

११—रश्मि–ग्रह की रश्मि क्या है ?

१२—गुण-धर्म–ग्रह और भाव में जो राशि है उनका क्या-क्या गुण-धर्म है। स्वभाव धातु सम विषम स्त्री पुरुष आदि जो पृथक्-पृथक् प्रत्येक के गुण-धर्म बताये हैं उनके अनुसार परिस्थिति वश गुण-धर्म ग्रह और राशि का भी पृथक् विचार करना।

१३—भाव–जिस विषय का विचार करना है वह किस भाव से विचारणीय है या उस भाव से क्या-क्या बातें विचार की जाती हैं।

१४—भावेश–भाव का स्वामी किस भाव में और किस राशि में है और उसके साथ कोई ग्रह है क्या ?

१५—भावकारक–उस भाव का या विशेष विचारणीय बात का कारक ग्रह क्या है ?

१६—भावस्थ ग्रह–उस भाव में ग्रह है या बिना ग्रह के है और भावस्पष्ट और ग्रहस्पष्ट के विचार से उस भाव के प्रारम्भ, मध्य या अन्त में है या भाव सन्धि में है।

१७—सम्बन्ध से होनेवाले योग–इन ग्रहों का परस्पर या किसी भाव या स्थान या राशि से कोई सम्बन्ध है या नहीं। सम्बन्ध अच्छा है या बुरा। इस प्रकार ग्रहों के स्थान, राशि, भाव, वर्ग आदि के द्वारा सम्बन्ध विचारने से ग्रहों के १८००० योग बनते हैं। जिनमें से बहुत से योग पृथक आगे बताये गये हैं।

१८—दशा–ग्रहों का फल उनकी दशा अन्तर्दशा में होता है। इससे ग्रहों की महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आदि से उनका समय सूचक सम्वत् मास आदि भी जान लेना चाहिये जिससे प्रगट हो कि अमुक ग्रह की दशा या अन्तर्दशा अमुक सयय में आयगी तब उस ग्रह का फल होगा।

इन प्रत्येक बातों से ग्रह और भाव की स्थिति को तौल कर उसके अच्छे या बुरे फल का विचार करना पड़ता है।

उपरोक्त बातों का ज्ञान होने पर निम्नलिखित फलों का विचार करना

१—जन्म समय का अयन, गोल, सम्वत्, मास, पक्ष, दिन, नक्षत्र योग, करण, लग्न, चंद्र आदि के विचार से फल।

२—प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव के अनुसार फल।

३—प्रत्येक भाव की राशि के अनुसार फल।

४—प्रत्येक भाव के स्वामी का स्थान एवं मैत्री आदि सम्बन्ध से फल।

५—प्रत्येक ग्रह का भिन्न-भिन्न भाव पर भावस्थ ग्रहों पर दृष्टि का फल।

६—किसी भाव में एक से अधिक ग्रह रहने का फल।

७—भाव के कारकग्रह से फल का विचार।

८—मारकग्रह और मारकेशग्रह का विचार।

९—कुण्डली में कोई विशेष योग अरिष्टयोग, राजयोग, दरिद्रयोग, राजदण्डयोग, अंग-भंगयोग, अल्पायु दीर्घायु आदि योग, धनयोग, सन्तानयोग आदि अनेकों योगों का विचार कर फल का निर्णय करना।

१०—आयु के योगों के अनुसार या गणित द्वारा आयुर्दाय का निर्णय करना।

११—वर्ग कुण्डलियों द्वारा विशेष फल का विचार, वर्गोत्तम आदि होने का फल और पारिजात आदि वर्ग का फल।

१२—अष्टवर्ग द्वारा फल विचार।

१३—जन्मकुण्डलीसे गोचर ग्रहों का विचार कर फल जानना।

१४—प्रत्येक भाव की भिन्न-भिन्न बातों का विचार करते हुए सम्पूर्ण भावों पर विचार।

१५—ग्रहों के उच्च-नीच स्वगृही मूलत्रिकोण मित्रगृही शत्रुगृही आदि होने पर फल का विचार।

१६—ग्रहों की अवस्था, आयु और चेष्टा एवं बल के अनुसार फल का विचार।

१७—ग्रहों के केन्द्र त्रिकोण पणफर त्रिक आदि स्थानों में रहने का फल या इन स्थानों के स्वामी होने का फल।

१८—गंडांत आदि का फल का विचार।

१९—कालांग विचार।

२०—अप्रकाश आदि ग्रहों के विचार से फल।

२१—अन्त में ग्रहों के फल का समय जानने की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आदि के समय पर होने वाले फल का विचार।

इन सब बातों पर विचार करते हुए सब प्रकार से फलों का मिश्रण कर उनको बुद्धि से तौल कर फल का अनुमान करना। ग्रहों का अच्छा और बुरा फल भी बताया

है। अच्छी परिस्थिति में यह ग्रह अच्छा फल देगा. बुरी परिस्थिति में बुरा फल देगा इसपर ध्यान रहे।

इन सबका फल का विचार आगे दिया है।

सारांश में भावफल विचारने में इन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है—

१—विचारणीय भाव में कितनी शुभता या अशुभता है। उस भाव का सम्बन्ध विचारने से जितनी शुभता होगी उतना शुभफल होगा नहीं तो उसका फल कष्टदायक होगा।

२—भावेश या उसका कारकग्रह उस भाव में है या किस क्षेत्र में है, उसका मित्र गृही आदि क्षेत्र, उच्च आदि अधिकार और बल क्या है वक्री अस्त आदि तो नहीं है। उस भाव का भावेश वहाँ न हो तो क्या उसकी दृष्टि वहाँ है और किस-किस भाव या ग्रह से उसका सम्बन्ध है।

३—उस भाव में कौन ग्रह हैं, उस ग्रह का अधिकार क्षेत्र बल आदि कैसा है, भावेश से उसकी मैत्री कैसी है। यह ग्रह शुभ पाप या मिश्र कैसा है नीच अस्त शत्रु क्षेत्री आदि तो नहीं है। वह शुभ स्थान में है या अशुभ, उसका भावेश शुभ है या पापग्रह। वह ग्रह किस-किस भाव पर दृष्टि डालता है और उस ग्रह का सम्बन्ध कहाँ-कहाँ है। जिस ग्रह से सम्बन्ध हो वह अच्छी दशा में है या बुरी दशा में।

४—भावेश केन्द्र त्रिकोण आदि में है क्या ? त्रिकोणेश केन्द्रेश आदि भी है क्या ? या त्रिक त्रिषडाय आदि स्थान में है। अर्थात् वह शुभ घर में है या अशुभ घर में ?

५—भावस्थ ग्रह या भावेश वर्ग में स्वनवांश, उच्चनवांश या वर्गोत्तम है ? पारिजातक आदि वर्ग में उसका क्या अधिकार है।

६—भावेश पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि है और उसका सम्बन्ध कहाँ-कहाँ है।

७—उस भाव पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि है और भाव बल क्या है।

८—फिर भिन्न-भिन्न ग्रहों के सम्बन्ध का विचार कर विशेष योगों की खोज करना जो उन ग्रहों की स्थिति के अनुसार बनते हैं।

दशा के फल का स्थूल विचार

१—विंशोत्तरी महादशा आदि के स्वामी का शुभ या अशुभ प्रभाव केवल उसकी दशा में ही नहीं होता, दूसरे ग्रह की अंतर्दशा में भी उसका फल होता है।

२—महादशा में ग्रह अंतर्दशा वाले ग्रह का प्रभाव ग्रहण कर लेता है अर्थात् अंतर्दशा वाले ग्रह का प्रभाव मुख्य होता है और महादशा वाले ग्रह का शुभाशुभ प्रभाव दब जाता है।

३—सब भाव के विचार से शुभ ग्रह अपनी दशा में अपने शुभफल को अच्छी प्रकार से प्रगट करेगा जैसे लग्न का सम्बन्धी शुभग्रह लग्न से सम्बन्ध रखनेवाले अच्छे फल आरोग्यता आदि को देगा। धनभाव में शुभग्रह का सम्बन्ध होने पर धन वस्त्र आदि प्राप्त होंगे। सहज भाव से शुभ सम्बन्ध होने पर भाई बहिन की सन्तुष्टि होगी इत्यादि

प्रकार से सब भावों का शुभ सम्बन्ध होने का फल उस शुभग्रह की दशा में प्रगट होगा।

४—इसी प्रकार अशुभ ग्रह अपनी दशा में अनिष्ट फल देते हैं।

५—२, ७ भाव के स्वामी मारकेश होते हैं। उनकी दशा अन्तर्दशा में अल्पायु, दीर्घायु आदि के विचार से उस समय के आने पर मृत्यु होती है। यदि मृत्युभंग योग हो तो मृत्यु नहीं होती परन्तु मृत्यु तुल्य कष्ट होगा। किसी ग्रह के कारण कुछ जीवन प्राप्त हो जाता है तो मरने नहीं पाता परन्तु नई प्रकार के क्लेश धनहानि आदि होते हैं।

६—मारकेश का अनिष्ट फल महादशा में होता है। अन्य अशुभग्रह का बुरा प्रभाव अन्तर्दशा में होता है।

७—मारकेश या किसी अशुभग्रह की दशा हो उसमें केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी का अन्तर हो परन्तु किसी भी ग्रह से दृष्टि स्थान आदि के विचार से शुभ सम्बन्ध न हो तो अनिष्ट फल होता है।

८—यदि केन्द्र या त्रिकोण के किसी स्वामी की दशा हो उसमें मारकेश का अन्तर हो तो बहुत अशुभफल होता है।

९—मारकेश की महादशा में शुभग्रह का अन्तर हो तो मरण तो नहीं होता परन्तु संकट टल कर मरण तुल्य कष्ट होता है।

१०—मारकेश की महादशा में किसी अशुभग्रह का अन्तर हो तो शुभग्रह सम्बन्ध होने पर भी मृत्यु होती है।

११—मारकेश या किसी अन्य अशुभग्रह की महादशा हो उसमें राजयोग कारक ग्रह का अंतर हो और उनके बीच सम्बन्ध न हो तो अशुभ परिणाम होता है लाभ के बदले हानि होती है।

१२—केन्द्र के स्वामी की दशा में त्रिकोण के स्वामी का अंतर हो और उसमें कोई शुभ सम्बन्ध हो तो शुभफल होता है। शुभ सम्बन्ध न होने से अशुभ फल होता है।

१३—ये ग्रह अपनी दशा में किसी भाव के फल को नष्ट कर देते हैं :—

(अ) किसी भाव से गिनने पर अष्टम स्थान का स्वामी।

(ब) किसी भाव से गिनने पर २२ वें द्रेष्काण (खर द्रेष्काण) का स्वामी।

(स) किसी भाव से गिनने पर ६, ७, ८ घर में, ३, ४ या ५ ग्रह बलहीन हों।

१४—उस भाव से गिनने पर त्रिकोण में शुभग्रह हों ३, ६ ११ घर में पापग्रह हों और जो उस भावेश के मित्र ग्रह हों, यदि वे बलवान हो तो अपनी दशा में सफलता लाते हैं।

१५—शुक्र शनि परस्पर मित्र हैं इससे शुक्र में शनि का अंतर शुभ है शुक्र के सदृश फल देगा।

शनि में शुक्र का अंतर हो तो शुक्र अपना अंतर छोड़कर शनि का प्रभाव ग्रहण कर लेता है।

१६—राजयोग कारक शुभग्रह का फल विंशोत्तरीदशा में होता है।

१७—राजयोग कारक शुभग्रह का सम्बन्ध किसी शुभग्रह से हो तो राजकारक ग्रह की दशा में शुभग्रह की अंतर्दशा होने पर उस समय राजयोग का शुभफल प्राप्त होता है।

१८—राजयोग कारक में कोई अशुभयोग बाधक न हो तो उसका शुभफल होगा अन्यथा नहीं होगा। अर्थात् राजयोग कारक ग्रह दोष रहित हो अस्त वक्री नीच आदि न हो और उससे सम्बन्ध रखने वाले ग्रहों में भी ये दोष न हों तो शुभफल होता है।

१९—प्रत्येक भाव के भावेश का जो शत्रु हो या ग्रह जो ऐसे घर में हो जहाँ अष्टक वर्ग में शुभ रेखा न हो तो उस ग्रह की दशा में उस भाव के फल की हानि होती है।

२०—महादशा स्वामी केन्द्रेश होकर शुभग्रह हो तो उसकी अंतर्दशा साधारण होगी।

२१—महादशा स्वामी १–४–१० भाव का स्वामी हो और वह अशुभग्रह हो तो उस ग्रह की अंतर्दशा में शुभफल होगा।

२२—त्रिकोण स्वामी की अंतर्दशा आने पर त्रिकोणेश अशुभ भी हो तो शुभ फल होगा।

२३—लग्नेश और दशमेश में नैसर्गिक मित्रता हो तो राजयोग कारक हो जाता है। एक दूसरे के अंतर में राजयोग का शुभफल होता है।

२४—लग्नेश और चतुर्थेश का सम्बन्ध राजयोग कारक होता है। जिसकी दशा अंतर्दशा शुभ है।

२५—व्ययभाव का स्वामी शुभग्रह हो तो उसकी अंतर्दशा में अशुभफल होता है।

२६—यदि व्ययेश शुभग्रह हो और महादशा के स्वामी से उत्तम सम्बन्ध हो तो अंतर्दशा में अच्छा फल देता है।

२७—द्वितीय भाव का स्वामी शुभग्रह हो और महादशा के स्वामी से उसका अच्छा सम्बन्ध हो तो धनेश की अंतर्दशा शुभ होगी।

२८—इसके विरुद्ध यदि महादशापति शुभग्रह होकर केन्द्रेश हो और द्वितीयेश शुभ-ग्रह का अन्तर हो तो अंतर्दशा में उसका अशुभ फल होता है।

२९—इस प्रचार लग्नेश, महादशा या अंतर्दशा का स्वामी, वर्षदशा का स्वामी, प्रश्नलग्न का स्वामी और उससे चतुर्थ या दशम स्थान का स्वामी यदि शुभग्रह हो तो उसका प्रभाव अशुभ पड़ता है। यदि इन पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो अच्छा प्रभाव पड़ता है।

३०—६, ८, १२, ११ घर के स्वामी की दशा कष्टप्रद होती है।

३१—तृतीयेश व और ग्रह जो तृतीय में हो अष्टम घर को देखता हो या २२ वें द्रेष्काण का स्वामी हो, मांदि जिस घर में हो उस राशि का स्वामी हो और राहु जब ६–८–१२ घर में हो तो ये ग्रह अपनी दशा में उस भाव के फल को नाश करते हैं। यह नवांश कुंडली से भी विचारना।

३२—महादशा और अंतर्दशा के स्वामियों में—

(अ) शुभ सम्बन्ध हो तो शुभफल, अशुभ सम्बन्ध हो या शत्रुता हो तो अशुभ फल होता है।

(ब) इन दोनों में कोई सम्बन्ध न हो तो नाम मात्र को फल होता है।

(स) दोनों बली और शुभग्रह हों तो उत्तम फल होगा। यदि दोनों अशुभ और निर्बल हों तो अशुभफल होगा।

(द) यदि दोनों स्वामियों में एक बली दूसरा निर्बल या एक शुभ दूसरा अशुभ स्थान का स्वामी हो तो मिश्रित फल होगा।

३३—भावेश भाव स्थान में होने पर भी बल में हीन हो और क्रूरग्रह या शत्रुग्रह की अंतर्दशा हो तो बुरा फल होता है।

३४—या भावेश भाव में हो और बलवान् हो तो भी क्रूर या शत्रु ग्रह की अंतर्दशा में अशुभफल देगा।

३५—शीर्षोदय राशि में ग्रहदशा के आरम्भ में, पृष्ठोदय राशि में दशा के अन्त में और उभयोदय राशि में दशा में सदाफल देते हैं।

३६—मध्यादशा—त्रिक या उच्चग्रह की दशा कहलाती है।

अधमा दशा—जो अपने नीच या शत्रु राशि में हो या नवांश में शत्रु या नीच राशि में हो उसकी दशा।

छिद्रादशा—जन्मकालीन शत्रु या नीचगत बलवान् ग्रह की अंतर्दशा छिद्रा-दशा कहलाती है।

भाव का फल कब होगा इसका अन्य प्रकार से विचार

(१) लग्नेश से विचार—लग्नेश जब गोचर में उस सम्बन्वित भाव का स्वामी जहाँ हो उस राशि या अंश के त्रिकोण में जो राशि आवे उसी राशि में जब लग्न हो।

(२) भावेश से विचार—लग्नेश जिस राशि या अंश में हो उसके त्रिकोण में जो राशि हो उस पर गोचर में जब उस भाव का स्वामी आवे।

(३) कारक से विचार—दोनों स्वामी अर्थात् भाव और लग्न का स्वामी एक दूसरे के साथ हों या दृष्टि योग करें।

या जब उस विचारणीय भाव का कारक गोचर में लग्न या चंद्र की राशि का हो उसके स्वामी के साथ आ जावे।

(४) अच्छे फल का समय—जिस भाव का विचार करना है उस भाव का स्वामी जहां हो उसकी राशि या अंश खोजो, जब ग्रह गोचर में उस राशि या अंश के त्रिकोण में आवे तो उस भाव का अच्छा फल प्रगट होगा।

(५) शत्रु—जब लग्नेश और षष्ठेश गोचर में साथ पड़े और यह षष्ठेश लग्नेश से बल में कम हो तब उसके शत्रु उसके आधीन होंगे। नहीं तो विपरीत फल होगा अर्थात् षष्ठेश बली हो तो विरुद्ध फल होगा।

(६) द्वेष—यदि भाव स्वामी और लग्नेश के बीच शत्रुता हो, जो नैसर्गिक या

तात्कालिक मैत्री के विचार से हो या ६ या ८ घर का सम्बन्ध एक दूसरे से हो, तो जब गोचर में ये उस भाव में आवें तो उस समय जातक को द्वेष डाह प्रतिद्वंद्विता आदि उत्पन्न हो।

(७) मित्रता—परन्तु उन दोनों में मित्रता हो तो जब गोचर में उस भाव में जावे तो उस समय नई मित्रता होगी।

(८) भाव सफल—जब किसी विचारणीय भाव के स्वामी के साथ गोचर में लग्नेश आवे और वह भावेश बली हो तो उस भाव का अच्छा फल अनुभव में आवेगा।

इसी प्रकार लग्न के स्थान में चन्द्रमा को लेकर फल का विचार करना।

कार्यसिद्धि योग

जब लग्न कुंडली से या वर्ष कुंडली से या किसी प्रकार से विचारना हो कि अमुक कार्य सिद्ध होगा या नहीं, तब उस समय की लग्न निकाल कर लग्नेश लेना। फिर जिस विषय का विचार करना हो उस सम्बन्ध का भाव लेना उस भाव को कार्य स्थान कहेंगे और उस भाव का स्वामी कार्येश कहलायगा। अब लग्न, लग्नेश, कार्य स्थान और कार्येश पर से इस प्रकार विचार कर देखो—

(१) लग्नेश कार्येश लग्न में हों।
(२) लग्नेश कार्येश दोनों कार्य स्थान में हों।
(३) किसी स्थान में लग्नेश कार्येश साथ हों।
(४) लग्नेश कार्य स्थान में हो और कार्येश लग्न में हो।
(५) लग्नेश लग्न में और कार्येश कार्य भाव में हो।
(६) लग्नेश कार्येश कहीं हों परन्तु उनकी परस्पर दृष्टि हो।
(७) लग्नेश और कार्येश अपने उच्च में या स्वगृही हों।

इन योगों के होने से कार्य होगा अन्यथा नहीं होगा।

कार्य सिद्ध होने का समय

(१) चन्द्र की दृष्टि और योग से जो समय आवे उस समय में या जब लग्नेश और कार्येश का मिलाप हो पंचांग द्वारा निश्चित करना।

(२) प्रश्नकाल में जो लग्न हो उसके नवांश स्वामी के अनुसार समय का ज्ञान होता है।

नवांशेश	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	की अवधि
समय	अयन (६) मास	क्षण	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	जानना

अब—वर्ष, मास दिन, पक्ष क्षण आदि जानने को जितने अंश पर हो (उदित अंश पर) इनकी उतनी हो संख्या लेना।

प्रश्न में सफलता—दशमेश से सफलता निश्चित करना। यदि दशम या दशमेश शुभ या शनि युक्त हो तो सफलता होगी।

कुछ शब्दों का स्पष्टीकरण

यद्यपि इनमें से कुछ बातों का स्पष्टीकरण पहिले ही कर दिया गया है परन्तु यहाँ और भी स्पष्ट रूप से समझाया जाता है।

(१) ग्रहों का योग या दृष्टि—किन्हीं ग्रहों के साथ हो या किन्हीं ग्रहों की दृष्टि हो।

शुभ योग दृष्टि—शुभग्रह का साथ हो या शुभग्रह की दृष्टि हो।

पाप योग दृष्टि—पापग्रह का साथ हो या पापग्रह की दृष्टि हो।

(२) ग्रहयोग (एकत्र)—किसी एक राशि पर ग्रहों का एकत्र होना। कभी-कभी एक राशि में ८ ग्रह तक एकत्र हो जाते हैं परन्तु इनका फल विचारने के लिये उन ग्रहों का अंशों के विचार से पास-पास भी होना आवश्यक है। यदि यह योग दीप्तांश के भीतर होगा तो उसका अच्छा या बुरा प्रभाव जो वह ग्रह उत्पन्न करता हो, अनुभव में आवेगा, यदि उन दोनों ग्रहों के बीच अधिक अंशों का अन्तर पड़ जाय तो उस योग का प्रभाव घट जायगा। ग्रहों के दीप्तांश ये हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१५ अंश	१२	८	७	९	७	९ अंश

मान लो सूर्य मंगल एक राशि में हैं उन दोनों के ग्रह स्पष्ट का अन्तर करने से वह अन्तर ८ अंश या उससे अल्प है तो उस योग का पूरा अच्छा या बुरा प्रभाव प्रगट होगा। यह अन्तर बढ़ कर ज्यों-ज्यों अधिक होता जायगा त्यों-त्यों प्रभाव घटता जायगा। मिथुन राशि में बुध २° पर है और मिथुन में गुरु २९° पर है तो यहाँ दोनों का अन्तर २७° का हो जाने से बुध और गुरु के एकत्र हो जाने का जो फल बताया गया है वह फल नहीं होगा चाहे ऊपरी दृष्टि से देखने में वह भले ही एक ही राशि में हों।

(३) दृष्टि के विषय में पहिले समझा चुके हैं इसी प्रकार दृष्टि भी दीप्तांश के भीतर होनी चाहिये।

(४) बली ग्रह—गणित से ग्रह का षड्बल निकाला जाता है उससे प्रगट हो जाता है कि कौन ग्रह सबसे अधिक बली है वह ग्रह बली है या निर्बल। साधारण प्रकार से इस तरह विचार करते हैं कि ग्रह का कोई अच्छा साथी हो या शुभग्रह का योग या दृष्टि हो, उच्च मूलत्रिकोण आदि स्थान में हो मित्रगृही हो, नवांश में उच्च या मित्र के नवांश में हो इत्यादि।

(५) मृत्यु का अर्थ—फल विचारने में जहाँ-जहाँ मृत्यु शब्द आता है वहाँ उसका अर्थ परिस्थिति के अनुसार विचार करना। मृत्यु का व्यापक अर्थ ८ प्रकार से मरण बताया है १ व्यथा, २ दुःख, ३ भय, ४ लज्जा, ५ रोग, ६ शोक, ७ अपमान, ८ मरण। यहाँ परिस्थिति और क्रूरता पर विचार कर मृत्यु शब्द का अर्थ लगाना।

(६) आरोही ग्रह (चढ़ाव)—जो ग्रह अपनी परम नीच स्थिति को पार कर जब उच्च की ओर बढ़ने लगता है वह आरोही है।

भाव के विचार से ग्रह जब आरम्भ सन्धि से भाव मध्य तक हो तो वह आरोही, पश्चात् अवरोही हो जाता है।

(७) अवरोही ग्रह (उतार)—ग्रह जब अपने परम उच्च को पार कर नीच की ओर बढ़ने लगता है अर्थात् ऊँची स्थिति से उतर कर जब वह नीचे की ओर जाने लगता है।

(८) वर्गोत्तम—किसी राशिमें ग्रह हो उसका नवांश निकालने पर नवांश में भी उसी राशि में वह ग्रह आ जाये। इस प्रकार राशि और नवांश दोनों में एक सा होने पर वर्गोत्तम कहेंगे। जैसे मेष का सूर्य है यदि नवांश में भी मेष राशि में सूर्य आ जाये तो कहेंगे सूर्य वर्गोत्तम में है।

(९) शुभ वर्ग—वर्गकुंडली में कोई ग्रह मूलत्रिकोण स्वगृही उच्च या मित्रगृही आदि हो या केन्द्र त्रिकोण में या वर्गोत्तम हो या शुभ ग्रहों के वर्ग में हो तो शुभ है।

(१०) उत्तमांश—नवांश सप्तांश आदि में स्वअंशक में ग्रह हो या उपरोक्त प्रकार से वर्ग कुंडली में परमोच्च स्वगृही आदि में ग्रह हो।

(११) षडवर्ग शुद्धि—षडवर्ग (लग्न कुंडली, होरा कुंडली, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश) में जो राशि है, अंश में अर्थात् वर्ग में वही राशि हो। जैसे वृष राशि में वृष का नवांश हो इत्यादि प्रकार से प्रत्येक वर्ग में विचारना सूर्य चन्द्र का त्रिशांश नहीं होता। और भौमादि ताराग्रहों का होरा नही होता। इस तरह सब ग्रहों की षडवर्ग शुद्धि नहीं हो सकती केवल ५ वर्ग ही शुद्ध हो सकते हैं।

(१२) शुभ षष्ठ्यंश—वर्ग के षष्ठ्यंश में प्रत्येक षष्ठ्यंश के नाम दिये हैं जिनमें कोई शुभ है कोई अशुभ है।

मर्त्यांश, देव लोकांश, किन्नरांश, आदि शुभ हैं।

(१३) अशुभ (क्रूर) षष्ठ्यंश—घोर, राक्षस, अग्नि, पात, प्रेत, पुरीषांश, कालाद्ध्यांश आदि क्रूर हैं।

(१४) अच्छे या बुरे घर—गुरु शुक्र के घर लाभजनक हैं शुभ हैं। बुध का घर उसके साथी के अनुसार कभी अच्छा कभी बुरा हो जाता है। चंद्र का घर जब चंद्र पूर्णबली हो तो शुभ होता है निर्बल होने पर अशुभ होता है और पाप ग्रह के घर बुरे होते हैं। भाव के सम्बन्ध से अच्छे बुरे भाव पहिले बता चुके हैं।

१५—शुभ फल होगा इसका व्यापक अर्थ—

शरीर आरोग्य, धन वृद्धि, शत्रु पर विजय, स्त्री व संतान सुख, शरीर सुख, वाहन सुख, भाग्योदय, राज्यप्राप्ति, मनोत्कर्ष, विद्याविषयक उन्नति, नवीन योजना इत्यादि शुभ बातें ग्रह परिस्थिति वश भाव के सम्बन्ध से विचारना।

(१६) अशुभ फल—उपरोक्त के विपरीत बुरे फल कष्ट, धन हानि, मानसिक दुःख,

रोग, अवनति, असफलता, विपत्ति, अरिष्ट, राजदण्ड, दुर्भाग्य आदि अनेक प्रकार के बुरे फल ग्रह की स्थिति के अनुसार भाव सम्बन्ध से विचारना।

(१७) दृश्य अदृश्य चक्र--आकाश में जो भाव दिखता है वह दृश्य चक्र या खंड है। जो नहीं दिखता वह अदृश्य चक्र या खंड है। दिन रात में आधा ही आकाश दिखता है। पूर्व से पश्चिम का सदा १८० अंश का भाग सदा दिखता है।

दृश्यचक्र--६ राशियां, लग्न, १२, ११, १०, ९, ८, ७, भाव लग्न के भोग्यांश सप्तम के भुक्तांश तक का भाग।

अदृश्यचक्र--६ राशियां सप्तम के भोग्यांश से लेकर ६, ५, ४, ३, २, भाव और लग्न के भुक्तांश तक।

मानलो वृष लग्न के २१° भुक्त हो चुके हैं जो अदृश्य भाग में हैं इसके आगे दृश्य के शेष ९ भोग्यांश दृश्य भाग में हैं इसके आगे १२, ११, १०, ९, और ८ भाव पूरे और सप्तम भाव में वृश्चिक राशि के २१° हैं वे पूरे २१ भुक्तांश दृश्य भाग में हुए।

शेष अर्थात् सप्तम के ९ भोग्यांश और ६, ५, ४, ३, और २ भाव पूरे और लग्न वृष के २१ भुक्तांश मिलाकर अदृश्य खण्ड हुआ।

(१८) चक्र खंड--लग्न के ६ भाव तक पूर्वार्द्ध आगे ७ से १२ भाव तक (उत्तरार्द्ध) पश्चिम भाग है।

अन्यमत--दशम के भोग्यांश से चतुर्थ के भुक्तांश तक = पूर्वार्द्ध है। चतुर्थ के भोग्यांश से दशम के भुक्तांश तक = पश्चिमार्द्ध है।

(१९) चक्र संधि--इनकी सन्धि की एक-एक घड़ी--

मीन-मेष	कर्क-सिंह	वृश्चिक-धन	(इन्हें ऋक् सन्धि या लग्न
१ घड़ी	१ घड़ी	१ घड़ी	सन्धि भी कहते हैं।)

भसन्धि (ऋक् सन्धि) ४--८--१२ राशि की।

(२०) गंडांत ३ प्रकार का है।

(१) राशि संधि (२) लग्न संधि (३) नक्षत्र सन्धि।

नक्षत्र संधि--इन नक्षत्रों के संधि की ३--३ घड़ी।

रेवती-अश्विनी	आश्लेषा-मघा	ज्येष्ठा-मूल।
३ घड़ी	३ घड़ी	३ घड़ी।

(२१) परिवर्तन योग्य अन्योन्याश्रय योग--जब किसी एक भाव का स्वामी अन्य भाव में हो और उस भाव का स्वामी पहिले बताये भाव में हो अर्थात् ग्रह एक दूसरे के घर में किसी भी भाव में हो।

(२२) मालाश्रय योग--जब एक भाव का भावेश दूसरे अन्य भाव में उसका भावेश किसी और भाव में हों और उसका भावेश लग्न आदि पहिले भाव से सम्बन्वित हो तो योग को माला सी बन जाती है। जैसे लग्नेश चतुर्थ में हो, चतुर्थेश पंचम में हो, पंचमेश नवम में हो नवमेश दशम हो, दशमेश लाभ या लग्न में हो--ऐसे माला योग में जन्मा मनुष्य बहुत भाग्यवान् होता है।

(२३) त्रिकोण योग--जब दो भावेश एक दूसरे के त्रिकोण में हो--

केन्द्र योग—जब दो भावेश एक दूसरे केन्द्र में हों।

तृतीयैकादश योग--जब भावेश एक दूसरे से ३ और ११ भाव में हों।

द्विर्द्वादश योग--जब भावेश एक दूसरे से २ और १२ भाव में हों।

षडष्टक योग--जब भावेश एक दूसरे से ६ और ८ भाव में हों।

भावेश दृष्टि योग—जब दो या अधिक भावेश एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों अर्थात् इनकी परस्पर दृष्टि हो।

(२४) कारकांश--फल निर्णय के लिए ग्रहों का कारकत्व दिया है। इसके लिये होरा, द्रेष्काण, नवमांश, आदि कई प्रकार की वर्ग कुण्डलियाँ बनाकर किसी विशेष वर्ग कुण्डली से किसी विशेष फल का विचार होता है। जैसे पत्नी का विचार नवांश कुण्डली से, विद्या का विचार चतुर्विंशांश कुण्डली से, पुत्र का विचार सप्तमांश से, सम्पदा का विचार होरा से, भाइयों का विचार द्रेष्काण से, भाग्य का विचार चतुर्थांश कुण्डली से इत्यादि।

(२५) राशि मास—सूर्य मास = एक राशि में सूर्य का समय = राशि मास है।

राशि वर्ष—गुरु वर्ष = एक राशि में गुरु का समय = राशि वर्ष है।

(२६) परमोच्च नवांश पर विचार—ग्रह यदि इन राशियों में हो और परमोच्च के अंश के भीतर हो तो परमोच्च नवांश में हो सकता है ऐसा किसी का विचार है।

परमोच्च अंश के स्पष्टीकरण का चक्र

ग्रह	उच्च राशि	परमोच्च राशि-अंश	राशियों का नवांश	नवांश की राशि	अंश से	अंश तक
सूर्य	मेष	मेष १०°	१–५–९	मेष	०°–०′	३°–२०′
चंद्र	वृष	वृष ३°	०	,,	०°–०′	३°–०′
मंगल	मकर	मकर २८°	२–६–१०	मकर	०°–०′	३°–२०′
			३–७–११	,,	१०°–०′	१३°–२०′
			४–८–११	,,	२०°–०′	२३°–२०′
बुध	कन्या	कन्या १५°	४–८–१२	कन्या	६°–४०′	१०°–०′
गुरु	कर्क	कर्क ५°	४–८–१२	कर्क	०°–०′	३°–२०′
शुक्र	मीन	मीन २७°	२–६–१०	मीन	६°–४०′	१०°–०′
			३–७–११	,,	१६°–४०′	२०°–०′
			५–९–१२	,,	२६°–४०′	३०°–०
शनि	तुला	तुला २०°	३–७–११	तुला	०°–०′	३°–२०′
			४–८–१२	,,	१०°–०′	१३°–२०′
राहु	वृष	वृष २०°′	१–५–९	वृष	३°–२०′	६°–४०′
			२–६–१०	,,	१३°–२०′	१६°–४०′

केतु	वृश्चिक	वृश्चिक २०°	३–७–११	वृश्चिक	३°–२०'	६°–४०'
			४–८–१२	,,	१३°–२०'	१६°०४०'

इस प्रकार अंशों के विचार से जो ग्रह की राशि का अंश है वह अंश परमोच्च समझा जा सकता है। परन्तु जो उच्च नवांश इस प्रकार प्राप्त हो उस उच्च नवांश की प्राप्त राशि का ही अंश का विचार कैसे हो सकता है। क्योंकि एक नवांश ३°–२०' का ही होता है उसमें परमोच्च के अंश उस नवांश राशि में कैसे प्रकट होंगे।

(२७) ग्रन्थ में वर्णित शब्दों का आधुनिक काल देश आदि विचार कर उसका अर्थ विचारना। जैसे भारतवर्ष में राजा नहीं है इत्यादि पर विचार।

राजा—कोई श्रेष्ठ अधिकारी या श्रेष्ठ माननीय पुरुष।

राज्य—श्रेष्ठ अधिकारो के नियन्त्रण का विस्तार।

मंत्र—मंत्रशास्त्र के अतिरिक्त वर्तमान में सलाह वा मार्गदर्शन।

राजकीय चिन्ह युक्त—अधिकार से सम्बन्ध रखने वाला डेरा-ड्रेस तगमा, अधिकार पत्र, श्रेष्ठ आसन, श्रेष्ठ वाहन, श्रेष्ठ स्थान आदि।

धनुर्विद्या—सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्र।

राजकुल में उत्पन्न—श्रेष्ठ अधिकारी या माननीय पुरुष के यहाँ जन्मा हुआ।

छत्रचामर आदि डुले—राजकीय सम्मान प्राप्त हो।

इन्द्र पद—श्रेष्ठ अधिकार।

राज कोप से नेत्र-हाथ-पैर आदि हानि—आज-कल यह दण्ड भारत में नहीं दिया जाता जनता क्रोधित होकर कानून अपने हाथ में लेकर इस प्रकार दण्ड देवे या आपरेसन आदि से हानि हो।

मृद्वंश या पारावतांश में—अध्याय २१ में षड्वर्ग दिया है उसमें दशवर्ग के गोपुर सिंहासन, पारावत देवलोक वैशेषिकांग आदि दिये हैं और षष्ठ्यंश में शुभ मृद्वंश, सुधांश, अमृतांश, कुबेरांश आदि दिये हैं क्रूर षष्ठ्यंश में घोरांश, गरलांश, कालांश आदि दिये हैं उनसे विचार लेना।

प्रयाग आदि तीर्थ—जातक के मन अनुसार पवित्र भूमि।

गंगा स्नान—जातक के मन अनुसार कोई पवित्र या श्रेष्ठ नदी में स्नान।

वेद शास्त्र पुराण—जातक के मन अनुसार धार्मिक या श्रेष्ठ भावना उत्पादक ग्रंथ।

देव ब्राह्मण भक्ति—जातक के मन अनुसार श्रेष्ठ व्यक्तियों का आदर करने वाला। या उनकी आज्ञा पर चलने वाला या उस वर्ग के संत महात्मा आदि।

देव दोष—अपने कार्यों के परिणाम स्वरूप अज्ञात शक्ति से हानि आदि।

भूत-प्रेत बाधा—अज्ञात शक्तियों द्वारा मानसिक शक्तियों पर बुरा प्रभाव।

स्त्री—जातक स्त्री हो तो स्त्री के स्थान में उसका पति समझा जाये पुरुष के गुप्तांग के वर्णन में स्त्री का गुप्तांग समझा जावे जैसा कि कालांग में विचार होता है।

इसी प्रकार अपनी बुद्धि से शब्दों का अर्थ समय के अनुसार करना चाहिये।

अध्याय १०
निषेक अध्याय

गर्भाधान कुण्डली——धार्मिक रीति से गर्भाधान हुआ हो उसकी जो कुण्डली बनाई जावे वह आधान-कुण्डली या गर्भ कुण्डली हुई।

आधान लग्न——स्त्री की वह लग्न, जब गर्भ संभव हो, उसे आधान लग्न कहते हैं।

आधान समय——गर्भाधान का ठीक समय न ज्ञात हो तो प्रश्न लग्न से या जन्म लग्न से फलादेश करे। यदि गर्भाधान समय ज्ञात हो तो उस समय जो लग्न हो उससे जातक कुण्डली बना लेवें। उस समय की नवांश कुण्डली भी बना लेवें।

मासिक धर्म होने पर गर्भ-स्थापनकर्त्ता ग्रह

चन्द्र और मंगल ये दोनों ग्रह स्त्री के उदर में गर्भस्थापन के कारण हैं।

गर्भ-योग

(१) आधान या प्रश्न लग्न में सूर्य शुक्र मंगल अपने-अपने नवांशों में हों तो अवश्य ही गर्भ रहे।

(२) ये सब ग्रह ऐसे नहीं हैं तो भी पुरुष की राशि में उपचय में बली सूर्य शुक्र अपने-अपने गृह या नवांश में हों तो गर्भ संभव होगा।

(३) स्त्री के उपचय में मंगल चंद्र अपने-अपने नवांश में हो तो गर्भ संभव है।

(४) गुरु लग्न नवम या पंचम में हो तो भी।

(५) स्त्री के उपचय में चंद्र या मंगल से दृष्ट हो तब गर्भ संभव है।

(६) पुरुष के उपचय में चन्द्रमा को गुरु देखें तो गर्भ संभव है।

गर्भपुष्ट या सुखी होने का योग

(१) चंद्र के साथ या लग्न में शुभ ग्रह हों (२) लग्न और चंद्र एकत्र हों उनसे युक्त शुभ ग्रह हो (३) लग्न या चंद्र से ९, ५, ७, २, ४, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों ३-११ स्थान में पाप ग्रह हों। लग्न या चन्द्र सूर्य से दृष्ट हों।

जन्म कुण्डली द्वारा गर्भ संभव योग

(१) स्त्री की जन्म राशि से १, २, ५, ७, ८, ९, १२ स्थानों में कहीं चंद्र हो तो प्रत्येक मास स्त्री को मासिक धर्म होता है।

(२) उपरोक्त नियम से मासिक होने पर उस चंद्र पर मंगल की ४, ८ या ७ वीं स्थान की (पूर्ण दृष्टि) हो तो उस समय स्त्री गर्भधारण योग्य होती है। मंगल की दृष्टि न हो तो गर्भ नहीं हो सकता।

(३) मासिक होने पर उपरोक्त बातें होने पर जन्मराशि से ३-६-१०-११ इन

स्थानों में से किसी स्थान में चंद्र हो और उसपर नवम या पंचम दृष्टि से गुरु की दृष्टि हो तो गर्भ संभव होगा। ऐसा न हो तो गर्भ संभव नहीं है।

(४) यदि ऊपर बताये नियम के अनुसार स्त्री या पुरुष का ग्रह अनुकूल न हो तो लग्न से भी विचार करना जैसा नीचे बताया है।

(अ) स्त्री या पुरुष को ऊपर बताये ग्रह हों यही ग्रह अर्थात् सूर्य चंद्र मंगल गुरु व शुक्र ये ऊपर बताये स्थानों में हों। जिस लग्न में गर्भाधान हो उस लग्न में ये ग्रह किसी स्थान में हों परन्तु अपने स्वनवांश में हों तो गर्भ संभव है, नहीं तो नहीं होता।

(ब) या ऊपर बताये ग्रह स्वनवांश में न हों परन्तु पुरुष की जन्मराशि से ३-६-१०-११ इन स्थानों में से किसी स्थान में हों तो गर्भ संभव हो उस लग्न कुंडली में मुख्य ग्रह सूर्य व शुक्र ये कहीं भी हों परन्तु अपने नवांश में हों तो उस लग्न में गर्भ संभव है। ये योग न हों तो गर्भ संभव नहीं होगा।

(स) स्त्री की जन्मराशि से ३-६-१०-११ इनमें से किसी स्थान में चंद्र व मंगल हो ये स्वनवांश मे हों व पुरुष को गुरु ९-५ या उसके गर्भ संभव लग्न में, ऊपर के नियम के अनुसार ग्रह हों तो उस स्त्री को गर्भ अवश्य होता है—परन्तु बांझ, नपुंसक, बाल, वृद्ध को ये योग लागू नहीं होते।

गर्भाधान निषेध—आधान या प्रश्न लग्न में पापग्रह की दृष्टि हो या अशुभ वार, नक्षत्र, योग आदि एवं पर्व हो या जब पापग्रह बली हो गर्भाधान न करें।

गर्भ न रहे—प्रश्न काल से अष्टम स्थान में स्वगृही शनि या सूर्य में से कोई हो तो प्रश्नकर्ता की स्त्री को बांझ कहना अर्थात् गर्भ न रहे।

रजोदर्शन विचार या गर्भाधान समय

रजोदर्शन का कारण मंगल और चंद्र है। मंगल अग्नि पथ और चंद्रमा जल पथ है।

स्त्री की जन्म राशि से जिस रजोदर्शन में उपचय स्थान में चन्द्र न हो किन्तु १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२, इन स्थानों में चन्द्र हो और गोचर में मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो ऐसा रज गर्भ धारण योग्य होता है।

चंद्रमा उपचय में रहे किन्तु उसे मंगल न देखता हो उस समय रज निष्फल होता है। पुरुष के उपचय राशि में चन्द्रमा हो उसे पूर्ण दृष्टि से गुरु देखता हो तो उस समय संयोग से अवश्य गर्भ रहेगा। मूल एवं त्याज्य नक्षत्र पर्व छोड़ कर शुभगुण युक्त नक्षत्र में गर्भाधान करना उचित है।

किन्तु यह विचार वंध्या स्त्री तथा बाल वृद्ध और नपुंसक के लिये नहीं है।

ऋतु काल में निषेक विचार

स्त्रियों में ऋतु आरम्भ काल से १४ रात ऋतु काल कहा है, उस में पहिली ४ रात्रि निषेक (गर्भाधान) योग्य नहीं हैं। शेष १२ रात्रि में युग्म (६, ८, १०, १२, १४, १६ वीं) रात निषेक में प्रशस्त और पुत्रदाता हैं।

चौथी रात्रि का निषेक=अल्पायु
पांचवीं ,, ,,=कन्या
छठी ,, ,,=वंशकर्ता पुत्र
सातवीं ,, ,,=वंध्या स्त्री
आठवीं ,, ,,=पुत्र
नवीं ,, ,,=सुन्दर कन्या

१० वीं रात्रि=प्रभावशाली पुत्र
११ ,, =कुरूप कन्या
१२ ,, =भाग्यशाली पुत्र
१३ ,, =पापिनी कन्या
१४ ,, =धर्मात्मा पुत्र
१५ ,, =लक्ष्मी वनी कन्या
१६ ,, =सर्वज्ञ पुत्र

रज विचार व रज का रंग

अष्टमेश अष्टम में बलवान् हो तो गर्भ दाता उत्तम रज हो—

अष्टम में सूर्य=धूम्र रंग का रज
चन्द्र=श्वेत ,,
मंगल=लाल ,,
बुध=अनेक वर्ण ,,

गुरु=मजीठ के रंग जैसा रज का रंग
शुक्र=श्वेत ,,
शनि=काला ,,
राहु=जल के समान ,,

सूर्य मंगल से=गरम रज, अन्य ग्रहों से=शीत रज ।

अष्टम में कोई ग्रह न हो तो रज का रंग स्वाभाविक हो जहाँ पाप राशि हो तो बहुत रज होवे । अष्टम में राहु हो तो दिन रात पीड़ा करने वाला हो, कटि में वात कारक रज हो ।

दिन रात्रि के विचार से आधान किसका शुभ होगा

शुभ प्रद ग्रह	सूर्य		शनि		चन्द्र		शुक्र	
राशि	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
१ दिन के आधार में	पिता	माता	काका	मोसी	काका	मौसी	पिता	माता
२ रात के आधार में	काका	मौसी	पिता	माता	पिता	माता	काका	मौसी

उक्त राशि व दिन रात के बताये के विपरात होने से शुभा-शुभ फल भी उल्टा होता है । आधान लग्न दिन-रात में जो हो उससे या मां की राशि से सम राशि, पिता की राशि से विषम राशि हो उससे उपरोक्त फल विचारना कि किसको शुभ होगा ।

उपरोक्त मातृ पितृ आदि संज्ञक ग्रह कहे हैं उनका शुभाशुभ फल

प्रथम द्रेष्काण में	मध्य द्रेष्काण में	तीसरे द्रेष्काण में	ऐसी कल्पना करना
पूर्ण फल	मध्यम	तुच्छ फल	

जो योग पाप ग्रह कृत हैं पाप फल देते हैं । शुभ कृत हैं या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हैं वे शुभ फल देते हैं । मिश्रित से मिश्रित फल होता है ।

गर्भ के अधिपति ग्रहों का भावानुसार प्रभाव

गर्भ के ̣० मास के क्रमशः ये अधिपति होते हैं :—

गर्भ मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
अधिपति ग्रह	शुक्र.	मंगल.	गुरु.	सूर्य.	चन्द्र.	शनि.	बुध.	लग्नेश	चन्द्र	सूर्य

जिस महीने का स्वामी निर्बल हो उस मास में गर्भ को पीड़ा होती है।

जिस महीने का स्वामी पीड़ित है उस मास में गर्भपात होना संभव है।

,, ,, वीर्यवान् (बलवान्) हो ,, गर्भ पुष्टि

,, ,, बलवान् तथा उच्च का हो गर्भ की वृद्धि

,, ,, हीन वीर्य, अस्तगत, नीचगत, पाप युक्त हो तो गर्भपात हो

गर्भ वृद्धि क्रम और गर्भ मास स्वामी

मास	स्वामी	वृद्धि क्रम
प्रथम	शुक्र	कलल—शुक्र रज मिलकर वीर्य जमता है।
२	मंगल	घन—दोनों जमकर पिंड बनता है।
३	गुरु	पिंड के अंकुर अर्थात् हाथ पैर मुँह निकलते हैं (अवयव बनते हैं)।
४	सूर्य	हड्डी बनती है।
५	चन्द्र	त्वचा (चर्म या खाल) बनती है।
६	शनि	गर्भ को रोम जमते हैं।
७	बुध	चैतन्यता आती है हाथ पैर आदि हिलाने लगता है।
८	लग्नेश	गर्भ संभव लग्नेश अन्न खाने की शक्ति देता हैं माता को खाई हुई वस्तु का असर उसपर होता है अंग हिलाता है।
९	चंद्र	चलने सरीखा हाथ पैर हिलाता है उदर के बाहर निकलने की योजना करता है।
१०	सूर्य	प्रसव (जन्म) होता हैं।

गर्भ पीड़ा और वृद्धि

उपरोक्त प्रकार से आधान लग्न में पाप ग्रह यदि अरिष्ट कारक हो तो भी गर्भ पीड़ा करता है। शुभ ग्रह शुभ ठिकाने हों और लग्न को शुभ दृष्टि से देखते हों तो गर्भ वृद्धि हो।

गर्भ को पीड़ा—कुंडली में चंद्र जिस स्थान में पड़ा हो वहाँ से जिन-जिन स्थानों में पाप ग्रह हों उन-उन महीनों में माता को पीड़ा होती है।

शनि हो—फोड़ा फुन्सी, दस्त की बीमारी।

मंगल—रुधिर विकार सिर और कमर में दर्द।

सूर्य—बुखार और पेट में दर्द।

राहु केतु—हड्डियों से हड़फूटन हाथ पैर में पीड़ा।

प्रत्येक ग्रह प्रायः वमन का रोग उत्पन्न करता है। यदि शुभ युक्त या दृष्ट हो तो रोग नहीं करते यदि रोग हो भी तो साधारण होंगे।

गर्भ पीड़ा समय—मास पति अस्तंगत हो तो उस महीने में पीड़ा देता है।

गर्भ पुष्टि—मास पति बलवान् हो तो गर्भ पुष्ट करता है।

गर्भ पात—शनि मंगल लग्न में हों तो गर्भपात हो, चंद्रमा भी उसी भाव में हो या उसे देखे तो गर्भपात हो, मंगल अष्टम हो तो गर्भपात होता है।

गर्भ नाश—चन्द्र या आधान लग्न पाप ग्रहों के बीच हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो गर्भ नाश हो। आधान लग्न से तीसरे स्थान में चंद्र व २–४–१२ वें घर में पाप ग्रह हो तो गर्भ नाश हो।

गर्भ पात समय—जिस मास का स्वामी निःपीड़ित हो उसी महीने में गर्भपात हो। लग्न से सप्तम में सूर्य हो तो उस मास में गर्भपात हो।

पीड़ित ग्रह लक्षण—युद्ध में पराजित ग्रह, केतु से धूमित ग्रह उल्कापात, बाल ग्रह, सूर्य चन्द्रमा पाप युक्त या ग्रहण से युक्त हों तो पीड़ित कहलाते हैं।

आधान से पुरुष या स्त्री को कष्ट या मृत्यु

आधान या प्रश्न काल में सूर्य से सप्तम में मंगल और शनि हों तो अपने महीने में पुरुष को कष्ट देते हैं।

चंद्रमा से सप्तम मंगल शनि हों तो अपने महीने में स्त्री को पीड़ा देते हैं।

सूर्य से दूसरे बारहवें मंगल शनि हों तो अपने महीने में पुरुष की मृत्यु करते हैं।

चंद्र से दूसरे बारहवें मंगल शनि हों तो अपने महीने में स्त्री की मृत्यु करते हैं।

सूर्य यदि मंगल शनि से युक्त या एक से दृष्ट हो तो पुरुष की मृत्यु करते हैं।

चंद्रमा शनि मंगल से युक्त या एक से दृष्ट हो तो स्त्री की मृत्यु करता है।

आधान लग्न से जन्म समय ज्ञान

(१) गर्भाधान लग्न से तीसरे घर में या उससे पाँचवें या नवें घर में जब सूर्य आवे तब सन्तान होगी।

(२) गर्भाधान लग्न से पाँचवाँ घर वह है जिससे भविष्य में जन्म की लग्न बच्चे की होती है। मान लो मेष लग्न में गर्भाधान हुआ तो मेष से पाँचवाँ सिंह हुआ जब सिंह लग्न होगी तब जन्म होगा।

(३) प्रश्न लग्न में जिस राशि का चन्द्र है उससे सप्तम राशि के चन्द्र में जन्म होगा ऐसा बादरायण का मत है और गर्ग के मत से पंचम राशि के चन्द्रमा में जन्म होता है।

अन्य प्रकार से जन्म समय जानना

(१) आधान या प्रश्न लग्न में जिस नवांशक में चन्द्रमा हो उससे सप्तम राशि गत चन्द्रमा में जन्म होता है।

नवांशक जितना भुक्त हुआ है उसके अनुपात (त्रैराशिक) से प्रसूति कालिक चंद्रमा के अंश व नक्षत्र का भुक्त निकलता है। उसीसे दृष्ट काल भी निकलता है।

(२) या लग्न के नवांशपति की राशि गत चन्द्रमा में जन्म होगा।

(३) आधान या प्रश्न लग्न में चन्द्रमा जिस द्वादशांशक में है उस राशि के चन्द्रमा में आगे जन्म होगा।

इसमें भी किसी आचार्य का मत है कि चन्द्रमा जितने द्वादशांशक पर है मेषादि गणना से उतने ही संख्यक राशि के चन्द्रमा में जन्म होगा या जिस राशि पर चन्द्र है उसी से गिनकर जितने द्वादशांशक पर चन्द्रमा है उतने ही राशि के चन्द्रमा में जन्म होगा।

किसी का मत है लग्न और चन्द्रमा में से जो विशेष बलवान् हो उसके तत्काल द्वादशांश में जो राशि है उसके चन्द्रमा में जन्म होगा।

नक्षत्र भुक्ति=नक्षत्र भुक्ति निकालने का यह अनुपात है—

१ राशि की १८०० कला होती हैं कितनी कला द्वादशांश की भोगी हैं कितनी बाकी हैं इसका त्रैराशिक करके नक्षत्र-भुक्ति निकालना जिससे इष्ट काल मालूम कर कुण्डली बना लेना।

यहाँ ४ प्रकार से जन्म समय का ज्ञान कहा है, इनमें से २-३ प्रकार से जहाँ ऐक्यता आवे उसे ग्रहण करना।

मान लो आधान लग्न कुण्डली का ग्रह स्पष्ट किया तो चन्द्र १ रा ९°-११'-२६'' वृष का आया इसका द्वादशांश निकाला। १ द्वादशांश २°–३०' का होता है। वृष में सिंह का द्वादशांश आया और यह चौथा द्वादशांश हुआ क्योंकि ९°–११' में द्वादशांश (२''-३०' × ४)=७°–३०' पूरे घट गये ९°–११"–२६" में ६०°–२०' घटाया तो १°–४१"–२६" यह चौथे द्वादशांश का बचा।

चन्द्र वृष ९–११–२६
द्वादशांश ७–३०
शेष १–४१–२६
=१°–४१'–२६"=१०१'–२६"
यह चौथे द्वादशांश की कला हुई।

१ राशि की १८००' में एक द्वादशांश १५०' का है तो शेष कितने का होगा ?

$$\frac{(१०१–२६) \times १८००}{१५०} = १\ (१०१'–२६" \times १२) = १२१७'–१२"$$

१२१७'–१२" में अब देखना है सिंह द्वादशांश के कौन-कौन नक्षत्र भुक्त हुए हैं १ नक्षत्र १३°–२०'=८००' का होता है १ चरण=२००' का है।

शेष १२१७'–१२"
१ नक्षत्र ८०० मघा पूरा घट गया।
शेष= ४१७–१२
२ चरण-४००-०पूर्वा फा० २चरण घटे
शेष = १७–१२ = पूर्वा फा० का तीसरा चरण।

१ चरण २९०' का $\frac{६०}{४}$=१५ घटी में भुक्त तो शेष १७'–१२" कितने समय में।

$$\frac{(१७–१२) \times १५ \text{ घटी}}{२००} = \frac{(१७–१२) \times ३}{४०} = \frac{५१–३६}{४०}$$

=१ घ० १७ पल

सिंह राशि में मघा, पूर्वा फा० पूरे और उ० फा० का १ चरण मिलकर होता है यहाँ मघा गत होकर पूर्वा फाल्गुनी के तीसरे चरण में १ घ० १७ पल भुक्ति पर पंचम में समय मिलने पर जन्म होगा।

आधान लग्न से जन्मपद ज्ञान या जन्म समय से आधान समय जानना

जन्ममास + ४
,, तिथि + ३
,, नक्षत्र + १०
,, लग्न + ५
,, वार + ३

इस प्रकार अंक जोड़ने से गर्भ मास आदि निकल आता है। यदि लग्न में संदेह हो तब इस प्रकार विचारना।

आधान-लग्न से पंचम या नवम लग्न में जन्म होता है।

प्रसव मास

ऊपर ९ या १० मास में जन्म होना बताया है। सो प्रश्न समय में गर्भ कितने मास का है उसके जानने के लिए कई युक्तियाँ हैं उनमें से एक यह भी है।

१—लग्न से, या लग्न से जिस स्थान में शुक्र हो उससे गर्भ का मिलान मिलता हो उतने महीने का गर्भ जानना, उससे ९–१० मास गिन लेना।

२—दूसरा प्रकार आधान काल में लग्न चर राशि होवे तो दशम मास में, स्थिर हो तो ग्यारहवें मास में, द्विस्वभाव हो तो बारहवें मास में प्रसव जानो।

आधान लग्न ज्ञान न होने से प्रश्न लग्न, प्रश्न नवांश में जो बलवान् हो उससे कहना।

साधारण प्रसव नवम या दशम मास में ही होता है अधिक समय-समय के योग हैं उनसे जानना।

दिन या रात में जन्म होगा

तत्काल लग्न में वर्तमान नवांशक दिवाबली हो तो दिन में, रात्रि बली हो तो रात्रि में जन्म होगा।

उदाहरण—लग्न में नवांशक वृष यह रात्रिबली है तो रात्रि में जन्म होगा। लग्न स्पष्ट ४ रा ५°–५९'–१४" है सिंह राशि में ५°–५९'–१४" देखा तो दूसरा वृष का नवांश आया।

लग्न सिंह ५°–५९'–१४"
एक गत नवांश ३–२०
शेष २–३९–१४
१५९'–१४"
रात्रिमान २९ घ० ६ पल

१ नवांश २००' रात्रिमान पूरे २९–६ घड़ी में तो शेष १५९'–१४" कितने में ?

$$\frac{(१५९–१४) \times (२९–६)}{२००} =$$

$$\frac{(४६३३–२७–२४)}{२००} = २३–१० \text{ घ. प.}$$

रात्रि इष्ट

यदि दिवाबली अंश हो तो दिन का जन्म जानो। तब दिनमान का गुणा करना। २०० का भाग देना तो दिन का इष्ट निकलेगा।

३ वर्ष में प्रसूति योग—निषेक लग्न में मकर या कुम्भ के नवांश का उदय हो और उसके सप्तम घर में शनि हो तो गर्भ ३ वर्ष में प्रसव हो।

१२ वर्ष में प्रसव—यदि निषेक लग्न में कर्क राशि का नवांश हो और चन्द्रमा सप्तम हो तो वह गर्भ १२ वर्ष में निर्मुक्त हो।

संभोग में मनोवृत्ति—आधान या प्रश्न लग्न के सप्तम में जैसी राशि हो उसके अनुरूप पुरुष या स्त्री की प्रकृति होती है। सप्तम में पापदृष्टि योग हो तो कलह युक्त या सरोष या बलात्कार हो। यदि सप्तम में शुभग्रह या योगदृष्टि हो तो प्रेम व हास और विलासपूर्वक मैथुन हुआ।

संभोग प्रकार—सप्तम में जो राशि हो उसके समान संभोग कहना जैसे सप्तम में मेष हो तो बकरे के सदृश, वृष बैल के तुल्य, इत्यादि।

चारों केन्द्र में पापग्रह हो तो पशु के समान संभोग।

यदि ३ केन्द्र में भी ग्रह हो तो पशु के समान संभोग।

संभोगकर्ता कौन था जिससे गर्भ रहा—उस पुरुष के चन्द्र को गुरु न देखता हो सूर्य देखता हो तो स्त्री का संभोगकर्ता कोई ओहदेदार या साहूकार हो।

मंगल देखे तो—संभोगकर्ता सिपाही आदि।

शुक्र देखे तो—संभोगकर्ता उत्तम जाति का सुन्दर।

शनि देखे तो—संभोगकर्ता शूद्र नौकर से गर्भ सम्भव।

इन ४ में से कोई न देखे तो गर्भ सम्भव नहीं है।

पुत्र होगा या कन्या

(१) यदि गर्भ लग्न का नवांश पुरुष राशि हो या वहाँ पुरुष ग्रह हो तो पुत्र होगा, नहीं तो कन्या होगी।

(२) यदि गर्भाधान के समय की लग्न से ५, ७, या ९ वें घर पर शुभ ग्रह या पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो पुत्र होगा। पुरुष ग्रह सूर्य और मंगल हैं।

(३) स्त्रियों की ऋतु १६ रात्रि तक रहती है इसमें प्रथम को ७ रात्रि छोड़ कर संभोग करने से विषम में कन्या, सम में पुत्र पैदा हो।

(४) बली सूर्य, गुरु आधान काल में विषम राशि विषमांश में हो तो पुत्र होगा, बली चन्द्र शुक्र या मंगल सम राशि या समांशकों में हो तो कन्या हो।

(५) सूर्य चन्द्र या गुरु विषम राशि या विषम नवांश में होकर बली हो लग्न को छोड़ कर शनि और कोई स्थान में हो विषम राशि में हो तो पुत्र होगा सम राशि या सम नवांश में हो तो कन्या होगी।

(६) शनि या राहु पुरुष राशि में हो या सूर्य गुरु बलवान् होकर पुरुष राशि में हो या बुध बलवान् होकर दशम या एकादश भाव में हो तो पुत्र होगा अन्यथा कन्या होगी।

(७) आधान लग्न से २–५–९ भावों पर शुभ ग्रह हो या पुरुष ग्रह की दृष्टि हो या उसमें पुरुषांश होवे तो पुत्र। इसके विपरीत दृष्टि-स्त्रीग्रह की दृष्टि हो या सम राश्यंशक होवे तो कन्या होगी।

(८) आधान लग्न में अष्टम स्थान और उससे अष्टम स्थान अर्थात् लग्न से तीसरे स्थान पर सूर्य हो तो पुत्र।

(९) आधान लग्न से त्रिकोण में सूर्य हो तो पुत्र।

इस आधान लग्न में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक दीर्घायु भाग्यवान् और सर्व विद्या का ज्ञाता हो।

(१०) इन योगों के अभाव में लग्न को छोड़ कर विषम राशि में शनि हो—अन्यमत से विषम भाव में शनि हो तो पुत्र।

(११) परुष ग्रह बलवान् होकर केन्द्र में हो तो पुत्र होगा।

(१२) बुध लग्न में या विषम राशि के नवांश में हो तो पुत्र होगा।

(१३) बुध लग्न में या सम राशि के नवांश में हो तो कन्या होगी।

यमल (जुड़वाँ) योग।

(१) गुरु, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, मंगल ये द्वि-स्वभाव राशि के नवांश में हों और उन्हें बुध देखता हो तो यमल (दो बालक) का जन्म हो। बली ग्रह हों तो पूर्ण फल।

(अ) यहाँ द्वि-स्वभाव के पुरुषांश (३,९) में गुरु और सूर्य हो तो दो पुत्र हों।

(ब) एवं चन्द्र शुक्र और मंगल द्विस्वभाव के स्त्री नवांश (६,१२) में हों तो दो कन्या हों।

(स) यदि दोनों योग हों तो एक पुत्र एक कन्या हो।

(२) लग्न चन्द्र सम राशियों में हो और पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो उपरोक्त फल।

(३) बुध मंगल गुरु लग्न समराशि में हो और बलवान् हो तो उपरोक्त फल।

(४) सूर्य चतुष्पद राशि में हो शेष ग्रह से युक्त होकर द्विस्वभाव राशि में हो तो यमल का जन्म।

(५) गर्भाधान कुंडली में भ्रातृ स्थानेश और लग्नेश का योग हो तो यमल का जन्म होगा।

(६) लग्नेश भ्रातृ स्थान में हो या अन्य स्थान में हो तो यमल हो।

(७) आधान लग्न या उससे तीसरे में तृतीयेश हो तो यमल का जन्म हो।

(८) आधान लग्नेश और तृतीयेश लग्न में हो तो यमल हो।

(९) आधान लग्नेश और तृतीयेश तृतीय भाव में हो तो यमल हो।

(१०) जन्म लग्न कोई हो परन्तु चन्द्र शुक्र ये दोनों ग्रह समराशि में हों व बुध मंगल गुरु व लग्न ये ४ विषम राशि में हों तो यमल १ लड़का, १ लड़की हो।

(११) द्वि स्वभाव के अंश में स्थित सूर्य और गुरु यदि बुध से दृष्ट हो तो २ पुत्र हों।

(१२) चन्द्र, शुक्र और मंगल द्विस्वभाव में हों तो २ कन्या हों।

यमल ३ बालक

(१) बुध, मंगल, गुरु और लग्न ये द्विस्वभाव के हों, लग्न यदि द्विस्वभाव नवांश में हो, बुध स्वनवांश में होकर सम को देखता हो तो ३ यमल बालक हों।

(२) उपरोक्त ग्रह मिथुन व धन राशियों में हों उन पर बुध की दृष्टि हो, यह बुध मिथुन लग्न के नवांशक में हो तो ३ पुत्र हों। अन्यमत—मिथुन व धन नवांश वाले लग्न गत ग्रहों को मिथुनांशक बुध देखे तो ३ पुत्र हों।

(३) कन्या व मीनांशक वाले लग्न गत पूर्वोक्त ग्रह मंगल गुरु को कन्यांश गत बुध देखे तो ३ कन्या हों। अन्यमत—कन्या व मीन इन राशियों के नवांश में उपरोक्त ग्रह हों व कन्या राशि के नवांश में होकर बुध देखे तो ३ कन्या हों। अथवा कन्या या मिथुन नवांश गत ग्रहों व लग्न को कन्यांश गत बुध देखे तो ३ कन्या हों।

(४) पूर्वोक्त योगकर्ता ग्रहों को मिथुनांश गत बुध देखे तो २ पुत्र १ कन्या हो।
अन्यमत—मंगल गुरु व लग्न ये द्विस्वभाव नवांशक में हों व बुध मिथुनांश में द्विस्वभाव अंश में होकर सबको देखता हो तो २ पुत्र, १ कन्या हो।

(५) पूर्वोक्त ग्रह मंगल गुरु को द्विस्वभावांश में बुध बैठकर देखे तो २ कन्या, १ पुत्र हो। अन्यमत—पूर्वोक्त ग्रह द्विस्वभाव राशि के नवांश में हों इनको कन्या राशि के नवांश गत बुध देखे तो २ कन्या १ पुत्र गर्भ में होगा।

३ से अधिक संतान

लग्न धनु के अंत्य नवांश का लग्न हो और पूर्वोक्त योग कारक ग्रह धनु के नवांश में हो और लग्न को बलवान् बुध और शनि देखे तो गर्भ में ३ से अधिक बच्चे होंगे। अन्यमत=धन लग्न में धन नवांश हो पूर्वोक्त योग कारक ग्रह ९–१२ राशि के अंशकों में हों और बलवान् बुध शनि लग्न को देखे तो गर्भ में बहुत बच्चे हों ३ से अधिक १० तक हो सकते हैं।

नपुंसक योग

(१) सम राशि में बैठा चन्द्र विषम राशि के सूर्य को देखे परस्पर दृष्टि हो।
मतांतर—चंद्र और सूर्य की परस्पर दृष्टि हो।
,,—लग्न या चन्द्र सम राशि में हो, विषम में सूर्य हो जिस पर चन्द्र की दृष्टि हो।

(२) शनि और बुध में परस्पर दृष्टि हो :
मतांतर—शनि विषम राशि में हो, बुध सम राशि में हो परस्पर दृष्टि हो।
,,—शनि बुध द्विस्वभाव राशि में हों।
,,—विषम बुध पर सम राशि में स्थित शनि की दृष्टि हो।

(३) विषम में शनि हो सूर्य पर दृष्टि हो या युग्म राशियों में हों।

(४) सम राशि में चन्द्र विषम में बुध हो मंगल की दृष्टि दोनों पर हो मंगल कोई राशि में हो। मतांतर—चन्द्र सम राशि में बुध विषम में हो दोनों की परस्पर दृष्टि हो।

(५) लग्नेश बुध के साथ हो पुरुष (विषम) नवांश में शुक्र व लग्न में चन्द्र हो।
मतांतर—शुक्र लग्न चंद्र विषम नवांशक में हों।
मतांतर—शुक्र चन्द्र विषम नवांशक में हों।
(६) विषम चंद्र मंगल के साथ या सम राशि गत मंगल से दृष्ट हो।
मतांतर—लग्न चन्द्र विषम राशि में हो मंगल सम राशि गत होकर चंद्र को देखे।
,,—लग्न और चन्द्र विषम में हो जिस पर मंगल की दृष्टि हो।
,,—लग्न सम, चन्द्र विषम दोनों विषम नवांश में हों जिन पर मंगल की दृष्टि हो।
(७) मंगल विषम में सूर्य सम राशि में हो दोनों को परस्पर दृष्टि हो। विषम में सूर्य हो उस पर सम राशि गत मंगल की दृष्टि हो।
(८) शुक्र सूर्य लग्न बली होकर विषम नवांश में हों।
(९) लग्नेश बुध हो शुभ दृष्ट न हो तो भी नपुंसक उत्पन्न करता है।

यहाँ बुध नपुंसक उत्पन्न करने वाला ग्रह है। इसी प्रकार चन्द्र और शनि भी नपुंसक उत्पन्न करता है। क्योंकि बुध शनि नपुंसक ग्रह हैं और चन्द्र शुक्र स्त्री ग्रह हैं। सूर्य मंगल गुरु पुरुष ग्रह हैं।

स्त्री पुरुष दोनों नपुंसक—बुध की राशि में लग्न में षष्ठेश हो, लग्नेश भी बुध की राशि में हो तो स्त्री पुरुष दोनों नपुंसक हों।

मतांतर—बुध की राशि में जन्म हो उसमें षष्ठेश हो, बुध युक्त या दृष्ट हो तो उपरोक्त फल केवल पुरुष नपुंसक=पूर्वोक्त योग में ऐसी राशि पर मंगल और सूर्य हो तो भी केवल पुरुष नपुंसक हो।

यहाँ ऊपर बताये नपुंसक योग में एक बात विचारणीय है यह कुछ खटकती है। एक ग्रह सम में हो दूसरा विषम में हो तो उनकी परस्पर पूर्ण दृष्टि कैसे हो सकती है?

जैसे सम चन्द्र, विषम में सूर्य की या शनि सम बुध विषम आदि की परस्पर पूर्ण दृष्टि नहीं हो सकती परन्तु एक पाद, द्विपाद या त्रिपाद दृष्टि हो सकती है इसमें पूर्ण दृष्टि का विचार न कर अन्य दृष्टि का विचार हो सकता है। इसी कारण किसी-किसी ने सम विषम का बंधन न कर परस्पर पूर्ण दृष्टि ही होना इस योग के लिये बताया है।
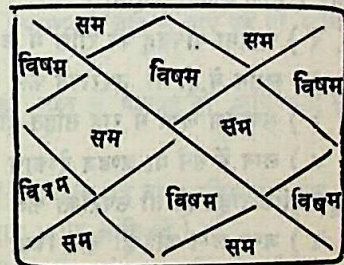
पिंडाकार जन्म

आधान लग्न में बुध या शनि हो उसपर पापग्रह की दृष्टि हो तो उस गर्भ में पिंडाकार बालक (बेडौल) होगा। परन्तु उस बुध शनि पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पिंडाकार नहीं होगा।

नाल वेष्टित (नाल से लिपटा हुआ)

(१) मेष, वृष, सिंह लग्न हो, शनि मंगल से युक्त हो तो लग्न में जो राशि हो उस राशि विभाग के समान अंग में नाल वेष्टित जन्म होगा। मंगल शुक्र से युक्त हो तो नाल वेष्टित न होगा।

मतांतर—मेष वृष व सिंह लग्न हो उसमें शनि या मंगल हो तो लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस अङ्ग में नाल वेष्टित जन्म होगा।

(२) मेष वृष सिंह वृश्चिक लग्नों में जन्म लेने वाला नाल वेष्टित पैदा होता है। जन्म लग्न पुरुष राशि हो तो दक्षिण पार्श्व में स्त्री राशि हो तो वाम पार्श्व में नाल लपटा समझना।

(३) लग्न में पापग्रह हो, बहुत पापग्रहों की दृष्टि हो या वह पापग्रह के घर में हो या राहु,केतु से युक्त हो।

(४) लग्न पापग्रहों के बीच हो, लग्न में राहु हो या लग्न में मंगल सूर्य से दृष्ट हो या लग्न में शनि मंगल से दृष्ट हो तो राशि समान अंग में नाल वेष्टित हो।

(५) लग्न में १–२–५ राशि में से कोई हो उसमें मंगल व सूर्य हो या सूर्य सहित शनि हो तो राशि के अंश समान अंग में नाल वेष्टित होगा।

(६) आधान लग्न मेष हो उस पर पापग्रह मंगल या शनि हो उसका नवांश कर्क हो तो छाती के ऊपर बच्चे का नाल लपटा होगा क्योंकि कर्क नाल-पुरुष का हृदय है।

यमल नाल वेष्टित

सूर्य चतुष्पद राशि में हो, अन्य ग्रह बलवान्, एवं द्विस्वभाव राशियों में हो तो यमल (२ बालक) नाल वेष्टित होंगे।

सर्प वेष्टित (सर्पाकार नसों से व तदाकार नाल से लिपटा)।

(१) चन्द्रमा मंगल के द्रेष्काण में हो और शुभग्रह २–११ स्थान में हों तो बालक सर्पाकार (नाल वेष्टित) होगा।

(२) चन्द्रमा पापग्रह की राशि में लग्न में हो, लग्न मंगल के द्रेष्काण में हो शुभ ग्रह २–११ स्थान में हो तो उपरोक्त फल।

(३) अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्प वेष्टित होगा।

(४) लग्न में सर्प या अण्डज द्रेष्काण हो तथा द्रेष्काण अपने स्वामी से युक्त हो और शुभ दृष्टि रहित हो तो उपरोक्त फल।

(५) जन्म लग्न कोई हो चन्द्र किसी स्थान में हो या किसी राशि का हो परन्तु चन्द्र मंगल के द्रेष्काण में हो तो सर्पाकार हो।

(६) राहु और गुलिक किसी भी केन्द्र में हों या आधान लग्न का स्वामी अष्टमेश युत केन्द्र में हो, लग्न में पाप ग्रह हो।

(७) आधान लग्न का द्रेष्काण पापयुक्त हो।

(८) लग्न में पापग्रह हो, बहुत पाप ग्रहों से दृष्ट हो या पाप ग्रह के घर में राहु-केतु युक्त हो।

(९) लग्नेश पापग्रह हो, लग्नेश और चतुर्थेश एक दूसरे के घर में हों ।

(१०) आधान लग्न में पापग्रह हों कई पापग्रहों की दृष्टि हो या पापग्रह की राशि में राहु या केतु हो ।

उपयोग—ये सब बातें जन्म समय सत्य है या नहीं यह मिलान करने के लिये हैं ।

वामन (ठिंगना)—लग्न मकर राशि के अंत्य नवांश में हो उस पर सूर्य चन्द्र व शनि की दृष्टि हो तो ५२ अंगुल का शरीर हो अर्थात् ठिंगना हो ।

अर्थात् लग्न मकर हो मकर का ही नवांश हो अर्थात् वर्गोत्तम हो उस पर इन ग्रहों की दृष्टि हो ।

गूंगा १—कोई क्रूर ग्रह किसी भी राशि के नवम नवांश में आ पड़े, चन्द्र वृष का हो उस पर मंगल व शनि की दृष्टि हो तो गूंगा हो । इस चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कुछ दिन में बोलने लगता है ।

२—वृष का चन्द्र हो पापग्रह कर्क वृश्चिक मीन इन नवांशों में हो तो गूंगा हो । चन्द्र पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो बहुत वर्षों में बोलने लगता है । पाप दृष्टि हो तो वाणी हीन हो ।

पंगु (लंगड़ा)—मीन लग्न हो उस में चन्द्र हो तथा ५-१-९ राशि के अंत्यांश गत पाप ग्रह हो । या वृष का चन्द्र सूर्य शनि मंगल से दृष्ट हो शुभग्रह की दृष्टि न हो तो लंगड़ा हो ।

३—लग्न में तीसरा द्रेष्काण हो लग्न में पापग्रह हो शनि चन्द्र सूर्य देखते हों तो पैर से लंगड़ा हो ।

कुबड़ा या लंगड़ा—शनि मंगल ये बुध के नवांशक में हों या बुध की राशि में हों तो कुबड़ा या लंगड़ा हो ।

(२) कर्क का चन्द्र लग्न में हो उसे शनि मंगल देखते हों तो उपरोक्त फल ।

लूला (हाथ रहित)—लग्न में दूसरा द्रेष्काण हो लग्न में पाप ग्रह हो शनि चन्द्र सूर्य ये लग्न को देखते हों तो लूला हो ।

छोटा सिर—लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो लग्न में पापग्रह हो शनि चन्द्र सूर्य की दृष्टि हो तो छोटा सिर हो ।

दुगुने अंग—बुध त्रिकोण ५-९ भाव में हो, अन्य ग्रह बल रहित हों उस बालक के सिर हाथ पैर दूने हों अर्थात् २ सिर ४ हाथ ४ पैर आदि हों ।

सिर बाहु पाँव रहित—लग्न में मंगल हो उसपर सूर्य चन्द्र शनि की दृष्टि हो ।

यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो=सिर रहित हो ।

यदि लग्न में दूसरा द्रेष्काण हो=हाथ रहित ।

यदि लग्न में तीसरा द्रेष्काण हो=पैर रहित ।

परन्तु शुभ दृष्टि न हो तब पूरा फल होता है ।

अन्य मत से लग्न में पाप ग्रह हो द्रेष्काण हो तब उक्त फल हो ।

अन्य मत—बिना हाथ—लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो और दूसरा तीसरा द्रेष्काण पाप युक्त हो। बिना पैर—लग्न में दूसरा द्रेश्काण हो और पहिला तीसरा द्रेष्काण पाप युक्त हो। बिना सिर—लग्न में तीसरा द्रेष्काण हो और पहिला दूसरा द्रेष्काण पाप युक्त हो।

अन्य मत—बिना हाथ—लग्न से पंचम में जो द्रेष्काण हो यह मंगल युक्त हो और सूर्य चन्द्र शनि से दृष्ट हो। बिना सिर—लग्न में जो द्रेष्काण हो यह मंगल युक्त हो और सूर्य चन्द्र शनि से दृष्ट हो। बिना पैर—नवम स्थान में जो द्रेष्काण हो वह मंगल युक्त हो और सूर्य चंद्र शनि से दृष्ट हो।

बहिरा—सूर्य, मंगल, शनि व चन्द्र ये ग्रह कर्क वृश्चिक मीन इन राशियों के नवांश में हों तो बहिरा हो।

मूर्ख—चंद्र और पाप ग्रह संधि में अर्थात् कर्क वृश्चिक मीन के अंत नवांशों में हों तो मूर्ख हो। इनपर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तब पूरा फल होता है यदि शुभदृष्ट हुआ तो बुरा फल नहीं होता।

अंधा—आधान लग्न या जन्म लग्न सिंह हो जिसमें सूर्य व चंद्र हो व मंगल व शनि की दृष्टि हो यदि लग्न में शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट न हो तो जन्म से अंधा हो। यदि शुभाशुभ दोनों योग दृष्टि हों तो नेत्र चंचल या कातर हो।

काना—सिंह लग्न में केवल सूर्य हो उसपर मंगल शनि की दृष्टि हो तो=दाहिनी आँख कानी हो। सिंह लग्न में केवल चन्द्र हो उसपर मंगल शनि की दृष्टि हो तो=बांई आँख कानी हो।

लग्न से ११ वें स्थान में पाप युक्त चंद्र हो=तो बांई आँख रहित।

लग्न से १२ वें स्थान में पापयुक्त चन्द्र हो=तो दाहिनी आँख रहित।

इन योगों में योगकर्ता ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सम्पूर्ण बुरा फल नहीं होता। इन योगों में शुभ दृष्टि भी हो तो बुद-बुद लोचन अर्थात् १ आँख छोटी या आँख पर फूली आदि हो।

फूली—सिंह लग्न में सूर्य चन्द्र हो उसपर शुभ और पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो आँख में फूली हो।

गर्भ में दांत जमे—शनि और मंगल बुध के राशि नवांशक में हों ता बालक के गर्भ में ही दांत जमें।

(१) बुध की राशि ३—६ या बुधांश एक में भी शनि मंगल हो तो भी वही फल।

दांत उगने का मासानुसार फल

पहिले मास में दांत जमें=बालक आप ही न रहे।

दूसरे मास में दांत जमें=भाई न रहे।

तीसरे मास में दांत जमें=बहिन न रहे।
चौथे मास में दांत जमें=माता न रहे।
पांचवें मास में दांत जमें=जेष्ठ भ्राता न रहे।

दीर्घायु बालक—आधान लग्न पर शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक दीर्घायु हो।

स्वभाव—निषेक समय स्त्री पुरुष का मन या स्वभाव जैसा हो वैसा ही गर्भ गत बालक होता है।

स्त्री पुरुष को रोग—सूर्य से सप्तम था लग्न से सप्तम शनि मंगल हो तो पुरुष को, यदि चन्द्र सप्तम हो तो स्त्री को रोग हो।

स्त्री रोग—प्रश्न लग्न से चन्द्र बुध अष्टम हो तो उस स्त्री को कई प्रकार के रोग हों भूत देव आदि का दोष हो। गर्भ नहीं ठहरता, या काक वंध्या (एक बार गर्भ रह कर फिर नहीं रहता) हो जाती हैं।

सगर्भ स्त्री का मरण

(१) लग्न या चन्द्र दोनों या एक भी, राशियों से या अंशों से पाप ग्रहों के बीच हो और शुभ ग्रह न देखे तो वह गर्भिणी स्त्री गर्भ सहित नाश हो।

(२) लग्न या चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों शुभ युक्त या दृष्ट न हो तो भी उपरोक्त फल।

(३) पाप ग्रह चन्द्र से चतुर्थ हो और अष्टम में मंगल हो तो सगर्भ स्त्री का नाश।

(४) लग्न से चतुर्थ में पाप ग्रह हो अष्टम में मंगल हो तो सगर्भ स्त्री का नाश हो।

(५) लग्न में चौथा मंगल बारहवां सूर्य और क्षीण चन्द्र हो तो सगर्भ स्त्री का नाश।

(६) लग्न में शनि हो जिसे मंगल और क्षीण चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखे तो सगर्भ स्त्री का नाश।

(७) आधान लग्न में पापग्रह बारहवें हों लग्न में जाने वाला हो व लग्न को कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो उपरोक्त फल।

(८) लग्न में चन्द्र हो लग्न से दूसरे स्थान में पाप ग्रह हो व दूसरा पाप ग्रह लग्न से बारहवें स्थान में हो। लग्न में चन्द्र पाप ग्रह के नवांश में हो तो उपरोक्त फल। या लग्न में चन्द्र पाप ग्रह से दृष्ट हो। २-१२ भाव में पापग्रह हों तो उपरोक्त फल हो।

(९) आधान लग्न से बारहवें स्थान में पाप ग्रह हो, दूसरे स्थान में भी पाप ग्रह हो तीसरे स्थान में भी चन्द्र, चतुर्थ में पाप ग्रह हो लग्न पाप ग्रहों के बीच हो लग्न को शुभ ग्रह या चन्द्र न देखे तो उपरोक्त फल।

(१०) पापग्रह बारहवें भाव में हो शुभ ग्रह उसे न देखे तो उपरोक्त फल।

(११) पाप ग्रह १, ६, ७, ८, १२, भावों में हो तो निःसंदेह पुत्र सहित माता मरे।

(१२) शनि के साथ चन्द्र हो, सूर्य बारहवें मंगल चौथे भाव में हो तो गर्भ सहित मां मरे।

(१३) लग्न और चन्द्र एक साथ अलग-अलग पापग्रहों के मध्य में हों शुभ दृष्टि रहित हों तो उपरोक्त फल ।

(१४) ६, ८, १२ भाव में क्रूर ग्रह हो इन स्थानों में शुभ ग्रह न हों पाप ग्रह के मध्य के शुक्र या गुरु हो तो प्रसव होते ही स्त्री पुत्र दोनों मरें ।

(१५) लग्न में चन्द्र व ७, ८, स्थानों में पापग्रह हो शुभ दृष्टि न हो तो दोनों मरें ।

(१६) चन्द्र या पापग्रह उक्त शनि या राहु युक्त लग्न से अष्टम स्थान में हों तो दोनों मरें ।

(१७) लग्न में ग्रस्त चन्द्रमा (राहु युक्त ग्रहण नक्षत्र का) पाप युक्त हो अष्टम मङ्गल हो तो दोनों मरें ।

(१८) (अमावस्या को राहु केतु युक्त) ग्रस्त सूर्य लग्न गत हो शनि व बुध से युक्त हो मंगल अष्टम में हो । यदि सूर्यबली हो शुभ युक्त या दृष्ट हो तो योग भंग हो जाता है । अरिष्ट भंग के और भी योग आगे मिलेंगे ।

(१९) शनि राहु के साथ लग्न में हो मंगल अष्टम हो तो बालक सहित माता की मृत्यु हो ।

(२०) बली सूर्य, शनि से युक्त या दृष्ट होकर, शुक्र से तीसरे भाव में हो या क्षीण चंद्र पाप युक्त शुक्र से तीसरे घर में हो ।

(२१) चन्द्रमा पापग्रह युक्त लग्न में हो अष्टम में मंगल हो ।

(२२) सूर्य पापग्रह युक्त या राहु केतु युक्त लग्न में हो अष्टम में मंगल हो ।

(२३) लग्न दशम स्थान में नीच का होकर पाप क्षेत्री मंगल हो तो उपरोक्त फल ।

(२४) पापग्रह सप्तम स्थान में हो पापग्रह से दृष्ट हो शुभ दृष्टि न हो तो माता सहित बालक का क्षय हो ।

(२५) सप्तम या अष्टम स्थान में पापग्रह हों शुभ दृष्टि न हो तो माता और बालक को कष्ट हो ।

बालक मरे मां बचे

(१) उपरोक्त योग में चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो बालक मरे मां बचे ।

(२) यदि ६–१२ भाव में पाप ग्रह हो तो पुत्र मरे ।

(३) अष्टम में गुरु शुक्र हो तो स्त्री का पुत्र मरे ।

माता मरे बालक बचे

(१) १–७–८ भाव में पाप ग्रह हों तो माता मरे बालक नहीं मरे ।

माता का शस्त्र से मरण

लग्न में शनि राहु युक्त चन्द्र हो मंगल अष्टम हो यह १९ वां योग बालक सहित माता के मरण का बताया है इसमें—

(१) सूर्य भी साथ हो तो शस्त्र से मृत्यु हो ।

(२) या चंद्रमा की तरह सूर्य भी हो तो शस्त्र से व गिरने से मृत्यु हो ।

(३) दो पाप ग्रह लग्न और सप्तम स्थान में हों शुभयुक्त दृष्ट न हों तो भी मासाधिप नष्ट प्रभाव हो उस समय गर्भिणी की शस्त्र से मृत्यु हो। सप्तम में सूर्य लग्न में मंगल हो तो शस्त्र प्रहार से मृत्यु हो।

माता की मृत्यु

(१) ४-७ भाव में पापग्रह हों उसके साथ चंद्र भी हो तो माता की मृत्यु हो।

(२) लग्न में सूर्य चतुर्थ चन्द्र, सप्तम शनि हो।

(३) लग्न और चन्द्रमा क्रूर ग्रह से दृष्ट हो शुभ बुध दृष्ट न हो यदि गुरु केन्द्र में न हो तो माता का नाश हो।

(४) चन्द्र से ४-१० में पापग्रह हो शुभदृष्टि न हो।

(५) सूर्य से १० भाव में पापग्रह हो शुभदृष्टि न हो।

(६) लग्न में अष्टम सूर्य या मंगल पापदृष्ट हो शुभदृष्ट न हो चन्द्र कृष्णपक्ष का हो।

(७) जन्म दिन में हो, शुक्र से सूर्य ९-५ भाव में हो, पाप दृष्टि हो शुभ दृष्टि न हो। रात्रि में जन्म हो चन्द्र से शनि ९-५ घर में हो उसे पापग्रह देखते हों शुभ दृष्टि न हो या चन्द्रमा बलरहित हो।

(८) चन्द्र २ भाव में, शनि मंगल ३ भाव में हों।

(९) चन्द्रमा, मंगल-शनि में से एक से युक्त हो।

(१०) शनि मंगल के बीच चन्द्र हो तो स्त्री की मृत्यु।

पुरुष की मृत्यु

१—सूर्य से १२ वें शनि मंगल हों तो पुरुष को अपने मास में मृत्यु देवें।

२—सूर्य मंगल में से एक से युक्त चन्द्र हो तो पुरुष की मृत्यु।

३—शनि मंगल के बीच सूर्य हो तो पुरुष की मृत्यु।

४—चर राशि में मंगल युक्त हो, रात्रि का जन्म हो तो पिता परदेश में मरे।

५—किसी स्थान में सूर्य, शनि मंगल से युक्त हो तो जन्म से पहिले पिता मरे।

६—दिन के जन्म में सूर्य, रात्रि के जन्म में शुक्र मंगल से दृष्ट हो।

७—या सूर्य शुक्र चर राशि में हों मंगल से युक्त व दृष्ट हों तो परदेश में पिता की मृत्यु।

स्त्री पुरुष दोनों की मृत्यु

१—शनि मंगल से युक्त सूर्य चन्द्र हों या इनसे दृष्ट हों तो स्त्री पुरुष दोनों का मरण हो। गर्भ के दिनों में इन योगों का फल होता है।

माता पिता सहित बालक की मृत्यु

१—चंद्रमा से ७, ८, ९ भावों में सभी पाप ग्रह हों तो उत्पन्न बालक की माता पिता सहित मृत्यु हो।

२—चंद्रमा २ पाप ग्रहों के बीच होकर लग्न में हो और सप्तम-अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों तो माता पिता बहिन एवं बालक की मृत्यु हो ।

मां या बाप को अरिष्ट फल

१—गर्भ लग्न में मंगल व शनि दोनों अरिष्ट कारक हों, इन दोनों ग्रहों में जो अधिक बली हो उस ग्रह का बल जिस महीने में अधिक हो उसी मास में वह ग्रह अरिष्ट करेगा ।

२—आधान लग्न को सूर्य देखता हो तो पिता को बुरा ।
आधान लग्न को शुक्र देखता हो तो माता को बुरा ।
रात्रि के आधान लग्न को शनि देखता हो तो पिता को बुरा ।
रात्रि के आधान लग्न को चंद्र देखता हो तो माता को बुरा ।
दिन के आधान लग्न को शनि देखता हो तो काका को बुरा ।
दिन के आधान लग्न को चन्द्र देखता हो तो मौसी को बुरा ।
रात्रि के आधान लग्न को सूर्य देखता हो तो काका को बुरा ।
रात्रि के आधान लग्न को शुक्र देखता हो तो मौसी को बुरा ।

अरिष्ट कारक गर्भ

आधान लग्न में अरिष्ट कारक ग्रह हों तो सम्बन्धियों को इस प्रकार अरिष्ट होगा—

१—उस लग्न से सूर्य जिस स्थान में हो वहाँ से मंगल शनि सप्तम हो तो बाप को रोग कारक ।

उस लग्न से चंद्र जिस स्थान में हो वहाँ से मंगल शनि सप्तम हो तो माता को रोग कारक ।

२—उस लग्न से मंगल शनि जिस स्थान में हों वहाँ से दूसरे, बारहवें या दोनों स्थान में से किसी स्थान में चंद्र हो तो माता को चंद्र का अरिष्ट हो ।

उस लग्न से मंगल शनि जिस स्थान में हों वहां से दूसरे बारहवें या दोनों, स्थान में से किसी स्थान में सूर्य हो तो पिता को चंद्र का अरिष्ट हो ।

३—या उसी लग्न में सूर्य चन्द्र एक ही स्थान में हों उससे २–१२ स्थान में मंगल व शनि हों तो वे ग्रह उस गर्भ के माता पिता दोनों को अरिष्ट कारक हैं ।

४—सूर्य चन्द्र पाप दृष्ट हों तो माता पिता को मानसी व्यथा हो ।

शुभ पाप ग्रह युक्त या दृष्ट से मिश्रित फल होगा ।

पिता को अरिष्ट

१—सूर्य से सप्तम में शनि मंगल हों उसे शुभ ग्रह न देखता हो तो पिता को अरिष्ट ।

२—पाप ग्रह १२, ८ भाव में हो लग्नेश बल रहित हो तो पिता रोगी हो ।

३—पाप ग्रह ४, ८ भाव में हो लग्नेश बल रहित हो तो पिता रोगी हो ।

४—जन्म में सूर्य शनि बलवान् हों सूर्य को शनि या मंगल देखे तो पिता रोगी हो ।

पिता आदि का नाश

१—लग्न से ५, ९ भाव पाप ग्रह की राशि हों उसमें सूर्यादि ग्रह हों तो क्रमानुसार पिता, माता, भाई, नानी, नाना और बालक का शीघ्र नाश करे।

भाई का नाश

१—लग्न से छठे स्थान में क्रूर ग्रह हो तो भाई का नाश हो।

किसके समान रूप होगा

सूर्य बलवान् हो तो पिता के तुल्य रूप आदि होगा।

चन्द्र बलवान् हो तो माता के तुल्य रूप आदि होगा।

सुख प्रसव

१—लग्न एवं चन्द्रमा से केन्द्र, धन स्थान, त्रिकोण भावों में शुभ ग्रह हों और ३, ११ भाव में पाप ग्रह हों उन पर सूर्य की दृष्टि हो तो गर्भ बलवान् होकर सुख युक्त जन्मेगा।

२—प्रश्न लग्न में चतुर्थेश बलवान् हो तो सुख से गर्भ का प्रसव हो, कष्ट न होगा।

३—शुभ ग्रह २, ४ भावों में हों तो सुख प्रसव हो।

४—क्लेश प्रसव योगों में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शुभ प्रसव हो।

५—लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हो तो सुख प्रसव हो।

६—चन्द्र से ४, १० घर में शुभ ग्रह हों तो सुख प्रसव हो।

कष्ट प्रसव

१—चन्द्र के साथ सूर्य मंगल शनि राहु केतु हो या चन्द्र को देखें तो अति कष्ट से डाक्टरी सहायता से जन्म हो।

२—पाप ग्रह चन्द्र के साथ या लग्न से १ या ७ घर में हो तो प्रसव में अधिक कष्ट हो।

३—५, ९, ७ भाव में पाप ग्रह हो।

४—चंद्र पाप युक्त हो या चन्द्र से ४, ७ घर में पाप ग्रह हो।

५—चंद्र से ४ या ८ घर में पाप ग्रह हो।

६—चंद्र पाप युक्त ४ या ७ स्थान में हो तो प्रसव में अधिक कष्ट हो।

कष्ट समय

लग्न या चन्द्रमा से ४, ७ घर में पाप का अधिकार हो तो १ घड़ी, पाप दृष्टि हो तो २ घड़ी, पाप योग होवे तो एक पहर तक माता को अति पीड़ा हो।

उल्टा प्रसव

१—लग्न में शनि, बारहवां चन्द्र और सूर्य नीच राशि या अंश में हो तो उल्टा प्रसव होवे (पहिले पैर निकलें)।

२—आधान लग्नेश दशम में हो, लग्न में राहु हो तो उल्टे (पैर से) जन्म हो। लग्नेश या नवांशपति ग्रह या लग्नस्थ ग्रह वक्री हो तो उल्टा प्रसव हो।

किस प्रकार जन्म

१—शीर्षोदय लग्न में सिर से जन्म ।

२—पृष्ठोदय लग्न में चरण से जन्म ।

३—उभयोदय लग्न में हाथों से जन्म ।

अन्य प्रकार—शीर्षोदय लग्न में जन्म समय आकाश की ओर मुंह (उत्तान) कर जन्मा

पृष्ठोदय लग्न में जन्म समय नीचे की ओर मुंह कर (औंधे) ।

उभयोदय (मीन) लग्न में जन्म समय करवट होकर जन्मा, तिरछा ।

बालक किस प्रकार जन्मा

लग्न जिस प्रकार की राशि की हो जो स्वभाव उस राशि का हो उसी भांति जन्मा जैसे लग्न मेष-भेड़ों की भांति. वृष—गौ की भांति, मिथुन—मनुष्य की भांति आदि ।

जन्म समय बालक का सिर

१, ५, ९ (राशि) में सूर्य हो तो पूर्व की ओर बच्चे का सिर होगा ।

२, ६, १० (राशि) में सूर्य हो तो दक्षिण की ओर बच्चे का सिर होगा ।

३, ७, ११ (राशि) में सूर्य हो तो पश्चिम की ओर बच्चे का सिर होगा ।

४, ८ १२ (राशि) में सूर्य हो तो उत्तर की ओर बच्चे का सिर होगा ।

संस्कार हीन जन्म

१—लग्न से ९ या १० स्थान के स्वामी दुष्ट स्थान में हों, लग्नेश बलवान् हो तो बालक के सामन्त, जातकर्मादि संस्कार नहीं होंगे ब्राह्मण पुत्र होने पर भी वह बालक संस्कार रहित हो ।.

२—लाभ स्थान में पाप ग्रह या पाप-राशि हो तो भी पूर्वोक्त फल ।

मनुष्य जन्म

१– बलवान् शुभग्रह स्वस्थान में हों तो पशुयोनि जन्म न होकर मनुष्य योनि का जन्म समझना ।

२—गुरु शुक्र या बुध अच्छे स्थान में होने से अच्छे मनुष्य का जन्म समझना ।

३—जब शुभ ग्रह अपने घर में हों पाप ग्रह अपने घर में हों तो पशु जन्म नहीं समझना ।

वियोनि जन्म

वियोनि—मनुष्य छोड़कर इतर पशु पक्षी कोट जलचर पेड़ पौधे आदि समझना ।

१—प्रश्न या जन्म के समय चन्द्रमा जिसके द्वादशांश में हो उसी जाति की योनि का जन्म समझना । कोई पशु आदि की कुंडली दिखा कर पूछे तब इसका विचार करना ।

१—मेष द्वादशांश में चन्द्र हो तो बकरा भेड़ आदि का जन्म ।

२—वृष द्वादशांश में चन्द्र हो तो गौ बैल भैंस आदि का जन्म ।

३—कर्क द्वादशांश में चन्द्र हो तो केकड़ा कछुवा आदि का जन्म ।

४—सिंह द्वादशांश में चन्द्र हो तो सिंह मृग कुत्ता बिल्ली आदि का जन्म ।

५—वृश्चिक द्वादशांश में चन्द्र हो तो सर्प विच्छू आदि का जन्म ।

६—धन उत्तरार्द्ध द्वादशांश में चन्द्र हो तो मेढ़क, छिपकली आदि का जन्म ।

७—मीन द्वादशांश में चन्द्र हो तः मछली आदि का जन्म ।

जब कुंडली में वियोनि योग दीख पड़े तब उपरोक्त बताना ।

अन्य योग–पशु जन्म का

१—पाप ग्रह बली, शुभ ग्रह निर्बल, नपुंसक ग्रह (बुध, शनि) केन्द्र में हो ।

२—पाप ग्रह बली, शुभ ग्रह निर्बल लग्न को नपुंसक ग्रह देखे ।

३—चन्द्र क्रूर द्रेष्काण में हो शुभ ग्रह निर्बल लग्न चंद्र पर नपुंसक ग्रह की दृष्टि हो ।

४—पाप ग्रह बली एवं नवांश में शुभ ग्रह निर्बल हो दूसरों के नवांश में हो ।

५—पाप ग्रह बली स्वगृही हो, शुभ ग्रह शत्रु राशि आदि में, लग्न में चतुष्पद राशि हो ।

६—लग्न द्विस्वभाव राशि पक्षी द्रेष्काण में बली पाप ग्रह की दृष्टि हो जो चर नवांश या बुध के नवांश में हो ।

७—लग्नेश चतुर्थेश परस्पर राशियों में हों या लग्नेश चतुर्थेश राहु केतु युक्त हो ।

८—पाप ग्रह बली शुभ ग्रह निर्बल लग्नेश और चतुर्थेश के साथ हो और एक दूसरे के स्थान में हो इनमें राहु केतु हों, केन्द्र में नपुंसक ग्रह हो ।

९—चर लग्न में पक्षी द्रेष्काण हो उसमें बुध का नवांश हो या चर लग्न में बली पाप ग्रह की दृष्टि हो ।

१०—उदित नवांश बुध का हो जिसमें चर द्रेष्काण हो पाप दृष्टि हो शुभ दृष्टि न हो ।

वियोनि जन्म–अन्यमत

चतुष्पद जन्म—चतुर्थेश लग्न में लग्नेश चतुर्थ में और ग्रहों से दृष्ट युक्त हो ।

बकरा बकरी—उपरोक्त योग में राहु केतु से युक्त या दृष्ट हो ।

गौ—गुरु शुक्र और चन्द्र के योग या दृष्टि से ।

महिषी—शनि युक्त या दृष्ट होने से ।

अन्य पशु—अन्य पाप ग्रह युत या दृष्ट हो ।

बिल्ली सुअर बंदर आदि—द्वितीय या सप्तम में पंचमेश या चतुर्थेश हो, पाप युक्त या दृष्ट हो, पुरुष ग्रह हो तो बंदर सुअर बिल्ली आदि का जन्म ।

पक्षी का जन्म

पक्षी द्रेष्काण	मिथुन का दूसरा	सिंह का पहिला	तुला का दूसरा	कुंभ का पहिला

१—लग्न में पक्षी द्रेष्काण हो तो पक्षी का जन्म। इसके २ भेद हैं जल और स्थल के पक्षी।

२—लग्न में चर राशि का नवांश हो बलवान् ग्रह से युक्त या दृष्ट हो शनि से युत दृष्ट हो तो स्थल पक्षी, चंद्र से युक्त हो तो जल पक्षी जानना।

३—बुध का नवांश लग्न में हो उसमें बली ग्रह हो और शनि से युत दृष्ट हो तो स्थल पक्षी हो। यदि चंद्र से युक्त दृष्ट हो तो जल पक्षी जानना अर्थात् शनि के योग या दृष्टि से स्थल के, चन्द्र के योग या दृष्टि से जल पक्षी का इन योगों में विचार करना।

वृक्ष जन्म

(१) लग्न, चन्द्रमा, गुरु या सूर्य निर्बल हो तो प्रश्न से वृक्ष कहना। लग्न नवांश जल राशि हो–जल वृक्ष। स्थल राशि हो–स्थल वृक्ष जानो। वृक्ष संख्या–स्थल या जल राशि के स्वामी लग्न से जितनी राशि पर हों उतनी संख्या वृक्षों की जानना।

उच्च या वक्र गति वाले ग्रह या स्वगृही ग्रह हों तो तिगुनी संख्या जानना अपने वर्गोत्तम नवांश या राशि में हो तो दुगुनी संख्या जानना।

वृक्ष प्रकार

लग्नांश पति—सूर्य–भीतर पुष्ट वाली लकडी शीशम आदि।
शनि–देखने में बुरी अप्रिय कुश आदि।
चन्द्र–दूध वाले या रस वाले गन्ना आदि।
मंगल–कांटे वाले वृक्ष बबूल खैर बेल आदि।
गुरु–फल वाले वृक्ष आम आदि।
बुध–बिना फल वाले केवल फूल वाले।
शुक्र–फूल वाले चम्पा चमेली आदि।
चन्द्र–चिकने चीड़ देवदारु आदि।
मंगल–कटु नीम गिलोय आदि।

वृक्ष की भूमि—पूर्वोक्त स्थल या जल राशि के स्वामी—

यदि शुभग्रह पापग्रह की राशि में हो तो अच्छे वृक्ष दुष्ट भूमि में पैदा हों।

यदि पापग्रह शुभ ग्रह की राशि में हो तो अशोभन वृक्ष सुन्दर भूमि में हों।

यदि शुभग्रह शुभ राशि में हो तो शुभ वृक्ष रुचिर भूमि में होंगे।

यदि अशुभ ग्रह अशुभ राशि में हो तो अशुभ वृक्ष अशुभ भूमि में होंगे।

इस प्रकार–वह ग्रह अपने नवांश से जितने नवांश पर हो उतने वृक्ष उसी प्रकार के कहना।

पशु का कालांग

मनुष्य का कालांग आगे बताया है। जैसा मनुष्य का कालांग कहा है वैसे ही राशियों से पशु के शरीर का भी विचार होता है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
अंग	सिर	मुख कंठ	अगले पैर व कंधा	पीठ	चूतड़ छाती	कुक्षि दोनों	पुच्छ मूल या पेट	गुदा	पिछले पैर दोनों	लिंग वृषण	स्फिज पेट के दोनों तर्फ	पुच्छ (गुदा के दोनों ओर)

रंग

जो ग्रह लग्न में हो वह रंग नष्ट वस्तु का कहे। लग्न में कोई ग्रह न हो तो जो ग्रह लग्न को देखता हो उस का वर्ण लेना। किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो लग्न के नवांश का वर्ण कहे। यदि लग्न में कई ग्रह हों तो बलवान् ग्रह का रंग अधिक कहे। स्वामी युक्त राशि का यदि लग्न में नवांश हो तो सब को छोड़ उसी का रंग कहे।

पीठ की रेखा

लग्न से सप्तम स्थान में बलवान् ग्रह हो तो उसके अनुसार पशु के पीठ की रेखा कहे।

ग्रह का रंग	गुरु पीला	चंद्र शुद्ध विचित्र	सूर्य मंगल रक्त	शनि कृष्ण	बुध हरा

कहां जन्मा

भूमि में जन्म—३ से अधिक ग्रह नीच राशि में हों या लग्न में या चतुर्थ में वृश्चिक (नीच) का चन्द्र हो तो भूमि में जन्म हुआ।

वृक्ष के नीचे जन्म—सप्तम में मंगल, पंचम में सूर्य हो तो वन में किसी वृक्ष के नीचे जन्म—शुभग्रह नीच राशियों में हो तो वृक्ष के नीचे या लकड़ी के घर में।

जंगल में—जन्म लग्न या जन्म राशि एक हो वहां चंद्र हो, उस चंद्र को यदि ३ ग्रह न देखते हों या शुभग्रह नीच में और लग्न चन्द्र को ३ से अधिक ग्रह न देखें।

नौका पुल या ट्रेन में—पूर्ण चंद्र कर्क राशि में हो व बुध लग्न में हो, गुरु चतुर्थ में हो।

जल के ऊपर नाव आदि में—लग्न में जलचर राशि हो, सप्तम में चन्द्र हो।

लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्र भी जलचर राशि का हो, या जल राशि लग्न को पूर्ण चंद्र देखे, जलचर राशि का चन्द्र लग्न चतुर्थ का दशम में हो, या लग्न चतुर्थ, दशम में जलचर राशि हो।

कारागृह में—लग्न में चंद्र हो पापग्रह से दृष्ट हो, द्वादश स्थान में शनि हो, लग्न चन्द्र से शनि १२ वां हो उस पर पापग्रह की दृष्टि हो।

खंदक खाई में—वृश्चिक या कर्क लग्न हो, लग्न में शनि हो, उसे चन्द्र देखे या वहां चन्द्र हो।

नृत्यशाला (क्रीड़ा स्थल) आदि में या शयन स्थान में—जलचर राशि लग्न में हो उस पर बुध की दृष्टि हो।

ऊषर भूमि में—जलचर राशि का लग्न हो जिसमें जलचर राशि हो वहां शनि हो जिन पर चन्द्र की दृष्टि हो। (अन्य मत से सूर्य की दृष्टि होना बताया है)।

देवस्थान में—उपरोक्त शनि पर सूर्य की दृष्टि हो (अन्यमत में वहां चन्द्र की दृष्टि होना बताया है)।

श्मशान में—पुरुष राशि लग्न में हो, लग्न में शनि हो जिस पर मंगल की दृष्टि हो।

शिल्प (कारीगरी) गृह में—पुरुष राशि लग्न में हो, लग्न में बुध हो जिस पर मंगल की दृष्टि हो।

यज्ञशाला रसोई घर आदि अग्नि स्थान में—पुरुष राशि के लग्न में शनि गुरु हो जिस पर मंगल की दृष्टि हो।

देवालय में या गौशाला में—पुरुष राशि लग्न में हो, लग्न में सूर्य हो जिसपर मंगल की दृष्टि हो।

सुन्दर रमणीक घर में—पुरुष राशि लग्न में हो, लग्न में चन्द्र शुक्र हो जिसपर मंगल की दृष्टि हो।

बस्ती में बहुत मनुष्यों के समुदाय में—लग्न व चन्द्र को बहुत ग्रह देखें।

माता-पिता के घर जन्म—सूर्य बली होकर उसके पास शुक्र हो।

पिता के घर जन्म—पितृ संज्ञक ग्रह सूर्य-शनि बली हों तो पिता व उसके भाइयों के घर जन्म।

माता के घर जन्म—मातृसंज्ञक चन्द्र-शुक्र बलवान् हों तो माता व उसकी बहन के घर जन्म।

फुआ या काका के घर जन्म—शनि और सूर्य दोनों बलवान् हों तो उक्त घर में जन्म।

सूने घर में जन्म—यदि लग्न या चंद्र एक राशि में हों, किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो जहां कोई पुरुष न हो ऐसी जगह में जन्म हो।

अंधेरे में जन्म

(१) लग्न से चंद्र कहीं हो परन्तु मकर लग्न हो कुम्भ राशि का नवांश हो अर्थात् शनि की राशि या नवांश में चन्द्र हो तो जन्म अँधेरे में हुआ, दिन को नहीं हुआ।

(२) लग्न से चतुर्थ में चन्द्र हो।

(३) चन्द्र कहीं हो उसे शनि देखता हो या शनि चन्द्र युक्त हो।

(४) चन्द्र कर्क, मकर व मीन या जलचर राशि के नवांश में हो।

अन्य मत अँधेरे में और भूमि में जन्म का

(१) चतुर्थ में चंद्र शनि की राशि और अंशक में।

(२) या जलराशि में, जलचर राशि के अंशक में, शनि से युक्त दृष्ट या नीच का।

दीपवाले घर में जन्म

इसमें विशेष विचार यह है कि सूर्य बलवान् मंगल से दृष्ट हो तो उक्त योगों के होते हुए भी अँधेरे में जन्म नहीं समझना। दीपसहित घर में जन्म होगा। या चन्द्र को सूर्य की दृष्टि हो तो भी अँधेरे में जन्म नहीं होगा।

पहिले जो प्रसव स्थान के योग कहे हैं उनके अभाव में योग

(१) चर और स्थिर राशि लग्न में, लग्न की और नवांश की राशि के सदृश भूमि में अर्थात् जिस राशि की जो भूमि कही है उसी प्रकार की भूमि में।

(२) सभी राशि के लग्न में यदि अपना नवांश वहाँ हो तो अपने घर में जन्म। जहाँ राशि के समान या नवांश के समान भूमि कहना इस पर विचार है कि जो बली हो उसके समान भूमि कहना।

मार्ग में जन्म—चर राशि की लग्न हो और चर नवांश हो तो मार्ग में प्रसव।

घर में—लग्न स्थिर राशि और नवांश हो या स्थिर राशि या स्वराशि स्वांश की ग्रहों में हो तो घर में प्रसव। लग्न वर्गोत्तम हो तो अपने घर में।

जहाँ जन्म हुआ वह घर कैसा था

जन्म लग्न में शनि बलवान हो—पुराने घर में।

मंगल बलवान् हो—कहीं जला हुआ होगा।

चन्द्र बलवान् हो—नवीन घर।

सूर्य बलवान् हो—उस घर की लकड़ी अच्छी है। परन्तु दीवाल अच्छी नहीं है।

बुध बलवान् हो—कारीगरी का घर।

शुक्र बलवान् हो—रमणीक घर।

गुरु बलवान् हो—बड़ा घर।

घर के बाहर कांटेदार वृक्ष के समीप—लग्न से दूसरे या बारहवें पाप ग्रह हों।

पुराना लिपा पुता घर—लग्न या चन्द्र को बली चन्द्र देखे।

उत्पन्न हुआ बालक कैसा होगा—शरीर रंग वर्ण

शरीर—जन्म समय जो लग्न हो उसमें जो राशिनवांश का स्वामी हो उस सरीखा बालक का शरीर होगा। या बुध जिस नवांश में हो तो उस राशि के समान रूप होगा।

वर्ण—लग्न में जो ग्रह बलवान् हो उस सरीखा शरीर का वर्ण या लग्नेश से या जिस राशि पर चन्द्र हो उसके नवांश स्वामी सरीखा बालक का रंग होगा। ग्रहों और राशियों के गुणधर्म में उनके रंग बताये गये हैं।

शरीर पर तिल—जिस स्थान पर राहु और शनि हो वहाँ काला चिह्न तिल आदि होंगे। शरीर का वर्ण तिल आदि पर पूर्ण विचार आगे दिया है और शरीर का अंग भी विचारना आगे फलांग में दिया है वह पृथक् विषय है।

मातृघाती—चन्द्र से त्रिकोण में शनि हो और रात्रि का जन्म हो तो माता का वध करे। सूर्य मंगल शनि राहु या केतु युक्त, नीच ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो माता का वध करे।

माता को कष्ट—यदि ४–७ भाव में पापग्रह हो तो माता के कलह से कष्ट होवे।

माता के दूध से ३ माह तक, पीछे पिता और भाई द्वारा पालित—जन्म समय सूर्य और चन्द्र एक भाव में एक ही नवांश में हों।

माता से त्यक्त—शनि मंगल कहीं एक राशि में हों उससे सप्तम या त्रिकोण में चन्द्र हो तो बालक को माता त्याग देवे। सूर्य मंगल एक राशि में हों उससे सप्तम पंचम या नवम में चन्द्र हो तो बालक माता से अलग हो जाता है।

त्यक्त बालक दीर्घजीवी—ऐसे योग में गुरु चन्द्र को देखे तो वह त्यक्त बालक दीर्घ जीवी होता है।

त्यक्त बालक मरे—उक्त योग में पापग्रहों से युत व दृष्ट हो तो त्यक्त बालक मरे। लग्न में चन्द्र हो पापग्रह (सूर्य शनि) देखें, सप्तम में मंगल हो। चन्द्र लग्न में हो जिस पर सूर्य की दृष्टि हो मंगल और शनि ११वें स्थान में हों। या शनि और मंगल से १, ११, ७ भावों में किसी भाव में पाप युक्त चन्द्र हो तो त्यक्त बालक मरे।

त्यक्त दूसरे के हाथ लगे—यदि उक्त चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जिस ग्रह की दृष्टि हो उसके समान जात वाले मनुष्य के हाथ में वह बालक जावे और वह दीर्घायु होवे।

दूसरे के हाथ लगने पर भी मरे—उक्त चन्द्र पर शुभग्रह की और पापग्रह की भी दृष्टि हो तो त्यक्त बालक दूसरे के हाथ लग जाने पर भी मर जावे। अन्य मत से उक्त चन्द्र पर पाप दृष्टि हो तब भी उपरोक्त फल हो।

जारज योग (अन्य से उत्पन्न)

१—षष्ठेश का नवांशेश चतुर्थेश युक्त पापदृष्ट हो।

२—चतुर्थ भाव पापग्रहों के बीच, चतुर्थेश या मातृकारक चन्द्र पाप दृष्ट हो नवमेश से लग्नेश बलहीन हो।

३—लग्न या चन्द्र पर गुरु की दृष्टि न हो या गुरु नवांश में ये न हों या सूर्य चन्द्र साथ हो गुरु की दृष्टि न हो।

४—सूर्य चन्द्र पापग्रह युक्त हों या सूर्य या चन्द्र के साथ राहु केतु हों।

५—नवम और चतुर्थ में पापग्रह हो लग्नेश पाप युक्त बलहीन हो चतुर्थ घर में और कोई दूसरा नवांश हो या शत्रु का नवांश हो।

६—६, १, ४, ९ के स्वामी एक साथ कहीं भी हों।

अन्यमत—१, ४, ९ के स्वामी एक भाव में, या १, ३, ४, ७ के भावेश एक साथ।

७—चतुर्थेश षष्ठेश युक्त नवम में हों।

८—चतुर्थ में चतुर्थेश भाग्येश दोनों हों।

९—लग्न में चन्द्र गुरु की दृष्टि या गुरु के राश्यादि वर्ग से रहित हो।

१०—सूर्य चन्द्र गुरु नीच के हों।

११—चन्द्र कहीं भी मङ्गल शनि व सूर्य से युक्त हो।

१२—लग्न में शनि चन्द्र हों, लग्न शुभ दृष्ट न हो।

१३—लग्न में पापग्रह हो उसे लग्नेश न देखे, सूर्य भी लग्न को न देखे।

१४—तिथि के अंत में, दिन के अंत में, लग्न के अन्त में और चरनवांश में जन्म।

१५—चतुर्थ में मंगल बुध और ६, ८ दोनों भाव के स्वामी हों।

१६—६, ९ भाव के स्वामी कहीं हों परन्तु क्रूर ग्रह युक्त या राहु केतु युक्त हों।

१७—लग्न को चन्द्रमा, लग्नेश और सूर्य भी न देखे।

परिहार—जिससे उपरोक्त योग न हो (अर्थात् जारज योग न हो)

१—चन्द्रमा गुरुक्षेत्र में या गुरुयुक्त हो या अन्यत्र गुरु के द्रेष्काण या नवांश में हो।

२—चन्द्र गुरु के क्षेत्र में और शुक्र अपनी राशि के बिना अन्यत्र हो या गुरु के द्रेष्काण या नवांश में हो।

३—चतुर्थ शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो या चतुर्थेश या कारक चन्द्र हो।

४—चतुर्थ में पापग्रह होवे उच्च के या अच्छे वर्ग में शुभ युक्त या दृष्ट हो।

५—चतुर्थेश स्वनवांश में हो या वर्गोत्तम हो।

अन्य जारज योग

१८—आत्मकारक के नवांश में केवल पापग्रह से सम्बन्ध हो तो जार पुरुष से उत्पन्न समझो। यदि आत्मकारक पाप हो अर्थात् आत्मकारक में पापत्व हो तो परजात अर्थात् दूसरे से उत्पन्न हुआ वह नहीं होता किन्तु आत्मकारक से भिन्न पापग्रहों के सम्बन्ध से वह परजात (जारज) होता है।

१९—कारकांश में शनि और राहु हो तो जार से उत्पन्न होने की ख्याति हो। कारकांश में अन्य पापग्रह हो तो परजातक गुप्त रहता है। यदि शुभ का वर्ग हो तो परजातत्व अपवाद मात्र होता है। कारकांश में यदि २ शुभग्रह हों तो कुल में श्रेष्ठ हो।

२०—६, ८ भाव के स्वामी चन्द्र और मंगल से युक्त होकर चतुर्थ भाव में हो तो जारज हो।

२१—कारकांश लग्न में पापग्रह से सम्बन्ध हो तो जारज हो।

२२—केन्द्रेश युक्त तृतीयेश हो तो जारज हो।

२३—६, ८ भाव के स्वामी पापग्रहों से युक्त हों तो जारज हो।

२४—लग्न में २, ३, ५, ६ भाव में स्वामी हो तो जारज हो।

२५—लग्न में पापग्रह, सप्तम में शुभग्रह, दशम में शनि हो तो जारज हो।

२६—लग्न में चन्द्र, पंचम शुक्र, तीसरे में मंगल हो।

२७—लग्न में सूर्य, चतुर्थ में राहु हो तो चाचा से उत्पन्न हो।

२८—लग्न मंगल और राहु, सप्तम सूर्य और चन्द्र हो तो नीच जात से उत्पन्न हुआ समझो।

२९—केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो जार से उत्पन्न।

३०—सब ग्रह १, ६, ८, १२ घर में हों तो जार से उत्पन्न।

३१—गुरु का वर्ग लग्न में न हो तो जार से उत्पन्न।

३२—१०, १ और ४ भाव में पापग्रह से युक्त चन्द्र हो और लग्न चन्द्र इन दोनों पर गुरु की दृष्टि न हो तो जारज हो।

३३—सूर्य-चन्द्र एक राशि में हों, गुरु से दृष्ट न हों तो जारज हो।

३४—४, ९ भाव में पापग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो तो जारज हो।

३५—निर्बल लग्नेश चतुर्थ में २ पापग्रहों के बीच पाप दृष्ट हो तो जारज हो।

३६—सप्तमेश पापयुक्त धन भाव में मंगल से दृष्ट हो तो जारज हो।

जारज योग भंग

३७—लग्न गुरु से युत या दृष्ट हो या लग्न और चन्द्र गुरु की राशि या १० वर्ग में हो तो जारज योग भंग हो।

अन्य योग

(१) लग्न से ९ या ६ इन दोनों भाव के स्वामी शनि युक्त कहीं हों = शूद्र का जन्मा।

(२) लग्न से ९ या ६ इन दोनों भाव के स्वामी बुध युक्त कहीं हों = वैश्य का जन्मा।

(३) लग्न से ९ या ६ इन दोनों भाव के स्वामी सूर्य युक्त कहीं हों=क्षत्रिय का जन्मा।

(४) लग्न से ९ या ६ इन दोनों भाव के स्वामी गुरु या शुक्र युक्त कहीं हों = ब्राह्मण का।

बुध गुरु शुक्र ये क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट या नीच में या अस्त हों तभी उपरोक्त योग जानना।

(५) दूसरे स्थान में क्रूर ग्रह हो, ३, ७, या ५ स्थान में गुरु हो = नीच से उत्पन्न।

(६) शुक्र शनि के नवांश में हो तो = दासी पुत्र।

(७) या शुक्र व्यय स्थान में शनि के नवांश में हो = दासी पुत्र।

(८) सूर्य चन्द्र नीच में हो या सप्तम में शनि दृष्ट हो = दासी पुत्र।

इन जारज योगों के विचार में योगकारक ग्रह की प्रबलता और योग की अधिकता देखकर ही फल कहना चाहिये और कई प्रकार से योग का विचार करना चाहिए।

जन्म समय बच्चे का रोना

जनमते ही बहुत रोया—जन्म लग्न १, ३, ५, ९ राशि हों। अन्यमत से १, २, ५, ७, १० राशि।

धीरे रोया—जन्म लग्न ६, ७, ११ राशि हों। अन्यमत से ६, ७, १२ राशि या केवल ६, ११ राशि।

नहीं रोया—जन्म लग्न २, ४, ८, १०, १२, राशि हों। अन्यमत से २, ४, ८, १०, ११, राशि या ३, ४, ८, ९, १२ राशि।

जन्म समय पिता कहां था

पिता परोक्ष (गैर हाजिर)—यदि लग्न को चन्द्र न देखे तो पिता जन्म समय घर से कहीं बाहर परदेश में था अर्थात् घर में नहीं था।

(२) दशम से आगे घर में सूर्य चर राशि में हो लग्न भी चर राशि हो तो घर के बाहर कहीं रास्ते में।

(३) लग्न में शनि हो। (४) या मंगल सप्तम हो।

(५) या बुध शुक्र की राशि व अंश के मध्य चन्द्र हो।

(६) सूर्य चर राशि में हो वह लग्न से ८, ९, ११, १२, घर में से कहीं हो।

(७) चन्द्र शुक्र व बुध ये एकही राशि में हों, अंश में चन्द्र यदि इनके बीच में हो।

(८) चन्द्रमा चर राशि और चर नवांशक की संधि में हो लग्न को न देखे।

(९) बुध और शुक्र के बीच चन्द्र हो लग्न को न देखता हो और मंगल शनि लग्न में हो।

(१०) चन्द्र १, २, ८, ११, १२ भाव में हो।

(११) लग्न में मंगल शनि हो, गुरु शुक्र केन्द्र के बाहर अन्यस्थान में हो।

पिता मार्ग में

(१) सूर्य दशम से आगे घर में द्विस्वभाव राशि का हो–पिता रास्ते के बीच होगा।

(२) सूर्य द्विस्वभाव राशि में ८, ९, ११, १२ घर में हो लग्न को चन्द्र न देखे तो पिता रास्ते के बीच होगा।

पिता घर में

(१) उपरोक्त योगों में सूर्य स्थिर राशि में लग्न से ८, ९, ११, १२ राशि में हो और लग्न पर चन्द्र की दृष्टि हो तो, अथवा

(२) लग्न को चन्द्र देखे तो पिता घर में था।

पिता की मृत्यु के बाद जन्म—लग्न से दूसरे घर में राहु बुध, शुक्र, शनि, सूर्य हों तो पिता की मृत्यु के बाद जन्म हुआ और बालक अल्पायु होगा।

जन्म समय पिता को बन्धन

क्रूर ग्रह क्रूर राशि में सूर्य से ५, ७, ९ भाव में हो तो पिता बंधन में होगा।

यदि यह सूर्य चर राशि में हो तो पिता परदेश में बँधा (कैद)

यह सूर्य स्थिर राशि में हो तो पिता स्वदेश में बँधा (कैद)

यह सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो पिता मार्ग में बँधा (कैद)

उपसूतिका (दाई) आदि का विचार आगे दिया है उसका कारण यह है कि जब लग्न में संदेह हो या सन्धि गत लग्न हो या जन्म समय ठीक न मालूम हो तो यहाँ बताई बातों पर विचार कई प्रकार से करके लग्न का निश्चय करना।

उपसूतिका संख्या

जचकी कराने के निमित्त जो स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित हों उनको उपसूतिका या दाई कहते हैं। जचकी कराने वाली स्त्रियों का केवल यहाँ विचार है इनके अतिरिक्त घर में और भी कई स्त्रियां हों उनका विचार नहीं है।

(१) लग्न से २, ४, १०, १२ घर में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका होंगी।

(२) यदि वहाँ कोई ग्रह न हो तब चन्द्र और लग्न के बीच जितने ग्रह हों उतनी होंगी।

(३) एक स्थान में बहुत ग्रह हों तो बहुत स्त्रियाँ होंगी।

(४) या इनमें कोई ग्रह उच्च स्वगृही आदि हो तो भी बहुत स्त्रियाँ होंगी।

(५) या उपरोक्तस्थान के स्वामी के साथ जो ग्रह हों उतनी स्त्रियाँ होंगी।

(६) या लग्न में या लग्नेश के पास जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियाँ होंगी।

(७) अन्य मत से—

लग्न राशि	१, १२	२, ११	२, ९	६, ७	शेष ३, ५, ८, १० राशि हो
स्त्री	३	४	५	७	३

अन्य मत—लग्न राशि	१, १२	२, १२	४, ९	शेष
स्त्री	२	४	५	३

(८) अन्य विचार—उपरोक्त ग्रहों में से वक्रगति उच्च में ग्रह हो तो संख्या तिगुनी करना। स्वराशि, स्वनवांश, स्वद्रेष्काण में हो तो संख्या दुगुनी करना। नीच अस्त ग्रह हों तो आधा करना। ग्रह वक्र उच्च हो व कोई स्वांश आदि में भी हो तो १ बार ही तिगुना करना।

कितनी स्त्री कमरे में कितनी बाहर थीं—दृश्य चक्र में जितने ग्रह हों उतनी स्त्री घर के बाहर, अदृश्य चक्र में जितने ग्रह हों उतनी स्त्री कमरे में होंगी।

दृश्य अदृश्य चक्र पहिले समझा चुके हैं। लग्न के भोग्यांश, व्यय, लाभ, दशम, अष्टम व सप्तम भाव का भुक्तांश दृश्य भाग हैं शेष अदृश्य भाग हैं।

उपसूतिका की जाति

(१) लग्न से २, ४, १०, १२ घर में जितने ग्रह हों उन ग्रहों से जाति दिखाकर बुध, गुरु शुक्र ग्रह हो तो ब्राह्मणी, सूर्य से क्षत्रिय, शनि से शूद्र, राहुकेतु से हीन जाति की। अन्य ग्रह से ग्रह की जाति वाली।

(२) यदि सौम्य ग्रह हो तो सधवा, पाप ग्रह से विधवा, बुध, शुक्र, से क्वारी, अन्य ग्रह से वृद्धा जानो। शुभ ग्रह से सुन्दर, पाप ग्रह से मलिन, मिश्र से मिश्रित। गुरु शुक्र से बाल बच्चे वाली।

(३) शुभ ग्रह से ब्राह्मणी, ये पापाशंक में हों तो विधवा ब्राह्मणी। राहु केतु के संयोग से विधवा सुन्दर स्त्री, शनि के संयोग से कुरूप कृपण, कुबड़ी विधवा।

(४) अन्य मत है २, ४, १०, १२ भाव के स्वामी के साथ जो ग्रह हों उनसे स्त्रियों की जाति समझना।

उपसूतिका का वर्ण, रूप आदि

उपरोक्त उपसूतिका सूचक ग्रहों के विचार से ग्रह का रूप वर्ण आयु आदि का विचार करना।

प्रसूति के पहिले माता ने क्या भोजन किया था

इसका विचार चतुर्थेश से होता है।

चतुर्थेश सूर्य हो—कठिन (सख्त) भोजन, मीठा और रूखा पदार्थ।

,, चन्द्र हो मीठी—पतली चाटने योग्य पदार्थ चटनी, आदि और कोमल पदार्थ।

,, मंगल हो—सूखा, खट्टा, गुड़, दूध आदि।

,, बुध हो—अनेक प्रकार का स्वल्प भोजन, थोड़ा भोजन, खिचड़ी आदि।

,, गुरु हो—बहुत रस वाले भोजन, पीने योग्य मधुर और ठंडा पदार्थ।

,, शुक्र हो—ठंडी मीठी पीने वाली चीज शर्बत आदि।

,, शनि हो—मोटा अन्न, कदन्न-कोदों आदि या झगड़े के साथ मिला हो।

अन्य मत—लग्न सूर्य मंगल युत या दृष्ट—गुड़ या गुड़ के बने पदार्थ।

लग्न चंद्र गुरु शुक्र या दृष्ट—शक्कर या शक्कर के बने पदार्थ।

लग्न केतु शनि युक्त या दृष्ट—कड़वे या नमकीन पदार्थ।

सब ग्रह दूध के भोजन का संकेत कर सकते हैं।

सूतिका वस्त्र

(१) लग्न राशि के अनुसार वस्त्र

मेष—लाल	मिथुन—गुलाबी
वृष—श्वेत	कर्क—बादल के समान रंग
सिंह—पीला	धन—पीला
कन्या—सफेद	मकर—काला
तुला—चित्र-विचित्र	कुंभ—कबरैला वस्त्र
वृश्चिक—काला	मीन—साफ वस्त्र

(२) लग्न में जो नवांश हो उसके स्वामी के अनुसार माता का वस्त्र कहना जैसे—

सूर्य—पुराना और दृढ़	गुरु—बहुमूल्य
चंद्र—श्वेत नवीन	शुक्र—चित्र विचित्र
मंगल—लाल दग्ध और फटा	शनि—मैला पुराना
बुध—रंगीन	राहु.केतु—मैला पुराना

अन्यमत लग्न में ये ग्रह हों तो—सूर्य मंगल—लाल धारी या लाल बुन्दकी वाला वस्त्र, चन्द्र शुक्र—श्वेत वस्त्र, राहु केतु—पुराना फटा पेवन लगा।

बुध—हरा	गुरु—पीला

सूतिका बिस्तर—जो ग्रह लग्न को देखे उस सरीखा वस्त्र और बिस्तर।

प्रसूता की चूड़ियां—लग्न से ७ भाव के भीतर जितने ग्रह हों दाहिने हाथ में उतनी चूड़ियां। लग्न से ७ से १२ भाव के भीतर जितने ग्रह हों बांये हाथ में उतनी चूड़ियाँ।

चूड़ियों का रंग—सूर्य और मंगल लाल रंग का संकेत करते हैं।
चन्द्र और शुक्र—श्वेत, राहु केतु—हरा रंग, बुध–रंग विरंगी,
गुरु—पीला रंग।

प्रसूति घर कैसा था

लग्न में जो ग्रह हों उनमें जो बलवान हो उसके अनुसार या वहां ग्रह न हो तो लग्नेश के अनुसार घर का विचार करना।

लग्न में सूर्य बली हो—अदृढ़ (कच्चा) काष्ट युक्त।
,, चन्द्र बली हो—नवीन घर।
,, मंगल बली हो—अग्नि दग्ध या पुराना मकान।
,, बुध बली हो—अनेक प्रकार चित्र विचित्र घर।
,, गुरु बली हो—पक्का (दृढ़) घर।
,, शुक्र बली हो—सुन्दर रमणीक एवं नवीन घर अनेक चित्रों युक्त।
,, शनि बली—जीर्ण घर पुराना मरम्मत किया हुआ।
शुक्ल पक्ष में—सुन्दर लीपा पोता घर।

घर का प्रकार

१—गुरु दशम में हो परमोच्च ५° पर हो–चौमंजिला घर हो ४ कमरे वाला।
२—गुरु दशम में हो परमोच्च ५° के भीतर हो (आरोही) हो–तीनमंजिला घर या ३ कोठरी वाला।
३—गुरु दशम में हो परमोच्च ५° के आगे हो (अवरोही) हो–दो मंजिला घर या २ कोठरी वाला।
४—गुरु दशम में हो परमोच्च धनराशि का बली गुरु हो—तिमंजिला या ३ कोठे वाला।

अन्यमत—गुरु बलवान् होकर धन राशि में हो—तिमंजिला या ३ कोठे वाला।
अन्य कोई ग्रह बलवान् हो—दोमंजिला या २ कोठे वाला।
अन्यकत—लग्न में धनराशि बली हो—तिमंजिला ३ कोठे वाला।
लग्न में द्विस्वभाव बली हो—दोमंजिला या २ कोठे वाला।

प्रसूति स्थान के चारों ओर स्थान का विचार

सूर्य मंगल जिस दिशा में हों–वहाँ अग्नि स्थान (पाक घर)।
चंद्र जिस दिशा में हो–जल स्थान।
बुध जिस दिशा में हो—भंडार
गुरु जिस दिशा में हो–धन स्थान (खजाना)।
शुक्र जिस दिशा हो–देव स्थान (पूजा घर)।
शनि जिस दिशा में हो–अशुभ स्थान (मैला आदि)।

घर में सूतिका घर का स्थान कहां था उसकी दिशा
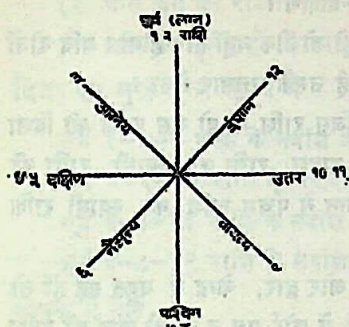
लग्न में १-२ राशि=घर से पूर्व में ।
लग्न में ३ राशि=घर से आग्नेय ।
लग्न में ४-५ राशि=घर से दक्षिण ।
लग्न में ६ राशि=घर से नैर्ऋत्य ।
लग्न में ७-८ राशि=घर से पश्चिम ।
लग्न में ९ राशि=घर से वायव्य ।
लग्न में १०-११ राशि=घर से उत्तर ।
लग्न में १२ राशि=घर से ईशान में ।

अन्यमत
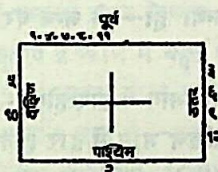
लग्न में १, ४, ७, ८-११ राशि=पूर्व में ।
लग्न में ५-१० राशि=दक्षिण में ।
लग्न में २ राशि=पश्चिम में ।
लग्न में ३, ६ ९-१२ राशि=उत्तर में ।
या सूति गृह के इन दिशाओं में जन्म हुआ ।

सूतिका की चारपाई पर विचार
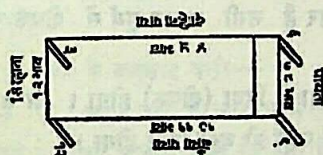
यहाँ लग्न द्वितीय स्थान की राशि में=
सिरहाना ।
सप्तम अष्टम की राशि में=पांयता ।
१०-११ भाव की राशि में=बाईं पाटी ।
४-५ भाव की राशि में=दाहिनी पाटी ।
३-१२ भाव की राशि में=सिरहाने के पाये
६-९ भाव की राशि में=पांयते के पाये ।

उपरोक्त प्रकार से खाट की स्थिति होगी । जिस घर में पाप ग्रह हो उसी पावा को टूटा या फटा । शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो कोई नया कोई पुराना होगा । पाप ग्रह वलवान् हों तो पाया टूटा नहीं होगा ।

द्विस्वभाव राशि जहाँ हो वहाँ कच्ची लकड़ी या कील होगी या डेढ़ापन होगा । अन्यमत—जिस दिशा में राहु हो उस दिशा में शैय्या होगी । लग्न में मंगल हों तो खाट का पाया टूटा ।

सूतिका गृह का द्वार

(१) लग्न या लग्न के नवांश में जो राशि हो उसके अनुसार प्रसव गृह का द्वार होगा ।

१-४-७-८-११ राशि या इनका नवांश लग्न में हो—पूर्व ।

९-१२-३-६ राशि या इनका नवांश लग्न में हो—उत्तर ।

२–राशि या इसका नवांश लग्न में हो—पश्चिम ।

५–१० राशि या इनका नवांश लग्न में हो—दक्षिण ।

(२) एक ही दिशा लग्न और लग्न नवांश से आती हो तो ठीक वहीं द्वार होगा। यदि दोनों में भिन्नता हो तो लग्न व नवांश में जो बली है उसके अनुसार लेना ।

(३) अन्यमत—लग्न में प्रथम द्रेष्काण—नवमेश जिस राशि में हो उस राशि की दिशा में द्वार। लग्न में द्वितीय द्रेष्काण—लग्न में द्वादश राशि का स्वामी राशि की दिशा में द्वार । लग्न में तृतीय द्रेष्काण—लग्न से पंचम राशि का स्वामी राशि की दिशा में द्वार ।

(४) जो ग्रह केन्द्र में हो उसकी जो दिशा है उस ओर द्वार, केन्द्र में बहुत ग्रह हों तो बलवान् ग्रह से दिशा का विचार करना । केन्द्र में कोई ग्रह न हों तो लग्न की राशि या लग्न द्वादशांश की राशि से, इनमें मुख्य बलवान् ग्रहों से विचारना ।

(५) लग्न सिंह हो—तो जन्म गृह के २ द्वार । लग्न कन्या हो—तो जन्म घर कष्टकर खराब हो गरीब घर होगा ।

(६) उपरोक्त ग्रह दृश्यार्द्ध में होवें तो उस दिशा के वाम भाग में द्वार होगा । उपरोक्त ग्रह अदृश्यार्द्ध में होवें तो उस दिशा के दक्षिण भाग में द्वार होगा । यहाँ कई प्रकार से विचार दिया है जिससे अधिक मिले वही लेना ।

दीप विचार

दीप की दिशा—जैसे खाट के अंग का विचार है उसी प्रकार सूर्य से दीपक का स्थान जानना ।

(१) सूर्य की राशि जिस दिशा में है उसी दिशा में दिया (दीपक) होगा । या सूर्य ८ पहर आठों दिशाओं में घूमता है उस समय सूर्य जहाँ हो वहाँ दिया होगा ।

दीप-तेल-बत्ती पर विचार

सूर्य युक्त राशि—दीप ज्ञान । चन्द्र से—तेल ज्ञान । लग्न से—बत्ती ।

दीप—(१) लग्न चर—दीप चंचल हाथ से चलता फिरता या एक जगह से दूसरी जगह को धरा गया ।

(२) लग्न स्थिर—दीप स्थिर एक ठिकाने ।

(३) द्विस्वभाव—दीप हाथ में ही होगा या चलित ।

दीप का अन्य विचार

(१) सूर्य राशि चर—जन्म समय ही दिया लाया गया या एक जगह से दूसरी जगह धरा गया ।

सूर्य स्थिर—दिया जन्म के पहिले था या एक जगह दिया स्थिर था ।

सूर्य द्विस्वभाव—दिया दूसरे ठिकाने था या चलित था ।

(२) जन्म से सूर्य बलवान् हो और उसे मंगल देखे तो वहाँ घर में बहुत दीप हो । या सूर्य बलवान् हो तो—नवीन बहुमूल्य दीपक हो ।

या सूर्य निर्बल हो तो—टूटा फूटा दीप हो यहाँ बल विचार कर कहना।

(३) घास फूस की रोशनी—अन्य ग्रह बली होकर व्यय भाव में हों तथा उन पर शनि की दृष्टि हो तो घास फूस आदि निम्न प्रकार से प्रकाश हो।

दिया का मुख जन्म समय में

सूर्य १–५–९ राशि के नवांश में हो—दिया का मुख पूर्व।

सूर्य २–६–१० राशि के नवांश में हो—दिया का मुख दक्षिण।

सूर्य ३–७–११ राशि के नवांश में हो—दिया का मुख पश्चिम।

सूर्य ४–८–१२ राशि के नवांश में हो—दिया का मुख उत्तर।

दीपक में तेल

चन्द्र के अनुसार विचारना—

(१) चन्द्रमा प्रथम द्रेष्काण में–तेल भरा। चन्द्रमा द्वितीय द्रेष्काण में–तेल आधा। चन्द्रमा तृतीय द्रेष्काण में बहुत कम।

(२) इसी प्रकार चन्द्र राशि से भी विचारना—राशि के आरम्भ में तेल भरा। मध्य में आधा। अन्त में—बहुत कम या खाली।

(३) पूर्ण चन्द्र हो—जन्म समय दिया भर तेल था। क्षीण चन्द्र हो—थोड़ा तेल। चन्द्र के साथ पाप ग्रह—बहुत सूक्ष्म तेल।

बत्ती

लग्न के अनुसार बत्ती—

(१) जन्म लग्न के आरम्भ में—बत्ती दिये में पूर्ण। जन्म लग्न के मध्य में—बत्ती दिये में आधी। जन्म लग्न के अन्त में—बत्ती दिये में थोड़ी।

(२) बत्ती का रंग—लग्न की राशि का जैसा रंग हो उसी के अनुसार।

खाट दिया घर आदि पर विशेष विचार

प्रसव कहीं-कहीं दो मंजिला, तीन मंजिला घर या कहीं भूमि में होता है और दिन में बिना दीपक के प्रकाश रहता है दीप की आवश्यकता नहीं है इत्यादि बातों पर जाति कुल, देश की रीति आदि पर बुद्धि से विचार कर कहना चाहिये।

बालक को किस दशा में ले जाना मना है

अर्थात् आपत्तिजनक दिशा—जन्म समय–जन्म नक्षत्र के चरण पर से वर्ग का विचार करना।

अ वर्ग—वायव्य, क वर्ग—उत्तर, च वर्ग—ईशान, ट वर्ग—पूर्व, त वर्ग–आग्नेय, प वर्ग—दक्षिण, य वर्ग—नैऋत्य, श वर्ग—पश्चिम।

इन निम्न वर्ग वालों की इन दिशाओं में बालक को ले जाना मना है। ८ मील से अधिक दूर इन दिशाओं में नहीं ले जाना।

पुत्र का मुंह देखना

पुत्र होने पर यदि मूल आदि का निषेध न हो तो पिता को शीघ्र ही बालक का मुख देखना चाहिये। पुत्र का मुंह देखते ही पितरों के ऋण से छूट जाता है।

गंडांत विचार

गंड—राशि चक्र में किसी राशि के अंत होने के साथ-साथ उसके अंतर्गत नक्षत्र के चरण का भी अंत हो जाता है ऐसी संधि को गंड कहते हैं। जैसे—

(१) पहिला गंड—संध्या गंड—मीन का अंत और मेष के आरम्भ की सन्धि।

(२) दूसरा गंड—रात्रि गंड—कर्क राशि के श्लेषा के अन्त पर और सिंह राशि के मघा नक्षत्र प्रारम्भ की सन्धि।

(३) तीसरा गंड—दिवा गंड—वृश्चिक राशि के ज्येष्ठा नक्षत्र और धन राशि के मूल नक्षत्र के आरम्भ होने की संधि।

ये गंडांत ३ प्रकार के हैं जो अशुभ माने जाते हैं—

(१) राशि गंडांत। (२) लग्न गंडांत। (३) नक्षत्र गंडांत।

(१) लग्न गंडांत या (२) राशि गंडांत—जैसा ऊपर बताया है १—मीन-मेष की संधि। २—कर्क-सिंह की संधि। ३—वृश्चिक-धन की सन्धि।

सन्धि के प्रत्येक लग्न की आधी-आधी घड़ी बालक को घातक है। अर्थात् मीन, कर्क व वृश्चिक लग्नों के अन्त की आधी घड़ी और मेष, सिंह व धन लग्नों के आदि की आधी-आधी घड़ी घातक है।

(३) नक्षत्र गंडांत (मूल)—१—रेवती के अंत की २ घड़ी, अश्विनी के आदि की २ घड़ी घातक हैं। २—श्लेषा के अंत की २ घड़ी मघा के आदि की २ घड़ी घातक हैं। ३—ज्येष्ठा के अंत की २ घड़ी मूल के आदि की २ घड़ी घातक है।

अभुक्त मूल—(१) ज्येष्ठा के अंत की १ घड़ी मूल के आदि की १ घड़ी में होता है।

अन्यमत से—२—२ घड़ी अर्थात् सन्धि की ४ घड़ी का अभुक्त मूल है।

अन्यमत—मूल, मघा और अश्विनी की आदि की ३—३ घड़ी ज्येष्ठा, श्लेषा और रेवती के अंत की ५ घड़ी लेते हैं। इसमें पिता ८ वर्ष तक बालक का मुख न देखे इसकी शान्ति करावे।

(२) फल—मूल में उत्पन्न बालक का फल आगे दिया है। कहा है अभुक्त मूल में उत्पन्न पुत्र, कन्या, पशु, सेवक, कुल का नाश करते हैं यदि जीवे तो वंश का कर्ता हो, श्रीमान हो।

(३) तिथि गंडांत—नंदा तिथि (१—६—११) के आदि की एक-एक घड़ी।
पूर्णा तिथि (१५—५—१०) के अंत की एक-एक घड़ी।

अर्थात् पूर्णिमा के अन्त की और प्रतिपदा के आदि की संधि की १—१ घड़ी।
पंचमी के अंत की और षष्ठी के आदि की संधि की १—१ घड़ी।
दशमी के अंत की और एकादशी के आदि की संधि की १—१ घड़ी।

इन उपरोक्त संधियों में शुभ काम वर्जित है इनमें जन्मे को दुष्ट योग होते हैं।

(४) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के जन्म का विचार

तिथि के ६ भाग करो (१) भाग-शुभ, (२) भाग—पिता का नाश, (३) भाग—माता का नाश, (४) भाग—मामा का नाश, (५) भाग—भाई का नाश या वंश का नाश, (६) भाग—स्वयं जातक का नाश या धन हानि।

(५) अन्यगंड—(१) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में धनु लग्न हो या पुष्य नक्षत्र में कर्क लग्न हो तो पिता का नाश।

(२) पूर्वाषाढ़ा और पुष्य नक्षत्र में—१ चरण में जन्म हो तो पिता को, दूसरे चरण में माता को, तीसरे चरण के बालक को, चौथे चरण में माता को क्लेश या हानि।

(३) उत्तरा फाल्गुनी के प्रथम चरण में, पुष्य नक्षत्र के मध्य के दोनों चरणों में, चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में, भरणी नक्षत्र के पूर्वार्द्ध में, हस्त नक्षत्र के तीसरे चरण में रेवती नक्षत्र के चौथे चरण में पुत्र हो तो—पिता को अनिष्ट, कन्या हो तो—माता को अनिष्ट।

(४) पिता के नक्षत्र में उत्पन्न पुत्र—पिता को अनिष्ट करता है।

माता के नक्षत्र में उत्पन्न कन्या—माता को अनिष्ट करती है।

(५) अन्यमत—पूर्वाषाढ़ा में धनु लग्न, पुष्य में कर्क लग्न, चित्रा में कन्या लग्न में उत्पन्न हो तो माता, पिता, जातक और मामा को अरिष्ट करेगा चाहे लग्न और चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो।

(६) अन्यमत—हस्त और मघा के तीसरे चरण में उत्पन्न—माता-पिता या काका को अरिष्ट करता है। पूर्वाषाढ़ा और पुष्य के प्रथम चरण में उत्पन्न—पिता को अरिष्ट, चित्रा, विशाखा और हस्त में उत्पन्न—माता को अरिष्ट, मृगशिर के बीच में उत्पन्न—माता को अरिष्ट करता है।

(७) कुल संहारक योग—तिथि ३–६–१० और शुक्ल १४ को शनिवार या मंगल हो इसमें जन्म हो तो कुल संहारक होता है।

(८) अन्य कुलनाशक योग—दिन क्षय, व्यतीपात, व्याघात, वैधृति, शूल, गंड, अतिगड, वज्र योग, विष्टि (भद्रा) करण, परिघ, यमघंट, कालदंड, मृत्यु, दग्धयोग, क्षय तिथ, संक्रान्ति, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, अमावास्या और गंडान्त में जन्म होने से बड़ा दोष होता है। सहोदर भाई बहिन के नक्षत्र में या पिता के नक्षत्र में भी जन्म शुभ नहीं होता।

कहा है कि भाई बहनों का पिता पुत्रों का एक ही नक्षत्र में जन्म हो तो जिसका जन्म पहले हुआ हो उस संतान का नाश होता है या पिता को, भ्राता को रोग हो या पिता या ज्येष्ठ भ्राता का नाश हो।

(९) अश्विनी मघा मूल जन्म में इनका पूर्वार्द्ध—पिता को कष्ट।

रेवती ज्येष्ठा जन्म में इनका उत्तरार्द्ध—माता को कष्ट।

(१०) अन्यमत—मूल मघा अश्विनी का प्रथम चरण और रेवती ज्येष्ठा अश्लेषा का चतुर्थ चरण में पिता को कष्ट ।

(११) धनिष्ठा १ चरण, हस्त १ चरण, विशाखा २ चरण, आर्द्रा २ चरण, उ० भाद्रपद ३ चरण, श्लेषा ३ चरण, भरणी ४ चरण, मूल ४ चरण ये बुरे हैं। दिन में जन्म हो तो मृत्युदायक हैं। रात में जन्म हो तो दोष दूर हो।

(१२) श्लेषा १ चरण, उत्तर भाद्र १ चरण, भरणी २ चरण, मूल २ चरण, उ० फाल्गुनी ३ चरण, श्रवण ३ चरण, स्वाती ४ चरण, मृग ४ चरण ये भी बुरे हैं। दिन में जन्म हो तो रोगदायक हैं। रात में जन्म हो तो दोष न हों।

(१३) विशाखा भरणी, पूर्वाभाद्रपद, मघा, आर्द्रा, कृतिका—इनके प्रत्येक चरण में पहिली ६ घटी के भीतर जन्म हो तो माता को कष्ट हो।

(१४) वज्रगंड की ४ घटी में जन्म होने का दोष—

१ घटी का स्वामी रुद्र–पिता को अरिष्ट। २ घटी का स्वामी यम–माता को अरिष्ट। ३ घटी का स्वामी अग्नि–धन हानि। ४ घटी का स्वामी मृत्यु–शिशु को अरिष्टकारक हैं। इनके स्वामी का पूजन कर शान्ति करे।

(१५) गंडयोग में यात्रा करे तो चोरों का डर हो। गंडयोग में विवाह करे तो मृत्यु हो।

(१६) जिस गंडयोग में पापग्रहों का योग हो–जन्म महा दोषकारी है।

जिस गंडयोग में शुभग्रहों का योग हो–थोड़ा शुभ करनेवाला होता है।

(१७) रात्रि में नक्षत्र के अन्त में अशुभ। दिन में नक्षत्र के आदि में अशुभ।

(१८) कन्या जन्मफल—

मूल में	श्लेषा में	विशाखा में	ज्येष्ठा में
स्वसुर का मरण	बुरे आचरण	देवर का मरण	ज्येष्ठ मरे

(१९) ज्वालामुखी योग

नक्षत्र	मूल	भरणी	कृतिका	रोहिणी	आश्लेषा
तिथि	१	५	८	८	१०

कहा है इनमें जन्म हो तो नहीं जीये। इसे भी कई लोग मूल मानते हैं इसकी भी शान्ति करानी चाहिये।

(२०) जन्मतारा का पापग्रह से वेध हो तो तुरन्त मृत्यु होती है। शुभग्रह से वेध हो तो जन्म तारा (नक्षत्र) आदि शुभफल देते हैं। इस वेध का विचार सप्त शलाका चक्र से करना चाहिए।

यहाँ बताये नक्षत्रों के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसका वेध होता है।

जन्म तारा नाम

प्रथम नक्षत्र—आद्य । दशवां नक्षत्र—कर्म । सोलहवां नक्षत्र—संघातिक । अठारहवां नक्षत्र—समुदाय । उन्नीसवां नक्षत्र—आजान । तेइसवां नक्षत्र—वैनाशिक । पचीसवां नक्षत्र—जाति देश अभिषेक ।

गंड काल में जन्म फल

जो बालक गंडान्त में उत्पन्न हो तो शान्ति उपचार आदि करना चाहिये जिससे बालक बच जावे तो बड़ा पराक्रमी और वाहन युक्त बड़ा ऐश्वर्यवान होता है क्योंकि गंडांत में उत्पन्न बालक माता-पिता कुल व शरीर का नाश करता है जिसका विशेष फल आगे बताया है ।

मास के अनुसार गंडांत वास विचार और फल

वैशाख, श्रावण, माघ, फाल्गुन में=गंडांत स्वर्ग में वास=दोष नहीं ।
ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, पौष में=गंडांत मर्त्यलोक में=मृत्यु ।
आश्विन, चैत्र, भाद्रपद, कार्त्तिक में=गंडांत पाताल में=दोष नहीं ।

गंडांत में जन्म होने पर विचार

उस बालक को पिता ६ मास तक या २७ दिन तक न देखे । पश्चात् फल (गंडांत) की शान्ति कराके मुख देखे ।

अश्लेषा का दोष ९ मास तक रहता है । मूल का दोष ८ वर्ष तक रहता है । ज्येष्ठा का दोष १५ मास रहता है । अभुक्त मूल का दोष ८ वर्ष तक रहता है । कहा है—पिता बालक का मुख न देखे । शान्ति कराने के पश्चात् इतने समय बाद मुख देखे ।

नवांश के अनुसार गंडांत विचार

मेष, सिंह, धन के पहले नवांश में, कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्तिम नवांश में भी गंडांत माना जाता है ।

गंडकाल जन्मफल

(१) गंडकाल की ४ घड़ियों में से बालक के जन्म का फल ।

१ पहिली घटी में उत्पन्न हो तो माता मरे, २ दूसरी घटी में उत्पन्न हो तो पिता मरे, ३ तीसरी घटी में उत्पन्न हो तो स्वयं को भयदायक, ४ चतुर्थ घटी में उत्पन्न हो तो भाइयों को हानिकर हो ।

(२) तिथि या नक्षत्र गंड में उत्पन्न हो तो पिता-माता की मृत्यु ।
लग्न गंडांत में उत्पन्न हो तो स्वतः की मृत्यु । ।

जब जन्म में तीनों गंडांत हों तो वह तुरन्त मरे और कुटुम्ब का नाश करे ऐसा बालक किसी प्रकार जी जावे तो नीच की सेवा करे और अनेक दुःख भोगे ।

(३) लग्न गंडांत में जन्म हो तो पिता को अरिष्ट ।
तिथि गंडांत में जन्म हो तो ज्येष्ठ भ्राता को अरिष्ट ।
नक्षत्र गंडांत में जन्म हो तो स्वयं बालक को अरिष्ट ।
तीनों गंडांत में जन्म हो तो कुल का नाश करे ।

रेवती के गंडांत जन्म का फल

(१) रेवती के चतुर्थ चरण में दिन को जन्म हो तो पिता को अरिष्ट और चतुर्थ चरण रात्रि में जन्म हो तो माता को अरिष्ट शेष ३ चरण अच्छे हैं ।
रेवती प्रथम चरण में जन्म हो तो राजा हो, द्वितीय चरण में मंत्री हो । तृतीय चरण के जन्म में सुख हो, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हो ।

(२) आश्लेषा जन्म फल

१ चरण में सुख, सम्पति लाभ । २ चरण में—धन नाश । ३ चरण में माता को अनिष्ट । ४ चरण में पिता को अनिष्ट ।

अन्यमत—दोनों संध्याओं में जन्म हो तो स्वयं को अरिष्ट कारक होता है ।

(३) ज्येष्ठा के जन्म का फल

१ चरण में बड़ा भाई । २ चरण में छोटा भाई बहन । ३ चरण में पिता या माता को अरिष्ट । ४ चरण में स्वयं को अरिष्ट ।

अन्यमत—ज्येष्ठा ४ चरण में दिन के जन्म में पिता को अरिष्ट । ज्येष्ठा ४ चरण के रात में जन्म में माता को अरिष्ट ।

ज्येष्ठा की सर्व घटी में ६ का भाग देने से लगभग १० घटी का १ भाग होगा उसका फल

१ भाग के जन्म में नानी को अरिष्ट । २ में नाना को अरिष्ट । ३ में मामा को अरिष्ट । ४ में माता को अरिष्ट । ५ में बालक को अरिष्ट । ६ में कुल को अरिष्ट । ७ में मातृ-पितृ दोनों वंशों को । ८ में भ्राता । ९ में स्वसुर । १०वें भाग में सर्वनाश ।

ज्येष्ठा में कन्या हो और मंगलवार हो तो ज्येष्ठ भाई का नाश करे ।

(४) मूल नक्षत्र के जन्म का विचार

१ चरण में पुत्र जन्म हो तो पिता को अरिष्ट । कन्या का जन्म हो तो स्वसुर को अरिष्ट । २ चरण में जन्म माता को अरिष्ट, कन्या जन्म हो तो सास को अरिष्ट । ३ चरण में जन्म धन नाश । ४ चरण में जन्म हो वंश नाश ।

अन्यमत से—४ चरण में जन्म शुभ हो । जातक पारिजात और जातकाभरण में चौथे चरण में जन्म शुभ माना है ।

मूल कहाँ है

फाल्गुन, ज्येष्ठ, वैशाख, अगहन में पाताल में वास शुभ है । आषाढ़, भादो, आश्विन, माघ में स्वर्ग में वास शुभ है । श्रावण, कार्तिक, पूष, चैत्र में पृथ्वी में वास मृत्यु रूप है ।

मूल नक्षत्र का द्वादश गंड फल

मूल नत्रक्ष की सर्वघटी में १२ का भाग देने पर १ भाग लगभग ५ घटी का पड़ेगा।

१ भाग में जन्म पिता को अरिष्ट। २ में माता को अरिष्ट। ३ में भ्राता को अरिष्ट। ४ में बहिन को अरिष्ट। ५ में स्वपुर को अरिष्ट। ६ में चाचा को अरिष्ट। ७ में मौसी को अरिष्ट। ८ में सम्पत्ति को अरिष्ट। ९ में बालकों को अरिष्ट। १० में दरिद्रता। ११ में राज्य प्राप्ति। १२ वें भाग में सम्पत्ति प्राप्त।

पुरुषाकार मूल और आश्लेषा का फल

नक्षत्र के १० विभाग नीचे बताये प्रकार से शरीर के अंगों के हैं।

मूल नक्षत्र विभाग क्रम	आश्लेषा नक्षत्र विभाग क्रम	शरीर अंग	घटी	फल
१ पहिला	१० वां	सिर	५	छत्र लाभ
२	९	मुख	५	पिता नाश
३	८	दोनों कन्धे	८	भार वाहन कर्ता
४	७	दोनों बांह	८	खोटे कर्म करे
५	६	दोनों हाथ	२	हत्या करनेवाला
६	५	हृदय	८	राज्य प्राप्ति
७	४	नाभि	२	अल्पायु
८	३	कमर	१०	अद्भुत सुख
९	२	जंघा	६	भ्रमण करे
१० वां	१ पहिला	पैरों में	६	अल्प जीवी

यहाँ आश्लेषा का विरुद्ध क्रम से बताया है : जैसे पहिला भाग ६ घटी का पैरों में अल्पजीवी। दसवां भाग सिर में ५ घटी का फल छत्र लाभ। इस प्रकार समझना। मूल का फल यहां बताये क्रमानुसार ही लेना। परन्तु मूल के विरुद्ध आश्लेषा का फल यहाँ बताया है।

वृक्षाकार मूल से फल विचार

१ जड़ ४ घटी—फल नाश। २ स्तंभ ७ घटी—धननाश। ३ त्वचा १० घटी—भाई को अरिष्ट। ४ शाखा ८ घटी—माता को अरिष्ट। ५ पत्ते ९ घटी—परिवार को अशुभ। ६ पुष्प ५ घटी—राज मैत्री। ७ फल ६ घटी—राज्य प्राप्ति। ८ चोटी ११ घटी—अल्पायु।

मूल के ३० मुहूर्त

यहाँ × चिह्न वाले नक्षत्र में बालक उत्पन्न हो तो परिवार का नाश करता है। ये क्रम से १, २, ६, ८, १८, २३ वें मुहूर्त हैं जिनमें परिवार का नाश होता है।

इसमें आश्लेषा के ३० मुहूर्त के नाम दिये हैं। यहाँ अश्लेषा को मूल के विरुद्ध क्रम से इनको गिनना चाहिये।

मूल नक्षत्र में ३० मुहूर्त हैं जिनके नाम

मूल का मुहूर्त क्रम	मुहूर्त नाम	आश्लेषा का मुहूर्त क्रम	मूल का मुहूर्त क्रम	मुहूर्त नाम	आश्लेषा का मुहूर्त क्रम
× १ ला	राक्षस	३० वां	१६	दिवाकर	१५
× २	यातुधान	२९	१७	गंधर्व	१४
३	सोम	२८	× १८	यम	१३
४	शुक्र	२७	१९	ब्रह्मा	१२
५	फणीश्वर	२६	२०	विष्णु	११
× ६	पिता	२५	२१	यम	१०
७	माता	२४	२२	ईश्वर	९
× ८	यम	२३	× २३	विष्णु	८
× ९	काल	२२	२४	रुद्र	७
१०	विश्व देव	२१	२५	पवन	७
११	महेश्वर	२०	२६	स्वामी कार्तिकेय	५
१२	शर्व	१९	२७	भृंग रीटी	४
१३	कुवेर	१८	२८	गौरी	३
१४	शुक्र	१७	२९	सरस्वती	२
१५	मेघ	१६	३० वां	प्रजापति	१ पहला

मूल के साथ अशुभ योग

यदि मूल नक्षत्र के समय क्षयतिथि, व्यतीपात, व्याघात, वैधृति, शूलगंड, अतिगंड और परिघि योग हो विष्टि करण (भद्रा) हो, यमघंट, ब्रह्मदंड या मृत्यु योग आदि अशुभ योग हों तो बालक सारे कुल का नाश करे। इसकी अवश्य शांति करानी चाहिये।

मूल में और भी विचार

(१) मूल नक्षत्र में जन्म हो और कृष्ण तृतीया को मंगलवार हो या कृष्ण दशमी को शनिवार हो या शुक्ल चतुर्दशी को बुधवार हो तो ऐसे समय में जन्मा बालक कुल का नाश करे।

(२) दिन, संध्या, रात्रि और प्रातःकाल में जन्म हो तो क्रम से पिता-माता, पशु और मित्र वर्गों को मूल नष्ट करता है।

(३) मूल में कन्या इतवार को जन्मे श्वसुर का नाश करे।

मूल नक्षत्र के १५ विभाग का फल

पूर्ण नक्षत्र की घटी में १५ का भाग देने से १ भाग का समय निकल आयेगा।

१ भाग पिता को अरिष्ट, २ भाग चाचा को अरिष्ट, ३ भाग बहनोई को अरिष्ट, ४ भाग पितामह को अरिष्ट, ५ भाग माता को अरिष्ट, ६ भाग मौसी को अरिष्ट,

७ भाग मामा को अरिष्ट, ८ भाग चाची को अरिष्ट, ९ भाग सर्वनाश, १० भाग पशु का नाश, ११ भाग नौकर का नाश, १२ भाग जातक का नाश, १३ भाग ज्येष्ठ भाई को अरिष्ट, १४ भाग बहि। को अरिष्ट, १५ भाग नाना को अरिष्ट।

जैसे—मूल का भभोग ६२-१५ है ÷ १५ = १ खंड ४-९. घटी का पड़ा इसका आठवां खंड ३३-१२ तक है। ९वां खंड ३७-२१ तक है मान लो इष्ट ३६-११ है तो ९वें खंड में जन्म हुआ जिसका फल सर्वनाश है।

(५) मघा में जन्म फल

१ चरण जन्म मामा का नाश। ३ चरण में जन्म सुख सम्पत्ति।
२ चरण में जन्म पिता। ४ चरण में जन्म धन लाभ सम फल।

पिता का नाशक गंडयोग

अश्विनी के पहले चरण में—१६ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
मघा के पहले चरण में—८ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
ज्येष्टा के पहले चरण में—१ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
चित्रा के पहले चरण में—४ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
मूल के पहले चरण में—४ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
आश्लेषा के पहले चरण में—२ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
रेवती के पहले चरण में—१ वर्ष में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
उत्तरा के पहले चरण में—२ मास में गंड दोष होवा है पिता को अनिष्ट।
पुष्य के पहले चरण में—३ मास में गंड दोष होता है पिता को अनिष्ट।
पूर्वाषाढ़ा के पहले चरण में—९ मास में गंढ दोष होता है पिता को अनिष्ट।
हस्त के गंड में उत्पन्न—१२ वर्ष में पिता का संहार करे।
अभुक्त मूल में उत्पन्न—उसी क्षण पिता का नाश करे।

इतर जन्म के अशुभ योग

(१) पिता के जन्म नक्षत्र या १०वें नक्षत्र में उत्पन्न बालक पिता का नाश करता है। (२) पिता की जन्मराशि के नवांश में तथा उसके लग्न में बालक पिता का तुरन्त नाश करता है। (३) मुसल और मुद्गर योग में उत्पन्न—शुभ नाशक। (४) भद्रा में उत्पन्न—दरिद्र। (५) गुलिक में उत्पन्न—अंगहीन। (६) रिक्ता तिथि में उत्पन्न—नपुंसक। (७) यमघंट में उत्पन्न—लंगड़ा। (८) ग्रह पीड़ित में उत्पन्न—रोगपीड़ित। (९) व्यतीपात में उत्पन्न—अंगहीन। (१०) परिघि योग में उत्पन्न—मृत्यु। (११) वैधृति योग में उत्पन्न—पिता का नाशक। (१२) विष्कुंभ में उत्पन्न—धन नाश। (१३) शूल में उत्पन्न—शूल रोगी। (१४) गंड में उत्पन्न—गंड रोग।

(६) अन्यत्री फल

(१) चरण—पिता को भय। (३) चरण—मंत्री पद।
(२) चरण—सुख ऐश्वर्य। (४) चरण—राज सम्मान।

पूर्वाषाढ़ा के जन्म फल

कई ने इसका जन्म भी अशुभ बताया है मूल के आगे यह नक्षत्र है।

(१) चरण—पिता को अरिष्ट। (३) चरण—मामा को अरिष्ट।
(२) चरण—माता को अरिष्ट। (४) चरण—बालक का अंग।

अमावस्या जन्म फल

अमावस्या के दिन जन्म स्त्री, पशु, हाथी, घोड़ा, भैंस के बच्चा हो लक्ष्मी का नाश करता है।

चतुर्दशी मिली अमावस्या (सिनीवाली) में एवं प्रतिपदा मिली अमावस्या (कुहू) में उत्पन्न बालक को त्याग देना बताया है। बहुत अशुभ है इसकी शांति विधानपूर्वक करानी चाहिये।

ग्रहण में जन्म

राहु केतु द्वारा चन्द्रग्रहण में चंद्र का घेरा बन जावे और उसे कोई पापग्रह देखे तो बालक तुरन्त मरे। ग्रहण के समय जो बालक होता है वह कम जीता है। यदि जिये तो बड़ा आदमी होता है।

दाँत विचार

१-दांत सहित बालक उत्पन्न—कुल का नाशक हो। २-दूसरे मास से ४ मास तक दांत होवे—पिता को अरिष्ट। ३-६ठें मास में दांत होवे—शिशु को अरिष्ट। ४-७ मास में दांत होवे—शुभ होता है।

गंडशांति विधि

अरिष्ट चंदन कुष्ट गोरोचन इनको घी में मिलाकर ४ कलशों में भरे फिर पंडित "सहस्रशीर्षा…" इस मंत्र से यदि दिन में बालक उत्पन्न हुआ हो तो पिता सहित, यदि रात्रि में हुआ हो तो माता सहित यदि दोनों संध्या में उत्पन्न हो तो माता-पिता सहित स्नान करावे। और गंड की शांति के लिये घी से पूर्ण कांसे का वर्तन देवे ग्रह का जप भी करावे, यथाशक्ति काली गाय सुवर्ण आदि दान देवे।

अन्यमत—नवरत्न १०० ओषधियों की जड़ सप्तमृत्तिका से पूर्ण करे और १०० छेदवाले घड़े में से निकाले हुऐ जल से उत्पन्न बालक और माता-पिता को स्नान करावे। ब्राह्मणों के कहे हुए मंत्र से जप-होम-दान से शांति कराने से मंगल होता है।

सर्व अरिष्ट निवारण के लिए इस प्रकार ब्राह्मणों का दान देना।

नक्षत्र-	हस्त	अश्विनी	रेवती	ज्येष्ठा	मघा	मूल	उत्तरा	पुष्य	पूषा	चित्रा	श्लेषा
वस्तु—	स्वर्ण	वस्त्रदान	घृत	गौ	स्वर्ण	महिष	तिल	धेनु	सुवर्ण	वस्त्र	अश्व

अध्याय ११

युगसंवत्सरादि फलाध्याय

कलियुग जन्म फल—बड़ा कामी, धन से हीन, यशहीन, दुराचारी, दुष्ट बुद्धि, अनेक प्रकार से दुखी।

द्वादश युग फल—

६० वर्ष में १२ युग व्यतीत हो जाते हैं। यहाँ प्रत्येक ५ वर्ष का १ युग माना है।

१२ युगों के फल

१ युग—मद्य मांस भक्षी, परदारा रत, बड़ा कवि, बड़ा कारीगर, बुद्धिमान।

२ युग—वाणिज्य व्यवहारी, धार्मिक, सत्यवादी, द्रव्यलोभी, अतिपापी।

३ युग—भोक्ता, दानी, देव ब्राह्मण पूजक, बड़ा तेजस्वी, धन युक्त।

४ युग—बाग बगीचा; खेत की प्राप्ति, दवा सेवन का प्रेमी, धातु विषयक कर्म में धन नाशक।

५ युग—पुत्र संतति हो, धनवान, इन्द्रिय जीत, माता-पिता का प्रिय।

६ युग—अनेक शत्रुयुक्त, बड़ा नीच, सदा भैंस की सेवा करने में प्रसन्न, पत्थर द्वारा अपघात हो, बड़ा भयभीत।

७ युग—बहुत मित्रों का प्रिय, अनेक मनुष्यों का प्यारा, व्यापार में कुटिल बुद्धि, शीघ्रता से चलने वाला, अतिकामी।

८ युग—पापकर्म कर्ता; व्याधि और दुःख से युक्त; संतोष युक्त, जीवों की हिंसा करने वाला।

९ युग—कुआ तालाब बावली आदि बनवाने वाला, देव-अतिथि प्रेमी, इन्द्र के समान प्रतापी।

१० युग—राजा का मन्त्री, सुन्दर रूप, सुन्दर वेश करनेवाला, दानी, स्थानप्राप्ति के कारण महा सुखी।

११ युग—बड़ा बुद्धिमान, बड़ा सुशील, युद्ध में शूरवीर।

१२ युग—बड़ा प्रतापी, सदा प्रसन्न, मनुष्यों में श्रेष्ठ, खेती और व्यापार करने वाला।

६० सम्वत्सर हैं उनमें जन्म का फल

(१) प्रभव में—साहसी, सत्यवक्ता, समस्त गुणयुक्त, धर्मवान, कालज्ञ सम्पूर्ण वस्तुओं के संग्रह में तत्पर, पुत्र संतानवाला, श्रेष्ठ बुद्धि, भोगी, दीर्घायु, विद्वान, बलवान, क्रूर स्वभाव।

(२) विभव—कामी, मित्र संतुष्ट, धनवान, बंधु विद्यायश युक्त अतिचंचल स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला, परोपकारी, चोर, भोगी, बलवान, कलाविद कुल में राजा के समान, शीलवान, पण्डित।

(३) शुक्ल—बल रहित, परस्त्री गामी, त्यागी, सुशील, बड़ाशांत, निर्धन, परोपकारी, विद्या और नम्रता युक्त, श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री, श्रेष्ठ भाग्य, शुद्धता पूर्वक रहने वाला।

(४) प्रमोद—बोलने में चतुर, मंत्री, कार्य में लीन, दाता, पुत्र से आनन्दयुक्त, गुणवान, चतुर, धूर्त, अभिमानी, पराया कार्य करनेवाला, बांधवों से शत्रुता रखने वाला, राज्य कुल में पूज्य, मित्रों से झगड़ा, कभी लक्ष्मी, कभी भार्यायुक्त।

(५) प्रजापति या प्रजाधीश—धर्म करने वाला, दान में तत्पर, धनवान, शांत, पुत्रवान, दयावान, सुन्दर शील, देव ब्राह्मण पूजक, नम्र, भोगी, धन के कारण देशों में विख्यात, स्त्री का अभिमानी, प्रजा पालन में प्रसन्न।

(६) अंगिरा—नीतिज्ञ, निपुण, धनी, कृपालु, स्त्री से सुखी, भोगी, मानी, प्यारी बोली, दीर्घायु, बहुत पुत्र, धर्मशास्त्र मंत्रशास्त्र आदि शास्त्रों में प्रवीण, अतिथि एवं मित्रों का भक्त, छिपी बुद्धि।

(७) श्रीमुख—लक्ष्मीवान, सदा प्रतापी, शास्त्रों का ज्ञाता, सुन्दर पति, मित्रों को प्रिय, बलवान, उदार, श्रेष्ठ कीर्ति, देवभक्त पाखण्डी, धनवान, पवित्र, परस्त्री में प्रेम।

(८) भाव—श्रेष्ठ चित्त, यशस्वी, गुणी, दानी, नम्र, बंधुजनों को प्रिय, विचार-कुशल, मछली के मांस का प्रेमी, बलवान, धनवान, योगी, राज्य करने वाला।

(९) युवा—प्रसन्न, नम्र, गुणवान, शांत, दानी, दृढ़ देह, श्रेष्ठ बुद्धि दीर्घायु, जल से डरने वाला, स्त्री निमित्त दुःखी, व्याधि और दुःख से पीड़ित, लोभी, चंचल बुद्धि, क्रोधी, कृशदेह, वैद्य, सबसे प्रेम व्यवहार।

(१०) धातृ या धाता—गुणवान, गौरवयुक्त, गुरुभक्त, शिल्पविद्या में चतुर, शीलवंत, सुन्दर रूप, धनवान, शठ, परस्त्री में प्रेम, दीन रक्षक।

(११) ईश्वर—शीघ्र क्रोधित होने वाला, प्रतापी, चतुर, गुणवान, प्रसन्न चित्त, शीलवान, कलाओं में कुशल, धनवान, भोगी, कामी, पशुपालन का प्रेमी, अर्थ धर्मयुक्त, बलवान, बुद्धिमान।

(१२) बहुधान्य—व्यापार में चतुर, राजा से मान्य, दानी, अभिमानी, शास्त्रज्ञाता, अन्न और धनयुक्त, कला और संगीत में कुशल, सत्कर्मी, भोगी, मद्य पीनेवाला।

(१३) प्रमाथी—क्रूर, पापी, क्रोधी, बंधुहीन, सुखी, अनेक व्यसन युक्त, दूत कर्म करने वाला, पर दारा, पर धन प्रेमी, शत्रु नाशक, मन्त्री, शास्त्र का ज्ञाता, रथ, ध्वजा, घोड़े, छत्र आदियुक्त।

(१४) विक्रम—पराक्रमी, धनी, सेनापति, सदा संतोषी, प्रतापी, अनेक विद्या का ज्ञाता, शत्रु नाशक, उदार, बलवान, चतुर, उग्र कर्म करने में तत्पर।

(१५) वृष—निर्लज्ज, दरिद्री, कर्महीन, मोटा पेट, स्थूल शरीर, छोटे हाथ, कुल-निंदक, बहुतों से धन का लेनेवाला, आलसी, लोभी, मलीन, बहुत जनों का स्वामी, पराया काम करने वाला, निंद्यशील, कार्य में अधिक बात करनेवाला।

(१६) चित्रभानु—चित्र-विचित्र पुष्पों को धारण करनेवाला, चिन्तायुक्त, कला-युक्त, शीलवान, तेजस्वी, घमण्डी, देवपूजा प्रेमी, दृढ़, हीन कर्म करनेवाला।

(१७) सुभानु—सब वस्तुओं का संग्रहकर्ता, श्रेष्ठ कांति, बुद्धिमान, शत्रुओं को जीतनेवाला, नम्र, प्रसन्न चित्त, निज कुल की विद्या और आचारयुक्त, वैभवयुक्त।

(१८) तारण—धूर्त, शूर वीर, चपल, कलाविद्, कठोर चित्त, निंदित काम करनेवाला, धनी, लोकप्रिय, राजद्वार से धन पानेवाला, सब धर्म बहिष्कृत, विवेकी।

(१९) पार्थिव—स्वधर्म कर्म में तत्पर. क़ला और शास्त्रों का ज्ञाता, सुखी, विलासी, धर्मात्मा, श्रीमान्।

(२०) व्यय—कामी, डरपोक, पापी, शील, धन गुणरहित, अनेक मित्र, भोगी, कर्जमंद, खर्चीला, अस्थिर चित्त, सब में प्रधान, निर्भय।

(२१) सर्वजित—वाचाल, बलवान्, गुणी, तत्ववेत्ता, शास्त्री, पुण्य कर्मी, राजा से वैभव प्राप्त, पवित्र मोटी देह, शत्रुजित, उत्सव युक्त।

(२२) सर्वधारी—राजप्रिय, माता-पिता को प्रिय, गुरुभक्त, शूरवीर, शांत प्रकृति, प्रतापी, धीर, गुणवान, योगी, मिष्ठान्न प्रिय, बहुत सेवक हों।

(२३) विरोधी—बड़ा बोलनेवाला, परदेश भ्रमण, कुटुम्ब एवं सौख्य युक्त, धूर्त, मित्र रहित, मांस मत्स्य भक्षक, लोक पूज्य, निजधर्म में प्रीति, पाप कर्म करने वाला, दुष्ट, शोक युक्त।

(२४) विकृति—धनहीन, अभिमानी, सुन्दर बुद्धि, मित्र रहित, नृत्य गान में चतुर, दाता, भोगी, विचित्र वचनभाषी, मायावी, कामातुर, तंत्र-मंत्र विद्या का ज्ञाता।

(२५) खर—कामातुर, मलिन देह, असार वाणी, कठार, लज्जा रहित, क्लेश युक्त, दीर्घ, कुटुम्ब के बोझ को उठाने में उत्साह, निर्मोही, निर्गुण, पापी, दीन वचन।

(२६) नन्दन—तालाब वावली कुआ आदि बनाने में प्रेम, अन्नदान में प्रीत, सब में प्रीत, कल्याण कर्म कर्ता, राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, राजा का प्रिय, आनन्द प्राप्त, मंत्र के अर्थ का ज्ञाता।

(२७) विजय—युद्ध में धीर, श्रेष्ठ शरीर, राजा से मान्यता प्राप्त, दाता, दयालु श्रेष्ठ बोली, शत्रु नाशक, शुभ कर्म करने वाला, कीर्तिवान, आयु यश और सुख से युक्त, धार्मिक सम्पत्ति युक्त, सत्यवक्ता।

(२८) जय—शास्त्रार्थ प्रेमी, माननीय, शत्रु नाशक, पराक्रमी, विषयी, युद्ध में जय, व्यापार करने वाला, राजा के सदृश।

(२९) मन्मथ—विशेष आभूषण युक्त, मीठी वाणी, विलासी, कलाविद, गीत नृत्य प्रिय, भोगी, कामी, बुद्धिमान, लोभी, धनी, निष्ठुर, बली, शत्रु जित।

(३०) दुर्मुख—क्रूर, दुष्ट बुद्धि, लोभी, शीलहीन, विकृत अंग, गुणहीन, विवादी, कुरूप स्त्रियों से प्रेम, चतुर, परोपकारी।

(३१) हेविलम्ब या हेमलम्ब—धन, रत्न, वाहन, सेना आदि से युक्त, पुत्र और स्त्री का सुख प्राप्त, कृपण, दान न देने वाला, दुष्ट, कृषि आदि कर्म में प्रेम, परन्तु सर्वत्र पूजित।

(३२) विलम्ब या विलम्बि—बड़ा धूर्त, लोभी, आलसी, कफ प्रकृति, बलहीन, व्याधि से दुःखी, कुटुम्ब पालक, श्रीमान, विप्र जन का आश्रित, प्रारब्ध कार्यों में सदा प्रलाप करने वाला।

(३३) विकारी —मिथ्या हठ करनेवाला, कला में प्रवीण, चंचल बुद्धि, धूर्त बहुत बोलने वाला, रक्त विकार युक्त, पित्त प्रकृति, रक्तनेत्र, दरिद्री, बनवासी, डरपोक।

(३४) शर्वरी—व्यापार के काम में चतुर, विलासी, मित्रों का विरोधी, अनेक विद्याओं का प्रेमी, वेद शास्त्र प्रेमी, देव ब्राह्मण भक्त, मिष्ठान्न रस भोजी, आचारवान, धनवान।

(३५) प्लव—कामी, धनवान, सेवा से आदर पाने वाला, चञ्चल स्वभाव, निद्रालु, भोगी, लोक पूजित, शांत, उदार, पराक्रमी, दयालु धर्मात्मा व्यवसाय करनेवाला।

(३६) शुभकृत—सौभाग्य, विद्या नम्रता युक्त, पुण्यवान, दीर्घायु, पुत्र और धन से सुखी, शुभ कर्म कर्ता, यशस्वी, धर्मशील, प्रतापी, प्रजापालक, पंडित, स्त्रीजनों से वंचित।

(३७) शोभन—ऊँचा शरीर, गुणी, दयावान, श्रेष्ठ कर्म, नम्र, प्रवीण, श्रेष्ठ नेत्र शांत चित्त, शूरवीर दानी, ज्ञानी, विद्या का प्रेमी।

(३८) क्रोधी—क्रूर दृष्टि, दुष्ट, अति अभिमानी, स्त्री को प्रिय, परकार्य को बिगाड़ने वाला, क्रोधी, शूरवीर, विज्ञान और औषधियों का संग्रह करने वाला या इनका ज्ञाता, पर स्त्री से प्रेम, शठ बुद्धि।

(३९) विश्वावसु या विश्व—पुत्र और स्त्री युक्त; उदार, आचारवान, धैर्यवान, मिष्ठान्न प्रिय, गुणी, मनुष्यों में प्रधान, हास्य रस प्रिय, माननीय।

(४) पराभव—कठोर वचन, कितना ही संग्रह करे परन्तु धन धान्य रहित, धूर्त, आचार विचार हीन, भय युक्त, शीत से भय, डरपोक, अधर्मी जीव, हिंसक, कुल नाशक, दुष्ट आचरण।

(४१) प्लवंग—चंचल चित्त, धूर्त, आचार विचार रहित, क्रूर, चोर, योगाभ्यासी पृथ्वी पालक, कामी, मंद बुद्धि, श्रेष्ठ कार्य में प्रवृत्ति नहीं करे।

(४२) कीलक—प्रिय वाणी, दयालु, जल की बारम्बार इच्छा, स्थूल और श्रेष्ठ, स्थिर, बलवान्, चित्रकार, अभिमानी, मातृ पितृ भक्त, ब्राह्मण प्रिय, पराक्रमी, सुखी।

(४३) सौम्य—पंडित, धनवान, भोगी, देव और अतिथि का प्रेमी, पवित्र, सात्विक स्वभाव, दुर्बल देह, शीलयुक्त, चतुर, प्रतापी, इन्द्रिय जित, शांत स्वभाव, सर्व जन प्रिय, धैर्यवान।

(४४) साधारण—क्रोधी, विवेकी, दृढ़ विश्वासी, अल्प संतोष, धर्म कर्म में तत्पर, मंत्र शास्त्र ज्ञाता, विफल बुद्धि, लेखन क्रिया में कुशल, इधर उधर घूमने वाला।

(४५) विरोधीकृत—क्रोधी, विरोधी, पिता की आज्ञा का विरोधी, बांधवों से विरोध, देव आराधन में तत्पर, क्षण में सौम्य क्षण में हीन. भ्रमण शील, दरिद्र, आशा पर रहने वाला।

(४६) परिधावी—विद्वान, शीलवान, कला में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि, राजा से मान्य,

व्यापार में प्रतिष्ठा, कर्म में आलसी, देशों में भ्रमण करने वाला, देव ब्राह्मण का प्रेमी, धनवान, कटुवचन भाषी।

(४७) प्रमादी—दुष्ट, अभिमानी, कलही, लोभी, अल्प बुद्धि, बुरे कर्म, परस्त्री प्रेमी, बंधुओं से विराग, ईश्वर पूजक।

(४८) आनन्द—चतुर, पंडित, कृतज्ञ, नम्रता युक्त, पत्रों से आनन्द, बहुत स्त्री अतिथियों का सेवक, धनवान, प्रसन्न चित्त, तत्वज्ञानी, वेद शास्त्र प्रेमी, सदा आनन्द युक्त।

(४९) राक्षस—क्रूर, खोटे कर्म, कलह कारक, श्रेष्ठ धर्महीन, दयाहीन, साहसी, मछली के मांस का प्रेमी, हिंसक वृत्ति, मद्यपान करे, निष्प्रयोजन पाप कर्म करे, पापी, अपकारी, वृथावक्रवादी।

(५०) नल—श्रेष्ठ बुद्धि, खेती से धान प्राप्त, वैश्य वृत्ति में चतुर, थोड़ा धन, सुशील, चपल, बहुत जनों का पालक, अनेक पुत्र व मित्र, द्रव्य लोभी, कलह प्रिय, दानी, गुणी, शांत, सदाचारी।

(५१) पिंगल—पीले नेत्र, शठ, त्यागी, निषिद्ध कर्म करने वाला, अति कठोर, पित्त कोप से रोग, अनेक वाहन, मन को जीतने वाला, तपस्वी।

(५२) काल युक्त—खोटी बुद्धि, बहुत बोलने वाला, कलहकारी, विकरालरूप, खेती और व्यापार करने वाला, कालज्ञ, धन का उपयोगी, प्रीत वाला, क्रय विक्रय का काम करने वाला।

(५३) सिद्धार्थी—उदार चित्त, दयावान, संग्राम में यश, सुन्दर केश, मन्त्री, पूजनीय, वेद शास्त्र ज्ञाता, सुकुमार, कोमल चित्त, कवि, विद्वान, सिद्धार्थी, गुरु तथा देव का भक्त।

(५४) रौद्र—भयंकर पशुओं का पालक, धूर्त, विवादी, अपयशी, रौद्र स्वरूप चोर, चपल, निर्दय कर्म करने वाला, दुराचारी, पर स्त्री गामी।

(५५) दुर्मति—खल, कामी, पापी, दुष्ट बुद्धि अभिमानी, अपने वाक्य का पालन करने वाला, प्रसन्नता हीन शोक से संतप्त।

(५६) दुंदुभि—राजा से गौरव प्राप्त, वाहन, सुवर्ण, भूमि, गीत वाद्य नृत्य में प्रेम मंत्र औषधि आदि जानने वाला, स्थूल शरीर भोगवान।

(५७) रुधिरोद्गारी—क्रोधी, वायु और रुधिर के रोग, कफ वात प्रकृति, झूठी गवाही देने वाला, सुखी, धनवान बुद्धिमान, लाल नेत्र।

(५८) रक्ताक्षि या रक्ताक्ष—आचार और धर्म में तत्पर, नेत्र रोगी, कामी, देश का त्याग करने वाला, सर्वत्र हानि युक्त, विना विवाह के स्त्री रखे, शीलवान बंधुजन का प्रिय, शांत।

(५९) क्रोधन—पर कार्य में विघ्न कर्ता, क्रोधी, भयंकर स्वरूप, पराक्रमी पर स्त्री गामी, बंधु से वैर, चोरी में विरत, दूसरों से जीविका करने वाला।

(६०) क्षय—कुटुम्ब में कलह, मद्यपान, वेश्या संग का प्रेमी, कठोर चित्त, मानी शत्रुहीन, निरोग, सेवा में तत्पर, शिष्टाचार वाला पर धर्म अधर्म के विचार से शून्य ।

अयन फल

मकरादि—उत्तरायण—शिशिर आदि ३ ऋतु=देव का दिन ।

कर्कादि—दक्षिणायन—शेष ३ ऋतु=देव की रात्र ।

१ उत्तरायण—रूपवान, गुणी, प्रतापी, सब शास्त्रों में प्रेम, धर्मार्थ काम विषय में कुशल, प्रसन्न चित्त, उदार, धैर्यवान् आचार में तत्पर, दीर्घायु, पुत्र स्त्री इनसे संतोष ।

२ दक्षिणायन—झूठ वक्ता, अधर्मी, रोगी, अभिमानी, खेती करने वाला, गौ भैंस आदि चतुष्पद युक्त, कठोर, शठ, किसी की बात न सहन करने वाला, बोलने में चतुर ।

गोल फल

मेषादि—उत्तर गोल, तुलादि—दक्षिण गोल ।

उत्तरगोल—धनवान, विद्वान, पुत्र-पौत्र युक्त, राजमान्य ।

दक्षिण गोल—सदा सुख से हीन, झूठ वक्ता, दुराचारी, अंगहीन, धन रहित ।

ऋतुफल

(१) शिशिर—मकर कुंभ के सूर्य में । (२) वसंत—मीन, मेष के सूर्य में ।

(३) ग्रीष्म—वृष, मिथुन के सूर्य में । (४) वर्षा—कर्क सिंह के सूर्य में ।

(५) शरद—कन्या तुला के सूर्य में । (६) हेमन्त—वृश्चिक धन के सूर्य में ।

(१) शिशिर—अभिमानी, उद्दंड, कामी, मिष्टान्न प्रेमी, बलवान, क्षुधायुक्त, पुत्र, स्त्री सहित, रूप यौवन सम्पन्न, यशस्वी, दानी, मानी श्रेष्ठ कर्म करने वाला, सुखी ।

(२) वसंत—परिश्रमी, धैर्यवान, तेजस्वी, बुद्धिमान, प्रतापी, गाने-बजाने में चतुर, शास्त्रविद, प्रसन्न चित्त, उद्यमी, अनेक देशों में रत, बहुत कार्य करने वाला सुगन्ध प्रिय, धनिक दीर्घायु ।

(३) ग्रीष्म—ऐश्वर्यवान, विद्या धन, अन्न युत, भोगी, वाचाल, क्रोधजित, दानी, बुद्धिमान, शूरवीर, जलविहार, प्रिय, लम्बा शरीर, कृश तनु ।

(४) वर्षा—बुद्धिमान, प्रतापी, घोड़े से प्रीत, भोगी, गुणी, राजमान्य, जितेन्द्रिय, चतुर, कफ और वात युक्त, धातु वादी, सुवचन, स्वच्छ बुद्धि, क्षीर दूध, कटु पदार्थ का प्रेमी ।

(५) शरद—वाणिज्य तथा खेती द्वारा जीविका, प्रतापी, प्रतिष्ठित, धनधान्य युक्त, क्रोध हीन, वात प्रकृति, अभिमानी वाहन युक्त, संग्राम प्रिय, पुण्यात्मा, कामी ।

(६) हेमंत—व्याधि युक्त, तेजहीन, नम्र, पराक्रमी, श्रेष्ठ कर्म और धर्म युक्त चतुर, उदार, कृषक, भोगी, कृश, शरीर।।

मास फल

१. चैत्र—लालनेत्र, अहंकारी, क्रोधी, भोगी, श्रेष्ठकर्म, विद्या विनययुक्त, मधुर अन्न भोजी । शास्त्रज्ञाता, सत्पुरुषों से मित्रता, कलाविद, विचित्र यंत्र ।

२. वैसाख—भोगी, धनी, प्रसन्नचित्त, विशालनेत्र, बलवान, गुणशीलवंत, देव ब्राह्मणभक्त, कामी, दोर्घायु, शास्त्रविद, क्रोधी, भ्रातृसौख्ययुक्त स्वतन्त्र रहे, श्रीमन्त होवे।

३. ज्येष्ठ—उदार, धनी, बुद्धिमान, दीर्घायु, परदेश में वास, तीव्र बुद्धि, पुत्रवान, मंत्र क्रिया का ज्ञाता, साहूकार।

४. आषाढ़—धर्मात्मा, पुत्र पौत्र युक्त, बहुत खर्च करने वाला, मिथ्यावादी, प्रलापी, गुरुभक्त, मंदाग्नि रोग, अभिमानी, अल्पसुख, कृपालु, भोगी, धनी।

५. श्रावण—पुत्र पौत्र स्त्री और मित्र से सुखी, पिता की आज्ञा का पालक, देव, ब्राह्मण का पूजक, स्थूलदेह, सुख दुःख हानि लाभ में समचित्त।

६. भाद्रपद—प्रसन्नचित्त बकवादी, कोमल वचन, सुशील, क्षीण शरीर, लक्ष्मीवान, दानी, नाना प्रकार के देश में लीन, स्त्री और पुत्र का सुख युक्त।

७. आश्विन—सुखी, काव्य कर्ता, पवित्र आचरण, गुणवान, कामी, विद्वान, धनवान, दानी, बहुत नौकर वाला, चंचल, अपने जनों का बैरी, श्रेष्ठकार्य।

८. कार्तिक—कामी, दुराचारी, धनी, व्यापारी, दुष्ट, पापी, बहुत वाणी बोलने वाला, पुष्टांग, कृषक।

९. मार्गशीर्ष—मृदुभाषी, धनी, पराक्रमी, परोपकारी, तीर्थ-यात्रा करने में तत्पर कलाविद, धर्मात्मा, देव गुरु पितरों का भक्त।

१०. पौष—शूरवीर, प्रतापी, ऐश्वर्यवान, उपकारी, कष्ट से धन प्राप्त, अल्प व्यय, दुर्बल, पिता के धन से रहित, गुप्त मंत्र वाला, गुणवान, बलवान।

११. माघ—विद्वान, धनी, शूरवीर, क्रूर वचन, कामी, धैर्यवान, शत्रु नाशक, खल बुद्धि, योगशास्त्र की विद्या में प्रेम, धर्म करने वाला।

१२. फाल्गुन—परोपकारी, धनी, विद्वान, विदेश भ्रमण, दयावान, विलासी, गान विद्या में चतुर।

१३. मलमास—(अधिक मास)—मनोहर चरित्र, तीर्थयात्रा करने वाला, निरोगी सबको प्रिय, अपने जनों का हित करने वाला, सांसारिक सुखों से अलग रहने वाला।

पक्ष फल

कृष्णपक्ष—क्रूर, स्त्री द्वषी, कलह प्रिय, कामी, माता क भक्त, परिवार का शत्रु, परकी सहायता चाहने वाला, चंचल, विवादी।

शुक्लपक्ष—धनी, उद्यमी, ज्ञानी, कार्य कुशल, शास्त्रविद, दीर्घायु, पुत्रवान, नम्र, चतुर, कृपालु, धर्म में लीन।

दिन-रात जन्मफल

दिन में—सतधर्मी, बहुत पुत्र, भोगी, बुद्धिमान, कामी, धनवान, पिता के तुल्य भाइयों से पूज्य, सुन्दर नेत्र।

रात में—तोतला, अतिकामी, क्षयरोगी, क्रूर आत्मा, चुंधे नेत्र, दुष्ट, पापी।

जन्म के समय का फल

प्रातः—धर्म में युक्त, सत्कर्म में जीवन सुखी।

मध्याह्न—गुणवान, राजा के तुल्य।

अपराह्न—धनी।

सायंकाल—सुगंध और स्त्री में प्रीत, खल, भ्रमणशील।

रात्रि में—सायंकाल सदृशफल।

सूर्योदय के समय—बहुत सौख्य वाला।

तिथि जन्म फल

१. प्रतिपदा—महा उद्योगी, धर्माचरण वाला, दुष्ट संग, कुल संताप कारक, व्यसनी, धनहीन, विद्यावान, परिवार युक्त, अन्यमत से बहुत धन।

२. द्वितीया—परस्त्रीगामी, चोर, स्नेह रहित, सत्य और पवित्रताहीन, दानी, दयावान, प्रसन्नचित्त।

३. तृतीया—विफल, चेतना रहित, द्रव्यहीन, परद्वेषी, परदेशवासी, अभिमानी, बुद्धि पूर्वक बोलने वाला, कामी।

४. चतुर्थी—भोगी, दानी, मित्र से स्नेह, धन संताप से युक्त, साहसी, विवादी चंचल, जुआड़ी, ऋणी।

५. पंचमी—व्यवहार कुशल, माता पिता का रक्षक, गुणग्राही, अल्प प्रीत, दयालु, दानी, भोगी, कामी, शास्त्र का ज्ञाता।

६. षष्ठी—भ्रमण शील, कलह कारक, क्रोधी, बुद्धिमान, पराक्रमी, पेट में दोष वाला, धन पुत्र युक्त, घाव युक्त देह।

७. सप्तमी—संतोषी, तेजस्वी, धनवान, पराया धन हरण करे, कन्या संतान, शत्रुनाशक, बलवान, प्रकृति देवपूजन में चित्त।

८. अष्टमी—धर्मात्मा, सत्यभाषी, दानी, भोगी, दयावान, गुणज्ञ, चंचल चित्त स्त्रियों का प्रेमी, कफ प्रकृति, कामी, पुत्र स्त्री में लीन।

९. नवमी—देवपूजक, पुत्रवान, शास्त्राभ्यासी, धन और स्त्री में आसक्त मन, कठोरवाणी, श्रेष्ठ बुद्धि, सदाचार और आदरहीन, दुष्ट स्त्री पुत्र वाला।

१०. दशमी—देव सेवक, यज्ञ कर्ता, तेजस्वी, सुखी, उदार चित्त, नम्र, लम्बा कंठ, बहुत शास्त्रों का ज्ञाता, कामी, धनवान, धर्मात्मा, चतुर।

११. एकादशी—संतोषी, बुद्धिमान, धन पुत्र युक्त, व्रत, दान में चित्त, देवब्राह्मण पूजक, प्रसन्न चित्त, राजा के घर जाने वाला, उत्तमकर्म।

१२. द्वादशी—चंचल चपल, क्षीण अंग, भ्रमणशील, जल से प्रीत, पुत्रवान, राजा से धन प्राप्त, धनी, पंडित, व्यवहारशील।

१३. त्रयोदशी—सिद्ध, बुद्धिमान, शास्त्र अभ्यासी, जितेन्द्रिय, परोपकारी, लम्बी गर्दन, शूरवीर, चतुर, कामी, लोभी, धनी।

१४. चतुर्दशी—धर्मी, धनी, शूर, राजमान्य, यशस्वी, हास्ययुक्त, क्रोधी, क्रूर स्वभाव, हीनबुद्धि, परधन ग्राही, परस्त्री ग्राही।

१५. पूर्णिमा—बुद्धिमान, उत्साही, परस्त्री प्रेमी, अनेक स्त्री, न्याय से धन पैदा करे, विलासी, दयावान, पुण्यवान, भोजन में अति लालसा, बुद्धिमान।

३०. अमावास्या—क्रोधी, आलसी, परद्वेषी, गूढ़ मंत्री, मूर्ख, पराक्रमी, माता-पिता का भक्त, पर से वैर, पितर देव पूजक, क्लेश प्राप्त, धनी।

अमावास्या जन्म—स्त्री पशु, हाथी, घोड़ा या महिषी के बच्चा हो, यदि इन्द्र के भी घर हो तो लक्ष्मी का नाश करता है।

नंदादि तिथि जन्मफल

१. नंदा (१–६–११) तिथि—दानी, पंडित, देशभक्त, ज्ञानी, अभिमानी, स्नेही, निपुण।

२. भद्रा (२–७–१२) तिथि—राजसेवक, धनवान, बंधुमान्य, परमार्थ में बुद्धि, संसार के भय से डरने वाला।

३. जया (३–८–१३) तिथि—राजपूज्य, पुत्र-पौत्र युक्त, दीर्घायु, मनोविज्ञानी, शान्तचित्त, वीर।

४. रिक्ता (४–९–१४) तिथि—प्रभावी, गुरु निंदक, शास्त्र का ज्ञाता, कामी, द्रव्यहीन, बुद्धि का नाशने वाला।

५. पूर्णा (५–१०–१५) तिथि—धनी, शास्त्र ज्ञाता, सत्यवादी, शुद्ध चित्त, पंडित।

वार जन्मफल

१. रविवार—पित्त प्रकृति, चतुर, तेजस्वी, युद्धप्रिय, दाता, शूरवीर, पित्त का कोप, मिष्ठान्न भोजी, अभिमानी, क्रोधी, पिंगल बाल और नेत्र, पराक्रमी।

२. सोमवार—बुद्धिमान, धनी, शांत प्रकृति, राज्य आश्रय से जीविका, दुःख सुख सम, मीठी बोली, कामी, दयालु अभिमानी, शास्त्र ज्ञाता।

३. मंगलवार—वक्रबुद्धि, रण उत्साही, स्वकुटुम्ब पालक, धनी, नास्तिक, वेद स्मृति निंदक क्रूर-कार्य परायण, साहसी टेढ़ी वाणी, दीर्घायु, तीव्र स्वभाव।

४. बुधवार—लिपि लेखन जीवी, प्रिय भाषी, पंडित, रूप सम्पत्ति युक्त, व्यवहार कुशल, चतुर, दयावान, देव ब्राह्मण पूजक, पुराणादि सुनने वाला, कलाविद।

५. गुरुवार—गुणी, विवेकी, विद्वान, धनवान, राजा से कामना को प्राप्त, श्रेष्ठ आचार, जनप्रिय, आचार्य या मंत्री की जीविका करने वाला विख्यात, यज्ञ कर्ता, वेद आदि का ज्ञाता।

६. शुक्रवार—चंचल चित्त, देव द्वेषी, विद्वान, प्रिय भाषी, प्रसन्नचित्त, धनी, वीर, दयालु, ज्योतिषी, बहुत नौकर वाला, सर्वप्रिय, श्वेत वस्त्रों को धारण करने वाला।

७. शनिवार—पराक्रमी, दुःख युक्त चित्त, नीच दृष्टि, दृढ़ प्रतिज्ञ, क्रूर, बलहीन, दुर्बल, तमोगुणी, कुटिल, कृतघ्न, भाइयों को पीड़ा देने वाला, क्रोधी, किये कार्य का नाश करने वाला, अधिक केश, बिना समय ही बुढ़ापा प्राप्त।

वार होरा के जन्म का फल

१. सूर्य की होरा में जन्म—क्लेश से समय व्यतीत हो।

२. चंद्र " "—धनवान।

३. मंगल " "—शोक और रोग।

४. बुध " "—विद्या और धन।

५. गुरु " "—सर्व सम्पत्ति और प्रभुता।

६. शुक्र " "—स्त्री का सुख।

७. शनि " "—धन का नाश।

वार होरा ज्ञान

रविवार को प्रथम २॥ घड़ी = १ घंटा रवि का होरा रहेगा पश्चात् शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल इस क्रम से वार का होरा रहेगा ७ होरा हो जाने पर ही क्रम से आगे भी होरा रहेगा। जो वार होगा उस का होरा प्रथम रहेगा।

पश्चात् उपरोक्त क्रम से उस वार के आगे जो आवे उसी के क्रम से आगे होरा रहेगा। जैसे शनिवार को प्रथम १ घंटा शनि का होरा रहेगा पश्चात् गुरु, मंगल, रवि शुक्र, बुध, चन्द्र का क्रमानुसार १-१ घण्टे का हो होगा।

किसी दिन वार का होरा जानना

$\frac{\text{इष्ट} \times २}{५} \div ७$ शेष—जो वार हो शेष संख्या तक निम्न क्रम से जो आवे वही होरा होगा। क्रम शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र।

उदाहरण

(१) शनिवार को इष्ट ३० घड़ी पर कौन होरा है जानना है।

$\frac{\text{३० घड़ी इष्ट} \times २}{५} \div ७ = \frac{६०}{५} \div ७ = १२ \div ७ =$ शेष ५। शनिवार दिन है इससे शनि (१) आगे गुरु (२) मंगल (३), सूर्य (४), शुक्र (५) आया। शुक्र का होरा हुआ।

(२) शुक्रवार को इष्ट ४५ घड़ी पर क्या होरा है।

$\frac{४५ \times २}{५} \div ७ = \frac{९०}{५} \div ७ = १८ \div ७ =$ शेष ४। शुक्रवार का दिन है। शुक्रवार को १ गिना, दूसरा बुध, तीसरा चंद्र, चौथा शनि आया = शनि का होरा हुआ।

जन्मवार अनुसार आयु और कष्ट

१ रविवार—प्रथम मास छठे मास, १३ वें और ३२ वें मास में कष्ट हो। ६० वर्ष जीता है।

२ सोमवार—८, ११, १६वें मास में १७वें वर्ष में पीड़ा हो। ८४ वर्ष जीता है।

३ मंगलवार—२ रे वर्ष, ३२वें वर्ष पीड़ा होती है, ७४ वर्ष जीता है।

४ बुधवार—८वें मास, ८वें वर्ष पीड़ा होती है, आयु ६४ वर्ष।

५ गुरुवार—७वें, ८वें, १३वें, १६वें मास में पीड़ा होती है, आयु ८४ वर्ष।

६ शुक्रवार—शरीर निरोग रहे—आयु ६० वर्ष।

७ शनिवार—प्रथम मास, १३ वें और १८ वें वर्ष में पीड़ा होती है, आयु १०० वर्ष।

यहाँ केवल वार जन्म के अनुसार आयु बताई गई है; परन्तु कुंडली में ग्रह स्थिति के अनुसार अनेक योग बनने से अल्पायु दीर्घायु आदि योगों के कारण उपरोक्त आयु में बहुत अन्तर पड़ जाता है।

नक्षत्र जन्मफल

१. अश्विनी—सुन्दर रूप, भूषण श्रृंगार में रुचि, बुद्धिमान, सुखी, चतुर, निपुण, शरीर पुष्ट, धनवान, लोकप्रिय, भाग्यवान, स्त्री पुत्र भूषण आदि से सन्तुष्ट, नम्र, सदा सेवा करने वाला, विनय और ज्ञानयुक्त।

२. भरणी—निरोग, सत्यवक्ता, दृढ़व्रती, सुखी, धनवान, चतुर, विनोदी, जल से भयमान, चपल, खल स्वभाव, क्रूर, कृतघ्न, किसी काम को आरम्भ कर पूरा करने वाला, कभी यश, कभी निन्दा प्राप्त।

३. कृत्तिका—बहुत भोजन करे, कृपण, पापी, पर स्त्री में प्रेम, तेजस्वी (किसी की बात न सहे), दुष्टकर्मी, व्यर्थ भ्रमण, सत और धन रहित, कठोर वचन।

४. रोहिणी—सत्य भाषी, मीठी बोली, रूपवान, धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राज्य मान्य, कृषि कर्म प्रिय, ज्ञानी, परछिद्रान्वेषी, अर्थ कर्म में कुशल।

५. मृगशिर—चंचल, चतुर, उद्यमी, योगवान, धनवान, चतुरवाणी, अहंकारी, स्वार्थी, द्वेषी, कपटी, धीर रोगी, यात्रा प्रिय, कुटिल दृष्टि, कुकर्मी, धनुर्विद्या के अभ्यास में तत्पर, राजा से स्नेह प्राप्त।

६. आर्द्रा—गर्व युक्त, शठ, पापरत, कृतघ्नी, पर कार्य बिगाड़ने वाला, भूखा, क्रोधी, अभिमानी, धन धान्य से हीन, जीवघाती, भाइयों का प्यारा, दरिद्र, भ्रमणशील।

७. पुनर्वसु—सुखी, अच्छा स्वभाव, रोगी, तृष्णायुक्त, थोड़े लाभ में सन्तुष्ट, लोकप्रिय, पुत्र मित्रादि युक्त, बहुत मित्र, स्वर्ण आभूषण युक्त, दानी, धनवान, शास्त्र-अभ्यासी, कवि।

८. पुष्य—शान्त इन्द्रिय वाला, सर्व प्रिय, धनवान, धर्म में तत्पर, देव ब्राह्मण प्रिय, कुटुम्ब युक्त, चतुर, शान्त प्रकृति, प्रसन्नदेह, विनय युक्त, माता-पिता का भक्त, शास्त्रार्थ जानने वाला, धन वाहन युक्त।

९. आश्लेषा—सर्व भक्षी, क्रोधी, कृतघ्न, ठग, खल, व्यर्थ भ्रमण, व्यर्थ कष्ट देने वाला, धन को व्यर्थ खर्च करे, काम कला से दुःखित चित्त, मोटी बुद्धि।

१ चरण में जन्म—कल्याण करनेवाला, २ चरण में जन्म—धन का नाशक, ३ चरण में जन्म-माता को पीड़ा देने वाला, ४ चरण में जन्म-पिता को पीड़ा देने वाला।

१०. मघा—अनेक नौकर, बड़ा कुटुम्ब, धनवान, भोगी, देव पितरों का भक्त, उद्यमी, अहंकारी, स्त्री के वश, राज सेवक, पिता भक्त, कठोर चित्त, श्रेष्ठ बुद्धि, शत्रु नाशक।

११. पूर्वाफाल्गुनी— प्रिय वाणी, उदार, भ्रमणशील, राजसेवा में तत्पर, सुखी, स्त्री को प्रिय, विद्या, गौ, धन युक्त, गम्भीर स्वभाव, सुखी, शूरवीर साहसी, बहुत नौकरों वाला, चतुर, धूर्त, उग्र, अभिमानी, काम से दुःखी, पंडितों से पूज्य।

१२. उत्तरा फाल्गुनी—सर्व प्रिय, विद्या द्वारा धनवान, भोगी, सुखी, दानी, वीर, इन्द्रिय जित, मृदु वाणी, सुशील, कीर्तिवान, धैर्य वान, धनुर्वेद आदि का ज्ञाता, कृतज्ञ, पण्डित।

१३. हस्त—निर्लज्ज, उद्यमी, मद्य पीने वाला, चोर, पर स्त्री गामी, देव ब्राह्मण पूजक, बन्धु रहित, दानी, सम्पत्तिवान, धृष्ट, झूठा, उपकारी।

१४. चित्रा—स्त्री पत्नी युक्त, धनधान्य युक्त, सदा प्रसन्न, देव ब्राह्मण भक्त, नीति में चतुर, विचित्र वस्त्र पहिनने वाला, पुष्पमाला धारण करनेवाला, शत्रु पीड़क।

१५. स्वाती—दयावान, उदार, व्यापारी, प्यारी वाणी, धनी, देव ब्राह्मण प्रिय, धार्मिक, कृपण, राजा से वैभव प्राप्त, थोड़ा धन, स्त्रियों से अधिक प्रीत, सुशील, मन्द बुद्धि।

१६. विशाखा—ईर्ष्यालु, लोभी, कलह प्रिय, अहंकारी, क्रोधी, स्त्री के वश, अभिमानी, निष्ठुर, वेश्या प्रेमी, बोलने में चतुर, किसी का मित्र नहीं, उग्र और सौम्य स्वभाव।

१७. अनुराधा—धनवान, परदेश वासी, भ्रमण शील, अति क्षुधातुर, प्रिय वचन, यशस्वी, पुरुषार्थी, ढीठ, बंधु कार्य में सदा उद्यत, शत्रुजित, कला में प्रवीण, उद्यमी, प्रसन्न चित्त।

१८. ज्येष्ठा—संतोषी, धर्मज्ञ, क्रोधी, धर्म रत, दानी, निपुण, धनवान, प्रतापी, बोलने में चतुर, श्रेष्ठ प्रतिज्ञा, शूद्रों से पूजित, पर स्त्री प्रेमी।

१९. मूल—दानी, धनवान; शत्रु हंता, उपकारी, भोगी, विचारवान, हिंसक, बली, चतुर वचन, धूर्त, कृतघ्न, वाहन युक्त, अभिमानी।

अभुक्त मूल में—जड़ से कुल का नाश करता है। अभुक्त मूल न हो तो सौभाग्य और आयु वर्द्धक होता है।

मूल के पहिले चरण में—पिता को पीड़ा। दूसरे चरण में—माता को पीड़ा। तीसरे चरण में—धन हीन। चौथे चरण में—सुख सम्पदा प्रद।

२०. पूर्वाषाढ़ा—सुखी, शांत बुद्धि, भाग्यवान, जन प्रिय, कार्य निपुण, धनवान, बार-बार जल पिये, भोगी, शीलवंत, उपकारी, सुखी, श्रेष्ठ वाणी, अच्छे मित्र।

२१. उत्तराषाढ़ा—नम्र, धर्मात्मा, बहुत मित्र, गुणज्ञ, सुखी, धनवान, कृतज्ञ, विजयी, शूर वीर, विनयी, दानी, दयावान, अभिमानी, स्त्री पुत्र युक्त, पंडित, मान्य, शांत।

२२. अभिजित—विनीत, यशस्वी, गुणी, स्पष्टवक्ता, देव ब्राह्मण भक्त, कुटुम्ब में श्रेष्ठ, मनोहर कांति, सज्जनों द्वारा मान्य।

२३. श्रवण—धनवान, विख्यात, कृतज्ञ, गुणी, बहुत संतान, बहुत मित्र, आरोग्य, बलवान, शत्रु को जीतने वाला, दानी, सत्पुरुषों का संग, शास्त्र प्रेमी, धर्मवान, देव ब्राह्मण भक्त।

२४. धनिष्ठा—शूरवीर, धनी, गानप्रिय, धन का लोभी, बंधु मान्य, भूषण युक्त; सैकड़ों का स्वामी, शीलवान, आचार युक्त, दयालु, सुखी, आशावान।

२५. शतभिषा—स्पष्ट वाणी, अनेक व्यसन, शत्रुहंता, साहसी, कृपण, धनवान, पर स्त्री प्रेमी, शीत से भय, कठोर चित्त, चतुर, विदेश में अधिक, काम चेष्टा, अल्प भोगी, शांत।

२६. पूर्वाभाद्रपद—उद्विग्न मन, स्त्री के वश, कृपण, धन कमाने में चतुर, सुखी, वक्ता, संतति युक्त, बहुत सोने वाला, सब कलाओं में चतुर, निरर्थक दुःख भी प्राप्त हो, शत्रु जित, धूर्त, भयवान, तेज वचन।

२७. उत्तरा भाद्रपद—सुखी, संततिवान, धर्मात्मा, शत्रुजित, धैर्यवान, साहस गुणी, पूज्य, स्वकुल में भूषण, धनवान, शुभ कर्म कर्त्ता, पंडित।

२८. रेवती—सर्व अंग परिपूर्ण, शूरवीर, धनवान, पथिक, पुत्र स्त्री मित्र युक्त, चतुर, साधु, बुद्धिमान, विचार करने वाला, शीलवान।

२७ योगफल

१. विष्कुंभ—रूपवान, भाग्यवान, अलंकार युक्त, बुद्धिमान, चतुर, धनवान, पशु युक्त, शत्रुजित, स्त्री पुत्र मित्र का सुख प्राप्त, स्वाधीनता प्रेमी।

२. प्रीति—स्त्रियों का प्यारा, तत्वज्ञानी, उत्साही, वाचाल, सम्पत्तिवान, प्रसन्न चित्त, दानी, विनोदी, स्त्री के वश, उद्यमी।

३. आयुष्मान—दीर्घायु, निरोग, धनी, साहसी, मानी अभिमानी, कवि, विजयी, अनेक स्थान एवं जंगल घूमने का इच्छुक।

४. सौभाग्य—ज्ञानवान, सुखी, धनवान, आचारवान, बलवान, सौभाग्य युक्त, अभिमानी, निपुण, स्त्रियों का प्यारा, राजा का मंत्री।

५. शोभन—भोगी, गौरव युक्त, श्रेष्ठ बुद्धि, पुत्र स्त्री युक्त, युद्ध में उत्सुक, सबी कार्यों में आतुर, शुभ कार्य में तत्पर, वध करने में रुचि।

६. अतिगंड—धनी, अभिमानी, क्रोधी, कलह प्रिय, धूर्त, पाखण्डी, मातृ हंता, गले में बीमारी, विशाल हाथ पैर, बड़ी ठोड़ी, अति गंड के अंत में जन्म—कुल का नाशक हो।

७. सुकर्म—अच्छे कर्म करने वाला, सुशील, सबसे प्रेम, गुणी, भोगी, प्रसन्न चित्त पराक्रमी, उपकारी, आचारवान।

८. धृतिमान (धृति)—धनवान, भाग्यवान सुखी, गुणवान, विद्यावान, शीलवंत, नीतिवान, सभा में चतुरता युक्त बोलने वाला, पर स्त्री के धन से धनी।

९. शूल—दरिद्र, रोगी, क्रोधी, कलहकारी, कभी-कभी शूल का रोग, शास्त्रज्ञ, विद्या और द्रव्य में कुशल।

१०. गंड—दुराचारी, गलगंड रोगी, क्लेश भोगी, योगी, शूर वीर, दृढ़ व्रती, कठोर स्वभाव, क्रोधी, बड़ा सिर, ह्रस्व देह, बहुत मोटा।

११. वृद्धि—क्रय-विक्रय के काम से धनवान, दीर्घायु, पुत्र मित्र युक्त, भोगी, बलवान्, पराक्रमी, सब चीजों के संग्रह में चतुर, पंडित के सदृश बोलने वाला, नियम से भाग्य की वृद्धि करने वाला।

१२. ध्रुव—दीर्घायु, विशेष धनी, कीर्तिमान, सर्व प्रिय, स्थिर बुद्धि, स्थिर कर्म करने वाला, मुख में सरस्वती का वास।

१३. व्याघात—क्रूर स्वभाव, घातक, दया हीन, असत्य में प्रीत, सब कामों में चतुर और लोक प्रसिद्ध, झूठा विवाद करने वाला।

१४. हर्षण—ज्ञानी, बड़े यश वाला, शास्त्र प्रेमी, शत्रु नाशक, प्रसन्न चित्त, धनवान, भाग्यशाली, ढीठ, सुन्दर आभूषण, लाल वस्त्र पहिरने वाला।

१५. वज्र—धनी, कामी, गुणवान, सुन्दर बुद्धि, पराक्रमी, रत्न परीक्षक, रत्न युक्त आभूषण और वस्त्र, बली, धन धान्य युक्त, अस्त्र विद्या में पारंगत, वज्रसम कड़ी मुट्ठी।

१६. सिद्धि—उदार चित्त, चतुर, शीलवंत, शास्त्र का ज्ञाता, बली, भाग्य की वृद्धि, सर्व सिद्धि युक्त, सुखी, दाता, रोगी, सर्व का आश्रित, दानी।

१७. व्यतीपात—मायावी, उदार, माता पिता की आज्ञा पालक, कठोर चित्त, रोगी, पराये कार्य को बिगाड़े।

इसमे उत्पन्न बड़े कष्ट से जीता है यदि जीता रहे तो उत्तम मनुष्य होता है।

१८. वरियान—भोगी, नम्र, थोड़ा धन, श्रेष्ठ कार्य में खर्च, काव्य कला गीत नृत्य का ज्ञाता, श्रेष्ठ कारीगर।

१९. परिघ—विद्वेषी, धनी, झूठ वक्ता, दयाहीन, चतुर, अल्प भोजन, निर्भय, शत्रुजित, दानी, भोगी, कवि, वाचाल, प्रियभाषी शास्त्रज्ञ, कुल की उन्नति करने वाला।

२०. शिव—शास्त्रज्ञ, धनी, राजा का प्रिय, मंत्र शास्त्रज्ञ, महाबुद्धि, कल्याण का भाजन, जितेन्द्रिय, संसार में पूज्य।

२१. सिद्धि—इन्द्रियजित, चतुर, गौरव युक्त, जो कार्य करे सब सिद्ध हो, मंत्र सिद्धि वाला, सम्पत्ति और दिव्य स्त्री युक्त, धर्मी, यज्ञ प्रेमी।

२२. साध्य—नम्र, हास्य युक्त, कार्य मे चतुर, शत्रुजित, मंत्र विद्या का ज्ञाता, मानसिक सिद्धि युक्त, सुखी, सबका मित्र, यशस्वी, आलसी, शुभाचरण, प्रसिद्ध।

२३. शुभ—श्रेष्ठ वाणी, शुभ कर्म कर्ता, धर्ता, धर्म, दानी, विज्ञानी, ज्ञानी, दाता ब्राह्मण पूजक, चंचल अंग, कामी, कफ प्रकृति।

२४. शुक्ल—सत्य भाषी, पराक्रमी, विजयी, सन्मान प्राप्त, कलाविद, सर्व प्रिय, धनी, कवि, प्रतापी, क्रोधी, चतुर वचन, धर्म में तत्पर, पंडित, इन्द्रियजित।

२५. ब्रह्म—विद्या अध्ययन में प्रेम, सत्याचार वाला, सुन्दर कर्म, आदरणीय, विद्वान, शास्त्रज्ञ, सब काम करने में कुशल, छिपा हुआ विशेष धन, श्रेष्ठ विवेकी।

२६. ऐन्द्र—चतुर बलवान्, धनवान, पराक्रमी, कफ प्रकृति, अपने वंश में श्रेष्ठ अल्पायु परन्तु सुखी, गुणवान, भोगी, बुद्धिमान, उपकारी।

२७. वैधृति—चंचल, चुगल, मायावी, परनिंदक, धनी, दुष्टों से मित्रता, शास्त्र भक्ति से रहित, उत्साह हीन, प्रीति करने पर भी मनुष्यों का अप्रिय।

करण जन्मफल

१. बव—कामी, दयालु बलवान, शीलवंत, चतुर, भाग्यवान, अनेक सम्पत्तिवान, अभिमानी, धर्म रत, प्रतापी, शुभ मंगल कार्य कर्ता, बालकवत् काम करने वाला।

२. बालव—शूरवीर, बलवान, विलासी, दानी, बुद्धिमान, कलाविद, काव्य प्रेमी, विद्या और द्रव्य युक्त, तीर्थ और देव सेवक, राजा से मान्य, चरित्रवान।

३. कौलव—बुद्धिमान कामी, जन प्रिय, बहुत मित्र, बलवान, कोमल वाणी, सुन्दर चरित्र, वाहन युक्त, स्वाधीनता को प्राप्त।

४. तैतिल—हास्य विलास में प्रीत, वाणी विलास में चतुर, शीलवंत, बुद्धिमान, चचल नेत्र, सबसे स्नेह, पुण्यात्मा, सौभाग्य और गुण युक्त, धनवान, विचित्र घर में रहने वाला।

५. गर—परोपकारी; विचारशील, शत्रुजित, शूरवीर, धैर्यवान्, उदार, कृषि-प्रेमी, कार्य में निपुण, उद्यम से अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो, प्रतापी, शत्रु रहित।

६. वणिज—कला में प्रवीण, हास्य युक्त, चतुर, सन्मानी, व्यापार से धन पैदा करे, देशान्तर गमन, वक्ता, विनयी, चंचल, इच्छित वस्तु प्राप्त।

७. विष्टि—दुष्ट बुद्धि, बहुत सोने वाला, शत्रु नाशक, अशुभ कार्य आरम्भ करने वाला, विष कर्म में रत, पर को मारने में रत, पर स्त्री गामी, स्वतन्त्र, सबका विरोधी, पापकर्मी, अपवादी।

८. शकुनि—सुन्दर बुद्धि, मंत्र विद्या का ज्ञाता, शकुन जानने वाला, औषधि आदि कर्म में निपुण, वैद्य, कालज्ञ, सुखी, मित्र युक्त, गुणी, सावधान।

९. चतुष्पद—क्षीण शरीर, चौपायों के बल वाला, गायों का रक्षक, चौपायों की औषधि करने वाला, देव ब्राह्मण प्रेमी, अच्छी बुद्धि, यश, धनयुक्त।

१०. नाग—खोटा स्वभाव, बलवान्, दुष्टात्मा, क्रोध से नष्ट बुद्धि, कलहकारी, कुल का शत्रु, वैर से कुल का नाशक, संग्राम में धीर, दारुण कर्म, चंचल नेत्र, तेजवान, स्थावर से प्रीत।

११. किंस्तुघ्न—हास्यप्रिय, पर कार्य करने वाला, चंचल बुद्धि, काम क्रीड़ा में निर्बल, धर्म-अधर्म में बराबर, मित्रता शत्रुता सदा अस्थिर, शुभ कर्म में रत, तुष्टि, मांगल्य और सिद्धि को प्राप्त।

गण जन्म फल

१. देवगण—अल्प भोजी, विद्वान्, गुणी, बुद्धिमान्, दानी, धनवान्, श्रेष्ठ बोली, अल्पभोगी।

२. मनुष्यगण—देव ब्राह्मण का पूजक, अभिमानी, दयालु, बलवान्, धनवान्, कलाविद, सुखदायक, निशान बेधने वाला धनुर्धारी, सुन्दर नेत्र।

३. राक्षसगण—बहुत बोलने वाला, उन्मादी, कठोर चित्त, साहसी, क्रोधी, कलहकारी, भयानक स्वरूप, विरोधी, दुर्वचन भाषी, प्रमेह रोगी।

योनिफल

(१) अश्व—स्वेच्छाचारी, उत्तम गुण, शूरवीर, स्वामि भक्त, घर-घर स्वर वाला।

(२) गज—राजमान्य, बलवान्, भोगी, उत्साही, राज का आभूषण।

(३) पशु—स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साही, अल्पायु, बहु वाक्य विशारद।

(४) सर्प—क्रोधी, सदा क्रूर, कृतघ्न, चपल, जीभ लोलुप (सब वस्तु पर मन चले)।

(५) श्वान-उद्यमी, उत्साही, शूरवीर, माता-पिता का भक्त, स्वजाति से विगाड़।

(६) मार्जार—स्वकार्य में शूरवीर, चतुर, मिष्ठान्नभोजी, निर्दय, दुष्टों से प्रेम।

(७) मेष—पराक्रमी, सर्वकार्य में समर्थ, विभवशाली, परोपकारी।

(८) मूषक—बुद्धिमान्, धन सम्पन्न, स्वकाय में सदा उद्यत, सदा सावधान, सबका विश्वास करने वाला, युद्ध करने वाला।

(९) सिंह—अपने धर्म में सच्चा, आचारवान्, उत्तमक्रिया, उत्तम गुण, कुटुम्ब उद्धारक।

(१०) महिष—संग्राम विजयी, योद्धा, कामी, अनेक सन्तान, वात प्रकृति. मंदा बुद्धि।

(११) व्याघ्र—स्वेच्छाचारी, धन के उद्यम में विरत, उपदेशों का ग्रहणकर्ता, दीक्षायुक्त, सदा समर्थ, आत्म स्तुति करने में तत्पर।

(१२) मृग—स्वतन्त्रता पूर्वक रहना, शांत प्रकृति, उत्तम बर्ताव, सत्यवक्ता, स्वजन प्रेमी, धर्माचरण करने वाला, युद्ध में शूरवीर।

(१३) वानर—चपल, मिष्ठ पदार्थ भोजी, धन का लोभी, कलहप्रिय, शूरवीर, कामी, अच्छी सन्तान।

(१३) नकुल—परोपकार करने में प्रवीण धनियों में प्रधान, बड़ा चतुर, मातृ-पितृ प्रेमी।

जन्म लग्न फल

१. मेष—तेज मिजाज, अभिमानी, धनवान्, शुभाचरण, पराक्रमी, क्रोधी, सर्वभक्षी, गोल आँख, अशक्त घुटने, जल से डरे, सदा अपने पैर पर खड़ा, अल्पाहारी, मिथ्यावादी, अंग में चोट, मित्रों से विरोध, अन्य से प्रेम, अल्पबुद्धि, शत्रुगणों से जीता हुआ, पित्त प्रकृति, विलक्षण बुद्धि, बंधुओं का द्वेषी, भ्रमणशील, अस्थिर धन, विवाद प्रिय, अगम्या गमन की ओर झुकाव।

बनचर है, ह्रस्व, लाल वर्ण, लाल नेत्र, भोजन में उष्ण पदार्थ प्रिय, शीघ्र प्रसन्न हो, स्त्री प्रिय, दूसरे की नौकरी करे, बुरे नख, मस्तक पर बहुत फोड़े, हाथ में चिह्न, अति चंचल।

यह पृष्ठोदय है रात्रि में बलवान्, दिन को निर्बल, क्रूर, पुरुष, चर, तेजस्वी, इसकी पूर्व दिशा है, स्वामी मंगल, दक्षिण दिशा तर्फ दुःख, यह लग्न दशम भाव में हो तो केवल पूर्वार्द्ध में बहुत बलवान् होता है।

२. वृष लग्न—लोक तथा गुरुजन का भक्त, प्रिय, वक्ता, गुणवान्, पण्डित, धनी, लोभी, शूरवीर, सर्व प्रिय, कृषि कार्य में दत्त, युवतियों का प्रेमी, बालपने में दुःखी, आयु के मध्य एवं अन्त भाग में सुखी, क्लेश सहन करने वाला, क्षमावन्त, गौ युक्त, क्रोधी, कृतघ्न, मन्द बुद्धि, दूसरों से पराजय प्राप्त, शांत रूप, आहार बहुत, लोकप्रिय, बहुत मित्र, संग्राम प्रिय, शान्त बुद्धि, दयालु, स्त्री का चाकर, अच्छा स्वभाव, देव पूजक, धर्म कर्म करने वाला, भ्रमणशील, श्वेत शरीर, कफाधिक्य, चौड़ी जाँघ, बड़ा चेहरा, पीठ, मुख या पार्श्व में चिह्न या तिल। धन कुटुम्ब आदि इसका नहीं रहे।

वनचर, मंगल में रहे, वर्ण शुभ्र, स्वभाव सौम्य, वृषभ लग्न पृष्ठोदय, रात्रि बली है। दक्षिण दिशा में बलिष्ठ ये आग्नेय दिशा में है, स्थिर स्त्री संज्ञक है।

३. मिथुन लग्न—अभिमानी, बन्धुजनों को प्रिय, त्यागी, भोगी, कामी, धनवान, आलसी, शत्रुनाशक, स्त्रियों से क्रीड़ा का प्रेमी, नृत्य वाद्य प्रेमी, सदा घर में रहने वाला, बहुत पुत्र मित्र वाला, श्रेष्ठशील, राजा के समीप वास, धीरे काम करने वाला, स्त्री का अनुरागी, प्रसन्न चित्त, राजा से कष्ट पानेवाला, नम्र, प्रिय वचन भाषी, दयावन्त, गुणी, तत्वज्ञ, योगात्मा, शास्त्र जाननेवाला, नौकरी करे, बुद्धिमान, जुआड़ी, नपुंसक की संगति, भोगी।

काली आँखें, घुंघराले बाल, उठी, नाक, यह गौर वर्ण राशि गाँव में रहनेवाली, ह्रस्व, रात्रि बली, शीर्षोदय, पुरुष, क्रूर द्विस्वभाव, पश्चिम दिशा में बलवान, मुंह उत्तर को है, लाल नेत्र।

४. कर्क लग्न—भोगी, धर्मात्मा, लोक प्रिय, मिष्टान्न पान, भाग्यशाली, स्त्री के अधिकार में, मित्रों से घिरा, बहुत घरवाला, धनवान, बुद्धिमान, अल्प संतान, नम्र, जल-विहार, उदार, साधु संग, उल्टी बुद्धि, भाइयों का प्यारा, बोलने में प्रगल्भ, क्षमाशील कपट बुद्धि, पापी, पराया धन हरने वाला, उठे कूल्हे, ठिंगनाकद, वक्र दृष्टि, चलने में तेज, गौर वर्ण, मित्राधिक्य, वह लग्न पृष्टोदय रात्रि बली, चर, स्त्री, सौम्य, उत्तर दिशा में बलवान, वायव्य दिशा में मुँह है।

५. सिंह—योगी, शत्रु हंता, छोटा पेट, अल्प संतान, उत्साही, रण में पराक्रमी, अभिमानी, शीघ्र क्रोध होने वाला, दृढ़ मन, माता-पिता का आज्ञाकारी, अल्प भोजी, मांस भक्षण में प्रीति, जंगल पहाड़ में जाना पसंद, बोलने में प्रगल्भ, निश्चेष्ट, संतुष्ट, हिंसक, शत्रुओं को जीतने वाला, कामी, परदेश में जाने वाला, राजा को वश में करने वाला, देवकार्य में विघ्न करने वाला, दयालु, नौकर पर क्रोध, इच्छानुसार बेसमय खाने-पीने लगे, लाल नेत्र, बड़े गाल, चौड़ा, चेहरा, पीत मिला श्वेत वर्ण, वात कफ से पीड़ित, तीक्ष्ण प्रकृति। यह लग्न शीर्षोदय, दिन बली, स्थिर, पुरुष, पूर्व में बली, मुख पूर्व को।

६-कन्या लग्न—अनेक शास्त्रविशारद, गुणी, परधन का भोगी, सत्यरत, प्रिय-भाषी, भोग का प्रेमी, अल्प सन्तान, शास्त्र ज्ञाता, कामी, चतुर, प्रसन्न चित्त, स्त्री के वश, बुद्धिमान्, सात्विक, बन्धु प्रिय, सुखी, स्त्री विलास का रसिक, मायावी, श्रीमंत,

लक्ष्मी को प्राप्त, बड़ी लज्जा वाला, बहुत कन्या संतति, थोड़े पुत्र, नृत्य वाद्य चित्र व कला में कुशल, लोगों से धन मिले, दूसरे गाँव फिरे, सत्य भाषी, सुन्दर, कफपित्त युक्त प्रकृति, गम्भीर, शीतल दृष्टि, दीर्घ, शीर्षोदय राशि, दिवाबली, द्विस्वभाव, स्त्री, मृदु, दक्षिण दिशा में बली, इसका मुँह उत्तर पड़े।

७–तुला लग्न—पंडित, सत्कर्मों से जीविका, विद्वान्, धनवान्, लोक पूजित, सब कला का ज्ञान, अल्प सन्तान, ब्राह्मण देव पूजक, भ्रमणशील, व्यापार में चतुर, शूर, निर्दय, अच्छे कर्म से जीविका, अच्छी बुद्धि, कुल में प्रकाशवान्, सत्य भाषी, राजा का प्रिय, शान्त बुद्धि, विषादी, चंचल, डरपोक, विचारवान्, स्त्री वश्य, सभ्य, रोगी, कुटुम्ब का उपकारी, भाइयों का निंदक, दो नाम हों, ऊँचा कद, कफ की अधिकता, विरल दांत, नाक ऊँची, दुबला, अंगहीन, यह राशि शीर्षोदय, दिवाबली, चर, पुरुष, पश्चिम दिशा में बलिष्ठ, आग्नेय दिशा में मुँह।

८–वृश्चिक—शूरवीर, धनवान, पंडित कुल पूज्य, पूज्य बुद्धिमान्, आरम्भिक जीवन में रोगी, माता पिता गुरु से वियोग, क्रूर कर्म कर्ता, राजा से मान प्राप्त, सदा क्लेश को प्राप्त, बुद्धि ज्ञान विज्ञान से युक्त, सुखी, क्रोधी, असत्य भाषी, शास्त्रकथा में निपुण, शत्रुजित्, पर धन हरे, पर स्त्री से प्रेम, दीर्घायु, सुजनों का वैरी, विवाद प्रिय, सन्तान से दुःखी, अपने कुल में मुख्य, गुप्त पापी, गोल कटि, घुटने चौड़े, विशाल नेत्र, चौड़ी छाती, हाथ पैर में पद्म रेखा, गोल जांघ, पिंगल वर्ण, मत्स्य, पक्षी या वज्र से शरीर में कहीं चिह्न हो। यदि शीर्षोदय राशि, दिवाबली, स्थिर, सौम्य, स्त्री, उत्तर दिशा में बली, दक्षिण दिशा की ओर मुँह।

९–धनलग्न—नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, कुल में प्रधान, विद्वान्, मनुष्यों का पोषक, राजा का कृपा पात्र, प्रगल्भ (बातूनी), त्यागी, शत्रु पीड़क, बली, चतुर, कलाओं का ज्ञाता, धनुर्वेद का ज्ञाता, द्विज देव भक्त, दयालु, तालाब आदि बनाने वाला, बुद्धिमान्, यशस्वी, वाहन युक्त, सत्यप्रतिज्ञ, गविष्ट, मधुर भाषी, बन्धुओं का द्वेषी, बाप का धन बहुत हो। लम्बा चेहरा, गर्दन, कान नाक दांत ओंठ मोटे, बुरे नख, बहुत मोटा, कई दिन में कुबड़ा हो, राशि पृष्ठोदय, रात्रि बली, द्विस्वभाव, पुरुष, क्रूर, चंद्र, पूर्व में बली, ईशान की ओर मुख।

१०–मकर लग्न—नीच कर्म, बहुत संतान, लोभी, आलसी, सर्वनाशी, उद्यमी भाग्यवान्, सदा अपने पैर पर खड़ा, सर्व धर्म के कार्य में प्रेम, कठोर, शठ, अपने का काम करने वाला, अच्छे आचरण, सन्तोषी, भयभीत दूसरों को ठगने वाला, पराया धन हरने वाला, परस्त्री से. प्रेम, दीन वचन, काव्य जाने, विद्वान्, निर्दय, निर्लज्ज, ठंड से डरे, कृश, निम्न अंग दुर्बल (कमर के दुर्बल), वात कफ पीड़ित, बड़ा शरीर, उत्तम नेत्र, यह पृष्टोदय राशि है, रात्रि बली; सौम्य, स्त्री, चर, दक्षिण में बली, पश्चिम में मुँह।

११–कुंभ—परस्त्रीगामी, धीरे काम करने वाला, अनन्त सुख चाहने वाला, गुप्त रूप से पाप कर्म करे, पर कार्य में बाधक, चलने में सहनशील, अल्पधन, लोभी, पर धन का स्वतंत्रता पूर्वक उपभोगी, हानि-लाभ युक्त, गंध और पुष्प का प्रेमी, चंचल,

मित्रों से प्रीति, क्रोधी, चलायमान चित्त, सुखी, जल सेवन में उत्साह, सुंदर हृदय, लोक प्रिय, कृतज्ञ, कृपण, धनी, भीतरी शठ, अटलचित्त, सुहृद् भाव पूर्ण, सुन्दर देह, वाताधिक्य, ऊँट सरीखी गर्दन, शरीर पर नसें, कड़े बाल, लम्बा शरीर, हाथ पैर मोटे, जंघा व पृष्ठ भाग लम्बा, मुँह बड़ा, कमर व बैठक बड़ी। यह शीर्षोदय, दिवावली, क्रूर, पुरुष, स्थिर, पश्चिम में बली, पश्चिम की ओर मुख।

१२–मीन लग्न—रत्न और सुवर्ण से परिपूर्ण, बहुत विचार कर काम करने वाला अधिक जल पिये, समुद्र या जल की उपज के व्यापार से धन प्राप्त, विद्वान् कृतज्ञ, शत्रु का दमन कर्ता, भाग्यवान्, अल्प भोजन, धूर्त, नम्र, धन धान्य युक्त, बली, यज्ञ करने वाला, तालाब आदि बनवाने वाला, बहुत आदमियों का स्वामी, विलासी, अल्प रीति, अपनी स्त्री का प्रेमी, चतुर, जल से उत्पन्न पदार्थ प्रिय, गड़ा द्रव्य प्राप्त हो, अच्छे नेत्र, बहुत दुर्बल, पित्ताधिक्य, सुन्दर ऊँची नाक, बड़ा सिर, कांतिवान्। यह उभयोदय दोनों ओर से मुख, रात्रि और दिन दोनों में बली, सौम्य, स्त्री, द्विस्वभाव, उत्तर दिशा में बली, ईशान की ओर मुँह।

चंद्र की राशि का फल

१–मेष राशि—चंचल, नेक, सदा रोगी, पुष्ट जंघा, कृतघ्नी, राजा से पूज्य, दाता, जल से भय, कामिनियों को आनन्द दायक, प्रचंड कर्म, धनवान्, उग्र, परोपकारी, शील वंत, गुणी, देव ब्राह्मण का पूजक, शूरवीर, कामी, सेवकों का प्यारा, दो स्त्रियों वाला, संग्राम में भय, चपल, परदेश जाने में तत्पर, जल्दी चलने वाला, गर्म भोजी, शाक भोजी, अल्पहारी, शीघ्र प्रसन्न, भ्रमण शील, भाइयों में श्रेष्ठ, वृद्धावस्था में शांत होता है।

तांबे के समान लाल नेत्र, दुर्बल जानु वाला, शिर में व्रण, कुनखी, हाथ में शक्ति का चिह्न हो।

२–वृष राशि—नम्र, अल्प तेज, सत्य वक्ता, धनवान्, कामी, स्त्रियों की आज्ञा में चलने वाला, दीर्घायु, परोपकारी, माता पिता गुरु का भक्त, राजा का प्रिय, सभा में चतुर, संतुष्ट, भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, धैर्यवान्, बलवान्, क्रीड़ा करने वाला, तेजस्वी, अच्छे मित्र, अभिमानी, सहनशील, उसकी आज्ञा लोग मानें, कन्या संतान, बहुभोजी, यशस्वी जवानी या बुढ़ापे में सुखी।

दृढ़ जाँघ तथा पैर, अल्प केश, देखने में कुरूप, सजीली चाल चलने वाला, कूल्हे और मुख मोटे, पीठ, मुख, या कुक्षि में चिह्न, गर्दन बड़ी, कफ प्रकृति।

३–मिथुन राशि—स्त्रियों में बड़ा चतुर, पक्की मित्रता, मिष्ठान्न भोजन, शीलवंत, कुटुम्ब का प्यारा, बालपने में सुखी, जवानी में मध्यम सुख, बुढ़ापे में दुखी, दो स्त्रियाँ, गुरु का प्यारा, अल्प संतान, कामी, गायन, वादन, नृत्य प्रिय, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञाता, मिष्टभाषी, कीर्तिमान्, गुणवान्, धनवान्, चतुर, वक्ता, दृढ़ संकल्प, सर्व काम में समर्थ, कामशास्त्र में निपुण, दूतकर्म, जुआड़ी, नपुंसक से प्रीत, हास्य प्रीत, दीर्घायु

बहुभोजी, चंचल, नेत्र, कंठ में रोग, गौर अंग, शरीर लम्बा, तामे के रंग के समान नेत्र, सुन्दर शरीर।

४–कर्क राशि––परोपकारी, पुत्रवान्, गुणवान्, साधु, माता पिता का भक्त, अल्पायु, धनहीन, युवावस्था में सुखी, वृद्धावस्था में धर्म में रुचि, तीर्थ यात्रा करे, सिर में रोग, बहुत बंधु, बहुत स्त्री, बहुत मित्र, प्यारी वाणी, शूरवीर, गुरु भक्त, धर्मात्मा, परदेशवासी, क्रोधांध, बलहीन, स्त्री के वश रहे, ज्योतिष शास्त्र में प्रेम, कभी धनवान्, कभी निर्धन, जलाशय बगीचे आदि में प्रेम, कामासक्त, भ्रमणशील, दुर्बल देह, कुटिल, शीघ्र चलने वाला, मोटी गर्दन।

५–सिंह राशि–धनधान्य युक्त, लक्ष्मीवान्, संग्राम प्रिय, विद्वान्, सब कला जाने, परदेश में भ्रमण का इच्छुक, क्रोधी, अल्प पुत्र, सब जगह, रहने वाला, शत्रुनाशक, सिर में रोग, कठोर, श्रेष्ठशील, कृपण, सत्यवादी, क्षमावान्, सदा मद्य मांस का प्रेमी, शीत से भय, सच्चे मित्र वाला, विनयी, शीघ्रक्रोधी, माता पिता का भक्त, विख्यात, व्यसनी, लज्जावान्, स्त्रियों के साथ द्वेषी, मानसी पीड़ा, दाता, पराक्रमी, धीर बुद्धि, अभिमानी, सुखी, सुन्दर मुख, गंभीर दृष्टि, मोटी दाढ़ी; बड़ा मुख, पीले नेत्र, दंत रोगी, क्षुधा तृषा से युक्त।

६–कन्या राशि––धनवान्, बहुत नौकर, परदेश जाने वाला, सदा आनन्द करने वाला, देव ब्राह्मण भक्त, बहुत पुत्र, अल्प कन्या संतान, विलासी, धर्मात्मा, दाता, चतुर, कवि, लोकप्रिय, नृत्य गान का व्यसनी, स्त्री निमित्त दुःखी, सज्जनों को आनन्द दायक, वेद मार्ग में परायण, आलसी, मधुरवाणी, सत्यवादी, पराये घर या धन से युक्त, विषयों में आतुर, अधिक विद्या, लिंग और कंठ में चिह्न।

७–तुलाराशि––माननीय, भोगी, धर्मी, बहुत नौकर, चतुर, कुँआ तालाब आदि बनवाने वाला, कलाओं का ज्ञाता, राजाओं का प्यारा, मीठे अन्न और रसों में प्रीति, पिता का भक्त, स्त्रीयुक्त, अल्प संतान, थोड़े भाई, कृषि कर्म में चतुर, क्रय-विक्रय से धन पैदा करे, देव ब्राह्मण पूजक, स्त्री के वचन में चलने वाला, असमय क्रोध, दयालु, पराक्रमी, व्यापार में कुशल, स्वजन प्रिय, बुद्धिमान्, अति क्रोधी, धनवान, अंगहीन योगी बंधु, एक जन्म का नाम पीछे दूसरा देव संज्ञक नाम विख्यात हो, कुटुम्ब का हितकारी, दुःखयुक्त, कोमल वचन, ऊंचा शरीर, नाक पतली, शिथिल गान।

८–वृश्चिक राशि––शत्रु से संतप्त, कलह प्रिय, शत्रुता करने वाला, विश्वासघाती, द्रोह करने में चतुर, संतोषहीन, पराये कार्य में बिघ्न करे, राज पूज्य, २ स्त्री, ४ भाई, बालपन से ही परदेश वासी, क्रूर हृदय, शूरवीर, पर स्त्री गामी, स्वजनों में निष्ठुरता युक्त, साहस से लक्ष्मी पावे, माता में दुष्ट बुद्धि रखे, चोर, धूर्त, माता-पिता व गुरु से रहित, बाल्यावस्था में रोगी, गुप्त पापी, पिंगल नेत्र, पर स्त्री रत, नेत्र, छाती बड़े, जांघ व जानु गोल पात शरीर, विषम स्वभाव, मछली वज्र या पक्षी का चिह्न हाथ पैर में। लोभी, रोगी, भ्रमणशील।

९-धन राशि—चतुर, धर्मवान्, राज्यमान्य, श्रेष्ठ पुत्र, देव ब्राह्मण भक्त, लोकप्रिय प्रगल्भ, सभा में बोलने वाला, भाग्यवान्, दृढ़ मित्र, साहसी, नम्र, सहनशील, शांत स्वभाव, सात्विक प्रकृति, शिल्प विद्या का ज्ञाता, धन सम्पन्न, पानी, दिव्य स्त्री, चरित्रवान्, तेजस्वी, कुलनाशक, पितृ धन युक्त, दानी, कविता करने वाला, बोलने में चतुर, बंधु बैरी, सुंदर नख, मोटे दाँत, ओंठ और गर्दन, पैर के तलुए कोमल, गर्दन छोटी, कुबड़ा, हाथ पैर मोटे। यह प्रीति से पक्ष होने वाला, श्रेष्ठ कुल, रुचिर दृष्टि।

१०-मकर राशि—धीर, चतुर, क्लेश युक्त, राजा का प्यारा, पुत्रवंत, दयावान्, सत्यवान्, भाग्यवान्, आलसी, स्त्रियों के वश रहे, कुल में सबसे हीन, बुराई करने वाला, गान विद्या का प्रेमी, माता का प्यारा, धन, दानी, दयावान्, अच्छे नौकर, बहुत भाई, दंभी, मिथ्या धर्म करने वाला, आलसी, शीत न सहन कर सके, विद्वान्, लोभी, निर्लज्ज, पर स्त्रीगामी, बड़ा मस्तक, अगम्या या वृद्धा से गमन करने वाला, कमर के नीचे पतला, सुहावने नेत्र।

११-कुम्भ राशि—दानी, मिष्ठान्न भोजी, प्रिय वचन, क्षीण शरीर, अल्प संतान, २ स्त्रियों वाला, कामी, धन हीन, आलसी, कृतज्ञ, सदा सुखी, धन भोगी, सामर्थ्यवान्, वाहन युक्त, विद्या में उद्यमी, पाप कर्म में तत्पर, पण्डितों का बैरी, अधिक विद्या, शीलवंत, धर्म कार्य को जल्दी करे, बाँये हाथ में चिह्न, मंडूक के समान कुख वाला, निर्भय, ऊँट के समान गर्दन, सर्वाङ्ग में प्रगट नसें, रूखे और बहुत रोम, ऊँचा शरीर, कुल्हे जाँघ पीठ घुटना मुख कमर पेट ये सब मोटे, पुष्प चन्दन और मित्रों के प्रिय, पर स्त्री, पर धन और पाप कर्म में तत्पर।

१२. मीन राशि—धनवान् मानी, नम्र, भोगी, प्रसन्न चित्त, माता-पिता देव पूजक, गुरुभक्त, उदार, रूपवान्, गंध और पुष्प माला का प्रेमी, शूरवीर, बोलने में चतुर, क्रोधी, कृपण, ज्ञानवान्, गुणवान् शीघ्रगामी, गान विद्या में कुशल, शुभाचरण, भाई बन्धु से स्नेह, जल रत्न मोती आदि के क्रय-विक्रय से उत्पन्न धन, पराये पाये धन का भोगी, शत्रुजित्, अकस्मात् गड़ा या भूमि गत द्रव्य भोगने वाला, विद्वान्, बहुत स्त्रियों का स्वामी, सब अवयवों से परिपूर्ण, सुन्दर शरीर, ऊँची नाक, बड़ा सिर, सुहावने नेत्र, कांतिमान्।

नवांश जन्म फल

(१) पहिले नवांश में जन्म—नम्र, धर्म शील, सत्यवक्ता, दृढ़ प्रतिज्ञ, विद्या का प्रेमी, (वृहज्जातक और जातका भरण)

अन्यमत—चुगुल, चंचल, दुष्ट, पापी, चोर, कुरूप, अन्य को दुःखदाई (मान-सा० और लग्नचन्द्रिका)

(२) द्वितीय नवांश—उत्पन्न वैभव का भोगी, युद्ध में हार, वेश्या में आसक्त या गाने वाले की स्त्री में आसक्त, युद्ध में अनिच्छा।

(३) तृतीय नवांश—स्त्रियों से जीता हुआ, पुत्रहीन, इन्द्रजाल करने वाला,

थोड़ा बल, शूरवीर, धर्मवान्, रोगी, सर्वज्ञ, देवों का भक्त, सब का अभिप्राय जानने वाला।

(४) चतुर्थ नवांश—बहुत स्त्रियाँ, श्रेष्ठ भाग्य, पूजनीय, धनवान्, राज्य सेवी या राजा का मन्त्री, दीक्षा के लिए गुरु की भक्ति करने वाला, समस्त वस्तुओं को प्राप्त करने वाला।

(५) पंचम नवांश—बहुत मित्र, राजा का नौकर, कुटुम्ब और मित्रों का सुख, बड़ी प्रतिष्ठा, बड़ी आयु, बहुत सन्तान, सब लक्षण सम्पन्न।

(६) षष्ठ नवांश—शूरवीर, शत्रुजित्, देश का स्वामी, पक्की मित्रता, प्रसंग में स्त्री से हारने वाला, अभिमानी, धन का नाशक, नपुंसक सदृश, वाचाल, शुभ हीन।

(७) सप्तम नवांश—निर्धन होकर विचरने वाला, सेना का स्वामी, पराक्रमी, बुद्धिमान्, युद्ध में जीतने वाला, उत्साही, संतोषी, राजाओं की कला युक्त।

(८) अष्टम नवांश—उदार बुद्धि, क्रोधी, छोटे आदमियों से संताप को प्राप्त, प्रसिद्ध, धन और अन्न को खर्च करने वाला, कृतघ्न, ईर्ष्यालु, क्रूर, क्लेश भोगी, बहु संतान, फल के समय त्याग करने वाला।

(९) नवम नवांश—दीर्घायु, प्रसन्न देह, विद्या पढ़ने वाला, जितेन्द्रिय, सुखी, ज्ञाता, धर्मज्ञ, धनवान्, माननीय, प्रतापी, क्रिया में निपुण, प्रवीण, नौकरों से युक्त।

चंद्र की राशि का नवांश फल

(१) मेष नवांश—सेनापति, धनवान्, पीले नेत्र, चोर।

(२) वृष नवांश— मोटे कंधे, मुख श्याम वर्ण।

(३) मिथुन नवांश—सुन्दर अंग, प्रभु का सेवक, लेखक, पंडित।

(४) कर्क नवांश—श्याम शरीर, पितृ पुत्र सुख से रहित।

(५) सिंह नवांश—स्थूल शरीर, ऊँची नासिका, धन बल में विख्यात।

(६) कन्या नवांश—कोमल वचन, दुर्बल शरीर, जुआ खेलने में निपुण।

(७) तुला नवांश—कामी, राजा का सेवक, सुन्दर नेत्र।

(८) वृश्चिक नवांश—विकल, दरिद्र, दुर्बल शरीर, त्यागी, तपस्वी, धनी।

(९) धनु नवांश—दुर्बल, बड़ी बाहु, त्यागी, तपस्वी, धनी।

(१०) मकर नवांश—लोभी, दुर्बल शरीर, स्त्री पुत्र से युक्त।

(११) कुम्भ नवांश—मिथ्यावादी, अपनी स्त्री के वशीभूत।

(१२) मीन नवांश—कोमल वचन, हीन वचन, कभी न बोलने वाला, तीर्थयात्री, पुत्रवान्।

चरण अनुसार राशि (चन्द्र राशि) का जन्मफल

१–मेष राशि

१ चरण—राजयुक्त; २ चरण—धनी, ३ चरण—विद्वान्, ४ चरण—देव गुरुभक्त, ५ चरण—चोर, ६ चरण—काल भाषाहीन, ७ चरण—योगीन्द्र, ८ चरण—निर्धन, ९ चरण—शुभ लक्षण युक्त।

२–वृष राशि

१ चरण—यशस्वी, २ चरण—पुत्रवान्, ३ चरण—शूरवीर, ४ चरण—शुभ लक्षण, ५ चरण—विद्यावान्, ६ चरण—सौभाग्यवान्, ७ चरण—कुल मंडन, ८ चरण—धन धान्य समर्थ, ९ चरण—परस्त्री चोर।

३–मिथुन राशि

१ चरण—भाग्यवान्, २ चरण—निर्धन, ३ चरण—कुत्सित भाषी, ४ चरण—धनेश्वर, ५ चरण—भाग्यवान्, ६ चरण—धन धान्य भोगी, ७ चरण—चोर, ८ चरण—महात्म सिद्धि, ९ चरण—देव गुरु का मांन करने वाला।

४–कर्क राशि

१ चरण—धनवान, २ चरण—महीपति, ३ चरण—पुत्रेश्वर, ४ चरण—विद्यावान्, ५ चरण—धर्मवान्, ६ चरण—चोर, ७ चरण—निर्धन, ८ चरण—देशपति, ९ चरण—कुल मंडन।

५–सिंह राशि

१ चरण—राज मान्य, २ चरण—धनेश्वर, ३ चरण—तीर्थयात्री, ४ चरण—पुत्रवान्, ५ चरण—स्वपक्ष हीन, ६ चरण—मातृ-पितृ तारक, ७ चरण—राजमान्य, ८ चरण—धनधान्य समर्थ, ९ चरण—निर्धन।

६–कन्या राशि

१ चरण—निर्धन, २ चरण—पुत्रहीन, ३ चरण—शत्रु मारक, ४ चरण—धनवान्, ५ चरण—भोगी, ६ चरण—पुत्रवान्, ७ चरण—राजमान्य, ८ चरण—सर्व समर्थ, ९ चरण—पराक्रमी मातृ-पितृ गुरु भक्त।

७–तुला राशि

१ चरण—धन भोगी, २ चरण—धनेश्वर, ३ चरण—निर्धन, ४ चरण—भाषा हीन (तेज रहित) ५ चरण—कर्मों को जानने वाला, ६ चरण—स्त्री चोर, ७ चरण—मातृ-पितृ उद्धारक, ८ चरण—राजमान्य, ९ चरण—भाग्यवान्।

८–वृश्चिक राशि

१ चरण—धनेश्वर, २ चरण—यशवान्, ३ चरण—आगम शास्त्र में प्रवीण, ४ चरण—तेज रहित, ५ चरण—कुल भ्रमण, ६ चरण—धनधान्य में समर्थ, ७ चरण—विद्यावान्, ८ चरण—राजमान्य, ९ चरण—यशवान।

९–धन राशि

१ चरण—ज्ञानवान्, २ चरण—निर्धन, ३ चरण—नीच कर्मकर्ता, ४ चरण—राजमान्य, ५ चरण—क्रोधी, ६ चरण—पुत्रवान्, ७ चरण—काम लम्पट, ८ चरण—धनेश्वर, ९ चरण—रुधिर विकारी।

१०–मकर राशि

१ चरण—अंगहीन, २ चरण—गुरुभक्त, ३ चरण—पर स्त्री रत, ४ चरण—शुभ

लक्षण, ५ चरण—देवांश, ६ चरण--पुत्रवान्, ७ चरण--उत्तम, ८ चरण—महीपति, ९ चरण—धनेश्वर, उभय पक्ष तारक ।

११–कुंभ राशि

१ चरण--मध्यम, २ चरण--श्रीमान्, ३ चरण—तेजहीन, कष्टयुक्त, ४ चरण—पुत्रवान्, ५ चरण--राजमान्य, ६ चरण—पाप कर्म करने में हीन, ७ चरण—योगीन्द्र, ८ चरण—अंगहीन, ९ चरण—शुभ लक्षण युक्त ।

१२–मीन राशि

१ चरण—धनवान्, २ चरण—कालहीन, ३ चरण—लम्पट, ४ चरण—धनवान्, ५ चरण—चोर, ६ चरण—कपटी, ७ चरण—निर्धन, ८ चरण—भाग्यवान्, ९ चरण—क्लेश युक्त ।

सम्वत्सर आदि के जन्म में फल का समय

(१) जन्म समय के सम्वत्सर का फल—सावन वर्षपति की दशा में होता है ।

(२) अयन और ऋतु का फल—सूर्य की दशा में होता है ।

(३) मास का फल— मासपति दशा में होता है ।

(४) गण्ड का फल—चन्द्रमा की दशा में होता है ।

(५) नक्षत्र का फल—चन्द्रमा की दशा में होता है ।

(६) पक्ष का फल—चन्द्रमा की दशा में होता है ।

(७) तिथि और करण का फल—चंद्र का अंतर और सूर्य की दशा में होता है ।

(८) वार का फल—वार के स्वामी की दशा में होता है ।

(९) योग का फल—सूर्य चंद्र में जो बली हो उसकी दशा में होता है ।

(१०) लग्न का फल—लग्न पति की दशा में होता है ।

(११) दृष्टि, भाव, राशि का फल—इनके स्वामियों की दशा में होता है ।

जन्म वेला का फल

यहाँ आधा-आधा पहर की सत रज तम की एक-एक वेला चक्र में बताई गई है । दिन में ८ पहर होते हैं । ८ × २ = १६ प्रहरार्द्ध हुए । यहाँ तम सत रज ये ३ गुण क्रमानुसार दिये हैं । जन्म के समय दिन के और प्रहरार्द्ध के विचार से जो गुण प्राप्त हो उसका फल नीचे दिया है ।

वेलानुसार उत्पन्न गुण फल

१. सत्व वेला में—वाग्मी, शिष्टाचार वाला, धर्मी, तपस्वी, नित्य उत्साह करने वाला, निर्मल, दानी, तेजस्वी, विद्वान्, पुण्यवान्, सत्य वक्ता, शत्रु रहित ।

२. रजो वेला में—धन सुख यश, रूपवान्, शत्रुओं को जीतने वाला, कामातुर बुद्धि, बिना दरबार मित्र वाला ।

३. तमो वेला में—पराया धन, पर स्त्री को ग्रहण करने वाला, सुख रहित, शठों का स्वामी, मित्र, द्विज, गुरु इनका विरोधी, चंचल बुद्धि वाला ।

वेला गुण चक्र

दिन	प्रहरार्द्ध १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
रविवार	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम
सोमवार	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत
मंगलवार	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज
बुधवार	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम
गुरुवार	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत
शुक्रवार	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रंज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज
शनिवार	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम	सत	रज	तम

राशि अनुसार आयु और कष्ट विचार

(१) मेष राशि—प्रथम मास में कष्ट तथा अल्पायु भय। फिर प्रथम वर्ष और १३ वर्ष में जल घात भय, १८ वर्ष में घात, ६४ वर्ष में अंग रोग। ५० वर्ष में लोहे से घात यदि उस राशि में शुभग्रह की दृष्टि हो तो ७५ वर्ष २ मास, १५ घड़ी १५ पल की आयु पाता है पश्चात् कार्तिक मास, ४ तिथि मंगलवार भरणी नक्षत्र में मृत्यु का योग है (मान सा०) पहिले सातवें व तेरवें वर्ष में ज्वर की पीड़ा, १६ वर्ष में विशूचिका रोग, तीसरे, बारहवें वर्ष में जल भय, २५ वर्ष में सन्तान हो, रतोंध रोग हो। ३२ वर्ष में अस्त्र से घात। चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ९० वर्ष आयु। कार्तिक मास कृष्ण पक्ष बुधवार नवमी तिथि रात्रि में शिर में रोग से मृत्यु हो। (जा० भ०)।

(२) वृष राशि—६ वर्ष में अग्नि भय, ८ वर्ष में लोह भय, ३३ वर्ष में सांड से भय, ४६ वर्ष में सर्प भय, ५२ वर्ष में देव कोप से कष्ट, ६३ वर्ष में घात इन सबसे बच जाय तो ८५ वर्ष ६ मास ७ दिन आयु पाकर माघ शुक्ल ९ शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र, अर्द्ध रात्रि के समय मृत्यु हो (मान सा०) पहिले वर्ष में पीड़ा. तीसरे वर्ष अग्नि भय, ७ वें वर्ष विशूचिका रोग, ९ वें वर्ष व्यथा, १० वर्ष में रुधिर विकार, १२ वर्ष में वृक्ष से गिर कर मृत्यु भय, १६ वर्ष में सर्प से भय, १९ वर्ष में पीड़ा, २५ वर्ष में जल से भय, ३० वर्ष और ३२ वर्ष में पीड़ा, चन्द्र लग्न को शुभग्रह देखता हो तो ९६ वर्ष की आयु हो माघ मास नवमी तिथि शुक्ल पक्ष शुक्रवार रोहणी नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा० भ०)

(३) मिथुन राशि—६ मास, ६ वर्ष में कष्ट, अंग रोग, १० में नेत्र पीड़ा; ११, १८ में घात, २४, ५३, ६३ में अल्प मृत्यु। उस राशि पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ८५ वर्ष की आयु हो पौष मास अष्टमी, बुधवार, आर्द्रा नक्षत्र, प्रथम प्रहर में मृत्यु हो (मान सा०) पांचवें में वृक्ष भय, १६ में शत्रु भय, १८ में मृत्यु तुल्य पीड़ा, ८० वर्ष की आयु हो। वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि बुधवार, के मध्याह्न समय हस्त नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा० भ०)

(४) कर्क राशि—११ दिन में कष्ट, ९ मास में कष्ट, १ वर्ष में रोग, ७ में जल घात, ९ में अंग रोग, १२ में जल घात, १६ में अंग रोग, २० वर्ष में लोह घात, २७ और ३५ में अल्प मृत्यु, ४५ में देव दोष, ५५ और ६१ में अल्प मृत्यु, राज कष्ट, असाध्य रोग, सर्प घात, जल घात, साँड़ से और व्याघ्र से भय इस राशि पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो ७० वर्ष ५ मास ६ दिन में फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष के चतुर्थ प्रहर में गोधूलि के समय मृत्यु हो (मान० सा०) पहिले में रोग हो, ३० में लिंग पीड़ा, ३१ में सर्प से भय, ३२ में बहुत पीड़ा, ८५ या ९६ वर्ष को आयु माघ मास शुक्ल ९ तिथि शुक्रवार रोहणी नक्षत्र में मृत्यु हो (जा० भ०)

(५) सिंह राशि—८ मास या १ वर्ष में कष्ट, १० वर्ष, १५ वर्ष में अंग रोग, २५, ४५ वर्ष में देव दोष, सन्निपात, ५१, ६१ वर्ष में घात। अल्प मृत्यु से बचे तो ६५ वर्ष जीवे, श्रावण सुदी १० रविवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एक प्रहर में मृत्यु हो (मान सा०) पहिले वर्ष में भूत बाधा, पाँचवें वर्ष में अग्नि भय, ७ वें वर्ष में ज्वर, या विशूचिका रोग हो। २८ वर्ष में झगड़ा, ३२ वर्ष में बड़ी पीड़ा, पेट के दाहिने तरफ वात रोग गुल्म रोग हो। जो चन्द्र को शुभग्रह देखता हो तो १०० वर्ष की आयु हो फाल्गुल शुक्ल पक्ष मे, पंचमी, मंगलवार को मध्याह्न समय जल के बीच मृत्यु हो (जा० भ०)।

(६) कन्या राशि—३ मास ३ वर्ष में अंग रोग, १ वर्ष १३ वर्ष में नेत्ररोग और जल घात, २६ वर्ष में अंग रोग, देवकोप से पीड़ा, ३३ वर्ष में लोह घात, ४३ वर्ष में अंग रोग। चन्द्र पर शुभग्रह को दृष्टि हो तो ८४ वर्ष जीकर भाद्र शुक्र ९ रविवार हस्त-नक्षत्र में गोधूली के समय देह त्यागे (मान सा०) तोसरे वर्ष अग्नि की पोड़ा, पाँचवें वर्ष नेत्र रोग, नवम वर्ष, १३ वर्ष में बाधा, १५ वर्ष में सर्प भय, २१ वर्ष में वृक्ष से गिरे या भीत से गिरे। ३० वर्ष में जंगल में हथियार का घात, ८० वर्ष को आयु हो यदि चंद्र पर शुभग्रह को दृष्टि हो तो चैत्र कृष्ण १३ रविवार को मृत्यु हो (जा० भ०)।

(७) तुला राशि—४ मास में कष्ट, १६ मास में अंग रोग, ४ वर्ष में कष्ट, १६ वर्ष में जल घात, २१, २३ वर्ष में अंग रोग, ४१ वर्ष में अंग वृद्धि, ५१ वर्ष मे देव दोष, ६१ वर्ष में अल्प मृत्यु, चन्द्र पर शुभग्रह को दृष्टि हो तो ८५ वर्ष जीवें, वैशाख शुक्ल १३ शुक्रवार चित्रा नक्षत्र मध्याह्न के समय मृत्यु हो (मान० सा०)। ७ वर्ष में अग्नि भय, ८ वर्ष में ज्वर, १२ वर्ष में जल से भय, वृक्ष से या घोड़े से गिरने का। २० वर्ष में सर्प का भय। २१ वर्ष में पीड़ा। चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो तो ८५ वर्ष

की आयु। वैशाख कृष्ण पक्ष आश्लेषा नक्षत्र में शुक्रवार को पहिले प्रहर में मृत्यु हो (जा० भ०)

(८) वृश्चिक राशि—२ मास में कष्ट, ७ वर्ष में अंग रोग, ८ वर्ष में जलघात, १३ वर्ष में वृक्ष घात, ३२-३५ वर्ष में अंग रोग, लोह घात, ४५ वर्ष में अंग रोग। ६३ वर्ष में अल्प मृत्यु, राशि को शुभग्रह देखे तो ७५ वर्ष २ माह ७ दिन जीता है, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकादशी मंगलवार प्रथम पहर में देह त्यागे, (मान० सा०) १ वर्ष में ज्वर की पीड़ा, तीसरे में अग्नि भय, ५ में ज्वर भय, १५ में ज्वर भय, २५ में बड़ी पीड़ा, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो तो ९० वर्ष की आयु हो, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी बुधवार हस्तनक्षत्र में आधीरात को देह त्यागे। (जा० भ०)।

(९) धनराशि—५ मास, ३ वर्ष में कष्ट, ९ में अंग रोग, ११ में चक्षु पीड़ा, १६ में जलघात, २४-२६ में अंग रोग, ४७, ५७, ६७ में सर्प, जलघात, अल्प मृत्यु क्रमशः हो, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो तो ८५ वर्ष जीकर आषाढ़ शुक्ल प्रतिप्रदा गुरुवार हस्तनक्षत्र में गोधूलिका के समय देह त्यागे। (मान सा०) पहिले वर्ष में बाधा, १३ में बड़ी पीड़ा, ६८ या ७५ वर्ष की आयु होती है। चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि हो तो १०० वर्ष जिये। आषाढ़ शुक्ल ५ शुक्रवार रात्रि में हस्त नक्षत्र में मृत्यु हो। (जा० भ०)

(१०) मकर राशि—३ मास में कष्ट, १ मास में देव दोष पीड़ा, ३ वर्ष में अंग रोग, ७५ में देव दोष, १० में अंग रोग, अग्नि पीड़ा, ३२ में लोह घात, ३३ में कष्ट, ४३, ५१ में अल्प मृत्यु, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो ८१ वर्ष जीकर शुक्लपक्ष की पंचमी श्रवण नक्षत्र में मृत्यु हो। (मान सा०) ५ वर्ष में पीड़ा और ७ में जल भय, १० में वृक्ष से गिरे, १२ वर्ष में शस्त्र से भय, २० में ज्वर, २५ में अंगों में पीड़ा, ३५ में बायें अंग में अग्नि भय, ९० वर्ष की आयु, श्रावण शुक्ल दशमी मंगलवार ज्येष्ठा नक्षत्र में मृत्यु हो।

(११) कुम्भराशि—सात दिन में कष्ट, १८, ३२ वर्ष में अल्प मृत्यु भय, चन्द्र पर शुभ दृष्टि हो तो ६१ वर्ष जीकर माघ मास शुक्ल २ गुरुवार के दिन उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में मृत्यु हो (मान सा०) पहिले वर्ष में पीड़ा, ५ में अग्नि भय, या १२ में सर्प से या जल से भय। २८ में घाव चोरों से, ९० वर्ष की आयु पाकर भाद्र कृष्ण चतुर्थी शनिवार भरणी नक्षत्र में मृत्यु हो (जा० भ०)

(१२) मीन राशि—१८, ३३ वर्ष में क्लेश। चन्द्र को शुभग्रह देखता हो तो ६१ वर्ष आयु पाकर माघ शुक्ल १२ गुरुवार पुनर्वसु नक्षत्र में प्रातः काल देह त्यागे। (मान सा०) ५ वर्ष में जल से भय, ८ में ज्वर की पीड़ा, २२ में बड़ी पीड़ा, २४ में पूर्व की यात्रा, ९० वर्ष की आयु में आश्विन कृष्ण पक्ष की द्वितीया गुरुवार कृतिका नक्षत्र में सायंकाल में मृत्यु हो (जा० भ०)।

—:०:—

अध्याय १२

कालांग विचार

१२ राशि का जो एक चक्र है वह पूरा कालपुरुष समझा जाता है। और प्रत्येक राशि से विचार होता है कि वह राशि कालपुरुष का कौन सा अंग है। राशि से पता चलेगा कि किस अंग पर उस ग्रह का प्रभाव पड़ेगा।

राशि अंग

(१) मेष—सिर, मस्तक अर्थात् कपाल, आँखें और मुँह के ऊपर का भाग।

(२) वृष—मुख, चेहरा, पूरा गला, और कंठ भी इससे लेते हैं।

(३) मिथुन—छाती, कंठ से छाती तक का भाग, स्तन मध्य इसमें बाहु और कंधा भी लेते हैं।

(४) कर्क—हृदय, वक्ष-स्थल, चित्त।

(५) सिंह—उदर (पेट) इससे हृदय, रक्ताशय, कलेजा, पीठ, पसली भी लेते हैं।

(६) कन्या—कटि (कमर) कुक्षि, जठर, अँतड़ी भी लेते हैं।

(७) तुला—वस्ति, नाभि के नीचे का भाग, मूत्र पिंड (गुरदा), नाभि, पेड़ू हाथ का पंजा।

(८) वृश्चिक—गुप्तांग जननेन्द्रिय, गुदा आदि, गुह्येन्द्रिय।

(९) धन—जाँघ दोनों, तथा पैर की संधि, वृषण।

(१०) मकर—घुटने दोनों।

(११) कुंभ—दोनों पिंडलो।

(१२) मीन—दोनों पैर (चरण) पैर की अंगुली आदि।

जिस राशि पर कोई पाप ग्रह हो उस राशि के अंग में व्याधि करता है। या कोई चिह्न करता है इसका विचार आगे दिया है।

बाँये भाव के अनुसार भी इसी प्रकार विचार होता है जैसे लग्न सिर व्यय भाव पैर आदि।
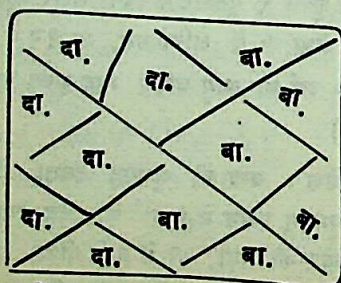
दाहिना बायाँ अंग—किसी राशि के १ से १५ अंश तक दाहिना अंग १५ से ३० अंश तक बायाँ अंग है एवं लग्न से ६ पर कालपुरुष का दाहिना अंग है और सप्तम से ६ घर आगे पुरुष का बायाँ अंग है।

द्रेष्काण के अनुसार कालांग

१—शरीर के ३ भाग करना प्रथम द्रेष्काण का उदय हो तो उससे सिर, आँख, कान, नाक, गला, ठोड़ी, मुख यहाँ बताये अनुसार अंग का विचार होता है।

२—दूसरा द्रेष्काण हो तो कंठ, कंधा, बाहु, पार्श्व, वक्षस्थल, पेट, नाभि आदि का विचार होता है।

३—तीसरे द्रेष्काण में वस्ति गुप्तांग अंडकोष उरु जांघ आदि का विचार होता है।

दा. शि
बां. शि
गुदा
गुदा
लग्नपेंडू वस्ति
अं.
अं.
को.
को.
पा.
(पै)
उरु
उरु
जांघ
जांघ
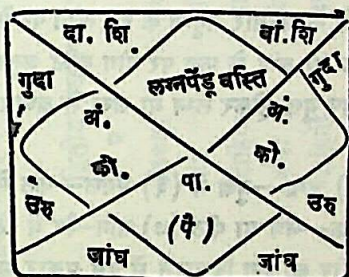
प्रथम द्रेष्काण		द्वितीय द्रेष्काण		तृतीय द्रेष्काण	
भा.क्र.	अंग	भा.क्र.	अंग	भा.क्र.	अंग
१	मस्तक	१	कंठ	१	नाभि से शिश्न तक
२	दाहिनी आंख	२	दाहिना कंधा	२	गुदा शिश्न
३	दाहिना कान	३	दाहिना हाथ (भुजा)	३	दाहिनी गुदा
४	दाहिना नकपुड़ा	४	दाहिनी कांख	४	दाहिना अंडकोष
५	दाहिनी गाल	५	दाहिना हृदय	५	दाहिनो उरु
६	दाहिनी ठोड़ी	६	दाहिना पेट	६	दाहिनी जांघ
७	मुख	७	नाभि	७	दोनों पैर
८	बाईं ठोड़ी	८	बायाँ पेट	८	बाईं जाँघ
९	बायाँ गाल	९	बायाँ हृदय	९	बाईं उरु
१०	बायाँ नाक	१०	बायीं कांख	१०	बायाँ अंडकोष
११	बायाँ कान	११	बायीं भुजा	११	बायीं गुदा
२	बायीं आंख	११	बायाँ कंधा	११	बायाँ शिश्न

मतांतर-तृतीय द्रेष्काण—ऊपर द्रेष्काण के अनुसार जो अंग बताये हैं उनमें केवल तीसरे द्रेष्काण में कुछ भिन्नता है जैसा यहाँ चक्र में बताया है ।

१ लग्न—बस्ति, २ भाव—दाहिना शिश्न व गुदा, ३ भाव—दाहिना अंडकोष, ४ भाव—उरु दाहिना, ५ भाव—जानु दाहिना, ६ भाव—घुटना दाहिना, ७ भाव—दोनों पैर, ८—बाँया घुटना, ९—बाँयी जाँघ, १०—बाँया उरु, ११—बाँया वृषण, १२—बाँया शिश्न व गुदा (वृहज्जातक, शंभु होरा० में इसे ही माना है)।

ग्रहों का कालांग

१ सूर्य—सिर से मुख तक, २ चंद्र—गले से हृदय तक, ३ मंगल—पेट से पीठ तक, ४ बुध—हाथ और पैर, ५ गुरु—कमर से जंघा, ६ शुक्र—शिश्न से वृषण, ७ शनि—घुटने से पिंडली ।

ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति के अनुसार मनुष्य के इन अंगों पर से ग्रह प्रभाव डालते हैं । ग्रहों के शुभाशुभत्व उच्च नीच या अंश के फल पर योग दृष्टि अनुसार फल होता है ।

अन्य मत से—षष्ठेश पाप युक्त होकर लग्न या लग्न से अष्टम में हो तो इस प्रकार अंगों में घाव करते हैं ।

(१) सूर्य—सिर में (२) चन्द्र—मुख में (३) मंगल—कंठ में, (४) बुध—हृदय (५) गुरु—नाभि के नीचे (६) शुक्र—नेत्र या पीठ (७) शनि—पैर में (८) राहु केतु—ओठ में ।

द्रेष्काण के अनुसार शरीर का अंग विचारने में इस प्रकार भी विचार करते हैं कि लग्न एवं अन्य भाव में कौन-कौन द्रेष्काण है । इसके विचार से अंग विभाग के ३ खंड हो जाते हैं (इसमें राशियों का विचार नहीं है) भाव के स्पष्ट पर से उनका द्रेष्काण निकालना ।

यदि प्रथम द्रेष्काण में जन्म हो तो प्रथम खंड के बाद द्वितीय अंग खंड, फिर उसके बाद तृतीय अंग खंड का विचार करना ।

दूसरे द्रेष्काण में जन्म हो तो पहिले द्वितीय खंड के बाद तृतीय खंड पश्चात् इसके प्रथम खंड से अंग विचारना ।

यदि तृतीय द्रेष्काण में जन्म हो तो पहिले तृतीय अंग खंड फिर प्रथम अंग खंड अन्त में द्वितीय अंग खंड के अनुसार अंग विचारना ।

अर्थात् प्रथम द्रेष्काण में जन्म हो तो प्रथम भाव के प्रथम खंड में प्रथम खंड के अंगों का क्रमशः जन्म द्रेष्काण से आरम्भ कर लेवे । एवं लग्न के द्वितीय द्रेष्काण से आरम्भकर प्रत्येक भाव के द्वितीय द्रेष्काण में द्वितीय खंड के अंगों का क्रमशः एवं लग्न के तृतीय द्रेष्काण में तृतीय खंड के अगों का क्रमशः विचार करना ।

परन्तु यदि जन्म लग्न द्वितीय द्रेष्काण में हो तो प्रथम भाव के द्वितीय द्रेष्काण से आरम्भ कर क्रमशः सभी भावों के द्वितीय द्रेष्काण में द्वितीय खंड के अंगों को लेना फिर लग्न के द्वितीय द्रेष्काण से आरम्भ कर क्रमशः सभी भावों के प्रति द्रेष्काण में तृतीय

खंड के अंगों का फिर प्रत्येक भाव के तृतीय द्रेष्काण में प्रथम खण्ड के अंगों का उसी प्रकार विचार करना।

यदि तृतीय द्रेष्काण में जन्म हो तो लग्न के एवं अन्य भावों के प्रथम द्रेष्काण में तृतीय खण्ड के अंगों का क्रमशः और लग्न से आरम्भ कर लग्नादि भावों के द्वितीय द्रेष्काण में प्रथम अंग के खण्डों का क्रमशः और अन्त में प्रत्येक तृतीय स्थान में द्वितीय खण्ड के अंगों का क्रमशः विचार करना। इन सब द्रेष्काण के तीनों खण्डों का चक्र आगे दिया है।

प्रथम भाव में ३ द्रेष्काण होने के कारण १२ भाव के ३६ द्रेष्काण हुए।

प्रत्येक भाव के प्रत्येक द्रेष्काण के अनुसार अंग का विचार

	प्रथम द्रेष्काण			द्वितीय द्रेष्काण			तृतीय द्रेष्काण		
भाव	प्रथम द्रेष्काण	द्वितीय द्रेष्काण	तृतीय द्रेष्काण	१ द्रेष्काण	२ द्रेष्काण	३ द्रेष्काण	१ द्रेष्काण	२ द्रेष्काण	३ द्रेष्काण
लग्न	मस्तक	कंठ	वस्ति	×	कंठ	वस्ति	×	×	वस्ति
द्वितीय	दाहिना	दाहिना	दाहिना	×	दाहिना	दाहिना	×	×	दाहिना
	नेत्र	कंधा	शिश्न	मस्तक	कंधा	शिश्न	मस्तक	कंठ	लिंग
तृतीय	दाहिना	दाहिनी	दाहिना	दाहिना	दाहिनी	दाहिना	दाहिना	दाहिना	दाहिना
	कान	भुजा	वृषण	नेत्र	भुजा	वृषण	नेत्र	कंधा	वृषण
चतुर्थ	दाहिनी	दाहिनो	दाहिनी	दाहिना	दाहिनी	दाहिनी	दाहिना	दाहिनी	दाहिनी
	नाक	पाँजर	जंघा	कान	पांजर	जंघा	कान	भुजा	जंघा
पंचम	दाहिना	दाहिना	दाहिना	दाहिनी	दाहिना	दाहिना	दाहिनी	दाहिनी	दाहिना
	गाल	हृदय	ठिहुना	नाक	हृदय	ठिहुना	नाक	पांजर	ठिहुना
षष्ठ	दाहिनी	दाहिना	दाहिनी	दाहिना	दाहिना	दाहिनी	दाहिना	दाहिना	दाहिनी
	डाढ़ी	पेट	फिल्ली	गाल	पेट	फिल्ली	गाल	हृदय	फिल्ली

सप्तम	×	×	×	दाहिनी	×	×	दाहिनी	दाहिना	×
	मुख	नाभि	सुप्ति	डाढ़ी	नाभि	सुप्ति	डाढ़ी	पेट	सुप्ति
अष्टम	बाइं	बायाँ	बाइं	×	बायाँ	बाइं	×	बाइं	बाइं
	डाढ़ी	पेट	फिल्ली	मुख	पेट	फिल्ली	मुख	नाभि	फिल्ली
नवम	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बाइं	बायाँ	बायाँ	बाइं	बायाँ	बायाँ
	गाल	हृदय	ठिहुना	डाढ़ी	हृदय	ठिहुना	डाढ़ी	पेट	ठिहुना
दशम	बाइं	बायाँ	बाइं	बायाँ	बायाँ	बाइं	बायाँ	बायाँ	बाइं
	नाक	पांजर	जंघा	गाल	पांजर	जंघा	गाल	हृदय	जंघा
एकादश	बायाँ	बाइं	बायाँ	बाइं	बाइं	बायाँ	बाइं	बायाँ	बायाँ
	कान	भुजा	वृषण	नाक	भुजा	वृषण	नाक	पांजर	वृषण
द्वादश	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बायाँ	बाइं	बायाँ
	नेत्र	कंधा	शिश्न	कान	कंधा	शिश्न	कान	भुजा	शिश्न
लग्न	×	×	×	बायाँ	×	×	बायाँ	बायाँ	×
				नेत्र			नेत्र	कंधा	

उपयोग—केवल जन्म का द्रेष्काण जान लेने से इस चक्र की सहायता से जान सकोगे कि किस अंग में व्रण तिल आदि होंगे।

यह देखना कि किस द्रेष्काण में कौन ग्रह है। ग्रहों की स्थिति आदि से उस अंग में घाव मसा तिल आदि का पता चलेगा उसका विचार यह है—

तिल व्रण आदि विचार

१—जिस द्रेष्काण में पाप ग्रह बैठा हो उस द्रेष्काण के अंग में घाव, [illegible], व्रण आदि का अनुमान करना।

२—यदि उस द्रेष्काण पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह बैठा हो तो उस अंग में तिल मसा आदि होगा।

३—यदि वह ग्रह स्वगृही हो या स्थिर राशि या स्थिर नवांश में हो, कुछ की राय में यदि शनि उस ग्रह के साथ हो, तो यह चिह्न जन्म से ही होगा। यदि ऐसा न हो तो जन्म के पश्चात् उस ग्रह की दशा अंतर्दशा में घाव व्रण आदि होंगे।

४—जन्म प्रश्न या गोचर में जो राशि पापाक्रांत हो उस राशि वाले अंग में तिल-मसा या चोट आदि का चिह्न होगा। जो राशि शुभ से युक्त हो वह अंग पुष्ट होगा।

तिल मसा व्रण घाव आदि होने के अन्य योग

(१) घाव—षष्ठ भाव में यदि कोई पाप ग्रह हो तो उस अंग में भी जो छठे भाव की राशि से प्रगट हो, घाव होगा।

तिल मसा—परन्तु छठे भाव में बैठे पाप ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो केवल तिल मसा आदि होंगे या छठे शुभ ग्रह हो तो भी लहसन तिल मसा आदि होंगे।

(२) व्रण या मसा—यदि शुक्र अशुभ होकर किसी द्रेष्काण में हो तो उस अंग में व्रण आदि होंगे परन्तु वैसे शुक्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो केवल मसा आदि होंगे।

यदि वैसे शुक्र के साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो उस अंग में कोई शुभ सूचक चिह्न होगा।

अशुभ शुभ—शुक्र रवि से ५ अंश के भीतर रहने से, अशुभ नवांश गत होने से, शत्रुगृही या नीच का होने से अशुभ कहा जाता है।

(३) व्रण आदि—जिस स्थान में सूर्य चंद्र हों उसके सदृश काल पुरुष के अंग में बल के अनुसार और चर आदि वश से सहज (जन्म से ही) या आगन्तुक व्रण आदि कहना।

(४) व्रण—जिस द्रेष्काण में अशुभ या पाप ग्रह बैठे हों और उनके साथ बुध भी हो तो उस अंग में व्रण होगा। बलवान् ग्रह इनमें जो हो उसकी दशा में व्रण होगा। रिपुगृही पाप ग्रह भी व्रण करते हैं। यदि शुभ ग्रह से युत-दृष्ट हो तो तिल या कोई चिह्न करता है।

(५) शनि राहु ये दोनों जहाँ हों उस अंग में तिल लांछन आदि कृष्ण चिह्न करते हैं।

(६) सूर्य मंगल जहाँ हो रक्त चिह्न करते हैं।

(७) चन्द्रमा जहाँ हो उस अंश में मसा आदि चिह्न होंगे।

(८) सूर्य चंद्र एकत्र एक राशि में हों तो वहाँ तिल मसा आदि होंगे।

(९) पाप ग्रह के साथ शुभ ग्रह हो या यह पाप ग्रह शुभ नवांश में हो तो चिह्न नहीं करेगा यदि करेगा भी तो शीघ्र दूर हो जायेगा।

(१०) जो ग्रह अपने नवांश द्रेष्काण में हो और स्थिर राशि में हो तो पूर्वोक्त चिह्न स्थिर होंगे इसके विपरीत हो तो चिह्न बाद को होंगे।

(११) चिह्न करने वाला पाप ग्रह बली हो तो व्रण फोड़ा भगंदर मूलक व्याधि मेह आदि रोग हों।

(१२) यदि ३-४ पाप ग्रह वहाँ हों और वहाँ बुध भी हो तो भी व्रण भगंदर प्रमेह वृषण वृद्धि, पाँद की सूजन कोढ़ आदि हो यदि वहाँ बुध न हो तो इनके चिह्न न होंगे। ये ग्रह जहाँ हों उनके द्रेष्काण के अंगों में प्रभाव करेंगे।

इतर चिह्न होने के योग व उनका स्थान

१—लग्न से सप्तम में राहु, लग्न में गुरु, अष्टम में पाप ग्रह या शुक्र हो तो बाँयीं भुजा में चिह्न करते हैं।

२—सप्तम या लग्न में गुरु हो तो बाईं भुजा में तिल मसक आदि चिह्न करते हैं।

३—नवम भाव में चंद्र और तीसरे में शनि हो या तीसरे भाव में राहु शुभ युक्त या दृष्ट हो तो भुजा या कुक्षि में चिह्न हो।

४—तीसरे भाव में मंगल पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भुजा में घाव का चिह्न हो या गले में पित्त से रोग हो।

५—३, ६ या ११ घर में मंगल, १२ घर में शुक्र के साथ मंगल हो तो बायें बगल में घाव का चिह्न हो।

६—नवम में शुक्र अष्टम में बुध गुरु, चतुर्थ में शनि हो तो कुक्षि में चिह्न।

७—पंचम या नवम स्थान में शुक्र, अष्टम में बुध गुरु, चतुर्थ या लग्न में शनि हो तो कुक्षि या पेट में चिह्न हो।

८—द्वितीय में शुक्र, अष्टम या लग्न में सूर्य और मंगल शनि तीसरे में हो तो कटि में चिह्न हो।

९—राहु या शनि छठे घर में हो तो कटि में काला चिह्न हो।

१०—बारहवें गुरु, ३, ६ ११ घर में बुध, ३ भाव में शुक्र हो तो हृदय में चिह्न।

११—चतुर्थ भाव पाप युक्त हो तो कंधा, कुक्षि या हृदय में तीखी चोट लगने का चिह्न हो।

१२—लग्न में मंगल और शुक्र से दृष्ट शनि त्रिकोण में हो तो लिंग या गुदा के समीप तिल हो।

१३—लग्न में मंगल व बुध और ६, ५, ९ घर में राहु हो तो लिंग या गुदा में तिल मसक आदि चिह्न हो।

१४—शुक्र ३ भाव में, गुरु ३, ६, ११ घर में, चंद्र नवम हो तो गुदा में गोलक चिह्न हो।

१५—लग्न से १२ वें घर में गुरु, नवम में चंद्र, ३, ६, ११ घर में बुध हो तो गुदा में घाव का चिह्न हो।

१६—नवम भाव में शुक्र, अष्टम में सूर्य, दशम में राहु हो तो नाभि में चिह्न हो।

१७—चतुर्थ में राहु और शुक्र, लग्न में शनि या मंगल हो तो पाद मूल या बांये पाद में चिह्न हो।

१८—लग्न से सप्तम में मंगल गुरु व शुक्र हो तो मस्तक में चिह्न हो।

१९—लग्न में मंगल शुक्र व चंद्र हो तो १२ वर्ष में मस्तक मे चिह्न हो।

२०—द्वितीय भाव में सूर्य हो तो मुख पर शिला सम्बन्धी या व्याधि का चिह्न हो।

२१—जन्म लग्न में शुक्र और अष्टम में राहु हो तो मस्तक या बांये कर्ण में चिह्न हो।

२२—लग्न में मंगल और सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में घाव चिह्न हो।

२३—लग्न में मंगल शुक्र और चंद्र हो तो उसके सिर में दूसरे या छठे वर्ष किसी प्रकार का चिह्न हो।

२४—लग्नेश और मंगल लग्न में बुरे ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सिर में जख्म, या फोड़ा, पत्थर के काटने से या तलवार लगने से होगा।

२५—यदि मंगल के बदले शनि लग्नेश के साथ बुरे ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सिर में चोट, गिरने से या चट्टान, अग्नि या दूसरे चीजों से चोट हो।

२६—मंगल बुरा ग्रह है दूसरे बुरे ग्रह शनि सूर्य अशक्त चन्द्र, पाप युक्त बुध, राहु केतु हैं इनमें से कोई ग्रह या सब लग्न में हों तो शिर के चिह्न बड़े भारी होंगे। बड़ा कटने का चिह्न या कुरूपता लाने वाला चिह्न होगा। यदि ये पाप ग्रह यथार्थ में बुरे हैं। और लग्नेश अशक्त हो तो वे चोट के चिह्न बड़े भारो कुरूपता लाने वाले अवश्य होंगे। यदि लग्नेश अच्छे साथी युक्त हो उच्च या शुभ युक्त या शुभ दृष्ट हो तो ये चोटें अल्प लगेंगी और सिर में नाम मात्र का चिह्न होगा।

२७—लग्न द्रेष्काण के विभाग में लग्न में राहु मंगल या शनि सिर स्थान में हो तो अग्नि, शस्त्र या काष्ट से भय हो।

इस प्रकार ग्रहों के बलाबल से अच्छे या बुरे प्रभाव की घटाबढ़ी विचार कर अपनी बुद्धि ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव से फल के घट बढ़ आदि का विचार करना।

कालांग का और भी उपयोग

जिसके जन्म में सूर्य मेष का उच्च का है। मेष का स्थान सिर है। उच्च का होने से प्रगट करता है उच्च मस्तिष्क वाला होगा। मस्तिष्क के बल रुपया पैदा करेगा। यह उच्च पदाधिकारी मंत्रो आदि हो सकता है या मेष का सूय लग्न में हो तो सिर में चोट आदि का भय उत्पन्न करेगा।

तिल और लहसुन होने का फल

स्त्री पुरुष के देह स्थित भंवर तिल मशक आदि होने का फल स्त्रियों के वाम भाग में शुभ और पुरुषों के दक्षिण भाग में तिल मशक या रोमावर्त शुभ होता है।

स्त्री के हृदय में तिल—सौभाग्यवती।

स्त्री के दक्षिण स्तन पर रक्त वर्ण तिल आदि सदृश चिह्न हो तो सुख सौभाग्य युक्त हो बहुत संतति हो । अधिक कन्या और पुत्र हों ।

वाम स्तन पर रक्तचिह्न—केवल १ पुत्र हो ।

ओंठ के मध्य या ललाट पर रक्त वर्ण तिल आदि चिह्न—राज्यप्रद ।

गाल पर—नित्य मिष्ठान्न भोजन दायक ।

गुह्य स्थान के दक्षिण भाग में—राजपत्नी या राज माता होती है ।

जिसके नाक पर लाल चिह्न हो—राजपत्नी ।

कृष्ण वर्ण दाग—व्यभिचारिणी या विधवा हो ।

नाभि के नीचे पुरुष या स्त्री के सब चिह्न शुभ होते हैं ।

कान, गाल, हाथ, तथा कंठ पर तिल आदि—सुख सौभाग्य युक्त, प्रथम पुत्र संतान ।

जांघ में तिलादि चिह्न—दुःखी रहे ।

स्त्री के कपाल में त्रिशूल सदृश चिह्न—रानो हो ।

पुरुष के कपाल में त्रिशूल सदृश चिह्न—राजा हो ।

हृदय, जीभ, हाथ, कान, पृष्ठ के दाहिने भाग और वस्ति में रोमावलो हो तो दक्षिणावर्त शुभ, वामावर्त अशुभ है ।

कमर गोप्य स्थान में रोमावली—शुभ नहीं ।

पेट में हो तो--विधवा हो । पीठ के मध्य भाग में—व्यभिचारिणी हो ।

कंठ ललाट माँग या मस्तक के मध्य (चोट) में आवर्त--शुभ ।

उक्त सुलक्षण वाली स्त्री अल्पायु पति को भी सुखी और दीर्घायु बना देती है ।

ग्रह किस प्रकार व्रण आदि चिह्न करते हैं

(१) सूर्य—यह व्रणकारी हो या द्रेष्काण पर रवि की दृष्टि हो तो काष्ठ के द्वारा चोट या चौपाये जानवर के द्वारा चोट हो ।

(२) चन्द्र—क्षीण चन्द्र व्रण कारक हो या उस द्रेष्काण पर चन्द्र की दृष्टि हो तो सींग मारने या किसी जलजन्तु के आघात से या किसी जल पदार्थ द्वारा या किसी तरल पदार्थ तेजाब आदि द्वारा ।

(३) मंगल--यह व्रण कारक हो या उस द्रेष्काण पर मंगल की दृष्टि हो तो अग्नि, विष (सर्पादि) या अस्त्र (हथियार) द्वारा घाव ।

(४) बुध—यह व्रणकारी हो या उस द्रेष्काण पर बुध की दृष्टि हो तो भूमि पर गिरने से या पत्थर आदि के चोट से घाव ।

(५) गुरु—शुक्र, गुरु, पूर्ण चन्द्र, शुभ बुध (जो पाप ग्रह के साथ न हो) जिसके द्रेष्काण में हो या उसे देखते हों उस द्रेष्काण के अंग में कोई चिह्न नहीं होगा । वह अंग पुष्ट होगा ।

(६) शुक्र—शुक्र अशुभ हो तो वह व्रणकारी होता है इसके सम्बन्ध में पहिले बता चुके हैं।

(७) शनि—यह व्रण कारक हो या उस द्रेष्काण पर शनि की दृष्टि हो तो पत्थर की चोट से या किसी जल विकार से या वात रोग से घाव करता है।

(८) रवि चन्द्र—जिस द्रेष्काण में हों उसमें भी व्रण आदि करते हैं। और शुभगृही या पाप गृही से भी व्रण होते हैं परन्तु शुभ ग्रह की दृष्टि से व्रण नहीं हो तो तिलादि होते हैं।

(९) शुभ ग्रह व्रण कारक हो तो शुभ कर्म से घाव व्रण आदि होते हैं।

लग्न से शरीर का विचार

लग्न से शरीर की ये बातें जाननी चाहिये।

(१) रूप (२) वर्ण (३) जाति-कुल (४) शरीर पर चिह्न (५) सुख (६) दुःख (७) शरीर का प्रमाण ठिंगना ऊँचा आदि (८) स्वभाव क्रूर शांत आदि (९) आयुष।

इनके विचार के नियम

(१) कोई भी लग्नेश लग्न में हो, स्व नवांश में हो, वह सब ग्रहों में बली हो तो उसका जो रूप गुण स्वभाव आदि है बहुत करके उसी के अनुसार उपरोक्त बातें प्रगट होंगी।

(२) लग्नेश लग्न में नहीं हो दूसरे स्थान में हो तो वह जिस ग्रह के नवांश में हो उस ग्रह सरीखी उपरोक्त बातें होंगी।

(३) लग्न में जो ग्रह हो उस सरीखी उपरोक्त बातें होंगी। २–४ ग्रह लग्न में हों तो उसमें से जो विशेष बली हो उस सरीखी बातें होंगी।

या कुण्डली में सब ग्रहों में जो वलवान हो उस सदृश उपरोक्त बातें होंगी।

(४) उपरोक्त योगों में से कौन होना चाहिए या इन सबका प्रभाव होगा, इसका विचार करना पड़ेगा। आयु के प्रमाण से जो वलवान् होगा उस ग्रह का गुणदोष पहिले होगा। बाद को उससे कम बल वाले का प्रभाव होगा।

इसी प्रकार सम्पूर्ण १२ भाव के सम्बन्ध से भी विचार होगा। ग्रह के गुण धर्म स्वरूप आदि जो पहिले दे चुके हैं। उनपर यह विचार करना होगा।

मनुष्य के गुण, वर्ण, मूर्त्ति आदि इस प्रकार भी जानना

लग्न का सप्त वर्ग निकालना उसपर से विचार करना।

मूर्ति (शरीर)—लग्न का जो नवांश हो या जो लग्नेश हो उस सरीखी मूर्ति होगी।

वर्ण—चंद्र जिस ग्रह के नवांश में हो उस सदृश वर्ण होगा।

गुण—सूर्य जिस ग्रह के नवांश में हो उस सदृश गुण सतगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी आदि होगा।

स्वरूप विचार

(१) लग्न में जिस नवांश का उदय हो उस नवांश के समान स्वरूप होगा या तत्काल

में जो बलवान् ग्रह हो उससे विचारे। राशि बल विशेष हो तो लग्न नवांश के तुल्य होगा। ग्रह बल विशेष हो तो ग्रह नवांश के तुल्य होगा।

(२) बुध जिस नवाँश में हो उस नवांश राशि के अनुरूप रूप होगा। जैसे मेष से चौपाया सदृश आदि।

(३) बलवान् ग्रह के अनुसार नेत्र होंगे।

वर्ण

चंद्र नवांश स्वामी के सदृश वर्ण होगा।

(१) कुल, जाति, देश आदि का विचार कर कहना। जैसे इंग्लैण्ड में गोरे होते हैं, अफ्रिका में काले होते हैं या यहाँ भील कोल किरात आदि काले होते हैं। इन सब बातों का विचार रखना चाहिए।

(२) लग्नेश व लग्न में जो ग्रह हो उसके विचार से उसके समान वर्ण और उसी के समान आचार वाला होगा।

(३) ९ या ५ भाव के स्वामी के अनुसार रंग और गुण भी होता है।

जातक का गुण

(१) सूर्य जिस त्रिशांश में हो उन-उन त्रिशांशों का स्वामी जो ग्रह हो उसके गुणकी अधिकता कहना।

सूर्य, चन्द्र, गुरु—सतोगुणी, शनि-मंगल—तमोगुणी और बुध-शुक्र—रजोगुणी हैं।

(२) लग्नस्थ ग्रहों के अनुसार स्वभाव भी विचारना।

(३) लग्न का बल और लग्न के साथ ग्रहों का योग या दृष्टि से प्रकृति विचारना।

शरीर—(१) लग्न में जो नवांश हो उसके स्वामी के अनुसार या उस समय सब ग्रहों में जो बली हो उसके अनुसार।

(२) उदित राशि और दूसरी राशियाँ जो सिर आदि कालपुरुष के अंग की सूचक हैं उनके अनुसार होगा।

लग्नेश आदि से विचार—शरीर की आकृति स्वभाव, गुण, दोष, अवगुण अवस्था, रस, पुरुष-स्त्री चेष्टा, अभ्यास और ग्राम आदि स्थिति का विचार लग्नेश के आकृति, प्रकृति गुणादि के अनुसार एवं लग्न ग्रह के अनुसार विचारना।

यहाँ कई प्रकार से विचारना बताया है जहाँ एक से अधिक प्रकार से कोई फल प्रगट हो उसे ग्रहण करना।

ग्रहों का स्वरूप जो शरीर रंग-रूप आदि विचारने में काम आता है

१ सूर्य—शूर, गंभीर, चतुर, रूपवान् है पर साँवला, सिर में थोड़े बाल, गोल शरीर, भिगर नेत्र, पित्त प्रकृति, ठिंगना, शरीर में बहुत हड्डी। मेष लग्न में सूर्य—द्रव्यवान् परन्तु नेत्र रोगी। सिंह लग्न में रात्रि अंध। तुला में अंधा, दरिद्री, कर्क में आँख में फूली। इनसे अन्य लग्न में—लड़ाई करने वाला, निर्दय, आलसी, दरिद्री, देर करके काम करने वाला हो।

२ चंद्र—मधुर वाणी, विलासी, बुद्धिमान्, ऊँचा शरीर, कुंचित केश, बहुत रक्त, वात कफ प्रकृति, बड़े नेत्र, गोरा वर्ण, परन्तु मंगल या सूर्य उसके पास हों और चन्द्र लग्न में हो—काला व साँवला हो, अकेला चन्द्र लग्न में हो तो उन्मत्त जड़, अंध अर्थात् अनुचित कर्म करने वाला, बहिरा, लोगों का चाकर हो। परन्तु मेष वृष व कर्क लग्न में चन्द्र हो तो द्रव्यवान् हो और अधिकारी (आफीसर) हो। मेष लग्न में चन्द्र हो तो विशेष सम्पत्तिवान् हो।

३ मंगल—रक्त वर्ण, गोरा, पिंगल, अति उदार, घातकी, शूर, तामस प्रकृति, क्रोधी, गर्वीला, ठिगना, क्रांति युक्त।

लग्न में मंगल हो—शरीर के किसी भाग में शस्त्र लगे, घाव हो, कुछ दिनों में वह लँगड़ा तथा कुबड़ा हो।

४ बुध—श्याम वर्ण, विशेष कला, मृदु वाणी, रजोगुणी, गोल मुँह, लाल नेत्र, मध्यम शरीर। लग्न में बुध हो तो—साधारण पंडित हो।

५ गुरु—शरीर का आकार छोटा और ऊँचा, सुन्दर कांति, मधुर भाषण उदार, दक्ष, भिंगर नेत्र, कफ प्रकृति। गुरु लग्न में हो तो थोड़ी विद्या आवे।

६ शुक्र—मेघ सरीखा वर्ण, शीत व वात प्रकृति, बड़े नेत्र, केश तिरछे व काले, रजोगुणी, स्त्री लम्पट, मीठा व कड़वा खाने की रुचि। लग्न में शुक्र हो तो स्त्री शास्त्री हो, सुखी हो।

७ शनि—सुन्दर, काला वर्ण, मलिन, आलसी, सिर पर बालों का भौंर, दुबला, ऊँचा, लम्बा, दाँत बड़े, नेत्र पिंगर, नख बड़े, दुष्ट, वात प्रकृति। शनि लग्न में हो तो दरिद्री रोगी हो, सदा मैथुन प्रिय, तोतला, तुला, मकर, कुंभ या धन राशि की लग्न हो तो श्रीमंत हो, महत्त्व बढ़े।

लग्न से शरीर का स्वभाव प्रगट होता है

लग्न से मनुष्य का स्वभाव आदि का अनुमान होना है। या जब लग्न में शंका हो तो अन्य विचार के अतिरिक्त मनुष्य के स्वभाव से लग्न का भी अनुमान हो सकता है। इससे यहाँ लग्न द्वारा प्रगट स्वभाव आदि दिया जाता है।

(१) मेष लग्न—मध्यम गठन, लम्बा चेहरा, पतला शरीर, गर्दन लम्बी, कपाल की ओर का भाग चौड़ा। बड़ी बड़ी आँखें, बाल कड़े, वर्ण तामड़े रंग का गोर, स्वभाव क्रोधी, उतावला, महत्त्वाकांक्षा, चंचल, साहसी, चुगल खोर, गर्वीला, आत्म विश्वासी, प्रयत्न वादी, अपने पैर पर खड़ा रहने वाला। स्वतः के परिश्रम से आगे बढ़े। बात-चीत में साधारण, स्पष्ट वादी, शूरवीर, दानी, पूजनीय नहीं, सदा किसी काम में लगे रहने की रुचि, कभी-कभी किसी को तंग करने की प्रकृति. अच्छी बुद्धि, आरम्भ आयु में अनेक कठिनाइयों का अनुभव, स्वतंत्रता और निरंकुश रहने का इच्छुक, चित्त में जम जाय तो पर कार्य साधन में बड़े उत्साह से कठिनाई सहन करने को उद्यत, सर्व कार्य में निडर और निर्भीक, जीवन में उच्च स्थान का इच्छुक, अनेक गुण युक्त।

(२) वृष—शरीर साधारण ठिगना, मोटा, चौरस शरीर, सकरी व मोटी गर्दन; गोल चेहरा, हृष्ट और पुष्ट कंधे, छोटा चौड़ा और पुष्ट भुजायें, सुन्दर शरीर, घुंघराले बाल, सुन्दर नेत्र, अभिमानी, क्रोधी, दीर्घ उद्योगी, पुराने मत से चलने वाला, दुराग्रही, ममतालु, क्रोध आने पर परिणाम का विचार न करे, एकांत प्रिय, विषयी, साधारण आलसी, बहुत व्योहार दक्ष, खेती बगीचा, जमीन सम्बन्धी काम या व्यवस्थापक आदि के कार्य से लाभ हो, संगीत, आभूषण और आकर्षित पदार्थों का प्रेमी, नियमित आचरण और स्वभाव, शांति प्रिय, सहन शील। अपने स्वतंत्र विचार के अनुसार कार्य करे दूसरों की राय के अनुसार न चले। आराम तलब, गम्भीर चित्त, उसका भेद कोई जानने न पावे, शांत चित्त से विचार करने वाला, शीघ्रता में कोई कार्य न करे, अच्छा स्वभाव, मीठी बोली, दयालु, प्रेमी, बहुत मित्र, जीवन में उन्नति करे, धनी हो।

(३) मिथुन—दुबला व ऊँचा शरीर नाक चेहरा ठोड़ी लम्बी, हाथ की अंगुलियां व बाहु इसी प्रमाण से लम्बे, लम्बे पतले हाथ पैर, तीव्र और भेदी दृष्टि। स्वभाव विद्या व्यसनी। लेखन, वाचन का काम करने वाला, भाषा शास्त्री, अच्छा स्वभाव, उदार विचार, बहुत बुद्धिमान्, काम करने में तेज, बातचीत में चतुर चालाक, बहुत गंभीरता पूर्वक विचार करने की शक्ति, तर्क में प्रवृत्ति जिससे प्रभाव शील और विश्वास योग्य वार्तालाप कर सके। परिवर्तन शील अस्थिर मन, बहुत समय तक एक बात का पाबन्द न रह सके। चतुर, सूक्ष्म रीति से वर्णन करने वाला। बातें समझने वाला, अग्र सोची, क्रोध शीघ्र उत्पन्न, चतुराई से काम करने वाला। योग्य, प्रभाव शील वक्ता और लेखक, तेज बुद्धि। स्वभाव के गुण से प्रसिद्धता की संभावना। कला और विज्ञान सीखने में रुचि। बिना रुकावट के काम करनेवाला जिससे स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़े। अच्छी मानसिक शांति न प्राप्त कर सके। उसके सम्बन्धी उसके सहायक और पालक हों।

(४) कर्क—मध्यम शरीर, गोल चेहरा, निस्तेज वर्ण, छोटी नाक, चलने में टेढ़ी-गति। स्वभाव शांत, शीघ्र संस्कार ग्रहण करने वाला, नुकता चीनी करने वाला, चंचल, प्रवास या नित्य नवीन देश देखने या घूमने का प्रेमी, माता-पिता से इसे लाभ हो। जमीन खेती आदि के व्योहार से इसे लाभ हो। इसे सार्वजनिक काम बिलकुल आगे आने वाला दिखता है। मिलनसार, आनंद और भोग का प्रेमी, सुन्दर और स्वच्छ वस्त्र का प्रेमी, शरीर को स्वच्छता और सुन्दरता के दिखावे का प्रेमी, विचित्र और सुन्दर वस्तुओं का प्रेमी। प्रभाव शील रहन-सहन आचरण। कर्तव्यशील, गुरु और धार्मिक मनुष्यों का मान करने वाला। मिष्ठान्न और स्वादिष्ट भोजन का प्रेमी। अपने कुटुम्बियों से अच्छा बताये। रुचि और अरुचि में तीव्र। जिसे चाहे उससे वार्तालाप में आनन्द हो उसकी राय पर ध्यान देवे जिसे न चाहे उसकी संगति और परामर्श स्वीकार न करे। किन्ही वस्तुओं के मूल्य उपयोग में अच्छी समझ जिससे लाभ या सफलता हो। पुरुष स्त्री से या स्त्री पुरुष से मिलने में बहुत योग्य।

(५) सिंह—शरीर ऊँचा, हड्डी दृढ़, चेहरा भव्य, कपाल चौड़ा, सुन्दर नेत्र, नाक साधारण, शरीर पुष्ट, चौड़ा गठन, स्वभाव आत्म विश्वासी, महत्वाकांक्षी, गर्विष्ट अपनी सत्ता अधिकार नाम आदि के लिये खट पट करने वाला, उदार स्वच्छ हृदय, क्रोधी शारीरिक परिश्रम खेल आदि का प्रेमी, निर्भय, निश्चय, विरोधियों पर विजय पावे। अच्छे गुण, सीधा और सच्चा, सहनशीलता के कारण कठिनाई और कष्टों को शीघ्र पार करने वाला, अपने लाभ के लिये भी नीच कार्य न करेगा, मित्रों का विश्वास भाव, दयालु, लोगों का सहायक। अपने शत्रुओं से लड़ाई न करे शांति पूर्वक वर्ताव करे। आनन्द और योग का प्रेमी। कितना ही परिश्रम करे परन्तु थोड़ा फल हो। दूसरों पर प्रभाव डालने का गुण हो। अपने कार्य में दूसरों को आज्ञाकारी बनाने में चतुर। जीवन के अन्तिम अर्ध भाग में धन और सम्पत्ति प्राप्त करे। विचार पूर्वक कार्य करे।

(६) कन्या—मध्यम शरीर, मुँह व चेहरा गोल, साधारण कृष्ण वर्ण, सुन्दर बुद्धिमान्, कल्पना करने वाला, विद्या व्यसनी, मायावी, ममतालु, साधारण आलसी, टीका टिप्पणी करने में चतुर, स्वतंत्र धंधा करने की अपेक्षा दूसरों के साझे में काम करने या नौकरी करने में लाभ बड़ा, वैद्य, नाना प्रकार के धंधे या व्यवसाय करने में बिलकुल कष्ट न हो। शोधक। बिना पक्षपात के सत्य और न्याय का प्रेमी, अच्छी बुद्धि, व्योहार में दूसरों के आनन्द या दुःख का विचार न करने वाला। अपने कार्य में दूसरों का उपयोग करने में कोई विचार या पशोपेश न करने वाला। सब काम में बहुत सावधान और विचार शील। मिलनसार नहीं। बिना कारण के न बोलने वाला। बिना सोचे कोई बात न करे। दूसरे के कार्य में नुकताचीनी करने वाला और सदा दोष निकालने वाला। प्रत्येक कार्य अपनी पद्धति से करने वाला, कोई उसके विषय में अधिक न जान पावे, बहुत गोपनीय। कार्य या व्यापार कला में बहुत चतुर एवं युक्ति पूर्ण। कौन काम कब करना इसका अच्छा ज्ञान और कार्य को सावधानी साहस और बुद्धिमानी से शांतिपूर्वक करे, खर्च में सावधान। उससे अच्छी स्थिति वालों की सहायता और रक्षा प्राप्त हो।

(७) तुला—साधारण गठन, साधारण ऊँचा व पतला, सुंदर वर्ण, साधारण उजला और देखने योग्य, स्वभाव ममतालु, मित्र वत्सल, विलासी, अस्थिर, बुद्धिमान्, काव्य कला का प्रेमी, अशांत और अस्थिर चित्त, शील स्वभाव और रहन सहन परिवर्तन शील, व्यर्थ खर्च करने वाला, दान की ओर प्रवृत्ति, स्वच्छ हृदय, दूसरों की सहायता करने की ओर झुकाव, मिलनसार, संगीत प्रिय, स्वच्छता से रहने वाला, प्रसन्न और शांत स्वभाव, ठीक और सच्चा वर्ताव, सदा दया और न्याय का वर्ताव करे, शीघ्र क्रोध में आने वाला और सरलता से शांत होने वाला, उच्च और प्रभाव शील स्थिति वाले उसके सहायक और मित्र हों।

(८) वृश्चिक—गठन व शरीर मध्यम आकार का, ऊंचाई मध्यम, चलने में तिरछा चले, नाक नुकीली, स्वभाव क्रोधी, कपटी, साहसी, आत्म विश्वासी, परिश्रमी, निश्चयी व ढीठ, वैद्यक शस्त्रक्रिया रसायनशास्त्र, सिपाही गिरी व इंजीनियर के समान कोई धंधा करने से लाभ होता है, व्यापार से लाभ हो, सावधान और बहुत झगड़ालू, झगड़ने में परिणाम या हानि का विचार न करे और हठ से निश्चय पूर्वक झगड़ा चालू रखे, स्वभाव मे व्यसनी और बे रोक, अपना स्वास्थ्य बिगाड़े, अपने ध्येय प्राप्त करने का अति परिश्रम करे, बदला लेने वाला, सरलता से उत्तेजित होने वाला, स्पष्ट बात करने में कोई पशोपेश न करे, जीवन में उच्च स्थिति रहे, अपने वर्ताव से दूसरों को डर उत्पन्न करे, उससे मतभेद करने वाले का विरोधी, काम काज में संक्षिप्तता।

(९) धनु—ऊंचा शरीर, मजबूत, गठोला बदन, सुन्दर गौर वर्ण का दूसरे पर सरलता से अपनी छाप डालने वाला, लम्बा चेहरा, गंजा, निडर साहसी, स्पष्ट वक्ता, यात्रा, खेल, शिक्षा वेदान्त विषय, धार्मिक विषय, कानून का प्रेमी, सरल और स्वच्छ हृदय, सत्य और न्याय के लिए बहुत प्रयत्न करे, उच्च आत्मा, पारितोषिक का विचार कर काम करने वाला, किसी बात को अच्छी प्रकार समझे। अपने गुण से उच्च स्थिति प्राप्त करे, तत्त्व ज्ञान की ओर मन का झुकाव रहे। धन सम्पत्ति आदि को असत्य समझे, धर्म और तत्त्व ज्ञान के कार्य में बहुत प्रेम, बिना दिखावट के शांत जीवन व्यतीत करे, उसका जीवन मनुष्य की सेवा में लगा रहे, दूसरों के दुःख के लिये अपने सुख का भी त्याग करे, अपने कुटुम्ब और जाति में वह बहुत चतुर और स्मरणीय होगा, उसके बहुत से आश्रित और सेवक रहें।

(१०) मकर—साधारण मध्यम शरीर, दुबला, बड़ी नाक, पूर्व आयु में अशक्त, ठुड्डी लम्बी आगे बढ़ी हुई, लम्बी गर्दन, सकरी छाती, दाढ़ी में थोड़े बाल, बाल काले व मजबूत, आत्म विश्वासी महत्त्वाकांक्षा, दीर्घ उद्योगी, टीका टिप्पणी करने वाला, स्वार्थी, लोभी, मोजी, उत्तर वय मे आगे प्रसिद्ध होता है। महत्त्वाकांक्षी होने से अधिकार व सम्पत्ति के लिए अनेक प्रयत्न, सब कार्य में बहुत उत्साही, दृढ़तापूर्वक कार्य करने वाला, जो उसे हानि पहुँचावे उसका बदला लेने वाला, दूसरे के विचारों की कुछ परवाह न कर अपने विचार स्पष्ट प्रगट करे, कटाक्ष करे, शंकित चित्त, शंका के कार्य में सावधानी से विचार पूर्वक कार्य करे, ईश्वर और भक्त को मानने वाला, अपने आश्रितों के कार्य साधन मे चतुर, अधिक जांच पड़ताल करने वाला नहीं केवल अपने काम की परवाह करने वाला, अपनी कीर्ति प्राप्त करने का प्रयत्न शील, मित्रों और सम्बन्धियों में मान-नीय और प्रसिद्ध होने का इच्छुक।

(११) कुंभ—रूप साधारण सुन्दर, शरीर का गठन मध्यम, शरीर बलवान्, वर्ण साधारण उजला, विद्वान्, अच्छा स्वभाव, निश्चयी, व्यवहार कुशल, चतुर, विद्याव्यसनी, ज्ञान अधिक, मार्मिक, सार्वजनिक संस्था में काम करने से लाभ, दयालु, दूसरों के कार्य में सहायता पहुँचाने वाला, दूसरों का कष्ट न देख सकने वाला, दूसरों का विचार भाव

व मन समझने और अध्ययन करने वाला, ईश्वर धर्म और तत्त्वज्ञान में प्रेम और विश्वास, पाप और अधर्म से डरे, प्रसन्न चित्त रहे, अच्छा नाम और कीर्ति प्राप्त करे, धनवान् और प्रिय हो, कोई कार्य सरलता पूर्वक कर सके, दूसरे की स्त्रियों का इच्छुक और प्रेमी, बड़े लोगों से मित्रता. प्रभावशाली और मिलनसार, बड़े लोगों में मित्रता, कभी-कभी सिर दर्द, उदर पीड़ा, अजीर्ण आदि अन्य प्रकार के उदर रोग से पीड़ा आदि।

(१२) मीन—शरीर साधारण ठिंगना, मोटा एवं मांसल शरीर, हाथ पांव कम लंबे। शरीर प्रकृति से अशक्त व रोगी, सरलमार्गी, अच्छे स्वभाव वाला, आलसी, अस्थिर, चंचल चित्त, धार्मिक, ममतालु, धार्मिक संस्था औषधालय आदि से लाभ, संगीत प्रेमी, लेखन कला से लाभ हो, सदा आनन्द का इच्छुक, अधिक से अधिक आनन्द, शांति और सरल जीवन प्राप्ति का ध्यान रहे। इससे पैसे की परवाह न कर बहुत पैसा खर्च करे। कविता और लेखन में बुद्धि और इसमें आनन्द, सदा काम में लगा रहे व्यर्थ समय न जाने दे, कभी भी अपने काम में फिजूल खर्च न करे। विश्वसनीय, आँख बंद कर विश्वास कर लेवे, बचपन और आरम्भ आयु में बहुत खतरे से बचे, शत्रु से या धोखा बाजी में धन की हानि, कभी-कभी डरपोक कभी अवसर पर साहसी, अनिश्चित मन की दशा में कभी अच्छा अवसर हाथ से निकल जाने दे, संगीत नृत्य, नाटक, ललित कला में रुचि और आनन्द, उसके प्रसिद्ध मित्र रहें।

लग्न से विशेष विचार—लग्न में जब कोई ग्रह न हो तब इन राशियों का प्रभाव प्रगट होता है। यदि लग्न में कोई ग्रह हों या लग्न के अंश पर बलवान् ग्रह का दृष्टि योग हो तो अपने धर्म के प्रमाण से यहाँ वर्णित लग्न के स्वरूप स्वभाव में अन्तर पड़ जायगा।

जब लग्न में कोई ग्रह न हो उस समय चन्द्र या जन्म लग्नेश जिस राशि पर हो इन दोनों में जो बली हो या केन्द्री हो उस राशि के गुण धर्म व स्वरूप के प्रमाण से विचार कर लग्न से प्राप्त होने वाले स्वरूप व स्वभाव में अन्तर जान लेना। जब एक राशि में चार या अधिक ग्रह हों उस समय उस राशि के गुण धर्म उस मनुष्य के शरीर में स्पष्ट दिखाई देंगे।

काल पुरुष के अंग के अनुसार इन राशियों का कुण्डली से विचारने का उदाहरण

जन्म में जिस राशि का लग्न हो उस लग्न से १२ भाव में जो राशियाँ हैं उनमें से कहीं पापग्रह हों तो राशि के अनुसार जो कालपुरुष का अंग हो उस अंग मे उस ग्रह की दशा में दुःख होगा।

यदि शुभग्रह की दृष्टि उस पापग्रह पर हो तो उस शुभग्रह कीं दशा में वह दुःख अच्छा हो जायगा।
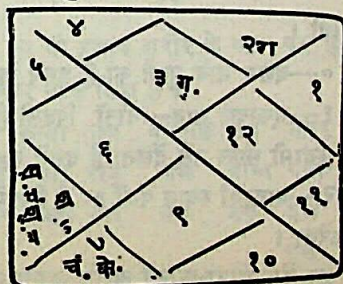
यदि वह भाव शुभ और पापग्रह दोनों से युक्त हो तो यदि शुभ बलवान् होगा तो दुःख नहीं होने देगा।

यदि यहां केवल शुभग्रह हो तो उस अंग में व्याधि न होगी अपितु वह अंग पुष्ट होने की संभावना है।

१—यहाँ कुंडली में मिथुन लग्न है वह जातक का मुख है वहाँ कोई पापग्रह नहीं है तो मुख पर कोई चिह्न न होगा। लग्न में गुरु है इससे कपाल और सिर सुन्दर देखने योग्य होगा।

२—दूसरे स्थान में कर्क राशि है वह मुख हुआ मुख स्वच्छ होगा क्योंकि वहाँ कोई ग्रह नहीं है।

३—तृतीय में सिंह है तृतीय छाती का स्थान है वहाँ कोई ग्रह न होने से वह स्वस्थ होगा।

४—चतुर्थस्थान हृदय का है कन्या राशि है कोई ग्रह नहीं है तो हृदय स्वच्छ होगा।

५—पञ्चम स्थान पेट का है जिसमें तुला राशि है इसमें ५ ग्रह हैं जिसमें ३ पापग्रह हैं इनमें शनि मंगल अस्तंगत हैं। अस्तंगत होने के कारण ये प्रभावहीन हो गये परन्तु उनकी दशा में पेट में पीड़ा होगी। गर्मी का उपद्रव करेगा। इसमें सूर्य भी है जो नीच का है इससे वह २ वर्ष की आयु तक व्याधि ग्रस्त रहेगा। परन्तु उस स्थान में शुभ ग्रह भी हैं वे उस व्याधि को ठीक कर देंगे और पेट के भाग में दाग का चिह्न नहीं के बराबर होगा।

६—छठा स्थान कटि का है जिसमें पापग्रह केतु है यह वृश्चिक राशि में है। जिस समय गोचर में वृश्चिक राशिका केतु आयेगा तो खाज आदि चर्म रोग उत्पन्न करेगा। परन्तु उस स्थान में चन्द्र भी है वह अपनी दशा में रोग अच्छा कर देगा।

७—सप्तम स्थान नाभि के नीचे का है—कोई ग्रह न होने से वह निरोग होगा।

८—अष्टम स्थान गुप्तांग का है कोई ग्रह वहाँ न होने से निरोग होगा।

९—नवम स्थान दोनों जाँघ और वृषण का है यह स्थान शनि का (कुम्भ राशि) है। शनि उच्च का है और शनि से त्रिकोण पंचम स्थान में है शनि पापग्रह है इससे वह अपनी दशा में दाहिनी ओर वृषण की वृद्धि करेगा परन्तु वह हानिकारक नहीं होगी।

१०—दशम भाव घुटने का है इसमें ग्रह न होने से निरोग होंगे।

११—एकादश भाव—दोनों पिंडली हैं कोई ग्रह नहीं। परन्तु यहाँ मेष राशि है जिसका स्वामी मंगल उसे देखता है इससे वहाँ कष्ट देगा क्योंकि मंगल पापग्रह है।

१२—बारहवाँ स्थान पंजों का है जिसमें राहु पापग्रह है इससे वहाँ कोई दाग या चिह्न करेगा।

शरीर का रंग गोरा-काला आदि जानना

(१) जन्म लग्न से चन्द्र किसी भी राशि में हो परन्तु वह चन्द्र जिस राशि के

नवांश में हो उस सरीखा रंग होगा। कई चन्द्र के होरा से भी विचार करते हैं। चन्द्र का होरा गौर वर्ण देता है सूर्य का श्याम वर्ण।

चन्द्र के नवांश के अनुसार इस प्रकार वर्ण होता है—

सूर्य—श्याम वर्ण, चन्द्र—गौर वर्ण, मंगल—रक्त गौर (ललाई लिए गौर वर्ण), बुध—श्याम वर्ण, गुरु—तप्त कंचन वर्ण, शुक्र—श्याम वर्ण किंतु चित्ताकर्षक, शनि—काला।

(२) लग्न में जो बलवान् ग्रह हो उस सरीखा वर्ण।

सूर्य—ताम्र वर्ण, चन्द्र—गौर वर्ण, मंगल रक्त गौर, बुध—स्वच्छ श्याम वर्ण अर्थात् काला नहीं, गुरु—चित्ताकर्षक कंचन वर्ण, शुक्र—रंग गोरा न हो पर चित्ताकर्षक हो, शनि—काला वर्ण।

(३) चन्द्र के नवांश पति और लग्न स्पष्ट के समीप कोई ग्रह हो तो दोनों के मिश्रित रंग के अनुसार होगा। जैसे चन्द्र नवांश में गुरु और लग्न में सूर्य हो तो तप्त कंचन और ताम्र वर्ण मिश्रित होगा।

(४) लग्न में कोई ग्रह न हो तो राशि के नवांश स्वामी के सरीखा रंग होगा।

(५) इसी प्रकार लग्नेश, लग्न नवांश, चन्द्र, नवांश, और लग्न गत ग्रह के मिश्रण का विचार कर रंग का विचार करना। इन सब में जो बलवान् ग्रह हो उसका ध्यान रखना। जैसे ग्रह बली हो तो ग्रह नवांश तुल्य, राशि बली हो तो राशि नवांश तुल्य रंग होगा।

शरीर का गठन विचार

१—शरीर ५ तत्त्व से बना है और जल का अंश कितना है जानने को वह ग्रह सजल है या निर्जल नीचे दिया है।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश (तेज)	जल	वायु
जल	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	जल	शुष्क

इसके अनुसार जातक के शरीर का गठन आदि का अनुमान होता है।

२—केवल ग्रह का ही नहीं, राशि का भी प्रभाव शरीर के गठन पर होता है इसलिये राशियों का तत्त्व और जल का विचार नीचे दिया है।

राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
तत्त्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
जल	जल	जल	निर्जल	जल	निर्जल	निर्जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल
कितना				पूर्ण						पूर्ण		पूर्ण
	१/४	१/२	०	१	०	०	१/४	१/४	१/२	१	१/२	१

३—(क) ४-८-१२ राशियाँ जल तत्त्व की हैं परन्तु पूर्ण अर्द्ध भाव आदि जल के

विचार से कर्क और मीन जल तत्व में पूर्ण जल राशि हैं। वृश्चिक में कुछ न्यूनता है क्योंकि वह पाद जल (¼) राशि है।

(ख) इसी प्रकार पृथ्वी तत्त्व की राशि १०-२-६ में मकर पूर्ण जल राशि है। इससे मकर के शरीर में स्थूलता और दृढ़ता दोनों प्रदान करने की शक्ति है। वृष को ½ (अर्द्ध) जल होने के कारण स्थूलता में कमी है। कन्या ये जल शून्य है इससे वह राशि दृढ़ता तो अवश्य देगी परन्तु स्थूल कुछ नहीं होगी।

(ग) अग्नि राशियों में धन अर्द्ध जल, मेष पादजल और सिंह निर्जल है इससे शरीर में स्थूलता प्रदान करने की शक्ति में मेष से सिंह कम है।

(घ) वायु राशियों में कुंभ अर्द्धजल, तुला पादजल, मिथुन निर्जल है स्थूलता प्रदान करने में एक दूसरे से निर्बल हैं। इन सब बातों के विचार करने से शरीर के गठन का अनुमान होता है।

४—जल राशि और जल ग्रह के प्रभाव से शरीर में जल की अधिकता होने से मोटे पन की संभावना है।

(क) वायु राशि, अग्नि राशि और शुष्क ग्रह के प्रभाव से शरीर में दुर्बलता आती है।

(ख) पृथ्वी राशि और पृथ्वी ग्रह के प्रभाव से शरीर में दृढ़ता आती है पृथ्वी तत्त्व से अस्थि आदि की बनावट होती है। अस्थि दृढ़ होती है जल तत्त्व से शरीर में जल का अंश बहुत होता है। दृढ़ शरीर वाले की हड्डियाँ दृढ़ होंगी। असाधारण मोटे मनुष्य के शरीर में जल का अंश बहुत होता है। इन सब बातों का राशि और ग्रह के योग से विचार करने से शरीर का अनुमान होता है।

५—इससे शरीर का विचार करने को इन बातों पर ध्यान देना।

(अ) लग्न राशि कैसी है (क) लग्नेश कैसा है (ख) लग्नेश कौन राशि में है (ग) लग्नेश के साथी ग्रह कैसे हैं (घ) लग्नेश त्रिक में तो नहीं है (ङ) लग्न में ग्रह कैसा है। (च) लग्न पर कैसे ग्रह की दृष्टि है (छ) लग्न से गुरु का क्या सम्बन्ध है और गुरु कैसा है इन सब पर विचार कर नीचे बताई बातों पर ध्यान देकर शरीर के गठन का अनुमान करना।

६—(क) जल राशि हो, वहाँ जल ग्रह हो—शरीर अवश्य मोटा होगा। (ख) लग्नेश और लग्न जल राशि—खूब स्थूल शरीर, (ग) लग्न में अग्नि राशि और अग्नि ग्रह भी हो—मनुष्य बली होगा परन्तु शरीर की पुष्टि तथा मुटाई न होगी। (घ)—लग्ने में अग्नि व वायु राशि लग्नेश पृथ्वी राशि गत हड्डी साधारण दृढ़ और पुष्ट (ङ) लग्न में अग्नि व वायु राशि लग्न जल राशि गति शरीर स्थूल व मोटा (च) लग्न में अग्नि व वायु राशि शरीर ठोस पर मोटा हड्डी नहीं होती (छ) लग्न वायुराशि व वायु ग्रह व शनि दुबला पर तीक्ष्ण बुद्धि, (ज) लग्न पृथ्वी राशि और पृथ्वी ग्रह नाटा या दृढ़काय हो। (झ) लग्न पृथ्वी राशि लग्नेश पृथ्वी राशि हड्डी असाधारण रूप से

दृढ़ और स्थूल (ञ) लग्न पृथ्वी राशि लग्नेश जल राशि हड्डी दृढ़, मध्यम स्थूल शरीर (ट) लग्न पृथ्वी राशि लग्नेश अग्नि व वायु राशि आन्तरिक बल होगा। हड्डी दृढ़ पर शरीर स्थूल न होगा।

७—शुष्क देह (कृश शरीर) के अन्य योग

(अ) लग्न में शुष्क ग्रह, (क) लग्न में निर्जल राशि, (ख) लग्नेश निर्जल राशि में या शुष्क ग्रह के साथ. (ग) लग्नेश त्रिक में या लग्नेश जहाँ है उस राशि का स्वामी त्रिक में हो, (घ) लग्नेश का नवांशेश शुष्क ग्रह के साथ, (ङ) लग्न निर्जल पाप युक्त या दृष्ट, (च) लग्नेश शुष्क ग्रह, या शुष्क ग्रह से युक्त, शुष्क ग्रह के नवांश में या मिथुन या सिंह राशि के नवांश में हो तो दुर्बल शरीर होगा, (छ) शनि व मंगल दुर्बल पन उत्पन्न करता है। (ज) लग्नेश अष्टम में शुष्क राशि में हो तो दुर्बल होने के अतिरिक्त क्लेशयुक्त शरीर रहे। (झ) शुष्क राशि में जन्म हो और वहाँ सब शुष्क ग्रह हों तो दुबला होने के अतिरिक्त स्वास्थ्य खराब होगा लगातार बीमारी दमा कब्ज बवासीर आदि व्याधियाँ होंगी। (ञ) जन्म शुष्क लग्न में हो और उसका स्वामी गुरु या शुक्र के साथ हो तो दुर्बल नहीं होगा।

स्थूल शरीर होने के अन्य योग

(अ) लग्न जल राशि शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो तो स्थूल शरीर होगा। (क) लग्नेश जल ग्रह बली हो शुभ ग्रह युक्त भी हो तो दृढ़ शरीर होगा (ख) लग्नेश जल ग्रह और जल राशि में शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो दृढ़ स्थूल शरीर (ग) लग्नेश बली हो जल ग्रह हो अन्य जल ग्रह युक्त हो तो स्थूल शरीर, (घ) लग्न में शुभ ग्रह की राशि, लग्नेश का नवांशेश जलराशि में हो तो स्थूल शरीर (ङ) लग्न में गुरु या जल राशिस्थ गुरु की दृष्टि हो या लग्न शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो असाधारण स्थूल शरीर हो। (च) बुध या चंद्र केन्द्र में हो तो स्थूल शरीर हो। (छ) लग्नेश का नवांशेश जल राशि में हो लग्न शुभ राशि में हो बुरे ग्रह की योग दृष्टि न हो तो शरीर पुष्ट होगा, (ज) जल ग्रह चतुर्थ स्थान में या जल राशि में हो तो अधिक बलवान् होगा (झ) मोटा आदमी कोई दिखे तो समझना गुरु या चन्द्र लग्न में होगा यदि उपरोक्त बलवान् योग में पाप दृष्टि हो तो पुष्टता नष्ट हो जाती है और वह साधारण देह का हो जाता है। (ट) लग्नेश बलवान् होकर शुभग्रह की राशि में हो तो शरीर पुष्ट होगा।

लग्न के नवांशों द्वारा शरीर का विचार

(१) सूर्य—साधारण मोटा और चिपटा।

(२) चंद्र—उन्नत देह, सुन्दर नेत्र, कुछ कृष्ण वर्ण, सुन्दर केश।

(३) मंगल—कुछ नाटा, नेत्र कुछ लाल, दृढ़ शरीर।

(४) बुध—मध्यम उन्नत, (मझोला कद) नेत्र कोण लाल, शरीर की नसें निकली देखने में कमछड़।

(५) गुरु—कुछ पीले नेत्र, गम्भीर आवाज, छाती चौड़ी, ऊँचा शरीर, मध्यम उन्नत।

(६) शुक्र—हाथ लम्बे, मुख स्थूल, सुन्दर चंचल नेत्र, विलासी कन्धे के नीचे का भाग स्थूल।

(७) शनि—आँख के नीचे का हिस्सा धसा हुआ, शरीर दुर्बल पर लम्बा, नसें और नाक स्थूल, कमर के नीचे दुर्बलता।

ये शुभ ग्रह के प्रभाव से सुन्दर, पापग्रह युक्त या दृष्ट होने से कुरूप तथा शारीरिक कष्ट हो। लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो शुभ ग्रह दृष्ट हो पाप दृष्ट न हो तो दीर्घायु, गुणवान् एवं राजलक्ष्मी का सुख प्राप्त करे।

लग्न में ग्रह के अनुसार शरीर

(१) रवि—शरीर पीला काला सा रंग का, कड़ा।

(२) चन्द्र—बहुत कर गठन मध्यम।

(३) मंगल—चेहरे पर गाढ़ा, चोट, तिल या लाल दाग हो। शरीर का रंग तामड़ा गठन मजबूत व बड़ा, अंग में अधिक चपलता लाता है।

(४) बुध—गठन दुबला पतला व छोटा, चेहरे में चपलता व चंचलता।

(५) गुरु—शरीर का रंग गौर, चेहरा व कपाल भव्य।

(६) शुक्र—शरीर का रंग सुन्दर, चेहरा मिष्ट एवं मोहक।

(७) शनि—शरीर का रंग काला, मुख बड़ा लम्बा।

लग्न में कोई ग्रह हो या किसी ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो फल में अन्तर पड़ जाता हैं। नवांश पति के अनुसार लग्न रहने पर भी लग्न में जो ग्रह हो या लग्न को देखता हो उस ग्रह के प्रभाव का भी कुछ आभास पड़ जाता है। इसी प्रकार किसी ग्रह के उच्च या बलवान् होने के कारण उस ग्रह का प्रभाव बढ़ जाता है। नीच आदि स्थिति में प्रभाव घट जाता है। परन्तु कोई ग्रह बलवान् होकर लग्न में पड़े या उसकी दृष्टि लग्न पर हो तो उस ग्रह का लक्षण विशेष रूप से जातक के गठन आदि में अनुभव होगा।

राशि अनुसार शरीर का गठन

ऊँचा—३–५–९–११ राशि, मध्यम—१–६–७ राशि, ठिगना—२–४–८–१०–१२ राशि। शरीर ऊँचा और बड़ा—पुरुष राशि १–३–५–७–९–११ राशि में।

छोटा कद होने का योग

१—लग्न में शनि हो स्वगृह हो या बुध युक्त शनि चतुर्थ में हो अति छोटा कद हो।

२—मंगल स्वगृही, बुध ३ या ४ भाव में हो, शनि लग्न में हो तो ह्रस्व (छोटा कद का) हो।

३—मंगल स्वगृही, बुध ३ या ४ भाव में हो, लग्नेश शनि युक्त कहीं हो तो ठिगना कद हो।

ह्रस्व दीर्घ अंग

ह्रस्व राशियाँ (छोटी)—१, २, ११, १२ राशियाँ ।

सम (न छोटी न बड़ी)—३, ४, ९, १० राशियाँ ।

दीर्घ (बड़ी)—५, ६, ७, ८ राशियाँ ।

ह्रस्व दीर्घ राशियों के अंग

राशि	मेष मीन	वृष कुंभ	मिथुन मकर	कर्क धन	सिंह वृश्चिक	कन्या तुला	योग
अंश अंग	२०	२४	२८	३२	३६	४०	= १८० + १८० ३६० अंश

ह्रस्व दीर्घ ग्रह	ह्रस्व रवि बुध शुक्र	सम मंगल	दीर्घ शनि चंद्र
अंग	सम	ह्रस्व	दीर्घ

१—काल पुरुष के अंग के अनुसार ये राशियाँ लग्न से लेकर सिर से आरंभ कर प्रत्येक अंग के छोटे बड़े होने का विचार करे ।

२—ग्रह दीर्घ हो राशि में बैठा हो तो उस राशि का अंग दीर्घ होगा, ह्रस्व से ह्रस्व, मध्यम से मध्यम अंग कहना ।

३—जिस अंग में राशि या राशिस्वामी दीर्घ हो वह अंग दीर्घ होगा, ह्रस्व हो तो ह्रस्व जानो ।

४—दो या अधिक ग्रह किसी अंग की राशि में पड़ें तो सब में जो बलवान् होगा उसीका प्रभाव अनुमान में आयेगा ।

५—वहाँ कोई ग्रह न हो तो उसका स्वामी जैसी राशि में पड़े उस राशि से विचारना ।

६—यदि वह स्वामी जल ग्रह से युक्त हो तो उस अंग में स्थूलता विशेष रूप से होगी ।

७—इसी प्रकार शुक्र ग्रह द्वारा युक्त या दृष्ट होने से कृशता या दुर्बलता आयेगी ।

८—उपरोक्त बातों के विचार के लिये देखो—

(क) अंग निर्दिष्ट किस राशि का है । (ख) वहाँ यदि ग्रह है तो कैसा है या वह किस राशि का स्वामी है । (ग) उस अंग राशि का स्वामी किस राशि में है । (घ) अंग राशि का या उसके स्वामी का कोई जल ग्रह से योग होता है या नहीं ।

अन्य योग सिर मुख रूप आदि के

(१) सिर—लग्न के ह्रस्व दीर्घ अनुसार छोटा बड़ा या मध्यम सिर होगा ।

(२) मुख एवं रूप—

क—द्वितीय भाव काल पुरुष का मुख है वहाँ शुभ ग्रह हो तो रूपवान् होगा ।

ख—द्वितीयेश केन्द्र में हो शुभ दृष्ट हो या द्वितीय में शुभ ग्रह हो तो सुन्दर आकर्षक मुख होगा ।

ग—द्वितीयेश केन्द्र में उच्च में मित्र स्थानी या अपने वर्ग में हो या द्वितीयेश जिस घर में हो उसका स्वामी गौपुरांश में हो तो उसका मुख पूर्ण होगा और धनी होगा।

घ—यदि पाप ग्रह दूसरे में हो या द्वितीयेश नीच में हो या पाप युक्त हो या पाप दृष्ट हो तो वह कुरूप होगा।

ङ—कोई कुरूप होते हैं पर धनी भी होते हैं। दूसरा घर धन का भी है। मुख की दिखावट को पहिले लग्नेश से विचारना पश्चात् द्वितीयेश से भी विचारना। जब दूसरा घर अच्छे ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो बहुत धन होगा। परन्तु धन स्वामी (कारक) गुरु से गिनने पर दुष्ट स्थान में हो तो मुख तो सुन्दर होगा परन्तु धन थोड़ा होगा।

च—सुन्दरता या कुरूपता द्वितीय भाव, उसके स्वामी और द्वितीयेश जिस राशि पर हो उसके स्वामी के शुभ प्रभाव पर निर्भर है।

छ—मुख का अचानक कुरूप हो जाना शुभाशुभ ग्रहों की दशा अंतर्दशा पर निर्भर है। उपरोक्त बुरे ग्रहों की दशा में कुरूपता होती है।

ज—लग्न में शुभ हो तो सुरूप, पाप ग्रह हो तो कुरूप होगा।

झ—द्वितीय भाव में बलवान् केतु हो तो लम्बा मुख हो या बड़ा मुख हो।

ञ—पिछले बताये ३६ द्रेष्काण के अनुसार अंग विचार कर सिर के दाहिने या बायें अंग में बुरे ग्रहों के प्रभाव से चोट आदि विचारना।

०

अध्याय—१३

भिन्न भिन्न राशि में ग्रहों का फल

१—सूर्य का राशि अनुसार फल

फल सम्बन्ध से भिन्न भिन्न मत हैं उनको भी लिख देना उचित होगा।

(१) सूर्य मेष में—साहसी, रुधिर व पित्त विकार से विकृत देह, भूस्वामी, बड़ा बुद्धिमान्, बड़ा साहसी, पर का सदा हितेच्छुक (मान सा०) (जा० भ०)। विख्यात, चतुर, सर्वत्र फिरने वाला, थोड़ा धन, शस्त्र धारण से आजीविका, यदि सूर्य उच्चांश में हो तो उपरोक्त अल्पधन आदि फल नहीं होंगे, अच्छा फल होगा। सूर्य मेष के १०° तक परमोच्चांश में रहता है। शुभफल देता है। (वृ० जा०)

(२) सूर्य वृष में—सुगन्धित द्रव्य, पुष्प शैया, सुन्दर वस्त्र, अनेक पशुओं से अद्भुत सुख, जल से डरने वाला, मित्रता करने वाला, मनुष्यों को उनके योग्य हितकारक उपदेश करने वाला, (मान सा०) (जा० भ०)। वस्त्र सुगन्धित द्रव्य और पापकर्म से आजीविका, स्त्रियों से द्वेष, गाने बजाने में चतुर, (वृ० जा०)

(३) सूर्य मिथुन में—गणित शास्त्र की कला जाने या अगणित शास्त्र जानने वाला, श्रेष्ठ शक्ति, मनोहर, अद्भुत वाणी बोलने में अग्रणी, विनययुक्त, सर्वत्र विख्यात, नीति

में अति प्रवीण (मान सा०) (जा० भ०)। व्याकरण आदि विद्या व ज्योतिष शास्त्र जानने वाला, धनवान्, विद्या का धनी, क्लेश बुद्धि (जात० पारि०) (वृ० जा०)।

(४) सूर्य कर्क में—सौजन्य भाव से रहित अर्थात् मनुष्यता रहित, कलियुग के प्रभाव को अर्थात् काल को जानने वाला, पिता के वचन का निरादर करने वाला, धन-वानों में अग्रणी, (मान सा०) (जा० भ०)। तीक्ष्ण स्वभाव, निर्धन, पराया कार्य करने वाला, मार्ग आदि क्लेश से युक्त, (वृ० जा०) नादान (जा० पारि०)।

(५) सूर्य सिंह का—स्थिर बुद्धि, पराक्रमी, प्रभुता प्राप्त, अद्भुत कीर्ति, राजा का सेवक, सबको प्रसन्न या संतोष करने वाला, (मान सा०) (जा० भ०)। वन पर्वत तथा गोवंश इन स्थानों में प्रसन्न रहे, बलवान् और मूर्ख हो (वृ० जा०), सब कला रसज्ञ (जा० पारि०)।

(६) सूर्य कन्या का—राजा से धन प्राप्त करने वाला, कोमल वाणी, गीत का प्रेमी, महिमा युक्त, महिमा के कारण शत्रु का नाश हो, (मान सा०) (जा० भ०)। पुस्तक आदि लिखने वाला, चित्रकार, काव्य गणित इनका ज्ञानी, स्त्री के समान शरीर वाला, (वृ० जा०) सुवर्ण वाला (जा० पारि०)।

(७) सूर्य तुला का—राजा से प्रीत और भय प्राप्त, मनुष्यों से विरोध करने वाला, पापकर्म करने वाला, कलह करने में मन, अन्य की सेवा करने वाला या पराये काम में प्रेम रखने वाला, मणि और धन से रहित, (मान सा०) (जा० भ०)। मद्य बनाने वाला, मार्ग चलने में तत्पर, सुवर्णकार, अनुचित कर्म करने वाला, (वृ० जा०) साहसी (जा० पारि०)।

(८) सूर्य वृश्चिक का—कृपण, अतिशय कलह करने वाला, अतिक्रोधी, विष, अग्नि और शस्त्र से भय, माता पिता का विरोधी, उन्नति कभी नहीं करता, (मा० सा०) (जा० भ०)। उग्र स्वभाव, साहसी, विष सम्बन्धित कर्म से धन कमावे या उसका कमाया धन व्यर्थ जावे, शस्त्र विद्या में निपुण (वृ० जा०) पूज्य (जा० पारि०)।

(९) सूर्य धन का—स्वजनों या मित्रों से कार्य मात्र में क्रोध करने वाला, बड़ा विद्वान्, बहुत धन वाला, मित्रादि का पूजन करने वाला अर्थात् उनको मान देने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि से संतोष बढ़ाने वाला, (मान सा०) (जा० भ०)। सज्जनों का पूजक धनवान्, निरपेक्ष, तीक्ष्ण स्वभाव, वैद्य विद्या और शिल्प कर्म का ज्ञाता। निकृष्ट वाणिज्य (जा० पारि०)।

(१०) सूर्य मकर का—अपने पक्ष के कारण या शत्रु पक्ष के कारण भ्रमण करने वाला, उत्सव रहित, स्वजनों का विरोधी, धनहीन, सुख रहित, (मान सा०) (जा० भ०)। अपने कुल के अयोग्य नीच कर्म करने वाला, मूर्ख, निंद्य, पराये धन और पराये उपकार को भोगने वाला, (वृ० जा०) दक्ष (जा० पारि०)।

(११) सूर्य कुम्भ का—अतिशठ, सब के हित कार्य में सहयोग देनेवाला होकर भी सुहृद् भाव से रहित अर्थात् मित्रता रहित, मलिन, करुणा गुण से रहित रुधिर प्रकोप

वाला, सुखी, (मान सा०) (जा० भ०)। नीच कर्म करने वाला, पुत्रों के ऐश्वर्य से रहित, निर्धन, (वृ० जा०) पुत्रादि भाग्य से हीन (जा० पारि०)।

(१२) सूर्य मीन का—क्रय विक्रय से बहुत धनवान्, अपने जन द्वारा बाह्य सुख प्राप्त परन्तु बड़े भारी अंतरंग किसी भय से युक्त, बड़ा बुद्धिमान्, उसके वैभव और सौन्दर्य के कारण विस्तृत अद्भुत और चहुँओर यश पानेवाला (मान सा०) (जा० भ०)। जल से उत्पन्न मोती आदि रत्नों के व्यापार से ऐश्वर्य पावें, स्त्रियों का पूजनीय, (वृ० जा०) जल से और कृषि आदि से श्रीमान् हो (जा० पारि०)।

२—चन्द्र का राशिफल

(१) चन्द्र मेष का—स्थिर धन से युक्त, श्रेष्ठ जनों से रहित, पुत्र युक्त, अपनी स्त्री से पराजित, अद्भुत ऐश्वर्य के कारण सत्कीर्ति प्राप्त हो, (मान सा०)। कामी, भ्रमण शील, अस्थिर धन, शूरवीर, स्त्रियों का प्यारा, जल से भय, अति चपल, सेवा जानने वाला, (वृ० जा०)।

(२) चंद्र वृष का—गम्भीर विचार, उत्तम बुद्धि, शोभित शरीर, बड़ा कुशल, भोगी, विलासी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, काव्य करने वाला, कुशलता से सौख्य प्राप्त, (मान सा०) (जा० भ०) देने में उदार, क्लेश सहने वाला, उसका आज्ञा कोई भंग न करे, कुटुम्ब धन व पुत्र से रहित, सौभाग्य युक्त, सबका प्यारा, गाढ़े मित्र, (वृ० जा०)।

(३) चन्द्र मिथुन का—सबका प्रिय कर्ता, हाथ में मत्स्य रेखा, रति सुख भोगी, स्त्रियों को अतिप्रिय, सज्जनता युक्त, मनुष्य इसका गौरव करते हैं, देव कार्य में लीन, (मान सा०) (जा० भ०)। काम शास्त्र में चतुर, स्त्रियों का अति अभिलाषी, शास्त्रज्ञ, दूतकर्म, चतुर बुद्धि, सबको हँसाने वाला, जुआड़ी, मीठी बोली, नाच गीत का प्रेमी, मन की बात चिह्नों से जानने वाला।

(४) चन्द्र कर्क का—शास्त्र व गान विद्या कला आदि का ज्ञाता, शारीरिक बल से निर्मल व्यापार वाला, पुष्प गन्ध प्रेमी, जल में क्रीड़ा करने वाला, भूमि सहित, श्रेष्ठ बुद्धि से मनोरथ प्राप्त करे या धन सम्पादन करे, (मान सा०) (जा० भा०)। कुटिल, शीघ्र गामी, अच्छे मित्र, स्त्री के वश, ज्योतिष शास्त्र ज्ञाता, बहुत घर हों, कभी धनी कभी निर्धन, मित्रों का प्यारा, जलाशय बगीचा आदि से प्रेम (वृ० जा०)।

(५) चन्द्र सिंह का—वन पर्वत में जाने से मनोरथ सिद्ध करने वाला, घर में कलह कारक, जिससे विकलता प्राप्ति हो। पेट में पीड़ा, तेज से रहित शरीर, यशहीन (जा० भ०) (मान सा०)। क्रोधी, अल्प सन्तान, स्त्रियों का द्वेषी, निकम्मे क्रोध करे, दाता, पराक्रमी, अभिमानी, मातृ भक्त, मानसिक पीड़ा, मांस वन पर्वत प्रिय (वृ० जा०)।

(६) चन्द्र कन्या का—स्त्रियों के साथ अधिक विलास, कौतुक युक्त, श्रेष्ठ शील, कन्या सन्तान के उत्सव युक्त, श्रेष्ठ भाग्यवान्, निर्बल आचरण, (जा० भ०) (मान सा०)। मधुर, वाणी, सत्य वक्ता, गीत नृत्य वाद्य आदि का प्रेमी, पुस्तक, चित्र कर्म आदि में

निपुण, शास्त्रार्थ ज्ञाता, धर्मात्मा, बुद्धिमान्, संभोग में चंचल, पराया घर व धन से युक्त, परदेश वासी, अल्प पुत्र अधिक कन्या (वृ० जा०)।

(७) चन्द्र तुला का—बैलों या घोड़ों आदि के बेचने खरीदने से जीविका चलावे, पराक्रमी, देव ब्राह्मण पूजक, दानी, बहुत स्त्रियाँ, पराक्रम से वैभव और प्रतिष्ठा मानने वाला, (मान सा०) (जा० भ०)। देव ब्राह्मण साधु का पूजक, बुद्धिमान्, पर धन आदि में निर्लोभी, स्त्री के वशीभूत, धनवान्, फिरने वाला, अंगहीन, क्रय-विक्रय व्यापार जानने वाला, रोगी, कुटुम्ब का हितकारी, बन्धु जनों से त्यक्त (वृ० जा०)।

(८) वृश्चिक का चन्द्र—राजा से या जुआ से धन का नाश, कलह प्रिय, साहस हीन, दुष्ट मन, खोटे ख्याल वाला, शांति रहित, अन्त में रोगी (मान०) (जा० भ०)। माता-पिता गुरु से रहित, राज पूज्य, गुप्त पापी, बाल्यावस्था में रोगी, विषम स्वभाव (वृ० जा०)।

(९) धन का चन्द्र—अनेक कला कुशल, संगीतज्ञ, सरल वाणी, पूर्ण धनी होकर भी कृपण, निर्मलता युक्त, (मानसा०) (जा० भ०)। पितृ धन युक्त, दानी, कवि, बलवान्, बोलने में चतुर, उद्यमी, लिपि, चित्र आदि शिल्प कर्म ज्ञाता, अति प्रगल्भ, धर्मज्ञ, बन्धु वैरी, केवल प्रीत के बश में होने वाला (वृ० जा०)।

(१०) मकर का चन्द्र—शीत से डरने वाला, गायन विद्या का ज्ञाता, किंचित् क्रोधी, अति कामी, अपने कुल के अनुकूल उत्तम वृत्ति करनेवाला (मान० सा०)। अपनी स्त्री पुत्रों से प्रेम, दम्भी, मिथ्या धर्म करने वाला, सर्व प्रिय विद्वान्, लोभी, बलवान्, काव्य करने वाला, फिरने वाला, निर्लज्ज, निर्दय (वृ० जा०)।

(११) कुम्भ का चंद्र—अति आलसी, पराये पुत्र से प्रीत, अत्यन्त चतुर, वैरियों का नाशक (मान सा०)। पर स्त्री पर धन और पाप कर्म में तत्पर, मित्रों का प्रिय, वृद्धि क्षय से युक्त, पुष्प चन्दन प्रिय (वृ० जा०)।

(१२) मीन का चन्द्र—जितेन्द्रिय, गुणवान्, अतिनिपुण, निर्मल बुद्धि, शस्त्र विद्या में प्रवीण, चंचल, जल की लालसा वाला (मान०) (जा० भ०)। जल रत्न के क्रय-विक्रय से उत्पन्न धन, पराये कमाये धन का भोगी, स्त्री विषय वस्त्रादि में अनुरक्त, शत्रु को जीतने वाला, निधि (भूमिगत द्रव्य) आदि का भोगी, शास्त्रज्ञ पंडित (वृ० जा०)।

३ मंगल का राशि फल

(१) मंगल मेष का—राजा से प्राप्त भूमि, मान और धन से परिपूर्ण, सुन्दर वाणी, तेजस्वी, साहसी, निरन्तर, सब मनुष्यों का प्यारा, (मान० सा०) (जा० भ०)। स्वगृही १-८ राशि का—राज पूजित, फिरने वाला, सेनापति, व्यापारी, धनवान्, चोर, चंचल इन्द्रिय (विषयी), शरीर में चोट हो (वृ० जा०)।

(२) मंगल वृष का—घर और धन का थोड़ा सुख, शत्रुओं से युक्त, दूसरे के घर में वास करने वाला, अत्यन्त पुत्र जनित पीड़ा को प्राप्त, अनीति और अग्नि रोग

सहित (जा० भ०) (मान०)। शुक्रगृही (२-७ राशि का)—स्त्री के वश में रहने वाला, मित्रों के विरुद्ध रहने वाला, पर स्त्री गामी, इन्द्र जाली, सुन्दर शृंगार युक्त, डरने वाला, स्नेह हीन, (बृ० जा०)।

(३) मंगल मिथुन का—बहुत कलाओं का ज्ञाता, स्वघर में परदेश जाने में बहुत मन, प्रिय पुत्र आदिकों से सौख्य पाने वाला, कुटुम्बी, पुरुषों से कलह करने वाला (जा० भ०) (मान सा०)। बुध गृही (३-६ राशि का)—तेजस्वी पुत्रवान्, मित्र रहित, परोपकारी, कृतज्ञ, गायन विद्या तथा युद्ध विद्या को जानने वाला, कृपण, निर्भय, मांगने वाला (बृ० जा०)।

(४) मंगल कर्क का—पराये घर का वासी, अत्यन्त दीन, बुद्धि हीन, शत्रुओं के उपद्रव से शक्ति ह्रास के कारण शान्त, स्त्री से कलह करने वाला (जा० भ०) (मान० सा०)। नाव, जहाज आदि के काम में धनवान् हो, बुद्धिमान्, अंगहीन, तथा दुर्जन (बृ० जा०)।

(५) मंगल सिंह का—पुत्र और स्त्री के सुख की प्राप्ति, शत्रुओं का नाशक, बड़ा उद्यमी, साहसी, राजनीति, धर्म नीति से कार्य करे, अनीति और नीति सहित, (जा० भ० (मान०)। निर्धन, क्लेश सहने वाला, वन में फिरने वाला, अल्प स्त्री पुत्र (बृ० जा०)।

(६) मंगल कन्या का—स्वजन के भरण पोषण में व्याकुल, अधिक कुटुम्बी, यज्ञ आदि करने वाला, स्त्री और भूमि के सुख से सुखी। श्रेष्ठ जनों में पूजनीय (जा० भ०) (मान०)। मिथुन के मंगल सदृश फल (बृ० जा०)।

(७) मंगल तुला का—आमदनी से खर्च अधिक, किसी अंग से हीन, माता-पिता आदि बृद्ध जनों से स्नेह रखे, सबको दुःखदाई, विफलता युक्त, भूमि और स्त्री के निमित्त दुःख पाने वाला (मान०) (जा० भ०)। वृष के मंगल सदृश फल (बृ० जा०)।

(८) मंगल वृश्चिक का—विष अग्नि शस्त्र से भय, संतान और स्त्री में सुख, राजा से स्नेह, शत्रुओं को जय करने वाला, (जा० भ०) (मान०)। मेष के मंगल सदृश फल (बृ० जा०)।

(९) मंगल धनु का—रथ वाहन आदि गौरव युक्त, शत्रु से भय, श्रेष्ठ स्त्री वाला, स्त्री के साथ भ्रमण, व्रण रोग से पीड़ित (जा० भ०) (मान०)।

गुरु क्षेत्री (९-१२ राशि का) शत्रु बहुत हों, राजमन्त्री, विद्वान्, निर्भय, थोड़ीसंतान (बृ० जा०)।

(१०) मंगल मकर का—संग्राम में बड़ा पराक्रमी, स्त्री सुख युक्त, अपने जनों के प्रतिकूल, मनुष्यों से भयभीत, अनेक वैभव युक्त, हस्तगत लक्ष्मी वाला, (मान०) (जा० भ०)। धन और संतति बहुत हो, राजा के तुल्य हो (बृ० जा०)।

(११) मंगल कुम्भ का—विनय से रहित, रोगी, अपने मनुष्यों के प्रतिकूल, बड़ा

दुष्ट, अनेक पुत्र होने के कारण सदा दुःखी (मान०) (जा० भ०)। अनेक दुःखों से पीड़ित निर्धन, पीड़ित, मिथ्या वादी, क्रूर (वृ० जा०)।

(१२) मंगल मीन का—व्यसनी, खल, निर्दय, विकल, अपने घर से अन्यत्र घूमने वाला, निर्बुद्धि, कुबुद्धि से उसका नाश हो (जा० भ०) (मान०)। धन में मंगल सदृश फल (वृ० जा०)।

४ बुध का राशि फल

१—बुध मेष में—खल बुद्धि, चंचल मन, बहुत भोजी, कलह कारक, निर्दय, कर्ज लेने वाला, इच्छित वस्तुओं से रहित, भूमि के साधन रहित (जा० भ०) (मान०)।

भौम क्षेत्री (१-८ राशि का)—जुआ, ऋण आदि, परधन लेने में, मद्यपान में, नास्तिकता में, चोरी में तत्पर, दरिद्री, उसकी स्त्री निन्दा करे, झूठा, घमंडी और अधर्मी (वृ० जा०)।

२—बुध वृष का—दानी, अनेक वस्तुओं का देने वाला, गुणी, अनेक कला कुशल, कामी, धनी, पुत्र और छोटे भाई से सुख पावे (मान०) (जा० भ०)।

शुक्र क्षेत्री (२-७ राशि का)—उपदेश, शिक्षा करने वाला आचार्य हो, स्त्री तथा संतान बहुत, धन जमा करने में तत्पर, उदार, माता-पिता और गुरु की भक्ति में तत्पर (वृ० जा०)।

३—बुध मिथुन का—प्रिय वचन भाषी, रचनाओं में चतुर, २ माता हों, शुभ वेष वाला, स्थान और भोजन से सब प्रकार सुखी (मान०) (जा० भ०)। वाचाल, क्रूरबोलने वाला, शास्त्र विद्या गीत वाद्य, नृत्य आदि कला का ज्ञाता, प्यारी वाणी, सुखी (वृ० जा०)।

४—बुध कर्क का—दुष्ट आचरण, राज सेवा में रुचि, परदेश जाने वाला, सुन्दर स्त्रियों के साथ रमण करने वाला, गाने बजाने व कलाओं में आदर करने वाला (मान०) (जा० भ०)। जल कर्म से उत्पन्न धन से धनवान्, मित्र बन्धुजनों का शत्रु हो।

५—बुध सिंह का—मिथ्यावादी, दुष्ट बुद्धि, सहोदर भाइयों का वैरी, स्वस्त्री को प्रसन्न रखे, शत्रुओं के वश में रहने वाला, अपनी उन्नति से रहित, स्त्रियों के साथ आनन्द करने वाला, (मान०) (जा० भ०)। स्त्रियों का वैरी, धन, पुत्र, सुख इनसे रहित, फिरने वाला, मूर्ख, स्त्रियों की बहुत अभिलाषा करने वाला, अपने जनों से पराजित (वृ० जा०)।

६—बुध कन्या का—सुन्दर वचन, चतुर, लिखाई का काम करने वाला, अति उन्नति पाने वाला, सुख पाने वाला, उत्तम नेत्र वाली स्त्री के साथ सुख भोगने वाला (मान०) (जा० भ०)। दाता, पण्डित, गुणवान्, सौख्यवान्, क्षमावान्, निर्भय, प्रयोग युक्ति जानने वाला (वृ० जा०)।

७—बुध तुला का—मिष्ट भाषी, खर्च करने में उद्यत, अनेक शिल्प जानने वाला,

खोटे आचरण की स्त्री से भोग करने वाला, बड़ा बकवादी, अनेक व्यसनों में आसक्त, गाने बजाने के समय और पाप युक्त होता है। झूठ बोलने वाला (जा० भ०) (मान०)। वृष के बुध सदृश फल (वृ० जा०)।

८—बुध वृश्चिक का—कृपण स्त्रियों के साथ भोग में आसक्त, श्रेष्ठ कर्म और सुख से हीन, हानि और आलस्य युक्त, गुणों में दोष देने वाला, कृपण (जा० भ०) (मान०)। मेष के बुध सदृश फल (वृ० जा०)।

९—बुध धनु का—दानी, धनी, कला कुशल, कुल पालक, कमाई हुई श्रेष्ठ लक्ष्मी युक्त, भाग्यशाली, योग्य स्त्रियों के साथ रमण करने वाला (जा० भ०) (मान०)। राज पूजित, या राज बल्लभ, विद्वान्, व्यवहार जानने वाला, समय के अनुकूल बोलने वाला (वृ० जा०)।

१—बुध मकर का—शत्रु के भय से युक्त, दुष्ट बुद्धि, काम कला रहित, दूसरों का काम करने वाला अर्थात् नौकर, व्यसनी, नम्र स्वभाव (मान०) (जा० भ०) शनि क्षेत्री (१०-११ राशि का)—पराया काम करने वाला, दरिद्री, शिल्प कर्म करने वाला, ऋणी, पराई आशा पर रहने वाला (वृ० जा०)।

११—बुध कुम्भ का—घर में कलह हो, दीनता, हल्कापन, धन, पराक्रम और धर्म से हीन, दुष्ट बुद्धि, शत्रु द्वारा ताप (मान०) (जा० भ०)। मकर के बुध समान फल (वृ० जा०)।

१२—बुध मीन का—दूसरे के धन आदि का रक्षक, देव ब्राह्मण का अनुचर, श्रेष्ठ स्त्रियों के सुख का दर्शक (मान०) (जा० भ०)। पराई सेवा में तत्पर, उसके सेवक जीते हुए रहें, पराया अभिप्राय जानने वाला, नीच, शिल्पी (या सेवक से पराजित) (वृ० जा०)।

गुरु का राशि फल

१—गुरु मेष का—अति उदार, उत्तम कर्म करने वाला, अधिक शत्रुओं वाला, अति वैभव युक्त, मति पूर्वक काम करने वाला, प्रारब्धवान्, बड़ो बुद्धि (जा० भ०) (मान०) भौम क्षेत्री (१-८ राशि का)—सेनापति, धनाढ्य, बहुत स्त्री युक्त, दाता, अच्छे भृत्य, क्षमावान्, तेजस्वी, गुणवती स्त्री से युक्त, प्राख्यात कीर्ति (वृ० जा०)।

२—गुरु वृष का—देव ब्राह्मण पूजक, ऐश्वर्यवान्, धन वाहन और गौरव युक्त, अधिक शत्रु हों, पराक्रम से शत्रुओं को हराने वाला (मान०) (जा० भ०) शुक्र क्षेत्री (२-७ राशि का)—स्वस्थ देह, सुखी, धन, मित्रों से युक्त, सत्पुत्र वाला, उदार, सबका प्यारा (वृ० जा०)।

३—गुरु मिथुन का—कवि, प्रिय बोलने वाला, पवित्र, निर्मल स्वभाव में रुचि, निपुण, अनेक मित्र (मान०) (जा० भ०)। बुध क्षेत्री (३-६ राशि का)—घर परिवार बहुत, पुत्र और मित्र बहुत, सुख युक्त, मन्त्री हो (वृ० जा०)।

४—गुरु कर्क का—अनेक धन युक्त, कामदेव के मद से मत्त, अनेक शास्त्र व कलाओं

में कुशल, प्रिय वचन भाषी, चतुर, घोड़ा आदि वाहन युक्त (मान०) (जा०भ०)। मणि, पुत्र, धन, स्त्री, ऐश्वर्य, बुद्धि, सुख इनसे युक्त (वृ० जा०)।

५—गुरु सिंह का—पहाड़ किला कोट का स्वामी, अपनी प्रभुता के कारण बन आदि प्राप्त करने वाला, दृढ़ शरीर, दानी, शत्रुओं के वैभव को हरने वाला, प्रिय वाणी (मान) (जा० भ०)। सेना समूह में श्रेष्ठ या सेनापति। कर्क के गुरु में बताया फल भी होवे (वृ० जा०)।

६—गुरु कन्या का—पुष्प गन्ध, उत्तम वस्त्रधारी, शुद्ध, धन और दान में बुद्धि, सुन्दर स्वरूप, शत्रुओं को सदा तपा देने वाला (मान०) (जा० भ०)। मिथुन के गुरु समान फल (वृ० जा०)।

७—गुरु तुला का—उत्तम सत्पात्र, अनेक पुत्र, जप होम यज्ञादि में उत्सव मनाने वाला, देव ब्राह्मण पूजक, दान करने में बुद्धि चतुर, शत्रु युक्त, घबड़ाहट युक्त, आतुर, अहित करने वाला (मान०) (जा० भ०)। वृष के गुरु सदृश फल (वृ० जा०)।

८—गुरु वृश्चिक का—धन नाश करने वाला, दोषों से उत्पन्न दुर्बल देह, बड़ा पाखंडी, घर की ओर से और बाहर से भी सदा दुःखी (मान०) (जा० भ०)। मेष के सदृश फल (वृ० जा०)।

९—गुरु धन का—धन का दान करने का प्रेमी,नम्र, बहुत वैभव, धन वाहन युक्त, तीव्र बुद्धि, श्रेष्ठ रुचि से सुन्दर आभूषण वाला (मान०) (जा० भ०)। स्वगृही (९-१२ राशि का) मांडलीय (कुछ गाँवों का स्वामी) व प्रधान व सेनापति और धनवान् (वृ० जा०)।

१०—गुरु मकर का—भ्रष्ट बुद्धि, पराया काम करने वाला, कामदेव रहित, भय क्रोध युक्त, कर्म मनोरथों वाला या परकार्य नष्ट कर अपना मनोरथ सिद्ध करने वाला (मान०) (जा० भ०)। नीच कर्म करने वाला, अल्प धन, दुःखित (वृ० जा०)।

११—गुरु कुम्भ का—सदा रोगी, अति कुबुद्धि, धन से रहित, अत्यन्त कृपण, पाप युक्त, खराब भोजन, दाँत और उदर में पीड़ा, (मान०) (जा० भ०)। कर्क के गुरु समान फल (वृ० जा०)।

१२—गुरु मीन का—राजा की कृपा से धन प्राप्त, सुन्दर मुख, घर का साधन करने वाला, दान में तत्पर, सत्पुरुषों का प्यारा, मित्रों को सौख्य देने वाला, अपने को पवित्र मानने वाला, काम की उन्नति वाला, (जा० भ०) (मान०)। धनु के गुरु के समान फल (वृ० जा०)।

६—शुक्र का राशिफल

१—शुक्र मेष का—घर, वाहन समूह और नगर का स्वामी, परदेश जाने को मन, कविजनों का साथी, शत्रुओं से रहित, आदर पाने वाला, (मान०) (जा० भ०)। भौम क्षेत्री शुक्र (१-८ राशि का)—परस्त्रियों में आसक्त, परस्त्रियों द्वारा उनका धन हरण करावे, कुल पर कलंक लगावे (वृ० जा०)।

२–शुक्र वृष का—बहुत स्त्री पुत्र, उत्सव तथा गौरव सहित, पुष्प गंध में रुचि, खेती का काम करने वाला, शत्रुओं से रहित या अल्प शत्रु, लक्ष्मी से सम्पन्न (मान०) (जा० भ०)। स्वक्षेत्र (२-७ राशि का)–अपने बल से धन पावे, राज पूज्य, अपने बंधुजनों में प्रधान, विख्यात, निर्भय, (वृ० जा०)।

३–शुक्र मिथुन का—सम्पूर्ण शास्त्र व कलाओं में कुशल, सरल मनोहर वचन, मिष्ठान्न भोजन का इच्छुक (मान०) (जा० भ०)। राज्य कार्य करने वाला, धनवान्, गीत वाद्य आदि कला जानने वाला (वृ० जा०)।

४–शुक्र कर्क का—श्रेष्ठ कर्मों में बुद्धि, गुण सम्पन्न, सबको कलायुक्त वचनों से वश में करने वाला, मधुर वाणी (मान०) (जा० भ०)। दो स्त्री हों, माँगने वाला, भय युक्त, उन्मद; अति दुःखी (वृ० जा०)।

५–शुक्र सिंह का—स्त्रियों से धन मान और सुख पाने वाला, अपने मनुष्यों से दुःख पाने वाला, मित्रों को संतोष करने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला (जा० भ०) (मान०)। स्त्री का कमाया धन पावे, स्त्री उसकी प्रधान रहे, अल्प संतान, (वृ० जा०)।

६–शुक्र कन्या का—अति धनवान्, तीर्थ करने वाला, अति लक्ष्मीवान्, अल्प बोलने वाला (जा० भ०) (मान०)। अति नीच कर्म करने वाला (वृ जा०)।

७–शुक्र तुला का—पुष्प और विचित्र वस्त्रों का प्रेमी, धनयुक्त, देशान्तरों में आने जाने वाला, उत्तम कवि (जा० भ०) (मान०)। वृष के शुक्र समान फल (वृ०जा०)।

८–शुक्र वृश्चिक का—कलह एवं हत्या करने का इच्छुक, निंदा का पात्र, विषय इन्द्रियों में रोग, व्यसन युक्त, कभी कभी धन से युक्त (मान०) (जा० भ०)। मेष में शुक्र समान फल (वृ० जा०)।

९–शुक्र धनु का—पुत्र स्त्री युक्त, धन का आगमन व उत्सव सहित, राजा का मंत्री, श्रेष्ठ शील, कवियों में प्रेम रखने वाला, घर में वैराग्य रखने वाला (जा० भ०) (मान०)। बहुतों का पूज्य धनवान् (वृ० जा०)।

१०–शुक्र मकर का—बड़ा कामी, स्त्री में प्रीति, व्यसनी, अधिक खर्च, भय सहित, अत्यन्त चिंतायुक्त, संगीत प्रेमी, कवि, जंगल में रहने का मन करने वाला (मान०) (जा० भ०)। शनिक्षेत्री (१०–११ राशि का) सब का प्यारा, स्त्री के वश में रहने वाला, कुत्सित स्त्री में आसक्त (वृ० जा०)।

११–शुक्र कुम्भ का—वस्त्र भूषण आदि भोगों से हीन, सत्कर्म करने में आलसी, धनी होकर भी निर्धन हो जाता है (मान०) (जा० भ०)। मकर में शुक्र के समान फल (वृ० जा०)।

१२–शुक्र मीन का—राजा की कृपा से वैभव प्राप्त, शत्रुओं पर आक्रमण करने वाला, धन को प्राप्त, दीन मनुष्यों को धन देने में मन, नम्रता युक्त, तैरने में प्रीति (जा० भ०) (मान०)। विद्वान् और सम्पन्न, राजपूजक, सबका प्यारा (वृ० जा०)।

७—शनि का राशिफल

१–शनि मेष में—धन से हीन, दुर्बल देह, पुरुषों से विरोध करने वाला जिससे मनोरथ की हानि, मित्रों से विरोध, शांति रहित (मान०) (जा० भ०)। मूर्ख, फिरने वाला, कपटी, नेत्र रहित (वृ० जा०)।

२–शनि वृष का—स्त्री के सुख से हीन, चुगलों या दुष्ट जनों का संग, बुद्धिहीन, पुत्रोत्सव से रहित (जा० भ०) (मान०)। बहुत स्त्री, अगम्या से गमन, ऐश्वर्य रहित (वृ० जा०)।

३–शनि मिथुन का—ज्यादा चलने से और निर्मलता से रहित, घर को छोड़ कर बाहरी भोगों के कुतूहल से हीन, सज्जन पुरुषों से आनन्द कभी नहीं प्राप्त, हास्य विलास आनन्द करने वाले सुख को नहीं पाता (जा० भ०) (मान०)। बुध क्षेत्री-निर्लज्ज, दुःखित, अपुत्र, लिखने में भूल करने वाला, रक्षा स्थान (कारागार) आदि का स्वामी तथा प्रधान (वृ० जा०)।

४–शनि कर्क का—दुर्बल देह, माता से रहित, लक्ष्मी के कारण उत्तम भोग-विलास करने वाला, धनवान्, शत्रुओं का नाशक, समता रखने से हीन (जा० भ०) (मान०)। दरिद्री, दंत रोगी, मातृ रहित, पुत्र रहित, मूर्ख (वृ० जा०)।

५–शनि सिंह का—लिखने की विद्या में कुशल, कलह करने में मन, उत्तम शील (स्वभाव) से हीन, नीति मार्ग से बहिष्कृत, पुत्र स्त्री से पीड़ा को प्राप्त (जा० भ०) (मान०)। मूर्ख, दुःखित, पुत्र रहित, भार ढोने वाला या दास कर्म करने वाला (वृ० जा०)।

६–शनि कन्या का—जो कुछ काम करे असफलता पावे, विनय से हीन, चञ्चल, स्नेह वाला, कभी बलयुक्त कभी बलहीन, चलायमान मन, नम्रताहीन (जा० भ०) (मान०)। मिथुन के शनि सदृशफल (वृ० जा०)।

७–शनि तुला का—अपने कुल में राजा के समान बलयुक्त, अधिक कामी, दरिद्रों को दान देने वाला, राजा से सम्मान प्राप्त, (मान०) (जा० भ०)। प्रख्यात कीर्ति, समूह ग्राम सेवा आदि में पूज्य और धनवान् (वृ० जा०)।

८–शनि वृश्चिक का—विष अग्नि तथा शस्त्र से भय, धन का नाशक, शत्रुओं तथा रोग से पीड़ित, विफलता युक्त, इच्छित सुख से रहित (मान०) (जा० भ०)। मारने बांधने वाला, हत्यारा, चपल, निर्दय (वृ० जा०)।

९—शनि धनु का—पुत्र गण से परिपूर्ण मनोरथ वाला, विख्यात कीर्ति, उत्तम जीविका, वैभव और संतोष युक्त (मान०) (जा० भ०)। गुरुक्षेत्री (९-१२ राशि का) स्वयं अंत अवस्था में सुख पाने वाला, शुभ कर्म से मृत्यु, दुर्मरण, अपघात, अल्पमृत्यु जलप्रवाह, दुर्गपात, अग्नि विष शस्त्र आदि से न होगी। राजद्वार में उसकी प्रतीति हो, अच्छी स्त्री युक्त, सत् पुत्र, सत् धन युक्त, सेवा या ग्राम का अधिनेता (वृ० जा०)।

१०—शनि मकर का—राजा में प्रीति रखने से महत्त्व पाने वाला, अगर, पुष्प कस्तूरी, उत्तम चंदन तथा उत्तम सुगंधित द्रव्यों से सुख (जा० भ०) (मान सा०)।

स्वक्षेत्री—पराई स्त्री व पराये धन से युक्त, ग्राम सेवा में अग्रणी (मुख्य), नेत्र मंद हों, सदा मलिन शरीर, स्थिर धन व ऐश्वर्य वाला (वृ० जा०) ।

११—शनि कुम्भ का-व्यसन करने वाला, शत्रु से हार पाने वाला, कर्तव्य कर्म करने से रहित, अच्छे मित्र युक्त किन्तु शत्रुओं के मर्दन करने में सहायता हीन, बड़ा धनी (जा० भ०) (मान०) मकर के शनि सदृश फल (वृ० जा०) ।

१२—मीन का शनि—विनय, व्यौहार तथा सुशीलता युक्त, सब मनुष्यों में विख्यात गुण वाला, उपकार करने में निपुण, अनेक वैभव युक्त (मानसा०) (जा० भ०) । धनु के शनि सदृश फल (वृ० जा०) ।

राहु का राशि फल

राहु कन्या या मिथुन का ६ या ८ घर में, केन्द्र या त्रिकोण में हो तो—शूरवीर, बलवान्, सुभोगी हो, घर में हाथी आदि वाहन पुत्र व रत्न आये और आनन्दित हो (प्रारब्ध योग) ।

●

अध्याय—१४

द्वादश भावों में भिन्न-भिन्न राशियों का फल

१ लग्न में राशियों का फल

१—लग्न में मेष—लाल शरीर. कफ प्रकृति, अधिक क्रोधी, कृतघ्न, मंद बुद्धि, स्थिरता युक्त, स्त्री तथा नौकरों से सदा पराजित ।

२—लग्न में वृष—मानसिक रोग, स्वजनों से अपमानित, प्रिय पुरुषों से वियोग, कलह युक्त, सदा दुःखी, शस्त्र से घात, धन क्षय ।

३—लग्न में मिथुन—गौरांग, स्त्री में आसक्त, राजा से पीड़ित, दूत का कर्म करे, प्रिय वाणी, बड़ा नम्र, गान विद्या में प्रवीण, सिरके बाल उत्तम ।

४—लग्न में कर्क—गौर अंग, मित्रावित्त्य, पुरुषों की इच्छा पूरी करने वाला, हँसी, नदी में तैरने का प्रेमी, बड़ा बुद्धिमान्, पवित्र, क्षमावान्, धर्म में रुचि, सेवा करने योग्य ।

५—लग्न में सिंह—पांडुवर्ण, वायु और कफ से पीड़ा, मांस प्रिय, बड़ा तीक्ष्ण, शूर-वीर, बड़ाढीठ, निरंतर भ्रमण करने वाला ।

६—लग्न में कन्या—वात पित्त श्लेष्म युक्त, प्रिय स्त्री से पराजित, बासना से डर-पोक, मायावी, शुभ कांता की भावना करने वाला, काम से पीड़ितांग ।

७—लग्न में तुला—कफ युक्त, सत्य वक्ता, सदा स्त्रियों से स्नेह, राजा से मान, देव पूजन में तत्पर ।

८—लग्न में वृश्चिक—क्रोधी, वृद्धता युक्त, राजा से पीड़ित, गुणों से युक्त, शास्त्र-कला में अनुरागी, शत्रुगणों को मारने वाला ।

९—लग्न में धनु—राजा से सम्बन्ध रखने वाला, कार्य करने में प्रवीण, देव ब्राह्मण

अनुरागी, घोड़ों को रखने वाला, सुहृदजनों का काम करने वाला, घोड़े के समान जंघा।

१०—लग्न में मकर—संतोषी, बड़ा डरपोक, पाप करने में निरत, कफ और वायु को पीड़ा, लंबा शरीर, शत्रु जनों से ठग विद्या करने वाला।

११—लग्न में कुंभ—धैर्य युक्त, वात प्रकृति, अधिक जलसेवी, मित्र के उपकार को शरीर समर्पण, मैथुन प्रिय, सज्जन अनुरागी, सब पुरुषों का प्रेमी।

सत्याचार्य ने कुम्भ लग्न अच्छा नहीं कहा है। यवनाचार्य ने समस्त कुम्भ लग्न को नहीं किन्तु लग्न में कुम्भ के द्वादशांश को अशुभ कहा है। विष्णुदत्त कहते हैं कि यवन मत से कुम्भ द्वादशांश बुरा है तो वह सभी लग्नों में आयेगा तो क्या सभी बुरे हो जायेंगे इसीलिये उचित यही है कि कुम्भ लग्न ही जन्म में अशुभ है केवल कुम्भांशक बुरा नहीं है।

१२—लग्न में मीन—जलक्रीड़ा प्रेमी, बड़ा विनीत, स्त्री सहवास को उत्सुक, बड़ा पंडित, छोटा शरीर, बड़ा प्रचण्ड, पित्ताधिक्य, बड़ा यशस्वी।

२ धन भाव में राशि फल

१—धन में मेष राशि—पुण्य से एकत्र धन, सुन्दर नातिवान्, चतुष्पद पालन से धन, पंडित, एक अच्छा पुत्र हो।

२—धन में वृष—खेती से धन प्राप्त, चौपाये, अन्न मणियों से सदा धन प्राप्त या इनको पास रखने वाला।

३—धन में मिथुन—स्त्री के निमित्त से धन प्राप्त करे, सुवर्ण चाँदी के आभूषण और बहुत वाहन युक्त, साधुजनों का प्रिय।

४—धन में कर्क—वृक्ष, जल से उत्पन्न किया धन, जल से भय, वन के कंद मूल आदि भोजी, न्याय से धन संग्रह कर्ता, पुत्रों से प्रीति।

५—धन में सिंह—बनवासी, धनवान्, तप करने वाला, मान पाने वाला, सब का उपकारी, अपने पराक्रम से धन एकत्र करने वाला।

६—धन में कन्या—राजा से धन प्राप्त, सुवर्ण मोती आदि तथा हाथी घोड़े आदि से उत्पन्न किया धन होता है।

७—धन में तुला—पुण्य प्रताप से पाषाण से भी धन निकले, मही के व्यापार से शारीरिक पीड़ा से तथा खेती द्वारा उत्पन्न धन को एवं कर्म द्वारा उत्पन्न धन को पाता है। खरीदने बेचने से या न्याय से इकट्ठा किया धन होता है।

८—धन में वृश्चिक—स्वधर्म पालन, काम इच्छुक, सदा विचित्र बात कहने वाला, ब्राह्मण देव भक्त।

९—धन में धनु—स्थिर विधान से उत्पन्न किये धन का पाने वाला, उत्तम चतुष्पद पालन से धन, यशस्वी, रस से उत्पन्न वस्तुओं को खाने वाला, धर्म विधान का लोभी।

१०—धन में मकर—अनेक प्रपंच से तथा अनेक उपायों से धन पाने वाला एवं राज सेवा से, खेती से, विदेश जाने से धन प्राप्त करने वाला।

११–धन में कुम्भ—फूल फल से तथा जल से अधिक धन हो। किसी धनिक से प्राप्त धन को साधु सेवा और परोपकार में लगावे।

१२–धन भाव में मीन—नियम उपवास करने से, विद्या के प्रभाव से, किसी जगह खजाने के मिल जाने से और माता-पिता के संचित धन के प्राप्त होने से बड़ा धनवान् हो।

तृतीय भाव में राशि फल

१–तृतीय भाव में मेष—ब्राह्मणों का मित्र, परोपकारी, कथा श्रवण में पवित्र, विद्वान्, राजपूज्य।

२–तृतीय में वृष—राजा का मित्र, प्रतापी, अतिथि को धन देने वाला, यशस्वी, विद्वान्, कवि, विप्र अनुरागी, अच्छे धन वाला, भूमि पशु खजाने वाला।

३–तृतीय में मिथुन—श्रेष्ठ वाहन, स्त्रियों को प्रिय, सत्यवक्ता, उदार चित्त, कुलीन राजपूज्य।

४– तृतीय में कर्क—वैश्य के घर मित्र लाभ करे, कृषक, धर्म कथा अनुरागी, सुशील, अहंकारी।

५–तृतीय में सिंह—शूरवीर, दुष्ट मित्र, श्रेठ धन का लोभी, प्राणियों के मारने की चेष्टा करने वाला, पाप चर्चा करने वाला, प्रचंड वाक्य भाषी, गर्व रहित।

६–तृतीय में कन्या—शास्त्र विद्या अनुरागी, सुशील, मित्रों से स्तुति प्राप्त, विप्र प्रिय, अति क्रोधी, देव गुरु भक्त।

७–तृतीय में तुला—पापी मित्र, चंचल स्वभाव, चपलता की बातें करने वाला, अनेक मनुष्य युक्त, अल्प सन्तान।

८–तृतीय में वृश्चिक—इसकी मित्रता पापी से, दरिद्री से, कृतघ्न से, कलही से, अकारण झगड़ा करने वालों से, विरुद्ध आचरण करने वालों से होती है।

९–तृतीय में धनु—राजा का मन्त्री, शूरवीर, राजा का सेवक, धर्मात्मा, प्रसन्न मूर्ति, जित चित्त, दयालु, युद्ध कोविद, मनुष्यों से धन प्राप्त करने वाला।

१०–तृतीय में मकर—शांत प्रकृति, अनेक पुत्र, देव गुरु मित्र का प्रेमी, धनी पंडित विद्वान्।

११–तृतीय में कुम्भ—व्रती, कीर्ति युक्त, क्षमाशील, सत्यवक्ता, सुशील, गीत प्रिय, ग्राम का अधिकारी और खल होता है।

१२–तृतीय में मीन—बड़ा धनी, अनेक पुत्र, पुण्य और धन सम्पन्न, अतिथि प्रिय, सबको आनन्द दाता।

चतुर्थ भाव में राशि फल

(१) चतुर्थ में मेष—चतुष्पदों से, दो स्त्री जनों से, विचित्र भोगों से, अन्नपान आदि से अपने पुरुषार्थ से उपार्जित धन से सौख्य प्राप्त, नौकरों से सुख प्राप्त हो।

(२) चतुर्थ में वृष—अनेक मान्य पुरुषों से, शूरवीरता से, राज सेवा से, प्रिय उपचारों से, अनेक नियम व्रत करने से सुख पाने वाला।

(३) चतुर्थ में मिथुन—स्त्रियों के लिये विविध सुखों को प्राप्त, जलक्रीड़ा तथा वन फूलफल आदि से तथा बहुत से पुष्प और वस्त्रों से सुख प्राप्त।

(४) चतुर्थ में कर्क—रूपवान्, सुभग, सुशील, स्त्रियों को सम्मत, सर्व गुण सम्पन्न विद्या में प्रवीण, मनुष्यों को प्रिय, तथा जल से उत्पन्न, कूप तालाब आदि से व बगीचा आदि से सुख।

(५) चतुर्थ में सिंह—अति क्रोध के कारण कभी सुख न पावे, कन्या संतान हो, दरिद्रता हो, शील रहित।

(६) चतुर्थ में कन्या—बहुत धन होने के कारण कुमित्र संगी, चुगलों के संग से चोरी के निमित्त से और मोहन उच्चाटन आदि से सुख नहीं पाता।

(७) चतुर्थ में तुला—सौम्य सरल स्वभाव, शुभ कर्म में दक्ष, विद्या विनीतवान्, सुख सम्पन्न, प्रसन्न चित्त, अनेक धन सम्पन्न।

(८) चतुर्थ में वृश्चिक—विपत्ति युक्त, तीक्ष्ण शत्रु से भयभीत, बहुत सेवा करने वाला, पराक्रम के घमंड से रहित, बड़ा चतुर, बुद्धिमान् मनुष्यों से हीन।

(९) चतुर्थ में धन—संग्राम में सुखी, संग्राम कीर्तन से, विचित्र घोड़ों से, अपने उद्यम से सुख पावे या धन प्राप्त करे।

(१०) चतुर्थ में मकर—जल सेवन से, बावली तालाब बगीचा आदि के सम्बन्ध से सुख, प्रधान मित्रों के उपचारों से व पिता की सेवा से सुख का भागी हो।

(११) चतुर्थ में कुंभ—स्त्री के आश्रय से, मिष्ठान्न पान से, फल शाक पत्र से, चतुराई के वाक्यों से, उत्साह करने वाले उत्तम वाक्यों से अनेक प्रकार सुख पाने वाला।

(१२) चतुर्थ में मीन—जल के आसरे से, देवताओं के निमित्त से, सुन्दर वस्त्रों से, विचित्र सुंदर धनों से सुख पाने वाला, मन्द गमन करने वाला।

पंचम भाव में राशि फल

(१) पंचम में मेष राशि—प्रिय मित्र के साथ, पुत्रों के साथ एक सम्मति होने के कारण, एवं देव पूजा के आश्रय से अनेक आनन्द मिले तब भी पापों में फँसने के कारण उसका मन व्याकुल रहे।

(२) पंचम में वृष—स्त्री भाग्यवती, रूपवती, संतति रहित, तेजस्वी पतिव्रता मिले।

(३) पंचम में मिथुन—पुत्र मन को सुख देने वाले, शील युक्त, गुणवान्, परस्पर प्रीति युक्त विनय करने वाले महाबली ऐसे अनेक पुत्र हों।

(४) पंचम में कर्क—बड़ी कीर्तियुक्त, महानुभाव, धन युक्त, विनय युक्त, सर्वत्र प्रसिद्ध पिता को प्रसन्न करने वाले कई पुत्र हों।

(५) पंचम में सिंह—क्रूर स्वभाव वाले, विशाल नेत्र वाले, मांस प्रेमी, कन्या उत्पन्न करने वाले, विदेश में रहने वाले बड़े तीव्र और क्षुधायुक्त पुत्र हों।

(६) पंचम में कन्या—पुत्र संतान से रहित, अपने पति को प्यारी, पुण्यवती, बड़ी ढीठ, शांत, पाप वाली, आभूषण की प्रेमी, अनेक कन्यायें हों।

(७) पंचम में तुला—अति सुशील, मनोहर, रूपवान्, क्रियावान् और विशाल नेत्र वाले पुत्र हों।

(८) पंचम में वृश्चिक—बड़े सुन्दर सुशील, अज्ञात दोष, स्वधर्म स्नेही, पुत्र हों स्वयं धर्म में तत्पर हो।

(९) पंचम में धन—अति विचित्र, घोड़ों से स्नेह रखने वाला, धनुर्विद्या का ज्ञाता, शत्रु नाशक, गुरु सेवी, राजमान्य पुत्र हो।

(१०) पंचम में मकर—पाप में बुद्धि वाले, कुरूप, नपुंसक, कुत्सित भाव युक्त प्रमाद से रहित, अति निष्ठुर और प्रेम रहित पुत्र हों।

(११) पंचम में कुंभ—स्थिरता युक्त, गंभीर चेष्टा वाले, अति सत्य वक्ता, सर्वत्र प्रसिद्ध, कष्टों के सहने वाले, बहुत प्रिय, यश से युक्त पुत्र हों।

(१२) पंचम में मीन—ऐसे पुत्र हों जो स्त्री संग करने से ललित, गोरे रंग वाले, रोगी, कुरूप, हास्ययुक्त स्त्री सहित (सब पुत्रों के विवाह हो जावें) ऐसे पुत्र हों।

षष्ठ भाव में राशि फल

(१) षष्ठ भाव में मेष राशि—मनुष्य शत्रु से वैर करने वाले।

(२) षष्ठ में वृष—कुटुम्बी स्त्रियों से (पुत्र वधू आदि से) भोग करने के कारण भाई बंदों से बैर।

(३) षष्ठ में मिथुन—अपनी स्त्री से वैर करने वाला, पापी, मनुष्यों से, बनिये से और नीच जनों से अनुराग रखने वाले मनुष्यों से वैर करने वाला।

(४) षष्ठ में कर्क—पुत्र निमित्त से आतुर होने के कारण, ब्राह्मणों से, राजाओं से महाजनों से झगड़ा हो जाने से भय प्राप्त। यह सब दूसरों के अनुरोध से होता है।

(५) षष्ठ में सिंह—पुत्रों से, भाई बंदों से वैर, वेश्याओं से भोग करने के कारण सारा धन नष्ट।

(६) षष्ठ में कन्या—कोई वैरी न हो परन्तु दुष्टा व्यभिचारिणी, नीच जाति की और निराश्रित रहने वाली अनाथ विधवा तथा वेश्या के संग रहने के कारण कंगाली आ जावे।

(७) षष्ठ में तुला—रखे धन के कारण पूर्ण धनी होता हुआ भी धर्म कार्य में साधु मनुष्यों से व अपने बंधु वर्ग से एवं अपने घरवार से भी वैर होता है।

(८) षष्ठ में वृश्चिक—सर्पों से व चुगुलखोरों से, बिच्छू कनखजूर आदि से, काल गणों से, हरिणों से, चोर गणों से तथा धनिकों से और विलासी पुरुषों से वैर।

(९) षष्ठ में धनु—राग में फँसे हुए, धनुष बाण धारण करने वाले पुरुषों से और हाथी घोड़ा आदि से और पुण्य करने वाले मनुष्य से एवं ठग से वैर हो जाता है।

(१०) षष्ठ में मकर—धन का सूद लेने के कारण वैर, साधुजनों के सहायक

होने पर भी मित्रों के साथ वैर होता है। किसी समय उस मनुष्य को घर की प्राप्ति होती है।

(११) षष्ठ में कुंभ—राजाओं से, जल जीवों से, वापी तालाब के निमित्त बड़े जागीरदारों से और भी बड़े-बड़े धनीमान्य वृद्धजनों से वैर होता है।

(११) षष्ठ में मीन—सदा अपने पुत्र पुत्रियों के साथ कलह होता है, स्त्री के निमित्त से वस्त्र आभूषण आदि के कारण अपने खुद के कारण से तथा परस्पर प्रिय पुरुषों से वैर होता है।

सप्तम भाव का राशि फल

१–सप्तम में मेष राशि—स्त्री अति दुष्ट क्रूर स्वभाव वाली, पापिनी, बड़ी कठिन, नृशंस, धनप्रिया और अत्यंत दुष्टा हो।

२–सप्तम में वृष—अति स्वरूपा, नम्र भाषी, सोने पिरोने में चतुर, शांत प्रकृति वाली, पतिव्रता, सुन्दर गुणों से युक्त, लक्षण वंती, ब्राह्मण देव की भक्त स्त्री होवे।

३–सप्तम में मिथुन—स्त्री युक्त, सुन्दर बर्ताव वाला, रूपवान्, सद्गुण सम्पन्न विनीत वेष वाला, गुण रहित स्त्री संयुक्त हाता है।

४–सप्तम में कर्क—अति मनोहरा, सौभाग्य युक्ता, गुण सम्पन्ना, सौम्यरूपा, कुलहीना प्रिय पत्नी मिले।

५–सप्तम में सिंह—तीव्र स्वभाव वाली, कर्कशा, अति दुष्टा, शृंगार हीन, दूसरों के घर में रहने वाली, धन की इच्छा करने वाली, थोड़ा काम करने वाली, अति दुर्बलांग स्त्री मिले।

६–सप्तम में कन्या—सुन्दर स्वरूप वाली, पुत्रों से रहित, सौभाग्य, भोग्यधन, नीति से युक्त, प्रिय वचन भाषी, सत्यवादिनी, दृढ़ चित्त वाली पत्नी मिले।

७–सप्तम में तुला—गुणों के गर्व से युक्त अनेक प्रकार की स्त्रियों को प्राप्त, पुण्य जिसको प्यारा, धर्म तत्पर, इन्द्रियों को दमन कर्ता, पृथ्वी की तरह अति विनीत जिसके अनेक पुत्र हों।

८–सप्तम में वृश्चिक—सुन्दर स्त्री, कलाओं से अनभिज्ञ, अति कृपण, सुशिक्षित, नम्रता से रहित, अनेक दुर्भाग्य सूचक दोषों से सम्पन्न ऐसी स्त्री मिले।

९–सप्तम में धन—अति दुष्टा, दुष्ट स्वभाव वाली, निर्लज्जा, पर के दोषों को याद करने वाली कलह प्रिया ईर्ष्या युक्त पत्नी मिले।

१०–सप्तम में मकर—कपटी स्त्री, नीच, निर्लज्ज, अति लोभी, क्रूर, बड़े मिजाज वाली, पापिनी, अधिक दुःख भोगने वाली स्त्री मिले।

११–सप्तम में कुंभ—स्त्री अति दुष्टा, कठोर स्वभाव वाली, देव ब्राह्मण पर प्रसन्न रहे, धर्म की ध्वजा सत्य और दया से युक्त स्त्री मिले।

१२–सप्तम में मीन—अनेक विकारों से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाली, किसी का विश्वास न करने वाली, विशेष कलाओं से अनभिज्ञ स्त्री मिले।

अष्टम भाव में राशि फल

१–अष्ठम में मेष राशि—विदेश वासी, रोगी, अनेक आत्मा सम्बन्धी बातों को याद करने के कारण मूर्च्छित हो, बड़ा धनी, अत्यंत दुःखों से युक्त।

२–अष्टम में वृष—कफ के विकार से घर में मृत्यु, अति भोजन से, चौपाये से या रात्रि समय दुष्ट जन सम्पर्क से मृत्यु।

३–अष्टम में मिथुन—शत्रुओं के संग से या लाभ के कारण या रस संभव वस्तुओं के खाने से या गुदा रोग से या प्रमेह से मृत्यु।

४–अष्टम में कर्क—जल में डूब कर या किसी भयंकर कीड़ा के निमित्त से या अन्य प्रकार के पुरुष के हाथ से परदेश में मृत्यु।

५–अष्टम में सिंह—किसी रेंगने वाले से या जंगल में रहने से या चोरों के कारण या किसी चतुष्पद के निमित्त से बन में मृत्यु।

६–अष्टम में कन्या—अति भोग विलास करने से या स्वचित्त की भावना से, स्त्री की हत्या करने से, विषम आसन से या पर स्त्रियों के निमित्त से अपने घर पर मृत्यु।

७–अष्टम में तुला—किसी मनुष्य के हाथ से, रात्रि के समय अधिक उपवास करने के कारण कोप करने से या अति पराक्रम करने से मृत्यु हो।

८–अष्टम में वृश्चिक—कुष्ट आदि रुधिर रोग से या पेट में कीड़ा होने से या विष खाने से अपने ही घर में मृत्यु।

९–अष्टम में धनु—अति ताप देने वाले गुह्य स्थान के दोष से या किसी चतुष्पद से या बाण से या जल से अपने ही घर में मृत्यु हो।

१०–अष्टम में मकर—विद्या से युक्त, मान तथा गुणों से सम्पन्न, अति कामी शूरवीर, वक्षःस्थल चौड़े, शास्त्रार्थ करने वाला, सब कलाओं में प्रवीण।

११–अष्टम में कुंभ—घर में अग्नि के लग जाने से, सारी सम्पत्ति नाश हो या अजीब घावों से या वायु जन्य विकारों से या अधिक शुभ से विदेश में मृत्यु।

१२–अष्टम में मीन—अतिसार की बीमारी से बड़े कष्ट से या पित्त विकार से या जल के सम्बन्ध से या रक्त प्रकोप से या शस्त्र से मृत्यु हो।

नवम भाव में राशि फल

१–नवम में मेष—चौपायों के दान या पोषण, दया विवेक द्वारा पालन आदि क्रिया से धर्म करने वाला।

२–नवम में वृष—धर्मात्मा, विचित्र दान दे, अनेक गौदान से, आभूषण वस्त्र और भोजन दान करने से सुशोभित होता है।

३–नवम में मिथुन—धर्ममूर्ति, सरल स्वभाव, अभ्यागतों ब्राह्मणों का भोजन द्वारा सत्कार करने वाला।

४–नवम में कर्क—कठिन व्रत उपवास से या तीर्थ भ्रमण से या वन में तपस्या करने से सदैव धर्म करते रहता है।

५–नवम में सिंह—किसी अन्य धर्म का मानने वाला, कुकर्मों द्वारा अपने धर्म से हीन, अपने को ही तीर्थ स्वरूप मानने वाला, विनय से रहित।

६–नवम में कन्या—स्त्री धर्म का कट्टर पक्षपाती, कई जन्म से भक्ति रहित, पाखण्ड का आश्रय करके या किसी अन्य पक्ष का आश्रय करके धर्म करने वाला।

७–नवम में तुला—सदा प्रसिद्ध, धर्मात्मा, देव ब्राह्मणों की प्रसन्नता रूप और मनुष्यों के अनुराग से अनेक अद्‌भुत धर्म को करता है।

८–नवम में वृश्चिक—पाखण्ड धर्म में लीन, पुरुषों को पीड़ा देने वाला, भक्ति से रहित, पर पोषण आदि से हीन।

९–नवम में धनु—सदा धर्म करने वाला, देव ब्राह्मण भक्त, शास्त्रोक्त विख्यात धर्म (सनातन) के अनुसार संध्यादि कृत्यों के लिये अधिक जल का उपयोग होता हो ऐसे धर्म को करता है।

१०–नवम में मकर—अधर्म करने वाला, प्रताप शाली, अनेक विडम्बना के कारण वैराग्य युक्त तथा अपने कुल का आश्रय करता है।

११–नवम में कुंभ—देव समूह निमित्त से होने वाले सुख को पावे, वृक्ष सम्बन्धी या बगीचा बावड़ी आदि धर्म कर्म से प्रेम करने वाला।

१२–नवम में मीन—अनेक धर्म करे, सत्पुरुषों की सेवा, बगीचा तालाब आदि निर्माण कराने से या तीर्थाटन से अनेक प्रकार से आर्थिक सुख पावे।

दशम भाव में राशियों का फल

१–दशम में मेष—अधर्म करने वाला, बड़ा दुष्ट, चुगलखोर, विनय रहित लोक में साधुजनों द्वारा निन्दित।

२–दशम में वृष—अधिक खर्च करने वाला, साधुजनों पर दया करने वाला, देव ब्राह्मण अतिथि जनों का श्रेणी अनुसार सत्कार करने वाला।

३–दशम में मिथुन—कर्म को प्रधान करने वाला, गुरुजनों की आज्ञानुसार चलने वाला, कीर्ति युक्त जनों से प्रीत करने वाला, बड़ा प्रतापी, खेती से जीविका।

४–दशम में कर्क—प्याऊ बगीचा तालाब बावड़ी आदि सम्बन्धी कर्मों को करता है, दयालु और निष्पाप।

५–दशम में सिंह—अति पापी, अपने बलानुसार प्राणी वध रूप विकृत कर्म करने में नित्य निंदा पावे।

६–दशम में कन्या—अज्ञ कर्म करने वाला, उसके घर में स्त्री ही मालिक हो, भक्ति के विरुद्ध, तुच्छ वीर्य वाला, राजा के दरबार में मंत्री रहकर भी निर्धनी हो।

७–दशम में तुला—वणिज्य के कार्य को बहुतायत से करने वाला, धर्म, रूप, मति युक्त, सज्जन प्रिय, दूसरों की सम्पत्ति को प्राप्त करता है।

८–दशम में वृश्चिक—सबकी भलाई के लिये कर्म करने वाला, सबों का सम्मत, देव गुरु ब्राह्मणों के लिये खूब खर्च करने वाला परन्तु अति निर्दय और नीति रहित।

९–दशम में धन—लाभ युक्त-सब काम करने वाला, जेल से छुड़ाने आदि परोपकार का काम करने वाला, राजा के समान भूमि और यश प्राप्त करता है ।

१०–दशम में मकर—बड़ा प्रतापी, कर्म को प्रधान मानने वाला, दया रहित, भाई वंदों से युक्त, धर्म रहित, दुष्ट सम्मत कर्म को करता है ।

११–दशम में कुंभ—कर्म को प्रधान मानने वाला, शत्रु तथा दूसरों को ठगने के लिये पाखंड धर्म से युक्त, इष्ट लोभ से विश्वास रहित, अपने मनुष्यों के विरुद्ध काम करता है ।

१२–दशम में मीन—सत्र कुल धार्मिक गुरुजनों से उपदिष्ट को करने वाला, कीर्ति युक्त धैर्य शाली, आदर के साथ अनेक ब्राह्मणों को आराधन में तत्पर ।

लाभ भाव में राशियों का फल

१–लाभ में मेष—चतुष्पदों के व्यापार या राज सेवा से या देशान्तर सेवन से पूरा लाभ हो ।

२–लाभ में वृष—सज्जनों से या स्त्रियों से, खेती करने से, या गाय आदि की सेवा से अति लाभ ।

३–लाभ में मिथुन—सदा लाभ युक्त, स्त्रियों को अति प्रिय, अच्छी वस्तुएं धन एवं सुन्दर-सुन्दर मुख्य आसन, खान पान से अनेक प्रकार का लाभ हो । पंडितों से भी खूब प्रसिद्धि हो ।

४–लाभ में कर्क—सेवा करने से या खेती से या शास्त्र की वृत्ति से, साधु जन सम्बन्ध से अति लाभ हो ।

५-लाभ में सिंह—निंदा से या अनेक पुरुषों के वध, बन्धन से या देशान्तर में नौकरी के आश्रय से या व्यायाम से भी धन का पर्याप्त लाभ हो ।

६–लाभ में कन्या—शस्त्र से, वेद आदि से, विनय और अद्भुत ज्ञान से अनेक लाभ हो और पूजा को प्राप्त हो ।

७–लाभ में तुला—विचित्र तरीके के व्यापार से पूर्ण धन लाभ हो । साधु सेवा से, विनय से, बड़े सुख को प्राप्त हो ।

८–लाभ में वृश्चिक—छल करने से, पाप करने से, अच्छे बोलने से, दूसरों की चुगली करने आदि अनेक विकारों से अत्यंत लाभ हो ।

९–लाभ में धनु—राजाओं के आश्रय से, अनेक प्रकार के भोग विलास करता है । संत पुरुषों की सेवा करने से या अपने ही पुरुषार्थ से और किसी साम्राज्य के मुख्य गुप्तचर के आराधन करने से पूर्ण धन लाभ हो ।

१०–लाभ में मकर—जहाज द्वारा, या परदेश में जाकर नौकरी करने से और राजसेवा से बहुत धन का लाभ हो परन्तु सब लाभ अत्यन्त व्यय हो जाता है ।

११–लाभ में कुम्भ—कुकर्म करने से, दान करने से, धर्म करने से, पराक्रम से और विद्या के प्रभाव से खूब धन लाभ हो, संतों के समागम का भी पूर्ण लाभ हो ।

१२–लाभ में मीन—मित्रों के आश्रय से या राजमान से, विचित्र वाक्यों से और स्नेह से नित्य अनेक लाभ हो।

व्यय भाव में राशियों का फल

(१) व्यय में मेष—सुख पूर्वक भोजन वस्त्र में, चौपाये जीवों की अधिक संख्या बढ़ाने में और नाना प्रकार के पुरुषार्थ में अर्थात् धन वृद्धि के लिए कार्यालय आदि खोलने में बहुत खर्च हो।

(२) व्यय में वृष—किसी रियासत की प्राप्ति के उद्देश्य से, अपने पराक्रम के जताने से, अनेक धातु वादों से, कई पण्डितों के साथ विवाद होने से, मुकदमा आदि लग जाने से, विचित्र वस्त्र और स्त्रियों के निमित्त से बहुत खर्चा होता है।

(३) व्यय में मिथुन—स्त्री निमित्त व्यसन से, भूत-प्रेत देव आदि की बाधा हटाने के अनुष्ठान पूजा आदि में, खोटे विभव से, पापी मनुष्यों के संग करने से, हाथी आदि के खरीदने में फिजूल खर्ची हो।

(४) व्यय में कर्क—ब्राह्मणों देवताओं के निमित्त, यज्ञ के निमित्त, धर्म काम में जैसे पाठशाला, मन्दिर आदि बनवाने में, साधुजनों द्वारा प्रशंसित कार्य में बहुत खर्चा हो।

(५) व्यय में सिंह—संशय न करने वाला, अति क्रोधी, अपने रूप की सजधज बनाने में, दुष्ट कर्म के निमित्त से, सदा राजा या चोर से, पुत्रोत्पत्ति के अवसर पर संस्कार आदि सम्बन्ध में अति खर्च होता है, सज्जनों से निंद्य।

(६) व्यय में कन्या—स्त्रियों के निमित्त से प्रसन्नतापूर्वक खर्च करने वाला, विवाह, यज्ञोपवीत आदि स्वकार्य या जातीय मांगलिक मुख्य कर्मों के निमित्त से या साधुसंग से खर्च करने वाला।

(७) व्यय में तुला—देव ब्राह्मण का सेवक, श्रुति स्मृति के अनुकूल धर्म करने में खर्चा करने वाला, अनेक यम नियम व्रतोपवास के निमित्त से, पुत्रों के कारण से, सेवा के कारण अधिक खर्चा करे जिससे संसार में खूब नाम हो।

(८) व्यय में वृश्चिक—दीन दुःखियों को अन्न वस्त्रादि देने से, अनेक विडम्बनाओं से, या दुष्ट मित्र की सेवा कुबुद्धि निमित्त और चोर मनुष्य के अधिकार से बहुत खर्चा होता है और लोक में वह निंदित समझा जाता है।

(९) व्यय में धनु—पापी जनों के संग से या जाति के अधिकारी मनुष्यों से झगड़ा करने से मुकदमा में अधिक खर्चा हो या खेती में या सेवा करने में खर्चा हो।

(१०) व्यय में मकर—पापी मनुष्यों के भोजन कराने के निमित्त से खर्च, अपने वर्ग के मनुष्य का पूजक, थोड़ी खेती करने वाला, अत्यन्त हीन, सर्वत्र निंदित।

(११) व्यय में कुम्भ—देव सिद्ध मनुष्य, ब्राह्मण, तपस्वी, वंदी जनों के निमित्त खर्च होता है, साधुजनों के सेवन से तथा शास्त्र प्रसिद्ध कर्मों से विख्यात होता है।

(१२) व्यय में मीन—जलयान से या कुसंग से और कुपूत पुत्रों के निमित्त से, खाने-पीने के निमित्त से, विवाद या यात्रा के निमित्त से धन खर्च हो।

अध्याय १५

भिन्न-भिन्न भावों में ग्रहों का फल

लग्न में प्रत्येक ग्रह का फल

१—लग्न में सूर्य

बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र से दुःखी, नीच सेवा अनुरक्त, प्रारब्ध से गृहस्थ सुख से हीन, विकल रूप होकर पुत्र पौत्रों से रहित, सर्वत्र भ्रमण करने वाला (मान०) ।

अल्प केश, काम करने में अधिक अकर्मण्यता (आलसी), क्रोधी, प्रचंड, ऊँचा कद, घमंडी, रूक्ष लोचन, दुबला देह, शूर, अशांत, निर्दय । लग्न में कर्क का सूर्य—नेत्र में मोतिया बिंद हो । मेष का—नेत्र रोगी । सिंह का—रतोंघ वाला । तुला का—गरीब सन्तान हानि का दुःख (फलदीप) (जा० म०) ।

शूरमा, विलम्ब से काम करने वाला । मेष का—धनवान्, नेत्र रोगी । कर्क का—टेढ़ी दृष्टि वाला । सिंह का—रात्रि अंध । तुला—अंधा, दरिद्री (वृ० जा०) ।

थोड़े पुत्र वाला, सुखी निर्दय, अल्प भोजी, विकल नेत्र, रण का इच्छुक-सुशील, नाटक करने वाला । मेष का—ज्ञानाचार में रत । सुन्दर नेत्र, यशस्वी, स्वतन्त्र । सिंह का—रात्रि अंध, वीर्यवान् । मीन—स्त्री जन से सेवित (जा० पारि०) ।

अति तीव्र, चंचल आत्मा, काम में व्याकुल, नेत्र रोगी, पीड़ा युक्त अंग, रक्त वर्ण की आकृति (लग्न-चं०) ।

दुबला, स्त्री-पुत्र हीन । तुला का—मान हानि, बिना विचारे काम करे (खान० खा०) ।

प्रचंड रूप वाला, विकराल नेत्र, रतोंध वाला, फुली युक्त नेत्र, कंठ में ग्रह वाला, लाल नेत्र रुधिर नेत्र (जातक संग्रह) ।

या सूर्य की दृष्टि हो—क्रोधी, शरीर में वात पित्त से पीड़ा, सिर में पत्थर आदि के चोट से कष्ट, कंठ या गुदा में व्रण या तिल, बालपन में अनेक पीड़ा दुःख होते हैं (जा० सं०) ।

२—लग्न में चन्द्र का फल

धन से सम्पन्न, सुख भोगी, बलवान्, सुन्दर देह । नीच का या पाप युक्त हो—जड़ बुद्धि, अति दीन, धन से हीन (मान सा०) ।

चन्द्र वृद्धि में—दृढ़ शरीर, दीर्घ जीवी, निर्भय, शक्तिशाली, धनी । क्षीण चन्द्र हो तो-फल उल्टा हो (फल दीप०) ।

कर्क, वृष, मेष का–चतुर, रूपवान्, धनवान्, भोगों में श्रेष्ठ, गुणों से रहित । अन्य राशि का—उन्मत्त, नीच, बहरा, गूंगा, विकल देह (जातकाभरण) ।

जड़ बुद्धि, प्रसन्न, धनी, स्त्री का प्यारा, धर्मवान्, कृतज्ञ, (लग्न-चन्द्रिका)

चन्द्र मेष लग्न का—बहु पुत्र । वृष—धनी । कर्क—धनवान् । अन्य राशि का—गूंगा, पागल, या मूर्ख, अन्धा, नीच कर्म करने वाला (वृ० जा०) ।

पूर्ण चन्द्र—दीर्घायु, विद्वान् । क्षीण चन्द्र—बधिर, अंगहीन । पाप युक्त चन्द्र—दूत और अल्पआयु । उच्च का—धनी, यशस्वी, बहुत रूपवान् (जा० पारि०) ।

धनवान्, रूपवान्, पुष्ट, कार्य सिद्ध । नीच या शत्रु क्षेत्री या शत्रु दृष्ट हो तो—विपरीत फल (खान०) ।

पूर्ण चन्द्र—सुरूप, धनवान् तथा कोमल शरीर । क्षीण चन्द्र—मलिन और अल्प पराक्रमी । मेष, वृष, कर्क का चन्द्र—रूपवान्, धनी । शेष राशियों का—जड़ता व्याधि दरिद्रता हो ।

चन्द्र हो या चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो—सिर में पीड़ा वात बाधा, शीतता, गौरवर्णता हो, स्वास कास पीड़ा, शरीर में वात भ्रम और घोड़ा आदि पशुओं से व राजा व चोरी से हृदय में प्रहार हो (जा० सं०) ।

३—लग्न में मंगल का फल

बाल्य काल में पेट में तथा दाँतों में रोग हो, चुगल हो, कृशांग, पापों का जानने वाला, शरीर श्याम वर्ण, चपल चित्त, नोच सेवी, मलीन वस्त्रधारी, सुख रहित, पाप शील (मान सागरी) ।

क्षत (घायल) शरीर, अल्पायु, अतिसाहसी, विमुख, विद्या रहित, धन सहित, कुजन के आश्रित (फल दोप) ।

बुद्धि में भ्रम, घाव युक्त देह, हठ युक्त, आने जाने का काम करने वाला (जातकाभरण) ।

कुरूप, रोगी, बन्धु रहित, असत्य भाषी, द्रव्य हीन, परस्त्रीगामी (ल० चं०) ।

शत्रु या स्वामी से झगड़ा करने वाला, भारी रोग से पीड़ित, बेकार या दुःखी, विरोधी, दुर्बल, कुटुम्ब, स्त्री पुत्र से वियोग (खान०) ।

क्रूर, साहसी, घूमने वाला, अत्यन्त चंचल, रोगी (जा० पारि०) ।

शरीर में प्रहार आदि के घाव हो (वृ० जा०) ।

गुदा में रोग, कलत्र नाभि में कंडू खुजली कुष्ट आदि से युक्त, मध्यदेश में अंग हीन । लग्न में भौम हो या भौम की पूर्ण दृष्टि हो—लोह या पत्थर आदि से शरीर में पीड़ा, अत्यंत क्रोध, बालपन में रक्त पीड़ा, तथा वात रक्त रोग, मस्तक, मध्य कंठ या गुह्य अंग में व्रण होता है (जा० सं०) ।

४—लग्न में बुध का फल

सुन्दर स्वरूप, अति प्रसन्न, बुद्धिमान्, लम्बा, पंडित, त्यागी, थोड़ा कोमल पवित्र भोजी, सत्य वक्ता, अति सुख भागी, सदा परदेश वासी (मान०) ।

दीर्घ जीवी, मिष्ट भाषी, कुशाग्र बुद्धि, शास्त्रार्थ में विद्वान् (फल०) ।

रूपवान्, दयावान्, नीतिज्ञ, साहसी, दानी, पुत्र सुख प्राप्य (खान०) ।

शांत, नम्रता युक्त, उदार, आचार में तत्पर, धैर्यवान्, विद्वान्, कलाओं का जानने वाला, बहुत पुत्रों वाला (जा० भरण) ।

गीता का जानने वाला, निष्पाप, राजाओं में पूज्य, रूप ज्ञान और यश से युक्त और प्रगल्भ (लग्न चंद्रि०) । विद्वान् (वृ० जा०) । विद्या धन तप से युक्त (जा० पारि०) ।

लग्न में बुध हो और कोई क्रूर ग्रह न हो—सुन्दर मूर्ति, चतुर तथा शान्त, मेधावी और प्रिय वचन भाषी, विद्वान्, अति दयालु ।

या बुध की दृष्टि हो तो शरीर भिन्न वर्ण हो । मध्य भाग में स्त्री का सुख होवे, शरीर में पीड़ा हो, क्रीड़ा आदि से दुःख उत्पन्न, शरीर में मसा व तिल होवे । पेट में गुल्म विकार । अल्प भोजी (जा० सं०) ।

५—लग्न में गुरु का फल

अनेक वस्त्रों से परिपूर्ण देह, सुवर्ण रत्न आदि बहु मूल्य धनों से पूर्ण देखने में सुंदर, राज कुलजनों का प्यारा ।

सुंदर भाग्यवान्, दीर्घजीवी संतान युक्त (फल दी०) ।

बड़ा आदमी, दिल खुश, ईश्वर भक्त, दाता, सर्दार, तेजस्वी (खान०) ।

विद्या युक्त, राजाओं का प्यारा, चतुर, निरंतर उदार, सुंदर शरीर (जा० भ०) ।

सुशील, प्रगल्भ, रूपवान्, राजा का अभीष्ट, रोगहीन, ज्ञानी, सौम्य (ल० चं०) ।

पंडित (बृ० जा०) ।

बड़ी आयु, स्वच्छ ज्ञानी, धनी और रूपवान् (जा ० पारि०) ।

कविता करने वाला, सुन्दर गीत वाला, प्रिय दर्शन और दानी, योगी, राजा से सत्कार पाने वाला, सुख सम्पन्न, धनी, देव पूजन में तत्पर ।

गौर वर्ण शरीर, शरीर में वात-कफ, बालपने में सुख सम्पदा होती है, शत्रु के द्वारा विषयादिक झूठी निन्दा से पीड़ा होवे । राज्य से अतुल मान और अनेक धन प्राप्त होवे ।

लग्न में गुरु हो उस पर क्रूर दृष्टि हो—तो कोई व्यथा सी उत्पन्न होवे और जो जो विघ्न उत्पन्न होते हैं तत्काल नष्ट हो जाते हैं (जा० संग्रह) ।

६—लग्न में शुक्र का फल

कार्य करने में तत्पर, बड़ा पंडित, अनेक कलाओं में कुशल, गृह में आसक्त (मान०) ।

स्वस्थ और सुंदर शरीर, सुखी, दीर्घजीवन (फल०) ।

तेजस्वी, बुद्धिमान्, धनी, रूपवान् (खान खा०) ।

बहुत कलाओं में चतुर, सुन्दर वाणी, श्रेष्ठ स्त्री से काम कला युक्त, राजा से मान और धन (जा० भ०) ।

सुशील, दयावान्, सुन्दर, शुचि, विद्वान्, मनोज्ञ, कृतज्ञ (ल० चं०)

काम कला निपुण, सुखी (वृ० जा०)

कामी, सुन्दर शरीर, स्त्री पुत्र युक्त, विद्वान् (जा० पारि०)

बहुत बोलने वाला, अनेक प्रकार की कारीगरी से युक्त, विनय सम्पन्न, गान विद्या में तत्पर, काव्य शास्त्र में विलास वाला, धर्मात्मा ।

लग्न में शुक्र हो या शुक्र की दृष्टि हो—गौरवर्ण शरीर वातपित्त युक्त, कमर, कांख, पेट और गुह्य अंग इनमें व्रण या तिल। कुत्ता व सींग वालों से और पवन से शरीर में पीड़ा (ज० सं०)।

७—लग्न में शनि का फल

धीरे-धीरे चलने वाला, (अति दीर्घ सूत्री) मन में पीड़ित, महा अधम, मस्तक के बालों से रहित, दुर्बल अंग। शत्रुगृह, हो तो अपने कुटुम्बियों से विग्रह करने वाला हो (मान०)।

उच्च या स्वगृही—राजा तुल्य या नगर का मुखिया।

अन्य राशि में—दुःखी, बचपन से कंजूस, दरिद्री, मलिन, आलसी (फल०)।

निर्बुद्धि, निर्बल शरीर, दुष्ट, कुरूप, दयाहीन, उल्टी अकल (खान०)।

सदा रोगी, कुरूप, कृपण, कुशील, पाप बुद्धि, निश्चय मूर्ख (ल० चं०)।

तुला, मकर, कुंभ का—देश नगर का स्वामी या राजा हो।

अन्य राशि का—दुःखी, रोग युक्त, दरिद्री (जा० भ०)।

१, २, ३, ४, ५, ६, ८ राशि का—नित्य दरिद्री, रोगी, अति कामी, मलिन।

७, ८, १०, ११, १२, राशि का—राजा तुल्य, ग्राम नगर का स्वामी या पंडित हो, अंग सुस्वरूप हो (वृ० जा०)।

दुर्नासिका, वृद्ध स्त्री वाला, रोगी, अंगहीन। उच्च का हो तो राजा के समान सुंदर गुण हो (जा० पारि०)।

खुजली से परिपूर्ण अंग, कफ प्रकृति। न्यून अधिक अंग, कर्ण के मध्य भाग में बात रोग।

शनि हो या शनि की दृष्टि—कृश देह, दुःखी, मूर्ख, कामी, शरीर भिन्न वर्ण का। लोहादि से शरीर में पीड़ा, निरंतर आत्मा की चिंता।

तुला, धनु, मीन, का शनि—राजा हो। शेष राशियों का हो तो अल्पायु हो।

८—लग्न में राहु फल

सदा रोगी, कुल का धारण करने वाला, बड़ा बकवादी, लालनेत्र, अतिपापी, चोरी आदि बुरा काम करने वाला, साहस का काम करने में सदा तत्पर, बड़ा चतुर (मान०)।

अल्प जीवन, धनी, बली शरीर, ऊँचा अंग, सिर चेहरा आदि में रोग (फल०)।

दुष्ट बुद्धि, खोटा स्वभाव, अपने सम्बन्धियों को ठगने वाला, शिर में रोग, वीर्य युक्त, झगड़े में जीत, रोगी (जा० भ०)।

दुःखी, आलसी, कुरूप, स्वार्थ परायण, रोगी, मूर्ख (खान०)।

क्रूर स्वभाव, दयाधर्म हीन, शक्तिमान, रोगी। सिंह लग्न में राहु—जल्द राज भोग प्राप्त करता है (जा० पारि०)।

इसका शनि समान फल है। सर्वांग में रोग वाला, विकल, कुरूप, बुरे केश, बुरे नख, कुकर्मी, अधर्मी, परन्तु साहस के काम में बड़ा चतुर, लालनेत्र। राहु संचय करता है। सिंह कर्क मेष का राहु—सुवर्ण लाभ के लिये मंगल कर्म करता है (जा० सं०)।

९—लग्न में केतु का फल

बांधवों को कष्ट देने वाला, दुर्जन से भय, मन में व्याकुलता, स्त्री पुत्र आदि के विषय में चिंता, सब कार्य में घबड़ाहट, शरीर में पीड़ा, वात रोग (मान०)।

राहु के समान फल (खान०)।

कृतघ्न, दुःखी, चुगुल खोर, जाति च्युत, स्थान च्युत, विकल देह (अंग में दोष) दुष्ट की संगति (फल दीप)।

रोगादि से युक्त, भय से व्यग्र चित्त, उद्वेग युक्त, स्त्रियों को चिंता, वात विकार युक्त शरीर (जात० भरण)।

रोगी, लोभी, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो राजा समान भोगी। लग्न में शनि के गृह में केतु स्थिर धन पुत्र दायक है (जा० पारि०)।

स्त्री नष्ट हो जावे, भुजा में रोग शरीर में व्याधि (जा० सं०)।

२–धन भाव में ग्रहों फल

१–धन भाव में सूर्य का फल

पुत्र तथा स्त्री से हीन, दुर्बलांग, अत्यन्त हीन, रक्त नेत्र, बुरे केश, ताम्बे के व्यापार से धनवान्, दुःखों को भोगने वाला, गृहस्थ सुख कभी नहीं पाता है (मान०)।

विद्या रहित, विनय व धन रहित, तोतली वाचा (फल०)।

क्रोधी, बुद्धि हीन, कृपण, द्रव्यहीन, रोगी (खान०)।

धन और पुत्र व अच्छे वाहन से रहित, बुद्धि नष्ट, मित्रता हीन, पराये घर में वास (जा० भ०)।

धनी, राजा का धन हरे, मुख में रोग (वृ० जा०)।

विवाद, बहुत शत्रु, निधन, ईर्ष्यायुक्त, पर का अपकार करनेवाला, कृतघ्न (ल. च.)।

दानी, धातु द्रव्य वाला, इष्ट शत्रु वाला, वाचाल (जा० पारि०)।

धन में सूर्य हो या सूर्य की दृष्टि हो—चोर हो, घर का धन राजा द्वारा हरण कर लिया जावे (जा० सं०)।

सदा धन को नाश करता है निर्धन करता है ताम्रधन को देता है। धन में सूर्य हो शनि की दृष्टि न हो तो अतीव धन देता है, शनि की दृष्टि हो तो निर्धनता लाता है। अन्य ग्रहों की दृष्टि हो तो शुभ है (जा० संग्रह)।

बहुत धन मिले परन्तु राजा उसका धन हरण करे, मुख रोग हो (प्रा० यो०।)।

२–धन भाव में चन्द्र का फल

बड़ा त्यागी, बुद्धिमान्, धन से पूर्ण कोष, चंचल मन, अति दुष्ट, कीर्तिमान्, सुन्दर भोगी, यशस्वी, सहनशील, कमल सा मुख (मान०)।

धनी अति विद्वान्, विषय सुखमान्, कोई अंग दोष पूर्ण (फल०)।

कामी, तेजस्वरूप, सुन्दर वचन, बुद्धिमान्, विद्याशील, धनवान् (जा० पारि०,)।

धनवान्, मिष्ट भाषी, नीच का हो तो विपरीत फल (खान०)।

पूर्ण चंद्र—धन पुत्र सुख युक्त, नम्रता युक्त, श्रेष्ठ, क्षीण चन्द्र—तोतला, धन रहित, थोड़ी बुद्धि। मध्यबली चन्द्र हो तो बल के अनुसार घट बढ़ फल का अनुमान करना (जा० भ०)।

धनी, राजाओं से पूज्य, गुणी, शास्त्र प्रेमी, सौभाग्यवान् मनुष्यों से प्रीत करने वाला (ल० चं०)। बड़ा कुटुम्ब वाला (वृ० जा०)।

सुवर्ण सहित, चांदी तथा मणि रत्न धन बहुत हों कपूर चन्दन गंध आदि हों (जा० सं०)।

धन में चन्द्र हो या चन्द्र की दृष्टि हो—धनी हो परन्तु उसकी बहिन और कन्या का धन नाश हो (जातक रत्न)।

क्षीण चन्द्र हो और बुध की दृष्टि हो—पूर्व संचित धन का नाश और अन्न धन की रोक करता है। चन्द्रमा सन्निपात से उत्पन्न होने वाले शीत सम्बन्धी रोग देता है (जा० सं०)।

चन्द्र धनेश धन में—धर्म सम्बन्धी सूत्र प्रयोग व योग विद्या आवे, चपल हो, लाल नेत्र केश भूरे हों (प्रा० यो०)।

३—धन भाव में मंगल का फल

धातु वाद करने वाला, परदेश वासी, कर्ज धन में प्रीत, जुआड़ी, सहन शील, खेती के कार्य में समर्थ, पराक्रमी, दुर्बल देह, सदा सुख भोगी (मान०)।

विमुख, विद्या रहित, धन रहित, दुष्ट जन के आश्रित (फल०)।

धातु वाद (धातु का व्यापारी), खेती और घूमने में तत्पर, क्रोधी (जा० पारि०)।

वेसुध, पुत्र, जन, स्त्री सुख से हीन, युद्ध में शूर, चिंता युक्त, कुरूप, शक्ति हीन, निर्दय, दुष्ट बुद्धि, सदा ऋणी (खान०)।

धन हीन, दुष्टजनों का आश्रय करने वाला, दुष्ट बुद्धि, कृपा रहित (जा० भ०)।

धन हीन, क्रिया हीन, दीर्घ सूत्री, सत्यवादी, पुत्रवान् (ल० चं०)।

दुष्ट अन्न बाजरा मडुवा आदि खाने वाला (वृ० जा०)।

खेती करने वाला तथा बेचने वाला, भोग भोगने वाला, परदेश वासी, लाल रंग के धनों से युक्त, वादी तथा बुद्धि नाश युक्त तथा जुआड़ी (गर्ग मत)।

धन में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो—निरन्तर धन हानि, देह और नेत्र में पीड़ा, स्त्री बंधु जनों के साथ कलह (जातक रत्न)।

धन में मंगल—विष शस्त्र या रक्त प्रकोप से मरण (जा० सं०)।

४—धन भाव में बुध का फल

पिता भक्त, अति स्थिर, पाप से डरे, कोमल शरीर, कठोर रोम, लम्बे केश, अति गोरा, सत्य वक्ता, विहार करने वाला, रत्नादिकों का भागी, सदा परदेश में रहने वाला (मान०)।

अपने श्रम से धन प्राप्त करे, कवि हो, अपने भाषण में सच्चा, मिष्ठान्न भोक्ता (फल०)।

मिष्ट भाषी, बुद्धिमान्, धनी, प्रीतियुक्त, नीतिज्ञ, नम्र (खान खाना०)।

निर्मल शील, बड़ों का प्यारा, बड़े सुख को प्राप्त, बड़ी शोभा से उन्नति प्राप्त (जा० भ०)।

धनधान्य से युक्त, शुभ कर्म करने वाला, सदा सुखी, राजाओं में पूज्य (ल० चं०)।

धनवान् (वृ० जा०)।

बुद्धि से उपार्जित किया धन शील गुण हो, साधु हो (जा० पारि०)।

धन में बुध हो या बुध की दृष्टि हो—धनवान्, राजा से सत्कार, चतुर भाषी, धन नष्ट होने पर फिर मिल जाता है (जा० सं०)।

बहुत प्रकार से धन देता है (गर्ग)।

इसपर चन्द्र की दृष्टि हो तो—समस्त धन का नाश करता है।

धन में बुध—धनवान् हो, गणित ज्योतिष कालमान, श्रौत स्मार्त सकल मंत्र, गायन वाद्य का ज्ञाता, अनुग्रह करने वाला हो, शिल्प कला का ज्ञाता हो, नाना प्रकार की विद्या जाने, हास्य विनोद का भाषण करे, सात्विक, उत्तम नेत्र, मित्रों का प्रिय हो (प्रा० यो०)।

५—धन भाव में गुरु का फल

सदा प्रसन्न, मनोहर स्त्री, अहंकारी, मोतियों आदि के व्यापार से धन प्राप्त हो, जन्म काल में अति दुःखी पीछे सुखी होता है (मान०)।

बातूनी, भोजन में अच्छा विज्ञान, सुमुख, धन विद्या युक्त (फल०)।

स्वभाव में बड़प्पन, धर्म में मति, सिद्धि प्राप्त, सुवर्ण और पुत्र युक्त, सुन्दर, धनी (खान खाना)।

श्रेष्ठ रूप, विद्या यश गुण युक्त, वैर को छोड़ने वाला, त्यागी, शीलवान्, धन से पूर्ण (जा० भ०)।

धनी, कृतज्ञ, भाइयों से युक्त, हाथी घोड़ा और भैंसों वाला, कांति युक्त (ल० चं०)।

सुन्दर वाणी (वृ० जा०)।

वाचाल, भोजन सौख्य वाला, विशेष धनी, दानी (जा० पारि०)।

लक्ष्मीवान् तथा सुन्दर, उत्साह रखने वाला (गर्ग)।

गुरु की दृष्टि हो—धनधान्य का सुख हो, विद्या विनय युक्त, सबका मान्य हो (जातक रत्न)। धन में गुरु हो बुध से दृष्टि हो—बहुत धन देता है (जा० सं०)।

धन में गुरु—धनी, विद्वान्, विशेष कर वैयाकरणी हो, बहुत कला जाने, सात्विक वृत्ति हो, धर्म सम्बन्धी पुराण आदि की कथा करे, मधुर पदार्थ प्रिय हो, उसके पास बहुत सुवर्ण हो, अंग प्रिय हो (प्रा० यो०)।

६—धन भाव में शुक्र का फल

पर धन से धनी, स्त्री को स्वतन्त्र धन देने में तत्पर, चांदी, शीशे का व्यापार करने वाला, बालकों के समान, गुणों से युक्त, पतली देह, मोठे वचन बालकों से सुख युक्त (मान०) । कवि हो, धन युक्त (फल०) ।

मिष्ट भाषी, चतुर, दुशाला आदि वस्त्रों से युक्त (खान०) ।

श्रेष्ठ अन्न और पान में तत्पर, श्रेष्ठ वस्त्र और भूषण, धन वाहन युक्त, विचित्र कार्य का जानने वाला (जा० भ०) ।

धनी, विद्वान, भाइयों से पूज्य, राजाओं से भी पूजित, यशस्वी, गुरु का भक्त, कृतज्ञ (ल० चं०) । वाणी सुन्दर (वृ० जा०) ।

विद्या काम कला का ज्ञाता, धनवान् (जा० पारि०) ।

शुभ राशि या शुभ दृष्टि युत हो—विद्या से इकट्ठे किये हुए धन वाला या स्त्री जनों से धनी रहता है । बुध को दृष्टि हो तो धनी हो (गर्ग) ।

धन में शुक्र हो या शुक्र की दृष्टि हो—धनवान्, बहुत शास्त्र का ज्ञाता, मनोहर वाणी, सभा में चतुर हो । धन में शुक्र हो पाप या शत्रु ग्रहों से युत या दृष्ट हो—राजा या चोरों से धन हानि हो मार्ग में विघ्न हो (जातक रत्न) ।

धन में शुक्र हो और सूर्य चन्द्र की दृष्टि हो—धन देने वाला है (छा० सं०) ।

धन में शुक्र—कलह करने वाला, मैथुन प्रिय, साहित्य प्रेमी, सुनेत्र, नाना प्रकार की कला जाने, खेती बगीचे आदि में प्रेम हो । मीठा अन्न व नाना प्रकार का रस प्रिय हो । रत्न परीक्षा जाने । रत्न का संग्रह हो, बुध के प्रभाव से विद्या आवे (प्रा० यो०) ।

७—धन भाव में शनि का फल

दूसरे के वाक्यों को सहन करने वाला, धन से युक्त, चंचल नेत्र, चोर (मान०) ।

सूर्य समान फल, धनवान्, मुख रोगी, राजा का धन हरे (वृ० जा०) ।

कुरूप चेहरा, धन रहित, कुमार्गी, उत्तर जीवन में वह विदेश में धन और दूसरे सुख से युक्त रहे (फल०) ।

उच्च, स्वक्षेत्र के बिना अन्य राशि में—व्यसन युक्त, मनुष्यों से त्यागा हुआ, कुम्भ राशि का—परदेश में वाहन और राज्य मान्यता को प्राप्त (जा० भ०) ।

धन हीन, वात पित्त और कफ से आतुर, देह में हाड़ और पित्त रोग वाला, थोड़े गुण वाला । असत्य वादी, चंचल, घूमने वाला, दरिद्र और ठग (जा० पारि०) ।

लोहा धन वाला होकर काष्ठागार से धन का संचय करता है, नीच विद्यानुरागी व दीन दुःखी (गर्ग) ।

धनों से हानि, निष्ठुर और दुःखी (जातक रत्न) ।

धन में शनि या मित्र और सौम्य ग्रह से युक्त दृष्ट हो, दया, धर्म, सत्य से युक्त ।

धन में शनि पाप ग्रहों से या शत्रु ग्रहों से युक्त दृष्ट—धन का नाश, उसकी बहन

आदि मृत संतान वाली या गर्भपात आदि वाली हो और समीप में घर आदि वालों के बालकों का मरण हो (जातक रत्न)।

धन में शनि हो बुध से दृष्ट हो—महाधनी हो (सारावली)।

धन में शनि—उसके पास के धन को शत्रु व चोर ले लेवें। कठोर, क्रोधी, मूर्ख, ईर्ष्यालु, दुष्ट विद्या जाने, तेल के तले पदार्थ प्रिय हों (प्रा० योग)।

८–धन भाव में राहु का फल

चोरी करने वाला, बहुत दुःख भोगने वाला, मत्स्य मांस से धन सम्पादन करने वाला, सदा नीचों के घर रहने वाला (मान०)।

शंका युक्त, अस्पष्ट भाषण, मुख व चेहरे में रोग, नम्र हृदय, राजा द्वारा धन प्राप्त, रोष युक्त, सुखी (फल०)।

अप्रिय वाणी बोलने वाला, धन नाशक, दरिद्री, भ्रमणशील (जा० भ०)।–

कर्मच्युत, मतलबी, दुःखी, परदेश में धन युक्त (खान०)। विरोधी (जा० पारि०)।

मछली मांस से धन वाला तथा नख चर्म आदि का बेचने वाला, चौर कर्म से जीविका (गर्ग)। बड़े दाँत वाला या दंत रोगी (जा० सं०)।

तामसी, दुर्भाषी, बिल्ली सरीखी आँखें (प्रा० यो०)।

९–धन भाव में केतु का फल

सदा व्यग्रता हो, दुष्ट राजा के द्वारा धनधान्य नाश, मुख में रोग हो, कुटुम्ब का विरोधी, वार्तालाप में सत्कार पाने वाला, केतु स्वगृही हो, शुभ गृही हो तो अत्यन्त आनन्ददायक होता है (मान०)।

विद्या धन रहित, भद्दी बोली, कुदृष्टि, पर अन्न भक्षण (फल०)।

धनधान्य का नाश करने वाला, कुटुम्ब का विरोधी, राजा से धन की चिन्ता करने वाला, मुख में सदा रोग, अपनी दशा में या शुभ ग्रह की दशा में अत्यन्त सौख्य (जा० भ०)।

राहु के समान फल (खान०), (प्रा० यो०)। लोगों का अपराधी हो (जा० पारि०)।

धन हानि, नीच का संग, दुष्टात्मा, सुख सौभाग्य से वर्जित (जा० सं०)।

३–तीसरे भाव में ग्रहों का फल

१–तीसरे भाव में सूर्य का फल

भाई से रहित, प्रियजनों का हितकारी, पुत्र स्त्री युक्त, धनवान्, धैर्यवान्, साहस शील, अनेक प्रकार के धन से विहार करने वाला उत्तम नागरिक, स्त्रियों से प्रेम करने वाला (मान०)। बली, शूर, धनी, उदार, अपने बंधुओं से शत्रु भाव रखे (फल०)।

नामवर, किफायती, निरोग, धनाढ्य, स्त्री सुख (खान०)।

बुद्धिमान्, पराक्रमी (वृ० जा०)।

पराक्रमी, दुर्जन सेवित, विशेष धनी, दानी (जा० पारि०)।

मिथ्या भाषी, धन वाहन युक्त, सत कर्मी, नौकरों से युक्त, थोड़े भाई, अधिक बलवान् (जा० भ०)। प्रसिद्ध, रोग रहित, राजा, सुशील, दयालु (ल० चं०)।

बुद्धि व पराक्रम से युक्त हो परन्तु सूर्य की दशा में बड़ा भाई या बड़ी बहिन को हानि हो। (प्रा० यो०)।

२—तीसरे भाव में चन्द्र का फल

हिंसक, बड़ा अभिमानी, कृपण, अल्प बुद्धि, बन्धुजनों का आश्रय करने वाला, दया और भय से हीन (जा० भ०)।

धन और विद्या से युक्त, कफ युक्त, कामुक, वंश में मुख्य (ल० चं०)।

प्राण घाती (वृ० जा०)।

अल्प धनी, बन्धु प्रिय, सात्विक (जा० पारि०)।

भाई हो, बली, शक्तिवान्, अति कृपण, कामुक (फल०)।

चन्द्रमा यदि पापगृही हो तो—बहु भाषण करने वाला नहीं, मातृहंता हो, शत्रु सदृश। शुभग्रहो हो तो—सुख भोगी, धन युक्त, काव्य शास्त्र का आनन्द पाने वाला (मान०)। शत्रु का घात करे व क्रूर हो (प्रा० यो०)

३—तृतीय भाव में मंगल

भ्रातृ हंता, दुर्वल शरीर, सुख का भागी। उच्च का हो तो—विलासी हो। नीच या पाप गृही—धन सुख या मनुष्यों से हीन, सम्पूर्ण पदार्थों के होते हुए भी टूटे फूटे घर में वास (मान०)।

अच्छे गुण युक्त, धनवान्, शूर, सुखी, भाई हीन, पराक्रमी (फल०)।

धनी, सहज रोग, विपत्ति (खान०)।

राजा की कृपा से उत्तम सुख, उदार, श्रेष्ठ परा...म, धनवान्, भ्रातृ सुख हीन (जा०भ०)।

बुद्धि और पराक्रम वाला (वृ० जा०)।

प्रतापी, शील युक्त, लड़ाई में शूर, राजाओं से पूज्य, प्रसिद्ध (ल० चं०)।

अपार पराक्रमी, शठ बुद्धि (जा० पारि०)।

भाई या बहिन का घातक हो (प्रा० यो०)।

४—तृतीय भाव में बुध का फल

साहसी, स्वजनों से युक्त, मलिनपन, सुख से हीन, कल्याण हितार्थ शुभ कर्म का इच्छुक (मान०)।

शूर, साधारण जीवन, अच्छे भाई हों, श्रम युक्त, निराश (फल०)।

शीलवान्, दयालु, धनी, मित्र युक्त- स्त्री प्रिय, प्रसन्न चित्त (मान०)।

मायावी, घूमने वाला, अत्यंत चंचल और दीन (जा० पारि०)।

दुर्जन (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

अच्छे बांधवों से पूज्य, धर्म की ध्वजा वाला, यशस्वी, देव, गुरु पूजक (ल० चं०)।

हठ से अपने सम्बन्धियों के साथ रहता है। चित्त शुद्धि हीन, सौख्य सहित, अपने मन के अनुसार काम में चतुर (जा० भा०)

५—तीसरे भाव में गुरु का फल

भाई बंदों के साथ गये हुए धन से युक्त, स्वाधीन धन हो, जब भी धन हानि से युक्त, कंजूस, कुमार्गी (मान०)।

अपमानित हो, कृपण हो, भाव दुष्ट पाप कर्ता हो (फल०)।

लापरवाह, कटुवचन, कृपण, पराक्रमी, बहुजन पालक (खान०)।

मित्रता रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री पुरुषों की प्रीति रहित, मंदाग्नि रोग से बल हीन (जा० भ०)।

तेजस्वी, कर्म में निपुण, इन्द्रियजित्, मित्रों से सुख प्राप्त, तीर्थ की वार्ता में प्रसन्न होने वाला (ल० चं०)। कृपण (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

धन रहित, स्त्री से पराजित, पाप करने वाला (जा० पारि०)।

६—तृतीय भाव में शुक्र का फल

भानजे से मोह करने वाला, नेत्र रोगी, धन सम्पन्न, प्रिय वचन, उत्तम वस्त्र धारण कर्ता (मान०)। स्त्री रहित, दुःखी, गरीब, कृपण, अप्रिय (फल०)।

नेक, जोरावर, आलसी, भ्रातृ सहित, धन रहित (खान०)।

दुर्बल अंग, कृपण, दुष्टात्मा, धनहीन, काम देव से संतापित, संत पुरुषों को दुःख देने वाला, दुष्ट चेष्टा (जा० भ०)।

धन धान्य और पुत्रों से युक्त, निरोगी, राजाओं में पूज्य, प्रतापी (ल० चं०)।

कृपण (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

दोषयुक्त वचन, पापी, स्त्री से पराजित (जा० पारि०)।

७—तृतीय भाव में शनि का फल

सहोदर भाइयों का नाशक, कुल में राजा के समान, पुत्र कलंक युक्त (मान०)।

दान में उदार, स्त्री से सुखी, अकर्मण्य, भय युक्त (फल०)।

सूर्य सरीखा फल, विद्वान्, पराक्रमी (वृ० जा०)।

बलवान्, यशस्वी, प्रसन्न चित्त, सभ्य, अनुचर वृन्द सहित (खान०)।

राजा से माननीय, श्रेष्ठ वाहन युक्त, ग्राम पति, बड़ा बली, बहुत आदमियों का पालन कर्ता (जा० भ०)।

प्रसन्न, गुण वत्सल, शत्रु मर्दन करने वाला, पूज्य, धनी और बीर (ल० चं०)।

अल्प भोजी, धन शील, वंश से युक्त, गुणवान् (जा० पारि०)।

भाई बहिन का घातक (प्रा० यो०)।

८—तृतीय भाव में राहु का फल

भ्रातृ नाश, सुख भोगी, धन, पुत्र, कलत्र, मित्र से युक्त, उच्च में हो तो—हाथी घोड़े नौकर आदि हों (मान०)।

घमण्डी, भाइयों का विरोधी, दृढ़ इच्छा शक्ति वाला, दीर्घजीवी, धनी (फल०)।

भाइयों का नाश, पशुओं की मृत्यु करने वाला, दरिद्र, मित्र सौख्य व बल युक्त, शत्रु भय नाशक, यश कल्याण व ऐश्वर्य को प्राप्त, सौख्य, विलास आदि का लाभ (जा० भ०)।

बलवान्, यशस्वी, दाता, धनी (खान०)। अत्यन्त बली और धनी (जा० पारि०)।

९—तृतीय भाव में केतु का फल

शत्रुओं का नाशक, विवाद (झगड़ा) करने वाला, धनवान्, अनेक भोग विलास युक्त, ऐश्वर्यवान्, बड़ा तेजस्वी, मित्रों का नाश, सदा बाँह में पीड़ा, भय के कारण उद्वेग, चिंता से व्याकुल (मान०)।

दीर्घ जीवन, बल धन कीर्ति युक्त, अपनी स्त्री के साथ सुख पूर्वक रहे, अच्छा भोजन करे, एक भाई की हानि (फल०)।

शत्रुओं का नाशक, शत्रुओं से झगड़ा करने वाला, धन योग, ऐश्वर्य में तेज की अधिक प्राप्ति, भाइयों का नाश करने वाला। सदा बांहों में पीड़ा। उच्च में—सुख देता है व उद्वेग देता है (जा० भ०)। राहु के समान फल (खान०)। गुणी धनी (जा० पारि०)

४—चतुर्थ भाव में ग्रहों का फल

१—चतुर्थ भाव में सूर्य का फल

अनेक मनुष्यों के साथ विहार करने वाला, कोमल वाणी, गाने बजाने का प्रेमी, संग्राम में जय, धन और कलत्र से सम्पन्न। राजाओं को प्रिय (मान०)।

कोई सुख नहीं, बंधु रहित, भूमि रहित, मित्र घर रहित, राजा को सेवा करे, पितरों की सम्पत्ति खर्च करे (फल०)।

सुखहीन, वेश्या भोगी, शत्रु बहुत, पागल की तरह घूमे (खान०)।

सौख्य वाहन, धन से हीन, पितृ वैरी. एक जगह निवास नहीं (चलनिवास) (जा०भ०)।

हृदय रोग, धन धान्य, बुद्धि रहित और क्रूर (जा० पारि०)।

दुर्बल अंग, सुख रहित, अप्रभाव, निष्ठुर, दुष्ट संगी, दुर्बुद्धि (ल० चं०)।

सुख रहित, मन में पीड़ित (वृ० जा०)।

बांधवों का नाश, संताप, नष्ट वाहन (गर्ग)।

बहुत पुत्र, संग्राम में निश्चलता, बहुत स्त्री, दुर्बल (जा० सं०)।

उसके पास मोतियों का बाहुल्य हो (यवन)।

अंतःकरण सदा उद्विग्न हो, दुःखी हो (प्रा० यो०)।

२—चतुर्थ में चन्द्र का फल

अनेक प्रकार से धन से पूर्ण, प्रिय जनों का हितेच्छुक, स्त्रियों का प्रेमी, निरन्तर रोगी, मांस मछली खाने वाला, हाथी घोड़ा आदि वाहन युक्त, महलों में क्रीड़ा करने वाला (मान०)।

सुखी, भोगी, त्यागी, मित्र और वाहन युक्त, यशस्वी (फल०)।

दानी, अधिकारी, मलिनचित्त, पंडित (खान०)।

जलाशयों से उत्पन्न धन को प्राप्त करने वाला, खेती, स्त्री, वाहन और पुत्रों से युक्त, देव ब्राह्मण का भक्त (जा० भ०)।

स्त्री पुत्र से युक्त, धनी, सुखी, यशस्वी, विद्यावान् (ल० चं०)।

सुखी (वृ० जा०)।

विद्याशील, सुख से युक्त, पर स्त्री गामी (जा० पारि०)।

नौकर चाकर, स्त्री वाहन का सुख, मंदिर (घर) वाहन, सम्पदा मिले (जा० सं०)।

चन्द्र और शुक्र हो, बहुत सा रौप्य धन देता है, बहुत अन्न और रस गृह में इकट्ठा रहे (जा० सं०)।

बहुत कर मनुष्य सुखी हो (प्रा० यो०)।

३—चतुर्थ में मंगल फल

जड़ बुद्धि, अति दीन, श्रेष्ठ कुल से हीन, बन्धु निमित्त से दुःखी, अति दुःखी, सब देशों में भ्रमण करने वाला, नीच सेवा में तत्पर, पराये वश में रहने वाला, पर स्त्री पर लुब्ध चित्त (मान०)।

मित्र, माता, भूमि, सुख, घर, वाहन रहित (फल०)।

दुःखी, संग्राम में धैर्य, निर्धनी, मजबूत, निर्दय, ऋणी (खान०)।

मित्रों और वाहन से दुःख प्राप्त, परदेश वासी, शरीर में अधिक रोग, निर्बलदेह (जा० भ०)। सुख रहित (वृ० जा०)।

श्याम वर्ण, अधिक मित्र वाला, शत्रु से हारने वाला, वृथा घूमने वाला पुत्र रहित महाकामी (ल० चं०)।

परिवार से हीन, स्त्री से निर्जित, पराक्रमी (जा० पारि०)।

बन्धुहीन, पृथ्वी से जीविका, परदेश वासी, कीच वाले देश में व गृह में निवास (जा० सं०)।

शस्त्रों से युक्त तथा ताम्बे से युक्त (यवन०)।

अन्तःकरण सदा उद्विग्न हो, दुःखी हो (प्रा० यो०)।

४—चतुर्थ भाव में बुध का फल

धन से पूर्ण हो, पापाक्रांत हो, भाईयों का नाशक हो। अपने घर या उच्च में हो तो अनेक पत्नियों से पूर्ण, बुद्धि से युक्त, निर्लज्ज, क्षीण जंघा, दुर्बलांग, बालपन में रोगी, (मान०)।

विद्वान्, चाटुवाक्य, सुखी, मित्र, भूमि, अन्न सहित भोगी (फल०)।

पुत्रहीन, दुष्ट शरीर, गीत प्रिय, दानी, मिष्टभाषी, आलसी (खान०)।

श्रेष्ठ वाहन, और अन्न धन सहित, गान विद्या और नृत्य में रुचि, विद्या और भूषणों का प्राप्त कर्ता (जा० भ०)।

बहुत नौकर और यश से युक्त, प्रवीण बोलने वाला, भाग्यवान्, सत्यवादी (ल० चं०)। पंडित (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

परिवार रहित, श्रेष्ठ ज्ञानी, धनी, पंडित (जा० पारि०)।

पापरहित, बहुत मित्र, बहुत धन, अनेक रस विलासी। पापयुक्त हो तो भिन्न प्रकार का फल (जा० सं०)। घर में सुवर्ण हो (यवन०)।

५—चतुर्थ में गुरु का फल

सदा सम्मान पाने वाला, नाना प्रकार के धन और वाहन आदि से हर्षित, राजा की कृपा से अधिक सम्पत्ति प्राप्त (मान०)।

माता के साथ रहे, मित्र, दास, पुत्र, स्त्री, अन्न आदि युक्त, सुखी (फल०)।

थोड़ा धन, जरी वाले वस्त्र, रथ हाथी से युक्त, राजप्रिय, सम्पूर्ण सुख युक्त (खान०)। सुखी (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

सम्मान सहित, अनेक धन वाहन आदि युक्त, अनेक आनन्द प्राप्त, राज कृपा से सम्पदा प्राप्त (जा० भ०)।

संसार में सुखी, सौभाग्य युक्त, राजाओं में पूज्य, शत्रुओं को जीतने वाला, कुल में मुख्य, गुरु का भक्त, (ल० चं०)।

वाचाल, धनी, सुख यश रूप वाला, शठ स्वभाव (जा० पारि०)।

बाल मित्र हों, दिव्य माला वस्त्र क्रीड़ा तथा अनेक वाहन युक्त (जा० सं०)।

घर बहुत रत्नों से युक्त (यवन)।

६–चतुर्थ में शुक्र का फल

बहु स्त्री पुत्र युक्त, अति सुन्दर, राजमहल के समान घर में रमण करने वाला, वस्त्र तथा खाने पीने के विलास से युक्त (मान०)।

अच्छे वाहन, अच्छा घर, भूषण, वस्त्र, गंध आदि प्राप्त (फल०)।

विलासी, प्रियभाषी, धनाढ्य, पंडित, अच्छा स्वभाव (खान०)।

मित्र स्थान, ग्राम और वाहनों का अनेक सुख प्राप्त, देवताओं का पूजक, सदा आनन्द को प्राप्त (जा० भ०)।

सुखी, जानने वाला, बहुत स्त्री वाला, बहुत धनी, स्त्रियों का स्वामी, यशी और विवेकी (ल० चं०)। सुखी (वृ० जा०)।

स्त्री से पराजित, सुख यश धन विद्यायुत और वाचाल (जा० पारि०)।

दूसरों का मित्र, विचित्र कर्म करने वाला, ग्राम वासी, विश्वास कर्ता, बहुत प्रकार से भोगी, राज पूज्य, दीर्घायु वाला, सुन्दर स्त्री हो, सदा पराक्रम वाला (जा० सं०)।

विशेष कर मोती रहते हैं। (यवन)

७–चतुर्थ में शनि का फल

बंधुनाशक, स्वयं सदा रोगी हो, वक्री हो तो स्त्री पुत्र भृत्यों से अनादर व ग्रामान्तर में दुःख देने वाला होता है (मान०)।

दुःखी, गृहविहीन, वाहन रहित, मातृ रहित, आरम्भ जीवन में रोगी (फल०)।

पित्तवात से क्षीण बल, दुष्ट शीलवान्, आलसी, झगड़ालू, दुर्बल देह, दरिद्री (जा० भ०)।

सुखहीन, भाइयों ने जिसका द्रव्य छीन लिया हो, गुणी, कुसंगी, दुर्जनों से युक्त और मूर्ख (ल० चं०)। सुख रहित, पीड़ित (वृ० जा०)।

चिंता युक्त, बेहोश, परितप्त, बलहीन (खान०)।

आचारहीन, कपटी, मातृक्लेश युक्त (जा० पारि०)।

टूटे हुए आसन और गृह वाला, विफल, दुःख से संतप्त, स्थाननाश (जा० सं०)।

उसके पास लोहा और शस्त्र होता है (यवन)।

अन्तःकरण सदा उद्विग्न और दुःखी (प्रा० यो०)।

८—चतुर्थ में राहु का फल

धन और बंधु से रहित, गांव के एक किनारे पर घर बना कर रहे, नीच से स्नेह, अति चुगल खोर, बड़ा पापी, एक कन्या हो, दुर्बल स्त्री (मान०)।

मूर्ख, दुःख उत्पन्न कर्ता, मित्रयुक्त, अल्पायु, कभी कभी सुखी (फल०)।

सुख नाश, सज्जनता और मित्रों के सुख से हीन, सदा भ्रमण शील (जा० भ०)।

सदा दुःखी, परदेश में भ्रमण, मूर्ख, विवादकारी, सुख हीन, मित्र विपक्ष में हो जावे (मान०)।

स्त्री आदि जनों का अवरोध करने वाला (जा० पारि०)।

बन्धु को पीड़क, वृष कर्क मेष इनका हो तो बंधु का देने वाला (जा० सं०)।

९—चतुर्थ में केतु का फल

कभी माता का सुख नहीं हो या बाल्यावस्था में माता मरे, मित्रवर्गों के सुख से हीन, पिता से प्राप्त किये गृह धनादि का नाश हो। उच्च का हो तो बांधवों से सुख पावे अधिक समय तक परदेश में रहे। सदा व्यग्र अर्थात् चिन्ता क्लेश युक्त रहे।

अपनी भूमि खोवे, वाहन और मातृ सुख नष्ट, अपना देश त्याग विदेश में रहे और दूसरे के घर में रहे (फल०)।

माता का सुख कभी न हो, मित्र वर्ग और पिता से नाश को प्राप्त, भ्रातृहीन। उच्च का हो—तो पूर्वोक्त सब प्रकार के सौख्य की प्राप्ति थोड़ा सुखी, सदा व्यग्रचित्त (जा० भ०)। राहु के समान फल (मान०)। दूसरों को दोष लगाने वाला (जा० पारि०)।

माता पिता को कष्ट करता है। अति चिंता से कष्ट, मित्र सुख से हीन (जा० सं०)।

५—पंचम भाव में ग्रहों का फल

१—पंचम में सूर्य का फल

बाल्यावस्था में दुःख, धन हीन, युवावस्था में व्याधि युक्त, एक पुत्र हो, अन्य पुरुषों के घरों में रहने वाला, शूरवीर, चतुर, बुद्धिमान्, विलासी, क्रूर कर्म करने वाला, दुष्ट मन वाला (मान०)।

सुख धन संतान रहित, अल्पायु, बुद्धिमान्, जंगली देशों में भ्रमण (फल०)।

मूर्ख, अल्प पुत्र, व्याधि युक्त, क्रोधी, धर्महीन (खान०)।

राजा का प्रिय, चंचल बुद्धि, परदेश में रहने वाला (जा० पारि०)।

संतान रहित, शिव पार्वती का भक्त, सौख्य रहित, सत कर्म और धन से हीन, भ्रमित चित्त (जा० भ०)।

क्रोधी, कुरूप, शील वर्जित, कुसंग से लब्ध वृत्ति वाला (ल० चं०)।

धन और पुत्र रहित (वृ० जा०)।

संतान न हो, होवे तो सूर्य की दशा में नष्ट हो। (प्रा० यो०)।

स्थिर बुद्धि (सूर्य जातक)।

सूर्य बली हो—पिता नष्ट । सूर्य स्थिर राशि में—पहिले पुत्र का नाश । सूर्य चर राशि में—पुत्रों को नहीं मारता । सूर्य अन्य राशि में—पुत्र नाशक (जा० सं०) ।

२.–पंचम में चन्द्र का फल

सुख भोगी. अनेक पुत्र, वश्य स्त्री सहित । क्षीण चंद्र होकर शत्रु क्षेत्री हो—स्त्री सुख, पुत्र पौत्रों के सुख से रहित (मान०) ।

अच्छे पुत्र, अतिशय बुद्धि, मृदु गति, मंत्री हो (फल०)

तेजस्वी, असावधान चित्त (खान०) ।

इन्द्रियजित्, सत्यवादी, प्रसन्न, धन और पुत्रों से सब सुख प्राप्त, श्रेष्ठ संग्रह करने वाला, शीलवान् (जा० भ०) ।

पुत्रों से युक्त, रोगी, कामी, भयानक, खेती के रसों से युक्त, विनयी (ल० चं०) ।

पुत्रवान् (वृ० जा०) (प्रा० यो०) ।

मंत्र क्रिया में आसक्त चित्त, दयावान्, धनी, मायावी (जा० पारि०) ।

चंचल बुद्धि (सूर्य जातक) ।

कन्या संतान हो, पुत्र हीन । चन्द्र बली—माता नष्ट । क्षीण व पाप युक्त-चंचल कन्या हो (जा० सं०) ।

३–पंचम में मंगल का फल

पुत्र रहित, पाप में मन, अति दुःखी । स्वक्षेत्री या उच्च का—कृश तथा मलिन शरीर, एक पुत्र हो (मान०) ।

दुःखी, सन्तान रहित, अनर्थ प्राप्त, चुगल खोर, बलहीन मन का (फल०) ।

थोड़ा बोलने वाला, निर्बुद्धि, पुत्र धन का सुख नहीं, बातकफ रोगी, क्रोधी, मुख्यतः पेट में रोग (खान०) ।

कर्क और बात रोग से पीडित, स्त्री, मित्र, पुत्र सुख से हीन, उल्टी बुद्धि वाला (जा० भ०) । पुत्र रहित, धन रहित (वृ० जा०) ।

कुत्सित पुत्र वाला । सदा रोगी, भाइयों से विरक्त हो (ल० चं०) ।

क्रूर, घूमने वाला, चपल, साहसी, विधर्मी, भोगी, धनी (जा० पारि०) ।

घोर बुद्धि (सूर्य जातक) ।

सन्तान न हो, हो तो सूर्य की दशा में नष्ट (प्रा० यो०) ।

४–पंचम में बुध का फल

सुख युक्त, धनी, बुद्धिमान, सन्तोषी, रूपवान्, साहसी (खान०) ।

पुत्रों के सौख्य युक्त, बहुत मित्र, मंत्र वाद में चतुर, श्रेष्ठ शील, लीला युक्त (जा० भ०) ।

पुत्र और पौत्रों से युक्त, सुंदर, बुद्धिमान्, सुखी (ल० चं०) ।

मन्त्री (वृ० जा०) ।

पुत्र स्त्रीयुक्त, सुख का पात्र, खिले कमल सा मुँह, सदा सुखी, बड़ा पवित्र, देव गुरु ब्राह्मण का भक्त (मान०) ।

विद्वान्, सुखी, प्रतापी, कई सन्तान, मांत्रिक (फल) ।

मंत्र तथा अभिचार में कुशल, पुत्र स्त्री विद्या धन बल से युक्त (जा० पारि०) ।

सन्तान सुख हो । बुध बली—माया नष्ट, । अस्त या शत्रु ग्रह दृष्ट—उत्पन्न किये हुए पुत्र का नाश हो ।

शिक्षक या हिसाब के काम पर धुरन्धर, कन्यावान् (प्रा० यो०) ।

मंगल बली—पुत्र नष्ट । शत्रु ग्रह की राशि में या शत्रु ग्रह दृष्ट या नीच या पाप युक्त—पुत्र शोक का दुःख (जा सं०) ।

पंचम में बुध—सुन्दर बुद्धि (सूर्य जातक) ।

५—पंचम में गुरु का फल

सबका सुहृद, सुहृद जनों में श्रेष्ठ, अनेक शास्त्र में बुद्धि, सुखी, सबका प्रिय (मान०) ।

पुत्र द्वारा क्लेश हो, बुद्धिमान्, राजा का सचिव (फल०) ।

पंडित, पुत्र, पौत्र सहित, धन आदि चिन्ता युक्त (खान०) ।

श्रेष्ठ मित्र, श्रेष्ठ पुत्र, मंत्र शास्त्र और अनेक धन वाहन को प्राप्त, कोमल वाणी (जा० भ०) ।

पुत्र युक्त, धर्मवान्, पंडित, सुखी, शुद्ध चित्तवाला, दयालु, नम्रता युक्त (ल० चं०) ।

बुद्धिमान् (वृ० जा०) ।

मंत्री, गुणी, विभव सार से युक्त, अल्प सन्तान (जा० पारि०) ।

सुन्दर बुद्धि (सूर्य जातक) ।

सुबुद्धि युक्त और बहु पुत्रोंवाला, दानी, भोगी, गुणी, धनी, मानी । गुरु बली हो तो नाना कष्ट (जा० सं०) । विचारवान्, कन्यावान् (प्रा० यो०) ।

६—पंचम में शुक्र का फल

बहु पुत्र पुत्रियों से युक्त, जामाता से पूजा पाने वाला, बड़ा धनवान्, गुणी, नगर के नेताओं में श्रेष्ठ, विलास शीला स्त्री को प्रिय (मान०) ।

अखंड धन का स्वामी, दूसरों का रक्षक, अति चतुर, संतान युक्त (फल०) ।

दाता, राजप्रिय, पुत्र धन धान्य युक्त (खान०) ।

सम्पूर्ण काव्य कला सहित, वाहन अन्न से युक्त, राजा से बड़ा गौरव प्राप्त (जा० भ०) ।

समृद्ध, सुरूप, सदा उन्नत, पुत्र कन्या और पौत्रोंसे युक्त, सौभाग्यशाली(ल०चं०) ।

बुद्धिमान् सुखी (वृ० जा०) ।

सुपुत्रवान्, धनी, रूपवान्, सेना और घोड़ों का स्वामी (जा० पारि) ।

कोमल बुद्धि (सूर्य जातक) ।

पुत्र सुख, विविध प्रकार से पुष्ट और परमधनी, पंडित, राजमंत्री, दंडपति । शुक्र बली हो तो पिता नष्ट (जा० सं०) । कन्यावान्, सुखी (प्रा० यो०) ।

७–पंचम में शनि का फल

पुत्र से हीन, धन से हीन, दुःख देने वाला। उच्च या मित्र गृही हो तो—लंगड़ा होकर एक पुत्र वाला हो (मान०)।

भ्रांत (यहाँ वहाँ भटकने वाला), ज्ञान संतान धन और सुख रहित, शठ और दुर्मति (फल०)।

सदा रोग से दुर्बल देह, धन हीन, कामदेव की हानि करने वाला, पुत्रों से भय (जा० भ०)।

पुत्र हीन, क्रिया और यश से रहित, द्रव्य हीन, कुरूप (ल० चं०)।

पुत्र और धन रहित, सूर्य सरीखा फल (वृ० जा०)।

निर्बुद्धि, चिंता युक्त, पुत्र सुख हीन, आलसी, मूर्ख, छोटा शरीर (खान०)।

मत्त, चिरायु, सुख रहित, चंचल, धर्मात्मा (जा० पारि०)।

कुटिल बुद्धि (सूर्य जातक)।

शनि बली हो—नष्ट पुत्र, शत्रु क्षेत्री—समस्त पुत्रों का नाश। उदय होकर स्व या उच्च का—बड़ा तीक्ष्ण एक पुत्र हो।

८–पंचम में राहु का फल

पुत्र का नाशक, महाक्रोधी, चंद्र युक्त राहु किसी अन्य स्थान में हो तो एक ही पुत्र हो वह अति मलिन फटे कपड़े पहिनने वाला हो (मान०)।

नाक से बात करे, संतान रहित, कठोर हृदय, उदर पीड़ा हो (फल०)।

पुत्र रहित, वेहोश, पीड़ा युक्त, मूर्ख (खान०)।

सुखहीन, मित्रता रहित, उदर पीड़ा, विलास की हानि। निश्चय करके भ्रम को लाभ करता है (जा० भ०)। डरपोक, दयालु, दरिद्र (जा० पारि०)। कुटिल बुद्धि, (सूर्य जातक)।

हीन मलीन पुत्र हो, सिंह व कर्क का—संतान हो, अन्य राशि का—पुत्र हीन (जा० सं०)।

९–पंचम में केतु का फल

सहोदर भाइयों में परस्पर लड़ाई, वायु के कोप के कारण कष्ट, अपनी बुद्धि के कारण व्यथा युक्त, थोड़े पुत्र वाला, नौकरों से युक्त, अनेक प्रकार के बल से पूर्ण (मा०)।

संतान हानि, पेट में रोग, पिशाच पीड़ा, दुर्बुद्धि, खल प्रकृति (फल०)।

उदर में क्षत, गिरने से कष्ट, भाइयों से प्यार करने वाला, थोड़े पुत्र वाला, सदा बल युक्त (जा० भ०)।

राहु समान फल (खान०)। शठ, जल भीरु, विशेष रोगी (जा० पारि०)।

संतान हानि, विद्या ज्ञान से वर्जित, भय त्रास को प्राप्त सदा दुःखी, विदेश के गमन में तत्पर (जा० सं०)।

६—छठे भाव में ग्रहों का फल

१—छठे भाव में सूर्य का फल

योगाभ्यासी, बुद्धिमान्, स्वजनों का हितेच्छुक, स्व जाति को आनन्द देने वाला, दुर्बल अंग, गृहस्थ धर्म पालन करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, क्रीड़ा करने वाला, शत्रु जनों को जीतने वाला, शुभ कर्म करने के लिये पूजा पाने वाला, दृढांग (मा०)।

राजा हो, प्रसिद्ध, अच्छे गुण युक्त, धनी और जयी (फल०)।

धनी, निरोगी, शत्रु नाशक, नाना के घर से लाभ (खान०)।

सदा सौख्य युक्त, शत्रु हंता, बलवान्, अच्छे वाहन युक्त, बहुत तेजवान्, राजा का मंत्री (जा० भ०)।

शत्रु रहित, प्रसिद्ध मान वाला, सुखी, पवित्र, वीर, अनुरागी और राजा का सलाहकार, बली और शत्रुओं को जीता हुआ (ल० चं०)।

कामी, शूर, राज्य अभिमानी, ख्याति और श्रीमान् (जा० पारि०)।

घर में बहुत से बैल होते हैं। उसके बकरी और गोधन रूप बहुत धन होता है। उसकी पशुशाला बड़ी होगी, ऊँटों आदि से भी युक्त हो।

विष और शत्रु से संताप, क्षुद्र शत्रु, काष्ठों का नाश, काष्ठ और पत्थर के प्रहार से विदीर्ण देह, कान, हनु, वाणी, दांत, नख घाव वाले अंग से युक्त (यवन)।

शत्रु या रोग का नाश (प्रा० यो०)।

२३ वर्ष में धन देता है (हिल्लाज)।

२—छठे भाव में चंद्र का फल

क्षीण चंद्र—नाश होने वाला, भोगों को न भोगने वाला। अनेक व्याधि तथा दुःख हो। पूर्ण चंद्र या स्वगृही अनेक सुख हो (मान०)।

दुर्बल शरीर, कुरूप, रोगी, सदा परेशान (खान०)।

मंदाग्नि रोगी, दया रहित, क्रूर, बड़ा आलसी, कठोर, दुष्ट चित्त. क्रोधवान्, बहुत शत्रु वाला (जा० भ०)।

द्रव्य हीन, कोमल देह, अति आलसी, मंदाग्नि, तीक्ष्ण दृष्टि, वीर (ल० चं०)।

बहुत पुत्र, शरीर सुकुमार, मंदाग्नि, उग्र स्वभाव, आलसी, कार्य करने में अवज्ञा करने वाला, निरुद्यमी (वृ० जा०)।

क्षीण चंद्र—अल्पायु। पूर्ण चंद्र—अति भोगी, दीर्घायु, (जा० पारि०)।

जलोदर रोग से संतप्त, रोग और जल से उत्पन्न विकार से युक्त, कफ से संतप्त, छठा चंद्र हजार दोष देता है (यवन)।

कन्या सन्तान वाला हो, भ्राता भगिनी तथा मामा का सुख हो, क्षीण चंद्र मृत्यु देता है। चंद्र बलवान् हो तो गोधन देता है (जा० भ०)।

बहुत शत्रु, सुकुमार, क्षुधा मंद, उग्र स्वभाव, आलसी (प्रा० यो०)।

शत्रु पीड़ा, कुल देवता का कोप, आलसी (सोम सिद्धान्त)।

३—छठे भाव में मंगल का फल

संग्राम में मृत्यु, नीच का या शत्रु दृष्ट हो—विकल मूर्ति, निंदित, क्रूर कर्म करने वाला, उच्च का—मित्र, धन से परिपूर्ण, सुखी, भोगी (मान०)।

बलवान् (वृ० जा०)।

प्रबल मदन युक्त, धनी, विख्यात, राजा हो, युद्ध में जय (फल०)।

शत्रु नाशी, रूपवान्, ऐबी, धनयुक्त, गुणग्राही, कुल पूज्य, माता के पक्ष में कुठार के समान (खान०)।

जठराग्नि अति प्रबल, क्रोध स्वरूप, शत्रुओं का नाशक, सतसंगी, सदा काम कला में वृद्ध (जा० भ०)।

शत्रुहीन, अनेक द्रव्यों से युक्त, स्त्री से लालसा प्राप्त करने वाला, पुष्ट देह, शुद्ध चित्त (ल० चं०)।

धनस्वामी, शत्रुनाशक, प्रबल जठराग्नि, श्रीमान्, यश बल युक्त, रोग करने वाला (जा० पारि०)।

२४ वर्ष में पुत्र देता है। पापदृष्ट—शत्रु हो। नियम से शत्रु भय, शुभ युक्त या दृष्ट—शत्रु कृत भय नहीं होता, शत्रु की मित्रता हो।

शरीर में फोड़े होकर छेद पड़े, बड़ी व्याधि हो, लोगों से धिक्कारित (प्रा० यो०)।

रति विकार हो, परन्तु सबसे जय मिले (सोम सिद्धान्त)।

४—छठे भाव में बुध का फल

वक्री या शत्रु क्षेत्री—शत्रु से भय, शुभ गृही या शुभ दृष्ट—शुभप्रद, शत्रु नाशक है (मान०)। सदा दुःखी, आलसी, दुष्ट स्वभाव, शत्रुयुक्त (खान०)।

झगड़ा करने में प्रीत, रोगी, कठोर हृदय, शत्रु से संतप्त चित्त, आलसी व्याकुल (जा० भ०)।

नृशंस, भाइयों का विरोध, ईर्ष्यालु, काम में त र, विद्वान् (ल० चं०)।

शत्रु रहित (वृ० जा०)।

विद्या विनोदी, कलह प्रिय, शील रहित, परिवार से उपकार हीन (जा० पारि०)।

चन्द्र के समान हजार दोष देता है (यवन)।

३७ वर्ष में मृत्यु देता है (हिल्लाज)।

चन्द्र के समान फल देता है, मामा कन्या सन्तान वाला।

स्त्री व पुरुष के रोग, लोगों से कलह, सर्वकाल त्रास, बहुत घूमे (प्रा० यो०)।

५—षष्ठ भाव में गुरु का फल

हाथी-घोड़ा युक्त, दुबला अंग, शत्रु को जीतने वाला। वक्री—शत्रु से भय (मान०)।

बहुत आकर्षण, अनादर प्राप्त, शत्रु दमनकर्त्ता, मन्त्राभिचार में चतुर (फल०)।

आलसी, व्याधि युक्त, कटु वाक्य, मामा सुखहीन (खान०)।

श्रेष्ठ गति और श्रेष्ठ विद्या से हीन अर्थात् दुष्ट और खोटी विद्या में तत्पर, यश का प्रेमी, शत्रुनाशक, प्रारब्ध कार्य में आलसी (जा० भ०)।

विघ्न युक्त, बहुत शत्रु वाला, निष्ठुर, उद्वेग वाला, बुद्धिहीन, कामुक (ल० चं०)।

शत्रु रहित (वृ० जा०)। कामी, शत्रुओं को जीतने वाला और अबल (जा० पारि०)।

चंद्र समान फल, भ्राता, भगिनी तथा मामाओं का बड़ा सुख, मामा पुत्र युक्त, सुखी व धनवान् (जा० सं०)। ४० वर्ष में वैरियों को भय देता है (यवन)।

चंद्र के समान हजार दोष देता है (हिल्लाज)।

आलसी, क्रोधी, दुष्ट वाक्य बोले, दूसरे से पराजय, स्त्रियों का प्राबल्य, अति आहार (सोम सिद्धान्त)।

६—षष्ठ में शुक्र का फल

अस्त हो तो दुष्ट कुल में जन्म लेकर भी बड़ा पण्डित हो, उच्च का—शत्रु को जीतने वाला, सुख पाने वाला (मान०)।

शत्रु रहित, धन रहित, युवती स्त्रियों से भ्रष्ट, दुःखी (फल०)।

रोगी, मूर्ख, दयाहीन, मित्र रहित (खान०)।

स्त्रियों का प्यारा नहीं, कामदेव से हीन, निर्बल, शत्रु का भय (जा० भ०)।

दंभी, जड़, हानि जन्म से युक्त, दुष्ट संग वाला, लड़ाई करने वाला, पिता का वैरी (ल० चं०)। शत्रु रहित (वृ० जा०)।

शोक अपवाद से युक्त (जा० पा०)।

भ्राता भगिनी तथा मामाओं का सुख, मामा कन्या संतान वाला, पावों में रोग, (जा० सं०)।

२१ वर्ष में शस्त्र से मृत्यु (हिल्लाज)।

बुरे कर्म करे, दरिद्री, स्त्रियों से अति मित्रता, दुष्ट बुद्धि, डरपोक (सोम सिद्धान्त)।

७—षष्ठ भाव में शनि का फल

नीच का व शत्रु क्षेत्री हो—कुल का क्षय करने वाला। उच्च मित्रगृही या स्वगृही—शत्रुओं को मारने वाला, धन और कामनाओं की सिद्धि को प्राप्त, धर्म कामों में पूर्ण (मान०)।

भोजन जल्दी-जल्दी खाने वाला, धनी, शत्रुओं का दमन कर्ता, धृष्ट, मानी (फल०)।

दानी दुःखी, शत्रुनाशी, राज प्रिय (खान०)।

शत्रुओं को जीतने वाला, गुणों का जानने वाला, श्रेष्ठ कर्म, बहुतों का पालन कर्ता, पुष्ट देह, प्रबल जठराग्नि, श्रेष्ठ (जा० भ०)।

विशेष भोजन करने वाला, विषय बुद्धि, शत्रु से भय, कामी, धनवान् (जा० पारि०)।

वैरियों के पक्ष से संतप्त, शूरवीर, विषय चेष्टा, बहु भोजी, कवि, शत्रुओं का दाहक (जा० सं०) पावों में रोग (जा० सं०)।

सिर पर पत्थर पड़ना, बिजली पड़ना, कोई का मरना (प्रा० यो०)।

८—षष्ठ में राहु का फल

शत्रु का नाश करे, धन पुत्र भोग प्राप्त, उच्च का—अनेक अनर्थों का नाशक, परस्त्री गमन अवश्य करे (मान०)।

शत्रुओं द्वारा सताया जावे, या दुष्ट लोगों से दबाया जावे, गुदा में रोग, धनी और दीर्घजीवी (फल०)।

वैरियों का नाशक, धन लाभ, पशु पीड़क, कमर में पीड़ा, म्लेच्छों से समागम, बड़ा बलवान् (जा० भ०)।

म्लेच्छ राजा से धन प्राप्त, उच्च हृदय, शत्रु नाशक (खान०)।

शत्रु संहारक, दीर्घायु, विशेष सुखी, कुलीन (जा० पारि०)।

बहुत सी भैंसों का धन हो (जा० सं०)।

९-षष्ठ में केतु फल

मामा द्वारा मान हानि, वैरियों का नाश, चौपायों के कारण सदा सुखी, नीच प्रकृति, शरीर किसी विकार से युक्त, सब व्याधियों का नाश (मान०)।
औदार्य, उत्तम गुण युक्त, प्रसिद्ध, प्रभुता प्राप्त, शत्रु का दमन कर्ता, अभीष्ट सिद्धि प्राप्त (फल०)।

शत्रुओं का नाशक, मामा के पक्ष में मान भंग को प्राप्त, चौपायों से सुखी, सदा धन लाभ, निरोगी देह, व्याधि नाश (जा० भ०)।

राहु के समान फल (खान०) (जा० सं०)।

बन्धु प्रिय, उदार, गुण प्रसिद्ध, विद्वान्, यशस्वी (जा० पारि०)।

शत्रु से जय, बहुत आहार, शूर, विजयी (सोम सिद्धान्त)।

७-सप्तम भाव में ग्रहों का फल

१-सप्तम में सूर्य का फल

स्त्रियों के साथ विहार करने वाला, अन्य सुखों से हीन, बड़ा चंचल, पाप कर्म में प्रवृत्ति, फूला शरीर, न अति लम्बा न अति छोटा, कपिल नेत्र, कुरूप, पीले रंग के केश (मान०)।

राजा का कोप, कुरूप, बिना स्त्री के भटकता फिरे, अपमान सहे (फल०)।

चिंता व्याकुल, कामी, स्त्री हीन (खान०)।

धन हीन, देह की शोभा रहित, भय और रोग युक्त, दुष्ट स्वभाव, राजक्रोध से दुःखी, कृश (जा० भ०)।

दुष्ट स्त्री वाला, दुष्टों से प्रसन्न, थोड़े पुत्र वाला, गुह्य रोगी, पाप सहित (ल० चं०)। स्त्रियों से हारा हुआ (वृ० जा०)।

स्त्री वंध्या हो (वृ० पा०)।

स्त्री का बैरी, विशेष कोपी, शठ (जा० पारि०)।

स्त्री से विलास करने वाला और सुख का भागी नहीं होता, चंचल, पापी होता है। धायु के समान शरीर वाला न अति छोटा न अति बड़ा, कपिल वर्ण नेत्र, रूपवाला, पिंगल केशों से युक्त, क्रूमूर्ति (जा० सं०)।

सूर्य की दृष्टि हो या वर्गोत्तम हो—तो उत्तम है, सांवले रंग की, लाल नेत्र, चंचल चित्त, मनमाने भाषण करने वाली, लम्बे हाथ, राजस गुण युक्त, पांडित्य करने वाली ऐसी उत्तम स्त्री मिले, यदि उसमें पाप का योग हो तो अरिष्ट हो (प्रा० यो०)।

२–सप्तम में चन्द्र का फल

उत्तम स्त्रियों का स्वामी, सुवर्ण से सम्पन्न, सुंदर देह, क्षीण हो वा पापगृही या पाप दृष्टि हो—सुख का भागी न हो, स्त्री रोगिणी हो (मान०)।

देखने में अच्छो, सुन्दर, स्त्री से प्यार किया गया अति सुभग (सुन्दर) (फल०)।

बड़ा अभिमानी, कामातुर, धन और नम्रता रहित (जा० भ०)।

निरोगी, धनवान्, सुन्दर व यशस्वी (खान०)।

दुःखी, कुष्ट रोगी, वंचक, कृपण, बहु शत्रु, पराई स्त्री से संपर्क (ल० चं०)।

ईर्षावान्, दूसरे की भलाई को बुराई मानने वाला (वृ० जा०)।

दयालु, भ्रमणशील, स्त्री के वश में रहने वाला, भोगवान् (जा० पारि०)।

राशि के सदृश स्वभाव वाली स्त्री हो (वृ० पा०)।

पूर्ण चंद्र—सुन्दर स्त्री का स्वामी, सुवर्ण युक्त, तथा सुंदर शरीर वाला, क्षीण, पापदृष्ट या पापराशि में—स्त्री रोगिणी हो, सुख भागी नहीं होता (जा० सं०)।

लोगों के संतति का द्वेष करे व स्त्रियों पर बहुत प्रेम करे। वर्गोत्तम हो तो मृदु शरीर प्रिय बोलने वाली स्त्री हो (प्रा० यो०)।

३–सप्तम में मङ्गल का फल

नीच या शत्रु क्षेत्री—स्त्री के मरण का दुःख हो। मकर का या स्वक्षेत्री—एक ही विवाहिता स्त्री जीवित रहे। चपल बुद्धि वाली, लम्बी, दुष्ट चित्त वाली और कुरूपा पत्नी हो (मान०)।

अनुचित कार्य कर्त्ता, रोग से ग्रसित, रास्ते से भटकता हुआ अपनी स्त्री को खोवे (फल०)।

कामी न हो, सदा दुःखी, मूर्ख, अत्याचार करने वाली, सदा लड़ाई में उद्यत, स्त्री न जीये, यात्रा, स्त्री सुख न हो (खान०)।

अनेक अनर्थ से व्यर्थ चिंता से और शत्रु समूह से पीड़ित, स्त्री जनित दुःख से संतापित (जा० भ०)।

क्रोधी, नीच सेवी, वंचक और निठुर रुधिर से आरक्त (ल० चं०)।

स्त्री का जीता हुआ (वृ० जा०)।

रजस्वला और वंध्या स्त्री का संग, सुंदर स्तन वाली स्त्री (वृ० पा०)।

स्त्री के कारण विलाप करने वाला, रण प्रेमी (जा० पारि०)।

युवती स्त्री हो, स्त्री की लाल कांति हो, पुरुष स्वभाव वाली स्त्री हो या स्त्री हीन हो। नीच या शत्रु क्षेत्री—स्त्री मरण का दुःख हो। मकर या स्वराशि में—चंचल, बुद्धि से अति विशाल, दुष्ट चित्त तथा विरूप, सत्कृत स्त्री की प्राप्त (जा० सं०)।

मंगल की दृष्टि हो या वर्गोत्तम हो—सांवला शरीर, क्रूर नेत्र, दुष्टवाक्य, अति चंचल, मनमें कपट, चोर, झूठी, मार खाने वाली, पति को दुःख देने वाली, ज्वर फोड़ा, आदि रोग पीड़ित, खारा तीखा, खट्टा खाने वाली, विशेष कामी स्त्री हो।

इसमें पाप योग हो तो देह रोग, प्रदर परमा वगैरह रोग हो, इसमें पाप शनि का योग हो तो मंगल में बताये फल से अधिक दुष्ट हो (प्रा० यो०)।

४—सप्तम में बुध का फल

चंचल, मध्यम दृष्टि। शुभ क्षेत्र हो तो—उत्तम कुल की स्त्री मिले (मान०)।

विद्वान्, सुन्दर वेश धारण करे, बड़प्पन प्राप्त हो, स्त्री धनवान् मिले (फल०)।

धनी, सत्यवक्ता, मुसाहिब, परोपकारी, रूपवान्, बुद्धिमान्, सुशील (खान०)।

श्रेष्ठ शीलयुक्त, वैभवयुक्त, सत्यवक्ता, स्त्री, सुवर्ण, पुत्रयुक्त, (जा० भ०)।

रूप और विद्यायें अधिक, सुशील, कामशास्त्र का ज्ञाता, स्त्रियों में पूज्य हो (ल० चं०)। धर्मज्ञ (वृ० जा०)।

उसको वेश्या, नीच जाति या बनिया स्त्री से संग होता है (वृ० पा०)।

व्यंग शरीर, शिल्पकला का ज्ञाता, विनोदी और चतुर (जा० पारि०)।

पुरुष चंचल वृत्ति से युक्त हो, पुरुष स्वभाव वाली स्त्री मिले, शुभ राशि का हो तो—उत्तम वंश में उत्पन्न स्त्री मिले (जा० सं०)।

उत्तम स्वभाव वाली स्त्री हो, पुरुष स्त्री के आधीन हो, धर्म जानने वाला हो (प्रा० यो०)।

५—सप्तम में गुरु का फल

राजा सम सुखी, अमृत तुल्य वाणी, उत्तम बुद्धि, दिव्यभूमि दर्शन में प्रिय (मान०)।

अच्छी स्त्री, पुत्र प्राप्त, अनेक सुभग, अपने पिता से अधिक उदार (फल०)।

बड़ा पंडित, विनीत, सुखी, स्त्री सुखयुक्त, चतुर (खान०)।

शास्त्र में अभ्यास करने वाला, नम्रता सहित, धन से अत्यन्त सौख्य प्राप्त, राजा का मंत्री, काव्य करने वाला (जा० भ०)।

काम में चित्तवाला, बड़ा बली, धनी, दाता, प्रगल्भ और चित्र कर्म करने वाला (ल० चं०)।

ब्राह्मणी गर्भिणी का संग, कठोर स्तन वाली स्त्री हो, (वृ० पा०)।

धीर, रमणीय स्त्री वाला, पितर गुरु का बैरी (जा० पारि०)।

पिता से अधिक (वृ० जातक)।

राजा के तुल्य सुख प्राप्त, अमृत सा मीठा वचन, पंडित, सुन्दर शरीर, प्रियदर्शन, पुत्रों को उत्पन्न करने वाली मनोहर स्त्री हो। पुरुष स्वभाव वाली स्त्री हो, गुरु बली हो, तो सुवर्ण समान वर्ण की स्त्री हो (जा० सं०)।

उत्तम स्वभाव की स्त्री हो, बाप की अपेक्षा अधिक गुण हो (प्रा० यो०)।

६—सप्तम में शुक्र का फल

बहुत पुत्र तथा धन सम्पन्न, कुलीन स्त्री हो (मान०)।

अच्छी स्त्री हो परन्तु बुरी स्त्री से संबन्ध रखे, स्त्री को खोये, धनी होवे (फल०)।

दयावान्, चतुर, कलाज्ञ, स्त्री चिंता युक्त (खान०)।

बहुत कलाओं में चतुर, जल क्रीड़ा का प्रेमी, विषय करने में बड़ा चतुर, अत्यन्त चंचल, स्त्रियों से मित्रता करने वाला (जा० भ०)।

धनी, सुन्दर स्त्री युक्त, निरोग, सुखी, बहुत भोग वाला (ल० चं०)।

कलह प्रिय, स्त्री अभिलाषी, पिता से अधिक गुणी (वृ० जा०)।

स्थूल सुन्दर स्तन वाली स्त्री हो (वृ० पारा०)।

वेश्या का स्वामी, सुन्दर और व्यंग (जा० पारि०)।

बहुत से पुत्र और धन से युक्त उत्तम वंश में उत्पन्न हुई स्त्री का स्वामी, सुन्दर शरीर, प्रसन्न चित्त, सुखी, स्त्री स्वभाव वाली युवती स्त्री हो। शुक्र बलवान् हो तो सुवर्ण समान वर्ण वाली स्त्री मिले (जा० सं०)।

उत्तम स्वभाव वाली स्त्री मिले, बाप की अपेक्षा अधिक गुण हों (ग्रा० यो०)।

७—सप्तम में शनि का फल

स्त्री की मृत्यु हो, अनेक रोग, बड़ा अभिमानी, अंगहीन, मित्र के वंश की कन्या के साथ मित्रता करने वाला (मान०)।

बुरी स्त्री से विवाह हो, गरीब हो, यहाँ वहाँ भटके और विह्वल (फल०)।

रोग से निर्बल, आजीविका तथा मनुष्यों से मित्रता रहित, स्त्री घर और अन्न से दुःखित (जा० भ०)।

स्त्री सहित रोगी, बहुत शत्रु, विवर्ण, दुर्बल, मलिन (ल० चं०)।

सूर्य समान फल, स्त्री के वश (वृ० जा०)।

बुरे आचरण, कृश, कम बोलने वाला, निर्बुद्धि, पराधीन (खान०)।

नीच जाति या रजस्वला का संग, रोगिणी दुबली स्त्री हो (वृ० पारा०)।

रास्ते के बोझा ढोने या चलने से तप्त, धीर, धनिक (जा० पारि०)।

वृद्धा स्त्री हो या नपुंसक स्वभाव वाली स्त्री हो, स्याम वर्ण की स्त्री होवे (जा०सं०)।

विश्राम भूत स्त्री का नाश करता है, पुरुष को कपटी और अंगहीन करता है। वह मित्र के वंश से हारे हुए शत्रुओं वाला (जा० सं०)। स्त्री से पराभव पावे (ग्रा० यो०)।

८—सप्तम में राहु का फल

धन की हानि युक्त स्त्री हो, अनेक भोगों का देने वाला। पापग्रहों के साथ राहु हो—महापापनी, कुटिला, कुशीला भार्या मिले। (मान०)।

स्त्रियों से सम्बन्ध करने के कारण धन गँवावे, अपनी प्रिया से वियोग, अवीर्य, स्वतंत्र, अल्पबुद्धि (फल०)।

स्त्री से विरोध करने वाला या स्त्री को नाश करने वाला, प्रचंडरूप क्रोधी झगड़ालू भार्या (जा० भ०)।

पागल की तरह घूमे, दूसरों को हानि पहुँचाये, क्रोधी, बुरे आचरण, कलह कारक (खान०)। नीच जाति या रजस्वला का संग (वृ० पा०)।

अहंकारी, रोगवान्, व्यभिचारियों में शिरोमणि (जा० पारि०)।

धन खर्च करने वाली स्त्री, अनेक विविध भोग प्राप्त, नपुंसक स्वभाव वाली श्याम वर्ण की स्त्री हो। इसमें स्त्री का योग नहीं होता, यदि स्त्री प्राप्त हो तो मृत्यु को प्राप्त हो (जा० सं०)। विष का प्रयोग करने वाली दुष्ट स्त्री हो (प्रा० यो०)।

९–सप्तम में केतु का फल

मार्ग चलने की अधिक चिन्ता, या जाना बन्द हो जाय तो अपने धन का नाश हो या जल से भय हो, वृश्चिक का हो—सदा लाभ, स्त्री पुत्र आदि को पीड़ा कारक अधिक खर्च तथा व्यग्रता हो (मान०)।

अपमान सहे, बुरी स्त्रियों की संगति करे, अंत्र रोगी, पापयुक्त, स्त्री की हानि, धातु (शक्ति) हानि (फल०)। राहु के समान फल (खान०)।

मार्ग की चिन्ता में चित्त की वृत्ति रखने वाला, शत्रुओं से सदा धन नाश। वृश्चिक का—सदा लाभ करने वाला, कलत्रादि को पीड़ा और चित्त को विकार होता है (जा० भ०)।

निकृष्ट स्त्री वाला या स्त्री भोग रहित हो, शील रहित, निद्रालु, दीन वचन बोलने वाला, सदा भ्रमण शील, मूर्खों में अग्रगण्य (जा० पारि०)।

राहु सम फल (प्रा० यो०)।

८–अष्टम भाव में ग्रहों का फल

१—अष्टम में सूर्य का फल

अति चंचल, त्यागी, निश्चय बुद्धिमान् मनुष्यों की सेवा करने वाला, भाग्यहीन, शीलहीन, रति की अधिकता से मलिन वस्त्र पहिरने वाला, नीचों की सेवा करने वाला, सदा परदेश में रहने वाला (मान०)।

धन हानि, मित्र हानि, अल्पायु, दोषपूर्ण दृष्टि (फल०)।

दुर्बल, उद्यम रहित, विदेश में वृत्ति (खान०)।

दुर्बल नेत्र, मंद दृष्टि, शत्रु वृद्धि, भ्रष्ट, बड़ा क्रोधी, थोड़े धन वाला, विशेष करके दुर्बल देह (जा० भ०)।

कृतघ्न, हीन मनुष्य, शत्रुओं से डराया हुआ, वृथा चलने वाला, बन्धुहीन (ल० चं०)। संतान थोड़ी, नेत्र चंचल (वृ० जा०)।

खूब सुन्दर, कलह में चतुर (जा० पारि०)।

उच्च का—सुख पूर्वक मृत्यु देता है, अन्य राशि का—दुःख पूर्वक मरण, काष्ठ से कष्ट देता है। बली पापयुक्त या दृष्ट—उसे यमदूत होकर नाश करता है।

संतति थोड़ी हो, मन विकल हो, अंतर्दाह या अग्नि से मृत्यु, स्वक्षेत्र या उच्च का सौख्य देता है, अन्य राशि का दुःख देता है। शत्रु क्षेत्री हो तो बिजली या सर्प से मृत्यु, शुभ राशि का हो तो तीर्थादि में मृत्यु (प्रा० यो०)।

२–अष्टम में चन्द्र का फल

पापगृही हो तो अल्पायु में मरण। स्वक्षेत्री या सौम्यगृही गुरु या शुक्र के घर का पूर्ण चन्द्र हो—श्वास आदि रोगों से अति दुःख हो (मान०) रोगी अल्पायु (फल०)।

रोगी, क्रोधी, निर्दय, विदेश भ्रमण। (खान०)।

अनेक रोगों से दुर्बल देह, धन हीन, चोर, शत्रु तथा राजा से संताप, मन उद्वेग से व्याकुल (जा० भ०)।

दुःखी, थोड़ी आयु, कष्ट सहित, प्रगल्भ, दुर्बल अंग, पाप बुद्धि (ल० चं०) बुद्धिमान् (वृ० जा०)।

लड़ाई में उत्सुक, दान-प्रमोद और विद्याशील (जा० पारि०)।

क्षीण चन्द्र—बाल्यावस्था में मृत्यु, त्रिदोष ज्वर और मृत्यु (जा० सं०)।

चपल बुद्धि व रोगी, जल में मृत्यु, पापग्रह की राशि का हो तो—श्वास त्रिदोष ज्वर सूजन होकार मरें (प्रा० यो०)।

३–अष्टम में मंगल का फल

क्षीण या नीच का—जल में डूब कर मरे। वन मीन का सूर्य हो तो—नित्य भोग करने वाला, नीचे हाथ पैर वाला, अनेक भोगों को भोगे (मान०)।

कुरूप शरीर, गरीब हो, अल्प जीवन, जन निंदित (फल०)।

हितवादी, गुप्त रोग, स्त्री सुख नहीं, सदा चिंता युक्त, जौहरी, शरीर में घाव, बुद्धि हीन, दुबला, रुधिर विकार (खान०)।

नेत्रों में विकलता, दुर्भगता को प्राप्त, रक्त विकार से पीड़ित, नीच कर्म में प्रवृत्ति, बुद्धि का अंधा (जा० भ०)।

कुष्ठी, अल्पायु, शत्रुओं से पीड़ित, थोड़े द्रव्य वाला, रोग युक्त, निर्गुणी (ल० चं०)।

थोड़ी संतान (वृ० जा०)।

विनीत वेष, धनवान्, मुखिया (जा० पारि०)।

शस्त्र आदि से व लूता आदि से व अग्नि से मृत्यु, कुष्ट रोग से नाश, स्त्री को पीड़ा (जा० सं०)।

शस्त्र से, अग्नि, कुष्ठ वर्ण, स्त्रियों से रोग होकर या शस्त्रचिकित्सा से मृत्यु, अल्प संतान, विफल मन (प्रा० यो०)।

४–अष्टम बुध का फल

भूत प्रेतों की कृपा से सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्राप्त, बहु विरोध करने वाला, अभिमानी, यत्न से अन्य कर्म क्रिया को करने वाला (जा० भ०)।

दीर्घायु, अभिमानी, राजा से लाभ, लोगों से वैर (खान०)।

विश्वासघाती, कुबुद्धि, परस्त्री से भोग, कार्य से आतुर, सत्यवादी, निरोग (ल० चं०)। विख्यात गुणवान् (वृ० जा०)।

सत्य भाषी, सुन्दर मूर्ति, शत्रु हंता, अतिथि जनों का सत्कार करने वाला। पाप युक्त या शत्रु गृही-कामदेव के वेग में अप्रतिष्ठा पाने वाला (मान०)।

सर्वत्र प्रसिद्ध, दीर्घ जीवी, अपने कुटुम्ब का पोषक, अधिपति, दंडपति (जज) (फल०)।

विनीत, विशेष गुणों में प्रसिद्ध, धनी, (जा० पारि०)।

जंघा और पेट में शूल रोग से पीड़ा, सुख पूर्वक, तीर्थ में मृत्यु पापग्रह युक्त हो तो मृत्यु (जा० सं०)।

प्रख्यात व गुणी, ज्वर ताप शूल होकर तीर्थ में मरता है (प्रा० यो०)।

५–अष्टम में गुरु का फल

उत्तम तीर्थ में जाने वाला, योगाभ्यास करने में निरत (मान०)।

गरीब नीच सदृश अपनी जीविका प्राप्त करे, पाप युक्त हो, दीर्घ जीवी (फल०)।

दया रहित, परदेश वासी, मुखरोगी, क्रोधी (खान०)।

दूत कर्म की वृत्ति, मलिन, अत्यन्त दीन, विवेक रहित, नम्रताहीन, आलसी, दुर्बल देह (जा० भ०)।

सदा रोगी, कृपण, शोक संयुक्त, बहुत शत्रु, कुकर्मी, कुरूप (ल० चं०)।

नीच कर्म (वृ० जा०)। बुद्धिमान्, नीचकर्म, दीर्घायु (जा० पारि०)।

शुभराशि का या स्वगृही—ज्ञान से तीर्थ में मरण, अन्यराशि का—श्रम से मरण (जा० सं०)।

उचित कर्म, रोग का ज्ञान नहीं होता परन्तु सावधान होकर मरे (प्रा० यो०)।

६–अष्टम में शुक्र का फल

निर्बल, धर्म में तत्पर, राजा का सेवक, मांस का प्रेमी, विशाल नेत्र, चौथी अवस्था में मृत्यु (मान०)। दीर्घ जीवी, धनी, पृथ्वी का शासक (फल०)।

स्त्री धन सौख्य रहित, कटुवादी, संग्राम प्रिय, अभिमानी (खान०)।

प्रसन्न स्वरूप, राजा से दान प्राप्त, शठ, निर्भय, अभिमानी, स्त्री और पुत्र की चिंता से युक्त (जा० भ०)।

रोगी, युद्ध प्रिय, वृथा चलने वाला, कार्यहीन, मनुष्यों में प्रिय (ल० चं०)।

नीच (वृ० जा०)।

दीर्घायु, सब सौख्य युक्त, अतुल बल, धनिक (जा० पारि०)।

पिता की अनृणता और तीर्थ में मरण, पिता के कुल को पवित्र करता है (जा० सं०)। उचित कर्म करे, प्यास से व्याकुल हो, तीर्थ में मरण (प्रा० यो०)।

७–अष्टम में शनि का फल

दुःखभागी होकर देशान्तर में रहने वाला, चोरी के अपराध में नीच के हाथ से मृत्यु, नेत्र रोगी (मान०)।

अस्वस्थ, धन रहित, बवासीर का रोगी, दुष्ट प्रकृति का, बुभुक्षित, मित्रों से तिरस्कारित (फल०)।

दुर्बल देह, दद्रु रोग, भय और संताप से हीन, आलसी, फुड़ियों का रोग (जा० भ०)। अल्प संतान, नेत्र कला रहित, सूर्य के समान फल (वृ० जा०)।

क्रोधातुर, दरिद्र, बहुत रोग युक्त, मिथ्या विवाद करने वाला, बात रोगी (ल० चं०)। वीर क्रोधियों में अग्रसर, विख्यात बल, धनवाला (जा० पारि०)।

विदेश में या नीच के समीप मृत्यु, हृदय शोक, खांसी, विशूचिका आदि नाना प्रकार के रोग (जा सं०)।

थोड़ी संतति, मन विकल, भूख लगकर परदेश में मरे, अपने कुल व मामा के कुल का नाश करे, क्षुधा तृषा से पीड़ित होकर मरे या शत्रु से, विष खाकर, सर्प या अग्नि से जल कर मरे। क्रूर ग्रह युत हो तो चोर से मरे (प्रा० यो०)।

८–अष्टम में राहु का फल

सदा रोगी, पाप में निरत, दुष्ट, चोर, दुर्बल, कायर, धन से सम्पन्न, मायावी (मान०)।

अल्प जीवन, अशुद्ध कर्म करना, अंग दोषपूर्ण, बात रोग से रोगी, अल्प सन्तान (फल०)।

अनिष्ट, नाश को प्राप्त, लिंग और गुदा में पीड़ा, प्रमेह रोग, अंड वृद्धि सहित विकलता (जा० भ०)।

सदा मुसाफिर, धर्म हीन, क्रोधी, बुरे आचरण, दरिद्री (खान०)।

क्लेशी, अपवादी, दीर्घसूत्री, रोगी (जा० पारि०)।

दुष्ट, चोरी की निन्दा से मरण, कष्ट यातना (जा० सं०)।

नाना प्रकार की वेदना होकर मरे (प्रा० यो०)।

९–अष्टम में केतु का फल

बवासीर, भगन्दर आदि रोग, हाथी घोड़ा आदि सवारी से गिरने का भय, धन की रुकावट। १, २, ३, ६ या ८ राशि का हो—सदा धन लाभ (मान०)।

लघु जीवन, प्रिय जनों से वियोग, कलह में रत, शास्त्र में क्षति प्राप्त, सफल कार्यों में विरोध (फल०)।

गुदा में पीड़ा। ३, ४, ६ राशि का—वाहन धन लाभ। १, २, ८ राशि का अत्यन्त लाभ (जा० भ०)। राहु समान फल (खान०)।

पर द्रव्य, पर स्त्री में रत, रोगी, दुराचारी, विशेष लोभी। यदि शुभ ग्रह देखता हो तो धनी, दीर्घायु (जा० पारि०)।

नाना प्रकार की वेदना होकर मरे (प्रा० यो०)।

९–नवम भाव में ग्रहों का फल

१–नवम में सूर्य का फल

सत्य वक्ता, सुन्दर केश, कुटुम्ब का हितैषी, देव गुरु का अनुरागी, पहली अवस्था में रोगी, युवावस्था में स्थिरता युक्त, धनवान्, दीर्घायु, दिव्य स्वरूप (मान०)।

पिता का द्वेषी, सन्तान और बंधु युक्त, गौ ब्राह्मण भक्त (फल०)।

धर्म-कर्म में तत्पर, श्रेष्ठ बुद्धि, पुत्र और मित्र से सुख प्राप्त, मातृ पक्षी लोगों से वैर करने वाला (जा० भ०)।

कुकर्मा, भाग्य रहित, विद्या और ज्ञान हीन, कुशल (ल० चं०)।

पुत्र व धन का सुखी, भोगी (वृ० जा०)।

प्रसिद्ध, सुखी, दूसरे के धन से शोभित, ननहार से सुख नहीं (खान०)।

पिता, गुरु का द्वेषी, विधर्म के आश्रम में रहने वाला (जा० पारि०)।

भाग्य और पुण्य का विनाश। उच्च या स्वक्षेत्री—पुण्य व धर्म करे (जा० सं०)।

तीर्थ और धर्म करता है (हिल्लाज)।

पुत्र, द्रव्य और सौख्य मिले। पापयुक्त हो तो इन सबका नाश। परमोच्च हो—राज पद देवे, तीर्थयात्रा में पुण्य करता है (प्रा० यो०)।

२—नवम में चन्द्र का फल

अनेक प्रकार के सुख, कामिनी स्त्रियों से प्रेम। क्षीण चंद्र या नीच का हो तो निर्मल धर्म मार्ग का विरोधी हो, गुण रहित, मूढ़ चित्त (मान०)।

उन्नतिशील, गुणी, संतान युक्त, जयी, व्यापार में आरम्भ से ही सफलता पावे (फल०)। तेजस्वी, धनी, ईश्वर भक्त (खान०)।

स्त्री पुत्र, धन युक्त, पुराण कथा प्रेमी, सत्कर्मा, श्रेष्ठ तीर्थ करने वाला (जा०भ०)।

चारु कांति वाला, अपने धर्म में सदा निरत, सज्जनों में निपुण और पापी हो (ल० चं०)।

सर्वजन प्रिय, पुत्रवान्, मित्रवान् बंधु, युक्त, धन युक्त (वृ० जा०)।

पितृ कार्य तर्पण श्राद्ध आदि, देव कार्य पूजन आदि में युक्त, दानी (जा० पारि०)।

यदि पूर्ण चंद्र हो भव्य भाग धर्म और पितृपक्ष युक्त। यदि क्षीण चंद्र हो तो सबका नाश करता है। (जा० सं०)। २० वर्ष में तीर्थ करता है (हिल्लाज)।

पूर्ण चन्द्र हो—सब का प्रिय, पुत्र मित्र व द्रव्य से युक्त। क्षीण चन्द्र हो तो कमी करता है (प्रा० यो०)।

३—नवम में मङ्गल का फल

अति रोगी, नेत्र, हाथ और शरीर में पीला, बहुत मनुष्यों से परिपूर्ण, भाग्य से हीन, फटे जीर्ण वस्त्र पहिने, विकल जनों कैसा भेष, शीलवान्, विद्यानुरागी (मान०)।

पुत्र व धन सुख (वृ० जा०)।

यदि राजा का भी मित्र हो तो भी दूसरे से द्वेषित, पिता रहित, दूसरों को घातक (फल०)।

हिंसा में प्रवृत्ति, राजा से थोड़ा गौरव प्राप्त, पुण्य और धन नाशक (जा० भ०)।

राजा का मान्य, पर स्त्री रत, भाग्यवान् (खान०)।

कुकर्मी, पौरुष हीन, नीचों से प्रेम, क्रूर, कष्ट युक्त (ल० चं०)।

पिता का अनिष्ट करने वाला, विख्यात (जा० पारि०)।

लाल वस्त्रों को पहनने में आनन्द, महादेव का व्रत करे, भाग्य हीन (जा० सं०)।

१४ वर्ष में वात भय (हिल्लाज)।

पाप करने वाला। मकर राशि का हो तो कुशल हो, धन जमा करे (प्रा० यो०)।

४—नवम में बुध का फल

शुभगृही—धन, स्त्री पुत्र से युक्त। पाप युक्त—कुमार्गी, धर्म का निंदक, बड़ा उद्यमी (मान०)।

विद्या और धन प्राप्त, सत आचरण, प्रवीण, अति वाग्मी, खेलने में दक्ष (फल०)।

दाता, सत्य युक्त, प्रसन्न चित्त, धर्म में तत्पर, प्रसिद्ध, शुभकर्मी (खान०)।

उपकारी, श्रेष्ठ विद्या, आदर करने वाला, नौकर, धन पुत्र से हर्ष। संसार से तरने का उद्यम करने वाला (जा० भ०)।

धर्मवान, कूआँ, बाग आदि का बनवाने वाला, सत्यवक्ता, निवृत्त और पिता का प्यारा (ल० चं०)।

सूर्य तुल्य फल, पुत्र धन सुख युक्त (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

धर्म का धनिक, शास्त्री, शुभ आचारवान् (जा० पारि०)।

पापग्रह हो तो मंद भाग्य, बौद्ध मत का अनुयायी। शुभग्रह हो तो भाग्यवान्, धर्मात्मा (जा० सं०)। २९ वर्ष में माता का मरण (हिल्लाज)।

५—नवम में गुरु का फल

श्रेष्ठ राजा के समान धनी, पवित्र रहन, कृपण, सुख भोगी, अति धनी, स्त्रियों को प्रिय (मान०)।

प्रसिद्ध मंत्री, धन पुत्र युक्त, सत्कार्य में उत्सुक (फल०)।

बड़ा आदमी, भाग्यवान्, रूपवान्, बहुप्रिय, सुकीर्ति, ईश्वर भक्त, (मान०)।

राजा का मन्त्री, श्रेष्ठ कर्म, शास्त्रों के विचार में मन, व्रत करने वाला, ब्राह्मणों की सेवा करने में तत्पर (जा० भ०)।

धर्म करने वाला, साधुओं का संग, शास्त्र, चेष्टा रहित, तीर्थ सेवक, ब्रह्म का जानने वाला (ल० च०)।

तपस्वी (वृ० जा०)। ज्ञानी, धर्म में तत्पर, राजा का मन्त्री (जा० पारि०)।

अनेक तीथ कर्ता, सुन्दर शरीर, सुखी, गुणी, देवयज्ञ कर्ता, परमार्थी, अधिक कीर्ति, कुल बढ़ाने वाला (जा० सं०)।

भाग्यवान, तीर्थ यात्रा करे, माँ बाप का सेवक, व्रत, यज्ञ, याग, प्रेमी, धर्म कार्य प्रिय, भाग्य बढ़े, अंत में साधु व तपस्वी हो (प्रा० यो०)।

६—नवम में शुक्र का फल

उत्तम तीर्थ में स्थान करने वाला, सुन्दर शरीर, सुख भोगी, देव ब्राह्मण भक्त, पवित्र, स्वउपार्जित धन से आनन्द (मान०)।

स्त्रीयुक्त, मित्र सन्तान युक्त, राज कृपा से उन्नति शील (फल०)।

अच्छा काम करने वाला, रूपवान्, प्रसन्न चित्त (खान०)।

अतिथि गुरु देव का पूजक, तीर्थ यात्रा में धन खर्च, प्रतिदिन धन और वाहन से हर्ष, मुनि के समान भेष, क्रोध हीन (जा० भ०)।

धर्म पूर्ण, ज्ञानी, सुखी, धनी, राजाओं से पूजित, नम्र, जन प्रिय (ल० च०)।

तपसी (वृ० जा०)। विद्या, धन, स्त्री पुत्र से युक्त (जा० पारि०)।

भाग्य, विधि और धन प्रिय, गुणी, ब्राह्मण भक्त, अपने बल से एकत्र किए भाग्य और बड़े उत्साह वाला (जा० सं०)।

१५वें वर्ष लक्ष्मी को पाता है (हिल्लाज)।

७–नवम में शनि का फल

धर्म में पाखण्ड, धर्म तथा अर्थ से हीन, पिता के साथ कपट, मद से युक्त, धन रहित, रोगी, पापी स्त्री में तत्पर, हीन वीर्य (मान०)।

भाग्य धन सन्तान, पिता और धर्म रहित (फल०)।

धर्म कर्म युक्त विकल देह, दुष्ट बुद्धि, अत्यन्त सुन्दर, (जा० भ०)।

धर्म हीन, विवेकी, शत्रुओं के वश, झूठा, पराई स्त्री में रत (ल० च०)।

पुत्र, धन, सुख वाला। सूर्य सरीखा फल (वृ० जा०) (प्रा० यो०)।

अपने जमाने में बड़ा आदमी, श्रीमान्, मिष्ठ भाषी, सुखी, दयालु (खान०)।

रण में विख्यात, बिना स्त्री वाला, धनी, (जा० पारि०)।

कपट प्रधान, अच्छा कार्य करने वाला, मित्र देव को ठगने वाला, क्षीण भाग्य, शुभ धर्म युक्त (जा० सं०)।

८–नवम में राहु का फल

चण्डाल के समान कर्म, चुगल खोर, जीर्ण फटे कपड़े पहिने, ज्ञाति जनों की प्रशंसा करने वाला, बड़ा दीन, शत्रु से सदा भयभीत (मान०)।

प्रतिकूल भाषण, अपने वंश का मुखिया, गांव या शहर का मुखिया, अधर्म कार्य करे (जा० भ०)।

धनी, सुखी (खान०)। धार्मिक जनों का बैरी, यशस्वी (जा० पारि०)।

पथिक धर्म का अनुरागी, सत्य व शौच से हीन, भाग्य हीन, मंद बुद्धि (जा० सं०)।

९–नवम में केतु का फल

क्लेश का नाश, पुत्रों का इच्छुक, म्लेच्छ से भाग्य वृद्धि, म्लेच्छों से पीड़ा भी हो, बाँहों में रोग, तप और दान से हास्य वृद्धि को प्राप्त (जा० भ०)

दुःखों से हीन हो, पुत्र का इच्छुक, नीच जाति द्वारा भाग्य वृद्धि, सगे भाई बहन के न होने से कष्ट, बाँह में रोग, इन कुचेष्टाओं को सुधारने के निमित्त दान नियम करने से उपहास को प्राप्त (मान०)।

पाप कर्मी, पितृ हीन, अभागा, दरिद्री, धर्म कार्य में दूषण (फल०)।

राहु के सदृश फल (खान०)।

क्रोधी, वाचाल, अधर्मी, पर निंदक, वीर, पिता का वैरी, विशेष दम्भी, आलस्य में लीन, अभिमानी (जा० पारि०)।

बालपने में पिता को कष्ट, भाग्यहीन, धर्म भ्रष्ट तथा म्लेच्छ से भाग्य वृद्धि (जा० सं०)।

१०–दशम भाव में ग्रहों का फल

१–दशम में सूर्य का फल

गुण युक्त, सुखी, अभिमानी, कोमल चीजों में रुचि रखने वाला, नृत्य गीत में प्रेम, अत्यन्त पूज्य, राजा होता है। इसके अतिरिक्त काल में रोग भोगने वाला होता है (मान०)।

पुत्र, वाहन, स्तुति, ज्ञान, धन, बल, कीर्ति प्राप्त, राजा हो (फल०)।

धनाढ्य नामवर। नीच का सूर्य हो तो पिता से सुख न मिले (खान०)।

श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ वाहन, निश्चय धन युक्त, राज कृपा, पुत्र और सौख्य युक्त, साधु का उपकार कर्ता, मणियुक्त आभूषण वाला (जा० भ०)।

बन्धुहीन, कुकर्मी, शील रहित, चंचल स्त्री वाला, तेजहीन और खजाना रहित हो (ल० चं०)। सुखी और धनवान् (वृ० जा०)।

पिता का धन और शील प्राप्त, विद्या, यश युक्त, राजा के समान (जा० पारि०)। १९ वर्ष में वियोग करता है (हिल्लाज)।

शूर वीर, वाहन, बुद्धि बल धन पुत्र इनसे युक्त, असह्य, प्रगल्भ और कार्य का सिद्ध करने वाला, पिता से धन प्राप्त (जा० सं०)।

२–दशम में चंद्र का फल

धन सम्पन्न, पुत्र, स्त्री युक्त। शत्रु क्षेत्री या पाप गृही हो—कास रोग, दुर्बलांग, धनी, माता तथा कर्म से हीन (मान०)।

सत कर्म करे, सत गुणी, लोगों का प्रिय (फल)।

पिता तथा कुटुम्ब का सेवक, धनी, विद्वान्, शांत प्रकृति (खान०)।

राजा से धन प्राप्त करे, यशस्वी, सुंदर रूप, और बल, संतोषी, बड़ी लक्ष्मी और शीलवती स्त्री वाला (जा० भ०)।

बहुत भाग्य युक्त, बड़ा धनी, मनस्वी, मनोहर, राजाओं में पूज्य (ल० चं०)।

समस्त कार्य की कृतकार्यता पावे, धर्म, धन, बुद्धि, बल इनसे युक्त (वृ० जा०)।

धन धान्य, वस्त्र, भूषण से युक्त, स्त्रियों का विलासी, कला जानने वाला (जा० पारि०)। ४३ वर्ष में धन देता है (हिल्लाज)।

सुधर्म स्थित और दास भाव करता है। सिद्धि आरंभ वाला, पवित्र और कर्म में तत्पर, शूर वीर, धनाढ्य, धर्मवान्, विवाद कर्ता, माता से धन प्राप्त (जा० सं०)।

३–दशम में मंगल का फल

इंद्रियों का दमन कर्ता, खजाने से रहित, अपने कुल की जय करने वाला, स्त्री

चित्तचोर, उदर के समान शरीर वाला, भूमि का काम करने वाला, बड़ा क्रोधी, ब्राह्मण गुरुजनों का भक्त, मध्यम कद (मान०)।

क्रूर राजा, दाता, प्रधान जनद्वारा स्तुति प्राप्त (फल०)।

धनी गुणी, किफायत सार, संसार में मान्य, साहसी, दयावान्, सब पदार्थ घर में हों, दानी (खान०)।

राजा के समान अत्यंत आनन्द प्राप्त, श्रेष्ठ साहस करने वाला, परोपकारी, सुंदर आभूषण मणि, अच्छे बुरे प्रकार से लाभ करता है (जा० भ०)।

शुभ कर्म कर्ता, शुभ युक्त, अच्छे पुत्र, सुखी, वीर, अभिमानी (ल० चं०)।

सुख व बल रहित (वृ० जा०)। प्रबल प्रताप, धन से प्रसिद्ध (जा० पारि०)।
२७ वर्ष में शस्त्र से भय (हिल्लाज)।

सेना बल से युक्त, प्रधान सेवक, शूरवीर, बड़ा प्रतापी, पुत्रवान्, कर्म में उद्योगी, पराजित न होने वाला, शत्रु से द्रव्य प्राप्ति (जा० सं०)।

४ दशम में बुध का फल

सूर्य सरीखा फल, सुख और बल युक्त (वृ० जा०)।

समस्त विद्या ज्ञाता, यशस्वी, धनी, विनोदी (जा० पारि०)।

गुरुजनों के साथ हित करने वाला, अपने कमाये धन से घोड़ा खरीदे। धनों से सावधान, थोड़ा बोले (मान०)।

कोई कार्य करे उसमें सफलता हो, अच्छी विद्या बल बुद्धि और सुख प्राप्त, सत्कर्मी, सत्य युक्त (फल०)।

धनी, बड़ा आलसी, मिष्ट भाषी, दयावान् (खान०)।

ज्ञान में चतुर, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, अनेक सम्पत्ति युक्त, राजमान्य, सुन्दर लीलाओं के सहित, वाणी के विलास में श्रेष्ठ (जा० भ०)।

धन धान्य से युक्त, बहुत भाग्यवान्, नम्रता युक्त, कांति युक्त (ल० चं०)।
१९ वर्ष में धन देता है (हिल्लाज)।

वाक्य समूहों की रचनाओं से युक्त, बुद्धिमान्, धीर, धर्म में चेष्टा, मालिक के गुण, अनेक आभरणों से युक्त, मित्र से धन प्राप्ति (जा० सं०)।

५—दशम में गुरु का फल

अश्व रत्नों से विभूषित घर, नीति गुणों में बुद्धिमान्, सज्जनों की संगति, दूसरे की भूमि और स्त्री से रहित, बड़ा धर्मात्मा (मान०)।

आचरण का सत्य मार्ग ग्रहण करे, अपने गुणों से प्रसिद्ध, बहुत धनी, राजा का मित्र (फल०)।

पालकी, जवाहरात, हाथी, घोड़ा युक्त, श्रेष्ठ (खान०)।

श्रेष्ठ राजा के चिह्न छत्र चामर आदि और उत्तम वाहनों से युक्त, मित्र, पुत्र, लक्ष्मी और स्त्री के सुख से युक्त, बहुधा यश की वृद्धि (जा० भ०)।

पुण्य, यश, सुख युक्त, राजाओं के बराबर स्वरूप वाला, दयावान् (ल० चं०)।

धनवान् (वृ० जा०)। सिद्ध साधु चरित्र, स्वधर्मी, विद्वान्, धनी (जा० पारि०)।

१२ वर्ष में धन प्राप्ति (हिल्लाज)।

शुभ कर्म व धन युक्त, कीर्ति, वाहन, सौख्य, धन, गुण, सत्य इनसे युक्त, सिद्ध किये कर्म वाला, चतुर, भ्राता से धन प्राप्ति (जा० सं०)।

६—दशम शुक्र का फल

भाई बहरा, स्वयं भोगों को भोगने वाला, बन में भी राज्य फल पाने वाला, युद्ध के योग्य, पुष्ट, सुन्दर शरीर (मान०)।

अति प्रसिद्ध, मित्रयुक्त, सुख वृत्ति युक्त, स्वामी (फल०)।

धृष्ट, धनी, पितृ गुरु भक्त, विद्वान्, मंत्री, बड़ा आदमी (खान०)।

सौभाग्य और सन्मान युक्त, स्नान, पूजन, ध्यान में मन, धनवान्, स्त्री पुत्रों में नित्य प्रेम (जा० भ०)।

कर्मवान्, लिधि और रत्नों से युक्त, राजा को सेवा करने वाला, धर्मवान् और स्त्री का प्यारा (ल० चं०)। धनवान् (वृ० जा०)।

खेती आदि कर्म से, स्त्री से, धन प्राप्त हो, विभु हो (जा० पारि०)।

१२ वर्ष में सौख्य देता है (हिल्लाज)।

आज्ञा में कुटिल या स्त्री-धन से युक्त, स्त्री से धन प्राप्ति, वादविवाद में एकत्र किया मान अर्थ और प्रीति वाला, कीर्ति युक्त, बुद्धिमान्, धनी, विख्यात (जा० सं०)।

७—दशम में शनि का फल

बड़ा धनी, भृतकों का अनुरागी, परदेश में जाकर राजा के घर में वास, अभिमानी, शत्रु से भय नहीं पाता (मान०)।

राजा का मन्त्री, नीति युक्त, बुद्धिमान्, नम्र, श्रेष्ठ ग्राम और नगर के भेद करने का अधिकारी, चतुर, धन युक्त (जा० भ०)।

कुकर्मी, धन वर्जित, दया सत्य और गुणों से हीन, चञ्चल (ल० चं०)।

सूर्यवत् फल, सुखी, बलवान् (वृ० जा०)। राजा या मन्त्री, सुकृती (खान०)।

दंड कर्ता, मानो, धनो, निज कुल में वीर (जा० पारि०)

राजा या मन्त्री हो, कृषि कार्यकर्ता, शूर, प्रसिद्ध (फल०)।

अनाथ और दुःख युक्त, पुर, ग्राम इनका स्वामो या दंडपति, पंडित, शूरवीर, धन युक्त, मन्त्रो, चाकर से धन प्राप्त, नीच या शत्रुक्षेत्री—सेवा से इकट्ठा किया धन वाला, क्रूर, कृपण, पक्षियों को मारने वाला, जंघा में रोग।

८—दशम में राहु का फल

काम में आतुर, परधन का इच्छुक, सब कामों में अग्रणी, अति हीन, मलीन, वैराग्य युक्त, सुख रहित, खेलने में मन, बड़ा चपल, दुष्ट (मान०)।

प्रसिद्ध, अल्प सन्तान, दूसरे के व्यापार में स्वतः दत्त रहे, कोई सत्कार्य न करे, भय रहित हो (फल०)।

पिता के सुख को नहीं प्राप्त, स्वतः दुष्ट भाग्य वाला, वैरियों का नाशक, वाहनों को रोग, दाता, वात पोड़ा युक्त, वृष या मीन का—सौख्य और कष्ट का भागी (जा० भ०)।

बलवान्, शत्रु नाशी, कलह प्रिय (खान०)।

चोरी में निपुण, बुद्धिमान् और उद्धत हो (जा० पारि०)।

वृंद पुर ग्राम इनका मीत, दंडनायक और पंडित, शूर मंत्री और धनी (जा० सं०)।

९—दशम में केतु का फल

अच्छे कार्य में विघ्न, अपवित्र, बुरे कार्य, तेजस्वी, शूर, प्रसिद्ध (फल०)।

पिता द्वारा सुख न मिले, स्वयं कुरूप, अनेक कष्टों का पात्र, सवारी के कारण दुःख। मेष, वृष, कन्या और वृश्चिक में—शत्रुनाश (मान०)।

पिता का सौख्य नहीं, दुष्ट भाग्य, शत्रुनाशक, रोगयुक्त, वाहनों की पीड़ा, वातरोग। कन्या का—सुख और दुःख दोनों का भागो (जा० भ०)।

राहु के समान फल (खान०)।

विद्वान्, बली, शिल्पविद्, आत्मज्ञानो, जनानुरागी, विरोध वृद्धि, कलात्मक, वीरों में श्रेष्ठ, सदा घूमने वाला (जा० पारि०)।

गुदा में रोग, कफ प्रकृति, म्लेच्छों के समान कर्म, परस्त्रो गामी (जा० सं०)।

११—लाभ भाव में ग्रहों का फल

१—लाभ में सूर्य का फल

अत्यन्त धन का भोगी, राजगृह की सेवा करने वाला, भोगों के भोगने से हीन, गुण का ज्ञाता, दुर्बल अंग, धन से सम्पन्न, कामिनी चित्तहारी, चंचल मूर्ति, जाति बन्धुओं को आनन्द दायक (मान०)।

उन्नति से ही धनी हो, दीर्घजीवी, दुःख रहित, राजा हो (फल०)।

धनवान्, सुन्दर स्त्री, गायन विद्या में चतुर, सर्दार (खान०)।

गाने में प्रीति, श्रेष्ठ कर्म में प्रवृत्ति, बड़ा यश, सदा धन से पूर्ण, राजा से नित्य धन लाभ करे (जा० भ०)।

अनेक लाभयुक्त, सात्विक, धर्मवान्, ज्ञानी, रूपवान् (ल० चं०)।

धनवान् (वृ० जा०)।

विपुल धन स्त्री पुत्र और दास से युक्त (जा० पारि०)।

धन धान्य सुवर्ण आदि से युक्त, रूपवान्, कलायुक्त, ज्ञानी, विनीत, गीत में चतुर। सूर्य बलवान् अपने षड्वर्ग में—राजा चोर और पशुओं से धन प्राप्त (जा० सं०)।

सूर्य योग्यता प्रमाण से गोचर में या अपनी दशा में पदवी, अधिकार, उन्नति, हाथी घोड़े वस्त्र रत्न, मिष्ठान्न, गाय भैंस, टांगा आदि वाहन देता है (प्रा० यो०)।

२—लाभ में चंद्र का फल

बहुत धन का भोगी, सुखयुक्त, पत्नी तथा भृत्ययुक्त (मान०)।

उच्च विचार का, दीर्घ जीवी, धन संतान सेवक युक्त (फल०)।

धनवान्, रूपवान्, दाता, बुद्धिमान् मिष्टभाषी (खान०)।

अनेक संतान और धन वाहन प्राप्त (जा० भ०)।

लाभयुक्त, प्रगल्भ, सुभग, सुमार्गगामी, लज्जा युक्त, प्रतापी और भाग्यवान् (ल० चं०)। सर्वत्र विख्यात, नित्य लाभयुक्त (वृ० जा०)।

संतुष्ट, विषादी, धनी, (जा० पारि०)।

विख्यात, गुणवान्, पंडित, भोग लक्ष्मी युक्त, गौर वर्ण, स्नेहकर्ता, स्त्री का परम-सुख, पुत्री सुख। बलीचंद्र—कूप यज्ञादि करने वाला (जा० सं०)।

उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के मोती रत्न, गाँव, खेत, बगीचा आदि का लाभ, राजा से या बेचने खरीदने से, या समुद्र तालाब आदि के सम्बन्ध से व्यापार में लाभ (प्रा० यो०)।

३—लाभ में मंगल का फल

देवताओं का हितेच्छुक, राजा के समान, स्त्रीवाला, पीड़ित, क्रोधी। उच्च का—सौभाग्ययुक्त, धनवान्, तेजयुक्त, पुण्य कर्मी, धन का लोभी (मान०)।

धन और सुखयुक्त, शूर, दुःख रहित, अच्छे आचरण वाला (फल०)।

धनवान्, दयालु, विशेष कामी, पंडित, सत्यभाषी (खान०)।

ताँबा, मूँगा, सुवर्ण और वस्त्रों को प्राप्त, सुन्दर वाहन, राजा की कृपा से श्रेष्ठ, कौतुक और मंगल को प्राप्त (जा० भ०)।

बड़े लाभ युक्त, अनेक प्रकार के पक्वान्नों को खाने वाला; निरोगी, राजाओं में पूज्य, देव ब्राह्मण में प्रेम (ल० चं०)। धनवान् (वृ० जा०)।

चतुर वचन बोलने वाला, कामी, धनी, पराक्रमी (जा० पारि०)।

नाना प्रकार के यन्त्र कला धातु वस्त्र सोना चाँदी से लाभ व राजा से द्रव्य, अधिकार उन्नति आदि का लाभ हो (प्रा० यो०)।

हाथी घोड़ों की पंक्ति होवे, धनवान्, मानयुक्त, सत्यभाषी, दृढ़व्रती, घोड़ों से युक्त, गीत गाने में प्रवीण, प्रियभाषी, शूरवीर, धनधान्य मानयुक्त, धन अग्नि या चोरों से नष्ट (जा० सं०)।

४—लाभ में बुध का फल

शास्त्र में बुद्धि, स्वकुल हितैषी, कृश, धनी, स्त्रियों का प्यारा, मनोहर, श्याम मूर्ति, शुभ नेत्र (मान०)। दीर्घायु, सत्ययुक्त, बहुत धनी, सुखी, नौकरों सहित (फल०)।

धनी, पुत्र सुख युक्त, समझदार, सरदार, स्वच्छहृदय (खान०)।

सूर्यवत् फल (धनवान्) (वृ० जा०)।

भोगों में आसक्त, अति धनवान्, नम्र, सदा आनन्द को प्राप्त, श्रेष्ठ शील, बलवान् अनेक विद्याओं का अभ्यासी (जा० भ०)।

सदा लाभ, रोगहीन, सदा सुखी, मनुष्यों का प्रेमी, वृत्ति और यशयुक्त (ल० चं०)।

निपुण बुद्धि, विद्या, यश वाला, धनी (जा० पारि०)।

अक्षर लिखना, छापाखाना, कोष्टी, बढ़ई आदि का काम, बनिया की दूकान, साहूकार किंवा राजा इनसे धन मिले, बड़ा सख्यत्व हो (प्रा० यो०)।

शैया सुख हो, इच्छित विद्या सुख, स्त्री का प्यारा, अति गुणी, बुद्धिमान् मित्रों का प्रिय, मंदाग्नि वाला, बली बुध हो तो कूप यज्ञादि का सिद्धि करने वाला (जा० सं०)।

५—लाभ में गुरु का फल

राजा के समान धनी, अपने कुल को किसी प्रकार दाग लगाने वाला, सब धर्मों में निरत, धनवान् (मान०)।

धनी, भय रहित, अल्प सन्तान, दीर्घ जीवी, वाहन में चलने वाला (फल०)।

सन्तोषी, सुशरीर, धनी, विद्वान्, पराक्रमी, चतुर (खान०)।

सामर्थ्य युक्त, निश्चय धन लाभ हो, श्रेष्ठ वस्त्र, उत्तम रत्न और वाहन प्राप्त, राज कृपा युक्त (जा० भ०)।

विवेकी, हाथी और घोड़ा आदि वाहन और धनयुक्त, चंचल, सुरूप, गुणवान् (ल० चं०)। लाभवान् (वृ० जा०)।

प्रबल बुद्धि, विख्यात नाम, धनी (जा० पारि)।

राज आश्रय उत्तम लोगों की सङ्गति, नित्य मिष्ठान्न, नाना प्रकार का वस्त्र, धान्य पदार्थ, खेती, गांव घर आदि प्राप्त (प्रा० यो०)।

पुत्र सुख, स्त्री सुख, रोगहीन, पराकमी, दृढ़, मंत्रवेत्ता, शास्त्र का ज्ञाता, अल्पविद्या, अल्प सन्तान (जा० सं०)।

६—लाभ में शुक्र का फल

गुणी, अग्नि होत्री, काम देव के समान दिव्य रूप, सुख का पात्र, हास्य में प्रीति, देखने में सुन्दर (मान०)।

धनी, दूसरी औरतों के साथ रहने का प्रेमी, अनेक सुख (फल०)।

धनी, तेजस्वी, शहीद, शीलवान् (खान०)।

श्रेष्ठ, गीत और हास्य में प्रीति, नित्य यात्रा की चिंता करने वाला, श्रेष्ठ कर्म और धर्म में चित्त (जा० भ०)।

सदा लाभ, यशी, गुणी, धनी, भोगी, क्रिया में शुद्ध, मनुष्यों में उत्तम (ल० चं०)। लाभवान् (वृ० जा०)।

सुखी, पर स्त्री रत, घूमने वाला, धनी (जा० पारि०)।

वेश्या, रानी या नाना प्रकार की स्त्रियों से अनेक लाभ, राजा से लाभ, विद्या व फायदा इनकी परीक्षा पास हो (प्रा० यो०)।

पुत्र सुख, पालकी (वाहन) सुख, स्त्री रूप रत्न से युक्त, श्रेष्ठ रत्नों से युक्त, स्वस्थ चित्त, शोक हीन, बहुत धन और सेवक (जा० सं०)।

७—लाभ में शनि का फल

धनवान्, विचारवान्, भोगी, शीत प्रकृत्ति, सदा प्रसन्न, बड़ा सुशील, बालपन में रोगी (मान०)।

दीर्घजीवी, अंत तक धनी, अच्छी आय, शूर, रोगहीन, धनी (फल०)।

काले घोड़े और इन्द्रनील मणि, पूर्ण वस्त्र, बड़े हाथी इनका लाभ (जा० भ०)।

सूर्य समान फल (धनवान्) (वृ० जा०)।

सर्व विद्याओं में निपुण, ऊँट, गौ और भैंस से पूर्ण राजाओं में पूज्य और पवित्र (ल० चं०)।

दयावान्, नेक, मिष्ट भाषी, धनी, सन्तोषी, शत्रु नाशक (खान०)।

भोगी, राजा से प्राप्त विपुल धनवान् हो (जा० पारि०)।

चोरों से रिश्वत ले, खोटे काम से, झूठ बोलने से, वकीली करने से, बहुत धन व पदार्थ मिले (प्रा० यो०)।

हाथी घोड़े होवें, स्थिर सम्पदा, पृथ्वी से लाभ, शूरवीर, कारीगरी से युक्त, सुख युक्त, बिना लाभ वाला, मुख्य जीविका वाला व सन्तान हीन, शरीर में कष्ट तथा शिला प्रहार (जा० सं०)।

८—लाभ में राहु का फल

इन्द्रियजित्, श्याम रंग, देखने में सुन्दर, थोड़ा बोलने वाला, परदेश वासी, शास्त्रों का ज्ञाता, बड़ा चपल, बड़ा निलंज्ज (मान०)।

उन्नतिशील, बहुत सन्तान, दीर्घायु, कर्म रोगी (फल०)।

सब प्रकार के धन का लाभ, अधिक सौख्य, राजाओं से अनेक मान, वस्त्रोदक सुवर्ण, चौपायों के सौख्य का भागी, सौख्य, विजय और मनोरथ प्राप्त। ऋणी, बेकार, कलह प्रिय (खान०)।

कर्ण रहित, रणोत्सुक, धनी, पंडित (जा० पारि०)।

हाथी घोड़े होवें, म्लेच्छ और पतित आदि जनों से लाभ, नहीं स्थिर रहने वाला पुत्र हो, यदि पुत्र हो तो जातक के वृद्ध होने तक जीवित रहे, शरीर में कष्ट तथा शिला प्रहार (जा० स०)।

९—लाभ में केतु का फल

श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ विद्या, दर्शनीय स्वरूप, श्रेष्ठ भोगों से युक्त, श्रेष्ठ तेज, सुन्दर वस्त्रों सहित, गुदा में रोग, दुष्ट पुत्र (जा० भ०)।

भाग्यशाली, अधिक विद्याओं का जानने वाला, दर्शनीय सुन्दर शरीर, शाल दुशाले आदि सुन्दर वस्त्रों से परिपूर्ण, बड़ा प्रतापी, स्वयं डर से व्याकुल, सन्तान भाग्यहीन, सब वस्तुओं का लाभ (मान०)।

धन संग्रह करे, कई सद्गुण प्राप्त करे, सुभोगी, अच्छे पदार्थ प्राप्त करने के लिये सब सुविधाएँ प्राप्त (खान०)। राहु के समान फल (खान०)।

प्रतापी, परप्रिय, अन्यजन से वंदित, सन्तुष्ट चित्त, समर्थ, अल्प भोगी, शुभ क्रिया तथा आचारवान् (जा० परि०)।

१२—व्यय भाव में ग्रहों का फल

१—व्यय में सूर्य का फल

मूर्ख, अति कामी, परस्त्री विलासी, पक्षियों को मारने वाला, दुष्ट चित्त, कुरूप,

राजा से प्राप्त धन, कथा वाचकों का विरोधी, कंधे में रोग, अति दुर्बल अंग (मा०)।

पिता का द्वेषी, नेत्र रोगी, पुत्र और धन रहित (फल०)।

वाम नेत्र पीड़ा, बड़ा खर्चीला, रोगी, शरारती (खान०)।

नेत्र के तेज से रहित, पिता से वैर, सबसे विरुद्ध (जा० भ०)।

रोगी, सत्त्व हीन, वृथा चलने वाला, असत्य काम में खर्च करने वाला, पुत्र स्त्री और भक्ति हीन (ल० चं०)। अपने कर्म से भ्रष्ट (वृ० जा०)।

पुत्रवान्, व्यंग, सुन्दर, धीर, पतित, और घूमने वाला (जा० पारि०)।

खर्चीला, परस्त्री गामी, व्यसनी, बहुत खर्चीला, राजा से उसका धन हरण (जा० सं०)।

२—व्यय में चन्द्र का फल

दुर्बलांग, निरन्तर कफ रोग, क्रोधी, धन रहित। स्वक्षेत्री या गुरु क्षेत्री—इन्द्रियों का दमन कर्ता, बड़े दाँत वाला, त्यागी, दुर्बलांग, सुख भोगी, नीच का संग (मान०)।

द्वेषी, दुःखी, अपमानित, अति अकर्मशील (फल०)।

नेत्र विकार, विरोधी, दुष्ट स्वभाव, दुष्कीर्ति, अधिक खर्च (खान०)।

श्रेष्ठ शील और मित्र रहित, आँखों में विफलता, क्रोधी, शत्रु वृद्धि (जा० पारि०)।

पाप बुद्धि, बहु भक्षी, हरने वाला, कुल में अधम, मद्य पीने वाला, विकारी (ल० चं०)। क्षुद्र और अंग हीन (वृ० जा०)।

विदेश वासी (जा० पारि०)।

कृपणता और पद-पद में अविश्वास, कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो कृपणता बढ़ती है। क्षीण चन्द्र हो—राजा उसका धन हरे। पूर्ण चन्द्र हो शुभ दृष्ट हो—धन की वृद्धि (जा० सं०)।

३—व्यय में मंगल का फल

पर धन लेने का इच्छुक, चंचल नेत्र, चपल बुद्धि, विहार करने वाला, हास्य करने वाला, बड़ा प्रचण्ड, सुखी, परस्त्री गामी, गवाही देने वाला, कर्मों से परिपूर्ण (मान०)।

दोष युक्त नेत्र, क्रूर, स्त्री रहित, चुगल खोर, अधम (फल०)।

कठोर व कटु वचन भाषी, जालिम, क्रोधी, सदा परेशान (खान०)।

मित्रों से वैर करने वाला, नेत्र रोगी, क्रोधी, शरीर में विफलता, धन का नाशक, बन्धन का भागी, थोड़ा तेज वाला (जा० भ०)।

असत् में खर्च करने वाला, नास्तिक, निष्ठुर, मूर्ख, बहुत वाद वाला, परदेश में सदा ही जाने वाला (ल० चं०)। पतित (वृ० जा०)।

विरोधी, धन स्त्री से हीन (जा० पारि०)।

क्रोधी, कामी, अङ्ग हीन, धर्म में दूषण कर्ता, प्रिय बन्धुजनों से वैर (जा० सं०)।

वाम कर्ण में रोग, वाम नेत्र में रोग, स्त्री की अधिक अंगता, कमर में घाव, क्षत्रिय वर्ग से धन का खर्च, खोटे कर्म में व्रण आदि का भय (जा० सं०)।

४–व्यय में बुध का फल

विकल शरीर (लूला लंगड़ा), दरिद्री, दूसरे के धन और स्त्री में बहुत मन, व्यसनों से अलग, सदा उपकारी (मान०)।

दुःखी, विद्या रहित, अपमानित, क्रूर, अकर्मी (फल०)।

अशुद्ध गुणवान्, नुकसान वाली बातें करे, किसी को बातों को न सहे; दया हीन, दुःखी, बेहूदा, घूमने वाला (खान०)।

दयाहीन, स्वजन रहित, अपने काम में चतुर, अपने पक्ष को जीतने वाला, निरंतर धूर्त, मलिन (जा० भ०)।

खर्च करने वाला, रोगी, भाई से युक्त, पाप में रत, पराधीन, शत्रु का पक्ष करने वाला (ल० चं०)। सूर्यवत्, फल, पतित (बृ० जा०)।

बन्धुओं से वैर, धनी, बुद्धि रहित (जा० पारि०)।

राज पीड़ा से संतप्त, निद्रा से मुक्त, क्रूर (जा० सं०)

५–व्यय में गुरु का फल

बाल्यावस्था में हृदय रोग, उचित दान करने में बहिर्मुख, कुल और धन से युक्त। पापस्थानी हो तो—बड़ा दंभी, पाखण्डी (मान०)।

दूसरे से घृणा करे, दुर्मुखी, सन्तान हीन, पाप युक्त, आलसी, नीच (फल०)।

दरिद्री, कम बोलने वाला, मूर्ख, निर्लज्ज, बुरे वचन बोलने वाला, आलसी, बुरे कर्मों में खर्च (खान०)।

अनेक प्रकार के चित्त के उद्योगों से क्रोध सहित, पापी, आलसी, लज्जाहीन, बुद्धिहीन, मान रहित (जा० भ०)।

रोगी, परिश्रमी, पराये कर्म को करने वाला, बंधु बैरी, नीचों की सेवा, गुरु वैर (ल० चं०)। दुर्जन (बृ० जा०)।

चार्वाक मत, चञ्चल, घूमने वाला, खल बुद्धि (जा० पारि०)।

ऊंचा खर्च करने वाला, सेवा करने में पण्डित, बड़ा क्रोधी, आलसी, लोक में विग्रह करने वाला (जा० सं०)।

६–व्यय में शुक्र का फल

प्रथम रोग से मुक्त, पीछे कपट में तत्पर चित्त, हीन बल, सदा मलीन (मान०)।

योगी, धनी और द्युतियुक्त (फल०)।

बड़ा खर्चीला, बदकार, दुष्ट बुद्धि, क्रोधी (खान०)।

श्रेष्ठ कर्म के मार्ग को त्यागने वाला, कामदेव में चित्त, दया और सत्य रहित (जा० भ०)। व्यय से युक्त, मित्र और गुरु का विरोधी, भाइयों में झूठ बोलने वाला, गुण हीन (ल० चं०)। दुर्जन (बृ० जा०)।

बंधु नाशक, व्यभिचार बुद्धि, दरिद्र (जा० पारि०)।

श्रद्धाहीन, दयाहीन, रोगी, स्थूल देह (जा० सं०)।

७—व्यय में शनि का फल

पंचायत का प्रधान, रोगी, हीनांग, अति दुःखी, जांघ में घाव, बड़ा क्रूर बुद्धि, दुर्बल अंग, पक्षियों को नित्य मारने वाला (मान०)।

निर्लज्ज, दरिद्र, सन्तानहीन, अंग में दोष, मूर्ख, शत्रुओं द्वारा भगाया हुआ (फल०)।

दयाहीन, धनहीन, खर्च से दुःखी, सदा आलसी, नीच का संग, अंग-भंग से सौख्य रहित (जा० भ०)।

असत् में खर्च, कृतघ्न, द्रव्यहीन, भाइयों से वैर, कुवेष, चंचल (ल० चं०)। सूर्य समान फल, पतित (वृ० जा०)।

तंगदस्त, बुरे आचरण, निर्धन, आलसी (खान०)।

विकल बुद्धि, मूर्ख, धनवान्, ठग (जा० पारि०)।

नीच कर्म में मन, पापी, अंगहीन, भोग विलास की लालसा, दुष्टों से प्रीति (जा० सं०)।

८—व्यय में राहु का फल

धर्म अर्थ से रहित, अनेक दुःखों को भोगने वाला, स्त्री हीन, परदेशवासी, सुखहीन, बुरे नख, बुरे वेष में रहना (मान०)।

गुप्त पाप करने वाला, अधिक खर्च, पानी के रोग से पीड़ित (फल०)।

नेत्रों का रोगी, पैरों में घाव, प्रपंच करने वाला, प्रीतियुक्त, दुष्ट जनों से प्रीति, अध्यम पुरुष की सेवा करता है (जा० भ०)।

कलह प्रिय, बेकार, कर्जीला, गरीब, दुःखी (खान०)।

शील रहित, सम्पत्तिवान्, विकल देह, साधु, पूर्व स्थित धन का नाशक (जा० पारि०)। नीच कर्म, अनर्थ में खर्च, पाप बुद्धि, कपट युक्त, कुल का दोष देने वाला (जा० सं०)।

९—व्यय में केतु का फल

गुप्त रूप से पाप करे, बुरी बातों में धन खर्च, धन का नाशक, विरुद्ध गीत, नेत्र रोगी (फल०)।

पेंड़ लिंग गुदा चरण में पीड़ा, रोग से शरीर पीड़ित, मामा से किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती, राजा के समान भाग्यशाली, अच्छे कर्मों में व्यय करे, युद्ध में शत्रुओं का नाशक (मान०)।

पैर और नेत्रों में पीड़ा, राजा के तुल्य वैभव में खर्च करने वाला, शत्रु नाशक, मन में सुखी नहीं, वस्ति और गुदा के रोग से पीड़ित (जा० भ०)।

चञ्चल और शील रहित (जा० पारि०)।

अध्याय १६

फलित में ग्रहों के फल का विचार

फलित में ग्रहों के फल का विचार १२ भाव का ३ प्रकार से होता है।

(१) लग्न से भाव फल विचार (२) चन्द्र से भाव फल विचार और (३) सूर्य से भाव फल विचार। यहाँ तीनों प्रकार का भाव फल विचारना दिया है।

भाव के साधारण नियम

भाव फल आदि विचारने को आरम्भ में ही संक्षिप्त स्थूल विचार किए हैं। उनको मनन कर फल विचारना। यहाँ और भी संक्षिप्त में विचार देते हैं।

१—भाव, भावेश और भाव का कारक बलवान् होने से उस भाव सम्बन्धी अच्छा फल होता है। यदि वह भाव या भावेश या उसका कारक निर्बल हों तो उस भाव सम्बन्धी फल कम हो जाता है।

२—यदि भाव बलवान् हो, उसका भावेश और कारक एक दूसरे के साथ हों या एक दूसरे पर दृष्टि हो तो अच्छा फल होता है।

३—भावेश के साथ शुभ ग्रह उसके बल को बढ़ावेगा जैसे धनेश से साथ शुभ ग्रह गुरु हो तो धन देगा और धन बढ़ावेगा।

सप्तमेश के साथ शुभ ग्रह शुक्र हो, जो विवाह का कारक भी है, तो वह विवाह की संख्या या स्त्रियां बढ़ावेगा।

४—किसी भाव में मंगल और शनि दोनों हों तो उस भाव का नाश करता है।

५—चन्द्र सूर्य के साथ हो। द्वितीय भाव में भौम, चतुर्थ में बुध, पंचम में गुरु, षष्ठ में शुक्र, सप्तम में शनि ये दोष युक्त होते हैं प्रायः निष्फल होते हैं। यदि धन कारक होने की स्थिति में हों तो तब भी निष्फल होते हैं। धन लाभ नहीं होगा। इन भावों में उपरोक्त ग्रहों के साथ चन्द्र भी हो तो चन्द्र भी निष्फल होता है।

६—पाप ग्रह लग्न या किसी भाव के त्रिक (६–८–१२ भाव) में हो तो उस भाव के फल को तीक्ष्ण करता है।

७—त्रिकेश किसी भाव से केन्द्र कोण में हों तो भी उस भाव का अच्छा फल नहीं देते। त्रिकेश उस भाव से त्रिक में हो तो अच्छा फल देते हैं।

८—जिस राशि में कोई ग्रह हो वह राशि व उसका स्वामी बली हो और वह राशिस्थ ग्रह भी बली हो तो उस राशि या भाव का पूर्ण फल होता है यदि इनमें से २ बली हों तो मध्यम फल, केवल एक बली हो तो हीन फल होता है।

९—कोई भावेश पाप युक्त उस भाव से त्रिक में हो तो उस भाव सम्बन्धो सुख नहीं देता।

१०—कारक ग्रह या भावेश बहुत पाप ग्रहों से युक्त या दुष्ट हो या नीच आदि बुरे स्थानों में हो तो अच्छा फल नहीं देता।

इत्यादि बातों का पहिले बता चुकी बातों का और आगे बताई जाने वाली बातों का पूर्ण विचार कर भाव के फल का अनुमान करना चाहिये।

११–जब किसी भाव का स्वामी ६–८–१२ घर की राशि या नवांश में हो तो शनि जब वहाँ गोचर में पहुँचता है तो उस भाव के फल का बिलकुल नाश हो जाता है। यदि शनि इन दोनों राशियों के त्रिकोण में जो राशि है वहाँ जाता है तब भी भाव फल का नाश हो जाता है।

(१) लग्न कुण्डली से भाव फल विचार

१–लग्न में—शुभ ग्रह हो तो वह नम्र होता है। पाप ग्रह हो तो दरिद्र, शोक व भय से युक्त व अभक्ष्य भक्षी होता है।

२–लग्न में—शुभ राशि हो तो दीर्घायु राजपूजित और सुखी होता है।

३–लग्न में—पाप राशि या पापग्रह हो, पापग्रह की दृष्टि हो तो अग्नि से दग्ध हो।

४–लग्न में—उपरोक्त प्रकार से चन्द्र हो तो जल का भय हो।

५–लग्न में—शुभ गुरु की योग दृष्टि हो तो देह सुख होता है।

लग्न में—पापग्रह की योग दृष्टि लग्न या चन्द्र पर हो और शुभग्रह की दृष्टि न हो तो देह सुख नहीं होता।

६–लग्न में शुभ ग्रह हो तो जातक सुरूप, पापग्रह हो तो कुरूप हो।

७–लग्न को देखते वाले या लग्न में रहने वाले अधिक ग्रह हों तो उसमें बली ग्रह से ही फल विचारना।

८–लग्न में शुभ बलवान् हो तो मनुष्य स्थूल होता है। पाप ग्रह तथा निर्बल ग्रह से दुर्बल होता है।

९–लग्न में पाप युक्त चन्द्र हो—तो शीत रोग से युक्त रहे।

१०–लग्न में ३ शुभ ग्रह हों—विनय युक्त राजा हो। पाप ग्रह हों तो अनेक दुःख दरिद्र शोक से युक्त, बहुत भोजन करने वाला हो।

११–लग्न में चन्द्र बुध या राहु, केतु, शनि हो—स्वभाव चंचल होता है। लग्न में सूर्य मंगल गुरु शुक्र हो तो—स्थिर भाव को देते हैं।

१२–लग्न या त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तो रोग नष्ट हो।

१३–लग्न को लग्नेश देखे तो धनी, तीक्ष्ण बुद्धि हो, कुल की कीर्ति बढ़ावे।

१४–लग्न में चन्द्र के साथ यदि बुध गुरु व शुक्र हो या लग्न से केन्द्र में हो तो राज्य सम्बन्ध से लाभ कारक होता है।

१५–लग्न में तथा लग्न के होरा में पाप ग्रह हो तो शिर में पीड़ा हो वह होरा पूर्व दल में हो तो सिर के बाम भाग में, यदि उत्तर दल में हो तो सिर के दाहिने भाग में पीड़ा हो।

१६–लग्न द्रेष्काण के विभाग में सिर स्थान में काष्ठ अग्नि व शस्त्र से चोट लगने का भय हो।

१७–लग्न से प्रथम और नवम स्थान भी धन संज्ञक हैं।

१८–यदि लग्न में कोई ग्रह न हो तो उसके द्रेष्काण पर से भी फल विचारना।

(२) धन भाव का विचार

१–द्वितीय स्थान वाक् स्थान भी है वाक् सम्बन्धी विचार भी इससे करना।

२–लग्न से प्रथम और नवम स्थान से भी धन का विचार होता है।

३–धन भाव में शुभग्रह धन प्रद है और पाप ग्रह धन नाशक है।

४–सब पाप ग्रह दूसरे घर में हों तो यह मूर्ख होता है पर धनी भी होता है।

५–धन भाव में लग्नेश सहित सब ग्रह बलवान् हों तो शुभफल होता है।

६–धन भाव में शुभग्रह द्वितीयेश और लग्नेश से युक्त हों तो धन आदि सम्बन्धी अच्छा फल देते हैं।

७–धन भाव में शुभग्रह हो तो मधुर भाषी प्रिय भोजन करने वाला होता है यदि पाप ग्रह हो तो कटु भाषी और बुरे अन्न का भोजी होता है।

८–धनभाव में धन कारक ग्रह (बुध, चंद्र, मंगल) व्यय स्थान में पड़े तो व्यय की वृद्धि होने से धन की हानि होती है।

९–धन भाव में शनि सूर्य मंगल हों या इनकी दृष्टि हो तो धन नाश हो, यदि क्षीण चंद्र की दृष्टि हो तो विशेष कर धन क्षीण (नाश) हो।

१०–धन भाव में मंगल चन्द्र दोनों हों तो त्वचा रोग और दरिद्रता हो।

११–धन भाव में सूर्य और बुध हों तो सेवा में तत्पर रहे। धन स्थिर न रहे।

१२–राज योग होने से धन आदि का सुख होता है यदि दरिद्र योग न हो। दरिद्र योग, रेफा योग आदि में धन सुख आदि सम्बन्धी कष्ट होता है।

१३–द्वितीयेश केन्द्र में, उच्च में, मित्र गृही या अपने वर्ग में हो या द्वितीयेश जिस घर में हो उसका स्वामी गोपुरांश में हो तो बहुत धन होता है।

१४–द्वितीय में गुरु शुक्र हो तो वाक्पटुता आती है। चन्द्र हो तो—कुटुम्ब सौख्य, बुध हो तो धन समृद्धि प्राप्त होती है।

१५–धन का विचार करने को, द्वितीय भाव से—धन का सुख। लग्नेश से सौभाग्य। चतुर्थ से—सुख और पैतृक धन। पंचम से–राज्य द्वारा लाभ, अकल्पित धन सट्टा लाटरी आदि द्वारा। सप्तम से–वाणिज्य द्वारा। नवम से–भाग्योदय द्वारा। दशम से–व्योपार द्वारा लाभ। एकादश से–लाभ और धन संग्रह प्रगट होता है।

गुरु ग्रह से—द्रव्य संचय। शुक्र से–सांसारिक धन विषयक सुख। इन सभी योगों की या इनमें से अधिक योगों की शुभता से धन का सुख होता है अन्यथा कष्ट होता है।

१६–दूसरे भाव का विचार करने को उसका स्वामी कहाँ है यह देखो। बली है और सब वर्ग में उसकी स्थिति अच्छी है या नहीं है। ग्रहों का योग दृष्टि आदि सब बातों

का विचार कर फल कहना इसमें कारक का भी विचार करना होगा।

दूसरा घर आँख मुख धन वाणी कुटुम्ब आदि बताता है। दूसरा घर दाहिना नेत्र है परन्तु इनका प्रथम विचार करने को इनके कारक पर विचार करना होगा। इनके कारक भी भिन्न-भिन्न हैं जैसे वाणी का कारक गुरु है। वाणी सम्बन्धी विचार करने को गुरु की स्थिति पर और द्वितीय भावस्थ ग्रह एवं भावेश पर विचार कर फल निर्णय करना होगा। इसी प्रकार नेत्र का कारक शनि है। कुटुम्ब का कारक शुक्र है। इनके बल आदि पर और कारक की स्थिति आदि पर भी विचार कर किसी विशेष बात के सम्बन्ध में फल का अनुमान कर सकते हो।

१७–एकादश भाव प्रबल हो और धन भाव निर्बल हो तो धन लाभ में सुगमता तो होगी परन्तु धन का संग्रह न हो सकेगा।

१८–लाभेश दुर्बल या त्रिक या किसी अशुभ योग में हो तो धन प्रभाव प्रबल होने पर भी लाभ कष्ट साध्य होता है जिसमें धन संग्रह तो होगा परन्तु अनेक कष्ट के साथ।

१९–लग्नेश, लाभेश परस्पर एक दूसरे के स्थान में हों या लाभेश लाभ में या धनेश, लाभेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो धनवान् और प्रसिद्ध हो।

२०–यह पहिले बता चुके हैं कि द्वितीय भाव में मंगल अशुभ अर्थात् प्रायः निष्फल होता है। चन्द्र भी द्वितीय भाव में मंगल के साथ निष्फल होता है।

२१–दूसरा स्थान कारक स्थान है इसका स्वामी मारकेश कहलाता है इसका वर्णन प्रथम दिया है। (धन सम्बन्धी योग प्रथम दिये हैं)।

(२) तृतीय भाव का फल विचार

१–तृतीय भाव–शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो सहोदर युक्त और पराक्रमी हो।

२–तृतीय भाव–में शुभ राशि हो शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव सम्बन्धी सभी बातों में शुभ फल होता है।

३–भ्रातृ भाव स्थित राशि व ग्रह, भ्रातृ स्थानेश और भ्रातृकारक ग्रह इन चारों में शुभ ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो भ्राता होंगे, शुभ ग्रहों का योग दृष्टि न हो तो सहोदर की हानि होगी। इसमें भी इन चारों में या इनमें से एक में शुभता हो तो उस प्रमाण से सहोदर होंगे। पाप ग्रहों के योग या दृष्टि से हानि होगी।

४–शुभग्रह भी स्वभाव से अशुभ स्थान के स्वामी हो जायँ तो अशुभ फल देंगे। जैसे मेष लग्न से तीसरे और छठे स्थान का स्वामी बुध है दोनों अशुभ स्थान का यहाँ स्वामी हो जाने से बुध अशुभ हो गया या तुला लग्न हो तब तीसरे और छठे स्थान का स्वामी गुरु हो जाने से दो अशुभ स्थानों का स्वामी हो गया इससे गुरु भी यहाँ अशुभ हो गया।

५–ग्रह ३-६-८ स्थान के स्वामी होने से पाप फल देते हैं जैसे वृश्चिक लग्न में मंगल लग्नेश और षष्ठेश भी है। वृष लग्नमें शुक्र लग्नेश भी है और षष्ठेश भी है।

त्रिकेश होने में इनमें अशुभता आ जाती है। इस प्रकार कन्या लग्न में शनि षष्ठेश हो जाता है। इस प्रकार ३-६-८ के स्वामी अशुभ हो जाते हैं।

६–तृतीय में—स्त्रीग्रह हो या तृतीयेश स्त्रीग्रह हो तो अधिक बहिन होंगी, यदि ये पुरुषग्रह हों तो अधिक भाई का सुख हो। स्त्री पुरुष दोनों हो तो भाई बहिन दोनों का सुख हो।

७–तृतीय से, भाई साहस यात्रा आदि जाना जाता है परन्तु इनके कारक भिन्न-भिन्न हैं जिनसे भिन्न-भिन्न विषय का फल जानना।

८–तृतीयेश का सम्बन्ध शुभ ग्रहों से हो तो उसके भाई हों। भाइयों के कारक मंगल का सम्बन्ध शुभ ग्रहों से हो तो उसके भाई अवश्य हों। तृतीयेश और मंगल साथ-साथ हों तो भाई अवश्य हों। तृतीयेश लग्न में हो लग्नेश तृतीय में हो तो भाई हो।

९–तृतीयेश और मंगल ये पाप ग्रहों के साथ हों ६-८-१२ में हों तो कोई भाई न हों, होवें तो मर जावेंगे।

१०–तृतीय भाव में सूर्य हो तो बहुत साहसी हो आगे बढ़े।

११–तृतीयेश अष्टम में हो तो यात्रा में मृत्यु हो या आकस्मिक भयानक घटना हो।

१२–तृतीय में बुध हो और तृतीयेश चन्द्रमा से युक्त हो या भ्रातृ कारक ग्रह शनि से युक्त हो तो पहिले एक बहिन और पीछे एक भाई हो और तीसरा उत्पन्न होकर मर जावे।

१३–यदि मंगल द्वादशेश या गुरु से युक्त और तृतीय भाव में चंद्र हो तो ७ सहोदर हों।

१४–यदि तीसरे भाव में चन्द्र हो उस पर केवल पुरुष ग्रह (रवि गुरु मंगल) की दृष्टि हो तो बड़े भाई का, शनि हो तो छोटे भाई का, मंगल हो तो अपने से बड़े और छोटे दोनों भाई का नाशक होता है।

इन उपरोक्त योगों में बलाबल देख कर भाई बहिन का शुभाशुभ फल विचारना। (भाइयों सम्बन्धी योग पृथक् दिये हैं।)

चतुर्थ भाव विचार

१–चतुर्थ से घर स्थान सम्पत्ति, माता, वाहन, आनन्द, अपनी उन्नति, शैया सुख, शिक्षा, जल, हृदय, कंधा, गर्दन, कूल्हे आदि का विचार होता है—

इससे स्थावर सम्पत्ति, उपभोग की वस्तुयें, सामान फरनीचर आदि, कई प्रकार के वाहन, आचरण और स्त्री भोग, भिन्न प्रकार का जल जिसे उपयोग करना पड़ता है, हृदय का बल और निर्बलता, गर्दन और कन्धे की शक्ति इत्यादि बातें प्रगट होती हैं।

यद्यपि इस भाव से भिन्न-भिन्न बातें प्रगट होती हैं और उस भाव का स्वामी एक होता है परन्तु प्रत्येक बातों के कारक भिन्न हैं—

जैसे माता कारक चन्द्र है (किसी के मत में दिन के जन्म में शुक्र रात के जन्म में चन्द्र माता का अतिरिक्त कारक है। इस कारण माता का सुख, स्वास्थ्य, दीर्घ जीवन,

आचरण मातृ प्रेम का विचार केवल चौथे भाव से ही नहीं होता परन्तु चन्द्र शुक्र या शनि से भी होता है।) (माता के २ कारक हैं) जैसो स्थिति हो विचारना।

इसी प्रकार शिक्षा का कारक गुरु, वाहन (घोड़ा, मोटर आदि सवारी) का कारक शुक्र है। इसी प्रकार चतुर्थेश और कारक ग्रह की बलवान् स्थिति आदि पर विचार कर फल कहना।

२—जब शुक्र अच्छी स्थिति में हो और चतुर्थेश बलवान् हो तो उसे चतुर्थ भाव की सब चीजों में शुभता प्राप्त होगी। यदि ये बुरे हों या बलहीन हों तो उपरोक्त चीजें नहीं प्राप्त होंगी।

३—शुभ ग्रह चतुर्थ में हो या चतुर्थ को देखता हो तो वे सब शुभ ग्रह अपने अधिकार प्रमाण से शुभ फल देंगे। परन्तु पाप ग्रह उन स्थानों में हों या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो बुरा फल होकर दुःख व चिंता उत्पन्न करायेगा।

४—चतुर्थ भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि होगी।

५—चतुर्थ भाव सम्बन्ध से पूर्ण बली ग्रह का पूर्ण फल होगा। मध्यम बली का आधा। हीन बली या अस्त आदि का बहुत अल्प फल होगा।

६—चतुर्थ में सूर्य व शनि हो तो अन्तःकरण सदा उद्विग्न रहे, दुःखी हो।

चतुर्थ में बुध शुक्र हो—बहुत करके वह सुखी हो। चतुर्थ में बुध—पंडित हो।

७—चतुर्थ में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसके पास वाहन रहे।

८—चतुर्थ में शुभ ग्रह हों या उनकी दृष्टि हो तो उसकी माता, दीर्घजीवी हो।

९—चतुर्थ में शुभ ग्रह हो तथा चतुर्थेश अपने उच्चादि शुभ स्थान में हो, मातृ कारक ग्रह भी बली हो तो माता से पूर्ण सुख हो। घर पशु आदि सम्बन्धी योग पृथक् दिये हैं।

१०—इसी प्रकार चतुर्थेश बली होकर चतुर्थ में हो तो चतुर्थ भाव सम्बन्धी सब फल शुभ होता है।

११—यदि चतुर्थेश अस्त नीच गत आदि हो तो उक्त फल विपरीत होता है, अर्थात् फल अशुभ होता है।

१२—शुक्र की चन्द्र पर दृष्टि हो या चन्द्र से तीसरे घर में शुक्र हो या शुक्र से तीसरे घर में चन्द्र हो तो उसके पास कुछ वाहन हो और बहुत सुख प्राप्त करे।

१३—स्थावर सम्पत्ति मिलने के योग।

(१) मंगल चतुर्थ हो या मंगल की दृष्टि चतुर्थ पर हो या चतुर्थेश मंगल के घर में हो तो स्थावर सम्पत्ति मिले।

(२) चतुर्थेश लग्न में हो लग्नेश चतुर्थ में हो।

(३) यदि चतुर्थेश का सम्बन्ध किसी प्रकार मंगल से (मंगल भूमि का कारक है) हो जावे।

(४) चतुर्थेश धन भाव में हो।

(५) चतुर्थेश लाभ में हो तो मित्रों द्वारा स्थावर सम्पत्ति मिले।

१४–चतुर्थ भाव में चतुर्थेश हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो गृह सम्बन्धी सुख पूर्ण हो।

१५–लग्नेश शुभ ग्रह हो तथा चतुर्थेश नीच में हो, चतुर्थ भाव का कारक व्यय भाव में हो, चतुर्थेश लाभ स्थान में हो तो १२ वर्ष में वाहनों का सुख हो।

१६–चतुर्थ में सूर्य शनि, नवम भाव में चन्द्र, तथा लाभ भाव में मंगल हो तो गाय भैंस आदि पशुओं का लाभ हो।

(५) पंचम भाव का फल विचार

१–पंचम स्थान से—सन्तान, बुद्धि, अकल्पित धन (सट्टा लाटरी आदि से) स्मरण शक्ति, देवता, विद्या, ज्ञान, वाणी, मंत्रणा शक्ति, सलाह देने की शक्ति, यांत्रिक शक्ति, बुद्धि. हर्ष, मानसिक प्रगल्भता, राज्य द्वारा लाभ आदि का विचार होता है परन्तु इनके कारक भिन्न-भिन्न हैं।

२–बुद्धि का कारक बुधग्रह है और मन का द्योतक चन्द्र है इससे किसी का ज्ञान निश्चय करने में इनका विचार होता है। किसी ने विद्या ऊँची पढ़ी पर ज्ञान कम होता है इससे विद्या और ज्ञान में अन्तर है।

३–चन्द्र पंचम भाव में हो उसे शुक्र देखता हो तो उसे अचानक द्रव्य प्राप्त हो लाटरी आदि किसी प्रकार से प्राप्त हो सकता है।

४–पंचमेश शुभग्रह युक्त हो या शुभग्रह के घर में हो तो वह बुद्धिमान् और शुद्ध आचरण वाला होता है।

५–पंचमेश जिस भाव में हो उस राशि का स्वामी शुभग्रहों से दृष्ट हो या दोनों बाजू शुभग्रह हों तो तेज बुद्धि हो।

६–पंचम में शनि और राहु हो और पंचम पर शुभग्रह की दृष्टि न हो पंचमेश पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो उसकी स्मरण शक्ति बहुत कम हो।

७–पंचम का सम्बन्ध स्त्रीग्रह से हो तो स्त्री देवता जैसे सरस्वती दुर्गा आदि का पूजन करे यदि पुरुष ग्रह से सम्बन्ध हो तो पुरुष देवता राम कृष्ण शिव आदि की पूजा करे।

८–पंचमेश सप्तम में हो तो चोरों द्वारा धन की हानि हो।

९–पंचम में गुरु शुक्र बुध हो और योग या दृष्टि द्वारा कोई शुभग्रह गुरु शुक्र या बुध से हो तो सन्तान होगी।

१०–पंचमेश पंचम में हो तो कई सन्तान हों।

११–पंचम और पंचमेश का कोई सम्बन्ध शुभग्रह से हो तो उसकी सन्तान की संख्या में वृद्धि हो।

१२–पंचम और पंचमेश का सम्बन्ध पापग्रह से हो तो सन्तान की हानि हो।

१३–पंचम में २–३ पापग्रह हों और पञ्चम पर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो कोई सन्तान न हों यदि होवें तो जीवित न रहें।

१४—पंचमेश अष्टम में हो तो सन्तान की हानि हो।

१५—पुत्र या कन्या—पंचम या पंचमेश का सम्बन्ध स्त्री ग्रह से हो तो कन्या हो पुरुष ग्रह से हो तो पुत्र हो।

१६—संतान को कीर्ति और मान—पंचमेश दशम में हो तो उस के संतान को कीर्ति और मान मिले।

१७—पुत्र विचार—पंचम से, पुत्र कारक ग्रह और गुरु की स्थिति पर विचार कर संतान होना निर्णय करे। भावेश पुरुष या स्त्री ग्रह जैसा हो उससे पुत्र-पुत्री का विचार करना।

१८—दत्तक या कृत्रिम पुत्र—पंचम में ३, ६, १० या ११ राशि हो उसमें शनि, मांदि, गुलिक हो तो दत्तक या कृत्रिम आदि पुत्र होता है।

१९—एक पुत्र हो—शनि से पंचम में गुरु या गुरु से पंचम में शनि तथा पंचम भाव पाप युक्त हो तो १ पुत्र होगा।

२०—७ पुत्र—पंचम से पंचम में शनि हो। पंचमेश पंचम में हो तो ७ पुत्र हों दो गर्भमें दो दो पुत्र होते हैं।

२१—८ पुत्र—गुरु ५ या ९ भाव में हो, पंचमेश बली हो, द्वितीयेश दशम में हो तो ८ पुत्र होंगे।

२२—९ पुत्र—गुरु अच्छे स्थान में हो, द्वितीयेश राहु युक्त हो। भाग्येश भाग्य स्थान में हो तो ९ पुत्र हों।

२३—दूसरी या तीसरी स्त्री से पुत्र—पंचम में पाप ग्रह हो या गुरु से पंचम में शनि हो तो पुरुष की प्रथम स्त्री से पुत्र नहीं होता, दूसरी या तीसरी स्त्रीसे पुत्र होता है।

२४—४० वर्ष में पुत्र—लग्न से नवम में गुरु हो गुरु से नवम में शुक्र हो या लग्नेश शुक्र हो तो ४० वर्ष में पुत्र हो।

२५—एक पुत्र होकर मरे—पंचम भाव पापयुक्त हो। गुरु से पंचम शनि हो। लग्नेश द्वितीय भाव में हो और पंचमेश पाप युक्त हो तो एक पुत्र होकर नष्ट हो जाता है।

२६—३३-३६ वर्ष में पुत्र मरण—पंचम से और लग्न से पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो ३३ या ३६ वर्ष में पुत्र का मरण हो।

२७—५६ वर्ष में पुत्र शोक—लग्न में गुलिक हो और लग्नेश अपने नीच में हो तो ५६ वर्ष में पुत्र मरण।

२८—पेट में पीड़ा—पंचम में शनि पाप दृष्ट हो तो पेट में पीड़ा हो लोह या अग्नि से पीड़ा हो।

(पुत्र सम्बन्धी योग पृथक् दिये हैं।)

६-षष्ठ भाव का फल

१—इस भाव से रोग, शत्रु, ऋण, माया, चोट, नौकर आदि का विचार होता है।

२—शत्रु या ऋण हानि—छठे घर में पाप ग्रह हो तो शत्रु की हानि हो और कोई ऋण न रहे।

३— भ बल—षष्ठेश पष्ठ भाव में हो वीर्यवान् हो या शुभ हो तो षष्ठ भाव सम्बन्धी सब फल शुभ होगा। या छठे भाव में शुभ ग्रह की राशि हो शुभ युक्त हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो उस भाव का फल शुभ होगा। षष्ठ में गुरु बलवान् हो तो शुभ होगा। जन्म में या प्रश्न में भी इस योग पर विचारना।

४—अशुभ फल—यदि पापयुक्त पापदृष्ट भाव राशि हो तो शुभ नहीं होगा।

५—सिद्धि—षष्ठ में स्वक्षेत्री शुक्र हो तो सदा अति सिद्ध हो।

६—अच्छे नौकर—षष्ठेश छठे भाव में हो तो अच्छे नौकर हों।

७—पूर्वज की जायदाद की हानि—षष्ठेश चतुर्थ में हो तो अपने पूर्वजों की जायदाद की हानि हो उनकी कोई जायदाद न मिले।

८—ऐक्सीडेन्ट या आपरेशन—छठे घर का सम्बन्ध मंगल से हो तो अचानक अप घात (ऐक्सीडेन्ट) या शस्त्र क्रिया द्वारा चिकित्सा अर्थात् आपरेशन हो।

९—बीमारी से आराम—छठे भाव का सम्बन्ध गुरु से हो तो बीमारी हो उससे शीघ्र आराम पावे।

१०—कुविचार से रोग—छठे भाव का सम्बन्ध शुक्र से हो तो उसे भोजन या रहन-सहन के सम्बन्ध में कुविचार से रोग हो।

११—पेट दर्द—छठे भाव का सम्बन्ध शनि से हो तो पेट दर्द या अपच का रोग रहे।

१२—बीमारी या नौकरों द्वारा धन हानि—षष्ठेश धन भाव में हो तो रोग द्वारा या नौकरों द्वारा धन की हानि हो।

१३—सूजन और क्षय रोग—षष्ठ में सूर्य युक्त चंद्र हो तो शरीर में सूजन हो और क्षय रोग हो।

१४—सदा रोगी—छठे में शुभ ग्रह हों तो सदा रोग हो।

१५—मृत्यु—छठे में चन्द्रमा हो तो मृत्यु दायक है।

१६—दोष कारक ग्रह—षष्ठ में सूर्य हो—दश दोष देता है, षष्ठ में चन्द्र हो—हजार दोष देता हैं, षष्ठ में मंगल, शनि—कुछ दोष नहीं देते, षष्ठ में शेष ग्रह—चन्द्र के समान हजार दोष देते हैं।

७—सप्तम भाव का फल

१—सप्तम से स्त्री का सब प्रकार का विचार होता है। स्त्री की सुन्दरता, स्वभाव, विवाह, धन आदि। वाणिज्य द्वारा लाभ का भी विचार होता है।

२—सप्तम भाव, सप्तमेश और इसका कारक ग्रह शुक्र और सप्तमस्थग्रह से भाव फल विचारना।

३—रूप गुण आदि का विचार—सप्तम स्थित ग्रहों के शील, भावादि राशि शील लग्नादि के अनुसार सब विचार कर अर्थात् उपरोक्त सब ग्रहों और राशि के गुण धर्म

और कुंडली में ग्रह स्थिति विचार कर स्त्री के गुण रूप स्वभाव आदि जाने।

४–सुन्दर स्त्री–सप्तमेश षड्बल सहित शुभभाव युक्त यदि शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तो सुन्दरी स्त्री प्राप्त हो।

५–सप्तम भाव का फल–सप्तमेश दुष्ट स्थान में हो पापदृष्ट हो या पापयुक्त हो तो सप्तम भाव का फल मध्यम होता है। ऐसा न हो तो शुभ फल होता है।

६–अच्छा फल–यदि लग्न से या चंद्र से ५ वाँ या ७ वाँ घर ९ वें घर के स्वामी से युक्त या दृष्ट हो तो दोनों भाव के लिये शुभ है अन्यथा नहीं।

सप्तम में शुभ राशि शुभग्रह से दृष्ट युक्त होने से भावफल शुभ होता है। पाप राशि पाप दृष्टि योग से अशुभ फल होता है।

७–भाग्यवान् स्त्री–सप्तम का कोई सम्बन्ध सूर्य से हो तो भाग्यवती स्त्री मिले वह अच्छे आचरण की होगी। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।

८–उद्योगी ईमानदार स्त्री, विवाह में देर–सप्तम का कोई सम्बन्ध शनि से हो तो विवाह देर से हो, परन्तु उसकी स्त्री ईमानदार और उद्योगी होगी। कभी-कभी कड़े स्वभाव की होगी।

९–बुद्धिमान् तेज स्त्री–सप्तम का कोई सम्बन्ध बुध से हो तो स्त्री तेज होगी और बुद्धिमान् होगी।

१०–स्त्री द्वारा सुख–विवाह के बाद उन्नति–सप्तम का कोई सम्बन्ध गुरु से हो तो स्त्री द्वारा सुख मिले और विवाह के पश्चात् उन्नति हो। या विवाह कारक शुक्र सिंह में हो तो विवाह के पश्चात् जीवन में उन्नति हो।

११–स्त्री के कारण सुख व धन–सप्तम का कोई सम्बन्ध शुक्र से हो तो स्त्री द्वारा सुख हो और कुछ धन लाभ भी हो।

१२–२-३ अवसर चूकने पर विवाह–सप्तम का कोई सम्बन्ध चन्द्र से हो तो २-३ अवसर चूकने के पश्चात् विवाह हो सकेगा।

१३–स्त्री स्वेच्छाचारी–सप्तम का कोई सम्बन्ध मंगल से हो तो स्त्री के कारण विपत्ति आवे। स्त्री क्रोधी हो पति की इच्छानुसार न चले।

१४–स्त्री के कारण दुःख व झगड़ा–सप्तम या सप्तमेश का कोई सम्बन्ध मंगल से हो तो स्त्री से झगड़ा हो। कभी-कभी स्त्री के द्वारा दुःख भी हो।

१५—विलम्ब मे विवाह–शनि के घर में शुक्र हो और सप्तम या सप्तमेश से शनि या सूर्य का कोई सम्बन्ध हो तो जीवन में बहुत विलम्ब से विवाह हो।

१६—एक से अधिक विवाह–यदि २-७-९ भाव के स्वामियों में से किसी का और शुक्र का कोई सम्बन्ध पाप ग्रह या शुभ ग्रह से हो तो एक से अधिक विवाह होगा।

१७—स्त्री आचरण हीन–सप्तमेश पाप ग्रह के साथ हो या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री बदचलन होगी।

१८—स्त्री कामी, एक या अधिक से प्रेम–शुक्र ग्रह मंगल के घर में हो और मंगल

शुक्र के घर में हो या मंगल या शुक्र साथ-साथ किसी घर में हों तो स्त्री एक या अधिक से प्रेम करे।

१९—स्त्री गर्व युक्त—सप्तम में नीच राशि का शुक्र हो। या चंद्र गुरु शुक्र इनकी राशि सप्तम में हो और शुक्र और मंगल की दृष्टि हो तो स्त्री गर्व युक्त होगी।

२०—स्त्री नपुंसक—सप्तम में नपुंसक ग्रह हो तो स्त्री में नपुंसकता रहे।

२१—स्त्री फल विचार—जन्म में जिस प्रकार पुरुष का फल कहा है वह फल स्त्रियों को भी लागू होता है। स्त्री के सप्तम से उसके पति का विचार होता है। दूसरे भाव फल में पुरुष के स्थान में स्त्री समझना स्त्रियों की जन्म कुण्डली से विशेष अन्तर स्त्री जातक में दिया रहता है वह भी आगे दिया गया है।

(स्त्री सम्बन्धी योग पृथक् दिये हैं।)

अष्टम भाव का फल

१—यह आयु या मृत्यु स्थान है। इससे मृत्यु का निदान, मृत्यु सम्बन्धी सब प्रकार का विचार, दहेज अर्थात् स्त्री द्वारा धन प्राप्ति व अकल्पित लाभ (सट्टा लाटरी आदि द्वारा) का विचार होता है।

२—कौन विकार से मरण—इस स्थान पर कोई ग्रह न हो तो जिन ग्रहों की दृष्टि हो उनमें जो बलवान् हो उसके अनुसार वात पित्त कफ आदि व्याधि से मरण होगा। जैसे रवि से पित्त, चन्द्र से श्लेष्म, भौम से पित्त इत्यादि।

३—किस अंग में होगा—काल पुरुष का जो अंग अष्टम राशि में है उस अंग में उपरोक्त व्याधि होकर मृत्यु हो।

४—भाव फल शुभ—अष्टम भाव में शुभ ग्रह की राशि शुभ फल देती है।

५—धन भाव के सदृश इसका भी विचार—जैसा धन भाव गत ग्रहों के फल कहे हैं वैसा अष्टम भावगत ग्रहों का भी विचारना। जैसे क्रूर ग्रह अष्टम में हो तो मनुष्य रोग युक्त रहे, युद्ध में मरे, बहुत काल तक कलह रहे। किला एका—एकी न टूटे। बन्धन में पड़ा शीघ्र छूटे। भार से लदी नाव सुख पूर्वक पार लगे। ऐसा ही फल द्वितीय भाव में क्रूर ग्रह का है।

६—अष्टमेश का अशुभत्व—अष्टम भावेश जिस घर में हो उस भाव के फल को नष्ट करता है। जैसे अष्टमेश धन भाव में हो तो धन की हानि, पंचम में हो तो संतान नाश, सप्तम में हो तो स्त्री की हानि इत्यादि।

७—धन विचार—शुभ ग्रह अष्टम में हो तो सदा धन रहित रहता है यदि वहाँ क्रूर ग्रह हो तो धन की हानि करता है।

८—पर्वत से गिरकर मृत्यु—सूर्य और मंगल क्रम से १० और ४ स्थानों में हों तो पर्वत से गिरकर मृत्यु हो।

९—कूप में गिरकर मृत्यु—शनि चन्द्र और मंगल क्रम से ४-७-१० स्थान में हों तो कूप में गिरकर मृत्यु हो।

१०—अपने जन से मृत्यु–सूर्य चंद्र यदि कन्यागत क्रूर ग्रहों से दृष्ट हों तो अपने जन से मृत्यु हो ।

११—जल में डूबकर मृत्यु–द्विस्वभाव राशि में सूर्य चंद्र स्थित हों तो जल में डूबकर मृत्यु हो ।

(मृत्यु सम्बन्धी विषय पृथक् दिया है ।)

९–नवम भाव का फल

१—नवम भाव से धर्म, श्रद्धा, तप, तीर्थयात्रा, भाग्योदय, दूर की यात्रा, जल की यात्रा, ग्रन्थ कर्तव्यता, बुद्धिमत्ता आदि का विचार होता है ।

२—नवम भाव अपने स्वामी से युक्त एवं शुभ ग्रह युक्त दृष्ट हो तो उस भाव का फल अच्छा होता है अन्य प्रकार से अशुभ फल होता है ।

३—इस भाव से सम्पूर्ण भाग्य का फल विचारना । नवमेश, नवम भाव, नवम स्थित ग्रह इनका नवांश वर्ग जैसा सबल या निर्बल, शुभ या अशुभ हो उसके अनुसार फल विचारना । नवमेश जैसा बली या निर्बल होकर शुभ या अशुभ स्थान में हो वैसा शुभ या मध्यम वा हीन भाग्य कहना । सबसे पहिले भाग्य का ही विचार करना क्योंकि भाग्य बिना कुछ न होगा ।

४—लग्न से और चंद्र से दोनों प्रकार के नवम स्थान से फल विचारना । दोनों में अच्छा हो तो श्रेष्ठ फल होगा यदि एक प्रकार से अच्छा हो तो आधा फल समझना ।

५—लग्न से प्रथम और नवम भाव भी धन संज्ञक हैं इससे भी धन का विचार करना ।

६—पिता आदि की मृत्यु का विचार–पंचम या नवम में पाप ग्रह की राशि में यदि–सूर्य हो तो–पिता की मृत्यु हो, मंगल हो तो–भाई की मृत्यु, बुध हो तो–मामा की मृत्यु हो, गुरु हो तो—नानी की मृत्यु हो, शुक्र हो तो—नाना की मृत्यु हो, शनि हो तो—स्वयं जातक को कष्ट या मृत्यु ।

७—राजा हो–नवम में चन्द्र हो बुध या मंगल से दृष्ट हो तो राजा हो या नवम में चन्द्र उच्च का हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो राजा हो ।

८—सूर्य से दृष्ट—राजा, मंगल से दृष्ट—मंत्री, बुध से दृष्ट—धनवान्, शुक्र से दृष्ट—अश्वपति, सूर्य चन्द्र से दृष्ट—विद्वान्, पशु पालक, सूर्य मंगल से दृष्ट—सेनापति, रत्न व्यापारी, सूर्य बुध से दृष्ट—धनी, विनोदी, सूर्य शुक्र से दृष्ट—नम्रता युक्त, सूर्य शनि से दृष्ट—गुणवान् राजा ।

९—चन्द्र सूर्य दोनों से दृष्ट–विख्यात, राज तुल्य पंडित, बहुत स्त्री युक्त, दीर्घायु । चन्द्र मंगल दोनों से—सौख्य ऐश्वर्य युक्त सेना का अधिकारी या मन्त्री । चन्द्र बुध दोनों से—गृह शयन अन्न आदि भोगी, तेजस्वी, क्षमाशील, बुद्धिमान् । चन्द्र शुक्र दोनों से—शुभाकार, कर्म युक्त, शूरवीर, सम्पन्न, परिवार युक्त । चन्द्र शनि दोनों से—गुण वाला और राजतुल्य, विदेश में पंडित ।

मंगल बुध दोनों से—तेजस्वी, सत्य युक्त, सेवा कार्य में तत्पर, चतुर बुद्धि।

मंगल शुक्र की दृष्टि—धनवान्, चतुर, बुद्धिमान्, विद्वान्, सत्यभाषी, विदेशगामी।

मंगल शनि की दृष्टि—नीच, विदेश गामी, चाकरी वाला, निंदक, चुगल, ठग।

बुध गुरु की दृष्टि—कला जानने वाला, सुन्दर भाग्य, विद्वान्, अच्छे भेष का धारक, शीलवान्, आज्ञा पालक।

बुध शनि की दृष्टि—सुन्दर ऐश्वर्यवान्, मनोहर, विद्वान्, वक्ता, शूरवीर, सुखी, विनयी।

शुक्र शनि की दृष्टि—देशपति और धनी।

द्वादशेश से दृष्ट—विवाद कर्ता, प्रिय बोलने वाला।

यदि नवम में गुरु हो और अन्य ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसा फल नहीं होता। यदि नवम में गुरु हो और समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो—समृद्ध और पृथ्वीपति, तेज रूप गुण युक्त होता है।

९—नवम भाव में २ ग्रह योग फल

सूर्य चन्द्र—नेत्र रोग, धनी, सूर्य मंगल—दुःखी, राज प्रिय। सूर्य बुध—सदा शत्रु वृद्धि। सूर्य गुरु—पिता प्रिय, धनवान्। सूर्य शुक्र—रोगी, सूर्य शनि—रोगी, पिता को कुक्षि रोग।

चन्द्र मंगल—दानी, माता विरोधी, चन्द्र बुध—वक्ता, शास्त्रज्ञ, चन्द्र गुरु—गंभीर बुद्धि, धनी, चन्द्र शुक्र—कुलटा पति, चन्द्र शनि—निर्गुणी, धर्म हीन।

मंगल बुध—शास्त्री, भोगी, मंगल गुरु—धनी पूज्य, मंगल शुक्र—द्विभार्या वादी, विदेश वासी, मंगल शनि—धर्म हीन।

बुध गुरु—चतुर विद्वान् धनी, बुध शुक्र—रीति प्रिय, गायक, पंडित, बुध शनि—रोगी, धनी, प्रिय वक्ता।

गुरु शुक्र—दीर्घायु, धनी, गुरु शनि—रत्न का व्यापारी, शुक्र शनि—राज-सम्मान सुखी।

१०—नवम भाव मे ग्रह उच्च में या अपने वर्ग में हो तो निम्न फल होता है:—

सूर्य—राज चिह्नों के क्रय-विक्रय से, कृषि, नौकरी, दुर्जन कर्म, लिखने पढ़ने का काम, डाक्टरी, वैद्यक, रुपया बांटने का काम, घूम-घूम कर क्रय विक्रय से, विवाद सम्बन्ध से, प्रेत कार्य, भ्रातृ कलह सम्बन्धी आदि कार्य से लाभ हो।

चन्द्र—शंख के क्रय-विक्रय, अन्य स्त्री-संसर्ग से, राजा की मित्रता से, कृषि, वस्त्र, विप्र विरोध आदि कार्य से लाभ हो।

मंगल—स्वर्ण सम्बन्धी, विजय सम्बन्धी, मित्र, बन्धु विवाद, शत्रु कर्म, बल कार्य से लाभ।

मूल त्रिकोण में हो तो—कृषि या राजा से लाभ, एक गृही में हो तो—स्वर्ण वस्त्र से लाभ, मित्रगृही में हो तो—अन्न लाभ, शत्रु गृही में हो तो—अग्नि द्वारा, गुल्म

संग्रहणी कुष्ठ आदि रोग से धन नाश, क्रूर वृत्ति करता है।

शनि—मंगल के अनुसार।

बुध उच्च का—अध्यापक के कार्य से लाभ।

बुध शत्रुगृही—मुकदमा द्वारा, किसी से लाभ।

बुध मित्रगृही—लेखक कार्य, शिल्प कार्य, वस्त्र, स्वर्ण, धनी स्त्री से लाभ।

बुध अति शत्रु राशि—विद्या हीन, व्यापार हानि, कुष्ट तथा पथरी रोग।

स्वषोड़शांश में—बन्धु विवाद से, नौकरी से कुशलता तथा धन धान्य आदि का लाभ।

गुरु उच्च का या स्ववर्ग में—प्रतापी, गुणी, धनी, किसी संस्था का प्रधान।

गुरु उच्च का शत्रुराशि में—द्रव्य नाश, पराजय।

गुरु मित्रगृही राशि में—अध्यापक।

गुरु अतिमित्रगृही—पुत्र स्त्री मित्रादि एवं विवाह सम्बन्धी कार्य से लाभ।

शुक्र उच्च का स्ववर्ग का—राज कार्य, सेनाध्यक्ष, मंत्री, शिक्षा सम्बन्धी कार्य, यज्ञ कार्य से लाभ।

स्वगृही हो—नौकरी से, सेनाधिकारी, कृषि और विद्या से, जलाशय से लाभ।

१०–दशम भाव का फल

१—यह कर्म स्थान है अच्छा बुरा कर्म, धंधा, नौकरी, अधिकार, सन्मान, मान्यता, हाथ का किया कर्म, कीर्ति, पितृ सुख, यज्ञ आदि का इससे विचार होता है।

२—चतुर्थ और दशम भाव भी सुख संज्ञक है।

३—सत्कर्मी प्रसिद्ध दीर्घजीवी आदि–दशम में शुभ ग्रह हों और दशमेश पूर्ण बली होकर केन्द्र या कोण में हो और अपने स्वस्थान या उच्च में हो या लग्नेश दशम में हो तो उसका सब मान करे, अति प्रसिद्ध हो सदा सत्कर्म करने की ओर झुकाव रहे, राजा सदृश भाग्य हो और दीर्घजीवी हो।

४—शुभ कर्मी क्रूर कर्मी–दशम में शुभ ग्रह हो तो वह भलाई युक्त कुछ शुभ कार्य करेगा। यदि शनि राहु या केतु हो तो वह पाप युक्त और क्रूर कर्म करेगा।

५—दरिद्र–दशम में कोई ग्रह न हो तो दरिद्र दोष होता है।

६—प्रतापी धैर्यवान्–यदि दशमेश सुस्थित हो तो वह अपने प्रताप और बाहुबल से धर्म युक्त कार्य पूरा करने में समर्थ होगा।

७—लोक प्रिय महत्वशील–दशम में सूर्य या मंगल हो तो वह बड़ा और महत्त्व का पुरुष होता है जो सबको प्रिय हो।

८—इस प्रकार दशमस्थ राशि ग्रह व दशमेश और ग्रहों की दृष्टि स्वभाव बल आदि पर विचार कर दशम भाव सम्बन्धी समस्त बातों को उनके कारक पर से विचारना।

११—लाभ स्थान का फल

१—इससे अनेक प्रकार के लाभ, द्रव्य लाभ, आशा, इच्छा, हाथी घोड़े आदि वाहन का ऐश्वर्य, मित्र व मित्र सुख का विचार होता है। विशेष कर इससे लाभ और धन संग्रह का विचार होता है।

२—अत्यन्त लाभ—लग्नेश यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्री, मित्र गृही, मूल त्रिकोणगत, राज्य कारक, भाग्य कारक ग्रहों से दृष्ट हो तो अत्यन्त लाभ हो।

३—भ्रातृ वृद्धि—बलवान् लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो भ्राताओं की वृद्धि होती है। नीच, अस्तगत, दुःस्थान स्थित होकर क्रूर ग्रहों से संयुक्त हो तो भ्रातृ का अभाव जानना। इससे भाव फल की हानि होती है।

४—३-६-११ भाव में पाप ग्रह (सूर्य मंगल शनि राहु केतु या पाप युक्त बुध और क्षीण चंद्र) हो तो अच्छे होते हैं और अच्छा फल देते हैं। इससे ११ भाव का अच्छा फल कहा है। यदि लग्नेश पाप युक्त या बुरे वर्ग में हो तो उसकी भलाई करने की शक्ति कम हो जाती हैं परन्तु पाप ग्रह और शुभ ग्रह भी लाभ भाव में बलवान् होते हैं।

५—उचित या अनुचित रीति से धनोपार्जन—लाभ भाव में पाप ग्रह हो तो अनुचित रीति से यदि शुभ ग्रह हो तो उचित और ईमानदारी से धन उपार्जन करेगा।

६—शुभ फल—लग्नेश शुभग्रह हो बली ग्रह हो या लाभ में शुभ ग्रह या बली ग्रह हो तो भावोक्त फल शुभ होते हैं।

नीच राशि, शत्रु राशि, नीच नवांश, शत्रु नवांश में स्थित ग्रह अच्छा फल नहीं देता।

अपने अपने षडवर्ग बल से युक्त ग्रह लाभ में हों या शुभ ग्रहों के षड़वर्ग में हों या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हों तो अति लाभ होता है।

७—राजा हो—एक भी ग्रह षड़वर्ग शुद्ध होकर समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो राजा हो।

८—किस प्रकार लाभ होगा—लाभ भाव में जैसे वर्ण वाला ग्रह हो उस वर्ण के समान वस्तु का उस वर्ण के समान मित्रों आदि द्वारा लाभ, धन तथा सुख होगा।

९—संतान का विचार—पंचम भाव के अनुसार लाभ भाव से भी निश्चय पूर्वक कन्या सन्तान, मृत सन्तान, निःसन्तान या पुत्र नाश इन सब बातों का विचार होता है। अर्थात् पंचम भाव में जो फल का विचार होता है इससे भी वही विचारना।

१०—वाहन युक्त राज्य लाभ—लाभ भाव में बैठे सब ग्रह राज्य लाभ का भी फल देते हैं। यदि लाभ में शुभ ग्रह हो तो उसके यहाँ हाथो घोड़ों आदि की कतार लगी रहे सदा अच्छे काम करने की इच्छा रहे।

११—लाभ भाव में ये ग्रह हों या इनको दृष्टि हो या इनका षड़वर्ग हो तो फल—

सूर्य—राजा से या चोरों के कुल से या मुकदमा में किसी की डिगरी आदि कराने से या चौपाये पशुओं द्वारा बहुत प्रकार धन प्राप्ति हो।

चन्द्र—जलाशय, स्त्री, हाथ, घोड़े की वृद्धि युक्त हो पूर्ण चंद्र में यह फल हो। क्षीण चंद्र हो तो विपरीत फल हो, धन आदि का इनके द्वारा नाश हो, पूर्ण चन्द्र में इनके द्वारा धन लाभ हो।

मंगल—उत्तमोत्तम आभूषण, मणि सुवर्ण प्राप्ति, विचित्र यात्रा करने वाला, बड़ा साहसी, नाना कलाओं से युक्त, कोमल बुद्धि या अग्नि शस्त्र आदि सम्बन्ध से धन लाभ हो परन्तु कुछ कष्ट से लाभ हो।

बुध—अनेक कविता करने से, बहुत कलाओं के जानने से, कारीगरी के कामों से, लिखने के काम से, उत्तम साहस से, अनेक उद्यमों से, वणिकजनों की मित्रता द्वारा और कवि मनुष्यों से धन प्राप्त हो या घोड़ों के व्यापार से धन लाभ हो।

गुरु—यज्ञ क्रिया करने वाला, साधुजनों का संग करने वाला, राजा का कृपापात्र होने से उसके आश्रय में रहने वाला, सुवर्ण प्रधान धन से युक्त।

शुक्र—वेश्या जनों के द्वारा या परदेश आने-जाने से सोना, चाँदी, मोती आदि की खूब प्राप्ति होती है।

शनि—नीले रंग की वस्तु, लौह भैंस, हाथी आदि द्वारा लाभ हो और ग्राम नगर के मनुष्यों के बीच पूर्ण बड़प्पन पाता है। शुभ ग्रह से-सब प्रकार का लाभ होता है।

१२—नवम भाव के ग्रह के अनुसार भी लाभ का विचार होता है यह विचार नवम भाव में दे चुके हैं।

१२—द्वादश व्यय भाव का फल

१—इससे सब प्रकार का खर्च, कैद, गुप्त शत्रु, गुप्त विद्या, अध्यात्म विद्या और मोक्ष आदि का फल जाना जाता है।

२—किसमें खर्च-व्ययेश और व्ययस्थ ग्रहों में जो बली हो और भाव कारक हो इन सबका विचार करने से प्रगट होगा कि किस भाव में या किस व्यापार में धन व्यय होगा।

व्यय भावेश के साथ जिस प्रकार शुभ या अशुभ ग्रह हो या वह जैसे स्थान का स्वामी हो उसके अनुसार शुभ या अशुभ मार्ग से व्यय होगा। इसमें स्वगृही उच्च मित्रक्षेत्री आदि ग्रह का फल पुष्ट होगा नीच, अस्त शत्रु गृही आदि ग्रह हो तो तुच्छ फल होगा।

३—दुष्ट कार्य में खर्च-व्ययेश नीचगृही, क्रूर या शत्रु ग्रहों से युक्त हो या स्वयं क्रूर ग्रह हो तो जातक दुष्ट स्थान में दुष्ट कार्य में व्यय करता है। वह निंदित दरिद्र और दुःखी भी होता है।

मितव्ययी सुखी—व्ययेश शुभ ग्रह हो, शुभ स्थान गत हो, व्यय में शुभ ग्रह हो और नवम दशम स्थान से भी सम्बन्ध हो तो जातक मितव्यय करता है और सुखी रहता है।

कृषकधर्मी नेत्र रोगी—व्यय में शुभग्रह हो तो त्यागी, कृषक और धर्मात्मा हो। व्यय में पापग्रह हो तो विवादी, वात व्याधि के कारण नेत्र रोगी चपल और घूमने वाला हो।

पुरुष या स्त्री सम्बन्धी खर्च—व्यय में पुरुष ग्रह हो तो पुरुष सम्बन्धी कार्य में, यदि स्त्री ग्रह हो तो स्त्री सम्बन्धी कार्य में खर्च होगा।

शुभ या अशुभ कार्य में खर्च—व्यय में शुभग्रह हो, व्ययेश शुभ युक्त या शुभ दृष्ट हो तो शुभ काम में खर्च, यदि पापयुक्त पापदृष्ट हो तो अशुभ काम में खर्च होगा।

किस सम्बन्ध में खर्च—व्ययेश जिस भाव में हो तथा जिस–जिस भाव पर दृष्टि डालता हो उसी भाव सम्बन्धी खर्च होगा।

कंजूस—व्ययेश लाभ में हो तो कृपण हो।

मुक्ति या अन्धकार—व्यय में शुभग्रह हो या शुभ की दृष्टि हो तो मुक्ति प्राप्त करे या पापयुक्त या पापदृष्टि हो मृत्यु के बाद अन्धकार में प्रवेश करे।

मृत्यु सम्बन्धी खर्च—अष्टमेश व्ययेश के योग से मृत्यु सम्बन्धी खर्च होगा।

तीर्थ में खर्च—नवम में शुभग्रह हो व्ययेश की दृष्टि और लग्नेश की दृष्टि या युति हो तो तीर्थयात्रा विषयक खर्च होगा।

धन संग्रह—व्यय में पूर्ण बली चन्द्र बुध गुरु और शुक्र में से कोई हो तो धन संचय की व्यवस्था करते हैं।

धननाश—व्यय में शनि हो मंगल से युत या दृष्ट हो तो धन नष्ट हो।

राजा का धन हो—व्यय में सूर्य या क्षीण चन्द्र या दोनों हों, या मंगल से दृष्ट हो तो उसका धन राजा छुड़ा लेवे।

शत्रु या रोग में खर्च—षष्ठेश और व्ययेश का पुत्र माता पिता भाई आदि के कारक ग्रहों या भावों से सम्बन्ध हो तो शत्रु या रोग द्वारा खर्च हो।

पुत्र कार्य विद्या आदि में खर्च—पंचमेश, व्ययेश, लग्नेश और गुरु का शुभ सम्बन्ध होने से पुत्र कार्य या विद्या कार्य, परोपकार या धार्मिक कार्यों में खर्च हो।

नेत्र कष्ट—व्यय में सूर्य शुक्र लग्नेश इनमें २ या ३ ग्रह हों तो नेत्र में रोग हो।

बीमारी में खर्च—अष्टमेश व्यय में हो तो बीमारी अच्छी करने में खर्च हो।

वाणी से अपकीर्ति—व्यय में बुध हो तो अपनी वाणी के कारण अपकीर्ति हो।

बड़प्पन या सरकारी काम में खर्च—दशमेश व्यय में हो तो सरकारी काम में या अपने बड़प्पन में पैसा खर्च करे।

असावधानी से अड़चन—व्यय में मंगल हो तो बहुत सावधानी से कोई काम या व्यापार करना चाहिए नहीं तो असावधानी होने से अड़चन में फँस जाना पड़ेगा।

वाहन में खर्च—जिस प्रकार चौथे भाव से वाहन का विचार होता है वे योग व्यय भाव से भी विचारना। वाहन योग होने से वाहन में खर्च होगा।

दुष्ट स्वभाव—व्यय में सूर्यादि पापग्रह हों तो उसका दुष्ट स्वभाव हो, दुःखभोग अधिक खर्च करे। नेत्र विकार हो।

चंद्र कुंडली का फल विचार

चन्द्र के स्थान से पृथक्-पृथक् स्थानों में ग्रह फल विचार।

१—सूर्य का फल

(चन्द्रमा से स्थान का विचार कर)।

१—सूर्य चन्द्र एक साथ-परदेश में रहने वाला, भोगी, कलह में मन।

२—द्वितीय में सूर्य-अनेक भृत्य रखे, बड़ा यशस्वी, राजमान्य।

३—तृतीय स्थान में सूर्य-सुवर्ण का चाहने वाला, पवित्र राजा के तुल्य, अधिक जनों का स्वामी।

४—चतुर्थ में सूर्य-मातृहंता और उसकी भक्ति न करने वाला।

५—पंचम में सूर्य-कन्याओं के निमित्त दुःख पाने वाला, बहुत पुत्र।

६—षष्ठ में सूर्य-शत्रुओं को जीतने वाला, शूरवीर, क्षत्रिय के कर्म में निरत।

७—सप्तम में सूर्य-सुन्दर भार्या, सुशील आचरण, राजा से सत्कार, तपस्वी।

८—अष्टम में सूर्य-सदा क्लेशकारी, अति रोगों से पीडित।

९—नवम में सूर्य-धर्म करने वाला, सत्यभाषी, भाई बन्धुओं से द्वेष करने वाला।

१०-दशम में सूर्य-द्वार पर बड़े धनवान् खड़े रहें।

११-लाभ में सूर्य-राज गर्व वाला, बहुज्ञ, सर्वत्र प्रसिद्ध, कुल का स्वामी।

१२-व्यय में सूर्य-काना हो। लग्न से १२ वें सूर्य हो तो अंधा हो।

(२) मंगल का फल

१—प्रथम स्थान में-लाल नेत्र, रुधिर श्राव, विकार से युक्त, रक्त वर्ण।

२—द्वितीय स्थान में भूमि स्वामी, पुत्र खेती करे।

३—तृतीय स्थान में-चार भाई हों, बड़ा सुशील, सदा सुखी।

४—चतुर्थ स्थान में-सुख से रहित, महा दरिद्री, उसकी स्त्री मर जाती है।

५—पंचम स्थान में-पुत्रहीन। स्त्री के भी ये ही योग हों तो संतान का अभाव रहे।

६—षष्ठ स्थान में-अधर्म में फँस कर मनुष्यों से शत्रुता, सदा रोगों से पीड़ित।

७—सप्तम स्थान में-दुष्ट स्वभाव की स्त्री, दुर्वाक्य कहने वाली।

८—अष्टम स्थान में-जीवों को मारने वाला, महापापी, शील और सत्य से रहित।

९—नवम स्थान में-धनी, वृद्धावस्था में पुत्र हो।

१०-दशम स्थान में-द्वार पर हाथी घोड़े की भीड़ लगी रहे।

११-लाभ स्थान में-राज द्वार में प्रसिद्ध, यश रूप से सम्पन्न।

१२-व्यय स्थान में-माता को दुःखदायक, सदा कष्ट देने वाला।

(३) चंद्र स्थान से बुध का फल

१—प्रथम में बुध-सुख और रूप से हीन, दुष्टभाषी, मतिभ्रष्ट, स्थान भ्रष्ट।

२—द्वितीय में बुध-धनधान्य युक्त, बन्धु तथा धन की प्राप्ति, शीत के रोग से मरण।

३—तृतीय में बुध—अर्थ सम्पत्ति का कर्त्ता, राज्य तथा सत्संग का लाभ।

४—चतुर्थ में बुध—सुखी, मातृ पक्ष से महालाभ, सुखी जीवन।

५—पंचम में बुध—बुद्धिमान्, चतुर, रूपवान, कामी, कुवाक्य वाची।

६—षष्ठ में बुध—कृपण, कायर, विवाद से डरने वाला, शरीर के रोंगटे खड़े।

७—सप्तम में बुध—स्त्रियों के वश रहें, बड़ा कृपण, धनाढ्य, दीर्घायु।

८—अष्टम में बुध—शीत प्रकृति, राजाओं में प्रसिद्ध, शत्रु को भयदायक।

९—नवम में बुध—धर्म का विरोधी, अन्य धर्म में निरत, पुरुषों का विरोधी, महादारुण।

१०—दशम में बुध—राज योग वाला, अपने कुटुम्ब का स्वामी।

११—लाभ में बुध—क्षण-क्षण में लाभ, ग्यारहवें वर्ष में विवाह।

१२—व्यय में बुध—कृपण, पुत्र की कमी, जीत नहीं होती, सदा पराजय।

(४) चन्द्र स्थान से गुरु का फल

१—प्रथम में गुरु—जीने योग्य, व्याधि रहित, बड़ा शूर, सदा धन सम्पन्न।

२—द्वितीय में गुरु—राजा से मान प्राप्त, उग्र प्रतापी, धर्मात्मा, पाप रहित, आयु १०० वर्ष।

३—तृतीय में गुरु—स्त्रियों का प्रिय, उसके पिता के घर में १७ वर्ष में धन वृद्धि।

४—चतुर्थ में गुरु—सुख रहित, मातृपक्ष से महाकष्ट, अन्य का भृत्य।

५—पंचम में गुरु—दिव्य दृष्टि, तेजस्वी, पुत्रवती स्त्री, धनवान्, स्वयं महाउग्र।

६—षष्ठ में गुरु—उदासीन, घर से हीन, देशान्तर में भ्रमण, अधिक खर्च, भिक्षुक, व्यवस्था हीन।

७—सप्तम में गुरु—दीर्घजीवी, कम खर्च, पुष्ट देह, नपुंसक, पांडु रोगी, अनेक घर का स्वामी।

८—अष्टम में गुरु—रोगी, अच्छा पिता, महाक्लेश, स्वप्न में भी सुख नहीं।

९—नवम में गुरु—धर्मात्मा, धन से पूर्ण, सुमार्गगामी, गुरु और देव का भक्त।

१०—दशम में गुरु—पुत्र हीन, तपस्वी, स्त्री का त्याग करने वाला।

११—लाभ में गुरु—पुत्र राजा के समान, घोड़ों पर बैठने वाला।

१२—व्यय में गुरु—कुटुम्ब का विरोधी।

(५) चन्द्रमा से शुक्र का फल

१—प्रथम स्थान में शुक्र—जल में डूबकर मृत्यु, सन्निपात रोग, हिंसा से मृत्यु।

२—द्वितीय स्थान में शुक्र—महा धनवान्, ज्ञानी, राजा के तुल्य।

३—तृतीय स्थान में शुक्र—बड़ा धर्मात्मा, बुद्धिमान्, म्लेच्छ द्वारा धन लाभ।

४—चतुर्थ स्थान में शुक्र—कफ अधिक, अति दुर्बल अंग, वृद्धापन में धनहीन।

५—पंचम स्थान में शुक्र—कन्या संतान हो, धनाढ्य, यशहीन।

६—षष्ठ स्थान में शुक्र—खोटे खर्च से भय करने वाला, संग्राम में हारने वाला।

७—सप्तम स्थान में शुक्र—हीन पुरुषार्थ, क्षण-क्षण में शंका युक्त।

८—अष्टम स्थान में शुक्र—पवित्र, प्रसिद्ध, महायोधा, दाता, भोक्ता, महाधनवान्।

९—नवम स्थान में शुक्र—बहुत भाई, मित्र युक्त, बहुत बहिन।

१०—दशम स्थान में शुक्र—माता-पिता को सुखदाई, दीर्घायु।

११—लाभ स्थान में शुक्र—दीर्घायु, शत्रु व रोग से रहित।

१२—व्यय स्थान में शुक्र—पर स्त्री गामी, लम्पट, ज्ञान से हीन।

(६) चन्द्रमा से शनि का फल

१—प्रथम स्थान में शनि—प्राणांत दुःख, धन का नाश, बन्धु नाश।

२—द्वितीय स्थान में शनि—माता को कष्ट देने वाला, बकरी का दूध पीकर जीता है।

३—तृतीय स्थान में शनि—बहुत सन्तति होकर मर जाती है।

४—चतुर्थ स्थान में शनि—बड़ा पुरुषार्थी, शत्रुओं को मारने वाला।

५—पंचम स्थान में शनि—श्याम रंग की और प्रिय वचन कहने वाली स्त्री मिलती है।

६—षष्ठ स्थान में शनि—महा क्लेश कष्ट प्राप्त, अल्पायु।

७—सप्तम स्थान में शनि—धर्मात्मा, दानी, बहुत स्त्रियों का पाणिग्रहण करनेवाला।

८—अष्टम स्थान में शनि—पिता को कष्ट देवे, बहुत दान करने से शुभ होता है।

९—नवम स्थान में शनि—जब शनि की दशा आती है तब धन का नाश होता है।

१०—दशम स्थान में शनि—राजा के तुल्य, अति कृपण, धन से परिपूर्ण।

११—लाभ स्थान में शनि—देह में दुःख पाने वाला, महा कष्ट भोगे, अधर्मी।

१२—व्यय स्थान में शनि—धन हीन, भिक्षुक, धर्म से रहित।

(७) चन्द्र से राहु का फल

१—चन्द्र से प्रथम, नवम, दशम स्थान में राहु—वृद्धावस्था में राजा के समान धनी हो।

२—चन्द्र से द्वितीय, एकादश में—धन और मनुष्यों से युक्त होने पर भी कभी सुख न होवे।

३—चन्द्र से चतुर्थ, सप्तम में—माता पिता को अति कष्ट हों, स्वयं दुःखदाई होता है।

४—चन्द्र से पंचम में—क्षण क्षण में आपत्ति, जल से मृत्यु भय।

५—चन्द्र से छठे, बारहवें—राजा या राजा का मंत्री हो, धन धान्य से परिपूर्ण हो।

चन्द्र राशि के तुल्य लग्न राशि फल—जो चंद्र राशि के फल कहे हैं वह लग्न से भी कहना। दृष्टि फल भी लग्न के बराबर चन्द्र के भी कहना।

बुध का विशेष विचार—बुध शुभ ग्रह के साथ हो तो शुभ ग्रह जैसा फल देता है और पाप ग्रह के साथ हो तो पाप ग्रह जैसा फल देता है शुभ और पाप दोनों के साथ हो तो मिश्रित फल देता है।

चन्द्र का विशेष फल—पाप युक्त चन्द्र-माता का नाश करता है। पाप युक्त सूर्य-पिता का नाश करता है मिश्रित से मिश्रित फल होगा।

चन्द्रमा जन्म में शुभ युक्त हो तो—भूमि, यश, धन, कुल में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ कीर्ति, प्राप्त हो।

चन्द्र से केन्द्र में—गुरु, बुध, शुक्र में से कोई हो-स्वतंत्र जीवन व्यतीत करे।

चन्द्र से २-१२ घर मे—गुरु, बुध, शुक्र, में से कोई हो—स्वतन्त्र धन्धा करे।

चन्द्र से ३-११ घर में—गुरु शुक्र हो तो स्वतंत्र धन्धा करे या उच्च ओहदे पर रहे।

चन्द्र से दशम स्थान में भिन्न भिन्न ग्रहों का फल

१—सूर्य हो-सिद्ध कर्म, धनी, सात्विक गुण, राजा के तुल्य, दुष्टजनों का आश्रय।

२—मंगल हो-म्लेच्छदेश में वास, विषम स्वभाव, लोभी, क्रूर साहसी, चंडाल सम आचरण।

३—बुध हो-बहुत पुत्र, धर्म कार्य में रत, विद्वान्, कला जाननेवाला, धनी, पंडित, विख्यात।

४—गुरु हो-शुभ आचरण, विशुद्ध धन वाला, समृद्ध, धर्मात्मा, राजा व मंत्री हो।

५—शुक्र हो-सिद्ध कार्यकर्ता, धनवान्, सुन्दर, ऐश्वर्य सम्पन्न, राज पूजित।

६—शनि हो-व्याधि युक्त, दुःखी, निर्धन, बुद्धि हीन, कार्यों में नित्य उद्विग्न।

चन्द्र के अंग का फल

चन्द्र स्वनवांश, मित्र या अधिमित्र नवांश में हो, दिन का जन्म हो और गुरु की दृष्टि हो, रात का जन्म हो और शुक्र की दृष्टि हो तो सुखी और धनवान् होता है इसके विपरीत हो तो निर्धन या अल्प धन हो।

सूर्य के स्थान से चन्द्र का फल

सूर्य से चन्द्र—केन्द्र में हो तो-मूर्ख दरिद्री हो।

पणफर २-५-८-११ में-मध्यम फल।

आपोक्लिम ३, ६, ९, १२ में-उत्तम फल।

सूर्य से दशम में भिन्न-भिन्न ग्रहों का फल

दशम में चन्द्र हो-हिंसक, मंगल हो-क्षुद्र, बुध हो-कुकर्म कर्ता। गुरु हो-काम, रोगी, शुक्र हो-बहुत से शोक वाला, शनि हो-रक्षा कर्म करने वाला।

ग्रहांश कोष्ठक—(ग्रहांश के विचार से फल का समय)।

जन्म लग्न या जन्म राशि के अंशों पर से ग्रहों के राश्यन्तर होने पर वे कितने समय के बाद फल देंगे यह जानने का चक्र।

ग्रह की एक राशि ३०° भोगने में इतना समय लगता है तो १° भोगने में कितना समय लगेगा। यही गणित से निकाल कर चक्र में दिया है।

अंश	रवि बुध	शुक्र मंगल	गुरु	शनि	राहु केतु
	दिन	दिन	वर्ष मा. दिन	व. मा. दिन	व. मा. दिन
१	१	१॥	०–०–१३	०–१–०	०–०–१८
२	२	३	०–०–२६	०–२–०	०–१–६
३	३	४॥	०–१–९	०–३–०	०–१–२४
४	४	६	०–१–२२	०–४–०	०–२–१२
५	५	७॥	०–२–५	०–५–०	०–३–०
६	६	९	०–२–१८	०–६–०	०–३–१८
७	७	१०॥	०–३–१	०–७–०	०–४–६
८	८	१२	०–३–१४	०–८–०	०–४–२४
९	९	१३॥	०–३–२७	०–९–०	०–५–१२
१०	१०	१५	०–४–१०	०-१०-०	०–६–०
११	११	१६॥	०–४–२३	०-११-०	०–६–१८
१२	१२	१८	०–५–६	१-०–०	०–७–६
१३	१३	१९॥	१–५–१९	१-१–०	०-७-२४
१४	१४	२१	०–६–२	१–२-०	०-८-१२
१५	१५	२२॥	०–६–१५	१–३-०	०–९–०
१६	१६	२४	०–६–२८	१–४–०	०-९–१८
१७	१७	२५॥	०–७–११	१–५–०	०–१०–६
१८	१८	२७	०–७–२४	१–६- ०	०-१०-२४
१९	१९	२८॥	०–८–७	१–७–०	०-११-१२
२०	२०	३०	०–८–२०	१–८–०	१–०–०
२१	२१	३१॥	०–९–३	१–९–०	१–०–१८
२२	२२	३३	०–९–१६	१-१०-०	१–१–६
२३	२३	३४॥	०–९–२९	१-११-०	१–१–२४
२४	२४	३६	०-१०-१२	२–०–०	१–२–१२
२५	२५	३७॥	०-१०-२५	२–१–०	१–३–०
२६	२६	३९	०–११–८	२–२–०	१–३–१८
२७	२७	४०॥	०-११-२१	२–३–०	१–४–६
२८	२८	४२	१–०–४	२–४–०	१–४–२४
२९	२९	४३॥	१–०–१७	१–५–०	१–५–१२
३०	३०	४५	१– –०	२–६–०	१–६–०

अध्याय १७

भावेश का भिन्न-भिन्न भावों में फल

(१) लग्नेश का फल भिन्न-भिन्न भावों में

१—लग्न में—दीर्घायु, अतिबली, बहुत भूमि का स्वामी, भूमि लाभ (मान०) ।

रोगहीन, दीर्घायु, बलवान्, दृढ़ शरीर, रूपवान्, प्रतिष्ठित (जा० सं०) ।

हृष्ट पुष्ट शरीर, पराक्रमी, मनस्वी, अति चंचल, २ पत्नी या अन्य रखेल स्त्री (वृ० पा०) ।

२—द्वितीय में—बड़ा धनवान्, दीर्घायु, बड़ा बली, राजा या भूमि लाभकर्ता, श्रेष्ठ, धर्म रक्षा में मन (मान०) ।

धनी, बड़ी आयु, सामर्थ्य, सत्कर्म परायण, स्थूल, स्थान प्रधान (जा० सं०) ।

धनी, सुखी, सुशील, विद्वान्, बहुत स्त्री वाला (वृ० पा०) ।

३—तृतीय में—बन्धुजनों और उत्तम मित्रों से युक्त, धर्म नाश करने में तत्पर, दानी शूरवीर, बलवान् (मान०) ।

अच्छे बांधवों व श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, धर्मात्मा, दानी, शूरवीर, बली (जा० सं०) ।

सिंह के समान पराक्रमी, सब सम्पत्ति से युक्त, मानी, दो स्त्रियों वाला, बुद्धिमान् और सुखी (वृ० पा०) ।

४—चतुर्थ में—राजा का प्रेमी, बड़ी भारी जीविका करने वाला, पिता से लाभ, माता पिता का भक्त, अल्प भोजी (मान०) ।

राजा का प्रिय, बड़ी आयु वाला, लाभ वाला, बहुत स्त्रियों से युक्त, माता पिता का भक्त (जा० सं०) ।

माता पिता से सुख पाने वाला, बहुत भाई वाला, कामी, गुण और रूप युक्त (वृ० पा०) ।

५—पंचम में—देव पितृ पूजक, सुन्दर पुत्र, स्वतः दान शील, धनी, संग्राम में प्रसिद्ध दीर्घायु, मान करने योग्य, अच्छे कर्म । (मान०) ।

पुत्र वाला, दानी, समर्थ, विख्यात, दीर्घायु, अच्छा शील, सत्कर्म (जा० सं०)

पुत्र का सुख मध्यम, ज्येष्ठ संतान का नाश, मानी, क्रोधी, राजा का प्रिय (वृ० जा०) ।

६—षष्ठ में—रोगहीन, भूमि लाभ, बलवान्, कृपण, धनाढ्य, शत्रुनाशक, सदाचारी, अच्छे कर्म (मान०) (जा० सं०) ।

देह सुख से हीन, पापयुक्त । शुभग्रह से दृष्ट न हो तो शत्रु से दुःखी रहता है (वृ० पा०) ।

७—सप्तम में लग्नेश—तेजस्वी, शोक करने वाला, स्त्री शीलवती, प्रज्वलित तेज वाली और रूपवती (मा०) (जा०) ।

यदि यह पाप ग्रह हो तो उसकी स्त्री का नाश। शुभग्रह हो तो भ्रमण करने वाला, दरिद्री, विरागी राजा होता है (जा० पा०)।

८—अष्टम में लग्नेश—कृपण, धन संग्रहकर्त्ता, दीर्घायु। लग्नेश पापग्रह हो तो काना। शुभ ग्रह हो तो सुन्दर रूप वाला हो (मा०)।

पाप ग्रह हो तो क्रूर स्वभाव, शुभ ग्रह हो तो सौम्य स्वभाव (आ० सं०)।

सिद्ध विद्या जानने वाला, रोगी, चोर, क्रोधी, जुआड़ी, परस्त्रीगामी (वृ० पा०)।

९—नवम में लग्नेश—बहुत भाई बन्धु, पुण्य कर्मा, सब का मित्र, सुशील, पण्डित, विख्यात, बड़ा तेजस्वी (मान०) (जा० सं०)।

भाग्यवान्, लोगों का प्रिय, विष्णु का भक्त, चतुर वक्ता, स्त्री पुत्र और धन युक्त (वृ० पा०)।

१०—दशम में-राजा से लाभ, बड़ा पण्डित, सुशील, गुरु माता पिता का पूजक, राजाओं में प्रसिद्ध (मान०)।

राजा का मित्र, पण्डित, सुशील, गुरुमाताओं का पूजक, राज समृद्ध पुरुष (जा० सं०)।

पिता से सुख पाने वाला, राज्यमान्य, विख्यात, अपने भुजबल से धनोपार्जन (वृ० पा०)।

११—लाभ में लग्नेश—सुख पूर्वक जीवन, पुत्र से युक्त, तेज युक्त, बलवान्, घोड़ा हाथी आदि वाहनों से युक्त (मान०)।

दीर्घजीवी, पुत्रवान्, विख्यात, तेज सम्पन्न हो तो ये फल, बल हीन हो तो-ये फल नहीं होते (जा० सं०)।

लाभ करने वाला, सुशील, विख्यात यश, उदार, गुणों से युक्त (वृ० पा०)।

१२—व्यय में लग्नेश—दुष्कर्म कर्ता, महापापी, नीच, सहगोत्रजनों के साथ मान करने वाला, विदेश वासी, कंगाल मनुष्यों को भात देने वाला (मान०)।

चतुर वाणी, कर्ण रहित, गोत्रजनों के साथ मेल न रखने वाला, विदेशी और धन भोक्ता (जा० सं०)।

देह सुख से हीन, व्यर्थ खर्च, महाक्रोधी, यदि शुभ ग्रह का योग या दृष्टि न हो। शुभग्रह के योग या दृष्टि से अशुभ फल अल्प होता है (वृ० पा०)।

लग्नेश का विशेष फल

१—लग्नेश से सौभाग्य का विचार करना।

२—लग्नेश बली हो तो सौभाग्य सम्पन्न हो, शरीर बलिष्ठ हो। लग्नेश बली हो शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो—स्वास्थ ठीक रहे, लग्नेश बली अर्थात् अच्छे स्थान में, अच्छी स्थिति में अच्छी दृष्टि युक्त या शुभ षड्वर्ग में हो तो महत्त्व का होता है।

मनुष्य के जीवन के सुख का विचार करने को लग्नेश का बल देखना चाहिए।

३—लग्नेश बलहीन हो उसमें पाप ग्रह हो—तो शरीर रोग से पीड़ित रहे।

४—लग्नेश या लग्न निर्बल या अस्त हो—तो उस भाव का सामान्य फल देगा।

५—लग्नेश शुभ ग्रह हो या लग्न में हो या लग्न को देखे—तो बिना क्लेश दीर्घायु हो और सुखी हो।

६—लग्नेश केन्द्र या कोण में हो या लाभ में हो—देह सुख कारक हो, रोग नाश हो रोगी न हो।

७—लग्नेश कोण या केन्द्र में हो, शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, बलवान् होकर शुभ ग्रह की राशिमें हो—तो भूमंडल में उसका यश फैले (जा० पारि०)।

८—लग्नेश केन्द्र कोण में प्रकाशित किरणों से युक्त हो अर्थात् अस्त न हो, उच्च या स्वगृही केन्द्र छोड़ कर अष्टमेश और कहीं हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह हो—तो दीर्घायु, धनी, माननीय, सतगुणी, राजा से प्रशंसित, भाग्यवान्, सुन्दर अंग, दृढ़ शरीर, निर्भय धार्मिक सत्कुटम्बी हो (फल०)।

९—लग्नेश उच्च, मित्र गृही, स्वनवांश आदि में हो और शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो—तो सदा देह सौख्य हो (स० चिं०)।

१०—लग्नेश शुभ ग्रह होकर या शुभ युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो पाप दृष्ट न हो तो सदा देह सौख्य हो (स० चिं०)।

११—लग्नेश अच्छे प्रकार सम्बन्वित हो—तो अच्छे ग्राम में या अच्छे साथियों से युक्त रहे जब सहयोगी ग्रह बली हो—तो बली राजा के आश्रय में रहे।

ग्रह यदि स्वस्थानी हो—तो अपने स्थान में रहे, ग्रह यदि चर राशि में हो—चलता रहे, ग्रह यदि स्थिर राशि में हो—एक स्थान में स्थिर रहे, ग्रह यदि द्विस्वभाव में हो—मिश्रित फल हो (फल०)।

१२—लग्नेश लग्न में बली हो—स्वशक्ति पर अवलंबित रहे अच्छी उन्नति करे शीघ्र प्रसिद्ध हो।

यदि वह बलहीन हो—दुःखित, शक्तिहीन, रोगी, विपत्ति से खिन्न हो (फल०)।

१३—चंद्रमा और शुक्र लग्नेश होकर चतुर्थ में—विशेष करके रौप्य, धन, अम्ब घर में सदा रहे (जा० सं०)।

१४—लग्नेश बुध गुरु या शुक्र केन्द्र त्रिकोण में हो—दीर्घायु, धनी, बुद्धिमान्, राजप्रिय हो (वृ० पा०)।

१५—लग्नेश जन्म में प्रकाशित किरणों वाला हो—तो जातक प्रसिद्ध हो, यदि अच्छे स्थान में हो—तो सुखी हो, दुःस्थान में, पापगृही या नीच में हो—तो पतित या नीच हो (फल)।

१६—लग्नेश पापयुक्त होकर दुःस्थान में हो—शरीर में सुख नहीं मिले। क्लेश कारक हो।

१७—लग्नेश ४-६-८-१२ घर मे हो—तों भी उपरोक्त फल।

१८—लग्नेश दुष्ट स्थान के स्वामी से युक्त हो या दुष्ट स्थानेश लग्न में हो—तो रोगी हो।

१९—लग्नेश जिस भाव में हो उसका स्वामी दुष्ट स्थान में हो—तो देह दुर्बल रहे और रोगी रहे (स० चि०)।

ऐसे ही अन्य भावेश के सम्बन्ध से विचारना। अर्थात् जिस भाव का स्वामी दुष्ट स्थान में हो उस भाव का फल नाश हो (स० चि०)।

२०—लग्नेश पापग्रह हो या चन्द्रमा लग्न में हो या दोनों योग हो तो—अति रोगी हो।

२१—लग्नेश अस्त शत्रुगृही या नीच में हो—रोग कारक (वृ० पा०)।

२२—लग्नेश पापयुक्त–शरीर सुख नष्ट।

२३—लग्नेश अष्टम हो तो भी उपरोक्त फल होगा परन्तु शुभग्रह की दृष्टि हो तो वैसा नहीं होता कुछ शुभ भी होता है (स० चि०)।

२४—लग्नेश पापयुक्त हो और लग्न में राहु हो-ठग चोरों का भय हो।

२५—लग्नेश शनि युक्त व दृष्ट हो–तो निश्चय ठग चोर या राजा से भय।

२६—अष्टम में लग्नेश राहु या केतु युक्त–उपरोक्त फल।

२७—लग्नेश जिस राशि के जिस अंश में हो उसका स्वामी यदि राहु मंगल केतु शनि से युक्त हो–तो उपरोक्त फल।

२८—लग्नेश मंगल लग्न में पापयुक्त या दृष्ट–पत्थर की चोट से या खड्ग आदि से व्रण (स० चि०)।

२९—लग्नेश निर्बल ग्रहयुक्त या निर्बल ग्रह के घर में–देह दुर्बल हो।

३०—लग्नेश निर्बल होकर अष्टम में तथा लग्न में निर्बल राशि हो–शरीर दुबला कष्ट युक्त रहे (स० चि०)

३१—लग्नेश जिस ग्रह के राशि अंश में हो वह निर्बल राशि हो या स्वयं निर्बल हो तो-शरीर सूखा रहे (स० चि०)।

३२—लग्नेश जल ग्रह हो और बली हो शुभ ग्रह युक्त हो तो–स्थूल शरीर हो।

३३—लग्नेश जल राशि में हो शुभ ग्रह युक्त हो जल ग्रह की उस पर दृष्टि हो तो–स्थूल शरीर हो।

३४—लग्नेश जिस राशि के अंशक में हो उसका स्वामी जल राशि में हो लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो तो–उपरोक्त फल (स० चि०)।

३५—लग्नेश बलवान् हो, सूर्य देवलोकांश में हो, भाग्येश उच्च राशि में हो तो–बहुत भाग्यवान्, कीर्तिमान् हो।

३६—लग्नेश बलवान् शुभ वर्ग में हो या स्वनवांश में शुभ ग्रह युक्त हो, केन्द्रेश लग्नेश के साथ हो तो–उत्तम भाग्य कीर्ति हो धन, अन्न की बढ़ती हो (स० चि०)।

३७—लग्नेश बलहीन होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो–बुरा स्वास्थ्य रहे (स० चि०)।

३८—लग्न में मांदि (गुलिक) हो और लग्नेश नीच में हो तो–५६ वर्ष में पुत्र शोक हो (वृ० पा०)।

३९—लग्नेश पारिजात में सुखी, वर्गोत्तम में निरोग, गौरपुर में—धन-धान्य पूर्ण, सिंहासन में—राजा हो, लग्नेश पारावत में—विद्वान्, लग्नेश देवलोक में—श्रीमान्, लग्नेश ऐरावत में—विख्यात और राजमान्य (वृ० पा०)।

४०—लग्नेश से १२ वें उसके उच्च स्थान या मित्र राशि हो, मित्र या उच्च ग्रह से दृष्ट हो या लग्नेश का मित्र ग्रह उसकी राशि में हो तो—उसकी स्थिति जन्म भूमि में हो (जा० पारि०)।

४१—लग्नेश से १२ वें स्थान का स्वामी लग्नेश का शत्रु हो और यदि वह नीच में हो या निर्बल हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो—विदेश में जाय।

४२—लग्नेश से १२ वें स्थान का स्वामी सूर्य से अस्त हो तो उसी जगह रहे और छोटे ग्राम में निवास करे। यदि बलवान् हो तो शहर में निवास करे (जा० पारि०)।

४३—रमणीय भूमि में वास—लग्नेश से व्ययेश यदि लग्न से केन्द्र या कोण में हो अपने उच्च या मित्र ग्रह में हो उसके दोनों ओर शुभ ग्रह हो तो रमणीय भूमि में वास हो।

उदाहरण—यहाँ लग्नेश चंद्र लाभ में है। लाभ का व्ययेश यहाँ दशमेश मंगल है जो लग्न से त्रिकोण नवम में अपने मित्र गुरु के घर में है इसके दोनों ओर शुभ ग्रह गुरु और शुक्र हैं (जा० पारि०)।
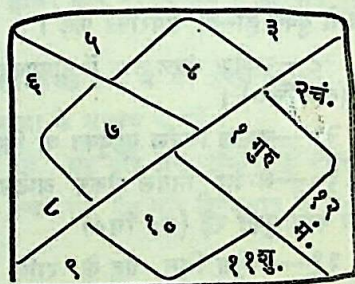
४४—जन्म भूमि में वास, तीर्थ आदि दिव्य स्थान प्राप्त—यदि उसके दूसरे या छठे स्थान पर गुरु चंद्र या शुक्र की दृष्टि हो तो जन्म भूमि में वास करे और दिव्य स्थान तीर्थ आदि प्राप्त हो (जा० पारि०)।

४५—स्वदेश में भाग्य—लग्नेश स्थिर राशि में हो, लग्न स्थिर हो स्थिर ग्रह युक्त हो तो अपने ही देश में भाग्योदय हो (स० चिं०)।

४६—मूर्ख—लग्नेश हीन बल, नीच अस्तगत आदि हो।

४७—सत्कीर्ति युक्त—लग्नेश दशम में उच्च का हो। लग्न में सूर्य शुभ ग्रह युक्त हो।

४८—दीर्घायु, धनी आदि—लग्नेश शुभ ग्रह युक्त उच्च का केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या दशमेश से युक्त हो तो उत्तम ऐश्वर्य उत्तम कीर्ति दीर्घायु धन युक्त हो (स० चिं०)।

४९—दीर्घायु धनी गुणी—लग्नेश अति बलवान् हो, पाप ग्रह की दृष्टि न हो, केन्द्र में हो, शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मृत्यु को हटा कर दीर्घायु करता है। श्रेष्ठ लक्ष्मी युक्त गुणवान् हो। (स० चिं०)।

५०—दीर्घायु सुखी निरोग—लग्नेश तथा गुरु केन्द्र में हो। केन्द्र त्रिकोण और अष्टम में पाप ग्रह न हो-तो अनेक सुख भोग करे, पुण्यकर्मा हो निरोग रह कर १०० वर्ष की आयु पावे (स० चिं०)।

५१—अल्पायु आदि—लग्नेश से अष्टमेश अधिक बली हो, केन्द्र, अष्टम, छठे स्थान में पाप ग्रह हो तो अल्पायु या मध्यम आयु होवे, अनेक संकट भोगे।

५२—३० वर्ष बाद सुख—लग्नेश जिस नवांशक में है उसका स्वामी केन्द्र त्रिकोण या उच्च में हो वैसे ही लाभेशसे भी युक्त हो तो ३० वर्ष के बाद सुख मिले (स० चिं०)।

५३—२० वर्ष बाद सुख—लग्नेश या जिस अंशक में लग्नेश है उसका स्वामी दूसरे भाव में हो या ऐसा ही लाभेश भी हो तो २० वर्ष बाद सुख मिले (स० चिं०)।

५४—१६ वर्ष बाद सुख-लग्नेश शुभ ग्रह की राशि में हो उसे शुभ ग्रह देखे या गोपुरांश में हो तो १६ वर्ष के पश्चात् सुखी हो (स० चिं०)।

५५—जीवन भर सुखी—लग्नेश वर्गोत्तमांश में या उच्चांशक में व मित्र द्रेष्काण में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जीवन पर्यन्त सुखी रहे (स० चिं०)।

५६—दुःख के बाद सुख-लग्नेश उत्तमांश में हो, लग्न में शुभ ग्रह हो, धन स्थान में पाप ग्रह हो, केन्द्र में भी पाप ग्रह हो तो प्रथम दुःख पीछे सुख (स० चिं०)।

५७—बाल्यावस्था में सुख—लग्नेश उत्तमांशमें हो लग्न में पाप ग्रह धन स्थान में शुभ ग्रह तथा नवम स्थान में कोई शुभ ग्रह हो तो बाल्यावस्था में सुख मिले अन्यथा नहीं मिले (स० चिं०)।

५८—यशस्वी धनी—लग्नेश चर राशि में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो—यशस्वी धनी, भोगी और सुखी हो (वृ० पा०)।

५९—मुख में व्रण—लग्नेश मंगल या बुध की राशि में किसी भाव में बुध से युक्त व दृष्ट हो तो मुख में व्रण हो (वृ० पा०)।

३०—लग्नेश और षष्ठेश—यदि चन्द्र के होरा द्रेष्काण नवांश व द्वादशांश में हो—जल में डूबने का भय। यदि बुध के होरा द्रेष्काण नवांश व द्वादशांश में हो—वात व्याधि, कष्ट। यदि शनि के होरा द्रेष्काण नवांश व द्वादशांश में हो—सन्निपात आदि व्याधि। यदि शुक्र के होरा द्रेष्काण नवांश व द्वादशांश में हो—वीर्य विकार (त्रि० ज्यो०)।

(२) भिन्न-भिन्न भावों में धनेश का फल

१—लग्न में धनेश—बड़ा कृपण, व्यवसाय करने वाला, सत्कर्मी, धनवान्, धनी होने से प्रसिद्ध, अनेक भोगों का भोगने वाला (मान०) (जा० सं०)। पुत्रवान्, कुटुम्बियों का विरोध, कामी, निठुर, परकार्य कर्ता (वृ० पा०)।

२—धन में धनेश-व्यवसाय करने वाला, उत्तम लाभ, उत्तम वस्तुओं का भोगी, प्रासंगिक बातों को सत्य करने वाला, बड़ा नीच, सत्यवादी, प्रसिद्ध, बड़ा उद्वेगी (मान०)। धर्म कर्म में तत्पर, धनी, लाभ से पूर्ण, लोभी, दानी (जा० सं०)। शुभ युक्त या

दृष्ट हो तो धन वृद्धि । अपनी राशि को छोड़ कर अन्य राशि में हो, चन्द्रमा क्षीण हो, पाप से युक्त व दृष्ट हो तो धन हरण हो । (जातकसार) ।

धनी, गौरव युक्त, दो या अधिक स्त्री किंतु पुत्र हीन (वृ० पा०) ।

३—तृतीय में धनेश—भाई बंदों से भेद भाव रहित, यह शुभ ग्रह हो तो राजा से वैमनस्य हो । धनेश मंगल हो तो अवश्य चोर हो (मान०) । व्यवसाय रखने वाला, कलह कर्ता, बल हीन, चोर तथा चंचल धन वाला, विनय तथा न्याय से हीन (जा० सं०) । शुभ ग्रह से युक्त हो तो पराक्रमी, बुद्धिमान्, गुणी, कामी, लोभी । पापयुक्त हो तो देवनिंदक (नास्तिक) हो (वृ० पा०) ।

४—चतुर्थ में धनेश—पिता द्वारा पूर्ण लाभ, वक्ता, प्राणियों पर दया भाव, दीर्घायु । धनेश क्रूर ग्रह हो तो मृत्यु देवे (मान०) । पिता से लाभ, उद्योग कर्ता, दीर्घायु । पाप ग्रह हो तो मरण (जा० सं०) । सब सम्पत्ति से युक्त । यदि गुरु से युक्त या अपने उच्च में हो तो राजा या राजा तुल्य हो (वृ० पा०) ।

५—पंचम में धनेश—पुत्र प्रफुल्लित, कठिन से कठिन कार्य करने में प्रसिद्ध, अति कृपण, दुःख का भोगी (मान०) । सदा विलासी, नेत्रों से युक्त, कठिन कार्य में वर्तमान, विख्यात, कृपण और दुःख नाशक (जा० सं०) । धनी, पुत्र भी धनोपार्जन करने वाला (वृ० पा०) ।

६—षष्ठ में धनेश—धन संग्रह करने में तत्पर, शत्रुओं को मारने वाला । धनेश शुभग्रह हो तो भूमि का लाभ हो, पापग्रह हो तो धन हीन करे (मान०) । धन संग्रह करने में निपुण, कृतघ्न, पृथ्वी का स्वामी (जा० सं०) । शुभग्रह से युक्त हो तो शत्रु से धन लाभ । पाप युक्त हो तो शत्रु के द्वारा हानि तथा कमजोर जांघ वाला (वृ० पा०) ।

७—सप्तम में धनेश—बड़े गौरव युक्त किसी कार्य को करे । श्रेष्ठ गुणवती, धन संग्रह करने वाली, क्रीड़ा करने वाली स्त्री मिले, क्रूर ग्रह हो तो स्त्री वंध्या हो (मान०) । श्रेष्ठ स्त्री के साथ भोग विलास, धन संग्रह करने वाली स्त्री हो, पापग्रह हो तो स्त्री वंध्या हो (जा० सं०) । परस्त्री गामी, वैद्य । पाप योग या दृष्टि हो तो स्त्री व्यभिचारिणी हो । (वृ० पा०) ।

८—अष्टम में धनेश—अष्टकपाली अर्थात् मुर्दा की खोपड़ी लेकर भीख मांगने वाला, आत्मघात करने वाला, इच्छा प्राप्त वस्तुओं को भोगने वाला, विलासी, दूसरे के धन को चुराने वाला, हिंसक, भविष्य को मुख्य मानने वाला (मान०) । थोड़ा कलह वाला, आत्मघाती, उत्पन्न हुए भोग भोगने वाला, विलासी, हिंसक, सदा प्रारब्धवश (जा० सं०) । बहुत भूमि और धन से युक्त हो । स्त्री सुख अल्प, बड़े भाई से सुख नहीं होता (वृ० पा०) । सट्टा लाटरी, वसीयत नामा आदि से अकल्पित लाभ ।

९—नवम में धनेश—दानी, क्रूर ग्रह हो तो दरिद्री, भिक्षुक, प्रत्येक कार्य में उपहास प्राप्त (मान०) । शुभ ग्रह हो तो विख्यात दानी । पाप ग्रह हो तो दरिद्र, भिक्षुक तथा ठग (जा० सं०) । धनी उद्योगी, चतुर, बाल्यावस्था में दुःखी पीछे सुखी तथा तीर्थ व्रत करने वाला ।

१०—दशम में धनेश–राजाओं का मान्य, राजा से लक्ष्मी प्राप्त। शुभग्रह हो तो माता पिता का पालन कर्ता (मान०) राजाओं का मान्य तथा राजा हो। शुभग्रह हो–माता पिता का पालक, कामी, मानी, पंडित, बहुत स्त्री और धन से युक्त किंतु पुत्र सुख से हीन।

११—लाभ में धनेश–ग्रहों का जानने वाला, पक्षियों के व्योहार में प्रसिद्ध, लक्ष्मी का स्वामी, लोक समूह के पालन करने में सदा तत्पर या नामवर, (मा०)। व्योहार में निपुण, लक्ष्मी का पति, विख्यात, बहुतों का पालक, लोक में विख्यात (जा० सं०)।

सब प्रकार लाभ करने वाला, सदा उद्योगी, मानी, यशस्वी (वृ० पा०)।

१२—व्यय में धनेश–क्रूर हो तो महा कृपण, धन हीन। शुभ हो तो कभी हानि कभी लाभ (मान०)। अष्टकपाली, परदेश में समृद्धि वाला। पापग्रह हो—बुरे कर्म करने वाला, शुभग्रह हो तो संग्रह कर्ता (जा० सं०) साहसी, धन हीन, दूसरे के आश्रित जीवन, उसकी ज्येष्ठ संतति नहीं जीती। (वृ० पा०)।

(२) द्वितीयेश का विशेष फल

१—गुणी धनी आदि–द्वितीयेश लग्न में हो और शुभ ग्रह दूसरे में हो तो–गुणी, उन्नतिशील, कुटुम्बी हो, धनी, दूरदर्शी और सुमुख हो।

२—द्वितीयेश सूर्य से संबंधित हो तो जनता को अधिक सहायता पहुँचाने वाला हो ज्ञान और धन प्राप्त करे।

शनि से हो तो—उसकी विद्या अल्प हो वह क्षुद्र हो।

गुरु से हो तो—वैदिक धर्म शास्त्र में निपुण हो।

बुध से हो तो—अर्थ शास्त्र में चतुर।

शुक्र से हो तो—शृंगार सम्बन्धी कार्य में चतुर।

चंद्र से हो तो—काल के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान हो।

मंगल से हो तो—क्रूर कला और पिशुनता (चुगल खोरी) में निपुण।

राहु से हो तो—अस्पष्ट भाषी अर्थात् शुद्ध शब्द न बोल सके।

केतु से हो तो—असावधानी से चलने वाला, झूठ बोलने वाला (फल दी०)।

३—धनेश चन्द्र हो धन में हो–धन सम्बन्धी सूत्र प्रयोग व योग करने की विद्या आवे, गणित भी अच्छा आवे, लाल नेत्र, केश भूरे, चपल हो (प्रा० यो०)।

४—धनेश का नवांश–धनेश कहीं हो केवल जिस भाव के नवांश में वह हो वही अपने अधिकार प्रमाण से धन भाव में सब बातें देता है। या धन भाव में जो ग्रह हो वे फल देते हैं (प्रा० यो०)।

५—धन वृद्धि–धनेश धन भाव या त्रिकोण में हो तो धन वृद्धि हो, ६-८-१२ भाव में हो तो धन हानि हो (वृ० पा०)।

६—पूर्ण धन लाभ–धनेश केन्द्र में हो उससे त्रिकोण में लाभेश हो या गुरु शुक्र से युक्त हो तो पूर्ण लाभ होता है। (वृ० पा०)।

७—धनवान्-धनेश गुरु हो धन भाव में हो या मंगल के साथ हो तो धनवान् हो।

८—धनवान्-धनेश लाभ में या लाभेश धन में हो या वे दोनों केन्द्र त्रिकोण मे हों तो धनवान् हो (वृ० पा०)।

९—निर्धन-धनेश और लाभेश षष्ठ भाव में हो तथा धन भाव और लाभ भाव पाप युक्त हो तो निर्धन हो। (वृ० पा०)

१०—धन हीन-धनेश लाभेश दोनों अस्त या पाप युक्त हों तो जन्म से ही धन हीन हो (वृ० पा०)।

११—राज दंड से धन नाश-धनेश लाभेश दोनों ६-८-१२ भाव में हों, ११ में मंगल २ में राहु हो तो राज दंड से धन नाश हो (वृ० पा०)।

१२—धर्म कार्य में व्यय—धनेश शुभग्रह युक्त हो, लाभ में गुरु, धन भाव में शुक्र हो, व्यय में शुभग्रह हो तो धर्म कार्य में व्यय हो।

१३—परोपकारी विख्यात—धनेश यदि स्वगृही या उच्च में हो तो परिवार पालक, परोपकारी और विख्यात हो (वृ० पा०)।

१४—सम्पत्ति प्राप्त-धनेश पारावतांशादि शुभवर्ग में हो या शुभग्रह युक्त हो तो उसके घर में विना प्रयत्न के ही सब सम्पत्ति का आगमन हो (वृ० पा०)।

१५—सुलोचन-धनेश (नेत्र भाव पति) बली और शुभ युक्त हो तो सुलोचन हो।

१६—नेत्ररोगी-धनेश ६–८–१२ में हो तो नेत्र रोगी हो (वृ० पा०)

१७—रोगी असत्यवक्ता-धनेश या धन भाव यदि पापग्रह युक्त हो तो वह चुगुलखोर असत्यवक्ता और वात रोगी हो (वृ० पा०)।

१८—नेत्र रोगी-धनेश शुक्र से युक्त या शुक्र के घर में या त्रिक स्थान में हो चाहे इनसे कोई संबंध हो तो नेत्रों से विपरीत भाव होता है, अपने उच्च या स्वगृही ग्रह हो तो यह दोष नहीं होता, ६–८–१२ स्थानों को छोड़कर अत्यन्त शुभ होता है।

(३) तृतीयेश का प्रत्येक भाव में फल

१—लग्न में तृतीयेश-बातचीत करने में प्रत्येक से झगड़ा करने वाला (मान०)। वचनविवादी, लम्पट, स्वजनों का भेदन कर्ता, सेवाकर्ता, बुरे मित्र, क्रूर (जा० सं०)। स्वयं धन उपार्जन करने वाला, सेवा जानने वाला, साहसी, विना पढ़ा लिखा भी बुद्धिमान् होता है। (वृ० पा०)।

२—धन में तृतीयेश-पापग्रह हो-भीख मांगने वाला, दरिद्र, अल्प जीवन, स्वकुटुम्बियों से विरोध करने वाला। शुभग्रह हो तो धनाढ्य (मान०)। यदि पापग्रह हो भिक्षुक, निर्धन, अल्पायु, बंधु विरोध कर्ता। शुभग्रह हो तो वह बली तथा शक्तिशाली हो (जा० सं०)। स्थूल देह, बलहीन, थोड़ा कार्य आरम्भ करने वाला, सुखहीन, परस्त्रीगामी (वृ० पा०)।

३—तृतीय में तृतीयेश—सतगुणी, अच्छे मित्र, श्रेष्ठ कुटुम्बी, देवगुरु जनों का सेवक राजा से लाभ करने वाला (मान०)। पुरुषों के समान पराक्रम, सबका मित्र, देवगुरु

जनों का पूजक, शुभाचार, राजा से लाभ (जा० सं०)। सहोदर से सुखी, धन पुत्र से युक्त, अधिक सुखभोगी (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में तृतीयेश—पिता तथा भाई बंदों के साथ सुख भोगने वाला, माता के साथ वैर करने वाला, पिता के धन का नाशक (मान०)। पिता को आनन्द और सुख-कर्ता। माता पिता का उदय कर्ता। माता के साथ वैर, पिता का धन भक्षण करने वाला (जा० सं०)। सुखी धनी, बुद्धिमान्, दुष्ट स्त्री का पति (वृ० पा०)।

५—पंचम में तृतीयेश—पुत्र, भाई बंदों के पुत्र और सहोदार द्वारा पालन करने लायक, दीर्घायु, परोपकार में बुद्धि (मान०)। अच्छे बांधवों वाला, सहोदर भ्राताओं से पाला जाने वाला, बड़ी आयु वाला, पर जनों का उपकार कर्ता (जा० सं०)। पुत्रवान् गुणी, यदि पापयुक्त हो तो दुष्ट स्त्रो का पति हो (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में तृतीयेश—भाई बंधुओं का विरोधी, नेत्र का रोगी, अकस्मात् भूमि लाभ, रोग व्याप्त (मान०) (जा० सं०)। भाई से शत्रुता करने वाला, बड़ा धनी, मामा से शत्रुता और पापो से प्रेम करने वाला (वृ० पा०)।

७—सप्तम में तृतीयेश—सुशोला, सौभाग्यवतो स्त्री हो, क्रूर ग्रह हो तो देवर के घर में रहने वाली हो (मान०)। राजा का सेवक, बाल्यावस्था में दुःखी, अंत में सुखी (वृ० पा०)।

८—अष्टम में तृतीयेश—भाई मरे। यदि पापग्रह हो तो बांह की पीड़ा से दुःखी, ८ वर्ष जीवे (मान०)। मरे हुए सदाहर भ्राताओं वाला। पापग्रह हो तो ८ वर्ष तक जी सके तो भुजा से हीन अंग वाला हो (जा० सं०)। चोर, नौकरी करने वाला, राजा के द्वारा मरण पाने वाला (वृ० पा०)।

९—नवम में तृतीयेश—भाई बंदों से हीन। शुभग्रह हो—बांधव जन सज्जन हों स्वयं विद्वान् और सहोदर भाई का भक्त (मान०)। पुण्यवान्, सगे भाई से स्नेह करने वाला, बांधवों से पराजित होता है। शुभग्रह हो—अच्छे बांधवों से युक्त अच्छे कार्य करने वाला, भ्राताओं का भक्त (जा० सं०)। पिता के सुख से हीन, स्त्री के द्वारा भाग्योदय, पुत्रादि से युक्त (वृ० पा०)।

१०—दशम में तृतीयेश—राजाओं का पूज्य, माता पिता भाई बंधुओं का भक्त, उत्तम बुद्धि, सब बंधुओं से मेल (मान०)। राजा से सत्कार पाने वाला, बांधवों का भक्त, उत्तम बांधव जनों से मान्य, अच्छे निश्चय वाला (जा० सं०)। सब प्रकार से सुखी, अपने पराक्रम से धन कमाये, दुष्ट स्त्रियों को पालने वाला (वृ० पा०)।

११—लाभ में तृतीयेश—सत्पात्र, बांधवों से युक्त, किसी राजा के द्वारा शोभा पाने वाला, भाई बंदों का सेवक, भोग विलास युक्त (मान०)। अच्छे बांधवों से युक्त, बांधवों से पूज्य, सेवा चाहने वाला, भोगवान् (जा० सं०) व्यापार में धनी, विद्याहीन भी बुद्धिमान्, साहसी और दूसरों को सेवा करने वाला (वृ० पा०)।

१२—व्यय में तृतीयेश—मित्रों से विरोध करने वाला, भाई बंदों को संताप देने

वाला, भाई बंदों से दूर भागने पर बहुत काल तक परदेश में रहने वाला (मान०) ।
स्त्रियों से विरोध करने वाला, अच्छे बांधवों से विरोध वर्ता, संतापकर्ता, दूर के बसाये हुए बंधु वाला, विदेश गामी (जा० सं०) । कुकार्य में खर्च करने वाला, उसका पिता क्रूर होता है तथा पत्नी द्वारा भाग्योदय होता है। (वृ० पा०) ।

३—तृतीयेश का विशेष फल

१—सहोदर सुख-तृतीयेश या मंगल तीसरे भाव को देखता हो या उसमें हो तो सहोदरों का सुख हो (वृ० पा०) ।

२—सहोदर नाश-तृतीयेश और मंगल दोनों पाप युक्त पाप राशि में हो तो सहोदरों का नाश (वृ० पा०) ।

३—बंधुओं से हीन-तृतीयेश व मंगल व दोनों लग्न से त्रिक में हो (जा० लंकार) ।

४—बंधुओं वाला-तृतीयेश स्वस्थानी होकर शुभग्रहों से दृष्ट हो (जा० सं०) ।

५—बंधुओं से बहुत सुख-तृतीयेश शुभग्रह युक्त केन्द्र में हो (जा० लं०) ।

६—बंधुओं से सुख नहीं-तृतीयेश पापयुक्त या दृष्ट होकर केन्द्र में ।

७—सहोदर सुख-तृतीयेश और मंगल दोनों केन्द्र या कोण में हो या अपने उच्च या मित्र गृह में हो (वृ० पा०) ।

८—छोटे सहोदरों का अभाव, बड़े ३ सहोदर-भ्रातृ कारक ग्रह राहु से युक्त हो और तृतीयेश नीच में हो तो छोटे सहोदरों का अभाव और बड़े ३ सहोदर समझना (वृ० पा०) ।

९—१२ सहोदर-तृतीयेश केन्द्र में हो और भ्रातृ कारक ग्रह उसके त्रिकोण में यदि गुरु के साथ उच्च में हो तो १२ सहोदर हों उसमें जातक बड़े २ और तीसरा सातवां नवां और बारहवां ये अल्पायु होंगे शेष ६ सहोदर दीर्घायु होते हैं ।

१०—शूर धैर्यवान् साहसी आदि—तृतीयेश और लग्नेश एक दूसरे के स्थान में हों और बलवान् हों तो जातक शूर, धैर्यवान्, अपने भाइयों का सहायक, और साहसी होता है (फल०) ।

११—भाइयों की उन्नति-तृतीयेश बली हो शुभग्रह से युक्त हो और उस भाव का कारक भी शुभ घर में हो—तो भाइयों की उन्नति हो । भाइयों की हानि-यदि बलहीन हो और बुरी स्थिति में हो तो भाइयों की हानि हो ।

१२—भाई संख्या-तृतीयेश और कारक दोनों विषम राशि में हों गुरु सूर्य और मंगल की दृष्टि हो और तीसरे घर मे विषम राशि हो तो नवांश से जितना मालूम हो उतने भाई होंगे ।

१३—बहिन या भाई-तृतीयेश स्त्रीग्रह हो, या तृतीय में स्त्रीग्रह हो तो-बहिन होगी तृतीयेश पुरुष ग्रह हो, या तृतीय में पुरुष ग्रह हो तो-भाई होगा । स्त्री और पुरुष ग्रहों का मिश्रण हो तो भाई बहन दोनों हों इसमें बल अबल दृष्टि आदि का भी विचार करना ।

शनि दशा वर्ष १०					गुरु वर्ष १९					राहु वर्ष १२					शुक्र वर्ष २१				
	व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.		व.	मा.	दि.	घ.
श०	०	११	३	२०	गुरु	३	४	३	२०	राहु	१	४	०	०	शुक्र	४	१	०	०
गुरु	१	९	३	२०	राहु	२	१	१०	०	शुक्र	२	४	०	०	सूर्य	१	२	०	०
राहु	१	१	१०	०	शुक्र	३	८	१०	०	सूर्य	०	८	०	०	चंद्र	२	११	०	०
शुक्र	१	११	१०	०	सूर्य	१	०	२०	०	चंद्र	१	८	०	०	मं०	१	६	२०	०
सूर्य	०	६	२०	०	चंद्र	२	७	२०	०	मं०	०	१०	२०	०	शुक्र	३	३	२०	०
चंद्र	१	४	२०	०	मं०	१	४	२६	४०	बुध	१	१०	२०	०	श०	१	११	१०	०
मं०	०	८	२६	४०	बुध	२	११	२६	४०	श०	१	१	१०	०	गुरु	३	८	१०	०
बुध	१	६	२६	४०	श०	१	९	३	२०	गुरु	२	१	१०	०	राहु	२	४	०	०
यो.	१०	०	०	०		१९	०	०	०		१२	०	०	०		२१	०	०	०

अष्टोत्तरी दशा की प्रत्यंतर दशा निकालना

अन्तर्दशा के समय में १०८ का भाग देने से प्रत्यन्तर दशा का ध्रुवांक बन जाता है उसमें ग्रह वर्ष से गुणा करने से प्रत्यन्तर दशा का समय निकल जाता है परन्तु इस प्रकार गणित में कुछ असुविधा होती है इससे नीचे बताये प्रकार से प्रत्यन्तर दशा निकाल लेना।

प्रत्येक अन्तर ग्रह के वर्ष मास आदि के दिन बना लेना और जिस ग्रह का अन्तर दशा का प्रत्यन्तर निकालना है उस ग्रह की अन्तर दशा के वर्ष से प्रत्येक में प्रथम-प्रथम गुणा कर १०८ का भाग देने से प्रत्यन्तर का समय निकल आयेगा।

उदाहरण

सूर्य में सूर्य के अन्तर को प्रत्यन्तर की दशा।

ग्रह	अन्तर दशा मास दिन	दिन	सूर्य वर्ष	गुणन फल		प्रत्यन्तर समय दिन	घड़ी	पल
सूर्य	४– ०	=१२०	×६	=७२०	÷१०८=	६	४०	०
चंद्र	१०– ०	=३००	×६	=१८००	÷१०८=	१६	४०	०
मंगल	५–१०	=१६०	×६	=९६०	÷१०८=	८	५३	२०
बुध	११–१०	=३४०	×६	=२०४०	÷१०८=	१८	५३	२०
शनि	६–२०	=२००	×६	=१२००	÷१०८=	११	६	४०
गुरु	१२–२०	=३८०	÷६	=२२८०	÷१०८=	२१	६	४०
राहु	८– ०	=२४०	×६	=१४४०	÷१०८=	१३	२०	०
शुक्र	१४– ०	=४२०	×६	=२५२०	÷१०८=	२३	२०	०
					योग	१२०	– ०	– ०

पराक्रमी, नौकरों से युक्त, उदार, निरोग, गुणी, दाता और स्वभुजोपार्जित धन वाला (वृ० पा०)।

(४) चतुर्थ में चतुर्थेश—पिता, राजा, स्वामी, इनका मान करने में तत्पर पिता से लाभ, स्वधर्म में सावधान तथा सुखी (जा० सं०)।

पिता को राज्य से मान कराने वाला, जाति में विदित, पिता द्वारा धन लाभ, सुधर्म करने वाला, सुखी, धनवान् (मान)।

राजमंत्री, सर्व धन सम्पन्न, चतुर, सुशील, मानी, ज्ञानी, स्त्री का प्रिय, और सुखी (वृ० पारा०)।

(५) पंचम में चतुर्थेश–पिता के लाभ से भोग वाला, दीर्घायु, राजा से विख्यात, पुत्र से लाभदायक (जा० सं०)। पिता से लाभ, दीर्घायु, कर्तव्यों द्वारा प्रसिद्ध, पुत्रवान्, पुत्रों का पालक (मान०)। सुखी, सबका प्रिय, विष्णु का भक्त, गुणी, मानी, स्व उपार्जित धन (वृ० पारि०)।

(६) षष्ठ में चतुर्थेश—पिता के धन का नाशक, पिता से वैर कर्ता, पाप तो पिता को दोष करने वाला, शुभ हो तो पुत्र धन का संचय करने वाला (जा० सं०)।

पापग्रह—माता के धन का नाशक, पिता के दोषों के करने में रत। शुभ ग्रह—धन का संचय कर्ता (मान०)।

माता के सुख से हीन, क्रोधी, चोर, व्यभिचारी, स्वच्छन्द, दुष्ट हृदय (वृ० पा०)।

७—सप्तम में चतुर्थेश–पाप ग्रह हो तो सुख से श्वसुर को नहीं पालता, शुभग्रह हो तो पालनकर्ता। बली हो तो कुलपति हो (जा० सं०)। पापग्रह हो तो स्त्री अपने श्वसुर की सेवा नहीं करती, शुभग्रह हो तो पालन करने वाली होती है (मान०)। बहुत विद्या का ज्ञाता, पैतृक धन को त्यागने वाला, सभा में गूँगा के समान।

८—अष्टम में चतुर्थेश–क्रूर, रोगी, दरिद्र, बुरे कर्म, मृत्यु प्रिय (जा० सं०)। क्रूर स्वभाव, रोगी, दरिद्र, दुष्कर्म कर्ता, इन्हीं सब कारणों से उसे मरना अच्छा लगता है (मान०)। घर स्त्री आदि के सुख से हीन, माता-पिता से भी अल्प सुख, नपुंसक समान (वृ० पा०)।

९—नवम में चतुर्थेश–सत्संगी, समस्त विद्याओं से युक्त, पिता के धर्म का संग्रहकर्ता, पिता के तीर्थ का चाहने वाला (जा० सं०)। पिता से पृथक-पृथक रहने वाला, समस्त विद्याओं का ज्ञाता, पितृ धर्म का संग्रह कर्ता, पिता के व्यवहार से पृथक (मान०)। सबका प्रिय, देवों का भक्त, गुणी, मानी, सर्वसुख युक्त (वृ० पा०)।

१०—दशम में चतुर्थेश–पापग्रह हो तो पुत्र माता को त्याग दे और कन्या का प्यारा होता है, पापग्रह हो तो उसको और उसकी माता को छोड़ दे और दूसरी कन्या से विवाह कर लेता है। शुभग्रह हो तो अन्य विवाह न करने वाला एवं दूसरी स्त्री के साथ रहने वाला हो (मान०)। राजमान्य, रसायन ज्ञाता, अति प्रसन्न, सुखी, जितेन्द्रिय (वृ० पा०)।

सूर्य में शनि के अन्तर का प्रत्यन्तर

ग्रह	मा.	दि	घ.	प.	वि.
शनि	०	१८	३१	६	४०
गुरु	१	५	११	६	४०
राहु	०	२२	१३	२०	०
शुक्र	१	८	५३	२०	०
सूर्य	०	११	६	४०	०
चन्द्र	०	२७	४६	४०	०
मंगल	०	१४	४८	५३	२०
बुध	१	१	२८	५३	२०
योग	६	२०	०	०	०

सूर्य में गुरु के अन्तर का प्रत्यंतर

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	२	६	५१	६	४०
राहु	१	१२	१३	२०	०
शुक्र	२	१३	५३	३०	०
सूर्य	०	२१	६	४०	०
चन्द्र	१	२२	४६	४०	०
मंगल	०	२८	८	५३	२०
बुध	१	२९	४८	५३	२०
शनि	१	५	११	६	४०
	१२	२०	०	०	०

सूर्य में राहु के अन्तर का प्रत्यंतर

ग्रह	मा.	दि	घ.	प.	वि.
राहु	०	२६	४०	०	०
शुक्र	१	१६	४०	०	०
सूर्य	०	१३	२०	०	०
चन्द्र	१	३	२०	०	०
मंगल	०	१७	४६	४०	०
बुध	१	७	४६	४०	०
शनि	०	२२	१३	२०	०
गुरु	१	१२	१३	२०	०
योग	८	०	०	०	०

सूर्य में शुक्र के अन्तर का प्रत्यन्तर

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	२	२१	४०	०	०
सूर्य	०	२३	२०	०	०
चन्द्र	१	२८	२०	०	०
मंगल	१	१	६	४०	०
बुध	२	६	७	४०	०
शनि	१	८	५३	२०	०
गुरु	२	१६	५३	२०	०
राहु	१	६	४०	०	०
	१४	०	०	०	०

चन्द्र में चंद्र के अंतर का प्रत्यंतर

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
चंद्र	३	१४	१०	०	०
मगल	१	२५	३३	२०	०
बुध	३	२८	३	२०	०
शनि	२	९	२६	४०	०
गुरु	४	११	५६	४०	०
राहु	२	२३	२०	०	०
शुक्र	४	२५	५०	०	०
सूर्य	१	१	४०	०	०
योग	२५	०	०	०	०

चन्द्र में मंगल के अंतर का प्रत्यंतर

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मंगल	०	२९	३७	४६	४०
बुध	२	२	५७	५६	४०
शनि	१	७	२	१३	२०
गुरु	२	१०	२२	१३	२०
राहु	१	१४	२६	४०	०
शुक्र	२	१७	४६	४०	०
सूर्य	०	२२	१३	२०	०
चन्द्र	१	२५	३३	२०	०
	१३	१०	०	०	०

१४—उल्टा फल—चतुर्थेश अस्त हो तो चतुर्थेश का सब फल उल्टा हो (जा०सं०)।

१५—सुखकारी—चतुर्थेश शुभ युक्त या दृष्ट होकर बलवान् हो तो सुखकारी है।

१६—मित्र हानि—चतुर्थेश शुक्र बुध मंगल से दृष्ट हो (जा० सं०)।

१७—माता को क्लेश—चतुर्थेश पाप युक्त हो।

१८—माता को शुभ—चतुर्थेश शुभ युक्त हो।

१९—श्वसुर, मित्र पिता का शरीर सुख—चतुर्थेश के समान, श्वसुर, मित्र और पिता का शरीर सुख का विचार करना (जा० सं०)।

२०—गृह भूमि वाहन खेती माता आदि का सुख—चतुर्थेश स्वगृह, स्वनवांश, सर्वोच्च में हो तो गृह भूमि, वाहन, खेती, माता, वाजा आदि का पूर्ण सुख हो (वृ० पा०)।

२१—उच्च श्रेणी का घर—चतुर्थेश यदि दशमेश के साथ केन्द्र त्रिकोण में हो तो उच्च श्रेणी का मकान हो (वृ० पा०)।

२२—बन्धुओं में मान्य—चतुर्थेश शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह से युक्त हो लग्न में बुध हो तो बन्धुओं में श्रेष्ठ मान्य होता है (वृ० पा०)

२३—माता का पूर्ण सुख—चतुर्थेश और शुक्र केन्द्र में हो उच्च का बुध हो।

२४—वाहन सुख—लाभेश चतुर्थ में चतुर्थेश लाभ में हो तो १२ वर्ष में वाहनों का सुख हो।

२५—वाहन लाभ—चतुर्थेश यदि दशमेश युक्त होकर अपने उच्चांश में हो तो ४२ वर्ष में वाहनों का विशेष लाभ हो (वृ० पा०)।

२६—वाहन लाभ—चतुर्थेश उच्च में शुक्र युक्त हो चतुर्थ में सूर्य हो तो ३२ वर्ष में वाहन का विशेष लाभ हो (वृ० पा०)।

२७—गूंगा—चतुर्थ में चर राशि हो चतुर्थेश और मंगल ६, १२ भाव में हो तो वह गूंगा हो (वृ० पा०)।

२८—माता की मृत्यु—जन्म में चतुर्थेश और चन्द्र दुःस्थान में हो शुभ ग्रह का योग दृष्टि न हो या दो पाप ग्रहों के बीच में हो और पाप दृष्टि भी हो तो माता की मृत्यु हो (फल दी०)।

२९—माता का सुख—यदि उपरोक्त दोनों ग्रह बली हों और चतुर्थ शुभ युक्त या दृष्ट हो तो माता का सुख होगा (फल दी०)।

३०—माता की दाह क्रिया करे—चतुर्थेश लग्न में हो और लग्नेश चतुर्थ में हो और दोनों में कोई चन्द्र से युक्त या दृष्ट हो तो जातक माता की दाह क्रिया करेगा।

३१—माता का दाह संस्कार न कर सकेगा—यदि वे दोनों ग्रह एक दूसरे के शत्रु या नीच घर या ६, ८ भाव में हों और एक दूसरे से किसी प्रकार सम्बन्धित न हों सहयोग से या दृष्टि से, तो माता की मृत्यु पर उसका दाह संस्कार न कर सकेगा (फल०)।

३२—पिता पुत्र आदि के विषय में विशेष विचार—जैसा कि ऊपर माता के लिये

कहा गया है उसी प्रकार पिता, भाई, पुत्र, आदि के विषय में, उसके सम्बन्धित भाव का सम्बन्धित कारक, उसके स्वामी, लग्न लग्नेश के सम्बन्ध से विचार कर फल कहना (फल०)।

३३—मान वाहन, आधिपत्य आभूषण आदि प्राप्त—चतुर्थेश और शुक्र यदि लग्न में और चतुर्थ भाव में सुस्थित हो तो मान के लिये वाहन, मनुष्यों पर आधिपत्य, सुवर्ण और भी दूसरे कीमती मणि आभूषण वस्त्र, शैया और इसी प्रकार के भोग की आवश्यक सामग्री प्राप्त हो हाथी घोड़े गाय आदि मिले (फल०)

३४—घर जले—चतुर्थेश दुःस्थान में हो या चतुर्थ में मंगल और शनि हो तो उसका घर जल जावे (फल०)।

३५—घर मिले—चतुर्थेश चतुर्थ में हो या चतुर्थ में लग्नेश हो तो घर मिले। यदि वे दुःस्थान में हों तो विपरीत फल हो।

३६—घर मिले—चतुर्थेश सप्तमेश से युक्त होकर चतुर्थ में हो या केन्द्र या कोण में हो या अपने उच्च का होकर सप्तम को देखे तो घर की प्राप्ति हो।

३७—चतुर्थेश का नवांश अनुसार फल—चतुर्थेश स्वगृही हो या अन्य ठिकाने हो वह जिस ग्रह के नवांश में हो वह ग्रह अपनी स्थिति प्रमाण से फल देता है। मां का स्वभाव भी उसी ग्रह प्रमाण से रहता है (प्रा० यो०)।

३८—राशि जिनमें चतुर्थेश शुभ होता है—केवल ६ राशियां है जिनमें चतुर्थेश शुभ होता है वे कुम्भ, मीन, मिथुन, कर्क, कन्या और धन लग्न हैं। इनसे से चौथे घर में शुभ ग्रह का घर पड़ता है। शेष राशि की लग्न होने से चतुर्थ में पाप ग्रह की राशि पड़ती है। कर्क के लिये जब चंद्रमा पूर्ण हो तो शुभ है। निर्बल हो तो पाप ग्रह होती है। इसी प्रकार मिथुन कन्या के विषय में है जब उस का स्वामी बुध शुभ युक्त हो तो शुभ है। पाप युक्त हो तो पाप गिना जाता है। परन्तु यहां इसका विचार न कर मिथुन और कन्या को शुभ राशि गिना है।

(३९) चतुर्थ में बली चतुर्थेश ग्रह का फल

चतुर्थेश सूर्य हो तो उसका गृह अदृढ़ और विशेषकर जला हुआ होता है। चन्द्र हो तो उसका गृह नवीन होता है। मंगल हो तो उसका गृह टूटा हुआ तथा जला हुआ, बुध हो तो उसका गृह चित्र विचित्र प्रकार का, गुरु हो तो उसका गृह अच्छा मजबूत दृढ़, शुक्र हो तो उसका गृह मनोहर, शनि हो तो उसका गृह पुराना होता है (जा० सं०)।

(४०) चतुर्थेश का धन भाव में विशेष फल

चतुर्थेश चन्द्र धन में—दही शक्कर आदि मीठे पदार्थ मिलें चांदी का पात्र पीने को हो, मांस मछली आदि का खाने वाला हो। सूर्य धन में—खारा व उष्ण पदार्थ प्राप्त हो तांबे का पात्र हो बकरे का मांस भक्षी हो। मंगल धन में—खारा, तिलह, मशालेदार पदार्थ मिले हरिण या पक्षी का मांस प्रिय हो, रांगा या कलई वाला पात्र हो न्याय

करने की विधि व लड़ाई करने की विद्या प्राप्त हो। लाल नेत्र, क्रूर व कठोर वचन बोलने वाला हो। बुध धन में हो—सात्विक अन्न प्राप्त हो कांसे का पात्र प्रिय हो (प्रा० यो०)।

५—पंचमेश का भिन्न भिन्न भाव में फल

१—लग्न में पंचमेश—संसार में प्रसिद्ध, थोड़े पुत्र, शास्त्र जानने वाला, देववेत्ता, सत्कर्म में निरत (मान०)। विख्यात बहुत से पुत्रों से युक्त, शास्त्रवेत्ता, शीलवेत्ता, सुकर्म में सावधान (जा० सं०)। पुत्र सुखयुक्त, बिद्वान्, कदर्य, कुटिल हृदय, परधन हारक (वृ० पा०)।

२—धन में पंचमेश—क्रूर ग्रह हो—दरिद्र, शुभग्रह—गाने बजाने आदि कला का ज्ञाता। नौकरी आदि के लिए अच्छी जगह होने पर भी कठिनता से भोजन चलाने वाला (मान०)। पापग्रह हो—धनहीन, गाना बजाना आदि जाने, कविता करने में चतुर, कष्ट भोगी, स्थानाधिक हो (जा० सं०)। बहुत पुत्र और धन से युक्त, परिवार का पोषक, मानी, स्त्री का प्रिय, यशस्वी (व० पा०)।

३—तृतीय में पंचमेश—मनोहर मीठी बातें कहने वाला, सब वस्तुओं में प्रसिद्ध, उसका पुत्र सारे कुटुम्ब का पालन पोषण करे (मान०)। मधुर भाषी, अच्छे बन्धुजनों से विख्यात। उसके पुत्रों तथा बांधवों को पुत्री पालती है (जा० सं०)। सहोदर का प्रिय, चुगुलखोर, कंजूस स्वार्थी (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में पंचमेश—पिता के समान कर्म करने में उद्यत, पिता द्वारा अधिक समय तक पाला जाय, माता की सेवा करने वाबा। क्रूर ग्रह हो पिता का विरोधी (मान०)। गुरु भक्त, पिता के कार्य में युक्त, माता का भक्त। पापग्रह हो तो विपरीत फल हो (जा० सं०)। सुख युक्त, माता पिता से भी सुखी, धनवान्, बुद्धिमाद्, राजमंत्री या राजगुरु (वृ० पा०)।

५—पंचम में पंचमेश—बुद्धिमान्, मनुष्यों में माननीय, पुत्रों से युक्त, एवं प्रसिद्ध (मान०)। बुद्धिमान्, मानी, कहने में प्रवीण, पुत्रयुक्त, बहुत धन से सम्पन्न, ख्याति युक्त (जा० सं०)। शुभग्रह युक्त हो तो पुत्रवान्। पापयुक्त हो तो संतान हीन किन्तु गुणी और मित्र का उपकारी होता है (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में पंचमेश—क्रूर ग्रह हो—सदा शत्रुओं से आक्रान्त, मान से हीन, बंधन से रहित (मान०) शास्त्र प्रिय, पुत्रहीन, रोगी और निर्धनी। पापग्रह हो तो अतीव दुष्ट हो (जा० सं०)। पुत्र से शत्रुता या पुत्रहीन या दत्तक पुत्र वाला (वृ० पा०)।

७—सप्तम में पंचमेश—मनुष्य देव गुरुजनों का भक्त, पुत्रों से युक्त, स्त्री प्रियभाषिणी और सुशीला (मान०) स्त्री सुन्दर संतान वाली, सौभाग्य युक्त, भाग्यवती, गुरुभक्त प्रिय बोलने वाली अच्छे शील वाली (जा० सं०)। मानी, सब धर्म को मानने वाला, पुत्रादि सुख युक्त, परोपकारी (वृ० पा०)।

८—अष्टम में पंचमेश—दुर्वाक्य कहने वाला, स्त्री से रहित, भाई तथा पुत्र असह्य बातें कहते हैं (मान०)। बुरे वचन बोलने वाला, स्थानहीन, मूर्ख, उसके भ्राता व

पुत्र नष्ट, अंगहीन (जा० सं०) । थोड़े पुत्र वाला, कास श्वास से युक्त, क्रोधी, सुख-हीन (वृ० पा०) ।

९—नवम में पंचमेश–विद्या में सुबोध, बड़ा कवि, गान विद्या का जानने वाला, राजाओं से पूजित, रूपवान्, नाटक विद्या का प्रेमी (मान०) । सुन्दर गान विद्या से युक्त, गान में निपुण, राजा से सत्कार पानेवाला, सुन्दर रूप नाटक रसिक (जा० सं०) । उसका पुत्र राजा या राजा के तुल्य हो, स्वयं ग्रंथकार, विख्यात, कुल में श्रेष्ठ (वृ० पा०) ।

१०—दशम में पंचमेश–राजा के समान कर्म करने व विचारने वाला, सत्कर्म में निरत, सबों में उत्तम, माता को आनन्द देने वाला (मान०) । राज काज करने वाला, राजपुरुषों से सेवित, सत्कर्म में निपुण और श्रेष्ठ, माता के लिए सुख का भोगने वाला (जा० सं०) । राजा, अनेक सुख से युक्त, विख्यात कीर्ति (वृ० पा०) ।

११—लाभ में पंचमेश–शूरवीर, पुत्रवान्, गाने बजाने की कला का ज्ञाता, राजा के समान भोगी (मान०) शूरवीर, पुत्रवान्, अच्छे कार्य करने वाला, गीत और कलाओं में निपुण, राजा से लाभ (जा० सं०) । विद्वान्, लोकप्रिय, ग्रंथकार, कार्य में समर्थ बहुपुत्र, धनवान् (वृ० पा०) ।

१२—व्यय में पंचमेश–क्रूरग्रह–पुत्र से हीन, पुत्रों के दुःख से संतापित, परदेश-वासी । शुभग्रह हो तो सुन्दर पुत्र हो (मान०) । पापग्रह हो तो पुत्रहीन, शुभ हो तो पुत्रयुक्त, पुत्र संताप से युक्त, परदेश में जाने में तत्पर (जा० सं०) । पुत्र सुख से हीन, दत्तक या क्रीत पुत्र वाला (वृ० पा०) ।

पंचमेश का विशेष फल—

१—पुत्र सुख–लग्नेश व पंचमेश पंचम भाव में हो या केन्द्र त्रिकोण में हो तो पूर्ण रूप से पुत्र सुख हो ।

२—पुत्र का अभाव–पंचमेश ६-८-१२ भाव में हो तो पुत्र का अभाव हो (वृ०पा०)

३—पुत्र न हो या मरे–पंचमेश अस्त हो या पाप युक्त हो तो पुत्र नहीं होता होवे तो मर जाता है (वृ० पा०) ।

४—संतान नष्ट स्त्री काकवंध्या–पंचमेश ६भाव में या मंगल से युक्त हो तो उनकी प्रथम संतान होकर नष्ट हो जाती है और स्त्री काकवंध्या हो जाती है ।

५—स्त्री काकवंध्या–पंचमेश नीच में होकर ६-८-१२ भाव में हो या पंचम भाव में केतु और बुध हो तो उसकी स्त्री काकवंध्या हो जाती है ।

६—स्त्री काकवंध्या–पंचमेश नीच में होकर पंचम भाव को नहीं देखता हो और पंचम में शनि बुध हों तो भी स्त्री काकवंध्या हो ।

७—यत्न से पुत्र–पंचमेश नीच में हो लग्न में नवमेश हो, पंचम में केतु बुध हो तो बहुत यत्न धर्मानुष्ठान आदि से पुत्र होता है (वृ० पा०) ।

८—यत्न से पुत्र—पंचमेश ६-८-१२ में हो या शत्रु राशि या नीच में होकर पंचम भाव में हो तो भी यत्न करने से पुत्र होता है ।

९—कन्या हो—पंचमेश चन्द्र के द्रेष्काण में और चन्द्र से युक्त हो तो कन्या संतति होती हैं। (वृ० पा०)

१०—मृत्यु—पंचमेश चर राशि में होकर चन्द्रमा राहु से युक्त हो शनि पंचम भाव में हो तो जातक मर जाता है (वृ० पा०)।

११—नीचपुत्र—पंचमेश नीच राशि में प्रथम भाव में ३ या ४ पापग्रह से युक्त हो तो नीच कर्म करने वाला पुत्र हो (वृ० पा०)।

१२—एक पुत्र—पंचमेश गुरु हो या सूर्य शुभ स्थान में हो या केन्द्र या कोण में शुभ ग्रह हो तो १ पुत्र हो।

१३—पूर्ण पुत्र सुख—पंचमेश उच्च में होकर २, ३, १, या ५ घर में हो और गुरु से युक्त दृष्ट हो तो वह पूर्ण पुत्र सुख पावे (वृ० पा०)।

१४—३२-३३ वर्ष में पुत्र—पंचमेश शुक्र के साथ हो पंचम में गुरु हो तो ३२-३३ वर्ष में पुत्र हो (वृ० पा०)।

१५—३०-३६ वर्ष में पुत्र—पंचमेश केन्द्र में हो पुत्र भाव के कारक ग्रह से युक्त हो तो ३० या ३६ वर्ष में पुत्र हो।

१६—१० पुत्र—चतुर्थ और षष्ठ भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश के साथ पंचमेश परमोच्च में हो, पुत्र भाव कारक शुभ ग्रह युक्त हो तो १० पुत्र हों (वृ० पा०)।

१७—६ पुत्र हों ३ मरें—पंचमेश के साथ धनेश पुत्र भाव में हो तो ६ पुत्र हों उनमें ३ का मरण हो जाता है (वृ० पा०)।

१८—३२ वर्ष में पुत्र मरण—पंचम में राहु हो, पंचमेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा गुरु नीच में हो तो ३२ वर्ष में पुत्र का मरण हो (वृ० पा०)।

१९—बुद्धिमान् निष्कपटी—पंचमेश सुस्थित हो और उसे वैशेषिकांश प्राप्त हो तो बुद्धिमान् और निष्कपटी हो (फल०)।

—षष्ठेश का प्रत्येक भाव में फल

१—लग्न में षष्ठेश-रोग रहित, बलवान्, कुटुम्ब को कष्ट देने वाला, आत्मपक्षीय जनों से युक्त, शत्रु हंता, स्वच्छंद रहने वाला, इच्छित धन एकत्र करने वाला (मान०)। रोग हीन, उत्साह वर्जित, कुटुम्ब से कष्ट पाने वाला, बहुत से पक्ष वाला, शत्रु नाशक, इच्छानुसार कहने वाला, धनवान्, (जा० सं०)। रोगी, यशस्वी, अपने सम्बन्धी का शत्रु, धनी मानी, साहसी, गुणी (वृ० पा०)।

२—धन में षष्ठेश—बड़ा दुष्ट, प्रत्येक कार्य में चतुर, धन प्रतिष्ठा बढ़ाने में तत्पर, अच्छी जगह रहने वाला, सर्वत्र विख्यात, व्याधित शरीर वाला, मित्रों का धन नाशक (मान०)। दुष्ट, चतुर, संग्रहकर्ता, विख्यात, व्याधि वाला, पुत्र से हरे हुए धनवाला, साहसी, कुल में श्रेष्ठ, विदेश वासी, सुखी, वक्ता, अपना कर्तव्य करने वाला (वृ०पा०)।

३—सहज में—लोगों को कष्ट देने वाला, अपने कुटुम्बियों के मारने में चतुर, संग्राम में शत्रु से कष्ट (मान०) क्रूर ग्रह हो तो अपने जनों को कष्ट कर्त्ता, पिता की लक्ष्मी से

विलास करने की बुद्धि वाला, ग्राम जन का अति कष्ट दायक नगर दुख की खान होता है नाभि में दृढ रोग (जा० सं०) क्रोधी, बन्धुहीन, भाई का शत्रु, क्रूर नौकर वाला (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में—पुत्र पिता में परस्पर वैमनस्य, पिता रोगी, वह और उसके लड़के बहुत समय तक लक्ष्मी को प्राप्त (मान०)। पिता पुत्र में परस्पर वैर, संकर जाति का पुत्र होकर बहुत कालीन पिता की लक्ष्मी को प्राप्त करता है (जा० सं०)। मातृ सुख से हीन मनमाना काम करने वाला, चुगुल खोर, द्वेषी, चंचल, अधिक धनवान् (वृ० पा०)।

५—पंचम में—क्रूर हो तो पिता पुत्र में वैर, अपने पुत्र के कारण मरण पाने वाला, शुभ हो तो निर्धन, पदवी पाकर दुष्ट स्वभाव, कपटी (मान०)। पापग्रह हो तो—पिता-पुत्र में वैर बुद्धि, शुभग्रह हो—निर्धन, पदवी द्वारा दुष्ट होता है। (जा० सं०)। धन आदि स्थिर नहीं रहता, पुत्रादि से शत्रुता, स्वयं सुखी, स्वार्थी, दयालु (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में—रोग रहित, बहुतों से वैर, सुखी, बड़ा कृपण, जन्म से सुख युक्त, कुस्थान वासी (मान०)।

रोग हीन, कर्ता, सुखी, कृपण, दुःखी नहीं होता, अपने स्थान में बास, सहोदर से विरोध अन्यजनों के साथ शुभ, मित्र और वाहन की वृद्धि, नीच जनों की वृद्धि (जा० सं०)। रोगी व वैरी से युक्त न होकर सुखी व कृपण होगा (जा० लं०)।

अपने गोत्रियों से शत्रुता, दूसरों से मैत्री, धन आदि जन्य मध्यम सुख (वृ० पा०)।

७—सप्तम में षष्ठेश-विरोध करने वाली, क्रोधी, संताप हारी स्त्री मिले यदि क्रूर ग्रह हो। शुभ हो तो स्त्री वंध्या या गर्भपात कराने में प्रवृत्त (मान०)।

शुभ ग्रह हो तो स्त्री बंध्या गर्भ गिराने में तत्पर, पाप ग्रह हो तो स्त्री विरोध करने वाली बडी प्रचंड, संताप हरने वाली हो (जा० सं०)।

स्त्री सुख से रहित, यशस्वी, गुणी, मानी, साहसी, धनी हो (वृ० पा०)।

८—अष्टम में—संग्रहणी रोगी। ग्रह के अनुसार, षष्ठेश सूर्य—सिंह से, चन्द्र—तत्काल मृत्यु, मंगल—सर्प से, बुध—विष दोष से, गुरु—बुद्धि की खराबी या पागलपन से, शुक्र—नेत्र रोग से मृत्यु हो (मान०)।

षष्ठेश मंगल हो तो सर्प से स्त्री की मृत्यु, बुध हो तो विष से स्त्री की मृत्यु, चंद्र व सूर्य—राजा व सिंह से, गुरु व शुक्र—शत्रु पीड़ा या नेत्र से, शनि हो तो संग्रहणी रोग व वात रोग से स्त्री का मरण (जा० सं०)।

बहुत मेहनती, व्याधि रहित सुखी (जा० लं०)। रोगी पंडितों का शत्रु, दूसरे के धन का लोभी, परस्त्री गामी तथा अशुचि (वृ० पा०)।

९—नवम में—क्रूर, लंगड़ा, भाई बंधु से विरोध करे, शास्त्र को नहीं माने, भिक्षुक (मान०)।

पाप ग्रह हो तो—भ्रष्ट हो, देव विरोधी और क्रूर होकर याचक और गुरु को मानता है। काष्ठ शिला आदि बेचने वाला व्यापार में कहीं हानि कहीं वृद्धि (जा० सं०)।

पत्थर और लकड़ी बेचने वाला, व्यापार में कहीं हानि कहीं वृद्धि भी होती है (वृ० पा०)।

१०—दशम में षष्ठेश-क्रूर ग्रह-माता से वैर करे, दुष्ट स्वभाव, धर्म और पुत्र के पालने में बुद्धि, माता के दोष से उसका बैरी बना रहता है। (मान०)।

पाप ग्रह—अति दुष्ट, माता से वैर करे, धर्म और पुत्र को पालन करने में बुद्धि, मातृ द्वेषी (जा० सं०)।

कुल में श्रेष्ठ, पिता का अभक्त, वक्ता और विदेश जाने में सुखी (वृ० पा०)।

११—लाभ में षष्ठेश-क्रूर ग्रह शत्रु के द्वारा मृत्यु, सबका बैरी, चोरों के द्वारा हानि, घोड़ा भैंस आदि चतुष्पद के निमित्त से लाभ (मान०)।

पाप ग्रह-शत्रु से मरण, चोर द्वारा हानि, चौपाये से लाभ (जा० सं०)।

शत्रु से धन पाने वाला, गुणी, साहसी, मानी, किंतु पुत्र सुख से रहित (वृ० पा०)।

१२—व्यय में षष्ठेश-व्यापार में द्रव्य हानि, विदेश आदि में जाने से धन का हानि, भाग्य से होता है ऐसा मानने वाला (मान०)।

चौपाये, धन धान्य से युक्त, चपल और लक्ष्मी से मदान्ध, लक्ष्मी के आनन्द से युक्त (जा० सं०)।

व्यसन में खर्च करने वाला, विद्वानों का द्वेषी, जीव हिंसक (वृ० पा०)।

षष्ठेश का विशेष फल

१—शत्रु से पीड़ा—षष्ठेश केन्द्र में पापयुक्त या दृष्ट हो तो शत्रु से लगातार बड़ी पीड़ा हो जिसका वह सरलता पूर्वक परिहार न कर सके (फल०)।

२—शत्रुनाश-षष्ठेश दुःस्थान में हो और नीच में या शत्रुगृही या अस्त भी हो, और यदि लग्नेश बली हो और यदि सूर्य नवम घर में हो तो शत्रु का नाश हो (फल०)

३—निरोग सुखी-षष्ठेश से लग्नेश बली हो और शुभग्रह की राशि या अंश में हो शुभ दृष्टि भी हो और यदि चतुर्थेश बली होकर केन्द्र या कोण में हो तो निरोग दृढ़ शरीर हो सब सुख व आराम भोगे (फल०)।

४—जातक की शुभता बढ़े-(१) जिस भाव का स्वामी षष्ठेश युक्त हो (२) षष्ठेश से जो भावयुक्त हो। (३) षष्ठ भाव में जो ग्रह है उसका स्वस्थान हो। ये भाव जातक की शुभता को बढ़ावेंगे (फल०)।

५—दीर्घायु-षष्ठेश ६ या १२ स्थान में हो। व्ययेश ६ या १२ स्थान में हो या लग्न या अष्टम स्थान में हो।

६—व्रण-षष्ठेश, ६, १ या ८ भाव में हो तो शरीर में व्रण कारक हो (वृ० पा०)। षष्ठ भाव में जो राशि हो उस राशि के आश्रित अंग में विशेषकर व्रण होंगे (वृ० पा)। इसी प्रकार पिता आदि (१० स्थानादि) भावों के स्वामी षष्ठेश से युक्त हों ६–८ भाव में हों तो पिता आदि को भी व्रण हो (वृ० पा०)।

७—व्रण स्थान—षष्ठेश से युक्त होकर उक्त स्थान में यदि चन्द्र हो तो-मुख में,

मंगल हो तो कंठ में, बुध–नाभि, गुरु–नाक, शुक्र–नेत्र, शनि–और राहु–केतु–पेट में व्रण हों (वृ० पा०)।

८—मुख में व्रण–लग्नेश मंगल की राशि १–८ में या बुध की राशि ३–६ में या किसी भाव में बुध से दृष्ट हो तो मुख में व्रण हों (वृ० पा०)।

९—व्रण–षष्ठेश पापयुक्त लग्न या अष्टम में हो तो व्रण करे (जा० सं०)। ऐसा योग माता पिता पुत्र आदि की उनके सम्बन्धी भाव से विचारना जैसे चतुर्थेश पापयुक्त लग्न या अष्टम में हो तो माता के शरीर में व्रण हों (जा० सं०)।

१०—व्रण स्थान–पापयुक्त लग्न या अष्ठम में षष्ठेश सूर्य हो–शिर में, चन्द्र-मुख, मंगल–गला, बुध–हृदय, गुरु–कटि, शुक्र–नेत्र, शनि–पांव, राहु या केतु हो तो–ओठों में व्रण हो (जा० सं०)।

११—शत्रु भय-षष्ठेश शुभ युक्त या दृष्ट हो तो शत्रु भय हो, अन्य प्रकार से हो तो शत्रु भय न हो (जा० सं०)।

१२—शत्रु से रोग–षष्ठेश उच्च राशिगत या विषम राशि में होकर षष्ठ में हो तो शत्रु से भी गूढ़ रोग होता है (जा० सं०)।

१३—हृदय में रोग–षष्ठेश सूर्य के नवांश में हो।

१४—गुप्त रोग–षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में हो मंगल से दृष्ट हो तो गुप्त रोग से अंग पीड़ा।

१५—पवन और रुधिर विकार–षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में शनि से दृष्ट हो तो पवन और रुधिर विकार से पीड़ा हो।

१६—षष्ठेश भिन्न भिन्न ग्रहों के साथ रहने का फल–षष्ठेश चंद्रमा मंगल से युक्त–शस्त्र प्रहार, अग्नि रोग, दाह से संतप्त देह। शनि से युक्त–पवन, पत्थर चौपायों से चोट। मंगल से युक्त–रुधिर और शस्त्र प्रहार से संतप्त देह, देशाटन करने में राज-दर्शन करने में युक्त करता है, भूख से संतप्त, पत्थर, पक्षी तथा पवन इनसे प्रहार। बुध से युक्त दृष्ट–गिरने व लोह प्रहार से विदीर्ण अंग वाला, जीते हुए शत्रु वाला। शुक्र गुरु युक्त-विख्यात, शत्रु के वैर के भय से युक्त, स्वस्थ देह (जा० सं०)।

७—सप्तमेश का भिन्न-भिन्न भाव में फल

१—लग्न में सप्तमेश--पर स्त्री से प्रीत न करे, अनेक भोग भोगे, रूपवान्, अपनी स्त्री में मन (मान०)। अति तुच्छ तथा स्नेह रहित, अन्य स्त्री से युक्त, भोगी, रूपवान् तथा अच्छी पत्नी से युक्त और जनों के प्रति चंचल चित्त (जा० सं०) पर स्त्री गामी, दुष्ट, चतुर, अधीर, वात रोगी (वृ० पा०)।

२—धन म सप्तमेश–दुष्ट भार्या, पुत्रों की इच्छा करने वाली, स्त्री के द्वारा धन प्राप्त, स्वतः भी स्त्री के संग से हीन होकर रहता है (मान०)। स्त्री अति दुष्ट और पुत्र हीन, स्त्री के हाथ उसका धन उसे निरन्तर दुखानुषंगी करता है (जा० सं०)। बहुत पत्नी वाला, स्त्री द्वारा धन लाभ, दीर्घसूत्री (वृ० पा०)।

३—सहज में सप्तमेश—स्वबल युक्त, बन्धु स्नेही, बड़ा दुःखी। पापग्रह हो तो स्त्री देवर के साथ रहे, वह स्त्री रूपवती और मित्रों के घर रहने वाली होती है (मान०)। पुत्र वत्सल तथा दुःखी। क्रूर ग्रह हो तो स्त्री रूपवती होकर देवर से भोग करती है (वृ० पा०)।

४—सुख में सप्तमेश—चंचल स्वभाव, पितृ वैरी, उसका पिता भी खोटे वाक्य कहे। उसकी भार्या का पालन पोषण पिता करता है अर्थात् मायके में जाकर जीवन निर्वाह करे (मान०)। चंचल, पिता से वैर कर्ता, स्नेह युक्त, पिता खोटे वचन कहने वाला, पिता उसकी स्त्री का पालन करता है (जा० सं०)। उसकी स्त्री वश में नहीं रहती, स्वयं वह सत्यवादी, बुद्धिमान् धर्मात्मा और दन्त रोगी (वृ० पा०)।

५—पंचम में सप्तमेश—सौभाग्य युक्त, पुत्रवान्, साहसप्रिय, दुष्ट बुद्धि, उस की स्त्री को पुत्र पालन करता है (मान०)। सौभाग्य युक्त, पौत्रवान्, प्रिय साहस, दुष्ट बुद्धि, उसका पुत्र उसकी स्त्री का पालन करता है (जा० सं०)। मानी, सब गुणों से युक्त, सदा हर्षित, सब धन से युक्त (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में सप्तमेश—स्त्री से वैर करने वाला, स्त्री रोगिणी। पाप गृह—स्त्री के साथ अधिक संभोग करने से क्षय रोग, शीघ्र मृत्यु (मान०)। स्त्री के साथ वैर, रोगिणी स्त्री, स्त्री के संग से क्षय रोग, पाप गृह हो तो, उसे मृत्यु के आश्रय करता है (जा० सं०)। रोगिणी स्त्रियाँ, स्त्री से शत्रुता, स्वयं क्रोधी और सुखहीन (वृ० पा०)।

७—सप्तम में सप्तमेश—दीर्घायु, सब के साथ प्रीति, अच्छा स्वभाव, तेजस्वी (मान०)। दीर्घायु, प्रसन्नचित्त, कृपा युक्त, स्नेही, निर्मल शील, तेजस्वी (जा० सं०)। स्त्री सुख से युक्त, धीर, चतुर, बुद्धिमान्, वात रोगी (वृ० पा०)।

८—अष्टम में सप्तमेश—वेश्या गामी, विवाह से रहित, नित्य चिन्तायुक्त, दुःखी (मान०)। वेश्या से भोग, अपनी स्त्री से प्रेम वर्जित, विदुषी द्वितीय स्त्री में आसक्त, स्त्री की सेवा नहीं करने वाला (जा० सं०)। स्त्री सुरत से हीन, स्त्री रोग युक्त, दुष्टा और वश में नहीं रहने वाली (वृ० पा०)।

९—नवम में सप्तमेश—बड़ा तेजस्वी, शीलवान्, स्त्री सुशीला तेज युक्त। क्रूर गृह हो तो नपुंसक या कुरूप। यदि लग्नेश देखे तो नीति शास्त्र में प्रवीण (मान०)। तेजस्वी, शिल्प (कारीगरी) युक्त उसकी स्त्री भी उसी प्रकार की होती है। क्रूर गत हो तो, स्त्री खण्ड रूप वाली होती है। लग्नेश से दृष्ट हो तो तप से अधिक बल पाता है (जा० सं०)। अनेक स्त्री से संग, स्त्री में आसक्त, बहुत कार्य आरम्भ करने वाला (वृ० पा०)।

१०—दशम में सप्तमेश—राजा से दोष युक्त, अति कामी, कपटी, । क्रूर गृह हो तो, अति दुःखी और शत्रु के आधीन (मान०)। राज रोग वाला, व्यभिचारी, लंपट, क्रूर। यदि पाप गृह हो, श्वसुर बड़ा दुष्ट और विदिशाओं में विख्यात होता है। (जा० सं०)। स्त्री वश में नहीं होती। स्वयं धर्मात्मा और धन शत्रु से युक्त (वृ० पा०)।

११—लाभ में सप्तमेश–स्त्री पति भक्ता, रूपवती, सुशक्ति, दुर्बलांग, (मान०)। उसकी स्त्री भक्ता, रूपवती, शुभ शक्ति युक्त विवाहिता स्त्री हो, वह स्त्री सन्तान उत्पन्न होने के समय मृत्यु पावे (जा० सं०)। स्त्री के द्वारा धनलाभ, पुत्र सुख अल्प, अधिक कन्या (वृ० पा०)।

१२—व्यय में सप्तमेश–कुटुम्ब के काम काज में लगा रहे। स्त्री बड़ी, नवीन, चंचल, दुष्टों के साथ रहने वाली, पति को छोड़कर हर जगह रहने वाली वेश्या सदृश (मान०)। चंचल पुरुष की स्त्री, गृह बन्धनों से हीन चंचल तथा दुष्ट (जा० सं०)। दरिद्र, कृपण, उसकी स्त्री बहुत खर्च करने वाली होती है, वस्त्र के व्यापार से लाभ (वृ० सं०)।

(७) सप्तमेश का विशेष फल

१—स्त्री सत गुणी–सप्तमेश बली हो और सप्तम घर का सम्बन्ध शुभ गृह से हो चाहे शुभ युक्त या दृष्ट से हो तो उसकी स्त्री सतगुणी होती है। पति के साथ आनन्द पूर्वक रहेगी। सन्तान होंगे और वह अच्छे गुण वाली होगी (फल०)।

२—स्त्री रोगिणी–सप्तमेश ६-८-१२ स्थान में हो और अपने घर का न हो तो स्त्री रोगिणी हो। यदि सप्तमेश उच्च घरों का हो तो यह फल नहीं होता हैं।

८—अष्टमेश का भिन्न-भिन्न भावों में फल

१—लग्न में अष्टमेश–प्रत्येक कार्य में विघ्न, बहुत काल तक रोगी, चोर निंदनीय कार्य, किसी राजा की आज्ञा से लक्ष्मी प्राप्त (मान०) बहुत से विघ्नों से युक्त, दीर्घ रोगी, चोर, इष्टानुवाद में युक्त, राजा के संग से लक्ष्मी प्राप्त (वृ० पा०)।

२—धन में अष्टमेश–क्रूर ग्रह हो तो–थोड़े दिन तक जीने वाला, शत्रुओं से युक्त, चोर, शुभ ग्रह हो अति शुभ कारक होता हैं परन्तु किसी राजा द्वारा मृत्यु पावे (मा०)। पाप ग्रह–धन लाभ न हो चोर होवे, शुभग्रह–शुभ फल, अंत में राजा के प्रकोप से मरण (जा० सं०) भुज बल से हानि, थोड़ा धन वाला उसका जो कुछ नष्ट होता है वह मिलता नहीं (वृ० पा०)।

३—तृतीय में–बन्धु विरोधी, सुहृदजनों का विरोधी, अंगहीन, दुर्वाक्य कहने वाला, बड़ा चंचल, सहोदर भाई से रहित (मान०) बन्धुजनों के विरोध से मित्रजनों से विरोध करता है, अंगहीन, दुर्बल, चंचल, सहोदर भ्राता से वंचित (जा० सं०) भाइयों के सुख से हीन, नोकर और बल से हीन (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में–पिता का वैरी, पिता से धन पाने वाला, पिता से लड़ने वाला पिता रोगी (मान०) पिता से अन्याय पूर्वक पिता की लक्ष्मी को प्राप्त करता है, पिता पुत्र दोनों का परस्पर युद्ध, पिता रोगी (जा० सं०) माता से हीन, घर जमीन से रहित, मित्र द्रोही (वृ० पा०)।

५—पंचम मे–क्रूरग्रह–पुत्र रहित। शुभग्रह हो तो शुभ फल। जातक अधिक नहीं जीता शांति आदि कराने से जीवे, कपट कर्म में तत्पर (मान०)। क्रूर-पुत्र हीन, शुभ ग्रह हो तो पुत्र युक्त होता है। प्रथम तो उत्पन्न होकर पुत्र जीता नहीं यदि जिये तो कपटी हो (जा० सं०) मूर्ख, थोड़े पुत्र वाला, दीर्घायु धनी (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में—राजा का विरोधी हो। यह गुरु हो तो अंग में कष्ट पावे। शुक्र—नेत्र रोगी, चन्द्र—रोग युक्त। मंगल—कोप युक्त, बुध—डरपोक। शनि—मुख में कष्ट। चन्द्र या सौम्य ग्रह उसे देखे तो अनेक अरिष्ट हो (मा०) सूर्य—राजा से विरोध। चंद्र—रोग युक्त। मंगल, क्रोधी। बुध—भयभीत, गुरु—अंग में कष्ट। शुक्र—नेत्र रोग, शनि—दुःखी। राहु बुध—कष्ट। षष्ठ स्थित चन्द्र शुभग्रह से दृष्ट हो तो कुछ भी नहीं होता (जा० सं०) शत्रु को जीते, रोगी, बाल्यावस्था में सर्प या जल का भय (वृ० पा०)।

७—सप्तम में अष्टमेश—उदर में रोग, दुष्टों से स्नेह, बड़ा दुष्ट। पाप ग्रह हो तो भार्या से द्वेष करने वाला। स्त्री के द्वेष से मृत्यु पाने पाने वाला (मान०) गुदा में व्याधि, दुष्ट कुल की स्त्री का प्रिय हो, क्रूर ग्रह हो तो स्त्री से वैर कर्ता, स्त्री के दोष से मरण (जा० सं०) दो पत्नी हो। यदि पापयुक्त हो तो व्यापार में हानि (वृ० पा०)।

८—अष्टम में—व्यवसाय करने वाला, रोगों से रहित, निरोग, कपट विद्या जानने वाला, कपटी कुल में जन्म, प्रसिद्ध (मान०)। व्यसनी, व्याधि हीन, रोग हीन, कपट कला से युक्त, कपट कुल में विख्यात (जा० सं०)। दीर्घायु, यदि अष्टमेश निर्बल हो तो मध्यमायु, चोर, स्वयं निंदनीय और पर निंदक (वृ० पा०)।

९—नवम में—दुष्ट संग रहित, जीव हिंसक, पापी, बन्धु रहित, स्नेह रहित, शत्रु पक्ष में पूजनीय, मुख में व्यंग (झांई) (मान०)। संग हीन, जीव घाती, पापी बन्धु हीन, स्नेह रहित, पूज्य के सेवन में विमुख। सुख में—अंग हीन (व्यंग) (जा० सं०)। धर्म निंदक, नास्तिक, दुःशीला स्त्री वाला, परधन हर्ता (वृ० पा०)।

१०—दशम में—राजा के कर्म करनेवाला, नीच कर्मकर्ता। क्रूर ग्रह हो तो आलसी पुत्र तथा माता न जीवे (मान०) राज कर्म करने वाला, नीच कर्म में युक्त, आलसी क्रूर, अन्य पुरुष से उत्पन्न, पुत्रवान्, उसकी माता नहीं जीती (जा० सं०)। पिता के सुख से हीन, यदि शुभग्रह से युत व दृष्ट न हो तो चुगल खोर और कर्म हीन होता है (वृ० पा०)।

११—लाभ में—बालपन में दुःखी पश्चात् सुखी, दीर्घायु। पापग्रह हो तो अल्पायु (जा० सं०) (मान०)। पापयुक्त हो तो धन हीन, बाल्यावस्था में दुःखी पीछे सुखी। शुभग्रह हो तो दीर्घायु। (वृ० पा०)।

१२—व्यय में—क्रूर वाक्य कहने वाला, चोर, शठ, निर्दय, सर्वत्र स्वतन्त्र रहने वाला, अंग हीन, काक गीध आदि का भक्षी (मान०) क्रूर, चोर, व नीच, आत्मज्ञान से हीन, अंग हीन शरीर, काक आदि पक्षियों से भक्षण करने योग्य (जा० सं०)। कुकार्य में खर्च। पाप युक्त हो तो अल्पायु (वृ० पा०)।

८—अष्टमेश का विशेष फल

(१) दीर्घायु चिंता रहित—अष्टमेश केन्द्र छोड़ कर और किसी स्थान में हो और बल हीन भी हो जो लग्नेश के बल से ऊरु में कम हो तो दीर्घायु, चिंता रहित, विघ्न और क्लेश रहित हो (फल०)।

(२) दीर्घायु—अष्टमेश या लग्नेश स्वगृही हो अपने नवांश या अधिमित्र के नवांश में न हो परन्तु मित्र के नवांश में या घर में हो तो दीर्घायु होता है।

(३) दीर्घायु अष्टमेश—लग्नेश, कर्मेश तथा शनि त्रिकोण लाभ में या केन्द्र में हो तो दीर्घायु होता है।

(४) अल्पायु—अष्टमेश पाप ग्रहों के साथ हो या अष्टम में लग्नेश हो तो अल्पायु हो। इसी प्रकार से दशमेश से भी आयु विचारना।

९—नवमेश का भिन्न भिन्न भाव में फल

लग्न में नवमेश—देवगुरु का मानने वाला, बड़ा शूर, कृपण, राजा के समान कर्म करने वाला, अल्पाहारो, विद्वान् (मान०)। शूरवीर होकर देव गुरुजनों का सत्कार करता है, कृपण, राज्य कर्म कर्ता, थोड़ा संग्रह कर्ता, बुद्धिमान् (जा० सं०)। भाग्यवान् राजमान्य, सुशील, सुन्दर, विद्वान्, लोकपूज्य (वृ० पा०)।

२—धन में नवमेश—बल के निमित्त से विख्यात, उत्तम स्वभाव, सबका प्रेमी सुकृत करने वाला, मुख में झांई, चोपाये पशु से पीड़ा (मान०)। शूद्रों के सम आचरण, विख्यात, अच्छे शील से युक्त, सत्यभाषी, पुण्यात्मा, चोपायों से उत्पन्न हुई पीड़ा, मुख में अंगहीन (झांई)। (जा० सं०)। पंडित, लोकप्रिय, धनी, कामी, स्त्री पुत्रादि सुख से युक्त (वृ० पा०)।

३—तृतीय में नवमेश—रूपवती स्त्री तथा बांधवों से प्रेम करने वाला, बंधुवर्ग और स्त्री का रक्षक। यदि जीता रहे तो सदा भाई वंधु समेत रहने वाला (मान०)। रूप स्त्री बंधु इनसे प्रेम करने वाला, बंधु, स्त्री का रक्षक, बांधव गणों से युक्त होकर जीता है (जा० सं०)। भाई के सुख से युक्त, धनी, गुणी, रूप और शील से युक्त (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में नवमेश—पिता का भक्त, पितृ यात्रा आदि में विख्यात, सुकृत करने वाला, पितृ कर्मों में बुद्धि रखने वाला (मान०)। पिता का भक्त, पिता का पूजक, विख्यात, अच्छा कार्य करने वाला, मित्र वर्गों में और उत्तम कर्म में प्रीति होवे (जा० सं०)। घर की सवारी से सुखी, सब सम्पत्ति से युक्त, माता का भक्त (वृ० पा०)।

५—पंचम में नवमेश—सुकृत करने वाला, देवगुरु पूजक, शरीर से सुन्दर, अनेक धर्म निष्ठ (मान०)। पुण्यात्मा, देवगुरु पूजक, शरीर सुन्दर, उसके पुत्र अच्छे कार्य से युक्त (जा० सं०)। पुत्र सुख से युक्त, गुरुभक्त, धीर, धर्मात्मा और पंडित (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में नवमेश—शत्रु की प्रणति करने में परायण, धर्मकर्ता, किंचित न्यून कार्य करने वाला, दर्शन की निंदा करने वाला (मान०)। शत्रु प्रणत पालक और धर्महीन, कला से विफल शरीर वाला, दर्शक निंदा में तत्पर (जा० सं०)। अल्प भाग्यवान्, मामा आदि के सुख से हीन, शत्रुता से दुःखी (वृ० पा०)।

७—सप्तम में नवमेश—सत्य बोलने वाली, सुरूपा शीलयुक्त लक्ष्मी से युक्त, पुण्यवती स्त्री मिले (मान०)। सत्यभाषिणी स्त्री, अच्छे वचन और रूप वाली, शील, श्रीयुक्त

स्त्री पुष्पयुक्त (जा० सं०) स्त्री के द्वारा भाग्योदय, गुणी, यशस्वी और द्विजातियों में श्रेष्ठ (वृ० पा०)।

८—अष्टम में नवमेश–बड़ा दुष्ट, जीवहंता, घर तथा भाइयों से विवर्जित, पुण्यहीन। यदि क्रूर ग्रह हो तो–नपुंसक (मान०)। दुष्ट हिंसक, बन्धुजनों से हीन, पुण्यहीन, क्रूर और खंडित (जा० सं०)। भाग्यहीन, बड़े भाई के सुख से हीन (वृ० पा०)।

९—नवम में नवमेश—सुकृत मति, भाई बंधु से प्रीति, सबसे समता रखने वाला (मान०)। बांधवों के साथ प्रीति, अनुचित बल, दानी, देवगुरु, स्वजन स्त्री आदि में भक्ति (जा० सं०)। अत्यन्त भाग्यवान्, गुण रूप और सहोदरों के सुख से युक्त (वृ० पा०)।

१०—दशम में नवमेश–राजाओं के कर्म करने वाला, शूरवीर माता पिता का पूजक, धर्म विख्यात (जा० सं०)। राजा या राजा के समान, मंत्री या सेनापति, गुणी, लोकमान्य (वृ० पा०)।

११—लाभ में नवमेश–दीर्घायु, धर्मी, धन स्वामी, स्नेही, राजा से लाभ पाने वाला पुण्य करने मे विख्यात (मान०)। दीर्घायु, धर्मयुक्त, धन स्वामी और स्नेही, राजा से लाभ पाने वाला, पुण्य में विख्यात (जा० सं०)। नित्य लाभ करने वाला, गुरुजनों का भक्त, गुणी, पुण्यात्मा (वृ० पा०)।

१२—व्यय में नवमेश–बड़ा मानी, देशान्तर में रहने वाला, कुरूप, विद्यावान्, पापग्रह हो तो अत्यन्त धूर्त (मान०)। देशान्तर में लाभ वाला, सुन्दर रूप वाला, विद्यावान्, यदि पापग्रह हो तो कुबुद्ध और धूर्त (जा० सं०)। भाग्यहीन, शुभकार्य में अधिक खर्च, अतिथियों के आदर से निर्धन (वृ० पा०)।

(९) नवमेश का विशेष फल

१—जन्म के बाद पिता मरण–नवमेश दुःस्थान में हो या २ पापग्रहों के बीच हो या मंगल या शनि नवम घर में हो तो जन्म के बाद शीघ्र पिता का मरण हो (फल०)।

२—पिता दीर्घजीवी–यदि दिन में जन्म हो तो सूर्य, रात्रि मे जन्म हो तो शनि सुस्थित हो और शुभग्रह की दृष्टि हो नवमेश भी प्रबल हो तो जातक का पिता दीर्घजीवी होता है (फल०)।

३—अन्य पिता की रक्षा में—शनि नवमेश होकर चर राशि में हो और शुभ दृष्टि न हो या सूर्य दुःस्थान में हो तो वह अन्य पिता की रक्षा में रह कर जीये (फल०)।

४—दूसरा दत्तक बनावे–नवमेश या नवम घर में चर राशि हो और शनि से युक्त या दृष्ट हो यदि १२ वां घर का स्वामी बली हो तो जातक को दूसरा दत्तक पुत्र बनावे (फल०)।

५—कीर्तिमान्–नवमेश लग्न में हो तो जातक कीर्तिमान् हो (जा० पारि०)।

६—विशेष कीर्ति–नवमेश धन में हो वही उच्चादि से युक्त धन भाव में हो तो विशेष कीर्ति हो (जा० पारि०)।

७—शरीर नाश दुर्जन–नवमेश दुष्ट स्थान में हो तो चंचल, यात्रा से शरीर का नाश हो वा दुर्जन हो (जा० पारि०)।

८—यात्रा में सुख—नवमेश केन्द्र या कोण में शुभग्रहों से युक्त हो तो यात्रा में सुख होवे। (जा० पारि०)।

९—भाग्यहीन—भाग्येश तथा शुक्र पापग्रहों के साथ ६-८-१२ स्थान में हों तो भाग्यहीन होता है। भाग्यवान्—परन्तु जब केन्द्र, कोण या लाभ में हों तो भाग्यवान् होता है।

१०—साहसी धनी—नवमेश गुरु बली हो सूर्य चंद्र दोनों की दृष्टि हो तो बड़ा साहसी और धनी हो। अपनी राशि में हो तो पराये धन से युक्त हो (जा० सं०)।

११—ऐश्वर्य व धन—नवमेश गुरु सूर्य बुध दोनों से दृष्ट हो तो सुन्दर ऐश्वर्य वाला मनोहर, धन, स्त्री, भूषण से युक्त, काव्य कला का ज्ञाता।

१२—उत्सव कर्ता, चौपाया युक्त-नवमेश गुरु सूर्य शुक्र दोनों से दृष्ट हो तो सामवेद का ज्ञाता, उत्सव कर्ता, गौ महिषी आदि से युक्त साहसी हो।

१३—कोषपति नायक—नवमेश गुरु सूर्य और शनि दोनों से दृष्ट हो तो कोषपति, संग्रह कर्ता, चतुर, विख्यात, गुणी तथा देशगुरु और श्रेणीनायक होता है (जा० सं०)।

१०—दशमेश का प्रत्येक भाव में फल

(१) लग्न में दशमेश—माता का वैरी, पिता का भक्त, पिता की मृत्यु के बाद उसकी माता अवश्य पर पुरुष से प्रसंग करे (मान०)। माता से वैर कर्ता, पिता का भक्त, बालपने में दुःखी, उसकी माता पर पुरुष से प्रीत युक्त रमे (जा० सं०)। जातक विद्वान्, विख्यात, धनी, कवि, बाल्यावस्था में रोगी पीछे सुखी, दिन दिन धन की वृद्धि (वृ० पा०)।

(२) धन में दशमेश—बड़ी आयु तक भी माता से पालन किया जावे, माता में दोष देखने वाला, अल्प भोजी, शास्त्रानुकूल सत्कर्म करने वाला (मान०)। माता से पाले हुए पुत्र वाला, लोभी, माता के लिये दुष्ट, थोड़ी त्रास वाला, अल्प कर्म वाला (जा० सं०)। धनी, गुणी, राजमान्य, अति दानी, पिता आदि के सुख से युक्त (वृ० पा०)।

(३) सहज में दशमेश—माता व स्वजनों का विरोधी, सेवा में निरत, किसी कर्म में सामर्थ नहीं, मामा से पालन किया गया (मान०)। माता व स्वजनों से विरोध कर्ता, सेवा कर्म कर्ता, काम करने में असमर्थ, मामा से पाला हुआ (जा० सं०)। भाई और नौकरों के सुख से युक्त, पराक्रमी, गुणी वक्ता सत्यभाषी (वृ० पा०)।

(४) सुख में दशमेश—सब सुख भोगी, सदाचारी, माता पिता का भक्त, राजमानी (मान०)। सुख और माता पिता के पालन पूजन में युक्त, सब जनों को अमृत के समान प्रिय, राज सम्बन्धी लाभ से विभूषित (जा० सं०)। सुखी, माता का भक्त, वाहन, भूमि गृह से सुखी, गुणी, और धनी (वृ० पा०)।

(५) पंचम में दशमेश—शुभ कर्म करने वाला, विडम्बी, राजा से लाभ युक्त, गाने बजाने में निरत, मामा द्वारा पालित (मान०)। शुभ कर्म कर्ता, विडम्बना

करने वाला, राजा से लाभ कर्ता, गाने बजाने में युक्त, उसके पुत्र को माता पालन करती है (जा० सं०)। सब विद्या का ज्ञाता, आनन्द से युक्त, धनी और पुत्रवान् (वृ० पा०)।

(६) षष्ठ में दशमेश—शत्रु के भय से कायर, कलह करने वाला, कृपण, निर्दयी, रोग रहित (मान०)। पाप ग्रह हो तो बाल्यपने में कष्ट, पीछे समर्थ, उसकी माता पर-पुरुष से प्रीति युक्त (जा० सं०)। पिता के सुख से हीन, चतुर होने पर भी धन हीन और शत्रुओं से तंग (वृ० पा०)।

(७) सप्तम में दशमेश—स्त्री पुत्रवती, शुभ रूप युक्त, पतिव्रत धर्म पालन में लालसा, पति को अति प्यारी, सदा पति को शुभ कर वाली भार्या (मान०)। स्त्री सत्य भाषण करने वाली, सुन्दर रूप, अपनी सास के पालन में लालसा (जा० सं०)। स्त्री से सुखी, मनस्वी, गुणी, वक्ता, सत्यधर्म में आसक्त (वृ० पा०)।

(८) अष्टम में दशमेश—बड़ा क्रूर, शूर वीर, मिथ्या भाषी, बड़ा दुष्ट, मातृ संतापी, अल्पायु, कपटी (मान०)। पाप ग्रह हो तो चोर झूठ वक्ता, दुष्ट, माता को सन्ताप कर्ता, थोड़ा जीवन, कपटी (जा० सं०)। कर्म हीन, दीर्घायु, पर निंदक (० पा०)।

(९) नवम में दशमेश—शुभ स्वभाव, उत्तम बंधु, सत्पात्र मित्र, अति सुशीला, पुण्य करने वाली, सत्यवक्ता माता, शुभ शील, श्रेष्ठ बंधु, श्रेष्ठ मित्र, माता सुन्दर शीलवती, पुण्यात्मा और सत्य भाषी (मान०)। राज कुलोत्पन्न राजा, अन्य राजा के समान, पुत्र धनादि से युक्त (वृ० पा०)।

(१०) दशम में दशमेश—सदा माता का सुख देने वाला, नाना के कुल से आनन्द पाने वाला, सामयिक बातचीत करने में चतुर (मान०) माता को सुख दायक, माता के कुल में अधिक सुख कर्ता प्रगट घटियों के मध्य में अतीव चतुर (जा० सं०)। सब कार्य में दक्ष सुखी, पराक्रमी, सत्यवक्ता, गुरु भक्त (वृ० पा०)।

(११) लाभ में दशमेश—सत्कार पूर्वक धन पैदा करे, धनाढ्य, माता द्वारा रक्षित, माता भी स्वयं सुख प्राप्त करने वाली, दीर्घायु, माता का सुख (मान०)। माता मान से अधिक पालन करने वाली, पुत्र की रक्षा करने वाली, सुखवती, दीर्घायु, मातृ सुख युक्त (जा० स०) धन पुत्रादि से युक्त, हर्ष से युक्त गुणी, सत्य वक्ता सदा सुखी (वृ० पा०)।

(१२) व्यय में दशमेश—माता से रहित, स्वबल युक्त, शुभ कर्ता, राज्य कर्म, में निरन्तर चित्त रखने वाला, पाप ग्रह हो तो देशान्तर में गमन करने वाला (मान०) माता से त्यागा हुआ, अपने बल से युक्त, शुभ कर्म करने वाल , राज कर्म में प्रीति पूर्वक चित्त, पाप ग्रह हो तो देश में भ्रमण कर्ता (जा० सं०) राजा के द्वारा धन खर्च, शत्रु का भय, चतुर होने पर भी सदा चिंतित (वृ० पा०)।

१—दशमेश का विशेष फल

(१) दीर्घ जीवी भाग्यवान्—यदि शुभ ग्रह दशम में और हो दशमेश पूर्ण बली,

होकर केन्द्र या कोण में हो और अपने स्वस्थान या उच्च में हो या लग्नेश दशम में हो तो सबका मान करे, अति प्रसिद्ध हो, सदा सत्कर्म करने की ओर झुकाव रहे, भाग्य राजा सदृश हो वह दीर्घजीवी हो (फल०)।

(२) धैर्य युक्त कार्य करने में—दशमेश सुस्थित हो तो वह अपने प्रताप और बाहु बल से बहुत धैर्य युक्त कार्य को पूरा करने में समर्थ होगा (फल०)।

(३) अच्छे कर्म नहीं = दशमेश बलहीन हो ता अच्छे कर्म नहीं होते।

(४) शत्रु नीच या ६-८-१२ घरों को छोड़ कर कर्मेश शुभ फल दायक होता है।

११—लाभेश का भिन्न-भिन्न भाव में फल

(१) लग्न में लाभेश—अल्पायु बल से युक्त, शूर वीर दानी, जन प्रिय, सुंदर अधिक तृष्णा के दोष मे मृत्यु (मान०) अल्पायु बहुतसी कलाओं से युक्त, शूरवीर, दान कर्ता, जनों का प्रिय, सुंदर ऐश्वर्य सम्पन्न, तृषा रोग से मरण (जा० पा०)। सात्विक, धनी, सुखी, सम दृष्टि, कवि, वक्ता, सदा लाभ (वृ० पा०)।

(२) धन में लाभेश—उत्तम भोगी, अल्प भोजी, अल्पायु, अर्ध कपाली से रोगवान्, शुभ ग्रह हो तो धन से परिपूर्ण (मान०)। उत्तम पात्र का भोगने वाला, थोड़े पात्र वाला, अल्पायु, दरिद्री, चोर हो यदि पाप ग्रह हो। शुभ ग्रह हो तो धन से युक्त (जा० सं०)। सब धन से युक्त, सब कर्म में सिद्धि पाने वाला, धर्मात्मा, सुखी (वृ० पा०)।

(३) सहज में लाभेश—भाई बंधु तथा स्त्री का पालन कर्ता, सत्पात्र बांधव, बंधु-जनों का वत्सल, सुंदर भाई बंधुओं के शत्रु कुल का नाश करने वाला (मान०)। शुभ ग्रह हो तो बंधु लक्ष्मी का पालन कर्ता, अच्छे बांधवों से युक्त बांधवों पर स्नेह, पाप ग्रह हो तो बंधुजनों का शत्रु समान नाशक (जा० सं०)। सब कार्य में दक्ष, सहोदर से सुखी, कदाचित् शूल रोग से पीड़ित (वृ० पा०)।

(४) सुख में लाभेश—दीर्घायु, पिता में भक्ति, समयोचित कर्म करने में प्रवीण, स्वधर्म करने में रत और लाभ से युक्त (मान०)। दीर्घायु, पिता का भक्त, प्राप्ति करने के कारण से युक्ति और सुकर्म से लाभ (जा० सं०)। मातृ कुल से धन पाने वाला, तीर्थ करने वाला, घर भूमि के सुख से युक्त (वृ० पा०)।

(५) पंचम में लाभेश—पिता पुत्र में परस्पर स्नेह, पुत्र समान गुण वाले, अल्पायु (मान०)। पिता पुत्र दोनों स्नेह युक्त, पिता पुत्र दोनों समान गुण वाले, पिता पुत्र दोनों में पुत्र तृष्णाजीवी होता है (जा० सं०)। उसके पुत्र सुखी, विद्वान्, सुशील होत हैं और स्वयं धर्मात्मा और सुखी होता है (वृ० पा०)।

(६) षष्ठ में लाभेश—राजयक्ष्मा आदि अधिक काल तक रहने वाला रोग, प्रबल वैरी जनों से युक्त, क्रूर हो तो परदेश में चोर के हाथ से मृत्यु (मान०)। वैर, अति दीर्घ रोग, चतुरंग सेना के संग्रह को प्राप्त, चोर के हाथ मरण, पाप ग्रह हो तो देशान्तर जाने वाला, रोगी, क्रूरबुद्धि, विदेश वासी, शत्रुओं से पीड़ित (वृ० पा०)।

७—सप्तम में लाभेश—तेजस्वी, शील सम्पत्ति युक्त, उत्तमाधिकारी, दीर्घायु, एक ही पत्नी वाला (मान०)। तेजस्वी, शील, सम्पदाओं से युक्त पद वाला, दीर्घायु, एक स्त्री का पति (जा० सं०)। स्त्री से कुछ धन लाभ, उदार गुणी, कामी, स्त्री के वश (वृ० पा०)।

८—अष्टम में लाभेश—पाप गृह हो तो अल्पायु, राजरोगी, रोग के कारण जोवित

रहते हुए भी मृत समान (मान०)। पाप गृह, अल्पायु या दीर्घ रोगी, जीवन मत सम, दुःखी, रोग युक्त। शुभ ग्रह हो तो ऐसा फल नहीं होगा (जा० सं०)। कार्य में हानि दीर्घायु तथा स्त्री का मरण अपने समक्ष ही होता है (वृ० पा०)।

९—नवम में लाभेश—बहुश्रुत, शास्त्र में विशारद, धर्म में प्रसिद्ध, देव गुरु भक्त, पाप ग्रह हो—बंधु तथा पुत्र से हीन, बंधु नहीं होते (मान०)। बहुत शास्त्रों का जानने वाला, शास्त्रों में चतुर, धर्म के विषय में प्रसिद्ध, देव गुरु का भक्त। पाप ग्रह हो तो बांधव और वृत्त इनसे हीन (जा० सं०)। भाग्यवान्, चतुर, सत्यवक्ता, राजमान्य, धनवान् (वृ० पा०)।

१०—दशम में लाभेश-मातृ भक्त, सुकर्म कर्ता, पितृ द्वेषी, दीर्घायु, धनवान्, माता का पालन करने में निरत (मान०)। माता का भक्त, पुण्यात्मा, पिता का वैरी, दीर्घायु, धनवान्, माता के पालन में तत्पर (जा० सं०)। राजमान्य, गुणवान्, स्वधर्मरत, बुद्धिमान्, सत्यवक्ता, जितेन्द्रिय (वृ० पा०)।

११—लाभ में लाभेश—दीर्घायु, बहुपुत्र-पौत्र, सतकर्मी, रूपवान्, सुशील, मनुष्यों में मुख्य, मोटी देह, सब को प्रिय (मान०)। दीर्घायु, उत्तम पुत्र युक्त, अच्छे कर्म, रूपवान्, सुन्दर शील, जनों के आनन्द करने से युक्त (जा० सं०)। सब कार्य में लाभ, पंडित, सुखी (वृ० पा०)।

१२—व्यय में लाभेश-दैवेच्छा से प्राप्त हुई चीजों को भोगे, स्थिर प्रकृति, उत्पात में रत, बड़ापापी, दाता, सदा सुखी (मान०)। उत्पन्न हुए को भोगने वाला, चंचल, उत्पातकर्ता, मानी, इन्द्रिय जीतने वाला, दुःखी (जा० सं०)। सुकार्य में खर्च, कामी, बहुत स्त्री वाला, म्लेच्छों से संगति करने वाला (वृ० पा०)।

लाभेश का विशेष फल

१—लाभ हो—लाभेश कोई ग्रह हो वह लाभ में या केन्द्र या मूलत्रिकोण में हो तो अपनी दशा में योग्यता प्रमाण से लाभ देता है। (प्रा० यो०)।

२—चीजों की प्राप्ति—लाभेश युक्त जो ग्रह हो उसके स्वस्थान के भाव और लाभेश युक्त भाव से लाभ, चीजों की प्राप्ति या इच्छापूर्ति उस सम्बन्धी भाव के विषय के सम्बन्ध में कहना (फल०)।

३—बहुत लाभ-लाभेश लाभ स्थान में हो या केन्द्र या त्रिकोण में हो या उच्च का अथवा सूर्य के नवांश में हो तो बहुत लाभ होता है।

४—लग्नेश सूर्य या चन्द्र हो तो राजा की नौकरी से लाभ, मंगल हो तो राजमंत्री या भाई या कृषक से लाभ, बुध हो तो विद्या या पुत्र या कुटुम्बी व्यक्ति से लाभ, गुरु हो तो धार्मिक संस्था से लाभ, शुक्र हो तो स्त्री या रत्न या पशु द्वारा लाभ, शनि हो तो कुवृत्ति या नीच व्योहार से लाभ।

व्ययेश का प्रत्येक भाव में फल

१—लग्न मे व्ययेश—विदेश गमन, सुवचन भाषी, सुरूप, दुःसंग के निमित्त से दोष युक्त, आजन्म अविवाहित या नपुंसक (मान०)। परदेश गामी, अच्छे वचन, सुन्दर रूपवान्, संगहीन, वाद करने वाला, निंदक, बोझा ले जाने वाला या लूला (जा० सं०)। फजूल खर्ची, दुर्बल, कफ रोगी, धन और विद्या से हीन (वृ० पा०)।

२—धन में व्ययेश—महाकृपण, क्रूरभाषी, लाभ रहित। सौम्यगृह, राजभय से या

चोर या अग्निजन्य भय से मृत्यु (मान०)। कृपण और चतुर वाणी, शत्रुओं के लाभ का यश कर्ता, मंगल हो तो—राजा, चोर, अग्नि इन से उत्पन्न भय से घन कष्ट (जा० सं०)। सुकार्य में खर्च करने वाला, धर्मात्मा, प्रिय वक्ता, गुणी, सुखी (वृ० पा०)।

३—सहज में व्ययेश—क्रूर ग्रह—भाई बन्धु से रहित, शुभ हो—धनवान्, थोड़े भाई वाला, बडा कृपण, सदा भाई बंदों से दूर रहने वाला (मान०)। बिना बांधव वाला, शुभ गृह हो तो थोड़े भ्राता, कृपण भ्राताओं से सदा दूर रहे। (जा० सं०)। भाई के सुख से हीन, परद्वेषी, स्वार्थी (वृ० पा०)।

४—चतुर्थ में व्ययेश—बड़ा कृपण, सत्कर्म करने वाला, लड़के से मृत्यु पाने वाला, महा दुःखी, कृपण, रोगहीन, अच्छे कर्म करने वाला, निरन्तर महा दुःखी होकर पुत्र से मरण प्राप्त (जा० सं०)। माता घर वाहन आदि के सुख से हीन (वृ० पा०)।

५—पंचम में व्ययेश—पुत्र से रहित, शुभ गृह हो तो पुत्रों से युक्त। पिता का धन भोगने वाला, अपने सामर्थ्य से रहित (मान०)। (जा० सं०)। संतान और विद्या से हीन, पुत्र के लिये खर्च तीर्थ व्रत करने वाला (वृ० पा०)।

६—षष्ठ में व्ययेश—क्रूर ग्रह, कृपण, नेत्र में दूषण (काना आदि), मरने योग्य, शुक्र हो तो नेत्र विहीन (अन्धा) (मान०)। (जा० सं०)। अपने परिजन का द्वेषी, क्रोधी, पापी, दुःखी, पर स्त्रीगामी (वृ० पा०)।

७—सप्तम में व्ययेश—क्रूर ग्रह, दुःशील, दुष्ट कर्मकर्त्ता, पटु भाषी, स्वस्त्री से मृत्यु, शुभ ग्रह हो तो वेश्या के निमित्त से मृत्यु (मान०)। दुष्ट, खोटे कर्म करने वाला, कपट वचन। पाप ग्रह हो तो स्त्रीहीन। शुभ ग्रह, वेश्या से नाश को प्राप्त (जा० सं०)। स्त्री के लिये खर्च करने पर भी सुखी नहीं होना, बल और विद्या से हीन (वृ० पा०)।

८—अष्टम में व्ययेश—अष्ट कपाली, कार्य साधन से रहित, सबका द्रोही, शुभग्रह-धन संचय करने में तत्पर (मान०)। दरिद्रता युक्त, कार्यों का साधन करने वाला, परिणाम से हीन, सबसे वैर वृद्धि। शुभ ग्रह हो तो धन संग्रह में तत्पर (जा० सं०)। अधिक लाभ करने वाला, प्रिय वक्ता, मध्यमायु, सब गुणों से युक्त (वृ० पा०)।

९—नवम में—तीर्थों के दर्शन को घूमने वाला। क्रूर ग्रह—द्रव्य निरर्थक पापी मनुष्यों से खराब होता है (मान०)। जीविका या तीर्थ दर्शन में खर्च। पाप ग्रह हो तो पापी होता है उसका धन व्यर्थ ही खर्च होता है (जा० सं०)। गुरु और मित्रों से द्वेष करने वाला, स्वार्थी (वृ० पा०)।

१० दशम में—स्त्री से पराङ्मुख, पवित्र शरीर, स्वपुत्रों के लिये धन संग्रह करने में तत्पर, माता दुर्वाक्य कहने वाली (मान०)। पर स्त्री से पराङ्मुख, पवित्र शरीर वाला, पुत्र धन इनके इकट्ठे करने में तत्पर, उसकी माँ खोटे वचन बोलने वाली (जा० सं०)। राजद्वार से धन का खर्च, पिता से स्वल्प सुख (वृ० पा०)।

११—लाभ में—धन का पालन करने वाला, दीर्घायु, अपने स्थान में सबसे श्रेष्ठ, दानी, सर्वत्र विख्यात, सत्य भाषी (मान०)। सुकुमार तथा बड़ी आयु वाला, स्थान में श्रेष्ठ, दानी, विख्यात, सत्यभाषी (जा० सं०)। अल्प लाभ और कदाचित् दूसरे का धन लाभ होता है (वृ० पा०)।

१२—व्यय में- ऐश्वर्य युक्त, ग्राम में रहने का इच्छुक, कृपण बुद्धि, पशु का संग्रह कर्ता, अल्पायु, जीवे तो अवश्य ही ग्रामाधीश हो (मान०)। विभूतियों वाला, ग्राम में निवास में चित्त, कृपणता युक्त बुद्धि, पशुओं को इकट्ठा करने वाला, दीर्घजीवी होवे ग्राम युक्त होता है (जा० सं०)। अधिक व्यय, शरीर सुख से हीन, क्रोधी, मनुष्यों का द्वेषी (वृ० पा०)।

(१२) व्ययेश का विशेष विचार

(१) भाव सम्बन्धी पदार्थ को हानि—व्ययेश जिस भाव में हो या व्यय भाव में कोई ग्रह हो उसके स्वगृह का जो भाव है उस भाव के सम्बन्ध के पदार्थ या उनके विषय की हानि होती है (फल०)।

(२) अच्छे महल योग आदि—व्ययेश या चन्द्रमा नवम, लाभ या पंचम भाव में हो या अपने उच्च का या स्वगृही या स्वनवांश का या लाभ, नवम, पंचम के नवांश में हो तो अच्छे महल, सुगन्ध, पलंग आदि का योग मिलता है।

(३) स्त्री सुख नहीं, अधिक व्यय—आदि व्ययेश अपने शत्रु, नीच या अस्त के नवांश में, अष्टम स्थान मे या शत्रु स्थान में हो तो उसे स्त्री का सुख नहीं मिलता। अधिक व्यय होने से अधिक चिंता रहती है।

(४) स्त्री से शोभित—व्ययेश केन्द्र या कोण में हो तो अपनी स्त्री से शोभित होता है।

भावेश के फल पर विशेष विचार

भावेशों के फल पर विचार करते समय उनके बलाबल का विचार अवश्य करना चाहिये। जो ग्रह दो राशियों का स्वामी है उसका दोनों भावों के स्वामित्व के अनुसार फल विचारना। यदि समान फल में विरोध हो तो दोनों का फल कहना। और भिन्न-भिन्न फल शुभ और अशुभ जो हों वे दोनों ही फल होते हैं।

जैसे कर्क लग्न वाले को मंगल पंचमेश और दशमेश भी हैं इस प्रकार वह दो भाव का स्वामी है। वह यदि नवम भाव मे हो तो उसका पुत्र राजा या राजा के तुल्य व स्वयं ग्रन्थकार विख्यात और कुल में श्रेष्ठ होता है ये फल हैं परन्तु दशमेश का नवम भाव का फल राजकुलोत्पन्न राजा, अन्य राजा के तुल्य और धन पुत्रादि से युक्त होना बताया है। इस प्रकार दोनों फल समझना।

इन दोनों में शुभ फल आया हो तो अति शुभ होगा। परन्तु तुल्य फल का विरोध इस प्रकार होता है कि एक से धन की प्राप्ति हो और द्वितीय स्थान वश धन की यदि हानि प्रकट हो तो न तो धन की प्राप्ति होगी और न धन की हानि होगी इत्यादि।

स्वोच्च, स्वनीच, आदि स्थानस्थिति वश से पूर्ण मध्यम या अल्प फल होगा इसका भी विचार करना। ग्रह पूर्ण बली हो तो पूर्ण फल, मध्यम बली हो तो मध्यम, हीनबली हो तो अल्प फल प्रगट होगा।

भावेश शुभ ग्रह है या अशुभ। शुभ ग्रह युक्त है या अशुभ, या शुभ या अशुभ स्थान या भाव में है और शुभ या अशुभ ग्रह से दृष्ट है इन सब बातों का विचार फल विचारते समय करना होता है। क्योंकि परिस्थितिवश फल में अन्तर पड़ जाता है।

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

बी० एल० ठाकुर

ज्योतिष के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। किन्तु संस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए इस माध्यम से विषय का अध्ययन कठिन है। इसलिए हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी, जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति ज्योतिष का सरलता से अध्ययन कर सके।

इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत पुस्तक सात खण्डों में प्रकाशित की गई है। ये सात खण्ड प्रारम्भिक ज्ञान, गणित, फलित, वर्ष-फल, प्रश्न मुहूर्त्त तथा संहिता खण्ड हैं।

प्रारम्भिक ज्ञान खण्डः इस खण्ड के अध्ययन से ज्योतिष-सम्बन्धी बहुत-सी बातें समझ में आ जाती हैं, जैसे किसी का जन्म, सम्वत्, मास, पक्ष, दिन, समय आदि ज्ञात न हो, तो केवल कुण्डली-चक्र देखकर सभी बातें बताई जा सकती हैं। बिना पंचाङ्ग के तिथि, नक्षत्र, करण, वार, सूर्य, चन्द्र आदि स्पष्ट बताए जा [illegible]कते हैं। [illegible] इसी भाग के अध्ययन से संक्षिप्त जन्म-पत्रिका बनाई जा सकती [illegible]। अन्त में फलित-सम्बन्धी मुख्य-मुख्य बातें संक्षेप में बताई गई हैं। ५५

गणित खण्डः इसके दो भाग हैं। इसमें पूरी जन्मपत्री बनाने की [illegible] है। प्र[illegible] गणित करने की सोदाहरण रीति देकर पूरी गणित-प्रक्रिया दी ग[illegible]।
प्रथम भागः १० [illegible] द्वितीय [illegible]: ४०

फलित ख[illegible]डः प्रथम भागः इसमें फलित-सम्बन्धी बातें दी ग[illegible] और मह[illegible]ओं की [illegible]लियों से उदाहरण देकर समझाया गया है। ७५

[illegible]य भागः इसमें ग्रहों की दृष्टि, योग, वर्ग, स्थान आदि ज्योतिष के आवश्यक विषयों पर सूक्ष्म विवेचन किया गया है। (अ) ८५; (स) १४०

[illegible]य भागः इसमें विस्तृत दशा-विचार से साथ भाग्य, धर्म, कीर्ति विद्या, बुद्धि, [illegible]-दुःख आदि विषयों पर विचार प्रकट किया गया है, माता-पिता, भाई-बन्धु आदि सम्बन्धों पर ग्रह-प्रभाव का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस ग्रन्थ की उपादेयता अनुपम है। ९५

वर्ष-[illegible]ल खण्डः इसमें वर्ष-फल बनाने का पूरा गणित उदाहरण देकर समझाया गया है। ४५

[illegible]ण्डः इसमें प्रश्न-ज्योतिष सम्बन्धी बातें दी गई हैं और किसी प्रश्न का उत्तर देने का अभ्यास उदाहरण देकर समझाया गया है। ४०

मुहूर्त-खण्डः इसमें मुहूर्त-सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। शुभाशुभ मूहूर्त्तों का विवरण दिया गया है। ६०

सं[illegible]-खण्डः इसमें राष्ट्रीय ज्योतिष-सम्बन्धी विषयों पर विस्तार से विचार किया गया है। अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुसार देश या नगर की राशि स्थिर करने के प्रकार बताए गए हैं। किसी भी देश के भविष्य की जानकारी के लिए ज्योतिर्विद् इस खण्ड का सफल उपयोग कर सकते हैं। भविष्यवाणी में प्राच्य और पाश्चात्य दोनों रीतियों का सुविशद व सारगर्भित वर्णन है। ६५

मोतीलाल बनारसीदास

[illegible]ल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास

मूल्यः रू० ८५